

18

X

Chief Reporter
Punjab Vidhan Sabha
Chandigarh

40

61

Punjab Legislative Assembly Debates

17th May, 1954.

VOL. II—No. 1
Official Report



Controller
Punjab Vidhan Sabha
Chandigarh

CONTENTS

Monday, 17th May, 1954.

	PAGES
Announcement by the Secretary re. death of the Speaker, Dr. Satyapal ..	1
References to the death of the late Dr. Satyapal ..	1—10

CHANDIGARH :

Printed by Controller of Printing and Stationery, Punjab
1954

Price : Re 0-2-0

PUNJAB LEGISLATIVE ASSEMBLY

Monday, 17th May, 1954.

*The Assembly met in the Assembly Hall, Sector 10, Chandigarh Capital,
at 2 p.m. of the clock.*

ANNOUNCEMENT BY THE SECRETARY RE. DEATH OF THE SPEAKER, DR. SATYAPAL.

Secretary : With deep distress, I have to inform the House of the sad death of Dr. Satyapal, Speaker, and consequently of a vacancy in the office of Speaker. The Deputy Speaker will, therefore, take the Chair.

(Sardar Gurdial Singh Dhillon, Deputy Speaker, then occupied the Chair)

REFERENCES TO THE DEATH OF THE LATE DR. SATYAPAL.

Chief Minister (Shri Bhim Sen Sachar) : Sir, I beg to move—

That the Assembly be adjourned today as a mark of respect to the memory of the late Dr. Satyapal.

डिप्टी स्पीकर साहिब, आज इस सभा के लिये यह एक बहुत शोकदायक दिन है। एक आवाज जिस को हम ईवान में शेर की तरह गजते हुए सुना करते थे, हमेशा के लिये खामोश हो गई है। डाक्टर सत्यापाल साहिब को यह सौभाग्य प्राप्त था कि आज़ाद हिंदुस्तान में जो पहले General Elections पंजाब में हुए उन के बाद आप पहले स्पीकर थे। आप को अच्छी तरह से इल्म है कि उन्होंने इस थोड़े से अरसे में जो कि केवल दो साल का था इस कुर्सी को जीनत बखशी बतौर इस ईवान के स्पीकर के। डाक्टर साहिब ने कोई दकीक़ा फ़रोगुज़ास्त न किया इस हाऊस की शान को, इस हाऊस की ताकत को, इस हाऊस के दबदबे को ऊंचे से ऊंचा रखने के लिये। जिस तरह एक आदमी को अपनी चीज़ प्यारी होती है और वह उस की हिफाज़त करता है इसी तरह वह इस चीज़ की हिफाज़त करते रहे। खाह उन की तहरीर में, खाह तकरीर में और खाह सरकारी खतोकिताबत में—एक चीज़ डाक्टर साहिब के सामने थी वह यह कि ईवान की शान को किस तरह ऊंचा रखा जा सकता है और वह इस की शान को बचाने में और ऊंचा रखने में कहां तक मददगार हो सकते हैं। वे हमेशा इस बात को सामने रखते थे कि वह अमीन हैं इस हाऊस की आज़ादी के, इस हाऊस के गौरव के और इस हाऊस की Authority के। इस गौरव को ऊंचा रखने के लिये उन्होंने जो बन पड़ता था किया।

यह खुशी की बात है—मुबारक बात है कि जो जो रवायात उन्होंने कायम कीं इस हाऊस में वे और कहीं नहीं मिलतीं। अगर हम इन रवायात का मुकाबला दूसरे राज्यों की असेम्बलियों की रवायतों से करें तो पंजाब असेम्बली की रवायात नीचे दर्जे की दिखाई नहीं देतीं। डाक्टर साहिब ने

[मुख्य मंत्री]

स्पीकर होते हुए इस बात को हमेशा अपने सामने रखा कि वह एक कौमी खादम है। कौमी खादम होने के नाते उनकी निगाह में हाऊस की दोनों Sides बराबर थीं। डाक्टर साहिब ने हाऊस में opposition को उसी मान और इज्जत से देखा जिस तरह के Treasury Benches को देखा। जहां बराबर की चीज नंबर आती थी वहां उन की ruling और interpretation opposition के हक में हुआ करती थी। यह कोई हैरानी की बात न थी क्योंकि जिस ने अपनी जिन्दगी के दिन बगैर किसी खोफोखतर के, बगैर किसी डर के गुजारे हों और जो एक जरनैल हो उससे ऐसी तवक्को नहीं की जा सकती। हमें सख्त रंज है कि डाक्टर साहिब हमारे दरमियान नहीं रहे। हम उनकी राहनुमाई से महरूम हो गए हैं। डाक्टर साहिब को तारीख जानेगी न सिर्फ शानदार स्पीकर के नाते से बल्कि अमली नाते से भी। ऐसा कोई भी भाई गालबन न होगा जो 1919 की याद को भुला सके। 1919 में अंग्रेज का पूरा पूरा दबदबा था। उन की शकलसूरत देख कर लोग बबराते थे। उन को आजादी का दम भरने वालों को कुचलने का पूरा इख्तियार था। उस वक्त एक जरनैल ने कहा था कि इन हजारों लोगों को जो आजादी का दम भरते हैं जिन्दा रहने का हक नहीं। उन लोगों पर गोलियों की बुछाड़ कर दी। उस वक्त ललकारने वालों में डाक्टर साहिब थे। उन लोगों में जिन्होंने गोलियों की बुछाड़ को ललकारा और देश की आजादी की तारीख में शानदार नाम पैदा किया, डाक्टर सत्यपाल एक थे। 1919 से लेकर आज तक इस बहादुर जरनैल के देश प्रेम में कोई कमी न आई। आप जानते हैं कि डाक्टर साहिब आर्थिक तौर पर किस हालत में थे? मगर हमारा सौभाग्य है कि उन के नजदीक सब बराबर थे। डाक्टर साहिब की निडरता, डाक्टर साहिब की बेखौफी और अथाह देश प्रेम में कोई फर्क न पड़ा। वे वह हिम्मत रखते थे जो और किसी में न थी। वह अपने असूलों पर अमल करने में परेशान न होते थे। यह कुदती बात है कि जो बेखौफी का मुजस्समा हो, जिस ने निडरता को पूरे तौर पर अपने आप का हिस्सा बनाया हो, जिस की चमड़ी में डर न हो, वह समझ सकता है कि वह डरेगा तो इस लिये कि लोग क्या कहेंगे। डाक्टर साहिब ने मुकाबला किया हर उस दिक्कत का, हर उस ताकत का जो देश की आजादी की राह में रुकावट डालने वाली थी। वह साथियों के साथी थे। एक खूबी जो मैंने उनमें देखी वह यह थी कि वह साथी की मुश्किल को, साथी की दिक्कत को अपनी दिक्कत समझते थे। उन्होंने वह काम किए जिन के करने से दूसरों की मुश्किलें दूर हुईं। जब एक बार कोई दोस्त अपनी मुश्किल उन के पास ले आए फिर वह उस की मुश्किल न रहती थी बल्कि डाक्टर सत्यपाल की मुश्किल बन जाती थी। फिर जो शख्स दोस्तों के साथ इस शानदार तरीके से चल सकता हो वह भारत माता का आखरी दम तक क्यों साथ न देता! उन से तो यही तवक्को हो सकती थी।

आप जानते हैं 1919 में Rowlett Act के खिलाफ तहरीक शुरू हुई तो उस सिलसिले में पंजाब को किस तरह उस आन्दोलन में हिस्सा लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जिस को इतना शानदार होना था कि एक बहुत बड़े साम्राज्य को लहू की एक बूंद गिराए बगैर उखाड़ के फेंक दे। अगरचि कोई भी लहू गिराने से न डरता था मगर मुल्क ने महान नेता बापू की राहनुमाई

में फँसला किया था कि अगर खून गिराना पड़े तो अपना गिराया जाए किसी दूसरे का नहीं। इस शानदार तहरीक में पंजाब ने जो हिस्सा लिया आने वाली नस्लें उसे हमेशा याद रखेंगी। हिंदुस्तान की तारीख लिखने वाला कोई शख्स भी पंजाब के शानदार काम को नहीं भुला सकता और इस शानदार काम को शुरू करने वाले थे हमारे प्यारे डाक्टर सत्यपाल जो आज हम में नहीं हैं। उन की ज़बान और कलम में वह ताकत थी कि छोटे बड़े सब उन के असर से एक शमा की तरफ़ परवानावार दौड़ते थे। वह खुद मुजस्समाए कुरबानी थे और सब को कुरबानी देना सिखाते थे। यह कोई एक दिन, दो दिन, दो साल, पांच साल या दस साल की बात नहीं बल्कि उन की ज़िन्दगी ही एक मुबलक़ल कुरबानी थी। यही कुरबानी की स्पिरिट उन को हमेशा और हर हाल में सहाय देती रही।

आप जानते हैं कि उन में बहुत सी खूबियाँ थीं जिन में से एक बड़ी खूबी यह थी कि वह फैसला बहुत जल्द कर लेते थे। जो भी बात हो वह फौरन फैसला कर के अपना हाथ खड़ा कर देते थे कि यह होना चाहिये। वह वक्त त्रिकुल जाया न करते थे। एक जर्नल, एक लीडर में यह खूबी ज़रूर होनी चाहिये। मैं सिर्फ़ एक मिसाल पेश करता हूँ। डाक्टर साहिब एक छोटे से कमरे में बैठे जो उन का दफ़तर था अखबार के लिये Editorial लिख रहे थे। किसीने आकर खबर दी कि अनारकली में बच्चियों के एक जलूस पर पुलिस ने लाठी चार्ज किया और बहुत ज़बरदस्ती की। अभी पैग़ाम लाने वाले की बात खत्म भी नहीं हुई थी कि वह कुर्सी से उठे, पगड़ी सिर पर रखी और अनारकली जाकर वहीं से जेल में पहुँच गये। इसी तरह वह हमेशा खिदमत और कुरबानी के लिये आमादा रहते थे। हमें रंज है कि आज वह हमारे दरमियाँन नहीं हैं। आप जानते हैं कि यह रंज हमें ही नहीं बल्कि सारे मुल्क ने कितने रंज और अफ़सोस का इज़हार किया उन की मृत्यु पर। मेरे पास बेशुमार पैग़ाम और तार आए जिन में Bar Associations और दूसरी Associations और समाजों ने उन की मौत पर बहुत ही अफ़सोस किया है। और क्यों न हो? सत्यपाल हिंदुस्तान की ज़िन्दगी का एक हिस्सा थे और उस की तारीख़े आज़ादी का हिस्सा थे। आज भी वह देखने में हमारे दरमियाँन नहीं हैं मगर मैं यह समझता हूँ कि कैसे वह हमेशा ही हमारे साथ रहेंगे। हम अपने देश की तरक्की चाहते हैं और वह जानबाज़ जो उमर भर अपने मुल्क ही के बारे में सोचता रहा वह ज़रूर हमेशा हमें हौसला देता रहेगा। मैं अब ज़्यादा वक्त न लेता हुआ उन की याद और स्मरण करते हुए यह तहरीक करता हूँ कि उन की याद में आज का इज़लास मुलतवी कर दिया जाए।

ਸਰਦਾਰ ਗੁਪਾਲ ਸਿੰਘ (ਜਗਰਾਓ) : ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ, ਐਂਜ

ਇਹ ਮਹਸੂਸ ਕਰਕੇ ਸਭ ਨੂੰ ਦੁਖ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ ਕਿ ਸਾਡੀ ਅਸੈਂਬਲੀ ਦੇ ਸਪੀਕਰ ਅਤੇ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਬਹੁਤ ਬੜੇ ਦੇਸ਼ ਭਗਤ ਡਾਕਟਰ ਸਤਪਾਲ ਸਾਡੇ ਵਿਚ ਮੌਜੂਦ ਨਹੀਂ ਹਨ। ਐਂਜ ਮੈਂ ਪਹਿਲੀ ਵਾਰ ਚੀਫ਼ ਮਿਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਦੇ ਹਰਫ਼ ਹਰਫ਼ ਦੀ ਤਾਈਦ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹਾਂ। ਡਾਕਟਰ ਸਾਹਿਬ ਸਚ ਮੁਚ ਕੁਰਬਾਨੀ ਦਾ ਮੁਜੱਸਮਾ ਸਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਉਸ ਵੇਲੇ ਕੁਰਬਾਨੀ ਕੀਤੀ ਜਦੋਂ ਕੁਰਬਾਨੀ ਦੇ ਬਦਲੇ ਅਸੈਂਬਲੀ ਦੀ

[ਸਰਦਾਰ ਗੋਪਾਲ ਸਿੰਘ]

ਮੈਂਬਰੀ, ਸਪੀਕਰੀ ਯਾ ਵਜ਼ਾਰਤ ਨਹੀਂ ਬਲਕਿ ਤਕਲੀਫ਼ਾਂ, ਜੇਲ੍ਹ ਅਤੇ ਫਾਂਸੀ ਮਿਲਦੀ ਸੀ। ਉਹ ਉਸ ਵੇਲੇ ਅਤੇ ਫੇਰ ਵੀ ਹਮੇਸ਼ਾ ਚਟਾਣ ਵਾਂਗੂੰ ਮਜ਼ਬੂਤ ਰਹੇ ਅਤੇ ਦੇਸ਼ ਭਗਤੀ ਦੀ ਮਿਸਾਲ ਕਾਇਮ ਕਰ ਗਏ। ਮੈਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ 1931 ਵਿਚ ਪਹਿਲੇ ਪਹਿਲ ਮਿਲਿਆ ਜਦੋਂ ਮੈਂ ਅਮਰੀਕਾ ਤੋਂ ਆਇਆ ਸੀ। ਉਸ ਤੋਂ ਬਾਦ 1954 ਤੀਕਰ ਮੈਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਇਹਤਰਾਮ ਦੇ ਕਾਬਲ ਲੀਡਰ ਸਮਝਦਾ ਰਿਹਾ। ਮੇਰੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਜ਼ਾਤੀ ਤੁਅੱਲਕਾਤ ਸਨ ਅਤੇ ਮੈਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਬਹੁਤ ਨੇੜੇ ਹੋ ਕੇ ਵੇਖਿਆ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਬੇਸ਼ੁਮਾਰ ਖੁਬੀਆਂ ਤੋਂ ਸਭ ਵਾਕਿਫ਼ ਹਨ ਅਤੇ ਸਪੀਕਰ ਦੇ ਤੌਰ ਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਜਿਹੜੀਆਂ ਸ਼ਾਨਦਾਰ ਰਵਾਯਾਤ ਕਾਇਮ ਕੀਤੀਆਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਵੀ ਸਭ ਤਾਰੀਫ਼ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਪੱਸ ਮੈਂ ਚੀਫ਼ ਮਿਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਦੀ ਤਾਈਦ ਕਰਦਿਆਂ ਹੋਇਆਂ ਇਸ ਤਹਰੀਕ ਦੀ ਹਿਮਾਇਤ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਅਜ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਯਾਦ ਵਿਚ ਅਜਲਾਸ ਮੁਲਤਵੀ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਜਾਵੇ।

ਸਰਦਾਰ ਚੰਨਣ ਸਿੰਘ ਧੂਤ (ਟਾਂਡਾ) : ਡਿਪਟੀ ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ,

ਅਜ ਦਾ ਦਿਨ ਸਾਡੇ ਲਈ ਬਹੁਤ ਅਫਸੋਸ ਦਾ ਦਿਨ ਹੈ ਕਿ ਸਾਡੇ House ਦੇ ਸਦਰ ਸਾਡੇ ਕੋਲੋਂ ਹਮੇਸ਼ਾ ਲਈ ਜੁਦਾ ਹੋ ਗਏ ਹਨ। ਡਾਕਟਰ ਸਾਹਿਬ ਸਾਡੇ House ਦੀ ਕੁਰਸੀ ਨੂੰ ਸਜਾਂਦੇ ਸਨ ਅਤੇ ਇਸ ਦੀ ਕਾਹਵਾਈ ਨੂੰ ਬੜੀ ਖੁਬੀ ਨਾਲ ਚਲਾਉਂਦੇ ਸਨ। ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਮੈਂ ਸਮਝਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਸਿਆਸੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੇ ਦੋ ਪਹਿਲੂ ਬੜੇ ਨੁਮਾਇਆਂ ਤੌਰ ਤੇ ਨਜ਼ਰ ਆਉਂਦੇ ਹਨ।

ਪਹਿਲੀ ਚੀਜ਼ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਦੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇਸ਼ ਭਗਤਾਂ 'ਚੋਂ ਸਨ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਆਜ਼ਾਦੀ ਦੇ Heroes ਕਿਹਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਪੰਜਾਬ ਵਿਚ ਉਸ ਵੇਲੇ ਕੋਮੀ ਤਹਰੀਕ ਵਿਚ ਹਿੱਸਾ ਲਿਆ ਜਦ ਗੁਲਾਮ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਵਿਚ ਆਜ਼ਾਦੀ ਦਾ ਨਾਂ ਲੈਣਾ ਇਕ ਗੁਨਾਹ ਸਮਝਿਆ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਉਸ ਵੇਲੇ ਆਜ਼ਾਦੀ ਦਾ ਨਾਂ ਲੈਣਾ ਫਾਂਸੀ ਦੇ ਰਸੇ ਨੂੰ ਚੁੰਮਣਾ ਸੀ ਤੇ ਜੇਲ੍ਹ ਦੇ ਅੰਦਰ ਸੜਨਾ ਸੀ। ਡਾਕਟਰ ਸਤਪਾਲ ਅਤੇ ਡਾਕਟਰ ਕਿਚਲੂ ਉਹ ਅਦਮੀ ਸਨ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ Rowlett Act ਜਿਹੇ ਕਾਲੇ ਕਾਨੂੰਨ ਨੂੰ challenge ਕੀਤਾ। ਪਹਿਲ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਫਾਂਸੀ ਦੀ ਸਜ਼ਾ ਹੋਈ ਪਰ ਪਿਛੋਂ ਉਮਰ ਕੈਦ ਵਿਚ ਬਦਲ ਦਿਤੀ ਗਈ। ਉਸ ਵੇਲੇ ਬੱਚੇ ਬੱਚੇ ਦੀ ਜ਼ਬਾਨ ਤੇ ਇਹ ਲਫਜ਼ ਹੁੰਦੇ ਸਨ ਕਿ ਅਸੀਂ ਡਾਕਟਰ ਸਤਪਾਲ ਤੇ ਡਾਕਟਰ ਕਿਚਲੂ ਨੂੰ ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਲਾਟ ਬਨਾਉਣਾ ਹੈ। ਉਸ ਵੇਲੇ

ਲਾਟ ਬਣਨਾ ਬੜੀ ਚੀਜ਼ ਸਮਝੀ ਜਾਂਦੀ ਸੀ। ਇਸ ਗਲ ਤੋਂ ਪਤਾ ਲਗਦਾ ਹੈ ਕਿ ਡਾਕਟਰ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਗੁਲਾਮ ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਆਜ਼ਾਦੀ ਲਈ ਕਿੰਨੀ ਕੁਰਬਾਨੀ ਦਿਤੀ ਸੀ।

ਜੂਜੀ ਵੀਜ਼ ਡਾਕਟਰ ਸਾਹਿਬ ਦੇ ਬਾਰੇ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਆਪਣੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿਚ ਸਿਰਫ ਅੰਗਰੇਜ਼ਾਂ ਦੇ ਖ਼ਿਲਾਫ ਹੀ ਲੜਾਈ ਨਹੀਂ ਲੜੀ ਬਲਕਿ ਕਾਂਗਰੇਸ ਦੀ ਸ਼ਾਨ ਨੂੰ ਕਾਇਮ ਰੱਖਣ ਲਈ ਬੜਾ ਕੰਮ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਡਾਕਟਰ ਸਾਹਿਬ ਉਹ ਸ਼ਖਸ ਸਨ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਪੰਜਾਬ ਵਿਚ ਕਾਂਗਰੇਸ ਦਾ ਝੰਡਾ ਹਮੇਸ਼ਾ ਉੱਚਾ ਰੱਖਿਆ ਹੈ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਉਸ ਵੇਲੇ ਲਾਲਾ ਲਾਜਪਤ ਰਾਏ ਦਾ ਮੁਕਾਬਲਾ ਕੀਤਾ ਜਿਸ ਵੇਲੇ ਇਸ ਕੰਮ ਲਈ ਹੋਰ ਕੋਈ ਤਿਆਰ ਨਹੀਂ ਸੀ ਹੋ ਸਕਦਾ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਆਪਣੀ Community ਦੀ ਕੋਈ ਪਰਵਾਹ ਨ ਕੀਤੀ ਪਰ ਕਾਂਗਰੇਸ ਨੂੰ ਪੰਜਾਬ ਵਿਚ ਜ਼ਿੰਦਾ ਰੱਖਿਆ। ਇਹ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਹੀ ਬਦੌਲਤ ਸੀ ਕਿ ਅੰਗਰੇਜ਼ ਪੰਜਾਬੀਆਂ ਦੀ ਜੱਦੋਬੰਦੀ ਨਹੀਂ ਸੀ ਤੋੜ ਸਕਿਆ।

ਡਾਕਟਰ ਸਾਹਿਬ ਬਹੁਤ ਚਿਰ ਪੰਜਾਬ ਕਾਂਗਰੇਸ ਦੇ ਸਦਰ ਰਹੇ ਅਤੇ ਇਸ ਕਰਕੇ ਕਿਸੇ ਹੋਰ ਪੰਜਾਬੀ ਦੇਸ਼ ਭਗਤ ਨੂੰ ਐਨਾ ਮਾਨ ਹਾਸਲ ਨਹੀਂ ਜਿੰਨਾ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਡਾਕਟਰ ਸਾਹਿਬ ਸਾਰੇ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਦੇ ਬਹੁਤ ਬੜੇ Leader ਸਨ ਪਰ ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਕੌਮੀ ਲਹਿਰ ਦੇ ਤਾਂ ਉਹ Hero ਸਨ। ਇਹ ਬੜਾ ਹੀ ਚੰਗਾ ਹੋਇਆ ਸੀ ਕਿ ਨਵੀਂ Constitution ਬਣਨ ਤੋਂ ਬਾਦ ਅਸਾਂ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਪਹਿਲੀ Assembly ਦਾ Speaker ਚੁਣਿਆ। ਇਹ ਇਨ੍ਹਾਂ ਲਈ ਇਕ ਮੌਜੂਹ ਇੱਛਤ ਸੀ। ਸਚ ਪੁਛੋ ਤਾਂ ਇਹ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਹਕ ਸੀ। ਫੇਰ Speaker ਬਨ ਕੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਇਸ ਖੂਬੀ ਤੇ ਢੰਗ ਨਾਲ ਅਸੈਂਬਲੀ ਦਾ ਕੰਮ ਚਲਾਇਆ ਕਿ ਇਥੇ ਕਦੇ ਕੋਈ ਗਲਤਫਹਿਮੀ ਜਾਂ ਝਗੜਾ ਨਹੀਂ ਸੀ ਰਿਹਾ। Opposition ਨੂੰ ਇਹ ਹਮੇਸ਼ਾਂ accommodate ਕਰਦੇ ਸਨ। ਇਹ ਸਾਡੀਆਂ ਸਾਰੀਆਂ ਸ਼ਿਕਾਇਤਾਂ ਸੁਣਦੇ ਸਨ ਤੇ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਦੂਰ ਕਰਦੇ ਸਨ। ਇਹ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਹੀ ਸ਼ਾਨ ਸੀ ਕਿ ਸਾਡੇ ਨਾਲ ਕੋਈ ਵਾਧਾ ਘਾਟਾ ਨਹੀਂ ਸੀ ਹੁੰਦਾ। ਮੈਂ ਸਮਝਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਡਾਕਟਰ ਸਾਹਿਬ ਦੇ ਕੰਮ ਨੇ ਸਾਡੇ House ਦੀ ਸ਼ਾਨ ਤੇ Dignity ਨੂੰ ਦੂਣਾ ਕਰ ਦਿਤਾ ਸੀ।

ਡਾਕਟਰ ਸਾਹਿਬ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇਸ਼ ਭਗਤਾਂ ਚੋਂ ਸਨ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਆਪਣਾ ਕੁਝ ਬਣਾਇਆ ਨਹੀਂ ਬਲਕਿ ਗਵਾਇਆ ਹੀ ਹੈ ਖਾਸ ਕਰਕੇ financial ਤੌਰ ਤੇ। ਜਿਥੋਂ ਤਕ ਮੇਰਾ

[ਸਰਦਾਰ ਵੰਨਣ ਸਿੰਘ ਸੂਤ]
 ਤੇ ਮੇਰੀ party ਦਾ ਸਬੰਧ ਹੈ, ਸਾਡੇ ਤਾਕਤ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਬੜੇ ਚੰਗੇ ਸਨ।
 ਅਸੀਂ ਸਮਝਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਜੁਦਾ ਹੋ ਜਾਣ ਨਾਲ House ਨੂੰ ਇਕ ਬੜੀ
 ਭਾਰੀ ਸਟ ਲਗੀ ਹੈ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੋ ਬੰਦਾਂ ਨਾਲ ਮੇਂ ਮੁਖ ਮੰਤਰੀ ਸਾਹਿਬ ਦੀ ਤਹਰੀਬ
 ਦੀ ਲਫਜ਼ ਬਲਫਜ਼ ਤਾਈਦ ਕਰਦਾ ਹਾਂ।

ਚੀਧਰੀ ਭੀ ਚੰਦ (ਬਹਾਦੁਰਗੜ੍ਹ) : ਸਾਹਿਬੇ ਸਦਰ! ਜਿਸ ਅਚਾਨਕ ਤੌਰ ਪਰ ਹਮਾਰੇ ਸਪੀਕਰ
 ਸਾਹਿਬ ਦੀ ਮੌਤ ਹੁਈ ਹੈ ਉਸ ਤੋਂ ਅੱਜ ਯਹਾਂ ਬੈਠੇ ਯਹ ਏਹਸਾਸ ਨਹੀਂ ਹੋਤਾ ਕਿ ਵਹ ਸਚਮੁਚ ਅੱਜ ਕੁਸੀਂ
 ਪਰ ਨਹੀਂ। ਅਫਸੋਸਾਂ ਤੋਂ ਇਨ੍ਹੇਂ ਬੜੇ ਆਦਮੀ ਦੀ ਮੌਤ ਪਰ ਹਰੇਕ ਕੋ ਹੋਤਾ ਹੈ ਲੇਕਿਨ ਅਗਰ ਮੌਤ
 ਅਚਾਨਕ ਹੋ ਜਾਏ ਤੋਂ ਅਫਸੋਸਾਂ ਆਰ ਭੀ ਜ਼ਯਾਦਾ ਹੋਤਾ ਹੈ। ਪਿਛਲੇ session ਮੇਂ
 ਯਹ ਕਿਸੀ ਕੋ ਏਹਸਾਸ ਨ ਥਾ ਕਿ ਅਗਲੇ session ਮੇਂ ਡਾਕਟਰ ਸਾਹਿਬ ਨ ਹੁੰਗੇ।
 ਉਨ ਦੀ ਸੇਹਤ ਬਹੁਤ ਅੱਚੜੀ ਥੀ। ਉਨ ਦੀ ਅਚਾਨਕ ਮੌਤ ਕਾ ਹਮੇਂ ਬਹੁਤ ਅਫਸੋਸਾਂ ਹੈ। ਜਾਂ ਕੁਝ
 Chief Minister ਸਾਹਿਬ ਆਰ ਦੂਸਰੇ ਸਾਹਿਬਾਨ ਨੇ ਫ਼ਰਮਾਯਾ ਹੈ ਮੈਂ ਉਨ ਤੋਂ
 ਲਫਜ਼ ਬਲਫਜ਼ ਇਤਫ਼ਾਕ ਰਖਤਾ ਹੂੰ। ਪੈਹ ਠੀਕ ਹੈ ਕਿ ਡਾਕਟਰ ਸਾਹਿਬ ਪੰਜਾਬ ਕੇ ਹੀ ਨਹੀਂ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਕੇ
 ਬਹੁਤ ਬੜੇ Leader ਥੇ। ਵੇ ਜਲੀਯਾਂਵਾਲਾ ਬਾਸ਼ ਕੇ Hero ਥੇ। ਉਨ੍ਹੋਂਨੇ ਅਪਨੀ ਤਮਾਸ਼
 ਜਿੰਦਗੀ ਕੌਮ ਕੇ ਲਿਯੇ ਕੁਰਬਾਨ ਕਰ ਦੀ।

ਸਾਹਿਬੇ ਸਦਰ! ਮੈਂ ਸਚ ਅੱਜ ਕਰਤਾ ਹੂੰ ਕਿ ਜਬ ਤਕ ਵੇ ਕੁਸੀਂ ਪਰ ਥੇ opposition
 ਸਮਝਤੀ ਥੀ ਕਿ ਅਗਰ ਕੋਈ ਰਿਯਾਯਤ ਹੁਈ ਤੋਂ ਵਹ opposition ਕੋ ਹੋਗੀ। ਉਨ੍ਹੋਂਨੇ
 House ਦੀ dignity ਕੋ ਹਮੇਸ਼ਾ ਕਾਯਮ ਰਖਾ ਆਰ ਏਸੀ ਰਿਵਾਯਤ ਪੈਦਾ ਕਰ ਦੀ
 ਕਿ ਅਗਰ ਹਮ ਉਨ ਪਰ ਚਲਤੇ ਰਹੇ ਤੋਂ House ਦੀ ਇਜ਼ਤ ਹਮੇਸ਼ਾ ਬੜਤੀ ਰਹੇਗੀ।
 ਕੱਥੀ ਕੱਥੀ ਨਾਰਾਜ਼ ਹੋ ਜਾਤੇ ਥੇ ਲੇਕਿਨ ਉਨ ਦੀ ਨਾਰਾਜ਼ਗੀ ਬਹੁਤ ਜਲਦ ਦੂਰ ਹੋ ਜਾਯਾ ਕਰਤੀ ਥੀ।
 ਦੋ ਮਿਨਟਾਂ ਕੇ ਲਿਯੇ ਨਾਰਾਜ਼ ਹੋਤੇ ਆਰ ਫਿਰ ਮੈਂਬਰਾਂ ਕੇ ਸਾਥ ਪ੍ਧਾਰ ਤੋਂ ਬਾਤਾਂ ਕਰਨੇ ਲਗਤੇ। ਵਹ ਹਰੇਕ
 ਮੈਂਬਰ ਦੀ ਸ਼ਿਕਾਯਤ ਕੋ ਸੁਨਤੇ ਥੇ ਆਰ ਉਸੇ ਦੂਰ ਕਰ ਦੇਤੇ ਥੇ। ਅਗਰ ਕੋਈ ਮੈਂਬਰ ਯਹ ਕਹਤਾ ਕਿ ਉਸੇ
 ਵਕਤ ਨਹੀਂ ਮਿਲਾ ਤੋਂ ਉਸੇ ਸਬ ਬਾਤ ਸਮਝਾ ਦੇਤੇ ਥੇ। ਵੇ ਕਿਸੀ ਕੋ ਯਹ ਮੌਕਾ ਨ ਦੇਤੇ ਥੇ ਕਿ ਵਹ ਉਨ ਤੋਂ ਨਾਰਾਜ਼
 ਹੋ। ਹਮ ਸਬ ਕੋ ਉਨ ਦੀ ਮੌਤ ਕਾ ਬਹੁਤ ਅਫਸੋਸਾਂ ਹੈ। ਇਨ ਸ਼ਬਦਾਂ ਕੇ ਸਾਥ ਮੈਂ Chief Minister
 ਸਾਹਿਬ ਦੀ ਤਹਰੀਕ ਦੀ ਸਾਈਦ ਕਰਤਾ ਹੂੰ।

ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ ਮੋਤਾ ਸਿੰਹ ਘਾਨਸ਼ਪੁਰੀ (ਆਦਮਪੁਰ) : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ! ਡਾਕਟਰ ਸਤ੍ਧਪਾਲ ਦੀ ਮੌਤ
 ਤੋਂ ਨ ਸਿਰਫ਼ ਪੰਜਾਬ ਯਾ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਕੋ ਸਦਮਾ ਪਹੁੰਚਾ ਹੈ ਬਲਕਿ ਇਸ ਦੁਨਿਯਾ ਕੋ ਵਹ ਸਦਮਾ ਪਹੁੰਚਾ ਹੈ ਜੋ
 ਸਿਧਾਸਿਧਾਤ ਮੇਂ ਇਨਕਲਾਬੀ ਨਜ਼ਰਿਯੇ ਤੋਂ ਦੁਨਿਯਾ ਕੋ ਆਗੇ ਲੇ ਜਾਨੇ ਵਾਲੇ ਇਨਸਾਨਾਂ ਦੀ ਕਮੀ ਤੋਂ
 ਪਹੁੰਚਾ ਕਰਤਾ ਹੈ। ਏਸੇ ਇਨਸਾਨ ਦੀ ਕਮੀ ਇਸ ਮੌਕੇ ਪਰ ਜਬ ਕਿ ਦੁਨਿਯਾ ਕੋ ਏਸੇ ਇਨਸਾਨਾਂ ਦੀ ਖਾਸ
 ਜ਼ਰੂਰਤ ਹੋ ਜੋ ਸਚਾਈ ਪਸੰਦ ਹੋਂ, ਜੋ ਖੇਖੀਫ਼ੀ ਤੋਂ, ਦਲੇਰੀ ਤੋਂ, ਬਹਾਦੁਰੀ ਤੋਂ ਜੁਰਅਤ ਤੋਂ ਆਗੇ ਲੇ ਜਾਨੇ ਕੇ
 ਲਿਯੇ ਅਪਨਾ ਸਬ ਕੁਝ ਨਿਸ਼ਾਨ ਕਰ ਦੇਨੇ ਵਾਲਾ ਹੋ; ਬਹੁਤ ਸਹਸੂਸ ਹੋਤੀ ਹੈ। ਇਸ ਜੁਮਰਾ ਮੇਂ ਡਾਕਟਰ
 ਸਤ੍ਧਪਾਲ ਕਾ ਨਾਮ ਆਤਾ ਹੈ। ਤਖ਼ਤ ਰਖਨੇ ਵਾਲੇ, ਦੁਨਿਯਾ ਕੋ ਅਪਰ ਲੇ ਜਾਨ ਵਾਲੇ
 ਇਨਸਾਨਾਂ ਮੇਂ ਤੋਂ ਮੈਂ ਸਮਝਤਾ ਹੂੰ ਕਿ ਪੰਜਾਬ ਮੇਂ ਸੁਰਗੀਯ ਲਾਲਾ ਲਾਜਪਤ ਰਾਧ ਕੇ ਬਾਦ ਡਾਕਟਰ ਸਤ੍ਧਪਾਲ
 ਹੀ ਥੇ ਜਿਨ੍ਹੋਂਨੇ ਪੰਜਾਬ ਕੇ ਵਕਾਰ ਕੋ ਅੱਜਾ ਕਿਆ ਹੈ। ਸਿਧਾਸੀ ਦੁਨਿਯਾ ਮੇਂ ਬਤੌਰ Journalist ਕੇ
 ਆਰ ਮੁਕਰਰ ਕੇ ਡਾਕਟਰ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਏਕ ਅਹੰਮ ਪਾਟ ਅਦਾ ਕਿਆ। ਸਿਧਾਸੀ ਜਿੰਦਗੀ ਮੇਂ ਉਨ੍ਹੋਂਨੇ ਅਪਨਾ
 ਕਾਮ ਨਿਹਾਯਤ ਤਦਬੁਰ ਕੇ ਸਾਥ ਨਿਭਾਯਾ।

एक चीज का जिक्र मैं खास तौर पर करना चाहता हूँ। वह यह है कि डाक्टर सत्यपाल की ज़िन्दगी के पहले हिस्से के मुताबिक जब वह शुरू शुरू में सियासत के मैदान में उतरे मुझे पूरी पूरी जानकारी है क्योंकि मेरा उन के साथ शुरू से ही गहरा सम्बन्ध रहा है। उन का ताल्लुक पहले सरदार भगत सिंह के पिता सरदार हरकिशन सिंह से हुआ और उस के बाद सरदार अजीत सिंह के साथ उन के गहरे ताल्लुकात पैदा हुए। उस वक़्त से उन के ख्यालात revolutionary होते गये। वह आज़ादी की जद्दोज़हद में आगे बढ़ना चाहते थे लेकिन balanced तरीके से। वह अपना दमागी तवाजुन कभी छोड़ना पसन्द नहीं करते थे। इस बात पर मेरा उन से इखतलाफ था। मैं उन्हें कहा करता था कि जल्दी से आगे कदम बढ़ाना चाहिये लेकिन वह मुझे कहा करते थे कि ऐसा करने से ग़लती कर बैठोगे और गढ़े में गिर जाओगे। अब मैं उन की बातों को सोचता हूँ और महसूस करता हूँ कि वह जो कुछ कहा करते थे बिल्कुल बुरस्त था। मैंने उन के साथ 1914 से लेकर 1919 तक काम किया है और सियासी तहरीकों में हम दोनों शाना बशाना काम करते रहे हैं। गो रंजीत अखबार का बतौर Editor मैं खुद काम किया करता था लेकिन वह इस अखबार में मुझ से ज्यादा मज़मून लिखते थे। और मैं उन से काफी सबक लिया करता था। बतौर मुकर्रर के वह हमेशा balance minded थे और अपनी बलबला अंग्रेज़ तकरीरों से सोसाईटी को बुलाव दिया करते थे। जब पंजाब में 1914-15 में तूफ़ान बरपा हुआ तो हमारे साथी पंडित जगत राम जी ने जो इस वक़्त हमारे दरमियान बैठे हुए हैं अपने आप को कुर्बानी के लिये पेश किया। वह ज़माना बहुत खतरनाक था। अंग्रेज़ उस वक़्त हमारी ज़िन्दगी को ख़त्म कर देना चाहता था। हिंदुस्तान की ज़िन्दगी ख़त्म हो जानी थी अगर पंजाब ख़त्म हो जाता। सदियों से पंजाब हिंदुस्तान का Gateway रहा है और हिंदुस्तान की इस ने-राहनुमाई की है। 1914-15 में पंजाब के नौजवानों ने मुल्क की आज़ादी के लिये बड़ी बड़ी कुर्बानियाँ कीं। इस सिलसिले में डाक्टर सत्यपाल और डाक्टर किचलू का नाम पंजाब की तारीख में हमेशा याद रहेगा। इन्होंने आगे बढ़ कर मार्शल ला (Martial Law) के दिनों में बड़ी बड़ी कुर्बानियाँ कीं। उन दिनों Rowlett Act पास हुआ जिस में लोगों को न अपील, न वकील और न ही दलील का मौका दिया जाता था। पुलिस जिस को चाहती थी गिरफ़्तार कर लेती थी। अगर अमृतसर की सारी Tragedy को अपनी आंखों के सामने लाया जाये तो उन दिनों जो काम हमारे स्वर्गीय डाक्टर सत्यपाल ने किया उस की कोई शक्ति बिना सहायता किये नहीं रह सकता। उन्होंने पंजाब के अन्दर एक नई ज़िन्दगी पैदा कर दी और अपनी सियासी सरगमियों से अंग्रेज़ की हुकूमत के तख्ते को हिला दिया। जहाँ आज हम स्वर्गीय डाक्टर सत्यपाल की मौत पर बतौर असेम्बली का स्पीकर होने के इज़हारे अफ़सोस करते हैं तो इस पर मुझे खुशी भी होती है और यह कहता हूँ कि डाक्टर सत्यपाल, तू ने पंजाब को बचाने के लिये एक भारी कदम उठाया। अगर तू ने कुर्बानी न की होती तो पंजाब कब का ख़त्म हो गया होता।” जब मैं आज उन्हें homage pay करता हूँ तो मुझे उन का बतौर दोस्त ख्याल आता है, सियासी साथी के तौर पर ख्याल आता है। जब वह यहां स्पीकर की कुर्सी पर विराजमान होते थे तो मेरे साथी उन से कहा करते थे कि आप सरदार मोता सिंह को खास रियायत देते हैं। लेकिन मैं समझता हूँ कि वह इस ख्याल से मुझे बोलने के मामले में खास रियायत देते थे क्योंकि वह समझते थे कि कहीं उन के साथी इनकलाबपसन्द का दिल टूट न जाये। हमें इस किस्म का आदमी मिलना मुश्किल है।

[प्रोफेसर मोती सिंह आनन्दपुरी]

जब हम कांग्रेस से अलहदा हुए तो स्वर्गीय डाक्टर सत्यपाल की हमेशा यही कोशिश रही कि हमें फिर वापस आने के लिये प्रमादा करें। इन खूबियों के होते हुए भी उन की मौत से हमारे दिलों पर गहरा असर हुआ है। जहां तक उन की इखलाकी ज़िन्दगी का ताल्लुक है वह जो कहते थे सच कहते थे। वह सत्य के पालन करने वाले सत्यपाल थे। इस हाऊस के सब माननीय मੈम्बरों ने उन की ज़िन्दगी से शिक्षा हासिल की है। जो कुछ उन्होंने मੈम्बरों को कहना होता था वह साफ तौर पर कह देते थे और अगर किसी वक्त किसी को चैम्बर में घूरते थे तो बाहिर उन के चेहरे पर हर वक्त मुस्काहट रहती थी। हमारे पंजाब को फ़र्र है कि लैजिस्लेटिव असैम्बली का स्पीकर एक Revolutionary स्पीकर था और आज़ादी के बाद इसी पंजाब ने इस हाऊस की कुर्सी की जीनत को बढ़ाने के लिये ऐसा आदमी इस गद्दी पर बिठाया। Revolutionary आदमी के पास दौलत नहीं होती। ऐसा इनक़िलाब पसन्द इनसान सच्चाई के लिये अपनी ज़िन्दगी कुर्बान कर देता है। स्वर्गीय डाक्टर सत्यपाल ने गरीबी की ज़िन्दगी बसर की। उन के पास मकान भी नहीं था। साल 1947 के बाद में ने डाक्टर गोपी चंद जो उस वक्त मुख्य मंत्री थे से कहा कि डाक्टर सत्यपाल के पास रहने के लिये मकान भी नहीं तो उन्होंने जवाब दिया कि उन्हें इस बात का पता नहीं था नहीं तो वह अपना मकान उन के लिये खाली करवा देते। इतने इस्तिलाफ़ होते हुए भी डाक्टर गोपी चंद के दिल में उन की काफी इज्जत थी। डाक्टर साहिब की मौत न सिर्फ़ इस हाऊस के लिये बल्कि तमाम सियासी दुनिया के लिये रंजो अलम पैदा करने वाली है। ज़ाती तौर पर मुझे ऐसा मालूम होता है जैसे मेरे Blood Relation की मृत्यु हो गई है। जो ख़यालत हमारे लीडर श्री भीम सेन सच्चर ने ज़ाहिर किये हैं मुझे उन से पूरा इत्फ़ाक़ है और मैं इस Motion की ताईद करता हूँ।

श्री मनी राम (फ़तहवादा) : डिप्टी स्पीकर साहिब! यहां पुरुषों को श्रद्धांजलि आंसुओं के कतरों से नहीं बल्कि हृदय की शुभ कामनाओं और भावनाओं से दी जाती है। डाक्टर सत्यपाल अंग्रेज़ी साम्राज्य के बागी और आज़ाद हिंदुस्तान के मेमार थे। आज उन जैसे नेता का हिंदुस्तान में न होना दुःख का मुकाम है। वैसे तो भारत को पहले ही बहुत से महापुरुषों से जुदाई मिल चुकी है। मगर अब कुछ दिल टिकाया जा रहा था कि हमारे महान पुरुष इस कौम की नय्या को किनारे ले जायेंगे। लेकिन हमारी यह बदकिस्मती है कि यहां ऐसे अच्छे इनसानों की बहुत कमी थी और इस समय हम ने एक और महापुरुष को अपने आप से जुदा होते देखा।

डाक्टर सत्यपाल साहिब आज़ादी के ज़रनैल थे। वह इस हाऊस के स्पीकर थे। उन्होंने अपनी तरफ से हर मुमकिन कोशिश की कि आप के इस ऐवान की इज्जत और बकार को कायम रखा जाए और कभी यह सवाल पैदा नहीं हुआ कि कोई सदस्य Opposition का है या दूसरी पार्टी का है। यह ठीक है कि हर आदमी का अपना अपना नुक़ता निगाह हुआ करता है। यह हो सकता है कि मैं एक बात को सच्ची समझ कर स्पीकर साहिब से सहमत न हूँ और वह भी अपने असूलों पर डटे रहते थे। हमारे Hon. Leader सच्चर साहिब ने डाक्टर सत्यपाल जी के बारे में जो प्रस्ताव पेश किया है मैं उस का स्वागत करता हूँ। डाक्टर साहिब की नागहानी मौत से जो कमी पैदा हो गई है उस का सब को दुःख है। परन्तु उन के लिये सही

अर्द्धांजली यह होगी कि उन के पैगाम को देश के हर कोने तक पहुंचाया जाए और जिन असूलों से वह माने जाते हैं, जिन के लिये उन का सम्मान किया जाता है और जिन के इनहराफ से आज भारत के बच्चे बच्चे को दुःख होता है, उन को आगे ले जाया जाए। यह वे असूल हैं जिन का सहारा ले कर कौम आगे बढ़ सकती है। जो शहीद होते हैं उन की मौत कौम की जिन्दगी होती है।

जिन में रकसां है रूहे आजादी,
राकवे इनकलाब हैं वह लोग ।
मौत उन से पनाह मांगती है,
जिन्दगी का शबाब है वह लोग ।

उपाध्यक्ष महोदय : साहिबान! जिन ख्यालात का इजहार **Leader of the House** और दूसरी पार्टियों के नुमायन्दों की तरफ से इस ऐवान में किया गया है मैं भी अपने आप को उन अफसोस और रंज के ख्यालात के साथ शामिल करता हूं। पिछले इजलास में हम देखते थे कि डाक्टर साहिब की सेहत बहुत अच्छी थी और वह बहुत बशाश नज़र आते थे। उस वक़्त हमें कभी यह ख्याल नहीं आता था कि वह इतनी जल्दी हम से जुदा हो जायेंगे। उनकी अचानक मौत सारे सूबे में बड़े रंज और अफसोस के साथ सुनी गई। जिसने सुना उस ने आंसू बहाए। बच्चा बच्चा उन की जुदाई को महसूस कर रहा था। डाक्टर साहिब देश के उन पुराने सिपाहियों में से थे जो दिन-ब-दिन हम से जुदा होते जा रहे हैं। पंजाब की हिस्टरी के साथ और खास तौर पर पंजाब की **Freedom Movement** के साथ डाक्टर साहिब का केवल साधारण सम्बन्ध नहीं है बल्कि वह इस के बानी समझे जाते हैं। लाला लाजपत राय के बाद अगर पंजाब में किसी को बाहिद लीडर होने का फ़ख़्र हासिल था तो वह डाक्टर सत्यपाल जी थे। जो जो कुरबानियां उन्होंने कीं, जिन तकलीफों का उन्होंने सामना किया और जिस दलेरी और बहादुरी से अंग्रेज़ी साम्राज्य का उन्होंने मुकाबला किया वह हरेक हिंदुस्तानी के लिये बाइसे फ़ख़र है। आम पंजाबी उन को और उन के कारनामों को देख कर एक रीशनी के मीनार की तरह उन से रीशनी लेता है। डाक्टर साहिब न केवल एक पुराने और मशहूर नेता थे बल्कि पंजाब के जितने मौजूदा लीडर हैं खाह वह सरकारी बेंचों पर बैठे हैं खाह मुखालिफ़ बेंचों पर, उन्होंने अपनी सियासी तरबियत डाक्टर साहिब के चरणों में बैठ कर पाई थी और उन से राहुनुमाई ली थी। इसलिये उन की जुदाई का दुःख सब को हुआ है जहां तक उन के स्पीकर होने का सम्बन्ध है हम दो साल से देखते आए हैं कि जिस कमिशन से इस हाऊस की शान और इस के हकूक को उन्होंने बुलन्द किया वह योग्य है। अगर किसी मੈम्बर को कभी कोई शिकायत होती थी तो वह ग़ौर से सुनते थे और दोबारा उस को उस मौजूह पर कभी भी शिकायत का मौका नहीं मिलता था।

आप को यह भी याद है कि जब वह गवालियार में स्पीकरज़ कानफ़रेंस (**Speaker Conference**) में शामिल हुए थे तो वहां जो शान और इज्जत पंजाब के स्पीक को हासिल हुई वह अपनी मिसाल आप थी। डाक्टर साहिब तमाम स्पीकरज़ में एक खा है सियत रखते थे और ऐसा कोई मामला नहीं था जो उन की राय के बग़ैर होता था। **Subject Committee** में या दूसरी जगहों पर हर एक फ़ैसला उन की राय से होता था

[उपाध्यक्ष महोदय]

स्पीकर के तौर पर भी उन की राए की बड़ी कदर की जाती थी। इस के इलावा उन की वैसे भी एक महान नेता के तौर पर बड़ी इज्जत की जाती थी। वहां मालूम होता था कि डाक्टर साहिब की इज्जत उतनी हमारे अपने सूबे में नहीं जितनी कि बाहर के सूबों में है।

डाक्टर साहिब के बेवक्त मौत के कारण हम से जुदा हो जाने का हर एक मैम्बर को बहुत अफसोस है। मैं भी अपने आप को इस के इज्जहार में शामिल करता हूं। इस से पहले कि मैं कुछ और अर्ज करूं मैं सभा को वह शोक प्रस्ताव पढ़ कर सुनाना चाहता हूं जो प्रेस गैलरी कमेटी की तरफ से जिस के प्रधान श्री बाली हैं आया है।

"This meeting of the Press Gallery Committee places on record its deep sense of grief at the sad and sudden demise of the Speaker of the Punjab Legislative Assembly, the hon. Dr. Satyapal.

In Dr. Satyapal while the State Legislature has lost its illustrious Speaker and the Punjab State has lost a worthy and patriotic son, the members of the Press Gallery of the Punjab Legislative Assembly have lost a friend who always upheld the dignity of the profession. In him, the members of the Press Gallery always found a sympathiser who showed to the Press the utmost courtesy and accommodation and was found always willing to do whatever was possible to help the members of the profession individually as also collectively. The Press will always remember with a sense of deep gratitude the interest which Dr. Satyapal, as Speaker of the Punjab Legislative Assembly took in the welfare of the Members of the Press Gallery in particular and the Members of the profession in general.

The Press Gallery Committee, while praying for the departed soul, wishes to be associated with the tributes that may be paid by the Members of the Legislature on the floor of the House and requests the Acting Speaker to kindly convey this Resolution to the Punjab Legislative Assembly and to the Members of the bereaved family."

इस के अलावा देश के कोने २ से नेताओं, विधान सभाओं के अध्यक्षों और राज्यों के मुख्य-मन्त्रियों से पैगाम आये हैं। असेम्बली से क्रेडेरियेट के कर्मचारियों ने भी, जिन के साथ स्वर्गीय डाक्टर साहिब बड़ी रवादारी और मुहब्बत के साथ पेश आते थे, बड़ा शोक प्रकट किया है।

पेशतर इस के कि जैसे कि Leader of the House ने प्रस्ताव किया है, सभा adjourn हो, मैं अर्ज करूंगा कि हम सब दो मिनट के लिये चुप चाप खड़े हो कर प्रार्थना करें कि परमात्मा उन की आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

(All the Members then rose in their seats and stood silent for two minutes.)

The Assembly then adjourned till 2 p.m. on Tuesday, the 18th May, 1954.

Punjab Legislative Assembly Debates

18th May, 1954.

VOL. II—No. 2

OFFICIAL REPORT



CONTENTS

Tuesday, 18th May, 1954.

	PAGES
Starred Questions and Answers ..	1—16
Unstarred Questions and Answers ..	16-17
Adjournment Motions ..	17—25
<u>Election of Speaker</u> ..	26—45
<u>Election of Deputy Speaker</u> (Date fixed) ..	45
Panel of Chairmen ..	ib
Leave of absence ..	45-46
Announcement by Secretary re-certain Bills Bill(s)— ..	46-47
The Punjab Requisitioning and Acquisition of Immovable Property (Amendment)— (Consideration clause by clause) ..	47—71

CHANDIGARH :

Printed by the Controller of Printing & Stationery, Punjab
1954

Price : Re. 0-7-0

PUNJAB LEGISLATIVE ASSEMBLY

Tuesday, 18th May, 1954.

The Assembly met in the Assembly Hall, Sector 10, Chandigarh Capital, at 2 p.m. of the Clock. Mr. Deputy Speaker (Sardar Gurdial Singh Dhillon) in the Chair.

STARRED QUESTIONS AND ANSWERS.

MOTOR ACCIDENT ON DELHI-ALWAR ROAD.

***3524. Shri Babu Dayal Sharma :** Will the Chief Minister be pleased to state:—

(a) whether he is aware of the fact that a serious motor accident occurred on the 4th February, 1954, on the Delhi-Alwar Road near Ferozepore-Jhirka ; if so :—

(i) the facts of the accident and the total number of casualties that occurred together with the number of those injured seriously ; (ii) whether the injured persons were removed to the hospital ; if so, how long after the said accident and the nature of medical aid provided to them with the details thereof ; (iii) the registration number of the truck which collided with the bus ;

(b) the action, if any, taken by the police authorities concerned, in the matter ?

Shri Prabodh Chandra (Chief Parliamentary Secretary) : (a) Yes,

(i) On 4th February, 1954, at about 11 a.m., Bus No. RJI-2817, collided with truck No. PNG-633, near Maholi, some 3 miles from Police Station Ferozepore-Jhirka, on Alwar-Delhi Road. The Bus was loaded with passengers and belonged to the Bus Association Limited, Alwar. It was proceeding from Alwar to Delhi. The truck belonging to Jaipur Golden Transport Company, was going in the opposite direction towards Alwar. As a result of this collision, 2 persons died on the spot, 1 died in Civil Hospital, Gurgaon and another two died in Alexandra Hospital, Alwar. Five passengers sustained grievous injuries and 8 received simple injuries.

(ii) Yes. The report of the incident reached the police at 11-30 a.m. and the Station House Officer of Ferozepore-Jhirka at once rushed to the spot and all the injured were removed to the Civil Dispensary, Ferozepore-Jhirka, in a special bus by 12-30 p.m. for medical aid. Civil Surgeon, Gurgaon, who happened to be on tour at Ferozepore-Jhirka also reached the Dispensary on hearing the news and rendered first aid to the injured with the assistance of the Sub-Assistant Surgeon, Gurgaon, Incharge Civil Dispensary. Thereafter, 7 persons were removed to the Civil Hospital, Gurgaon, on the same evening for further treatment. Another 7 persons were removed after first-aid to Alexandra Hospital, Alwar, by their relatives. Three persons whose injuries were minor, were discharged after first-aid had been rendered to them at Ferozepore-Jhirka.

[Chief Parliamentary Secretary]

(iii) The registration No. of the Truck involved in this accident is PNG-633.

(b) Tehla Ram, driver of the Bus and Puran Singh, driver of the Truck, have been prosecuted under sections 304-A/279/337/338 I.P.C., and cases are pending in the court of A.D.M., Gurgaon.

राओ गजराज सिंह : क्या मैं पूछ सकता हूँ कि उन को हस्पताल पहुँचाने का इन्तज़ाम accident से कितने घंटे बाद किया गया ?

चीफ़ पार्लियामेंटरी सैक्रेटरी : 11 बजे accident हुआ 11-30 बजे उस की इतलाह मिली और 12-30 बजे तक सब को वहाँ से ले जाया गया ।

राओ गजराज सिंह : क्या आप उन अफसरों के नाम बतायेंगे जो उन को ले गये थे ?

चीफ़ पार्लियामेंटरी सैक्रेटरी : इस का नोटिस दीजिये ।

राओ गजराज सिंह : जो इतलाह गवर्नमेंट को भेजी गई अगर वह गलत साबित हो तो क्या आप उन अफसरों के खिलाफ action लेंगे जिन्होंने गलत इतलाह दी ?

पंडित श्री राम शर्मा : क्या मैं पूछ सकता हूँ कि accident की इतलाह किस महकमे के दफ़्तर में पहुँची और जो लोग बस ले कर पहुँचे वह किस महकमे से ताल्लुक रखते थे ?

Chief Parliamentary Secretary : As I have stated in my reply to the original question, the report of the incident reached the police at 11-30 a.m. and the Station House Officer of Ferozepore-Jhirka at once rushed to the spot and all the injured were removed to the Civil Dispensary, Ferozepore-Jhirka in a special bus by 12-30 p.m. for medical aid.

AUDIT REPORT OF LOHARU STATE'S FINANCES.

***3529. Shri Ram Kumar Bidhat :** Will the Chief Minister be pleased to lay on the Table the Audit Report of the Loharu State's finances at the time of its merger into the State of Punjab ?

Shri Prabodh Chandra (Chief Parliamentary Secretary) : It is regretted that it is not in the public interest to disclose the information asked for.

MERGER OF LOHARU STATE IN PUNJAB.

***3530. Shri Ram Kumar Bidhat :** Will the Chief Minister be pleased to state—

(a) the total amount received by State Government from the Government of Loharu at the time of the merger of Loharu State in the Punjab ;

(b) whether the amount so received was earmarked for some specific purpose according to the terms of the Instrument of Accession of the Loharu State to the Indian Union ; if so, the purpose for which it was earmarked ?

Shri Prabodh Chandra (Chief Parliamentary Secretary) : (a)
Rs 4,30,961-11-6.

(b) No ; the instrument of Accession of the Loharu State does not contain any such terms. The second part of the question does not arise.

पंडित श्री राम शर्मा : क्या मैं पूछ सकता हूँ कि जो रकम लोहारू के merge होने पर बची क्या वह किसी खास काम के लिये earmark की गई थी ?

मुख्य मंत्री : जो इतलाह सवाल मैं मांगी गई थी वह दे दी गई है। अगर माननीय मंत्री कुछ और जानकारी हासिल करना चाहते हैं तो उस के लिये नोटिस दें।

REINSTATEMENT OF AN OFFICIAL OF GOVERNMENT LIVE-STOCK FARM, HISSAR.

***3489. Pandit Shri Ram Sharma** : Will the Minister for Development be pleased to state—

(a) whether any dismissed official of the Dairy Section of the Government Live-stock Farm, Hissar, has been reinstated in service as a result of some subsequent enquiry ; if so, the name of the official and the charges on which he was first dismissed and the reasons for his reinstatement ;

(b) the officer who held the said enquiry ?

Sardar Partap Singh Kairon : (a) It is a fact that S. Gurbhagwant Singh, Ex-Farm Overseer (Dairy) Government Live stock Farm, Hissar, was reinstated on an appeal preferred by him to Government. He was dismissed from Service by the Director, Animal Husbandry on account of the following charges :—

(i) Embezzlement of Government money to the extent of Rs 2,367-4-0 being the value of separated milk fed to calves.

(ii) Maintenance of improper record.

(iii) Mis-statement.

(iv) Negligence in duties entrusted to him.

He was reinstated because :—

(i) the charges could not be proved.

(ii) this dismissal was found against the rules.

(b) No regular enquiry was held.

पंडित श्री राम शर्मा : क्या मैं पूछ सकता हूँ कि जब पहली मर्तबा उस के खिलाफ charges लगा कर उसे dismiss किया गया तो क्या वह charges उस वक्त साबित हो चुके थे ?

विकास मंत्री : अफसोस है कि आप ने मेरा जवाब अच्छी तरह नहीं सुना। मैंने कहा है कि—

He was reinstated because the charges could not be proved and his dismissal was found against the rules. No regular enquiry was held.

पंडित श्री राम शर्मा : मैं तो यह पूछता हूँ कि जब इस अफसर को पहले पहल charge लगा कर 'dismiss' किया गया तो क्या महकमे ने यह समझ लिया था कि वह charges साबित हो चुके हैं और क्या अपील होने पर वह गलत हो गये ?

मंत्री : अपील होने पर ही तो पता चला कि वह गलत थे।

पंडित श्री राम शर्मा : क्या अपील होने पर दूसरी inquiry के लिये कोई अफसर बाकायदा मुकर्रर किया गया था ?

मंत्री : जो inquiry की गई थी वह गलत साबित हुई। उस के बाद और कोई inquiry नहीं की गई।

पंडित श्री राम शर्मा : क्या inquiry कराने की बजाए वजीर साहिब ने खुद ही सरसरी तहकीकात के बाद फैसला कर दिया था कि charges गलत हैं ?

मंत्री : जब आप पहले ही इतना कुछ जानते हैं तो फिर पूछने की क्या जरूरत है ?

उपाध्यक्ष महोदय : आप सवाल पूछें suggestion न दें।

पंडित श्री राम शर्मा : मैं suggestion नहीं दे रहा बल्कि वजीर साहिब के दिये गये जवाब के बारे में तसल्ली करने के लिये पूछ रहा हूँ कि क्या यह ठीक है कि महकमे के Director ने तहकीकात करके उसे dismiss किया था मगर वजीर साहिब ने किसी से inquiry कराए बिना या किसी का कोई बयान लिये बगैर खुद ही उसे reinstate कर दिया ?

Minister : No regular enquiry was held. The action taken by the Director of Veterinary Services was wrong. Therefore, the Minister had every right to reinstate him.

पंडित श्री राम शर्मा : मैं मंत्री साहिब के right को challenge नहीं करता। मैं तो केवल यह दरियाफत करना चाहता हूँ कि क्या पहली बाकायदा inquiry के बाद कोई दूसरी बाकायदा inquiry हुई।

मंत्री : मेरे पास इसका जवाब है।

TOBACCO PLANTATION, HOSHIARPUR DISTRICT

*3519. Shri Jagat Ram Bhardwaj : Will the Minister for Development be pleased to state—

(a) the total acreage of land under tobacco plantation during the years 1950-51, 1951-52, 1952-53, respectively in Hoshiarpur Tehsil ;

(b) whether the acreage of such plantation is decreasing ; if so, the causes thereof ?

Sardar Partap Singh Kairon : (a)—

	Acres
1950-51	.. 400
1951-52	.. 200
1952-53	.. 200

(b) Part (i) Yes.

Part (ii) 1.—

Increase in Excise Duty on tobacco.

(2) Larger area than before put under food crops in pursuance of the Grow-More-Food policy, which meant corresponding reduction in the area under tobacco plantation.

(3) Migration of Muslim cultivators.

ਸ਼੍ਰੀ ਯੁਗਤ ਰਾਮ ਖਾਰਵਾਜ : ਕਥਾ ਸੰਤ੍ਰੀ ਸਾਹਿਬ ਕਤਾਯੋਗੇ ਕਿ ਧਹ ਕਸੀ ਯੋ ਹਰ ਸਾਲ ਕਾਕਿਯਾ ਹੁੰਦੇ ਹਨ ਇਸ ਦੀ ਕਯਹ ਧਹ ਭੀ ਹਨ ਕਿ Inspectors ਕੀਰਾ ਲੋਗੋਂ ਕੋ harass ਕਰਕੇ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ ।

ਸੰਤ੍ਰੀ : ਹੋ ਸਕਤਾ ਹੈ ਓਹੋ ਅਫ਼ਸਰੋਂ ਕੀ harassment ਭੀ ਏਕ ਕਾਰਣ ਹੋ ।

ਸਰਦਾਰ ਚੰਨਣ ਸਿੰਘ ਧੁਤ : ਇਸ ਰਕਬੇ ਦੇ ਘਟ ਹੋ ਜਾਣ ਨਾਲ ਕੀ ਸਾਡੀ ਸਰਕਾਰ ਹਿੰਦ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਲਿਖਣ ਵਾਸਤੇ ਤਿਆਰ ਹੈ ਕਿ Excise Duty ਘੱਟ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇ ?

ਮੰਤ੍ਰੀ : ਹਿੰਦ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਲਿਖਿਆ ਤਾਂ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ । ਪਰ ਅਸਾਂ ਕੋਈ ਹਾਸ-ਹੀਣੀ ਗੱਲ ਨਹੀਂ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਾਂ ਸਰਕਾਰ ਹਿੰਦ ਦੀ ਪਾਲਿਸੀ ਸਾਰੇ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਵਾਸਤੇ ਹੈ । ਅਸੀਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਇਹ ਨਹੀਂ ਕਹਿ ਸਕਦੇ ਕਿ ਉਚੇਚੀ ਸਾਡੇ ਵਾਸਤੇ ਹੀ Duty ਘਟ ਕੀਤੀ ਜਾਏ ।

ਪੰਡਿਤ ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਸ਼ਰਮਾ : ਕਥਾ ਧਹ ਰਕਬਾ ਇਸਲਿਯੇ ਤੋ ਕਸ ਨਹੀਂ ਹੁਆ ਕਿ ਸਿਕਲੋਂ ਕੀ ਆਕਾਦੀ ਕਢ ਗਈ ਹੈ ।

ਮੰਤ੍ਰੀ : ਜੇ ਪੰਡਿਤ ਜੀ ਵਰਗੇ ਆਦਮੀ ਵੀ smoke ਨ ਕਰਨ ਤਾਂ ਰਕਬਾ ਤੇ ਆਪੇ ਘਟਦਾ ਹੋਇਆ ।

CO-OPERATIVE LABOUR AND CONSTRUCTION SOCIETY, CHANDIGARH.

*3490. Pandit Shri Ram Sharma : Will the Minister for Irrigation be pleased to state—

(a) whether he is aware of the fact that the members of the Co-operative Labour and Construction Society, Chandigarh, are not getting their wages either properly or in time ; if so, the reasons therefor ;

[Pandit Shri Ram Sharma]

- (b) whether any representation in this connection was received by the officer-in-charge from Shri Ganga Singh, President of the Society, referred to in part (a) above ?

Chaudhri Lahri Singh : The answer to this Assembly Question is not yet ready. The information is being collected and will be supplied to the member as soon as possible.

पंडित श्री राम शर्मा : यह तो चंडीगढ़ का मामला था । इस में देरी क्यों लगे ?

मंत्री : Representations को examine भी तो करना है ।

CO-OPERATIVE BANKS IN THE STATE.

***3518. Shri Jagat Ram Bhardwaj :** Will the Minister for Irrigation be pleased to state—

- (a) the total amount of the working Capital of the Co-operative Banks in the State.
- (b) the total amount subscribed by members of co-operative societies ;
- (c) the total amount of the deposits by the said members ;
- (d) the total amount of loan advanced to the members ;
- (e) the total amount of loans taken by the co-operative banks from other banks ;
- (f) the total amount of deposits of non-members ?

Chaudhri Lahri Singh : —

Rs.

(a) (i) The total amount of the working Capital of Co-operative Banks (i.e. Co-operative Central Institutions)	..	14,68,34,990
(ii) Total amount of the working Capital of all kinds of primary co-operative societies	..	6,17,27,170
(b) the total amount subscribed by members of Co-operative Societies (Paid-up Share Capital)	..	1,92,85,843
(c) and (f) (i) the total amount of deposits by members of Agricultural and Non-Agricultural Co-operative Credit Societies	..	79,40,929
(ii) the total amount of deposits by non-members of Agricultural and Non-Agricultural Co-operative Credit Societies	..	52,16,555

- (iii) the total amount of deposits by members and non-members of other kinds of primary co-operative societies (separate figures in respect of members and non-members are not available) .. 45,98,843
- (d) the total amount of loans advanced to the members of Co-operative Societies .. 2,76,94,054
- (e) the total amount of loans taken by the Co-operative banks from other banks 45,12,896

ALLOTMENT OF LAND IN VILLAGE KALSIAN KALAN, DISTRICT AMRITSAR.

***2169. Sardar Sarup Singh :** Will the Minister for Finance be pleased to state—

- (a) whether any area was made available in Village Kalsian Kalan, Tehsil Patti, District Amritsar, as a result of the re-checking of the land allotment during the year 1953 or 1952 ; if so, its total ;
- (b) whether a representation from Sardar Chanan Singh and others referred to in unstarred Assembly Question No. 339, printed in the list of questions, dated 11th March 1954, was received by the Deputy Commissioner, Amritsar, under Registered Post on 9th January, 1953, which was received in his office on or about 11th January, 1953, for the consolidation of their areas at village Kalsian Kalan ; if so, the action taken by him in the matter while allotting the available area referred to in part (a) above ;
- (c) whether any of the persons referred to in part (b) above were the temporary allottees of Village Kalsian Kalan ; if so, their list ;
- (d) (i) the list of the persons to whom the available area has been allotted or is proposed to be allotted.
- (ii) the area to which each of them is entitled ;
- (iii) the reasons for allotting the area in each case or the basis of the claim put forward by each of them ;
- (iv) the reasons for giving them preference over the persons referred to in part (c) above ;
- (e) whether the allotment of this available area had been made under section 9 of the Chapter IV page 84 of the Land Resettlement Manual ; if not, the reasons therefor ?

Sardar Ujjal Singh : The information is being collected and will be supplied to the Member when ready.

CHILD WELFARE AND HEALTH CENTRES IN THE STATE.

***3357. Shri Ram Chandra Comrade :** Will the Minister for Education be pleased to state the number of maternity child welfare and health centres in each district of the State and the total amount spent by the Government on them during the year 1953 ?

**Shri Jagat Narain : A statement is given below—
STATEMENT**

Number of Health Centres District-wise

Name of district	NUMBER OF HEALTH CENTRES		
	Community Project	Provincial	Non-Provincial
1. Hissar	..	3	..
2. Rohtak	..	2	5
3. Gurgaon	..	3	1
4. Karnal	..	3	2
5. Ambala	..	6	..
6. Simla	..	1	3
7. Kangra	..	6	..
8. Hoshiarpur	..	7	1
9. Jullundur	..	2	..
10. Ludhiana	..	5	9
11. Ferozepore	..	5	8
12. Amritsar	..	5	3
13. Gurdaspur	..	4	2
Total	17	52	34
Grand Total	..	103	

Approximate amount spent by Government on the maintenance of Health Centres in the Punjab during 1953,—Rs. 1,08,340.

NON-ANGLO-INDIAN SCHOOLS IN THE STATE.

***3418. Shri Rala Ram :** Will the Minister for Education be pleased to state the total number of Government Non-Anglo-Indian Schools at present in the State where infants are taught English right from the start ?

Shri Jagat Narain : Three.

पंडित श्री राम शर्मा : कौन असहाब हैं जिन के बच्चे इन तीन स्कूलों में पढ़ते हैं।

मंत्री : जो लोग पैसे खर्च करते हैं उन के बच्चों के लिये इन्तजाम किया जाता है।

पंडित श्री राम शर्मा : क्या यह सरकार की settled policy के मुताबिक है कि जो लोग पैसे दें उन के बच्चों के लिये ऐसा इन्तजाम कर दिया जाये ?

मंत्री : ऐसी बात तो नहीं। लेकिन इस पर सरकार का खर्च कुछ नहीं होता।

REMOVAL OF EXECUTIVE OFFICER, PATTI, DISTRICT AMRITSAR.

***3475. Sardar Sarup Singh :** Will the Minister for Public Works be pleased to state:—

(a) with reference to the reply to part (e) (ii) of Starred Assembly Question No. 2781, printed in the list of questions, dated 9th March, 1954, whether any decision has been taken by the Government in the matter ;

(b) the date since when the case is pending with the Government ?

Sardar Gurbachan Singh Bajwa : (a) Yes.

(b) 18th January, 1954.

REMOVAL OF EXECUTIVE OFFICER, PATTI, DISTRICT AMRITSAR.

***3480. Shri Ram Kishan :** Will the Minister for Public Works be pleased to state with reference to the reply to parts (c) and (d) of starred question No. 2781, during the Budget Session 1954, the reasons for which the resolution of the Municipal Committee, Patti, District Amritsar, was withheld by the Deputy Commissioner, Amritsar, for about two months ?

Sardar Gurbachan Singh Bajwa : Since the irregularities on the basis of which the Municipal Committee, Patti, had proposed to request Government to terminate the services of its Executive Officer were of a vague nature the Deputy Commissioner, Amritsar, considered it necessary to make further inquiries into these before giving his own comments thereon to Government.

पंडित श्री राम शर्मा : क्या इस म्यूनिसिपल कमेटी ने खुद ही Executive Officer को हटाने का फैसला किया था या उसने सरकार को दरखास्त की थी कि इसे हटाया जाये ?

मंत्री : इस बारे में कमेटी ने resolution पास किया था। लेकिन जिस बिना पर Executive Officer को हटाया जा रहा था उस बारे में Deputy Commissioner को कुछ शक था। उन को पूछताछ में देरी लग गई।

AUDIT OBJECTIONS IN THE ACCOUNTS OF MUNICIPAL COMMITTEE, PATTI.

***3481. Shri Ram Kishan :** Will the Minister for Public Works be pleased to state—

(a) whether the accounts of the Municipal Committee, Patti, District Amritsar, for the year 1951-52 and 1952-53, respectively, were audited by the Government Auditors up to 1st April 1954, if so, when ;

[Shri Ram Kishan]

(b) whether any objections were raised by the auditors about these accounts; if so, a copy thereof relating to each of the years referred to above be laid on the Table together with the replies thereto ;

(c) whether the Examiner, Local Funds Accounts has withdrawn any of the objections raised by the auditors, if so, the details of objections that have been withdrawn ?

Sardar Gubachan Singh Bajwa : The information is being collected and it will be supplied to the Member concerned when ready.

SCARCITY OF DRINKING WATER AT LOHARU, DISTRICT HISSAR.

***3531. Shri Ram Kumar Bidhat :** Will the Minister for Public Works be pleased to state —

(a) whether the Government is aware of the acute scarcity of drinking water in Loharu, Tehsil Bhiwani, District Hissar ;

(b) whether any scheme for supplying drinking water to the public has been worked out by the Loharu Town Committee ; if so, the contribution, if any, the Government intends to make towards the cost of such scheme ?

Sardar Gurbachan Singh Bajwa : (a) Yes.

(b) Yes. The matter is under the consideration of Government.

पंडित श्री राम शर्मा : क्या मैं दरियाफत कर सकता हूँ कि क्या कमेटी की तरफ से कोई resolution आ चुका है जिस पर सरकार गौर कर रही है ?

मंत्री : मैं ने कहा है कि complaint आई है। इस के बारे में हमारे Public Health के सुप्रिण्टेंडिंग इंजीनियर साहिब estimate तैयार कर रहे हैं।

पंडित श्री राम शर्मा : क्या इस स्कीम के लिये सरकार कुछ माली इमदाद देगी ?

मंत्री : यह देखना है कि इस बारे में क्या हो सकता है।

पंडित श्री राम शर्मा : क्या सरकार कोई इमदाद करेगी ?

मंत्री : मुमकिन है कि करे।

REGULARIZATION OF MECHANICAL WORKS STAFF.

***3544. Shrimati Sita Devi :** Will the Minister for Public Works be pleased to state whether any provision has been made in the current year's budget for bringing the mechanical works staff of the Public Works Depart-

ment to the regular establishment ; if so, the names of the post which have been thus brought on the regular establishment, and since when ?

Sardar Gurbachan Singh Bajwa: Yes. Provision to meet the extra expenditure involved in bringing the various categories of work-charged establishment (including Mechanical workers) employed on a regular and normal basis in the P.W.D., Buildings and Roads Branch, has been made in the current year's budget. The question as to which of the posts could be brought on to regular establishment within the budget provision is under consideration of Government.

ਸ਼੍ਰੀਮਤੀ ਸੀਤਾ ਦੇਵੀ : ਸੰਤੀ ਸਹੋਦਯ ਨੇ ਬਤਾਯਾ ਹੈ ਕਿ ਸਾਮਲਾ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਦੇ ਡਿਪਾਰਟਮੈਂਟ ਹੈ । ਕੀ ਸਾਨੂੰ ਮੰਨਣਾ ਪਵੇਗਾ ਕਿ ਇਸ ਦੇ ਸੁਤੰਤਰਤਾਵਾਂ rules and regulations ਬਣਾਏ ਜਾਣ ਤੋਂ ਕਿੰਨਾ ਸਮਾਂ ਲੱਗੇਗਾ ?

ਮੰਤਰੀ : ਜਿਹੜੀਆਂ ਅਸਾਮੀਆਂ ਪੱਕੀਆਂ ਕੀਤੀਆਂ ਜਾਣੀਆਂ ਚਾਹੀਦੀਆਂ ਹਨ ਉਸ ਦੇ ਸਬੰਧ ਵਿਚ ਮਹਿਕਮੇ ਵਿਚਾਰ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੈ । ਜਦੋਂ ਮਹਿਕਮੇ ਵਲੋਂ ਸਿਫਾਰਸ਼ਾਂ ਆਉਣਗੀਆਂ ਉਦੋਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਤੇ ਗੌਰ ਕੀਤਾ ਜਾਵੇਗਾ ।

ਸ਼੍ਰੀਮਤੀ ਸੀਤਾ ਦੇਵੀ : ਕੀ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਨੇ ਮਹਿਕਮੇ ਦੀ ਹਿਦਾਯਤ ਕੀ ਹੈ ਕਿ ਕਹਿ ਫੇਲਾਂ ਫੇਲਾਂ ਜਾਰੀ ਰੱਖੇ ਤਕ ਅਪਣੀ ਤਜਵੀਜ਼ੋਂ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਦੇ ਪਾਸ ਭੇਜ ਦੇ ?

ਮੰਤਰੀ : ਮਹਿਕਮੇ ਨੂੰ ਲਿਖਿਆ ਗਿਆ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਆਪਣੀਆਂ ਤਜਵੀਜ਼ਾਂ ਛੇਤੀ ਤੋਂ ਛੇਤੀ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਕੋਲ ਭੇਜ ਦੇ ।

STRENGTH OF OFFICIALS EMPLOYED IN LABOUR DEPARTMENT IN THE STATE.

***3355. Shri Ram Chandra Comrade :** Will the Minister for Labour be pleased to state—

- (a) the total number of officials in the Labour Department, in each category, employed so far against permanent vacancies ;
- (b) the number of officials in each category who have completed their probationary periods along with the dates when the periods in question had been completed by each one of them ;
- (c) the number of officials in each category who have been confirmed and the reasons for the non-confirmation of the rest ?

Chaudhri Sundar Singh : A statement is given below—

Serial No.	Category	Part (a) Part (b)			Part (C)		
		No. of permanent posts	No. of employed	No. who have completed probation period	Dates when probation period expired	No. of officials who have been confirmed	Reasons
1	2	3	4	5	6	7	8
1	Superintendent	1	Nil	Nil	Nil ..	Nil	
2	Head Assistant	1	1	1	12th April, 1951 ..	1	
3	Head Clerks	2	2	2	4th November, 1950 12th April, 1952	2	
4	Assistants ..	4	3	3	9th May, 1951 .. 1st February, 1951 11th July, 1953	3	
5	Stenographer	1	1	1	2nd November, 1950	1	
6	Senior Clerks	9	9	8	4th November, 1951 4th November, 1950 8th November, 1950 18th November, 1950 22nd December, 1950 22nd January, 1952 12th April, 1951 11th July, 1953	8	
7	Junior Clerks	31	29	19	23rd November, 1951 23rd November, 1951 1st December, 1951 2nd December, 1951 3rd December, 1951 3rd December, 1951 5th December, 1951 7th December, 1950 9th December, 1950 20th December, 1951 21st December, 1951 1st January, 1951 13th February, 1952 25th April, 1952 2nd May, 1952 25th May, 1952 12th June, 1951 23rd July, 1953 28th July, 1953	19	
CHIEF INSPECTOR OF FACTORIES' OFFICE STRENGTH							
1	Head Clerk	1	1	1	15th February, 1946	1	
2	Senior Clerks	2	2	2	15th February, 1946 20th December, 1948	2	

Serial No.	Category	Part (a)			Part (b)	Part (c)	
		No. of permanent posts	No. of employed	No. who have completed probation period	Dates when probation period expired	No. of officials who have been confirmed	Reasons
1	2	3	4	5	6	7	8
3	Junior Clerks	7	7	5	22nd November, 1947 20th December, 1948 24th May, 1951 1st August 1951 19th August, 1951	5	
CHIEF INSPECTOR OF SHOPS AND COMMERCIAL ESTABLISHMENT OFFICE							
1	Head Clerk	1	1	1	20th December, 1948	1	
2	Junior Clerks	3	3	3	20th December, 1948 28th May, 1951	2	One official could not be confirmed for want of medical certificate of fitness.
FIELD STAFF							
1	Factory Inspector	3	2	2	20th December, 1948 19th March, 1953	2	
2	Labour Inspectors	13	12	12	1st August, 1951 10th October, 1951 14th October, 1951 14th October, 1951 11th October, 1951 15th October, 1951 14th October, 1951 11th October, 1951 6th May, 1952 26th May, 1952 29th May, 1952 10th January, 1953	4	Case of remaining 8 Labour Inspectors recommended to Government for confirmation—vide No. Est/3/2635, dated 24th March, 1954
3	Deputy Chief Inspector of Shops	2	2	2	12th May, 1950 17th November, 1950	2	
4	Inspectors of Shops	28	27	22*	20th December, 1948 of 18 Inspectors 14th December, 1949 17th July, 1949 21st July, 1953	..	*One Shri J.D. Mehta recently re-instated by Government vide No. 744-C-LP-54/5914, dated 15th March, 1954.

REPRESENTATION REGARDING GRADES AND ALLOWANCES OF THE
WORKERS OF DHARIWAL MILLS.

***3491. Pandit Shri Ram Sharma :** Will the Minister for Labour be pleased to state—

- (a) whether the Government has received any representation regarding basic wage, annual increment, grades and dearness allowances from the workers of the Dhariwal Mills, District Gurdaspur ; if so, the action, if any taken thereon ;
- (b) whether in the said Mills there exists any difference of treatment between the European and Indian Employees ; if so, what ;
- (c) the total number of disputes referred to and settled so far by the Industrial Tribunal relating to the workers of the said Mills ?

Chaudhri Sundar Singh : (a) Yes. The matter has been referred to the Industrial Tribunal, Punjab.

(b) Government are not aware of any such differential treatment.

(c) (i) No. of disputes referred to the Industrial Tribunal ... 2

(ii) No. of disputes settled ... Nil

पंडित श्री राम शर्मा : सवाल के भाग (ख) में दरियाफ्त किया गया है कि क्या Dhariwal Mills में अंग्रेजों और हिंदुस्तानियों के दरमियान इमत्याजी सलूक किया जाता है। क्या इस किसम की कोई शिकायत गवर्नमेंट के पास पहुंची है और इस के मुताबिक गवर्नमेंट ने कोई तहकीकात कराई है ?

मंत्री : कोई ऐसी शिकायत नहीं पहुंची।

उपाध्यक्ष महोदय : अपना सवाल clear करें।

पंडित श्री राम शर्मा : मेरे कहने का मतलब यह है कि क्या मजदूरों या यूनियन वालों की रुकने गवर्नमेंट के पास कोई शिकायत पहुंची है कि Europeans और हिंदुस्तानी मजदूरों के बीच differential सलूक किया जाता है, अगर ऐसा हो तो क्या इस बारे में गवर्नमेंट ने कोई तहकीकात कराई है ?

मंत्री : गवर्नमेंट के पास कोई ऐसी शिकायत नहीं आई। जहां तक Europeans का तात्लुक है फैक्टरी में Europeans मजदूर नहीं होते। अगर Labour की तरफ से कोई शिकायत आये तो तहकीकात की जाती है।

पंडित श्री राम शर्मा : मैं दरियाफ्त करना चाहता हूँ कि क्या गवर्नमेंट के पास इस किसम की शिकायत किसी ने की कि Dhariwal mills में अंग्रेजों और हिंदुस्तानियों के साथ इमत्याजी सलूक होता है। अगर कोई ऐसी शिकायत मौसूल हुई तो क्या गवर्नमेंट ने इस बारे में कोई पूछताछ की।

Minister : The Government are not aware of any such differential treatment.

पंडित श्री राम शर्मा : बात यह है कि मिनिस्टर साहिब ने जवाब दिया है कि Europeans और हिंदुस्तानीयों के दरमियान कोई इमत्याजी सलूक नहीं होता । मैं यह दरियाफत करना चाहता हूं कि क्या किसी ने इस किसम की शिकायत नहीं की और न पता लगाने की कोशिश की और अगर किसी ने शिकायत की हो कि वहां इमत्याजी सलूक होता है तो क्या गवर्नमेंट ने तहकीकात करके पता लगाया कि वहां Europeans और हिंदुस्तानी मुलाजमों में इमत्याजी सलूक नहीं है ?

मरदार सैन्ट मिथ्य पुउ : बी मेरे भाणजेग मंडी पाठीदाल डेक्टरी दिच गडे मठ डे बिमे ते छुनुं पास प्रिवाडिउ बीडी मी ?

श्रम मंत्री : किसी ने कोई शिकायत नहीं की ।

EMPLOYMENT EXCHANGES.

*3543. Shrimati Sita Devi : Will the Minister for Labour be pleased to state—

(a) the percentage of expenditure contributed by the Punjab Government towards the expenses incurred on the Employment Exchanges in the State ;

(b) the names of the Departments in which applications for recruitment to vacancies are received through these Exchanges ?

Chaudhri Sunder Singh : (a) The Punjab Government is contributing 40 per cent of the expenditure on the Employment Exchanges in this State, the remaining being borne by the Government of India. However, rent for office buildings and hire for fans is paid entirely by State Government.

(b) Vacancies, which are not filled on the advice of the Punjab Public Service Commission and the Subordinate Services Selection Board, are notified by all the Departments of the State to the Employment Exchanges for submission of names of applicants.

श्रीमती सीता देवी : क्या मिनिस्टर साहिब बतायेंगे कि कितनी फी सदी नौकरियां Employment Exchange द्वारा पुर की जाती हैं ?

मंत्री : 75 फी सदी नौकरियां Employment Exchange की माफत पुर की जाती हैं ।

श्रीमती सीता देवी : इस का मतलब यह है कि सिर्फ 25 फी सदी नौकरियां Services Selection Board द्वारा पुर की जाती हैं और 75 फीसदी Employment Exchange वाले पुर करते हैं ।—

मुख्य मंत्री : मैं हैरान हूं कि माननीय Lady member जो लेबर के साथ गहरा ताल्लुक रखती हैं वह इस चीज को गलत तरीके से क्यों समझती हैं । दरखास्तें Employment Exchanges के पास registered होती हैं और recruitment Services Selection Board करता है ।

चौधरी श्री चंद : क्या यह सच है कि अगर कोई आदमी directly apply करे और नौकरी लेना चाहे तो उसे नौकरी नहीं मिल सकती जब तक कि वह employment exchange की मार्फत दरखास्त न दे ?

मुख्य मंत्री : यह बात नहीं ।

UNSTARRED QUESTIONS AND ANSWERS

CULTURABLE AREA UNDER THE COMMAND OF RASULPUR DISTRIBUTARY.

587. Sardar Sarup Singh : Will the Minister for Irrigation be pleased to state—

- (a) the total culturable area under the command of Canal outlet R. D. 107,123, Rasulpur Distributary which irrigates the lands of village Maan, Tehsil Patti, District Amritsar according to the Chakbandi of 1911-12 and 1937-38, respectively, and thereafter;
- (b) whether any representations were received by the Executive Engineer, Jandiala Division, asking for sanctioning the warabandi under Section 68 of the Canal Act, on 16th November, 1952 and 11th December, 1952 from Dharam Singh, Naranjan Singh and other share-holders of the Canal outlet referred to above ; if so, the action, if any, taken in the matter by the Canal authorities ;
- (c) whether the statements of the persons referred to in (b) above were recorded by the Zilladar, Patti, on 29th December, 1953 ; if so, the details thereof ?

Chaudhri Lahri Singh : (a) The total C. C. A. of outlet R. D. 107,123-L, Rasulpur Distributary as per sanctioned chakbandi of 1911-12 is 587 acres and as per proposed chakbandi of 1937-38 is 592 acres.

(b) Yes. An application was received but as sanctioned warabandi under Section 68 of the Canal Act already existed, the applicants were informed that there were no grounds for preparing fresh warabandi.

(c) Yes. The statements of the applicants were recorded who desired that warabandi should be framed on the basis of chakbandi of 1937-38. As, however, chakbandi of 1937-38 has not been implemented, therefore, no warabandi could be prepared on the basis of that chakbandi and the applicants were informed accordingly. The chakbandi proposed in 1937-38 can only be implemented after the channels have been remodelled so as to provide water on the basis of 1937-38 chakbandis.

DISCHARGE OF CANAL OUTLET R. D. 69213/R, KHEM KARAN DISTRIBUTARY.

589. Sardar Sarup Singh : Will the Minister for Irrigation be pleased to state—

- (a) the authorised discharge of canal outlet R. D. 69213/R, Khem Karan Distributary which irrigates the lands of village Asal Autar, Tehsil Patti, District Amritsar ;

- (b) (i) whether any complaint regarding the shortage in the authorised discharge of the outlet under reference was received by the Canal authorities during the last 5 years from Nihal Singh, son of Jawand Singh, Wadhawa Singh, son of Kahan Singh and others of village Asal Autar ; if so, when and whether any enquiry was made on this complaint ;
- (ii) the result of this enquiry and the action taken so far by the Canal authorities in the matter ;
- (c) if the answer to part (a) above be in the negative, the time since when this case is pending ;
- (d) whether the actual discharge of this outlet was ever recorded by the Sub-Divisional Officer (Canal) after spot inspection during the last 2 years, if so, the date of such inspection and the actual discharge recorded each time ?

Chaudhri Lahri Singh : (a) Authorised discharge is 1.99 Cs.

(b) (i) No.

(ii) Does not arise.

(c) Does not arise in view of (b) (i) above :

(d) Discharge was observed by the Sub-Divisional Officer on 16th May, 1954 and found to be 1.99 Cs. against 1.99 Cs. authorised.

ADJOURNMENT MOTIONS

पंडित श्री राम शर्मा : स्पीकर साहिब ! गुज़ारिश यह है कि मैं ने तहरीक इलतवा का नोटिस दिया हुआ है और अगर इस तहरीक को आज की बजाए कल ज़ेरे बहिस लाया जाये तो मुझे कोई एतराज़ न होगा क्योंकि आज स्पीकर का चुनाव होना है।

उपाध्यक्ष महोदय : मैं चाहता हूँ कि आप Adjournment motions आज ही पेश कर दें और मैं इन्हें बतौर Deputy Speaker ही dispose of कर दूंगा। मैंने आप को एक लिस्ट भेजी है जो कि आप को मिल गई होगी। अब हम एक तहरीक इलतवा को ले कर उस की admissibility के बारे में फैसला करते जायेंगे। I don't think you have any objection to this.

Adjournment motion के Notices पर जो नम्बर दिया हुआ है वह मेरी list के मुताबिक है। आप की पहली motion "Official interference in the conduct of the recent elections to the Punjab Legislative Council" के बारे में है। मैं इस बारे में यह अज़ करना चाहता हूँ कि इस के लिये एक और remedy available है; वह है election petition की। इस लिये इस मामले पर motion for adjournment स्वीकार नहीं हो सकती। दूसरे यह motion general terms में पेश की गई है। हमारे Rules में यह प्रबन्ध है कि ऐसी motion "must relate to a single

[उपाध्यक्ष महोदय]

specific matter" इस के इलावा इस बारे में petition हो सकती है। इन वजूहात की बिना पर यह Adjournment motion rule out की जाती है।

पंडित श्री राम शर्मा : On a point of order, Sir. अगर मुझे थोड़ी opportunity rules के बारे में कुछ कहने की मिल जाए, तो आप को अपनी opinion form करने में मदद मिलेगी।

उपाध्यक्ष महोदय : जब तक कोई Adjournment motion admit न हो जाए आप कोई argument नहीं दे सकते।

Sardar Chanan Singh Dhut : On a point of order, Sir.....

Chief Minister : You cannot raise any point of order when the Speaker is on his legs. (Noise)

महाराज चंनट सिंह धुत : ਉਹ ਹੁਣ ਬੈਠ ਗਏ ਹਨ। ਮੈਂ ਇਹ ਬਹਿਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਜਦੋਂ ਬੈਠੀ adjournment motion rule out ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਘਟ ਤੋਂ ਘਟ ਹਾਊਸ ਨੂੰ ਪਤਾ ਤਾਂ ਲੱਗੇ ਕਿ ਉਹ motion ਕਿਸ ਬਾਰੇ ਹੈ।

उपाध्यक्ष महोदय : This cannot be done under the rules. पंडित श्री राम शर्मा की दूसरी Adjournment Motion Reorganisation Advisory Committee के बारे में है। मेरा जवाब यह है कि इस के लिये remedy is open—organizations or individuals can send in their view point to Government as also to the Committee. इसलिये यह motion out of order है।

तीसरी Adjournment Motion "Failure of the timely medical help at Chandigarh to the late lamented Speaker of this House, Dr. Satya Pal" के बारे में है। यह भी out of order है क्योंकि bringing in the Speaker directly or remotely is undesirable.

पंडित श्री राम शर्मा : On a point of order, Sir. जनाब, मैं आप की ruling को चैलेंज नहीं करता हूँ। मैं तो आप का ध्यान rules की तरफ दिलाना चाहता हूँ। Rules of procedure के सक्का 12 पर Rule 53 में यह लिखा है—

"Leave to make a motion for an adjournment of the business of the Assembly for the purpose of discussing a definite matter of urgent public importance must be asked for after questions and before the list of business for the day is entered upon."

मेरी गुज़ारिश यह है कि Question Hour खत्म हो चुका है। अब मुझे इस rule के अनुसार leave मांगने के लिये कहा जाए।

उपाध्यक्ष महोदय : यह तब हो सकता है जब motion in order हो। मैंने काफ़ी सोच विचार करने के बाद इन motions को rule out किया है। किसी motion को in order या out of order करार देना मेरा फ़र्ज है।

पंडित श्री राम शर्मा : मैं किसी ruling को challenge नहीं कर रहा। मैं तो यह अर्ज करता हूँ कि कायदों की पाबन्दी नहीं हो रही है। मुमकिन है कि मेरी बात सुन कर आप इसे मान लें। सक्का 12 पर जो 52 से 57 नम्बर तक rules हैं वह adjournment motions के बारे में हैं। Rule 52 leave के बारे में है। उस में लिखा है—

“Leave to make a motion for an adjournment of the business of the Assembly for the purpose of discussing a definite matter of urgent public importance must be asked for after questions and before the list of business for the day is entered upon.”

मेरी गुजारिश यह है कि Question Hour अब खत्म हो चुका है। इस लिये अब मुझे leave of the House मांगने की आज्ञा दी जाये।

उपाध्यक्ष महोदय : मैंने आप से पूछा था कि आप अपनी motions move करते हैं या नहीं। आपने कहा कि मैं move करता हूँ। तब मैं ने उनको rule out किया है।

पंडित श्री राम शर्मा : मैंने जिन motions के notices दिये हैं वह मैं one by one move करूँगा। अगर आप उनको reject कर देंगे तो वह खत्म हो जायेंगे। अगर आप उनको पेश करने की इजाजत दे देंगे तो इस के बाद का procedure follow किया जाएगा।

उपाध्यक्ष महोदय : मैंने आप से कहा था कि आप adjournment motion आज ही पेश कर दें। आपने कोई एतराज न किया। तब मैंने यह ruling दी है।

Shri Dev Raj Sethi : On a point of Order, Sir. I may also be allowed to speak on this point. It involves the question of privileges of the House. Sir, I can say from my parliamentary experience of the last 20 years that the procedure that has been followed in respect of adjournment motions during that period is this. When a motion is made, the mover is allowed an opportunity to show that the motion is (i) definite ; (ii) urgent and (iii) of public importance. After he has put his case before the House, it is for the Speaker to give a ruling whether that motion is definite or not or whether that is urgent or not.....

वित्त मंत्री : डिप्टी स्पीकर साहिब, मैं आप का और सभा के सदस्यों का ध्यान Rule 53 और 54 की ओर दिखाना चाहता हूँ। नियम 53 में तो सिर्फ यह है कि अगर इजाजत मांगनी है तो Question Hour के बाद मांगी जाए। मेरे दोस्त इस के साथ ही अगर नियम 54 को भी पढ़ें तो उन्हें पता लगेगा कि अगर मामला जिस के बारे में adjournment motion का नोटिस दिया गया है in order होगा तो स्पीकर साहिब उस के बारे में मैम्बर की ओर से दिये गये statement को पढ़ेंगे। इस नियम में यह नहीं रखा गया कि मैम्बर साहिब इजाजत लेने के समय प्रस्ताव सम्बन्धी statement को खुद पढ़ सकते हैं। इजाजत लेते समय तो मैम्बर साहिब सिर्फ यह कह सकते हैं कि उन्हें adjournment motion पेश करने की आज्ञा दी जाए। इस के बाद स्पीकर

[वित्त मंत्री]

साहिब ने फैसला करना होता है कि वह मामला in order है या नहीं। अगर स्पीकर साहिब उसे in order समझेंगे तो पढ़ देंगे। मैम्बर साहिब के उसे खुद पढ़ने का सवाल ही पैदा नहीं होता। जब मामला in order ही नहीं समझा गया हो और न ही statement पढ़ा गया हो, तो किसी मैम्बर को एतराज उठाने का, कि यह urgent है या नहीं है, definite है या नहीं है सवाल ही पैदा नहीं होता। डिप्टी स्पीकर साहिब इस वक्त जो पोजीशन ले रहे हैं बिल्कुल ठीक हैं।

मुख्य मंत्री : Sir, may I, with your permission, make a submission in this connection ? डिप्टी स्पीकर साहिब, adjournment motions के लेने का यह तरीका जो इस वक्त आप follow कर रहे हैं इतना पुराना है, कि मैं इस विषय पर बोलने की कोई खास जरूरत महसूस नहीं करता था परन्तु अब जब कि सवाल खड़ा हो चुका है और आपने बोलने की आज्ञा भी दे दी है तो मैं कुछ अर्ज कर देना चाहता हूँ। इस के मुताबिक दो जरूरी चीजें हैं। पहली तो यह कि leave मांगी जाए। Rule 53 में provide किया गया है कि leave कब मांगी जाए। उस से पहले नियम 52 में 'method of asking leave' दिया हुआ है। वह यह है:—

“ A member asking for leave must, not less than half an hour before the commencement of the sitting of the day, hand to the Speaker a written statement of the matter proposed to be discussed.”

Leave लेने का वक्त Question Hour के बाद होता है। उस वक्त नोटिस देने वाला मैम्बर motion को वापिस लेना चाहे तो ऐसा कर सकता है। अगर वह ऐसा न करे तो स्पीकर साहिब को देखना होता है कि वह motion in order है या नहीं। अगर Chair उसे out of order declare कर दे, तो उस के पढ़ने का सवाल ही पैदा नहीं होता क्योंकि वह move ही नहीं की जा सकती। साल बसाल यही तरीका चला आ रहा है। आज rules की नये सिरे से interpretation करना ठीक न होगा।

उपाध्यक्ष महोदय : इस पर मजबूत बहस की कोई जरूरत नहीं। पहिले स्पीकर के पास adjournment motion का नोटिस आता है, अगर वह इसे in order समझें तो move करने की इजाजत देते हैं, वरना नहीं। इस बात पर बहस नहीं की जा सकती कि किसी adjournment motion को out of order क्यों करार दिया गया।

पंडित श्री राम शर्मा : माननीय वित्त मंत्री जी ने जो बहुत देर से विधान-सभा के मेम्बर चले आ रहे हैं अपनी राय जाहिर की है और मुख्य मंत्री जी ने भी rules की अपनी interpretation सभा के सामने रखी है। चूँकि यह मामला मेरी एजेंडर पर शुरू हुआ था, इस लिये मैं आप की आज्ञा से सभा का थोड़ा सा और समय लेना चाहता हूँ ताकि position clear हो जाए। जहाँ तक 'method of asking leave' का तात्लुक है House of Commons से ले कर छोटी से छोटी legislature

में भी यह कायदा है कि अधिवेशन शुद्ध होने से लग-भग आधा घंटा पहले मੈम्बर जो adjournment motion पेश करना चाहता हो उस के सम्बन्ध में एक Statement लिख कर स्पीकर को भेज दे। पंजाब में 15, 20 साल से यह तरीका चला आ रहा है कि जिस मੈम्बर ने नोटिस दे रखा हो वह Question Hour के खत्म होने के बाद सभा को अपनी motion पढ़ कर सुनाए। उस के बाद स्पीकर अपना फैसला देता है कि motion in order है या नहीं। हमेशा यही दस्तूर चला आता रहा है। पहले सभा के सामने वह तहरीक आती थी जिस के पेश करने के लिये leave मांगी जाती थी और उस के बाद स्पीकर साहिब अपना फैसला देते थे। दुनिया भर की विधान सभाओं में यही practice है। पंजाब में भी इसी पर अमल होता रहा है। जब rules में कोई definite मनाही नहीं की गई, तो मैं नहीं समझता कि पुराने तरीके पर क्यों न अमल किया जाये.... अच्छा, जनाब, आप पहले सेक्रेटरी साहिब के साथ मशवरा कर लीजिये।

श्री प्रबोध चंद्र : On a point of order, Sir. मैं आप की तबज्जुह पंडित जी के इन शब्दों की ओर दिलाना चाहता हूं 'आप पहले सेक्रेटरी साहिब से मशवरा कर लीजिये, This is a reflection on the dignity of the chair.'

पंडित श्री राम शर्मा : मेरे ख्याल में इन शब्दों पर किसी को एतराज नहीं हो सकता। सेक्रेटरी साहिब का काम ही स्पीकर साहिब का वक्तन-फवक्तन मशवरा और advice देना है।

उपाध्यक्ष महोदय : मैं नहीं चाहता कि इस मामले पर मज्जीद बहस हो। दो साल से यही procedure रायज है। आप adjournment motions के नोटिस पहले भी भेजते रहे हैं और स्पीकर साहिब इन के सम्बन्ध में यही procedure follow करते आये हैं। Parliament में भी इसी दस्तूर पर अमल होता है। माननीय मੈम्बर किसी वक्त मेरे कमरे में आकर देख सकते हैं कि Parliament में भी यही procedure follow किया जाता है।

श्री देव राज सेठी : On a point of order, Sir.

उपाध्यक्ष महोदय : इस मामले पर अब और बहस की इजाजत नहीं दी जा सकती।

श्रीमती शर्मो देवी : On a point of order, Sir. अगर कोई साहिब खड़े हो कर point of order पर बोलना चाहें तो उन को बोलने की इजाजत होनी चाहिये। आप को इन्हें बिठा देने से पहले उन की बात तो सुन लेनी चाहिये।

सरदार चैन्ट सिੰਘ ਧੂਤ : On a point of order, Sir. ਗੱਲ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਹਾਉਸ ਵਿਚ ਜਦੋਂ ਵੀ ਕੋਈ ਮੈਂਬਰ ਬਹਿਸ ਮੁਬਾਹਿਸੇ ਦੀ ਸ਼ਕਲ ਵਿਖਤਿਆਰ ਕਰਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਸ ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਕਰਨ ਲਈ House of Commons ਦੇ rulings ਪੜ੍ਹ ਕੇ ਸੁਣਾ ਦਿਤੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਮੰਗੀ ਅਰਥਾਤ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ rulings ਨੂੰ ਗਲਤ interpret ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਸਾਡੇ ਨਾਲ ਕੀ ਸੰਬੰਧ ਹੈ ?

उपाध्यक्ष महोदय : गुज़ारिश यह है कि न सिर्फ House of Commons का बल्कि पार्लियामेंट का भी यही procedure है जो हम ने इस्तिथार कर रखा है। इस लिये इस बात पर लम्बी चौड़ी बहस की जरूरत नहीं है।

पंडित श्री राम शर्मा : श्रीमान् जी, मैं यह जानना चाहता हूँ कि आपने adjournment motion No. 3 को किस बिना पर out of order करार दिया है ? इस की क्या वजह है ?

Mr. Deputy Speaker . The hon. Member is challenging my rulings.

पंडित श्री राम शर्मा : यदि आप ऐसा कहते हैं तो मैं कोई Adjournment Motion पेश नहीं करना चाहता। जब तक मुझे इस बात का पता न लग जाये कि आप ने Adjournment Motion No. 3 और 4 को किस वजह पर out of order करार दिया है। मैं कोई भी adjournment motion पेश नहीं करना चाहता।

उपाध्यक्ष महोदय : हमारी पार्लियामेंट का यही procedure है और फिर House of Commons में भी यही practice रायज है।

पंडित श्री राम शर्मा : स्पीकर साहिब ! मेरी गुज़ारिश है कि आप कृपा करके यह बतलाइये कि Adjournment Motion No. 3 को किस बिना पर out of order करार दिया गया है ? यह जो लिखा है—

‘The failure of the timely medical help at Chandigarh to the late lamented Speaker of the House. Dr. Satyapal.’

उपाध्यक्ष महोदय : जिस motion पर chair की ruling दी जा चुकी है माननीय सदस्य उसी को बार बार दोहरा रहे हैं। मैं उन से अर्ज करूँगा कि वे बैठ जायें।

पंडित श्री राम शर्मा : जनाव मैं उन rulings के बारे में ही तो पूछना चाहता हूँ।

श्रीमती शन्नो देवी : On a point of order, Sir.

उपाध्यक्ष महोदय : Yes, please.

श्रीमती शन्नो देवी : आप कुर्सी पर विराजमान होंगे तो मैं तभी बोल सकूँगी। मेरा point of order यही है कि या तो आप माननीय सदस्यों को बोलने की इजाजत न दें। और अगर आप उन को बोलने की इजाजत देते हैं तो आप को बैठ जाना चाहिये। होता यह है कि आप भी खड़े रहते हैं और मैम्बर साहिबान भी खड़े हो जाते हैं। यह सदन की रिवायात के विरुद्ध है। इस मामला में घबराने की आवश्यकता नहीं। आप Parliament का procedure देखें और हाऊस आफ कामन्स का procedure भी देखें, बाद में अपनी rulings दें। यही मेरा point of order है। (Voices: It is not a point of order. It is an advice to the Chair).

Mr. Deputy Speaker : The fourth adjournment motion of the hon. Member relates to the failure of the Jail Administration in detecting and preventing the recent riots in the Central Jail, Ambala,

Since the murder has taken place, the matter must be *sub-judice*. I, therefore, rule this adjournment motion out of order.

His fifth adjournment motion is in connection with the lawless behaviour of the Rohtak Police in recovering unlicensed arms from the villages.

I rule this adjournment motion out of order because it does not relate to a single specific case. An adjournment motion should not be framed in general terms. It must deal with a particular case.

The sixth adjournment motion of the hon. Member is about the transfer of Shri Khushi Ram Bhandari, Executive Engineer, Canal, Haryana Division.

The transfer of an Officer from one place to another can hardly be a matter of bringing forward an adjournment-motion. Moreover, it is neither urgent nor of public importance.

The seventh adjournment motion of the hon. Member is about the refusal of the District Magistrate, Rohtak, to the deputation of the backward classes of District Rohtak to hold their conference in the last week of April.

Refusal of a District Magistrate to agree to the request of a certain deputation is not a matter of such a significance as to be raised by way of an adjournment motion.....

(Interruptions from Pandit Shri Ram Sharma)

Mr. Deputy Speaker : Order please, order. how can you speak while I am standing ?

पंडित श्री राम शर्मा : आप थोड़ी देर के लिये तशरीफ रखें तो मैं कुछ अर्ज कर सकूँ।

Mr. Deputy Speaker : Yes, please.

पंडित श्री राम शर्मा : मेरी गुजारिश है कि यह जो लिखा है:—

‘....the refusal of the District Magistrate, Rohtak to the deputation of the backward classes of District Rohtak to hold their conference in the last week of April. The Conference was to be held to formulate their demands to be presented to the Backward Classes Commission appointed by the Government of India.’

आपने इसे कैसे out of order करार दिया है ?

Mr. Deputy Speaker : As I have already said, refusal of a District Magistrate to agree to the request of a certain deputation is not a matter of such a significance as to be raised by way of an adjournment motion.

Moreover, the conduct of a District Magistrate cannot be discussed on the floor of the House as he will not be able to defend himself here.

On these grounds, I have ruled your seventh adjournment motion out of order.

Chief Minister (Shri Bhim Sen Sachar) : Sir, with your permission, I want to make one submission. I would suggest that either no indication of the matter intended to be brought on the floor of the House should be given or the whole adjournment motion should be read. As the Leader of the

[Chief Minister]

House, I have no objection to the latter course being adopted. If the Chair thinks that a gist of an adjournment motion can be given, then I think there should be no objection to its being completely read out. This is just a mere suggestion.

मेरी गुजारिश यह है कि चूँकि Chair hon. Members को accommodate करना चाहती है और इस लिये इन Statements का gist भी दिया जा रहा है। बेहतर यह होगा कि बजाए gist देने के सारी की सारी statement पढ़ ली जाए ताकि हाऊस के सामने सारी चीज़ आ जाए। बतौर लीडर ऑफ़ दी हाऊस मैं यह अर्ज़ करना चाहता हूँ कि अगर statement सारे का सारा पढ़ लिया जाये। और उस के बाद declare किया जाए कि वह out of order है या उस को accept कर लिया जाए तो ज्यादा बेहतर होगा।

उपाध्यक्ष महोदय : मैं leader of the house का मशकूर हूँ कि उन्होंने ने कराखदिली से काम लेते हुए इस मसले पर रोशनी डाली है। मैं adjournment motions को पूरी तरह पढ़ दिया करूँगा। लेकिन बाज़ दफ़ा सारी statement की बजाए gist से भी काम लिया जाता है।

पंडित श्री राम शर्मा : इस में कराख दिली की कोई बात नहीं है, यह तो तथ्य है।

Mr. Deputy Speaker : Now I come to the eighth adjournment motion of the hon. Member. It is about the recent hushing up of the case of the murder of one Gagan Jat of village Gorra, Police Station Salhawas, District Rohtak in the unlawful custody of the police in February last.

This matter is no longer urgent. There was an ample opportunity of bringing forward this matter during budget discussion and the discussion of Governor's Address. I, therefore, rule this adjournment motion out of order.

His ninth adjournment motion is in connection with the *mala fide* arrest of Shri Ram Chander, Manager, Haryana, Tilak Weekly, Rohtak.

This matter is not of public importance. The motion must raise a larger issue than merely an individual grievance. I, therefore, rule this adjournment motion out of order.

The tenth adjournment motion of the hon. Member relates to the promulgation of Section 144, Cr.P.C., throughout the State for prohibiting the Public activities in connection with the reorganisation of States.

Pandit Shri Ram Sharma : Sir, I would request you to permit me to explain this adjournment motion before you give your ruling on it.

Mr. Deputy Speaker : No, I am sorry I cannot accede to your request. A discussion on an adjournment motion can take place only after it has been admitted by the Chair.

Pandit Shri Ram Sharma : Sir, you are fully competent to allow the Mover to explain his motion even before it has been admitted by the Chair.

Mr. Deputy Speaker : No, please. The hon. Member should resume his seat.

पंडित श्री राम शर्मा : मैं यह Adjournment motion और बाकी की adjournment motions भी protest के तौर पर वापस लेता हूँ। मैं समझता था कि यह इतनी जरूरी है कि इस को जरूर admit किया जायगा। लेकिन जब इस मामले की importance को नजरअन्दाज किया जा रहा है तो मैं इसे वापस लेता हूँ।

Mr. Deputy Speaker : Then these adjournment motions should be considered as if they have not been moved.

PANDIT SHRI RAM SHARMA, M.L.A. to ask for leave to make a motion for the adjournment of the business of the House to discuss a matter of urgent public importance, namely, the wholesale official interference in the contest of the recent election to the Punjab Legislative Council from the local bodies Constituency.

2. PANDIT SHRI RAM SHARMA, M.L.A., to ask for leave to make a motion for the adjournment of the business of the House to discuss a matter of urgent public importance, namely, the appointment by the Government of the Advisory Committee representing only one point of view in respect of the reorganisation of State concerning the Punjab.

3. PANDIT SHRI RAM SHARMA, M.L.A., to ask for leave to make a motion for the adjournment of the business of the House to discuss a matter of urgent public importance, namely, the failure of the timely medical help at Chandigarh to the late lamented Speaker of this House, Dr. Satyarl.

4. PANDIT SHRI RAM SHARMA, M.L.A., to ask for leave to make a motion for the adjournment of the business of the House to discuss a matter of urgent public importance, namely the failure of the Jail Administration in detecting and preventing the recent serious riot in the Central Jail, Ambala resulting in the murder of two persons and serious injuries to several others.

5. PANDIT SHRI RAM SHARMA, M.L.A. to ask for leave to make a motion for the adjournment of the business of the House to discuss a matter of urgent public importance, namely, the lawless behaviour of the Rohtak Police in recovering unlicensed arms from the villages.

6. PANDIT SHRI RAM SHARMA, M.L.A. to ask for leave to make a motion for the adjournment of the business of the House to discuss a matter of urgent public importance, namely, the transfer of Shri Khushi Ram Bhandari, Executive Engineer, Canal, Haryana Division to please certain persons with a view to secure votes for a certain candidate of the Punjab Legislative Council from the local bodies Constituency.

7. PANDIT SHRI RAM SHARMA, M.L.A., to ask for leave to make a motion for the adjournment of the business of the House to discuss a matter of urgent public importance, namely, the refusal of the District Magistrate, Rohtak to the deputation of the backward classes of district Rohtak to hold their conference in the last week of April. The conference was to be held to formulate their demands to be presented to the Backward Classes Commission appointed by the Government of India.

8. PANDIT SHRI RAM SHARMA, M.L.A., to ask for leave to make a motion for the adjournment of the business of the House to discuss a matter of urgent public importance, namely, the recent hushing up of the case of the murder of one Gujan, Jat of Village Gorra. Police Station Salhawas, District Rohtak, in the unlawful custody of the Police in February last.

9. PANDIT SHRI RAM SHARMA, M.L.A. to ask for leave to make a motion for the adjournment of the business of the House to discuss a matter of urgent public importance, namely, the *mala fide* arrest of Shri Ram Chandar, Manager, Patyara T. & L. Weekly, Rohtak, at Village Silana, District Rohtak by the A.-S.I Kesar Singh, on account, of the grudge for the complaint of misbehaviour made by the former against the latter to the Inspector of Police.

10. PANDIT SHRI RAM SHARMA, M.L.A., to ask for leave to make a motion for the adjournment of the business of the House to discuss a matter of urgent public importance, namely, the promulgation of Section 144, Cr.P.C throughout the State for prohibiting the Public activities in connection with the reorganisation of State.

ELECTION OF SPEAKER.

Chief Minister (Shri Bhim Sen Sachar) : Sir, I beg to move —

That Sardar Gurdial Singh Dhillon, who is present in the House, do take the Chair as Speaker of the Assembly.

जनाब डिप्टी स्पीकर साहिब, यह तजवीज़ पेश करते हुए मुझे बहुत खुशी महसूस होती है। सरदार साहिब का नाम जो मैंने हाऊस के सामने रखा है, मैं समझता हूँ कि यह हर लिहाज़ से और हर मियार के मुताबिक इस कुर्सी को जीनत बखशने के अहल है।

श्रीमती शन्नो देवी सहगल : On a point of order Sir, मैं यह निवेदन करना चाहती हूँ कि यह जो भाषण चीफ़ मिनिस्टर साहिब ने शुरू कर दिया है, यह procedure के खिलाफ़ है। इस के इलावा, इस वक़्त आप का स्पीकर की कुर्सी पर बैठे रहना भी procedure के खिलाफ़ है। असल में, इस वक़्त किसी दूसरे मੈम्बर को इस कुर्सी पर बैठना चाहिये। और उसके बाद जब आप स्पीकर चुने जायें तो आपको तभी इस कुर्सी पर विराजमान होना चाहिये। (विघ्न)।

उपाध्यक्ष महोदय : आप ने क्या कहा ? शोर होने की वजह से मुझे सुनाई नहीं दिया।

श्रीमती शन्नो देवी सहगल : मैंने यह अर्ज किया है कि यह जो procedure आज adopt किया जा रहा है, वह ग़लत है। असम्बली के इतिहास में पहले ऐसा कभी नहीं हुआ। कायदा तो यही है कि ऐसे अवसर पर जब स्पीकर का चुनाव हो रहा हो तो वही सदस्य सभापति की कुर्सी पर न बैठे। किसी दूसरे सदस्य को सभापति की कुर्सी पर बैठना चाहिये।

उपाध्यक्ष महोदय : आप procedure के कौन से नियम का हवाला दे रही हैं ?

श्रीमती शन्नो देवी : नियम कोई भी हो, conventions के मुताबिक भी आप को इस मौके पर इस कुर्सी पर नहीं बैठना चाहिए। इस वक़्त किसी और माननीय सदस्य को preside करना चाहिए। (विघ्न)।

मुख्य मंत्री : जनाब, मैं अर्ज कर रहा था कि जिस पहलू से भी आप देखें मैंने एक निहायत मौजू नाम हाऊस के सामने रखा है। इस के साथ ही मैं समझता हूँ कि इस मौके पर उन मुख्तलिफ़ किसम के ख्यालात का इज़हार किया जाता है, इस लिये मैं कुछ कहने के लिये हाऊस का थोड़ा सा वक़्त लेना चाहता हूँ।

जनाब डिप्टी स्पीकर साहिब, इस सूबे में यह हमारी बद-किस्मती है कि कुछ लोग जो चीज़ें.....

श्रीमती शन्नो देवी : On a point of order, Sir, डिप्टी स्पीकर साहिब, मैं इस हाऊस की पुरानी मੈम्बर हूँ। इस लिये मैं अपना फ़र्ज समझती हूँ कि जो irregularity हो रही हो, उसकी तरफ़ मैं आप का ध्यान दिलाऊँ। यह तरीका भी जो कि अब चीफ़ मिनिस्टर साहिब ने इस्तिफ़ार किया है, ग़लत है। दर असल पहले इस ओहदे के लिये नाम propose किया जाता है। फिर उस को second किया जाता है। नाम तजवीज़ करते वक़्त

कोई तकरीर नहीं की जाती। जब कोई मेम्बर स्पीकर के तौर पर चुना जाता है तो तभी उस को मुबारकाबाद देने के लिये कोई तकरीर की जाती है। इस लिये यह तरीका ही गलत है क्योंकि यदि एक तरफ तारीफ़ की जा रही हो तो कोई दूसरा मेम्बर निन्दा के लफ़्ज़ भी इस्तेमाल कर सकता है।

श्री सिर्री चंड : आप की आज्ञा से मैं भी यही अर्ज करना चाहता हूँ कि एक तरफ़ अगर उम्मीदवारों की तारीफ़ की जाए तो दूसरी तरफ़ से उस की बुराई भी की जा सकती है। इस लिये पहले सिर्फ़ नामों को propose ही किया जाए तो अच्छा है। इस लिये मैं यह कहना चाहता हूँ कि पहले सारे नामों को propose किया जाए और उस के बाद राय ले ली जाए। इस वक्त कोई तकरीर बग़ैरा नहीं होनी चाहिए।

श्री देव राज सेठी : जनाब डिप्टी स्पीकर साहिब, मैं इनकी राय से इतफ़ाक़ नहीं करता। दरअसल propose करने वाले को हक़ है कि वह अपने nominee की अपनी तकरीर में तारीफ़ करे। इस के इलावा यह भी जरूरी नहीं कि अगर वह मेम्बर जिस का नाम propose किया गया हो और वह डिप्टी स्पीकर हो तो वह ऐसे मौक़े पर preside न करे। वह preside कर सकता है।

उपाध्यक्ष महोदय : मैं हेरान हूँ कि आप क्यों इन छोटी-ब बातों को तूल दिये जा रहे हैं।

मुख्य मंत्री : मेरी राय में यह बात ग़लत है। ख़ैर ऐसा कहने का स्पीकर साहिब को ही हक़ है। मगर मैं यह नहीं मान सकता कि इस तजवीज़ को पेश करते वक़्त तकरीर न की जाय। मैंने दो चार मेम्बर साहिबान के एतराजात को सुना है उन के एतराजात को सुनते हुए मैं भली प्रकार उन के ख़्यालात का अन्दाज़ा लगा सकता हूँ कि यहां जो स्पीकर की इलैक्शन हो रही है वे किस सतह पर करना चाहते हैं मगर मैं उस सतह पर जिस पर कि कुछ भाई तथा बहिनें इलैक्शन कराने के ख़्वाहिश हैं नहीं कराना चाहता। मगर यह नहीं कहा जा सकता कि ऐसे मौक़े पर तजवीज़ रखते हुए तकरीर का हक़ नहीं होता। इस लिये मैं अपनी मर्ज़ी से अपने तकरीर करने के हक़ को इस्तेमाल न करते हुए इस तजवीज़ को पेश करता हूँ।

Minister for Development (Sardar Partap Singh Kairon) : Sir, I second the proposal made by the Chief Minister.

Mr. Deputy Speaker : Is there any other proposal ?

ਸਰਦਾਰ ਗੋਪਾਲ ਸਿੰਘ (ਜਗਰਾਓ) : ਮਾਨਯੋਗ ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ ! ਮੈਂ ਇਸ ਅਸੈਂਬਲੀ ਦੀ ਪ੍ਰਧਾਨਗੀ ਦੇ ਉਹਦੇ ਲਈ ਸ੍ਰੀ ਬਿਦਾਰ ਨਾਥ ਸਹਿਗਲ ਦਾ ਨਾਂ ਤਜਵੀਜ਼ ਕਰਦਾ ਹਾਂ। ਜਿਨੀਆਂ ਕੁਰਬਾਨੀਆਂ ਸ੍ਰੀ ਬਿਦਾਰਨਾਥ ਸਹਿਗਲ ਨੇ ਦੇਸ਼ ਅਤੇ ਕੌਮ ਲਈ ਕੀਤੀਆਂ ਹਨ ਸ਼ਾਇਦ ਹੀ ਇਸ ਈਵਾਨ ਵਿਚ ਬੈਠੇ ਮਾਨਯੋਗ ਮੈਂਬਰਾਂ ਵਿਚੋਂ ਕਿਸੇ ਦੇ ਨੇ ਕੀਤੀਆਂ ਹੋਣ। ਮੇਰੇ ਸਨ conspiracy case ਨੂੰ ਕੋਟ ਨਹੀਂ ਜਾਣਦਾ ਅਤੇ ਜਿਹੜੀਆਂ ਤਕਲੀਫਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਉਸ ਕੇਸ ਵਿਚ ਉਠਾਈਆਂ ਸਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਕੇਵਲ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਲੋਕ ਹੀ ਨਹੀਂ ਬਲਕਿ ਸਾਰੇ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਅਤੇ ਦੁਨੀਆ ਦੇ ਲੋਕ ਜਾਣਦੇ ਹਨ। ਪਿਛੇ ਜਿਹੀ ਮਾਨਯੋਗ ਚੀਫ ਮਿਨਿਸਟਰ ਨੇ ਇਸੇ ਹਾਊਸ ਦੇ ਸਾਹਮਣੇ ਸ੍ਰੀ ਬਿਦਾਰ ਨਾਥ ਸਹਿਗਲ ਦੀ ਤਾਰੀਫ ਕੀਤੀ ਸੀ ਅਤੇ ਦਸਿਆ ਸੀ ਕਿ ਕਿਨੀਆਂ ਤਕਲੀਫਾਂ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਦੇਸ਼ ਅਤੇ ਕੌਮ ਲਈ ਉਠਾਈਆਂ ਹਨ। ਮੈਂ ਜਿਹੜੀ

[ਸਰਦਾਰ ਗੋਪਾਲ ਸਿੰਘ]

ਪ੍ਰਸ਼ਨਸ਼ਾ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਆਪ ਚੀਫ਼ ਮਿਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਕੀਤੀ ਸੀ, ਉਸ ਨੂੰ ਦੇਖਦਿਆਂ ਹੋਇਆਂ ਇਹ ਹੀ ਕਿਹਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ ਕਿ ਸਰਦਾਰ ਦੀ ਕੁਰਸੀ ਤੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਸਿਵਾਏ ਇਸ ਈਵਾਨ ਵਿਚ ਹੋਰ ਕੋਈ ਮੈਂਬਰ ਨਹੀਂ ਸੋਭਦਾ। ਇਸ ਲਈ ਮੈਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਨਾਂ ਤਜਵੀਜ਼ ਕਰਦਾ ਹਾਂ।

ਸਰਦਾਰ ਚਨਣ ਸਿੰਘ (ਟਾਂਡਾ) : ਸ਼੍ਰੀਮਾਨ ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ, ਜਿਹੜਾ ਨਾਮ ਸਰਦਾਰ ਗੋਪਾਲ ਸਿੰਘ ਜੀ ਨੇ ਤਜਵੀਜ਼ ਕੀਤਾ ਹੈ ਮੈਂ ਉਸ ਦੀ ਤਾਈਦ ਕਰਦਾ ਹਾਂ। ਸ਼੍ਰੀ ਕਿਦਾਰ ਨਾਥ ਸਹਿਗਲ ਨੂੰ ਮੈਂ ਇਸ ਕੁਰਸੀ ਲਈ ਇਸ ਲਈ ਮੌਜੂ ਸਮਝਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਸਾਡੇ ਪਿਛਲੇ ਸਪੀਕਰ ਡਾਕਟਰ ਸਤਿਪਾਲ ਇਸ ਹਾਉਸ ਵਿਚ ਜਿਹੜੀ respect command ਕਰਦੇ ਸਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਪਿੱਛੇ ਉਹ respect ਸਹਿਗਲ ਸਾਹਿਬ ਹੀ command ਕਰਦੇ ਹਨ। ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਡਾਕਟਰ ਸਤਿਪਾਲ ਨੂੰ ਇਸ ਕੁਰਸੀ ਲਈ ਮੌਜੂ ਸਮਝਿਆ ਜਾਂਦਾ ਸੀ ਉਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੁਣ ਸਹਿਗਲ ਸਾਹਿਬ ਹੀ ਇਸ ਉਹਦੇ ਦੇ ਜੋਗ ਸਾਬਤ ਹੋ ਸਕਦੇ ਹਨ। ਸ਼੍ਰੀ ਕਿਦਾਰ ਨਾਥ ਸਹਿਗਲ ਸਾਡੇ ਲਈ ਕੋਈ ਨਵੇਂ ਨਹੀਂ ਹਨ। ਅਸੀਂ ਸਾਰੇ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਜਾਨਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਕਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕੌਮੀ ਤਹਿਰੀਕਾਂ ਵਿਚ ਕੁਰਬਾਨੀਆਂ ਦਿਤੀਆਂ ਸਨ ਅਤੇ ਉਹ ਕਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਡਾਕਟਰ ਸਾਹਿਬ ਦੇ ਨਾਲ ਮਿਲ ਕੇ ਇਸ ਤਹਿਰੀਕ ਵਿਚ ਕੰਮ ਕੀਤਾ ਸੀ ਅਤੇ ਕਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਉਹ ਮੌਰਨ conspiracy case ਵਿਚ ਉਸ ਵੇਲੇ ਪਕੜੇ ਗਏ ਸਨ ਜਿਸ ਵੇਲੇ ਅੰਗਰੇਜ਼ ਚਾਹੁੰਦੇ ਸੀ ਕਿ ਕਿਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇਸ਼ ਭਗਤਾਂ ਉਤੇ ਮੁਕਦਮੇ ਚਲਾਏ ਜਾਣ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਗੋਲੀ ਮਾਰ ਕੇ ਜਾਂ ਫਾਂਸੀ ਦੇ ਕੇ ਖਤਮ ਕਰ ਦਿਤਾ ਜਾਵੇ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਡਾਕਟਰ ਸਤਿ ਪਾਲ ਵਾਂਗ ਕੌਮੀ ਤਹਿਰੀਕਾਂ ਵਿਚ ਬੜੀਆਂ ਬੜੀਆਂ ਕੁਰਬਾਨੀਆਂ ਕੀਤੀਆਂ ਹਨ ਅਤੇ ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਡਾਕਟਰ ਸਤਿ ਪਾਲ ਇਸ ਕੁਰਸੀ ਤੇ ਸੋਭਦੇ ਸਨ ਇਹ ਵੀ ਉਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੀ ਸੋਭਾ ਦੇਣਗੇ। ਇਹ ਸਾਡੀ ਕੌਮੀ ਤਹਿਰੀਕਾਂ ਵਿਚ ਕੀਤੀਆਂ ਗਈਆਂ ਕੁਰਬਾਨੀਆਂ ਦਾ ਫਿਦਾ ਨਮੂਨਾ ਹਨ ਅੰਤ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਪੰਜਾਬ ਤੇ ਕੁਲ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਦੇ ਛੋਕੇ ਵੱਲੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਜਾਣਦੇ ਹਨ। ਜੇਕਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਸਪੀਕਰ ਬਣਾਇਆ ਗਿਆ ਤਾਂ ਸਾਨੂੰ ਇਸ ਗਲ ਦੀ ਪੂਰੀ ਆਸ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਸਾਰੇ ਹਾਉਸ ਦੀ respect command ਕਰ ਸਕਣਗੇ।

ਦੂਜਾ ਨਾਂ ਜਿਸ ਮਾਨਯੋਗ ਮੈਂਬਰ ਦਾ ਤਜਵੀਜ਼ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ ਉਹ ਭਾਵੇਂ ਸਾਡੇ ਮਿਤ੍ਰ ਹਨ ਪਰ ਅਸੀਂ ਸਮਝਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਹੋਰ ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਮੌਕੇ ਮਿਲਨਗੇ ਕਿਉਂਕਿ ਉਹ ਨੌਜਵਾਨ ਹਨ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਮੁਕਾਬਲੇ ਸ਼੍ਰੀ ਕਿਦਾਰ ਨਾਥ ਸਹਿਗਲ ਬੜੇ ਬੁਰਗ ਹਨ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਅਪਣੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਖਿਦਮਤ ਵਿਚ ਗੁਜ਼ਾਰ ਦਿਤੀ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਮੈਂ ਸਮਝਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਉਹ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਧ ਇਸ ਉਹਦੇ ਦੇ ਮੁਸਤਹਿਕ ਹਨ।

ਡਿਪਟੀ ਸਪੀਕਰ : ਕੋਈ ਮਾਨਯੋਗ ਮੈਂਬਰ ਹੋਰ ਕੋਈ ਤਜਵੀਜ਼ ਪੇਸ਼ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹੋਣ ਤਾਂ ਉਹ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹਨ।

ਹੁਣ ਸਵਾਲ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਸਾਡੇ ਸਾਹਮਣੇ ਦੋ ਤਜਵੀਜ਼ਾਂ ਹਨ ਇਕ ਮਾਨਯੋਗ ਚੀਫ਼ ਮਿਨਿਸਟਰ ਨੇ ਪੇਸ਼ ਕੀਤੀ ਹੈ ਕਿ ਸਰਦਾਰ ਗੁਰਦਿਆਲ ਸਿੰਘ ਢਿਲੌਂ ਨੂੰ ਸਪੀਕਰ ਦੇ ਉਹਦੇ ਲਈ ਚੁਣਿਆ ਜਾਵੇ ਤੇ ਦੂਜੀ ਤਜਵੀਜ਼ ਸਰਦਾਰ ਗੋਪਾਲ ਸਿੰਘ ਢਿਲੌਂ ਪੇਸ਼ ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੈ ਕਿ ਸ਼੍ਰੀ ਕਿਦਾਰ ਨਾਥ ਸਹਿਗਲ ਨੂੰ ਸਪੀਕਰ ਚੁਣਿਆ ਜਾਵੇ।

Now according to Rules, I take up the first proposal. The question is—

That Sardar Gurdial Singh Dhillon who is present in the House do take the Chair as Speaker of the Assembly.

Those who are in favour of the motion please rise in their seats. (Members rose in their seats). Those who are against the motion please rise in their seats (Some Members rose in their places).

Since an overwhelming majority of Members have supported the motion moved by the Leader of the House and seconded by the Minister for Development, I declare that it is carried. (Cheers).

Now I request Sardar Gurdial Singh Dhillon to occupy the Chair (Laughter and renewed cheers).

मुख्य मंत्री (श्री भीम सेन सच्चर) : स्पीकर साहिब, आप को इस मुमताज ओहदे पर चुने जाने पर मुबारकबाद देने में मुझे दिली खुशी है। आप हमारे हाऊस के लिये कोई नये नहीं हैं। आप को हम ने इस से पहले काफी अरसा से इस कुर्सी पर अपने फराइज को सर-अंजाम देते हुए देखा है। आप की काबनियत, आप की impartiality और आप की यह खाहिश कि हाऊस में अच्छी अच्छी रवायात कायम हों यह सब कुछ मैम्बर साहिबान के इल्म में है। आप जो इस मुमताज कुर्सी पर बैठे हैं तो इस में कोई शक नहीं है कि अपना काम इस तरीके से सरअंजाम देंगे जिस से हमारे हाऊस का वकार ज्यादा बढ़ जायेगा। बतौर **Leader of the House** मैं आप को यकीन दिलाता हूँ कि यह हाऊस सिदक दिली से आप के काम में आसानी पैदा करने में मदद देगा और वह इस लिये कि जो काम यहां पर होता है वह सिर्फ इस चार दिवारी में नहीं रहता बल्कि उस को दुनिया देखती है कि यहां पर मैम्बर साहिबान किस तरह से काम करते हैं कहां तक खूज की पाबन्दी होती है, कहां तक majority के बात होते पर कानून पास किये जाते हैं, कहां तक इस मुअजिज ईवान के काम को Rules of Procedure के मुताबिक किया जाता है और फिर लोग इन बातों से अन्दाजा लगाते हैं कि इस राज्य के जो नुमाइंदे हैं वे कैसे हैं और कैसे काम करते हैं क्योंकि उन्होंने राज्य के अपने अपने इलाके के मुनअल्लिक अपने ऊपर जिम्मेदारी ली होती है। इस लिये यह एक बड़ी अहम और बड़ी जरूरी कार्यवाही होती है। आप की वसूतत से अपने उन साथियों से मुझ को उस मौके पर यह अर्ज करनी है कि हम में से हर कोई यह अपना फर्ज समझे कि स्पीकर का जो काम है उस को हमने आसान करना है और मुझे यह यकीन है कि बावजूद मुखालिफ पार्टी के होने के जो यहां पर **Opposition** की शक्ल में है इस हाऊस के हर पार्टी के लोगों का यह ख्याल होगा, खाहिश होगी और कोशिश होगी कि आप की सरकार में जो काम किया जाए वह ऐसा हो कि उस से इस ईवान की इज्जत बढ़े। अन्त में मैं आपको फिर दिल से मुबारकबाद देता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि आप **speakership** के मियार को ऊंचा रखें और सब तरफ से यह आवाज आए कि पंजाब की **speakership** अच्छे से अच्छे हाथों में चली जा रही है।

महंतार गोपाल सिੰघ (ਜਗਰਾਉ) : ਸ਼੍ਰੀਮਾਨ ਜੀ, ਆਪ ਦੇ ਇਸ ਹਾਉਸ ਦੇ

ਸਦਰ 'ਤੇ ਜਾਣ ਤੇ ਮੈਂ ਆਪ ਨੂੰ ਮੁਬਾਰਕਬਾਦ ਪੇਸ਼ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਆਪ ਨੂੰ ਪਤਾ ਹੈ ਕਿ **Opposition** ਦੀ ਲੜਾਈ ਤਾਂ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਨਾਲ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਨ ਕਿ **Speaker** ਨਾਲ। ਇਸ

[ਸਰਦਾਰ ਗੋਪਾਲ ਸਿੰਘ]

ਲਈ ਅਸੀਂ ਆਸ ਕਰਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਆਪ ਵੀ ਡਾਕਟਰ ਸੱਤ ਪਾਲ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਵਰਤਾਵੇਲੀ ਦਾ ਸਬੂਤ ਦਿੰਦੇ ਰਹੋਗੇ। Opposition ਵਲੋਂ ਮੈਂ ਆਪ ਨੂੰ ਭਰੋਸਾ ਦਿਵਾਉਂਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਅਸੀਂ ਆਪ ਦੀਆਂ rulings ਦਾ ਪੂਰਾ-ਤਾਇਦਤਰਾਮ ਕਰਾਂਗੇ ਤਾਂ ਜੋ ਆਪ ਡਾਕਟਰ ਸਤਪਾਲ ਵਾਂਗੂੰ ਕੰਮ ਚਲਾਉਂਦੇ ਰਹੋ।

ਸ਼੍ਰੀ ਸਿਰੀ ਚੰਦ (ਕਾਨਗੜ੍ਹ) : ਸ਼੍ਰੀਮਾਨ ਜੀ, ਆਪ ਦੇ ਅਸੈਂਬਲੀ ਦਾ ਪ੍ਰਧਾਨ ਚੁਣੇ ਜਾਣੇ ਪਰ ਮੈਂ ਆਪ ਨੂੰ ਤੇਜ਼ਦਿਲ ਨਾਲ ਸੁਭਾਅਕਰਾਫ ਪੇਸ਼ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਅਤੇ ਆਪ ਨੂੰ ਯਕੀਨ ਦਿਲਾਉਂਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਹੁਣ ਆਪ ਦੇ ਹੁਕਮ ਨੂੰ ਮਾਨੇਗੇ ਅਤੇ ਆਪ ਦੇ ਸਾਥ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ co-operate ਕਰਾਂਗੇ। ਲੇਕਿਨ ਇਸ ਦੇ ਸਾਥ ਹੋਣਾ ਫਰਕਾਸਤ ਕਰਾਂਗਾ ਕਿ ਬਾਹਰ ਆਪ ਚਾਹੇ ਕਿਸੀ ਭੀ party ਦੇ ਮੈਂਬਰ ਹੋਣ ਲੇਕਿਨ ਇਸ House ਦੇ ਅੰਦਰ ਇਸ ਦੀ dignity, ਗਾਨ ਅਤੇ ਰਵਾਧਾਤ ਸਭ ਆਪ ਦੇ ਹਾਥ ਮੇਂ ਹਨ ਅਤੇ ਹੁਣੇ ਯਹ ਉਸਮੀਦ ਹੈ ਕਿ ਆਪ ਪਾਰਟੀ ਦਾ ਕੰਮ ਛੱਡ ਕੇ Opposition ਦੇ ਸਾਥ ਵੀ ਸਲੂਕ ਕਰੋਗੇ ਜੋ Government Benches ਦੇ ਸਾਥ ਬਲਿਕ ਉਸ ਦੇ ਭੀ ਅਰੰਭਾ ਸਲੂਕ ਕਰੋਗੇ (Interruptions) ਉਨ ਦੇ ਅਚਲਾ ਸਲੂਕ ਮੇਂ ਇਸਲਿਯੇ ਕਹਿੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਉਨ ਦੇ ਹਾਥ ਮੇਂ ਤਾਕਤ ਹੈ, Government ਹੈ ਅਤੇ ਇਸਲਿਯੇ ਵਹ ਯਧਾਵਤਿਯਾਂ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਇਸ ਹਾਊਸ ਮੇਂ ਆਜ ਤਕ ਹੁਸਨੇ ਜੋ ਰਵਾਧਾਤ ਕਾਧਮ ਕੀ ਹੈ ਅਗਰ ਵਹ ਕਾਧਮ ਰਖੀ ਜਾਏ ਤੋਂ Opposition ਨੂੰ ਹਕੂਮਤ ਦੇ ਖਿਲਾਫ ਕੋਈ ਸ਼ਿਕਾਯਤ ਨ ਹੋਗੀ। ਸੁਭੇ ਪੂਰੀ ਉਸਮੀਦ ਹੈ ਕਿ ਆਪ ਹਮੇਸ਼ਾ ਦੋਨੋਂ ਤਰਫ ਦੇ ਮੈਂਬਰਾਂ ਨੂੰ ਬਰਾਬਰ ਸਮਝੋਗੇ ਅਤੇ ਉਨ ਦੇ ਸਾਥ impartiality ਦਾ ਸਲੂਕ ਕਰੋਗੇ। ਮੈਂ ਆਪ ਨੂੰ ਏਕ ਬਾਰ ਫਿਰ ਸੁਭਾਅਕਰਾਫ ਦੇਂਦਾ ਹਾਂ ਅਤੇ ਯਕੀਨ ਦਿਲਾਉਂਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਹੁਣ ਸਭ ਆਪ ਦੇ ਸਾਥ co-operate ਕਰੋਗੇ।

ਸਰਦਾਰ ਅਫਤਰ ਸਿੰਘ ਛੀਨਾ (ਅਜਨਾਲਾ) : ਸ਼੍ਰੀਮਾਨ ਜੀ, ਮੈਂ ਆਪ ਦੇ ਇਸ ਉਹਦੇ ਤੇ ਬੁਣੇ ਜਾਣ ਤੇ ਆਪ ਨੂੰ ਇਹੀ ਸੁਭਾਅਕਰਾਫ ਦਿੰਦਾ ਹਾਂ। ਆਪ ਨੂੰ ਪਤਾ ਹੈ ਕਿ democracy ਵਿਚ opposition ਪਾਰਟੀ ਨੂੰ ਬੁਹਤ ਅਹਿਮ ਪਾਰਟ ਅਦਾ ਕਰਨਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਜੇਕਰ opposition ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਆਪਣਾ ਪਾਰਟ ਅਦਾ ਕਰੇ ਤਾਂ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਚਲਦੀ ਹੈ। ਹਾਊਸ ਦੀ business ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਪੂਰੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਜਿਹਾ ਕਿ ਆਪ ਨੂੰ ਪਤਾ ਹੈ ਸਾਡੇ ਡਾਕਟਰ ਸਤਪਾਲ ਨਾਲ ਝਗੜੇ ਹੋਇਆਂ ਕਰਦੇ ਸਨ। ਪਰ ਜਦ ਅਸੀਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਕਮਰੇ ਵਿਚ ਜਾਂਦੇ ਸਾਂ ਤਾਂ ਉਹ ਸਾਨੂੰ ਬੜੇ ਪਿਆਰ ਨਾਲ ਮਿਲਿਆ ਕਰਦੇ ਸਨ ਅਤੇ ਹਰ ਗਲ ਸਮਝਦੇ ਸਨ। ਇਸਤਰ੍ਹਾਂ ਕੰਮ ਬੜੀ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਚਲਦਾ ਸੀ। ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਸਾਨੂੰ ਆਪ ਤੋਂ ਵੀ ਉਮੀਦ ਹੈ। ਆਪ ਨੂੰ Deputy Speakership ਦਾ ਤਜਰਬਾ ਵੀ ਹੈ ਅਤੇ ਸਾਨੂੰ ਆਸ ਹੈ ਕਿ ਆਪ ਇਸ ਹਾਊਸ ਵਿਚ ਸਭ ਨੂੰ ਬਰਾਬਰ ਸਮਝੋਗੇ ਤਾਂ ਜੋ ਕੰਮ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਚਲੇ। ਇਸ ਲਈ ਮੈਂ ਆਸ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਇਸ ਹਾਊਸ ਦੀ business conduct ਕਰਨ ਲਈ ਆਪ ਪਿਛਲੇ ਤਜਰਬੇ ਤੋਂ ਸਬਕ ਹਾਸਿਲ ਕਰੋਗੇ ਅਤੇ ਨਾਲ ਹੀ ਇਹ ਉਮੀਦ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਆਪ ਸਰਕਾਰੀ ਭੇਦਾਂ ਅਤੇ Opposition ਭੇਦਾਂ ਨਾਲ ਇਕੋ ਜਿਨਾ ਪਿਆਰ ਕਰੋਗੇ ਅਤੇ ਦੋਵਾਂ ਨੂੰ ਇਕੋ ਜਿਹਾ treat ਕਰੋਗੇ। Opposition ਲਈ ਆਪਣਾ role ਅਦਾ ਕਰਨਾ ਆਪ ਤੇ ਮੁਨਹੱਸਬ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਮੈਂ ਅਭੀ ਕਰਾਂਗਾ ਕਿ ਆਪ ਡਾਕਟਰ ਸਾਹਿਬ ਦੀਆਂ ਰਵਾਇਤਾਂ ਨੂੰ ਕਾਇਮ ਰਖਦੇ ਹੋਏ, party spirit ਤੋਂ ਉਚੇਰੇ ਉਠ ਕੇ ਇਸ ਹਾਊਸ ਦਾ ਕੰਮ ਚਲਾਉਂਗੇ। ਆਪ ਦੀ

अंती मान डे respect है । आप leader अडे सदर है । इस बरबे इस मान डे हकदार है । अंड वर मे आप नुं यडीन वरवाउटा चहुंदा ह कि असो इस हाउस डी business चलाउटा वर आप डी हर उरुं नाल मरद बरुंगे अडे आप डे आरडर अडे rulings नुं मंनंगे ।

बीवान जगवीश चंड (लुधियाना शहर, उत्तरी) . श्रीमान जी, आप के इस ओहदे पर चुने जाने पर मैं आप को दिली मुबारकबाद देता हूं । अपने तजरुबे की बिना पर मैं कह सकता हूं कि आप एक मजबूत इन्साफ पसन्द और एक गैर-जानिबदार इनसान है । जैसा कि पहले मेरे कुछ दोस्तों ने कहा है आप के कंधों पर एक भारी जिम्मेदारी आ पड़ी है । आपने इस ईवान की कार्यवाही को चलाना है । आप ने आज तक कांग्रेस में शानदार काम किया है और इस शानदार जमायत की शानदार रवायात को ऊंचा किया है । उम्मीद है कि इस हाउस की रवायात को आप उसी तरह कायम रखेंगे जैसे कि डाक्टर साहिब ने इन्हें रखा । जैसा कि Opposition के मेरे दोस्तों ने कहा है कि उन्हें इस बात का हक है कि उन के साथ बराबर का सलूक हो । आप कांग्रेस की training को सामने रख कर उन से सलूक करें क्योंकि कांग्रेस का यह असूल रहा है कि इनसाफ और गैरजानिबदारी से काम लिया जाए । मैं आखिर में एक बार फिर मुबारकबाद देते हुए इस बात की आशा रखता हूं और यह खाहिश जाहिर करता हूं कि आप इस कुर्सी पर आ कर इस ईवान की शान को और भी बढ़ायेंगे ।

श्री मनी राम (फतेहआबाद) . श्रीमान जी, आप के स्पीकर चुने जाने पर मैं आप को बधाई देता हूं । आज से आप पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी डाली गई है । आने वाले वक्त में आप के कंधों पर चंद फरायज का बोझ डाला गया है जिन्हें कि आपने मतानत और शान के साथ निभाना है ताकि आप इस ईवान की इज्जत जो आज तक कायम है उसे बनाए रख सकें । उस वक्त मुझे ही नहीं बल्कि सारे देश को खुशी होगी । आप को जो बधाई मैंने दी है उस के पीछे यही बात नहीं कि आप स्पीकर बन गये हैं बल्कि उन नतायज का भी ध्याल है जो इस मुअज्जिज ईवान की रवायात को कायम रखने की जिम्मेदारी आप पर डाले जाने से निकलेंगे । इस ईवान को न सिर्फ पुरानी रवायात कायम रखनी होगी बल्कि आने वाले युग के लिये नई और अच्छी रवायात कायम भी करनी होंगी । इस से मुझे बड़ी खुशी होगी । बाकी Opposition जो criticism करती है तो वह शौक के लिये नहीं बल्कि मजबूरी की वजह से होती है । इससे Opposition को खुशी नहीं होती । यह उस वक्त की जाती है जब इस के सिवाए कोई चारा नहीं होता । श्रीमान जी, मुझे खुशी होगी जब Opposition वाने आप की तारीफ करें कि स्पीकर साहिब ने कभी Opposition को शिकायत का मौका नहीं दिया ।

मुझे आशा है कि आप लोगों के जीवन की भलाई का पूरा ध्यान रखेंगे । Opposition को अगर नुक्ताचीनी करने का मौका मिलता है तो वह इस लिये नहीं कि वह Opposition में है बल्कि इस लिये कि वह लोगों की भलाई के लिये नुक्ताचीनी करते हैं । नुक्ताचीनी के लिये योका वैसे ही Leader of the House के लिए है जैसा कि Leader of the

[ਸ੍ਰੀ ਰਾਮ-ਕਿਸ਼ਨ]

Opposition ਕੇ ਲਿਖੇ। ਡਿਪਟੀ ਸਪੀਕਰ ਦੇ ਜਾਣੇ ਅਤੇ ਆਪ ਦੀ ਜੋ position ਥੀ ਉਸ ਕਾ ਸੁਝੇ ਉਤਨਾ ਹੀ ਆਪਣਾ ਰਾਸ ਹੈ। ਜਿਤਨਾ ਕਿ ਆਪ ਕਿਸੀ ਕਾ ਹੈ। ਅਗਰ, ਸਪੀਕਰ, ਸਾਹਿਬ ਜੁਲਾਏ ਜਾਂ ਹੋਰ ਹੋਣਗੇ ਤਾਂ ਇਸ ਲਿਖੇ ਕਿ ਧਰਮ ਇਕ ਰਾਸਤਾ ਹੈ ਸਰਕਾਰੀ ਕੋ ਸੁਧਾਰਨੇ ਕਾ। ਸੁਝੇ ਪੂਰੀ ਆਸਾ ਹੈ ਕਿ ਆਪ ਏਸੇ ਸੀਕੋਂ ਪਰ ਆਪਣਾ ਕਾਮ ਯੋਗਤਾ ਸੇ ਚਲਾਏਗੇ। ਧਰਮ ਸੇਰੀ ਆਸਾ ਹੈ ਆਪ ਸੇ ਫਿਰ ਏਕ ਬਾਰ ਆਪ ਕੋ ਬਖਾਇ ਦੇਣਾ ਹੈ।

ਮੇਲਵੀ ਅਬਦੁਲ ਗਨੀ ਡਾਰ (ਨੂਹ) : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਮੈਂ ਆਪ ਜੀ ਨੂੰ ਵਧਾਈ ਦਿੰਦਾ ਹਾਂ। ਮੈਂ ਤਾਂ ਕਿਨੇ ਚਿਰ ਤੋਂ ਚੜ੍ਹਦੇ ਸੂਰਜ ਨੂੰ ਵੇਖ ਰਿਹਾ ਸਾਂ ਪਰ ਇਹ ਸੂਰਜ ਪਿਛਲੇ ਪਾਸਿ ਤੋਂ ਚੜ੍ਹਿਆ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਆਪ ਨੂੰ ਵਧਾਈ ਦਿੰਦਾ ਹਾਂ। ਜੇ ਇੰਤਖਾਬ ਆਪ ਨੂੰ ਸਪੀਕਰ ਚੁਣਨ ਵਿਚ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ ਉਹ ਬਹੁਤ ਚੰਗਾ ਹੈ। ਆਪ ਸਾਰਿਆਂ ਤੋਂ ਹਾਲਾਤ ਆਏ ਅਤੇ ਆਪ ਨੇ ਬਹੁਤ ਵਡੀ ਤਰੱਕੀ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਤੁਸੀਂ ਇਨੇ ਨੇਜਵਾਨ ਸੋ ਤੇ ਫਿਰ ਤੀ ਆਪ ਨੂੰ ਹਾਉਸ ਨੇ ਇਹ ਇੰਤ ਦਿਤੀ ਹੈ ਅਤੇ ਆਪ ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ ਦੀ ਕੁਰਸੀ ਤੇ ਬਿਰਾਜਮਾਨ ਹੋ। ਮੈਨੂੰ ਉਮੀਦ ਹੈ ਕਿ ਆਪ ਇਸ ਦੇ ਪੂਰੇ ਪਾਤਰ ਸਾਬਤ ਹੋਵੇਗੇ।

ਪਹਿਲੇ Opposition ਨੂੰ ਭੇਜੀ ਕਿ ਤੁਸੀਂ ਉਪਰ ਦੀ eye ਨੂੰ catch ਕਰੋਗੇ ਪਰ ਹੁਣ ਉਮੀਦ ਹੈ ਕਿ ਤੁਸੀਂ Opposition ਦੀ eye ਵੀ catch ਕਰਿਆ ਕਰੋਗੇ। ਅਸੀਂ ਤੁਹਾਡੀ ਚੋਣ ਵਿਚ ਵੋਟ ਨਾ ਦਿਤੇ ਅਤੇ ਇਕ ਹੋਰ ਸਾਥੀ ਦਾ ਨਾਮ ਤੁਹਾਡੇ ਮੁਕਾਬਲੇ ਵਿਚ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ। ਇਸ ਵਿਚ ਅਸੀਂ ਵੋਟ ਉਸ ਨੂੰ ਦਿਤੇ ਪਰ ਇਸ ਤੋਂ ਭਾਵ ਇਹ ਨਹੀਂ ਕਿ ਅਸੀਂ ਤੁਹਾਡੀ ਚੋਣ ਤੇ ਖੁਸ਼ ਨਹੀਂ। ਮੈਂ ਯਕੀਨ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਅਸੀਂ ਆਪ ਦਾ ਪੂਰਨ ਅਦਬ ਕਰਾਂਗੇ ਅਤੇ ਤੁਸੀਂ ਵੀ ਸ਼ਰਾਫ਼ਦਲੀ ਤੋਂ ਕੰਮ ਲਵੋਗੇ। ਮੈਂ Opposition ਵਲੋਂ ਚੀਫ਼ ਮਿਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਨੂੰ ਵੀ ਇਸ ਨਾਮ ਦੇ ਤਜਵੀਜ਼ ਕਰਨ ਤੇ ਮੁਬਾਰਕਬਾਦ ਦਿੰਦਾ ਹਾਂ। ਅਤੇ ਉਮੀਦ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਤੁਸੀਂ ਸਾਰਿਆਂ ਨਾਲ ਪੂਰਾ ਇਨਸਾਫ਼ ਕਰੋਗੇ ਅਤੇ ਉਸ ਡਾਕਟਰ ਸਤਿਪਾਲ ਦੀਆਂ ਕਾਇਮ ਕੀਤੀਆਂ ਹੋਈਆਂ ਸ਼ਾਨਦਾਰ ਰਵਾਇਤਾਂ ਨੂੰ ਕਾਇਮ ਰਖੋਗੇ, ਜੋ ਕਿ ਮਹਾਨ ਲੀਡਰ ਸਨ ਅਤੇ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਤੁਹਾਡੇ ਦਿਲ ਵਿਚ ਵੀ ਪੂਰਨ ਇਤਤ ਹੈ। ਮੈਂ ਉਮੀਦ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਆਪ ਹਾਉਸ ਵਿਚ ਆਪਣੇ ਮੁਨਸ਼ਫ਼ਾਨਾ rulings ਦੇਕੇ ਪੁਰਾਨੀਆਂ ਰਵਾਇਤਾਂ ਕਾਇਮ ਰਖੋਗੇ ਅਤੇ ਹਾਉਸ ਦੀ ਸ਼ਾਨ ਨੂੰ ਉਚਿਆ ਕਰੋਗੇ।

ਵਿਕਾਸ ਮੰਤਰੀ (ਸਰਦਾਰ ਪ੍ਰਤਾਪ ਸਿੰਘ ਕੇਰੋ) : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਬੜਾ ਚਿਰ ਹੋਇਆ ਅਸੀਂ ਤੁਹਾਨੂੰ ਡਿਪਟੀ ਸਪੀਕਰ ਕਰਕੇ ਆਖਦੇ ਸਾਂ। ਹੁਣ ਬਹੁ ਸੰਮਤੀ ਨਾਲ ਆਪ ਨੂੰ ਸਪੀਕਰ ਚੁਣਿਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਇਹ ਵੇਖਣ ਦੀ ਲੋੜ ਨਹੀਂ ਕਿ ਵੋਟ ਕਿਸ ਕਿਸ ਨੇ ਦਿਤੇ ਹਨ ਸਗੋਂ ਵੇਖਣਾ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਆਪ ਨੂੰ ਸਭਾਪਤੀ ਚੁਣਨ ਵਿਚ ਕਿਨੀ ਭਾਰੀ ਗਿਨਤੀ ਅਤੇ ਬਹੁ ਸੰਮਤੀ ਨੇ ਪ੍ਰਵਾਨਗੀ ਦਿਤੀ।

ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਤੁਹਾਡੇ ਲਈ ਸਪੀਕਰੀ ਦੀ ਕੁਰਸੀ ਕੋਈ ਕਸ਼ਟੀ ਨਹੀਂ ਜਿਥੇ ਕਿ ਤੁਸੀਂ ਨੇ ਪੜ੍ਹਿਆ ਜਾਨਾਂ ਹੈ। ਤੁਸੀਂ ਤਾਂ ਡਿਪਟੀ ਸਪੀਕਰ ਦੇ ਤੌਰ ਤੇ ਹੀ ਇਸ ਕਸ਼ਟੀ ਤੇ ਪਰਖੇ ਜਾ ਚੁਕੇ ਹੋ। ਇਹ ਪਦਵੀ ਪ੍ਰਚਲਤ ਰਵਾਇਤਾਂ ਅਨੁਸਾਰ ਬਹੁਤ ਉਚੀ ਪਦਵੀ ਹੈ। ਅਤੇ ਚੀਫ਼ ਮਿਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਦੀ ਪਦਵੀ ਤੋਂ ਇਹ ਪਦਵੀ ਦੂਜੇ ਦਰਜੇ ਤੇ ਹੈ। ਅਰਥਾਤ—

ਤੁਹਾਡੀ ਮਾਨਤਾ ਚੀਫ ਮਿਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਦੀ ਮਾਨਤਾ ਦੇ ਨਾਲ ਨਾਲ ਦਰਜਾ ਰਖਦੀ ਹੈ। ਮੈਂ ਜਾਣਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਜਦ ਆਪ ਡਿਪਟੀ ਸਪੀਕਰ ਸਓ ਤਾਂ ਕਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਤੁਹਾਡੇ ਹਾਉਸ ਵਿਚ ਆਉਣ ਤੇ ਹਾਉਸ ਦੇ ਮੈਂਬਰ ਤਾੜੀਆਂ ਮਾਰਿਆਂ ਕਰਦੇ ਸਨ। ਮੈਂ ਜਾਣਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਹਾਉਸ ਨੇ ਆਪ ਨੂੰ ਚੁਣਿਆ ਹੈ ਤਾਂ ਅਖਾਂ ਅਗੇ ਕੀ ਰਖਿਆ। ਇਥੇ ਕਿਸੇ ਗਲ ਦੇ ਸਬੂਤ ਦਿੱਤਾ ਦੀ ਲੋੜ ਨਹੀਂ ਤੁਸੀਂ ਤਾਂ ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ ਡਿਪਟੀ ਸਪੀਕਰ ਦੀ ਪਦਵੀ ਤੇ ਹੀ ਪਾਸ ਹੋ ਚੁਕੇ ਹੋ। ਅਤੇ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੀ ਹਾਉਸ ਦੀ ਸ਼ਾਨ ਨੂੰ ਵਧਾਂਦੇ ਚਲੇ ਜਾਵੇਗੇ।

ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਮੈਂ ਜਾਣਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਤੁਹਾਡੇ ਮਨ ਵਿਚ ਵਿਤਕਰਾ ਨਹੀਂ। ਤੁਹਾਡੇ ਮਨ ਵਿਚ ਕਿਸੇ ਪਾਰਟੀ ਦਾ ਲਿਹਾਜ਼ ਨਹੀਂ। ਜੇ ਮਿਤਰ Opposition ਵਿਚੋਂ ਆਪ ਸੰਬੰਧੀ ਕੋਈ ਭੇ ਰਖਦੇ ਹਨ ਇਹ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਮਨ ਦਾ ਭੇ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਆਪ ਦਾ ਡਿਪਟੀ ਸਪੀਕਰ ਰਹਿਣਾ ਹੀ ਇਸ ਗਲ ਦਾ ਸਬੂਤ ਸੀ ਕਿ ਤੁਹਾਡੇ ਵਿਚ ਪਖ ਪਾਤ ਨਹੀਂ। ਆਪ ਦੇ ਮਨ ਵਿਚ ਕਿਸੇ ਲਈ ਵੀ ਵੇਰ ਨਹੀਂ।

ਸਭ ਤੋਂ ਵਧ ਖੁਸ਼ੀ ਮੈਨੂੰ ਇਸ ਗਲ ਦੀ ਹੈ ਕਿ ਵੀਹਵੀਂ ਸਦੀ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਦੀ ਸਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਹਰ ਪਾਸੇ ਨੌਜਵਾਨ ਹੀ ਨੌਜਵਾਨ ਅਗੇ ਆ ਰਹੇ ਹਨ। ਮੈਂ ਸਮਝਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਦੀ ਕਦਰ ਦਾ ਸਮਾਂ ਹੈ। ਜੇ ਵੀ ਨੌਜਵਾਨ ਬਿਆਦਾ ਸਿਆਣਪ ਦਾ ਮਾਲਕ ਹੋਵੇਗਾ ਉਸ ਦੀ ਕਦਰ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇਗੀ। ਆਪ ਦੀ ਛੋਟੀ ਉਮਰ ਤੇ ਜੋ ਬਿਆਦਾ ਤੇ ਬਿਆਦਾ ਆਪ ਦੀ ਕਦਰ ਹੋਈ ਹੈ ਇਹ ਇਸ ਗਲ ਦਾ ਸਬੂਤ ਹੈ ਕਿ ਆਪ ਵਿਚ ਸਚਾਈ ਅਤੇ ਸਿਆਣਪ ਹੈ। ਆਪ ਵਿਚ ਸਚਾਈ, ਬੁਰਦਬਾਰੀ, ਪਿਆਰ ਅਤੇ ਸ਼ਰਾਫਤ ਸਭ ਹਨ।

ਮੈਨੂੰ ਆਪ ਦੇ ਸਭਾਪਤੀ ਬਣਨ ਵਿਚ ਭੇ ਨਹੀਂ ਕਿਉਂ ਜੋ ਆਪ ਦੇ ਇਨਸਾਫ ਦੀ ਸ਼ਾਕ ਹੈ। ਆਪੋਛੀਸ਼ਨ ਵਾਲੇ ਖੁਸ਼ਾਮਦੀਆਂ ਵਾਂਗ ਗਲਾਂ ਕਰਨਗੇ ਪਰ ਸਰਕਾਰੀ ਬੰਚੇ ਵਾਲੇ ਘਟ ਹੀ ਖੁਸ਼ਾਮਦੀ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਤੁਸੀਂ ਅਜਿਹੀ ਥਾਂ ਹੋ ਕਿ ਜਿਥੇ ਖੁਸ਼ਾਮਦੀ ਨਹੀਂ ਪਹੁੰਚਦੀ। ਆਪ ਨੂੰ ਉਨ੍ਹਾਂ 126 ਮੈਂਬਰਾਂ ਨੇ ਇਜ਼ਤ ਦਿਤੀ ਹੈ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ 56 ਲਖ ਦੀ ਗਿਣਤੀ ਦੇ ਵੋਟਰਾਂ ਨੇ ਚੁਣਿਆ ਹੈ। ਮੈਂ ਅਪਨੇ ਹਾਉਸ ਦੇ ਸਾਥੀਆਂ ਨੂੰ ਅਤੇ ਪਿਆਰੇ ਪੰਜਾਬ ਨੂੰ ਵਧਾਈ ਦਿੰਦਾ ਹਾਂ। ਉਸ ਪੰਜਾਬ ਨੂੰ ਜੋ ਸਫਲਤਾ ਵਲ ਅਗਾਂਹ ਵਧ ਰਿਹਾ ਹੈ ਕਿ ਪੰਜਾਬ ਨੇ ਅਤੇ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਚੁਨੇ ਹੋਏ ਮਾਨਯੋਗ ਮੈਂਬਰਾਂ ਨੇ ਆਪ ਦੀ ਸਿਆਣਪ ਅਤੇ ਸਚਾਈ ਦੀ ਕਦਰ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਮੈਂ ਆਪਨੇ ਚੀਫ ਮਿਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਵਲੋਂ ਪੇਸ਼ ਕੀਤੀ ਗਈ ਤਜਵੀਜ਼ ਦੇ ਪਾਸ ਹੋ ਜਾਨ ਤੇ ਵਧਾਈ ਦਿੰਦਾ ਹਾਂ ਅਤੇ ਆਸ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਤੁਸੀਂ ਸਦਾ ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਾਡੀਆਂ ਅਤੇ ਪੰਜਾਬ ਦੀਆਂ ਸੁਭ ਇਛਿਆਵਾਂ ਲੈਂਦੇ ਰਹੋਗੇ।

ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਕਿਸ਼ਨ (ਜਲੰਧਰ ਸ਼ਹਿਰ, ਉਤਰ ਪ੍ਰਦੇਸ਼) : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਆਜ ਇਸ ਹਾਊਸ ਨੇ ਜੋ overwhelming majority ਦੇ ਆਪ ਕਾ ਇਨਕਾਰ ਕੀਤਾ, ਉਸ ਪਰ ਆਪ ਦੀ ਸੁਭਾਵਿਕ ਪੇਸ਼ ਕਰਦਾ ਹਾਂ। ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਆਪਕਾ ਤਾਲੁਕ ਉਸ ਖਾਨਦਾਨ ਦੇ ਹੈ ਜੋ ਅੰਗਰੇਜ਼ਾਂ ਦੇ ਜ਼ਮਾਨੇ ਵਿੱਚ ਮੁਸ਼ਕਲਾਂ ਥਾ ਅਤੇ ਬਾਕਜ਼ੂਦ ਇਸ ਦੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਆਜ਼ਾਦੀ ਦੇ ਲਿਯੇ ਕੁਰਬਾਨੀ ਕੀਤੀ। ਮੁਸ਼ਕਲਾਂ ਥਾ ਕਿ ਆਪ ਦੀ ਰਹਿਨੁਮਾਈ ਵਿੱਚ ਪੰਜਾਬ ਟਰਕੀ ਕਰੇਗਾ। ਆਪ ਇਸ ਹਾਊਸ ਵਿੱਚ ਏਸੀ traditions ਅਤੇ ਰਵਾਇਤ ਕਾਇਮ ਕਰੇਗੇ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਲੋਗਾਂ ਦੇ ਦਿਲਾਂ ਵਿੱਚ ਜ਼ਿਆਦਾ ਦੇ ਜ਼ਿਆਦਾ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਪੈਦਾ ਹੋਵੇਗਾ।

ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਸਭ ਜਾਨਦੇ ਹਨ ਕਿ ਆਪ ਇੱਕ ਕਾਮਯਾਬ journalist ਥੇ। ਆਪਨੇ ਜੋ ਕਾਮ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਇੱਕ ਭਾਰੀ organisation ਅਧੀਨ ਕਾਂਗਰਸ ਕਮੇਟੀ, ਅਮਰਤਸਰ ਦੇ ਪ੍ਰਭਾਵ ਦੇ ਤੌਰ 'ਤੇ ਕੀਤਾ ਹੈ ਉਸੇ ਸਭ ਜਾਨਦੇ ਹਨ। ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਮੈਂ ਯਹ ਨਹੀਂ ਮੂਲ ਸਕਦਾ ਕਿ ਆਪਨੇ ਕਿਸਾਨਾਂ ਦੀ ਬਰਸੇਰੇਫ਼ਕਤਦਾਰ ਲਾਨੇ ਮੈਂ ਕੀਤਾ ਕਾਮ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਆਪ ਉਨ ਦੇ ਸੰਬੰਧੇ ਹਮਦਰਦੀ ਹੈ। ਉਸ ਤਰੀਕੇ ਦੀ ਕੋਈ ਭੀ ਨਹੀਂ ਮੂਲ ਸਕਦਾ ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਤੋਂ ਆਪਨੇ ਕਿਸਾਨਾਂ ਦੀ ਰਹੁਮਾਈ ਕੀ। ਆਪਨੇ ਅਮਰਤਸਰ ਮੈਂ ਕਿਸਾਨਾਂ ਦੀ ਕਾਲਤ ਨਿਰਾਧਿਕਤ ਸੰਯੋਗੀ ਸੇ ਕੀ।

ਮੈਂ ਅਯੋਗ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ, ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਕਿ ਆਪਨੇ ਇੱਕ ਸਾਲ ਮੈਂ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਲੋਗਾਂ ਮੈਂ, ਅਪਨੇ ਜ਼ਿਲੇ ਦੇ ਲੋਗਾਂ ਮੈਂ ਆਪਨੇ ਕਿਸਾਨਾਂ ਮੈਂ ਸ਼ਾਨਦਾਰ ਸੇਵਾ ਕੀ ਹੈ। ਮੈਂ ਉਮੀਦ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਆਪ ਯਹਾਂ ਭੀ ਸ਼ਾਨਦਾਰ ਤਰੀਕੇ ਸੇ ਹਾਊਸ ਦੀ ਵਿਦਮਤ ਕਰੇਂਗੇ Treasury Benches ਆਪਰ opposition ਸੇ ਇੱਕ ਜੈਸਾ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰੇਂਗੇ ਆਪਨੇ ਕਿਸੀ ਮੈਂਬਰ ਦੀ ਸ਼ਿਕਾਯਤ ਕਾ ਸੀਕਾ ਨ ਮਿਲੇਗਾ।

ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਜੈਸਾ ਕਿ ਆਪਨੇ ਕਲ ਕਹਾ ਥਾ ਸਾਰੇ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਮੈਂ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਸਪੀਕਰ ਦੀ ਬਹੁਤ ਬੜੀ ਦਰਜੀ ਹਾਸਿਲ ਰਹਾ ਹੈ। ਸਪੀਕਰ ਕਾਂਗਰਸ ਮੈਂ ਭੀ ਹਮਾਰੇ ਸੂਬੇ ਦੇ ਸਪੀਕਰ ਸ਼ਾਨਦਾਰ ਰਵਾਧਾਤ ਕਾਧਮ ਕਰ ਚੁੱਕੇ ਹਨ। ਮੇਰਾ ਲਯੋਲ ਹੈ ਕਨਿਸਟੀਟਿਊਸ਼ਨ ਹੈ ਕਿ ਆਪ ਅਪਨੀ ਲਿਯਾਕਤ, ਕਾਕਲਿਯਤ ਆਪਰ ਟ੍ਰੇਸਰੀ ਖੁਬੀਯੋਂ ਸੇ ਸਾਰੇ ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਆਪਰ ਸ਼ਾਸਤਰੀ ਤੌਰ 'ਤੇ ਇਸ ਹਾਊਸ ਦੀ ਜਹਾਂ ਪਹਲੇ ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ ਸ਼ਾਨਦਾਰ ਰਿਵਾਧਤ ਕਾਧਮ ਕਰ ਚੁੱਕੇ ਹਨ ਆਪਨੇ ਚਾਰ ਚਾਂਦ ਲਗਾਯੇ ਆਪਰ ਪੰਜਾਬ ਇਸ ਬਾਤ 'ਤੇ ਫਲਸਤ ਕਰੇਂਗਾ ਕਿ ਉਸ ਦੇ ਨੁਸਾਫ਼ੇ ਮੈਂ ਆਪ ਜੈਸਾ ਸਪੀਕਰ ਚੁਨਾ। ਇਸ ਅਲਫ਼ਾਜ਼ ਦੇ ਸਾਥ ਮੈਂ ਆਪ ਦੀ ਸੁਭਾਰਿਕਬਾਦ ਦੇਂਦਾ ਹਾਂ।

ਸਰਤਾਰ ਵਰਿਅਮ ਸਿੰਘ (ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ) : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ ! ਮੈਂ ਤੁਹਾਨੂੰ ਇਸ

ਹਾਊਸ ਦੇ ਸਪੀਕਰ ਚੁਣੇ ਜਾਣ ਤੇ ਇੰਨੀ ਮੁਬਾਰਿਕਬਾਦ ਪੇਸ਼ ਕਰਦਾ ਹਾਂ। ਮੈਂ ਉਸ ਦਿਨ ਨੂੰ ਮੁਬਾਰਿਕ ਸਮਝਦਾ ਹਾਂ ਜਿਸ ਦਿਨ ਤੁਹਾਡੀ ਡਾਕਟਰ ਸਤਿ ਪਾਲ ਜੀ ਨਾਲ ਪਹਿਲੀ ਮੁਲਾਕਾਤ ਹੋਈ। ਤੁਹਾਡੇ ਬਾਬਾ ਜੀ ਬਿਮਾਰ ਹੋਏ ਅਤੇ ਡਾਕਟਰ ਜੀ ਤੁਹਾਡੇ ਘਰ ਗਏ। ਇਕ ਛੋਟਾ ਜਿਹਾ ਵਾਕਿਆ ਵੀ ਇਨਸਾਨ ਦੀ ਕਿਸਮਤ ਦਾ ਪਾਸਾ ਪੜ੍ਹ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਵਾਕਿਆ ਨਾਲ ਤੁਹਾਡੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿਚ ਇਕ ਇਨਕਿਲਾਬ ਆ ਗਿਆ। ਤੁਸੀਂ ਛੋਟੀ ਉਮਰ ਦੇ ਸੀ। ਤੁਹਾਡੇ ਤੇ ਉਸ ਬੜੇ ਲੀਡਰ, ਜਲਿਆਂਵਾਲਾ ਬਾਗ ਦੇ ਹੀਰੋ ਦਾ ਅਸਰ ਪਿਆ। ਉਸ ਤੋਂ ਤੁਹਾਨੂੰ inspiration ਮਿਲਿਆ ਕਿ ਦੇਸ਼ ਸੇਵਾ ਹੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦਾ ਮਕਸਦ ਹੈ। ਜੇ ਤੁਹਾਨੂੰ ਡਾਕਟਰ ਸਾਹਿਬ ਨਾ ਮਿਲਦੇ ਤਾਂ ਸ਼ਾਇਦ ਤਾਲੀਮ ਪੂਰੀ ਕਰਨ ਤੋਂ ਬਾਦ ਤੁਸੀਂ ਕਿਸੇ ਹੋਰ ਪਾਸੇ ਚਲੇ ਜਾਂਦੇ। ਲੇਕਿਨ ਕੁਦਰਤ ਨੂੰ ਇਹ ਹੀ ਮਨਜ਼ੂਰ ਸੀ ਕਿ ਤੁਸੀਂ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਬੇਤਰੀ ਅਤੇ ਭਲਾਈ ਵਾਸਤੇ ਕੰਮ ਕਰੋ। ਡਾਕਟਰ ਸਾਹਿਬ ਦਾ ਤੁਹਾਡੀ ਪਬਲਿਕ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿਚ ਬੜਾ ਹੱਥ ਸੀ। ਉਹ ਤੁਹਾਨੂੰ ਆਪਣਾ ਦੱਚਾ ਸਮਝਦੇ ਸਨ ਅਤੇ ਤੁਹਾਡੇ career ਵਿਚ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਬੜੀ ਦਿਲਚਸਪੀ ਸੀ।

ਤੁਹਾਡੀ ਕਾਬਲੀਅਤ ਅਤੇ ਖਿਆਲਾਤ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਕੁਝ ਕਹਿਣ ਦੀ ਲੋੜ ਨਹੀਂ। ਸਭ ਜਾਣਦੇ ਹਨ ਕਿ ਤੁਸੀਂ law ਦੇ ਇਮਤਹਾਨ ਵਿਚ ਅੱਵਲ ਰਹੇ। ਫੇਰ ਬੌਰ ਚੀਫ਼ ਐਡੀਟਰ 'ਸ਼ੇਰ ਭਾਰਤ' ਵਿਚ ਤੁਸੀਂ ਅਜਿਹੇ ਖਿਆਲਾਤ ਦਾ ਪਰਚਾਰ ਕੀਤਾ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਹਿਰਤਾਦਾਰੀ ਅਤੇ ਇਸ

ਕਿਸਮ ਦੀਆਂ ਹੋਰ ਦੁਰਆਈਆਂ ਘਟਣ ਅਤੇ ਦੇਸ਼ ਭਗਤੀ ਦਾ ਜ਼ਬਰਾ ਵਧੇ ਤੇ ਮੁਲਕ ਦੀ ਤਰਕੀ ਹੋਵੇ। ਤੁਸੀਂ Amritsar Journalist Association ਦੇ president ਰਹੇ ਅਤੇ ਆਪ ਜੀ ਜ਼ਿਲਾ ਕਾਂਗਰਸ ਕਮੇਟੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ (ਦਿਹਾਤੀ) ਦੇ ਵੀ ਦੋ ਸਾਲ ਪਰਧਾਨ ਰਹੇ। ਅਤੇ ਇਹ ਸਾਰੇ ਕੰਮ ਤੁਸੀਂ ਬੜੀ ਲਿਆਕਤ ਅਤੇ ਕਾਮਯਾਬੀ ਨਾਲ ਕੀਤੇ। ਮੈਂ ਬਤੌਰ ਕਾਂਗਰਸ ਵਰਕਰ ਦੇ ਤੁਹਾਡੇ ਨਾਲ ਕੰਮ ਕਰਦਾ ਰਿਹਾ ਹਾਂ ਉਸ ਸਿਲਸਿਲੇ ਵਿਚ ਮਲੂਮ ਹੋਇਆ ਕਿ ਤੁਹਾਡੇ ਦਿਲ ਵਿਚ ਕਿਸਾਨਾਂ ਅਤੇ ਗਰੀਬਾਂ ਵਾਸਤੇ ਕਿੰਨਾ ਦਰਦ ਹੈ। ਸਾਰੇ ਜ਼ਿਲੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਵਿਚ ਤੁਹਾਡੇ ਕੰਮ ਦੀ ਸਭ ਲੋਕ ਤਾਰੀਫ਼ ਕਰਦੇ ਹਨ।

ਇਹ ਵੀ ਇਕ ਕੁਦਰਤੀ ਗਲ ਸੀ ਕਿ ਆਜ਼ਾਦੀ ਪਿਛੋਂ ਪਹਿਲੀ election ਵਿਚ ਤੁਸੀਂ ਤੇ ਡਾਕਟਰ ਸਾਹਿਬ ਦੋਵੇਂ ਅਸੈਂਬਲੀ ਦੇ ਮੈਂਬਰ ਚੁਣੇ ਗਏ। ਉਹ ਸਪੀਕਰ ਬਣੇ ਤੇ ਤੁਸੀਂ Deputy Speaker ਬਣ ਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਕੋਲੋਂ ਰੋਸ਼ਨੀ ਹਾਸਿਲ ਕੀਤੀ। ਮੈਂਨੂੰ ਯਕੀਨ ਹੈ ਕਿ ਤੁਹਾਡੇ ਸਪੀਕਰ ਬਣਨ ਨਾਲ ਡਾਕਟਰ ਸਾਹਿਬ ਦੀ ਰੂਹ ਨੂੰ ਬੜੀ ਖੁਸ਼ੀ ਹੋਵੇਗੀ ਕਿ ਤੁਸੀਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਜਾਨਸ਼ੀਨ ਬਣੇ ਹੋ। ਕਿਹਾ ਗਿਆ ਹੈ ਕਿ ਬਜ਼ੁਰਗੀ ਬਾਕਲ ਅਸਤ ਨਾ ਬਸਾਲ। ਤੁਹਾਨੂੰ ਇਸ ਛੋਟੀ ਉਮਰ ਵਿਚ ਇਹ ਬਹੁਤ ਵਡਾ ਮਾਣ ਮਿਲਿਆ ਹੈ। ਇਹ ਬਹੁਤ ਵਡੀ ਗਲ ਹੈ। ਤੁਹਾਡਾ ਇਹ ਚੁਣਾਓ ਬਤੌਰ ਸਪੀਕਰ ਦੇ ਇਹ ਗਲ ਸਾਬਤ ਕਰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਬਤੌਰ Deputy Speaker ਤੁਸੀਂ ਬਹੁਤ ਕਾਮਯਾਬ ਰਹੇ ਹੋ। ਤੁਸੀਂ ਕਮ-ਗੇ ਇਨਸਾਨ ਹੋ। ਤੁਹਾਨੂੰ ਕਾਫ਼ੀ ਫਾਹਿਸ਼-ਫ਼ਰਾਸਤ ਹਾਸਿਲ ਹੈ ਅਤੇ ਰਵਾਦਾਰੀ ਤੁਹਾਡੇ ਵਿਚ ਬਹੁਤ ਹੈ। ਇਸ ਵਾਸਤੇ ਮੈਂਨੂੰ ਯਕੀਨ ਹੈ ਕਿ ਤੁਹਾਡੇ ਜ਼ੋਰੇ ਸਦਾਰਤ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਨੁਮਾਇੰਦੇ ਬਹੁਤ ਹਵਾ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕੰਮ ਕਰਨਗੇ ਅਤੇ ਸੂਬੇ ਦੀ ਸ਼ਾਨ ਵਧਾਣਗੇ। Opposition ਵਾਸਤੇ ਵੀ ਆਪ ਜੀ ਨਾਲੋਂ ਚੰਗਾ ਸਪੀਕਰ ਹੋਰ ਕੋਈ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦਾ ਸੀ। ਉਹ ਤੁਹਾਡੀ ਰਵਾਦਾਰੀ ਅਤੇ ਸ਼ਰਾਫ਼ਤ ਦਾ ਫਾਇਦਾ ਹਾਸਲ ਕਰਨਗੇ ਅਤੇ ਹਾਉਸ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਉਸਾਰੂ ਤਜਵੀਜ਼ਾਂ ਤੋਂ ਫਾਇਦਾ ਉਠਾਵੇਗਾ। ਸਭ ਪੁਛੇ ਤਾਂ, ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਤੁਹਾਡਾ ਚੁਣਾਓ secularism ਦੀ ਵੀ ਬੜੀ ਵਡੀ ਜਿਤ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਸਾਬਤ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ ਕਿ ਕਾਂਗਰਸ ਦੀ ਹਕੂਮਤ ਵਿਚ ਹਿੰਦੂ ਸਿਖ ਦਾ ਕੋਈ ਸਵਾਲ ਨਹੀਂ ਨਿਰਫ਼ ਕਾਬਲ ਅਤੇ ਯੋਗ ਆਦਮੀ ਨੂੰ ਹੀ ਚੁਣਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਇਹ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਬਦ ਕਿਸਮਤੀ ਹੈ ਕਿ ਆਜ਼ਾਦੀ ਹਾਸਿਲ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਬਜ਼ੁਰਗ ਇਕ ਇਕ ਕਰਕੇ ਸਾਡੇ ਕੋਲੋਂ ਅਲਗ ਹੋ ਰਹੇ ਹਨ। ਇਸ ਵਾਸਤੇ ਹੁਣ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਉਤੇ ਜ਼ਿੰਮੇਦਾਰੀ ਆ ਰਹੀ ਹੈ। ਤੁਸੀਂ ਨੌਜਵਾਨ ਹੋ। ਤੁਹਾਡੇ ਨਾਲ ਸਾਡੀਆਂ ਉਮੀਦਾਂ ਅਤੇ ਉਮੰਗਾਂ ਵਾਬਸਤਾ ਹਨ ਕਿ ਤੁਸੀਂ ਸਾਨੂੰ ਠੀਕ ਤਰ੍ਹਾਂ guide ਕਰੋਗੇ। ਮੈਂ ਤੁਹਾਡੀ ਜ਼ਿਆਦਾ ਤਾਰੀਫ਼ ਨਹੀਂ ਕਰਦਾ ਤਾਕਿ ਤੁਹਾਨੂੰ ਨਜ਼ਰ ਨਾ ਲਗ ਜਾਵੇ। ਸਿਰਫ਼ ਮੁਬ ਰਿਕਬਾਦ ਪੇਸ਼ ਕਰਕੇ ਗਲ ਖ਼ਤਮ ਕਰਦਾ ਹਾਂ।

ਚੀਫ਼ ਪਾਲਿਟੀਕਲ ਸਕੱਟਰੀ (ਸ਼੍ਰੀ ਪ੍ਰਬੋਧ ਚੰਦਰ) : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਆਪ ਕੀ ਸੁਭਾਰਕ ਦੇਨੇ ਕੇ ਬਾਦ ਸੁਝੇ ਅਪਨੇ House ਕੀ ਭੀ ਸੁਭਾਰਿਕ ਦੇਨਾ ਹੈ ਜਿਸ ਨੇ ਏਕ ਨੀਯਵਾਨ ਕੀ ਅਪਨਾ ਸਪੀਕਰ ਚੁਨਾ ਹੈ। ਸੁਝੇ ਆਪ ਕੀ ਇਸ ਲਿਯੇ ਭੀ ਸੁਭਾਰਕ ਦੇਨਾ ਹੈ ਕਿ ਆਪ ਕੇ ਤਾਲਲੁਕਾਤ Press Gallery ਸੇ ਬਹੁਤ ਅਚਲੇ ਰਹੇ ਹਨ। ਕਿਸੀ ਭੀ House ਕੀ ਜਾਨ ਤਸ ਵਕਤ ਤਕ ਕਾਯਮ ਨਹੀਂ ਰਹ ਸਕਤੀ ਜਕ ਤਕ ਕਿ Press Gallery ਆਰ ਸਪੀਕਰ ਕੇ relations ਬਹੁਤ ਅਚਲੇ ਨ ਹੀਂ। Press Gallery ਕੇ ਸਾਥ ਆਪ ਕੇ ਤਾਲਲੁਕਾਤ ਬਹੁਤ ਜਾਨਦਾਰ ਹੈਂ ਆਰ ਧਰ ਆਰ ਭੀ ਜਯਾਦਾ ਅਚਲੇ ਹੀਤੇ ਜਾਯੋਂਗੇ ਕਯੋਂਕਿ ਆਪ ਖੁਦ ਏਕ ਅਚਲੇ ਧਾਯੇ ਕੇ journalist ਹੈਂ।

[ਚੀਫ ਪਾਰਲੀਮੈਂਟਰੀ ਸੈਕਟਰੀ]

ਸਪੀਕਰ ਸਾਂਹਿਬ, ਆਪ ਖਰ ਇਸ House ਦੀ dignity ਬਰਕਰਾਰ रखने की ही ज़ਿम्मेवारी नहीं, ਆਪ ਖਰ ਪੰਜਾਬ ਦੀ dignity ਬਰਕਰਾਰ रखने की ही ज़ਿम्मेवारी नहीं, ਆਪ ਖਰ एक और बड़ी ज़ਿम्मेवारी है। आपने यह साबत कर दिखाना है कि एक नौजवान भी यह काम पूरा कर सकता है। आप को स्पीकर होते हुए हिंदुस्तान के नौजवानों का सिर उंचा करना है। आपने इस तरह काम करना है कि आने वाले लोग नौजवानों पर ही अपनी उम्मीदें रखें। आपके सामने नौजवानों की इज्जत और शान को बरकਰार रखने का सवाल है। मुझे पूरी उम्मीद है कि आप इसे बरकਰार रखेंगे। मैं आप को यकीन दिलाता हूँ कि हम आप को पूरा तआवन देंगे। इन लफ़्ज़ों के साथ मैं आप को फिर मुबारकबाद देता हूँ।

ਸ਼੍ਰੀ ਵਧਾਵਾ ਰਾਮ (ਫਾਇਲਕਾ) : ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ, ਮੈਂ ਤੁਹਾਨੂੰ ਇਸ ਕੁਰਸੀ ਤੇ ਆਉਣ ਦੀ ਵਧਾਈ ਦਿੰਦਾ ਹਾਂ। ਮੈਂ ਤੁਹਾਨੂੰ ਇਹ ਅਰਜ਼ ਕਰਨੀ ਹੈ ਕਿ Opposition ਇਕ ਬੜੀ ਅਹਿਮ ਚੀਜ਼ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਜੇ Opposition ਨੂੰ ਗਡੀ ਦੀ brake ਕਿਹਾ ਜਵੇ ਤਾਂ ਠੀਕ ਹੋਵੇਗਾ। ਆਪ ਜੀ ਨੂੰ ਪਤਾ ਹੈ ਕਿ ਵਜ਼ੀਰ ਸਾਹਿਬਾਨ ਆਪਣੀ ਤਾਕਤ ਦੇ ਨਸ਼ੇ ਵਿਚ ਆਕੇ ਕਈ ਇਹ ਜਹੀਆਂ ਗਲਾਂ ਕਰਵਾ ਲੈਂਦੇ ਹਨ ਜਿਹੜੀਆਂ ਜੰਤਾਂ ਦੇ ਹਿਤਾਂ ਦੇ ਉਲਟ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ। Opposition ਵਿਚਾਰੀ ਤਾਂ ਰੋਲਾ ਹੀ ਪਾ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਇਹੋ ਜਿਹੇ ਵਕਤਾਂ ਤੇ ਆਪ ਜੀ ਨੂੰ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਕਿ brakes ਨੂੰ ਵਰਤੇ ਤਾਂ ਜੋ ਗੱਡੀ ਕਿਸੇ ਖੁਧ ਵਿਚ ਨਾਂ ਜਾ ਪਏ। ਜੇ ਤੁਸੀਂ Opposition ਨੂੰ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਵਰਤਦੇ ਰਹੋਗੇ ਤਾਂ ਇਹ ਗਡੀ ਧੌੜੇ ਧੁਕੇ ਖਾਂਦੀ ਤੁਰਦੀ ਜਾਏਗੀ। ਪਰ ਜੇ ਤੁਸੀਂ Opposition ਜਾਂ brakes ਨੂੰ ਨਹੀਂ ਵਰਤੋਗੇ ਤਾਂ ਸਵਾਰੀਆਂ ਦਾ ਇਤਬਾਰ ਇਸ ਗੱਡੀ ਤੋਂ ਘਟ ਜਾਏਗਾ ਤੇ ਇਸ ਉੱਤੇ ਬਹੁਤ ਘਟ ਲੋਗ ਸਵਾਰ ਹੋਣਗੇ। ਮੈਂ ਅਰਜ਼ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਜਦੋਂ ਤੁਸੀਂ ਵੇਖੋ ਕਿ ਵਜ਼ੀਰ ਸਾਹਿਬਾਨ ਕੋਈ ਨਾਜਾਇਜ਼ ਗਲ ਕਰਵਾਉਣਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਨ ਤਾਂ ਤੁਹਾਨੂੰ Opposition ਦੀ ਤੰਬ ਬਣਕੇ ਨੂੰ ਵਰਤਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਤੁਹਾਨੂੰ ਇਸ ਗਲ ਦਾ ਖਿਆਲ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਕਿ ਕੋਈ ਵਜ਼ੀਰ ਨਾਰਾਜ਼ ਹੋ ਜਾਵੇਗਾ। ਇਹ ਠੀਕ ਹੈ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਤੁਹਾਨੂੰ ਕਾਮਯਾਬ ਕਰਵਾਇਆ ਪਰ ਹੁਣ ਤੁਹਾਡਾ ਫ਼ਰਜ਼ ਹੈ ਕਿ ਤੁਸੀਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਨਾਜਾਇਜ਼ ਨਾਰਾਜ਼ਗੀ ਦੀ ਪਰਵਾ ਨ ਕਰੋ।

ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ, ਕਿਹਾ ਗਿਆ ਹੈ ਕਿ ਹੁਣ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਦਾ ਵਕਤ ਆ ਗਿਆ ਹੈ ਜਾਂ ਆ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਇਹੋ ਜਿਹੀਆਂ ਗਲਾਂ ਉਹ ਕਰਦੇ ਹਨ ਜਿਹੜੇ ਆਪ ਬੁਢੇ ਹੁੰਦੇ ਹਨ ਤੇ ਉਹ ਆਪਣੀ ਥਾਂ ਨਹੀਂ ਛੱਡਣਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਜਿੰਨੇ ਤਕ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਬਬਰਦਸਤੀ ਕਦਿਆ ਨ ਜਾਵੇ। ਮੈਂ ਕਹਿੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਬੁਢੇ ਬੁਰੇ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੇ। ਬੁਢੇ ਵੀ ਚੰਗੇ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਸਾਡੇ ਮੁਖ ਮੰਤ੍ਰੀ ਜੀ ਬੁਢੇ ਹਨ ਪਰ ਕੀ ਉਹ ਚੰਗੇ ਨਹੀਂ। ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਾਡੇ House ਵਿਚ ਹੋਰ ਵੀ ਕਈ ਬੁਢੇ ਹਨ ਮਸਲਨ ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ ਮੱਤਾ ਸਿੰਘ ਜੀ ਹਨ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਲਿਆਕਤ ਦਾ ਫ਼ਾਇਦਾ ਉਠਾਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਤੁਹਾਨੂੰ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਕਿ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਭੁਲਾ ਨ ਦਿਉ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਵਾਕਫ਼ੀਅਤ ਦਾ ਫ਼ਾਇਦਾ ਬਰੂਰ ਉਠਾਓ।

ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ, ਆਮ ਤੌਰ ਤੇ ਤੁਸੀਂ ਜਿਹੜੀਆਂ rulings ਦਿੰਦੇ ਹੋ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਵਿਚ ਦਿੰਦੇ ਹੋ। ਇਹ ਠੀਕ ਹੈ ਕਿ ਮੈਂ ਕੁਝ ਬੋਲੀ ਬਹੁਤ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਸਮਝ ਲੈਂਦਾ ਹਾਂ। ਪਰ ਸਾਡੇ ਕਈ ਮੈਂਬਰ ਅਜਿਹੇ ਹਨ ਜਿਹੜੇ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਨਹੀਂ ਸਮਝਦੇ। ਉਹੀ ਕੁਰਸੀ ਤੇ ਚਲੇ ਜਾਣ ਨਾਲ ਉਹੀ ਬੁਝਾਨ

ਬੋਲਣ ਦੀ ਲੋੜ ਨਹੀਂ। ਕਈ ਵੇਲੇ ਤੁਸੀਂ ਕੁਝ ਕਹਿੰਦੇ ਹੋ ਤੇ ਅਸੀਂ ਕੁਝ ਸਮਝਦੇ ਹਾਂ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕਈ ਕਿਸਮ ਦੀਆਂ ਗਲਤ ਫਹਿਮੀਆਂ ਪੈ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਇਸ ਲਈ ਮੈਂ ਗੁਜ਼ਾਰਾ ਕਰ ਰਾ ਕਿ ਤੁਸੀਂ ਪੰਜਾਬੀ ਹੁੰਦਿਆਂ ਹੋਏ ਪੰਜਾਬੀ ਹੀ ਬੋਲਿਆ ਕਰੋ।

ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ, ਆਪ ਜੀ ਦੇ ਤਾਂ ਕਈ ਫਰਜ਼ ਹਨ ਤੇ ਇਖਤਿਆਰ ਵੀ ਹਨ। ਸਾਡੇ ਤਾਂ ਸਾਰੇ ਫਰਜ਼ ਹੀ ਫਰਜ਼ ਹਨ। ਮੈਂ ਤੁਹਾਨੂੰ ਯਕੀਨ ਦਿਵਾਉਂਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਅਸੀਂ ਤੁਹਾਨੂੰ ਪੂਰਾ ਤਿਆਰ ਦੇਵਾਂਗੇ। ਪਰ ਮੇਰਾ ਵਿਚਾਰ ਹੈ ਕਿ ਤੁਸੀਂ ਵਜ਼ੀਰਾਂ ਦੀਆਂ ਨਾਜਾਇਜ਼ ਰਲਾਂ ਦੀ ਮੁਖਾਲਫਤ ਵਿਚ ਸਾਡੀ ਜ਼ਰੂਰ ਮਦਦ ਕੀਤਾ ਕਰੋਗੇ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਲੜਕਿਆਂ ਨਾਲ ਮੈਂ ਤੁਹਾਨੂੰ ਮੁਬਾਰਕਬਾਦ ਦਿੰਦਾ ਹਾਂ।

ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ ਮੋਤਾ ਸਿੰਹ ਆਨੰਦਪੁਰੀ (ਆਦਮਪੁਰ) : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਮੈਂ ਇਸ ਵਕਤ ਆਪਣੀ ਕਾਮਯਾਬੀ ਪਰ ਜਿਥੇ ਮੁਬਾਰਕਬਾਦ ਦੇਵਾਂ ਉਥੇ ਜਿਥੇ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ ਕਰਾਂਗਾ ਉਥੇ ਤੁਹਾਨੂੰ ਸ਼ਾਨਦਾਰ ਤਰੀਕੇ ਤੋਂ ਅਪਣੇ ਫਰਾਜ਼ ਅਦਾ ਕਰੋ ਅਤੇ ਅਪਣੇ career ਨੂੰ ਉਸ ਤਰੀਕੇ ਤੋਂ ਉੱਚਾ ਕਰੋ ਜਿਵੇਂ ਦੁਨੀਆਂ ਦੇ ਅੰਦਰ ਸਪੀਕਰ ਦੀ dignity ਦਾ ਰਿਵਾਜ ਹੈ। ਮੈਂ ਇਥੇ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ ਕਰ ਲਵਾਂਗਾ ਕਿ ਇਸ ਲਈ ਕਰਵਾਂਗਾ, ਕਿਉਂਕਿ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨੀਜਵਾਨ ਨੂੰ ਇਸ (chair) ਤੇ ਬਿਠਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਜੋ legislature ਦੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਤੋਂ ਉੱਚਾ ਦਰਜਾ ਰੱਖਦਾ ਹੈ। ਇਸੇ ਨੀਜਵਾਨ ਨੂੰ ਇਸ ਜਗ੍ਹਾ ਤੇ ਪਹੁੰਚਾਉਣਾ ਉਸ ਮੁਲਕ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਵਾਸਤੇ ਫਾਇਦਾਦਾਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਜਿਸ ਤੋਂ ਇਸ ਨੀਜਵਾਨ ਪੈਦਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। Democracy ਦੇ ਤਰੀਕੇ ਦੇ ਮੁਤਾਬਿਕ ਬੇਸ਼ਕ ਹਰੇਕ ਨੂੰ ਹੱਕ ਹੈ ਕਿ ਕਿਸੀ ਐਂਡਰ ਦੇ ਲਿਏ ਕਿਸੀ ਨਾਮ ਪੇਸ਼ ਕਰੇ। ਲੇਕਿਨ ਜਦੋਂ ਇੱਕ candidate ਕਾਮਯਾਬ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਦੂਜਾ candidate ਉਸ ਦੇ ਗਲੇ ਤੋਂ ਹਾਰ ਭਾਲਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਉਸੇ honour ਕਰਦਾ ਹੈ। ਮੈਂ ਆਪ ਨੂੰ ਬਤਾਵਾਂ ਕਿ ਮੇਰੇ ਮਾਨਯੋਗ ਸਾਥੀ ਸ਼ਹਜ਼ਾਦ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਮੁੜ ਕੇ ਕਹਿ ਦਿੱਤਾ ਹੈ ਕਿ ਜੇ ਅਖੀਰ ਤੱਕ ਬੋਲੋਗੇ ਤਾਂ ਕਿਸੇ ਦੂਜੇ ਸਾਥੀ ਦੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਸੁਣ ਲੈਂ। ਲੜਾਈ ਤੋਂ ਹਮੇਸ਼ਾ ਇੱਕ ਆਦਮੀ ਹਾਰ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਇੱਕ ਜੀਤਦਾਰ। ਪਰੰਤੂ ਹਾਰੇ ਹੋਏ ਨੂੰ ਫੜ ਲੈਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਜੀਤਦਾਰ ਨੂੰ ਮੁਬਾਰਕਬਾਦ ਦੇ ਅਤੇ ਉਸ ਦੇ ਸਾਥ ਪੁਰਾ ਤਿਆਰ ਕਰਦੇ।

ਇਸ ਵਾਸਤੇ ਆਪ ਨੂੰ ਯਕੀਨ ਦਿਲਾਵਾਂਗਾ ਕਿ ਇਸ ਵਕਤ ਤੋਂ ਆਪ ਨੂੰ ਤਿਆਰ ਦੇਵਾਂਗੇ। ਜੇ ਮੁਸ਼ਕਲਾਂ ਆਪ ਦੇ ਸਾਮਨੇ ਆਉਣਗੀਆਂ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਹੱਲ ਕਰਨੇ ਤੋਂ ਸਿਰਫ ਦਿਲੀ ਤੋਂ ਆਪ ਨੂੰ ਸਾਥ ਦੇਵਾਂਗੇ। ਲੇਕਿਨ ਇਨ੍ਹਾਂ ਸਾਰੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਦੇ ਸਾਥ ਸਾਥ ਇਹ ਕਹਿਣਾ ਮੇਰੇ ਲਿਏ ਅਚਾਨਕ ਮਾਲੂਮ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ ਕਿ Chair ਵੇਖੀਓ ਤੋਂ ਕਾਮ ਕਰੋ ਅਤੇ ਅਪਣੇ ਹਾਥ ਤੋਂ ਟਰਾਜ਼ੂ ਲੈ ਕੇ ਦੇਖੋ ਕਿ ਕੀ party prejudice ਤੋਂ ਕਾਮ ਨਹੀਂ ਲਿਆ ਜਾ ਰਿਹਾ। ਉਸੇ ਵਾਸਤੇ ਕਿ favouritism ਅਤੇ partiality ਤੋਂ ਬਾਕੀ ਰਹੇ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਗੱਲਾਂ ਨੂੰ ਦੇਖਣਾ Chair ਦੇ ਲਿਏ ਬਹੁਤ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕਿ Deputy Speaker ਹੋਏ ਹੋਏ ਆਪਨੇ ਇਹ ਆਹਿਰ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਹੈ ਕਿ ਆਪ ਵੱਡੇ impartial ਹੋਣਗੇ। ਇਸ ਲਿਏ ਮੈਂ ਏਸੀ ਗੱਲਾਂ ਨੂੰ ਜ਼ਿਕਰ ਕਰਨੇ ਦੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਨਹੀਂ ਸਮਝਦਾ। ਜਦੋਂ ਇੱਕ ਜਨਰਲ ਮੈਦਾਨ ਤੋਂ ਦਾਖਿਲ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਸ ਦੀ ਕਾਬਲਿਯਤ ਦਾ ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਲਗਦਾ ਜਦੋਂ ਤੱਕ ਉਹ ਜੰਗ ਤੋਂ ਫਤਹ ਹਾਸਿਲ ਨ ਕਰ ਲੇ। ਉਸ ਹਾਲਤ ਤੋਂ ਲੋਗ ਉਸ ਦੀ ਕਾਬਲਿਯਤ ਦੀ ਫਾਇਲ ਦੇਵੇਂਗੇ। ਅਗਰ ਆਪ ਟਰਾਜ਼ੂ ਨੂੰ ਪਕੜ ਕੇ ਅੱਖੀਂ ਟਰਾਜ਼ੂ ਤੋਂ ਹਰ ਗੱਲ ਨੂੰ ਟੋਲੋਂਗੇ ਤਾਂ ਹਰ ਆਦਮੀ ਇਹ ਕਹੇਗਾ ਕਿ ਆਪਨੇ ਇੱਕ progressive role ਅਦਾ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਕਈ conventions ਪੁਰਾਣੀ ਏਸੀ ਹੈ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਤਬਦੀਲ ਕਰਨੇ ਦੀ ਜ਼ਰੂਰਤ

[प्रोफ़ेसर मोता सिंह आनन्दपुरी]

है। मिसाल के तौर पर Rules of Procedure को बदलने के लिये स्पीकर के हाथ में बहुत ताकत दी गई है। Democracy के ज़माने में असेम्बली के स्पीकर को भारी ताकत मिल गई है। मैं उम्मीद करता हूँ कि आप पुराने conventions को तोड़ेंगे और एक इनकलाब पसन्द आदमी की तरह आगे बढ़ने की कोशिश करेंगे। मैं उम्मीद करता हूँ कि आप इस बड़े ओहदे पर काम कर के अपना career ऊँचा करने की कोशिश करेंगे। इन इलफाज़ के साथ मैं अपनी तकरीर को खत्म करता हूँ।

श्री रणजीत सिंह कैप्टन (हिसार सदर) : स्पीकर साहिब, मैं आप को स्पीकर के इन्तख़ाब पर दिली बधाई देता हूँ। यह बधाई मैं एक रसमी तौर पर जैसे हर एक को उसकी कामयाबी पर दी जाती है देने का आदी नहीं हूँ। स्पीकर का ओहदा एक जनरल या हाई कोर्ट के जज की तरह होता है जिस पर एक बड़ी उमर का संजीदा आदमी तईनात किया जाता है लेकिन आज के चुनाव में इन तरीकों से इख़तलाफ़ किया गया है और हमें खुशी है कि एक नौजवान इस ओहदे के फ़रायज़ को सरअंजाम देगा। इस में कोई शक नहीं कि यह ओहदा एक बड़ा अहम ओहदा है। इस की जिम्मेदारियाँ बहुत हैं। मैं इस चीज़ का भी आदी नहीं हूँ जैसे मेरे कुछ भाईयों ने इस बारे में dos and don'ts आप के सामने रखे हैं, यानी ऐसा करें और ऐसा न करें। इस हाऊस में आप गवर्नमेंट का नुवता भी देखा करेंगे और Opposition का भी। हमें आपसे यह नहीं कहना कि आप Opposition को ज्यादा मौका दिया करें क्योंकि हर एक मੈम्बर इस हाऊस में आप के लिये दबसा है। मेरी खाहिश है कि आप इस हाऊस में ऐसी traditions कायम करें ताकि आने वाली नसलें उन रवायात की पैरवी करें। मुझे पूरी उम्मीद है कि अगर जरमनी में २६ साल का जनरल रोमेल एक बड़ा नाम पैदा कर सकता है तो कोई दजह नहीं कि छोटी उमर का ढिल्लों parliamentary practice में नाम पैदा न करे।

पंडित श्री राम शर्मा : उन की उमर क्या है ?

श्री रणजीत सिंह कैप्टन : उन की उमर १२ साल की होगी (हंसी) मैं उम्मीद रखता हूँ जैसा कि मेरे एक दोस्त ने फरमाया था कि हमने पूरी majority से आप को इस असेम्बली का स्पीकर elect किया है लेकिन मैं समझता हूँ कि जिन साहिबान ने आप को वोट नहीं दिये वे भी आप की कुव्वते इरादा और फैसला करने की काबलियत को मानते हैं। कोई बात जब तक किसी के दिल में न हो वह बाहिर नहीं निकलती। पार्टी के फैसले के खिलाफ़ जो वोट दिये गये हैं वह मुखालिफ़ पार्टी आम तौर पर दिया ही करती है। उन को अब ऐसी practice छोड़ देनी चाहिये। अगर वह मुखालिफ़ पार्टी में न होते तो आप के खिलाफ़ वोट न देते। आजकल हिंदुस्तान में लीडरों की कमी महसूस की जा रही है और महसूस किया जाता है कि नौजवानों को मौका नहीं मिलता। हमने यह मिसाल पैदा कर देनी है कि पंजाब में नौजवान लीडर भी हो सकता है।

उपाध्यक्ष महोदय : मुझे बहिन सीता देवी ने कहा है कि उन्हें बोलने का मौका नहीं दिया गया। मैं समझता हूँ कि अगर श्री किदार नाथ सहगल और श्रीमती सीता देवी के बाद मੈम्बर साहिबान अपनी तकरीरें बन्द कर दें तो मैं उन का मश्कूर हूँगा।

श्री कदार नाथ सहगल (बल्लभगढ़) : स्पीकर साहिब, मैं कई रोज़ से बिमार हूँ इस लिये खामोश था लेकिन यह मेरा फर्ज अब्बलीन है कि मैं इस मौके पर आप को मुबारिकबाद पेश करूँ। यह एक असूल की बात थी कि आप के चुनाव में मुझे कहा गया कि मैं अपना नाम propose करूँ बावजूद इस के कि मेरे दोस्त जानते थे कि हमारे आपस में इखतलाफ़ हैं लेकिन वे यह देखना चाहते थे कि हमारे कांग्रेसी भाईयों में कितनी जमीर काम करती हैं और कितने वह पार्टी के पाबन्द हैं। मैं उन को मुबारिकबाद देता हूँ कि उन्होंने पूरे तौर पर वोट दिये।

इस सिलसिले में मैं एक बात अर्ज कर देना चाहता हूँ वह यह है कि स्पीकर की कुर्सी बड़ी शान वाली कुर्सी है। माननीय मੈम्बरों को पता होगा कि Central Parliament में जब Mr. Vithal Bhai Patel स्पीकर की कुर्सी पर विराजमान थे तो वह किस शान से अपना काम सरअंजाम देते थे। इस बारे में मुझे एक वाक्या याद आ गया है। एक दफा का जिक्र है कि उन के कमरे में Commander-in-Chief उस रास्ते से तशरीफ़ ले आये जिस रास्ते से स्पीकर आया करते थे। उन दिनों अंग्रेजों के इशारों पर toadies नाचते थे लेकिन Mr. Vithal Bhai Patel किसी से नहीं डरते थे उन्होंने कहा मि: कमांडर-इन-चीफ़। तुम पहले मुआफी मांगो फिर इस कमरे से वापस जाओ और आयंदा इस रास्ते से आने की ग़लती न करना। वह हर वक्त यही चाहते थे कि अपनी कुर्सी की शान को कायम रखा जाये। वह अंग्रेजों की परवाह नहीं करते थे। और ग़लत बात को कभी बर्दाश्त नहीं करते थे।

मैं आप की खिदमत में यह अर्ज करना चाहता हूँ कि आप को मालूम है कि हमारे वुजरा में से जब कोई ऐसी नामुनासिब बात करता था तो डाक्टर सत्यपाल उस की परवाह नहीं करते थे। वह Opposition की बातों की उसी तरह से परवाह करते थे जिस तरह से Government Benches की ओर से कही गई बातों की करते थे। मैं यह अर्ज करना चाहता हूँ कि आप भी इस कुर्सी की शान को जिस पर आप विराजमान हुए हैं, कायम रखते हुए इस हाऊस को एक बड़ा भारी तोहफा दें। मेरे ख्याल में आप आयंदा भी ऐसे काम चलायेंगे जिस से किसी मੈम्बर को, खाह वह Opposition का हो या Government Party का, कभी भी शिकायत का मौका न मिले। मैं आप को इस कुर्सी पर विराजमान होने पर मुबारिकबाद देता हूँ। मुझे उम्मीद है कि आप बड़ी शान से और रोअब से अपने काम को सरअंजाम देंगे और किसी मम्बर को शिकायत का मौका नहीं देंगे। इन शब्दों के साथ मैं फिर आप को मुबारिकबाद देता हूँ और मुख्य मंत्री जी को भी मुबारिकबाद पेश करता हूँ क्योंकि उन्होंने आप का नाम तजबीज़ किया है।

श्रीमती सीता देवी (जालन्धर शहर दक्षिण पूर्वी) : श्रीमान् स्पीकर साहिब, मैं सिर्फ़ एक बात कहने के लिये खड़ी हुई हूँ। मैं जहां आप को मुबारिकबाद देती हूँ वहां Leader of the House को भी मुबारिकबाद देती हूँ क्योंकि उन की नज़र एक जवान आदमी पर पड़ी है। पंजाब की रवायत यह रही है कि जब कभी किसी Minister या स्पीकर का इन्तखाब करना होता है तो किसी बूढ़े आदमी पर आम तौर पर नज़र पड़ती

[श्रीमती सीता देवी]

श्री । मगर इस बार लीडर साहिब की नज़र एक जवान पर पड़ी है । यह बड़ी बात है । मैं लीडर साहिब को इस बात के लिये मुबारकबाद देती हूँ । वैसे तो आप हाऊस के लिये नये नहीं हैं और न ही हाऊस आप के लिये नया है । आप काफ़ी देर से डिप्टी स्पीकर चले आते हैं । आप ने जिस शान से डिप्टी स्पीकर के काम को निभाया है, मैं समझती हूँ यही वजह है जिस के लिये आप इतने भारी बहुमत से स्पीकर चुने गए हैं ।

जो बातें सरदार वरयाम सिंह और कई दूसरे साथियों ने आप के बारे में कही हैं जैसा कि यह कि आप **compromising spirit** के हैं, आदि वह सब ठीक हैं । परन्तु मैं यह कहना चाहती हूँ कि जिस तरह डाक्टर सत्यपाल जी इस कुर्सी पर बैठ कर अपने लिहाज़ को छोड़ कर असेम्बली के **rules** को बदल कर भी किसी अच्छी बात को मनज़ूर कर लेते थे, आप भी उसी तरह से उस रवायत को कायम रखेंगे । अगर कोई ऐसी बात **Ministerial Benches** की पसन्द न हो, मुझे आशा है कि आप तब भी **boldness** से उसे स्वीकार कर लेंगे जैसा कि डाक्टर सत्यपाल किया करते थे । जिस कुर्सी पर आप बैठे हैं इस की बड़ी शान है और मुझे आशा है कि आप अपने काम को निहायत शान से निभायेंगे ।

एक चीज़ मैं और कहना चाहती हूँ । इस हाऊस के १२६ मੈम्बर हैं परन्तु वास्तव में १२३ ही समझे जाते हैं । तीन को हर चीज़ में **ignore** किया जाता है । मुझे आशा है कि भविष्य में उन को १२६ समझा जाएगा और सब के साथ **equal treatment** होगा । इन शब्दों के साथ मैं फिर आप को मुबारकबाद देती हूँ ।

प्रोफ़ेसर शेर सिंह : (अज्जर) : अध्यक्ष महोदय, बधाई देने की बातें बहुत बजुर्ग मुझ से पहले कर चुके हैं । अगर मैंने केवल बधाई देनी होती तो मुझे खड़ा होने की ज़रूरत न थी । परन्तु मैं एक बात कहने के लिये खड़ा हुआ हूँ । इस चुनाव के लिये इस हाऊस के एक उमररसीदा सदस्य भी खड़े हुए परन्तु हाऊस के बहुत से मੈम्बरों ने अपना वोट एक नौजवान को दिया । आप के **elect** हो जाने से आप पर बहुत ज़िम्मेदारी का काम आ पड़ा है जो आप से पहले बड़े उमररसीदा बजुर्ग ने निभाया है । मुझे आशा है कि आप भी इस कार्य को उसी शान से निभाएंगे । मैं आप को इस चुनाव पर बधाई देता हूँ ।

श्रीमती शशी देवी (अमृतसर शहर, पश्चिम) : स्पीकर साहिब, मैं आप को स्पीकर चुने जाने पर मुबारकबाद पेश करती हूँ । मैं आप से कहना चाहती हूँ कि आप उन खुशकिसमत नौजवानों में से हैं जिन को शेर पंजाब डाक्टर सत्यपाल के डिप्टी रहने का अवसर मिला । आप का **legislature** का तज़रबा बहुत ज्यादा नहीं है । परन्तु आप को उस महाम लीडर के साथ काम करने का मौका मिला है । इस लिये जिस तरह से आप ने वकालत पढ़ी है अगर उसी ढंग से आपने पार्लियामेण्टरी **procedure** को **study** किया होगा तो निश्चय ही आप कामयाब हो सकते हैं ।

इस हाऊस में आज एक भाई ने एक पुरानी याद ताज़ा कर दी है । इस हाऊस में बहुत से सदस्य हैं जिन्होंने श्री विट्ठल भाई पटेल के **ruling** सुने और फिर इस असेम्बली में डाक्टर सत्यपाल के **ruling** सुने । इस लिये, स्पीकर साहिब, आप को

अपने काम में बहुत ज्यादा दिक्कत नहीं होगी। और फिर जिस तरह से आप की तारीफ की गई है उस से जाहिर है कि आप को हाउस के सदस्यों का पूरा सहयोग मिल सकता है और आप कामयाब हो सकते हैं। परन्तु मेरे सामने आप की ज़ात नहीं है। मेरे सामने कुर्सी की ज़ीनत है। जिस तरह डॉक्टर सत्यपाल के बारे में यह कहा जाता है कि उन्होंने इस कुर्सी को ज़ीनत बखशी, मैं परमात्मा से प्रार्थना करती हूँ कि आप भी उन रवायत को जो उन्होंने कायम की है बरकरार रखेंगे। अगर आप उन रवायत को आगे नहीं बढ़ा सकते तो कम से कम उन को कायम ज़रूर रखें। यह मेरी आप के लिये परमात्मा से प्रार्थना है।

डॉक्टर गुरदास हंस (हमिआरपुर) : श्रीमान जी, मैं आप ਨੂੰ ਸਪੀਕਰ ਚੁਣੇ ਜਾਣ ਤੇ ਮੁਬਾਰਕਬਾਦ ਦੇਣ ਲਈ ਖੜਾ ਹੋਇਆ ਹਾਂ। ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਇਸ ਮੁਬਾਰਕਬਾਦ ਦਾ ਹਕ ਸਾਡੇ ਲੀਡਰ ਸਾਹਿਬ ਅਤੇ ਡਿਪਟੀ ਲੀਡਰ ਸਾਹਿਬ ਨੂੰ ਹੈ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਇਕ ਨੌਜਵਾਨ ਨੂੰ ਇਸ ਕੁਰਸੀ ਤੇ ਬਠਾਇਆ ਹੈ। ਮੈਂ ਵੇਖਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਦਿਲ ਵਿਚ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਲਈ ਪਿਆਰ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਉਹ ਜਾਣਦੇ ਹਨ ਕਿ ਇਸ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਨਈਆ ਨੌਜਵਾਨ ਹੀ ਪਾਸ ਲਾ ਸਕਦੇ ਹਨ।

ਮੈਂ ਆਪ ਨੂੰ ਇਕ ਬੇਨਤੀ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ। ਇਸ ਹਾਉਸ ਵਿਚ ਹਰੀਜਨ ਮੈਂਬਰ ਥਾਫੀ ਤਾਦਾਦ ਵਿਚ ਹਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਪਿਛਲੀਆਂ ਬੈਂਚਾਂ ਤੇ ਬਠਾਇਆ ਨਾ ਜਾਵੇ। ਆਪ ਨੇ ਵੀ ਸਾਨੂੰ ਸਭ ਤੋਂ ਪਿਛੋਂ ਵਕਤ ਦਿਤਾ ਹੈ। ਮੈਂ ਆਸ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਅੱਗੇ ਤੁਸੀਂ ਸਾਨੂੰ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਜ਼ਰਅੰਦਾਜ਼ ਨਹੀਂ ਕਰੋਗੇ। ਮੇਰੇ ਸਾਥੀਆਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਹੈ ਕਿ ਆਪਦੇ ਦਿਲ ਵਿਚ ਗਰੀਬਾਂ ਅਤੇ ਕਿਸਾਨਾਂ ਲਈ ਪ੍ਰੇਮ ਹੈ। ਕਿਸੇ ਨੇ ਹਰੀਜਨਾਂ ਬਾਰੇ ਨਹੀਂ ਕਿਹਾ। ਤੁਸੀਂ ਮਹਾਤਮਾ ਗਾਂਧੀ ਦੇ ਸ਼ਿਸ਼ ਹੋ। ਮੈਂ ਨੂੰ ਆਸ ਹੈ ਕਿ ਤੁਸੀਂ ਮਹਾਤਮਾ ਗਾਂਧੀ ਦੇ ਨਕਸ਼ੇ ਕਦਮ ਤੇ ਚਲਦੇ ਹੋਏ ਹਰੀਜਨਾਂ ਨੂੰ ਨਜ਼ਰਅੰਦਾਜ਼ ਨਹੀਂ ਕਰੋਗੇ।

ਅਸੀਂ ਆਸ ਕਰਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਡਾਕਟਰ ਸਤਿਆਪਾਲ ਹਰੀਜਨ ਮੈਂਬਰਾਂ ਨੂੰ ਬੋਲਣ ਦਾ ਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਤਕਲੀਫ਼ਾਂ ਨੂੰ ਲੋਕਾਂ ਤਕ ਪਹੁੰਚਾਣ ਦਾ ਮੌਕਾ ਦਿੰਦੇ ਸਨ, ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਤੁਸੀਂ ਵੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਵਿਚਾਰ ਪਰਗਟ ਕਰਨ ਦਾ ਪੂਰਾ ਪੂਰਾ ਮੌਕਾ ਦਿਉਗੇ ਅਤੇ ਨਜ਼ਰਅੰਦਾਜ਼ ਨਹੀਂ ਕਰੋਗੇ।

ਇਸ ਗਲ ਨੂੰ ਸੁਣ ਕੇ ਕਿ ਤੁਹਾਡਾ ਸਪੀਕਰ ਚੁਣਿਆ ਜਾਣਾ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਦੀ ਕਦਰਦਾਨੀ ਹੈ, ਮੈਨੂੰ ਇਹ ਇਕ ਫ਼ਾਰਸੀ ਦਾ ਦੌਹਾ ਯਾਦ ਆ ਗਿਆ ਹੈ—

ਬਜ਼ੁਰਗੀ ਬਅਕਲ ਅਸਤ ਨਾ ਬਸਾਲ
ਤਵੰਗਰੀ ਬਦਿਲ ਅਸਤ ਨਾ ਬਮਾਲ।

ਇਨ੍ਹਾਂ ਸ਼ਬਦਾਂ ਨਾਲ ਮੈਂ ਹਰੀਜਨਾਂ ਵਲੋਂ ਆਪਨੂੰ ਹਾਰਦਿਕ ਵਧਾਈ ਦਿੰਦਾ ਹਾਂ।

ਸ਼੍ਰੀ ਸਰੂਪ ਸਿੰਘ (ਜਰਨੈਂਦ) : ਸ਼੍ਰੀਮਾਨ ਜੀ, ਮੈਂ ਆਪਕੇ ਸਪੀਕਰ ਚੁਣੇ ਜਾਣੇ ਪਰ ਆਪ ਕੋ ਹਾਦਿਕ ਵਧਾਈ ਦੇਂਦਾ ਹਾਂ। ਮੈਂ ਉਨ ਭਾਈਓਂ ਸੇ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਹਮਤ ਨਹੀਂ ਜਿਨ੍ਹਾਂਨੇ ਕਹਾ ਹੈ ਕਿ ਆਪ ਕੋ ਇਸ ਪਦ ਕੇ ਲਿਯੇ ਚੁਨ ਕਰ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਕੀ ਕਦਰ ਆਰ ਇਜ਼ਤ ਕੀ ਗਈ ਹੈ। ਵਾਸਤਵ ਮੇਂ ਇਸ ਕੁਰਸੀ ਕਾ ਦੋ ਚੀਜ਼ਾਂ ਸੇ ਗਹਰਾ ਸੰਬੰਧ ਹੈ, ਏਕ ਤੀਂ ਜੜ੍ਹਬੇ ਸੇ ਆਰ ਦੂਸਰਾ ਕਾਬਲੀਯਤ ਆਰ ਕਾਨੂਨਦਾਨੀ ਸੇ। ਆਪ ਇਨ ਦੋਨਾਂ ਚੀਜ਼ਾਂ ਮੇਂ ਸਮਾ ਕੇ ਕਿਸੀ ਸਦਸਯ ਸੇ ਪੀਛੇ ਨਹੀਂ ਹੋਂ। ਯਹ ਕੁਰਸੀ ਜੋ ਆਪ ਕੋ

[श्री सूरूप सिंह]

अता की गई है बजा तीर पर की गई है। लियाकत और तजुखे की बिना पर इस कुर्सी पर आप का हक था। आप पिछले दो सालों से जिस प्रेम और मिलनसारी के साथ हमारे साथ पेश आते रहे हैं, हम भला उसे कैसे भूल सकते हैं। हमें पूर्ण आशा है कि आप की लियाकत और कानूनदानी से इस कुर्सी की शान बढ़ेगी और सभा को काफ़ी फायदा पहुंचेगा।

मुझे विश्वास है कि आप के स्पीकर चुने जाने पर पंजाब के तमाम लोगों को खुशी होगी क्योंकि आप की शखसीयत से इस प्रान्त का बच्चा २ परिचित है। Opposition के भाई तत्तल्ली रखें कि आप सब सदस्यों के साथ हमेशा प्रेम, मिलनसारी और नमी के साथ पेश आते रहेंगे और एकसां सलूक करेंगे।

श्री चांद राम एहलावत (झज्जर) : प्रधान जी ! मुझे खुशी है कि आप को मुबारकबाद देते हुए सभा के सब सदस्यों ने कहा है कि आप एक काबिल जवान हैं। यह प्रशंसनीय है कि आप की काबलीयत और युवावस्था को सामने रख कर ही आप को इस कुर्सी का जिसे इस समय आप सुशोभित कर रहे हैं, कार्यभार सौंपा गया है। मुझे पूर्ण आशा है कि आपके सभापतिव में इस सभा में बड़े २ महत्वपूर्ण कानून पास किय जायेंगे जो हमारे प्रांत के लोगों को उन्नति के मार्ग पर बहुत आगे ले जायेंगे। ज्यादा बधाई के पात्र कांग्रेस पार्टी के नेता हैं जिन्होंने एक नौजवान को सभापति बनने का अवसर दिया है। हम उमीद करते हैं कि जिस तरह उन्होंने एक नौजवान को महान पद प्रदान किया है इसी तरह वह इस सभा में भविष्य में क्रांतिकारी कानून भी ले आयेंगे जो नये पंजाब के बनाने में सहायक साबत होंगे। इन शब्दों के साथ, मैं आप को मुबारकबाद देता हूँ।

अध्यक्ष महोदय : Leader of the House, Leader of the Opposition
और दूसरे मेम्बर सहिबान ने मेरे इन्तख़ाब पर मुस्तलिफ़ तरीकों से जिन हयालात और जज्बात का इजहार फरमाया है, उन के लिये मैं उन का तहे दिल से मशकूर हूँ। मुझे यह जानकर वाकई बहुत खुशी हुई है कि मैं अभी एक नौजवान समझा जाता हूँ। मैं तो इस हयाल में था कि मैं नौजवानी के आलम से बहुत आगे बढ़ चुका हूँ। चालीस साल की आयु पर आदमी का शुमार न तो बूढ़ों में होता है और न ही जवानों में। जहाँ तक इस हाऊस को चलाने का काम है, मैं तो अपने आप को पिछले दो सालों से उमरंसीदा आदमी समझ रहा हूँ।

हाऊस के मामलों, हाऊस के वकार और हाऊस के privileges को दुनिया की बाकी तमाम बातों पर तरजीह देनी मेरी आदत का हिस्सा बन चुका है। मैं मेम्बर सहिबान को विश्वास दिलाता हूँ कि जो बातें उन्होंने सलाह मशवरे के तीर पर कहीं है, मैं उन पर पाबन्द रहूंगा। स्पीकर का पद ऐसा पद है कि इसे संभालने वाले की हर अवसर पर प्रत्यक्ष रूप से आज्ञामायश होती रहती है। इस कुर्सी पर बैठने वाले को गाहे-बगाहे जिन पेचीदा मतलों मुश्किलात और हालात का सामना करना पड़ता है, उन पर वह सभा के सदस्यों के सहयोग के बिना कभी काबू नहीं पा सकता।

मैं आप साहिबान से यह अर्ज करूंगा कि बजाए स्पीकर के काम में किसी प्रकार की रुकावट डालने के वे मुझे अपना काम चलाने में अपना पूरा सहयोग दें। मैंने मੈम्बर साहिबान की तमाम तकरीरें बड़े ध्यान से सुनी हैं। मुझे मालूम है कि Deputy Speaker पार्टी का मੈम्बर भी होता है, वह हाऊस में बतौर मੈम्बर के बैठता भी है और बतौर मੈम्बर के तकरीर भी करता है। इस माहौल का असर उस के दिलो दिमाग पर ऐसा होता है कि वह जब कभी इस कुर्सी पर बैठता है तो अपने आप को उस माहौल से detach करना शायद उसके लिये मुश्किल होता है। लेकिन जब कभी मुझे खुद मौका मिलता रहा है तो मैं पूरी impartiality से काम लेता रहा हूँ। अब जब कि यह कुर्सी पूरे तौर पर मेरे हवाले कर दी गई है और हाऊस के वकार और privilege की जिम्मेदारी इस कुर्सी पर है तो इस माहौल में काफी तबदीली लानी होगी। इस सिलसिले में मैं Opposition वालों को खास तौर पर यकीन दिलाना चाहता हूँ कि मैं आप के बाद non-partyman हूँगा (cheers)। मैं अपने आप को party politics से ऊपर रखने की कोशिश करूँगा। मੈम्बर साहिबान ने तरह तरह के विचार जाहिर किए हैं कि स्पीकर हाऊस के बाहर पार्टी से ताल्लुक रख सकता है। लेकिन मैं इस विचार का हूँ कि अगर स्पीकर हाऊस के अन्दर पार्टीमैन नहीं है तो उसे हाऊस के बाहर भी पार्टी से ताल्लुक नहीं रखना चाहिए। खयालात का बदलना माहौल पर मबनी होता है। स्पीकर ideology या programme में तो यकीन रख सकता है लेकिन उन पर अमल नहीं कर सकता मेरा मतलब यह है कि The Speaker can follow any programme or ideology by convention, but he can never follow such things by action and expression. Democracy इस बुनियादी असूल पर कायम है कि Opposition जरूर हो और अगर Opposition न हो तो Democracy, Dictatorship में बदल जाती है। स्पीकर का यह फर्ज होता है कि hon. member के rights की हिफाजत करने के लिये जो असूल कायम किये गए हों उन का मुहाफिज बने और मैं Opposition वालों को इस बात का यकीन दिलाता हूँ कि मैं उन असूलों पर कारबन्द रहूँगा और उनके हुक्क की हिफाजत करने की पूरी पूरी कोशिश करूँगा। (cheers) मैं फिर अर्ज करनी चाहता हूँ कि Leader of the House से Opposition वालों को चाहे कितना ही इखतिलाफ क्यों न हो, वैसे आप लोग हाऊस से बाहर उन इखतिलाफात का इजहार कर सकते हैं मगर जहां तक हाऊस की कार्रवाई का ताल्लुक है वह निहायत constitutional और parliamentary तरीका से और हाऊस के procedure के मुताबिक होनी चाहिये। अगर मੈम्बर साहिबान अपने legitimate rights से तजावज करेंगे तो उस से हाऊस के वकार को धक्का पहुंचने का खतरा होगा और जो ऊंची रवायात हम इस नये हाऊस में कायम करना चाहते हैं नहीं कर सकेंगे। हमारा एवान हिंदुस्तान को आजादी मिलने के बाद कायम हुआ है और इस को चलाने के लिये हम जिन parliamentary तरीकों को इख्तियार कर रहे हैं उन को हम England के हाऊस आफ कामन्ज और अपने Parliament से ले रहे हैं। कई मसले ऐसे हैं जिन को हम हाऊस आफ कामन्ज की रिवायत क

[अध्यक्ष महोदय]

अनुसार हल करते हैं और कई ऐसे मामले हैं जिन को हम पार्लियमेंटरी तरीका के अनुसार हल करते हैं। लेकिन कई मामले हाऊस में ऐसे खड़े हो जाते हैं जिनका हल conventions या ज़ाबता के अनुसार मुश्किल हो जाता है। उस हालत में हाऊस की dignity को कायम रखने में मैम्बर साहिबान की तआवुन करने की spirit ही सहायक होती है। मुझे पूरी उम्मीद है कि जहां तक ऐसे हालात का सम्बन्ध है आप लोग मुझे मुश्किल में नहीं डालेंगे। जहां आप लोग मुझ से निहायत impartial रहने की उम्मीद रखते हैं वहां मैं भी आप से उम्मीद रखता हूं कि आप मुझे पूरा २ तआवन देंगे।

इस हाऊस में ऐसे बजुर्ग मौजूद हैं जिन के हाथों में बैठ कर मैंने तरबीयत पाई है। कुदरती तौर पर उन की मौजूदगी का असर मेरे दिलोदिमाग पर होता है। उन के सामने मैं out of respect खड़ा होता हूं और हाथ जोड़ता हूं और "Sir" तक कहता हूं। वे कहते हैं कि ऐसा न करो। बावजूद इस बात के कि मैंने उन से तरबीयत पाई है और जिन्दगी में काफी मदद उन से ली है इस हाऊस में मैं उन से तवक्को रखूंगा कि वे अपने आप को बतौर एक hon. Member के और मुझे Speaker के तौर पर समझेंगे। अगर आप लोग ऐसा करेंगे तो हर किस्म के हालात में भी हाऊस का वकार ऊंचा रह सकेगा।

जहां तक हरिजन मैम्बर साहिबान का ताल्लुक है उन को मैन्कीन दिलाना चाहता हूं कि इस हाऊस में सब hon. Members के साथ यकसां सलूक किया जायेगा। बहिनों के बारे में मैं कहना चाहता हूं कि मैं तो पहले ही डरता हूं कि मुझ पर यह बोहतान न लगाया जाए कि minority के साथ लापरवाही का सलूक किया गया है। और उन को यकीन दिलाता हूं कि हर मौके पर उन को accommodate करने की कोशिश करूंगा।

प्रेस वाले भाइयों से तो मैं यह अर्ज़ करना चाहता हूं कि मैं खुद उन के साथ शिमला में हाऊस की gallery में बैठता रहा हूं। इसी journalism की वजह से ही मैंने अपने ख्यालात में तबदीली की है। इसी की वजह से मुझे अपनी जिदगी में ऊपर उठने का मौका मिला है। इसी journalism के नाते मैं आशा करूंगा कि वे इस हाऊस की proceedings को सही तौर पर publish करने का यत्न करेंगे। उन की हर एक तकलीफ को जो उन्हें इस हाऊस में होगी दूर करने की पूरी पूरी कोशिश की जायेगी। और उन के legitimate rights की हिफाज़त की जाएगी। मुझे अफ़सोस है कि adjournment motions पर पंडित जी ने आज काफी गर्मी पैदा की है। इस के इलावा उन्होंने एक दम एक ही दिन में 18 adjournment motions का नोटिस दे दिया। तो भी मेरी यह दिली खाहिश थी कि उन को ज़्यादा से ज़्यादा accommodate करूं, लेकिन मुझे भी तो rules of procedure के मुताबिक चलना होता है। मैं भी उन का पाबन्द हूं। Adjournment motions में जिन मामलों का जिक्र किया गया था उन के सम्बन्ध में रुल्ज़ इजाज़त ही नहीं देते थे कि कोई बहस शुरू की जाए। फिर भी मैं उन्हें यकीन दिलाना चाहता हूं कि अपनी

powers के अन्दर जो कुछ भी हो सकेगा उन की मदद के लिये मैं हर वक्त तैयार रहूंगा। इस लिये आयन्दा के लिये जो भी खादिशात उन के दिल में है वह उन्हें निकाल दें। इस के साथ ही मैं एक बार फिर अर्ज करना चाहता हूं कि जहां **Leader of the House** मुझे मेरे काम में अपना पूरा तआवन देंगे वहां **Leader of the Oposition** से भी यही आशा रखता हूं।

मैं चाहता हूं कि उस अजीमुशान हस्ती स्वर्गीय डाक्टर सत्यपाल ने जिस शान के साथ इस हाऊस के वकार को बुलन्द किया था, मैं भी उन के नक्शेकदम पर चल सकूं। मुझे इस बात का फल है कि वह मुझ पर बहुत एतबार किया करते थे। मुझे याद है कि पिछले दिनों तो खास तौर पर मुझे ज्यादा वक्त के लिये इस कुर्सी पर बैठाया करते थे। कई दफा तो उन्होंने यह भी कहा कि अब तुम सही तौर पर **trained** हो गए हो। खैर, इस वक्त मैं सिर्फ यही कहना चाहता हूं कि मेरे दोस्तों ने मुझ पर जो उम्मीदें लगा रखी हैं, मैं प्रार्थना करता हूं कि मुझ में इतनी ताकत हो कि उनपर पूरा उत्तर सकूं। इन इलाफाज के साथ मैं आप सब का तहेदिल से मशकूर हूं कि आपने मुझे इतनी बुलन्द इज्जत बखशी है। ईश्वर करे कि मैं इस एवान की शान और वकार को कायम रख सकूं।

ELECTION OF DEPUTY SPEAKER.

Mr. Speaker : Under rule 8(ii) of the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Punjab Legislative Assembly, I fix Wednesday, the 19th May, 1954, for election of the Deputy Speaker.

PANEL OF CHAIRMEN.

Mr. Speaker : Under Rule 11(1) of the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Punjab Legislative Assembly, I have nominated the following four Members as Members of the Panel of Chairmen—

(1) Shrimati Dr. Parkash Kaur.

(2) Dewan Jagdish Chandra.

(3) Sardar Ajmer Singh.

(4) Shri Dev Raj Sethi

GRANT OF LEAVE OF ABSENCE TO MEMBERS.

Mr. Speaker : I have received the following application from Principal Harbhajan Singh—

“ I beg to inform you that I have been confined to bed since 7th April, 1954, on account of a big abcess on my waist and that it will take a month or so more to heal perfectly. I shall under the circumstances, be unable to attend the next Session of the Assembly to begin on 17th May. The certificate of the

[Mr. Speaker]

doctor attending on me is enclosed herewith. I shall be obliged if you kindly grant me leave for the whole of next session."

Question is—

That the leave asked for be granted.

The leave was granted.

Mr. Speaker : I have received the following application from Sardar Shib Singh, M.L.A.—

I have come to know, as you have conveyed, that the Session of the Punjab Legislative Assembly is going to be held on 17th May, 1954. I am lying ill in this (V.J. Hospital, Amritsar) and, can not attend the Session. Therefore, it is requested that I may be allowed to remain absent during this Session

Question is—

That the leave asked for be granted.

The leave was granted.

Mr. Speaker : Now the Secretary will make an announcement.

ANNOUNCEMENT BY THE SECRETARY RE. CERTAIN BILLS.

Secretary : In pursuance of Rule 2(ii) of the Punjab State Legislature (Communications) Rules, 1952, I beg to lay on the Table of the House a copy of the East Punjab Holdings (Consolidation and Prevention of Fragmentation) (Amendment) Bill, 1954, which has been returned by the Punjab Legislative Council with amendment. This Bill was passed by the Punjab Legislative Assembly on the 2nd April, 1954 and transmitted to the Punjab Legislative Council for its concurrence.

I also beg to lay on the Table a statement showing the Bills which were passed by the Punjab State Legislature during its Budget Session, 1954, and assented to by the Governor.

STATEMENT

1. The Punjab State Legislature (Prevention of Disqualification) (Amendment) Bill, 1954.
2. The Punjab Security of the State (Amendment) Bill, 1954.
3. The Sikh Gurdwaras (Amendment) Bill, 1954.
4. The Sikh Gurdwaras (Second Amendment) Bill, 1954.
5. The Punjab Urban Immovable Property Tax (Amendment) Bill, 1954.
6. The Punjab Urban Immovable Property Tax, (Second Amendment) Bill, 1954.
7. The Indian Forest (Punjab Amendment) Bill, 1954.
8. The Punjab Appropriation Bill, 1954.

**THE PUNJAB REQUISITIONING AND ACQUISITION OF IMMOVABLE (2)47
PROPERTY (AMENDMENT) BILL, 1954**

9. The East Punjab General Sales Tax (Second Amendment) Bill, 1954.
10. The Punjab Tobacco Vend Fees Bill, 1954.
11. The East Punjab General Sales Tax (Fourth Amendment) Bill, 1954.
12. The Punjab Passengers and Goods Taxation (Amendment) Bill, 1954
13. The Punjab Motor Vehicles Taxation (Amendment) Bill, 1954.
14. The Punjab Appropriation (No. 2) Bill, 1954.
15. The Punjab Entertainments Tax (Cinematograph Shows) Bill, 1954.
16. The Punjab Gram Panchayat (Amendment) Bill, 1954.
17. The Punjab Municipal (Amendment) Bill, 1954.
18. The Punjab Local Authorities Laws (Exercise of Powers) (Amendment) Bill 1954.

**THE PUNJAB REQUISITIONING AND ACQUISITION OF IMMOVABLE
PROPERTY (AMENDMENT) BILL, 1954.**

Chief Minister (Shri Bhim Sen Sachar) : Sir, I beg to introduce the Punjab Requisitioning and Acquisition of Immovable Property (Amendment) Bill.

Chief Minister : Sir, I beg to move—

That the Punjab Requisitioning and Acquisition of Immovable Property (Amendment) Bill be taken into consideration at once.

स्पीकर साहिब, यह बिल जो पेश किया जा रहा है एक निहायत जरूरी बिल है। इस ऐक्ट के मोझविज मॅम्बरान को पता है कि जो मौजूदा ऐक्ट है, यानी The Punjab Requisitioning and Acquisition of Immovable Property Act उसके मुताबिक यह प्रबन्ध है कि अगर कोई property requisition करनी हो तो उस के लिए पहले जायदाद के मालिक को एक नोटिस दिया जाता है कि आप बतलाएं कि क्यों न फुल property को requisition कर लिया जाए? उस पर अगर किसी शरूस ने कोई एतराज करना हो तो एक खास मियाद के अन्दर ऐसा कर सकता है। अगर वह एतराज रद्द कर दिया जाए और उस के बाद property को requisition कर लिया जाए और उस हुक्म के खिलाफ अपील भी खारिज हो जाए जो कि एक मुकरर मियाद में हुई है तो उस property के मालिक के पास कानूनी तौर पर कोई चारा नहीं रह जाता कि वह उसे derequisition करवाने के लिये कोई और कदम उठा सके। मैंने यह देखा है कि लोगों के मकान requisition हुए अरसा गुजर गया है। वह उसे derequisition कराने के लिये दरखास्त पर दरखास्त देते हैं लेकिन कोई फायदा नहीं होता। क्यों? क्योंकि कानून में कोई प्रबन्ध ही नहीं है जिस से ऐसे लोगों को किसी तरह से relief मिल सके। हां, अगर कोई तरीका किसी को दिखाई देता है तो

[Chief Minister]

वह यह है कि मिनिस्टर मुतअल्लिका के पास दरखास्त दे दे; उस से जाकर मिले और अपनी तकालीक बयान करे। और वह executive तौर पर एक फ़ैसला दे दे कि हम को अब इस property की कोई जरूरत नहीं, लिहाजा इसे मालिक को वापस कर दिया जाए। इस के अलावा वह हक जो कि किसी को किसी कानून के मुताबिक होना चाहिए, इस ऐक्ट में नहीं है। इस लिये मैंने यह महसूस किया है कि इस चीज़ के लिये लोगों को बहुत तकलीफ पेश आ रही है। मैंने यह देखा है कि बहुत देर से requisition हुई property को कोशिश करने के बावजूद भी छोड़ने के लिये कोई कानूनी sanction नहीं है।

फिर, स्पीकर साहिब, यह भी देखा गया है कि अगर आज एक मालिक प्रापर्टी एक दरखास्त एक मिनिस्टर को देता है तो फिर जब वह दूसरे मिनिस्टर को मिलता है तो उसे भी उसी तरह की दरखास्त पेश की जाती है। इसी तरह जिस जिस मिनिस्टर या अफसर मुतअल्लिका को वह मिलता है अपनी दरखास्त की अलग अलग कापियां उन्हें दे देता है। इन हाजात में ऐसा हो जाता है कि जब ऐक्ट के मुताबिक कोई इजाजत नहीं है तो उस पर क्या और कैसे फ़ैसला किया जाए, इस के लिये बड़ी मुश्किल पैदा हो जाती है।

स्पीकर साहिब, आप जानते हैं कि फ़ैसले भी दो किस्म के हुआ करते हैं। एक तो वे जो इन्तज़ामिया तौर पर होते हैं और दूसरे वे जो एक ऐक्ट की किसी दफ़ा के मुताबिक किए जाते हैं। तो, स्पीकर साहिब मौजूदा हालत में उस का नतीजा यह होता है कि लोगों को कई किस्म की तकलीफों और परेशानियों का सामना करना पड़ता है और उन का काफी रुपया और वक्त जाया होता है लेकिन फिर भी नतीजा तसल्लीबख़श नहीं निकलता। लोगों की इन तकलीफों को देखते हुए इस बिल को हाऊस के सामने पेश किया गया है। इस बिल का मकसद यह है कि जब requisitioning का हुक्म नाफ़ज़ हो गया तो एक खास तारीख के बाद उस हुक्म के खिलाफ कोई दरखास्त नहीं ली जायगी। अब भी जो कानून लागू है उस के मुताबिक requisitioning order के नाफ़ज़ होने के बाद मालिकाने मकान को दरखास्त देने का हक नहीं है। यह अलग बात है कि जो दरखास्ते दी जाती हैं उन फ़ैसलों पर नज़र सानी की जाए। लेकिन अब यह दस्तूर कानूनी तौर पर बन्द हो जाएगा और जब एक बार कोई जायदाद requisition हो जायगी तो कोई दरखास्त भी एक खास अरसा तक नहीं दी जा सकेगी। इस बिल के मुताबिक अब यह जरूरी होगा कि जब कोई मकान requisition करना होगा तो इस बात पर अच्छी तरह से गौर किया जायेगा कि क्या उस मकान का requisition करना निहायत जरूरी है और जब District Magistrate या Requisitioning Authority मालिक मकान की तरफ से पेश की गई दरखास्त को सही या माकूल न समझे और रद्द कर दे तो रद्द करने के बाद मालिक मकान को हक है कि वह उस फ़ैसले के खिलाफ अपील दायर कर सके। यह अपील गवर्नमेंट के पास दायर की जायेगी और अगर गवर्नमेंट यह फ़ैसला कर दे के जायदाद मुतअल्लिका मुनासिब तौर पर requisition की गई थी तो उस हुक्म के खिलाफ दो साल तक कोई

दरखास्त नहीं दी जा सकती मगर इस के बाद ऐसे हालात भी पैदा हो सकते हैं कि जो हालात उस तारीख को न थे जब Competent Authority ने या गवर्नमेंट ने वह फ़ैसला किया था। अगर कोई खास हालात अनुमा हो जायेंगे तो बावजूद इस बात के इस सम्बन्ध में दो साल की मियाद का प्रबन्ध किया गया है फिर भी दरखास्त दी जा सकती है जिस में उन बदले हुए हालात का जिक्र किया जा सकता है। मिसाल के तौर पर एक आदमी कलकत्ते में मुलाजिम है या फौज में नौकर है और उस का मकान requisition हो जाता है क्योंकि उस के बाल बच्चे उस के साथ रहते थे। लेकिन जब वह पेंशन पर आता है तो उसे मकान की जरूरत होती है। जब तक वह मुलाजिम था उस को मकान की जरूरत नहीं थी क्योंकि उस के बाल बच्चे उस के साथ थे। लेकिन जब वह पेंशन पर आ जाता है तो कोई वजह नहीं कि क्यों न उस का मकान फौरन खाली कर के उस को वापस दे दिया जाए। देखने में आता है कि ऐसे लोगों के मकानात derequisition नहीं किये जाते और ऐसे हालात का पैदा हो जाना ऐन मुमकिन है। इसी तरह और कई खास हालात हो सकते हैं। यानी किसी मालिक मकान ने अपना मकान बेचना हो तो उस का मकान बिक नहीं सकता जब तक उस का कब्ज़ा उसे न मिल जाये। ऐसी सूरते हालात में वह दरखास्त देने के हकदार होंगे। वह दरखास्त दे सकता है और जो फ़ैसला District Magistrate करेगा अगर वह उस से मुतमइन न हो तो वह उस के खिलाफ गवर्नमेंट के पास अपील दायर कर सकता है। अगर गवर्नमेंट भी उस की दरखास्त रद्द कर दे तो उस को हक हासिल है कि वह दो साल के बाद फिर इसी तरह की दरखास्त दे सके। सो हाऊस के सामने जो तरमीमी बिल पेश है इस का यही मतलब निकलता है कि मौजूदा कानून के मुताबिक मालिकान को अपनी जायेदाद derequisition कराने के लिये दरखास्त देने का और डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट के फ़ैसले के खिलाफ गवर्नमेंट के पास अपील करने का कोई हक हासिल नहीं है। अब यह हक इस बिल में दिया जा रहा है और लोगों के लिये आसानी पैदा की जा रही है।

फिर मैं अर्ज कर दूँ कि वाक्यात का सही जायेजा लिया जाता है और सही जायेजा लेने के बाद फिर फ़ैसला किया जाता है। इस लिये मैं समझता हूँ कि उस फ़ैसले का कुछ देर तक लागू रहना जरूरी है। यह नहीं होना चाहिये कि आज फ़ैसला हुआ तो कल उस के मुतअल्लिक दरखास्त दे दी जाए और परसों फिर एक दरखास्त और दे दी जाये। इस से लोगों को और गवर्नमेंट के कर्मचारियों को परेशानी का सामना करना पड़ता है और नतीजा भी कुछ नहीं निकलता। तो मैं अर्ज करता हूँ कि यह बिल लोगों की सहूलियत के लिये लोगों की आसानी के लिये और लोगों को कुछ मज़ीद हक देने के लिये लाया गया है। यह उसी पालिसी का नतीजा है जो गवर्नमेंट ने इस बारे में बना रखी है यह तो इस लिये है कि जो मकान या दीगर immoveable property अपने तौर पर या महकमाना तौर पर requisition हुई हुई है उस के बारे में District authorities देखें कि क्या वह property derequisition की जानी चाहिये या नहीं। मैं यह नहीं चाहता कि एक दफ़ा requisition की गई जायेदाद हमेशा के लिये derequisition न हो सके। कई ऐसे लोग हैं जिन के अपने मकान requisition

[Chief Minister]

किये गये हैं और उन के हालात बदल जाने से उन्हें रहने को जगह नहीं मिल रही। यह तरमिमी बिल उन की मुश्किलों को हल करने के लिये लाया गया है। यह ठीक है कि अभी मकानात की किल्लत है और सरकारी अफसरों के लिये और सरकारी दफ्तरों के लिये उन्हें requisition करना जरूरी होता है। इस किल्लत की वजह से सरकारी मुलाजमों को भी तकलीफें होती हैं। लेकिन लोगों की तकलीफ को भी हमने देखना है। सरकारी कामों के लिये चाहे कितनी ही तकलीफें क्यों न हों हमने लोगों को भी सहूलियतें देनी हैं। यह तरमिमी बिल इस नुस्खा निगाह से हाऊस के सामने पेश किया जा रहा है। मुझे उम्मीद है कि हाऊस इसे कबूल करेगा।

Mr. Speaker : Motion moved—

That the Punjab Requisitioning and Acquisition of Immovable Property (Amendment) Bill be taken into consideration at once.

श्री श्री चन्द्र (बहादुरगढ़) : साहिबे सदर, पिछले दिनों से हमारी असेम्बली का कुछ ऐसा रिवाज हो गया है कि जो बिल हैं उन की बहुत कम परवाह की जाती है। हमारी असेम्बली के Rules of Procedure का Rule 95 बहुत clear है। मैं, जनाबे वाला, इसे आप की खिदमत में पढ़ना चाहता हूँ कि जब यहां कोई बिल पेश होता है या जब यहां कोई motion पेश होती है.....

“When a bill is introduced or on some subsequent occasion the Member-in-charge may make one of the following motions in regard to his bill, namely :—

- (a) that it be taken into consideration by the Assembly either at once or at some future day to be then specified ; or
- (b) that it be referred to a Select Committee ; or
- (c) that it be referred to a Joint Committee of both Houses of the Legislature ; or
- (d) that it be circulated for the purpose of eliciting opinion thereon by a date to be specified in the motion :

Provided that no such motion shall be made until after copies of the bill have been made available for the use of Members and that any Member may object to any such motion being made unless copies of the Bill have been so made available five clear days before the day on which the motion is made and such objection shall prevail unless the Speaker, in the exercise of his power to suspend this rule, allows the motion to be made.”

साहिबे सदर ! अब्बल तो असेम्बली को इस सेशन के लिए बुलाए जाने का नोटिस ही हमें पांच छः दिन हुए मिला था जो कि बहुत पहले मिलना चाहिये था और यह बिल जो आज introduce किया जा रहा है इस की copy गालबन आज सुबह हमें मिली है।

साहिबे सदर, rule यह है कि अगर बिल gazette हो जाए तो शायद copy देने की जरूरत न पड़े। मगर आप की खिदमत में मैं अर्ज करना चाहता हूँ कि यह एक special procedure है। Rules को avoid किसी खास मौके पर ही किया जाना चाहिए। यह चीज आपके खास इस्तिस्नात में शामिल है।

The objection shall prevail unless you in the exercise of your powers allow the bill to be introduced and taken into consideration.

हमारे हाथ यह बिल आज ही आया है तो इस में amendments क्या तजवीज की जा सकती हैं। बाकी यह कि बिल gazette हो चुका है तो उस की बाबत भी हमें मालूम है कि बिल gazette कैसे किये जाते हैं। कभी कोई बिल पहुंचता है और कभी नहीं पहुंचता। हमें कभी कभी ठीक मौका नहीं दिया जाता कि हम अपनी amendments भेज सकें। Rules को इस तरह relax नहीं किया जाना चाहिए कि Opposition को अपनी राय जाहिर करने का मौका ही न मिले। Government के पास हाथ उठाने वाले मੈम्बर बहुत हैं इस लिये उन्हें उसे पास करने में कोई मुश्किल पेश नहीं आती। लेकिन rules न तो Opposition के लिए हैं और न ही Government के लिए, बल्कि यह इस लिए हैं कि अगर कोई बिल आए तो मੈम्बर इसे 5 दिन तक देख कर इस में अगर कोई amendment करानी जरूरी हो तो उस का नोटिस दफ्तर में भेज दे। दूसरी तरफ से यह कहते हैं कि यह बिल तो लोगों की सहूलियत के लिये है। मगर इस के बाद और बिल भी तो आयेंगे जो बिला नोटिस के होंगे। अगर इन rules की परवाह न करते हुए बिल झट-पट आते रहे तो इस का नतीजा वही होगा जो इस असेम्बली में पहले होता रहा है यानी एक Session में बिल पेश किया तो अगले में amendment पेश कर दी। फिर किसी ने एतराज किया, तो वजीर साहिब ने फिर amendment पेश कर दी। यहां पर बिल झट पट पेश कर दिया, किसी ने एतराज किया कि साहिब यह नुक्स रह गया है तो कह दिया कि Upper House में ठीक हो जाएगा। वहां से भी नुक्स रह गया तो अदालत में ठीक हो जायगा। ऐसा तो हुमा ही करता है। मगर यह ठीक बात नहीं है।

अध्यक्ष महोदय : मैं आप को बता दू कि यह बिल 14 अप्रैल को असेम्बली के दफ्तर में पहुंचा और 20 अप्रैल को मੈम्बरों के पास भेज दिया गया था।

श्री श्री चन्द : श्रीमान् जी, मेरा मतलब यह है कि इस बिल के बाद भी तो और बिल आयेंगे। मैं चाहता हूँ कि Government यह assurance दिलाए कि उन के बारे में ऐसा नहीं होगा।

अध्यक्ष महोदय : इस वक्त जो बिल House के सामने हैं आप उस की बात करें। दूसरे Bills के मुताबिक अभी कुछ कहना दुरुस्त नहीं।

श्री श्री चन्द : गवर्नमेंट ने जो बिल एवान के सामने पेश किया है यह हमारे पास आ पहुंचा है। अगर कोई चीज कायदों के मुताबिक नहीं की जाती तो इस का गजट में 19 20 या 21 को शामिल करने का क्या फायदा। ऐसा मालूम होता है कि जिस वक्त सुबह हुई तो किसी को ख्याल आया और बिल को gazette में शायर करने के लिये भेज दिया। फिर झट उसे असेम्बली में पेश किया जाता है। यह असेम्बली है मगर एक मजाक

[श्री श्री चन्द]

है? गवर्नमेंट ऐसे बिल असैम्बली के सामने जो gazette में भी न छपे हों, ले आती है। इस के अलावा Chief Minister साहिब ने फ़रमाया है कि requisition का बिल.....

पंडित श्री राम शर्मा : स्पीकर साहिब, चौधरी साहिब के एतराज के सिलसिले में मैं कुछ गुज़ारिश करना चाहता हूँ। गवर्नमेंट अगर rules पर अमल letter में न सही।

अध्यक्ष महोदय : आप point of order raise करें, लेकिन तकरीर नहीं कर सकते।

पंडित श्री राम शर्मा : जी हाँ मैं point of order के मुताबिक ही अर्ज करूँगा। यह जो बिल हाऊस के सामने पेश किया गया है, मैं इसके बारे में अर्ज करना चाहता हूँ कि जो कुछ rules में लिखा हुआ है उस पर अगर letter में न सही spirit में तो गवर्नमेंट कम अर्ज कम अमल करे। जिस वक्त यह बिल मੈम्बरों के पास पहुँचा उस वक्त किसी को यह खबर नहीं थी कि असैम्बली का इजलास कब बुलाया जा रहा है। 15 दिन के अन्दर पता चला कि पंजाब असैम्बली का इजलास बुलाया जा रहा है। उस वक्त questions भेजने के लिये 15 दिन का नोटिस देना भी मुमकिन नहीं था। इसी वजह से आप देखिये कि questions की list कितनी brief है। मੈम्बरान यहां पहुँचे तो उन्हें पता नहीं था कि कौनसा बिल 18 तारीख को हाऊस में पेश हो रहा है। यहां आकर यह नए बिल देखे जो agenda में शामिल हैं। मेरे पास इन बिलों की कापी नहीं थी। मैं ने एक आदमी को सारी colony में भेजा कि किसी जगह से यह मिल जाएं। बड़ी मुश्किल से एक जगह से कापी मिली। इस तरह जब जल्दी 2 बिल पेश किये जाते हों तो भला कब कोई अपनी तरफ़ से पेश करे और राय कायम करे। मैं मान लेता हूँ कि हमारे rules of business में आप के वसीह इस्तिथारात हैं और ऐसे होने भी चाहियें, लेकिन इन का इस्तेमाल बिना लिहाज़ इस बात के कि कोई मੈम्बर इधर के बेंचों पर बैठता है या उधर के बेंचों पर, इस तरह होना चाहिये कि सब को अपने फरायज़ सरअंजाम देने में पूरी 2 सहूलियत मिले। अगर rules के मुताबिक बिल नहीं छपते और हमें ज़रूरी वक्त उन पर गौर करने के लिये नहीं मिलता तो हम पंजाब के लोगों से और यहां के कानून पास करने में इनसाफ़ से काम नहीं ले सकेंगे। मैं चौधरी श्री चन्द जी के एतराज की तारीफ़ करता हूँ और अर्ज करता हूँ कि जो rules में लिखा हुआ है उस पर अगर letter में नहीं तो spirit में तो ज़रूर अमल होना चाहिये और मੈम्बरान को इतना मौका ज़रूर मिलना चाहिए कि वह resolutions और बिलों के बारे में अपनी राय कायम कर सकें और तरफ़ीमें वगैरा भेज सकें वरना जो कुछ पिछले दिनों होता रहा है वही इस दौर में भी होता रहेगा और बिल जल्दी जल्दी पास हुआ करेंगे जिस से कुदरती तौर पर इन में खामियां रह जायेंगी।

एक और बात जिस की तरफ़ मैं हाऊस का ध्यान दिलाना चाहता हूँ यह है कि सरकार की कुछ ऐसी आदत हो गई है कि जितने unimportant bills होते हैं वह तो शुरू 2 के दिनों में लाए जाते हैं और जब आखिरी दिन आता है, जिस दिन मੈम्बरान घरों को जाने

ਕੇ ਲਿਯੇ ਤੰਧਾਰ ਬੈਠੇ ਹੋਏ ਹਨ, ਉਸ ਦਿਨ most important bills ਅਸੈਂਬਲੀ
ਮੇਂ ਲਾਏ ਜਾਣੇ ਹਨ ਅਤੇ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਟੇਬਲੀ 'ਤੇ ਕਾਮ ਲਿਆ ਜਾਣਾ ਹੈ ਜਿਸ ਦੀ ਬਜਾਏ ਖਾਸੀਆਂ ਜ਼ਰੂਰ ਰਹਿ
ਜਾਣੀ ਹਨ। ਮੁੜੇ ਉਸਮੀਦ ਨਹੀਂ ਕਿ ਏਸੀ ਬਾਤ ਕਿਸੀ ਆਰ ਹਾਊਸ ਮੇਂ ਭੀ ਹੋਣੀ ਹੋ।

ਅਰਬ ਮੰਤ੍ਰੀ (ਸਰਦਾਰ ਉਜ਼ਲ ਸਿੰਘ) : ਮੈਂ ਜਿਹੜਾ point of order
ਚੋਧਰੀ ਸ੍ਰੀ ਚੰਦ ਅਤੇ ਪੰਡਤ ਸ੍ਰੀ ਰਾਮ ਸ਼ਰਮਾ ਨੇ ਉਠਾਇਆ ਹੈ ਉਸ ਬਾਰੇ ਕੁਝ ਕਹਿਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ
ਹਾਂ। ਚੋਧਰੀ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਕਿਹਾ ਹੈ ਕਿ rule 95 ਦੇ ਮੁਤਾਬਕ ਇਹ ਬਿਲ ਪੂਰੇ ਪੰਜ ਦਿਨ
ਪਹਿਲਾਂ ਮੈਂਬਰਾਂ ਕੋਲ ਨਹੀਂ ਪੁੱਜੇ। ਪਰ ਅਸਲ ਗਲ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਬਿਲ ਪੰਜ ਦਿਨ ਪਹਿਲਾਂ
ਦੀ ਬਾਇਕ ਮਹੀਨਾਂ ਪਹਿਲਾਂ ਭੇਜਿਆ ਗਿਆ ਸੀ। ਇਹ ਬਿਲ ੮ ਅਪਰੈਲ ਨੂੰ ਗਵਰਨਰ ਵਿਚ ਛਪਿਆ
ਸੀ ਅਤੇ ਮੈਂਬਰਾਂ ਨੂੰ ਭੇਜਿਆ ਗਿਆ ਸੀ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਇਹ ਬਿਲ ਮੈਂਬਰਾਂ ਪਾਸ ਪੰਜ ਦਿਨ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ
ਅਰਸੇ ਤੋਂ ਹੈ। ਇਹ ਵਖਰੀ ਗਲ ਹੈ ਕਿ ਜਦੋਂ ਬਿਲ ਉਨ੍ਹਾਂ ਪਾਸ ਗਿਆ ਹੋਵੇ ਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ
ਧਿਆਨ ਨਾ ਦਿਤਾ ਹੋਵੇ ਅਤੇ ਰੱਦੀ ਦੀ ਟੋਕਰੀ ਵਿਚ ਸੁਟ ਦਿਤਾ ਹੋਵੇ।

ਸ਼੍ਰੀ ਸ਼੍ਰੀ ਚੰਦ : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, on a point of order, Sir. ਸਿੱਕੰ ਬਿਲ ਮੇਜ
ਦੇਨਾ ਕਾਫੀ ਨਹੀਂ। Bill should be sent with a notice.

ਅਰਬ ਮੰਤ੍ਰੀ : ਮੇਰੇ ਕਾਬਲ ਦੋਸਤ ਵਕੀਲ ਵੀ ਹਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਪਤਾ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਜੇਕਰ
ਬਿਲ ਉਨ੍ਹਾਂ ਪਾਸ ਪੰਜ ਦਿਨ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਪਹੁੰਚ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਆਪੇ ਹੀ five days clear notice
ਹੋ ਗਿਆ। ਜੇਕਰ ਉਹ ਆਪੇ ਹੀ ਬਿਲ ਨੂੰ ਨਾ ਪੜ੍ਹਨ ਅਤੇ ਨਾ ਵੇਖਨ ਤਾਂ ਇਸ ਵਿਚ ਨਾ ਦਫਤਰ
ਦਾ ਕਸੂਰ ਹੈ ਅਤੇ ਨਾ ਹੀ ਕਿਸੇ ਕਾਇਦੇ ਜਾਂ ਰੂਲ ਦੀ ਉਲੰਘਣਾ ਹੈ।

ਪੰਡਿਤ ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਸ਼ਰਮਾ : On a point of order, Sir. ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ ਮੈਂ ਆਪਕਾ
ruling ਇਸ ਬਾਤ ਪਰ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਬਿਲ ਆਗਰ ਕਿਸੀ ਵਕਤ ਭੀ ਪਾੰਚ ਦਿਨ ਪਹਿਲੇ
ਸੈਂਸਰਾਂ ਕੋ ਆ ਜਾਏ ਤਾਂ ਨੋਟਿਸ ਸਮਝ ਲਿਆ ਜਾਣਾ ਹੈ ਯਾ ਕੀ ਜਿਸ ਦਿਨ ਬਿਲ ਨੋਟਿਸ ਕੇ
ਸਾਥ ਮੇਜਾ ਜਾਏ ਉਸ ਦਿਨ ਤੋਂ ਨੋਟਿਸ ਕਾ period ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਣਾ ਹੈ?

ਸ੍ਰੀ ਸਪੀਕਰ : ਮੇਰਾ ਖਿਆਲ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਬਿਲ ਮੈਂਬਰਾਂ ਪਾਸ within time
ਪਹੁੰਚ ਗਿਆ ਹੈ। ਕਿਉਂ ਜੋ ਇਹ ਬਿਲ 8 ਅਪ੍ਰੈਲ ਨੂੰ ਗਵਰਨਰ ਵਿਚ ਛਪਿਆ ਸੀ ਅਤੇ ਬਹੁਤ
ਅਰਸਾ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ ਇਸ ਲਈ ਮੈਂਬਰਾਂ ਨੂੰ ਭੁਲ ਵੀ ਗਿਆ ਹੋਵੇਗਾ। ਜੇਕਰ ਇਸ ਤੇ ਹੋਰ
definite ruling ਦੀ ਲੋੜ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਮੈਂ rules ਨੂੰ ਜ਼ਿਆਦਾ study ਕਰਕੇ ਦਸਾਂਗਾ।

ਪੰਡਿਤ ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਸ਼ਰਮਾ : ਬਹੁਤ ਭਲਾ, ਜਨਾਬ।

ਸਰਦਾਰ ਚੰਨਣ ਸਿੰਘ ਧੂਤ : On a point of order, Sir. ਜਿਸ ਵੇਲੇ
ਅਸੈਂਬਲੀ ਦੇ session ਤੋਂ ਬਾਦ ਗਵਰਨਰ ਅਸੈਂਬਲੀ ਨੂੰ prorogue ਕਰ ਦਿੰਦਾ ਹੈ ਤਾਂ
ਸਾਰੇ ਬਿਲ ਅਤੇ ਸਵਾਲਾਂ ਦੇ ਨੋਟਿਸ lapse ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਹੁਣ ਇਸ ਤੋਂ ਬਾਦ ਸਾਰੇ ਬਿਲ
ਪੰਜ ਦਿਨਾਂ ਦੇ clear ਨੋਟਿਸ ਨਾਲ ਪਹੁੰਚਣੇ ਚਾਹੀਦੇ ਹਨ। ਕਲ ਤਕ ਇਜ਼ੱਤੇ ਤੇ
co-operative societies ਬਾਰੇ ਬਿਲ ਸੀ ਪਰ ਇਸ ਇਜ਼ੱਤੇ ਨੂੰ ਫੋਰਨ ਹੀ ਬਦਲ
ਦਿਤਾ ਗਿਆ ਹੈ ਅਤੇ ਨ ਕੇਵਲ ਇਸ ਬਿਲ ਵਿਚ ਬਲਕਿ ਬਾਕੀ ਦੇ ਸਾਰੇ ਬਿਲਾਂ ਵਿਚ ਵੀ ਪੰਜ
ਦਿਨਾਂ ਦਾ clear notice ਨਹੀਂ। ਅਗਲੇ ਦਿਨ ਵੀ ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੀ ਹਨ।

ਸ੍ਰੀ ਸਪੀਕਰ : ਇਸ ਦੇ ਜਵਾਬ ਦੇ ਮੁੱਤਅਲਕ ਇਹ ਫੈਸਲਾ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ ਕਿ ਗਰਮੀ ਖਿਆਦਾ ਹੈ ਇਸ ਲਈ ਪ੍ਰੋਗ੍ਰਾਮ ਨੂੰ curtail ਕੀਤਾ ਜਾਵੇ। ਮੈਂ ਵੀ ਇਹੀ ਸਲਾਹ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਦਿਤੀ ਸੀ ਕਿ ਪ੍ਰੋਗ੍ਰਾਮ ਨੂੰ curtail ਕਰ ਦਿਤਾ ਜਾਵੇ। ਅਤੇ ਬਾਕੀ ਦਾ ਕੰਮ ਅਗਲੇ ਸੈਸ਼ਨ ਵਿਚ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਕਰਕੇ ਇਜ਼ੇਂਡੇ ਵਿਚ ਤਬਦੀਲੀ ਕਰ ਦਿਤੀ ਗਈ ਹੈ ਅਤੇ ਪ੍ਰੋਗ੍ਰਾਮ curtail ਕਰ ਦਿਤਾ ਹੈ।

ਸ਼੍ਰੀ ਦੇਵ ਰਾਜ ਸੇਠੀ : यह बिल जो पेश किया गया है.....

ਸ਼੍ਰੀ ਆਰੀ ਚੰਦ : On a point of order Sir. जब Chair की तरफ से एक बात पर ruling दी जा चुकी हो तो फिर क्या इस पर बोलने की इजाजत दी जा सकती है ?

अध्यक्ष महोदय : श्री देव राज सेठी point of order पर नहीं बोल रहे। वह बिल को support कर रहे हैं।

ਸ਼੍ਰੀ ਦੇਵ ਰਾਜ ਸੇਠੀ (ਰੋਹਤਕ ਸ਼ਹਰ) : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ ! ਆਜ਼ਾਦੀ ਜੋ ਬਿਲ ਹਮਾਰੀ ਸਰਕਾਰ ਦੀ ਤਰਫ਼ ਤੋਂ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ, ਇਹ ਬਹੁਤ ਆਖ਼ਰੀ ਹੈ। ਇਸ ਦੇ ਸੰਬੰਧ ਵਿੱਚ ਲੋਗਾਂ ਦੀਆਂ ਕਈ ਸ਼ਿਕਾਇਤਾਂ ਹਨ। ਇਸ ਬਿਲ ਵਿੱਚ ਬਹੁਤ ਨੁਕਸਾਨ ਹੈ : ਅੱਜ ਇਸ ਬਿਲ ਦੇ ਪਾਸ ਕਰਨ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਸਾਰੇ ਦੂਰ ਹੋ ਜਾਣਗੇ, ਲੇਕਿਨ ਇਸ ਵਿੱਚ retrospective effect ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿੱਚ ਕੁਝ ਨਹੀਂ ਕਹਾ ਗਿਆ। ਕੀ ਜਿਨ ਲੋਗਾਂ ਨੇ ਦੋ ਸਾਲ ਪਹਿਲੇ derequisition ਦੇ ਲਿਏ ਦਰਖਾਸਤਾਂ ਦਿੱਤੀਆਂ ਹਨ ਉਨ ਦੀ ਦਰਖਾਸਤਾਂ ਪਰ ਗ਼ੌਰ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ ? ਜਿਨ ਲੋਗਾਂ ਦੇ ਮਕਾਨਾਂ ਦੀ derequisition ਲੰਬੇ ਅਰਸੇ ਤੋਂ ਹੋ ਚੁਕੀ ਹੈ ਉਨ ਦੇ ਲਿਏ relief ਨਹੀਂ ਦਿੱਤਾ ਗਿਆ। ਇਸ ਸ਼ਿਕਾਇਤ ਨੂੰ ਦੂਰ ਕਰਨ ਦੇ ਲਿਏ ਸਰਕਾਰ ਦਾ amendment ਲਾਨੀ ਚਾਹੀਏ।

ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਕਿਸ਼ਨ (ਜਾਲੰਧਰ ਸ਼ਹਰ, ਉਤਰ ਪ੍ਰਦੇਸ਼) : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ ਜੋ ਬਿਲ ਚੀਫ ਮਿਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਹੈ ਇਸ ਦੇ ਮੁੱਤਅਲਕ ਚੀਫ ਮਿਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਦੀ ਤਰਫ਼ ਤੋਂ ਮੰਨੇ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਪਿਛਲੇ ਦੋ ਸਾਲ ਵਿੱਚ ਇਸ ਸਿਲਸਿਲੇ ਵਿੱਚ ਪਹਿਲੀ amendment ਪੇਸ਼ ਹੋਈ ਹੈ। ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਆਪ ਦੀ ਵਸਾਇਤ ਤੋਂ ਮੈਂ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਤੋਂ ਅਰਜ਼ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਇਸ ਐਕਟ ਦੀ working ਤਸਵੀਰ ਬਾਕਸ਼ ਨਹੀਂ ਥੀ, ਇਸ amendment ਦੇ ਜ਼ਰੀਏ ਜੋ relief ਦਿੱਤਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ ਉਹ relief ਨਾਕਾਫੀ ਹੈ। ਕਈ ਮਕਾਨ derequisition ਹੋ ਚੁਕੇ ਹਨ ਲੇਕਿਨ ਅੱਜ ਤੱਕ ਵਾਪਸ ਮਾਲਕਾਂ ਦੇ ਨਹੀਂ ਮਿਲੇ। ਇਸ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿੱਚ ਕਈ ਮਿਸਾਲਾਂ ਦਿੱਤੀਆਂ ਜਾ ਸਕਦੀਆਂ ਹਨ ਅਤੇ ਮੇਰਾ ਤਜਰਬਾ ਹੈ ਕਿ ਮਕਾਨਾਂ ਦੀ requisition ਕਰਕੇ ਮਾਲਕਾਂ ਤੋਂ ਆਖ਼ਰੀ ਸਲੂਕ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ। ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਮੈਂ ਆਪ ਦੀ ਵਸਾਇਤ ਤੋਂ ਚੀਫ ਮਿਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਦੀ ਤਰਫ਼ ਤੋਂ ਇਸ ਦਿਲਾਨਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਪਿਛਲੇ ਆਠ ਸਾਲਾਂ ਵਿੱਚ ਜਾਲੰਧਰ ਵਿੱਚ ਜਿਨ ਮਕਾਨਾਂ ਦੀ requisition ਕੀਤੀ ਗਈ ਉਨ ਦਾ ਕੀ ਹਾਲਾਤ ਹੋਇਆ।

ਮੈਂ ਇਸ ਸਿਲਸਿਲੇ ਵਿੱਚ ਚਾਰ ਵੱਡੀਆਂ ਮਿਸਾਲਾਂ ਪੇਸ਼ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਜਿਨ ਤੋਂ ਪਤਾ ਚਲਦਾ ਹੈ ਕਿ ਜਿਨ ਮਕਾਨਾਂ ਦੀ requisition ਕੀਤੀ ਗਈ ਉਨ ਦਾ ਕੀ ਹਾਲਾਤ ਹੋਇਆ। ਪੰਜ ਸਾਲ ਪਹਿਲਾਂ ਜਾਲੰਧਰ ਵਿੱਚ ਇੱਕ ਮਕਾਨ requisition ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਉਹ ਮਕਾਨ ਚਾਰ ਕਨਾਲ ਜ਼ਮੀਨ ਪਰ ਬਣਾ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਇਸ ਦੀ requisition ਕਰ ਕੇ ਇਸ ਨੂੰ 10 ਰੁਪਏ ਕਿਰਾਏ ਮੁਕਰਰ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਇਸ ਦੇ ਵਰਤੋਂ ਵਿੱਚ ਇੱਕ ਆਦਮੀ ਰਹਿੰਦਾ ਥੀ। requisition ਕਰਨ ਦੇ ਸਮੇਂ

उस family को कोई मौका न दिया गया कि वह अपनी रिहाईश का इन्तजाम कर सके। इस family को notice दिए बिना मकान को ताले लगा दिये गये और उन्हें seal कर दिया गया। कई दरखास्तें दी गईं लेकिन कोई सुनवाई न हुई। चार साल फैसला करने में लग गये। जब कोई फैसला न हुआ तो फैमली की तरफ से Senior Sub-Judge की अदालत में दावा दायर कर दिया गया कि जो नुकसान हुआ है इस को पूरा किया जाये। फैसला हुआ कि नुकसान की जिम्मेदारी गवर्नमेंट की जिम्मेदारी है। Requisitioning Authority की नहीं। लेकिन अभी तक मकान का कब्जा वापस नहीं मिला और न ही कोई रकम।

स्पीकर साहिब ! आप यह सुन कर हैरान होंगे कि requisition मकानों के मालिक बार बार दरखास्तें देते हैं कि आप किराया अगर नहीं देना चाहते, न दीजिये, कमजकम मकान की मुरमत तो करवा दें लेकिन वह भी नहीं की जाती।

दूसरा मकान जालन्धर में अड्डा कपूरथला के पास जानकी देवी का है। यह requisition किया गया। जिस के लिये इसको requisition किया गया था उस के रिश्तेदारों का इस मकान पर ढाई साल से कब्जा है। जानकी देवी को इस मकान का कब्जा अभी तक नहीं मिला। जालन्धर के डिप्टी कमिश्नर की तबज्जुह इस तरफ दिलाई गई है कि मकान को derequisition हुए २॥ साल गुजर चुके हैं लेकिन न तो मकान का कब्जा मिला है और न ही इस ढाई साल के अरसे में एक पैसा तक किराए का दिया गया है।

इस के अलावा मैं चीफ मिनिस्टर साहिब की तबज्जुह गोविन्दगढ़ के एक केस की तरफ दिखाता हूं। एक मकान को कमिश्नर के स्टेनो के लिये requisition किया गया। इस steno को तबदील कर दिया गया और एक और steno को मकान अलाट कर दिया गया। पिछले 6 साल से इस के किराए का एक पैसा भी अदा नहीं किया गया। Home Secretary के पास गए। एक सौ के करीब दरखास्तें दी लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। पिछले 6 साल से इस मकान की बिजली का किराया भी मालिक मकान को अदा करना पड़ा। मकान अब derequisition कर दिया गया है लेकिन अभी तक कब्जा नहीं दिया गया।

चौथा वाकिया जो मैं आप की विसातत से उन के नोटिस में लाना चाहता हूं यह है कि एक शरूत ने नई कोठी बनाई और पिछली वज्जारत के जमाने में उसे requisition कर लिया गया। मालिक की सब कोशिशें और दौड़ धूप बेकार गई। आखिर मुआमिला गवर्नर तक पहुंचा तब कहीं जाकर ठीक हुआ।

मैं आप की विसातत से यह अर्ज करना चाहता हूं कि जो हालात इस बारे में नज़र आ रहे हैं उन का नतीजा अच्छा नहीं हो सकता। मैं जानता हूं कि मकानों की कमी है और गवर्नमेंट को कभी अफसरों के लिये और कभी दफतरों वगैरा के लिये मकानों की जरूरत पड़ती रहती है। लेकिन जिस तरीके से इस Act पर अमल हो रहा है उस से गवर्नमेंट के खिलाफ नफरत फैलती है। मैं चीफ मिनिस्टर साहिब से दरखास्त करता हूं कि इस बारे में पूरी जांच पड़ताल की जाए और Act के working को ठीक किया जाए।

[श्री राम किशन]

अब मैं मुख्यतः तीर पर तीन चार बातें और कहना चाहता हूँ। पहली बात तो यह है कि जैसा कि सेठी साहिब ने कहा है आगे के लिये तो appeal का हक दे दिया गया है मगर पिछले सात साल में जो कुछ होता रहा है उस सिलसिले में इस बिल में कोई relief नहीं दिया गया।

अध्यक्ष महोदय: आप सारे Act पर बहस न करें। जो amending bill इस वक्त हाऊस के सामने पेश है उसी के बारे में बात करें।

श्री राम किशन: मेरी अर्ज यह है कि पिछले सात साल के अर्थ में जो मकान requisition किये गये उन के सम्बन्ध में यहां इस बिल में कुछ नहीं किया गया। इस लिये मैं चीफ मिनिस्टर साहिब से अर्ज करता हूँ कि पांच सात आदमियों की एक Committee बना दी जाए खाह वह Official Committee हो या गैर सरकारी आदमियों की हो। जैसी भी चाहें बना दें। वह कमेटी जांच पड़ताल कर के देखे कि Act पर किस तरह working हो रहा है और क्या कुछ होना चाहिये।

दूसरी अर्ज यह है कि जब कभी किसी मकान को requisition किया जाए तो उस के बारे में एक हद मस्लन एक साल मुकदर कर दी जाए। अगर किरायादार इस मियाद तक किराया अदा न करे तो उस का हक automatically जाता रहे और उसे मकान से निकाला जा सके।

तीसरी बात यह है कि जैसा कि Planning Commission ने कहा कि मकानों की कमी है मगर बहुत से लोग डर के मारे नये मकान नहीं बनाते कि उन को requisition कर लिया जाएगा। इस लिये मैं दरखास्त करता हूँ कि कम से कम पांच साल तक नये मकान requisition न किये जाएं।

चौथी अर्ज मैं यह करना चाहता हूँ कि derequisitioning की दरखास्त पर competent authority के गौर करने के बाद उस पर गवर्नमेंट के पास appeal का प्रबन्ध तो कर दिया गया है लेकिन पिछला तजरबा बताता है कि ऐसे कामों में जो फंसला incharge अफसर कर दे वही कायम रहा करता है। इस लिये मेरी गुजारिश है कि एक आदमी की जगह तीन चार आदमियों की एक Committee हो जो सब बातों की जांच पड़ताल के बाद गौर करके फंसला किया करे।

पांचवीं बात यह है कि जिस मकसद के लिये कोई मकान requisition किया गया हो जब वह हल हो जाए तो फौरन उस मकान को derequisition कर दिया जाए। लेकिन तजरबा यह बताता है कि एक बार जो मकान requisition हो गया बस फिर वह हो गया और derequisition होने की बजाए दूसरे लोगों के काम आता रहता है। इस सिलसिले में लोगों को बहुत तकलीफ है। मैं Planning Commission के अजक़ाब की तरफ आप की तबज़्जुह दिलाता हूँ। लिखा है कि—

"With regard to the acquisition of premises for public purposes, we would recommend that the practice should be resorted to only exceptionally. It cannot be denied that requisitioning of premises on an extensive scale in recent years has had a deterrent effect on the building activity in the private sector. We would, therefore, urge upon Government, both Central and State, to be cautious in having recourse to requisitioning house properties in times of peace."

ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਮੈਂ ਆਸ਼ਾ ਰੱਖਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਾਕਿਆਤ ਦੀ ਤਰਫ਼ ਮੈਂ ਨੇ ਤਕਜ਼ੂਹ ਦਿਲਾਈ ਹੈ, ਚੀਫ਼ ਮਿਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਉਨ੍ਹਾਂ ਪਰਗੀਰ ਫਰਮਾਏਗੇ ਐਂਡ Act ਕੇ working ਕੀ ਠੀਕ ਕਰਨੇ ਕੇ ਲਿਏ ਬਹੁਤ ਜਲਦੀ ਸੁਨਾਸਿਬ action ਲੈਂਗੇ ਤਾਕਿ ਲੋਗਾਂ ਦੀ ਤਕਲੀਫ਼ ਦੂਰ ਹੋ ਜਾਏ ।

ਸਰਦਾਰ ਚੰਨਣ ਸਿੰਘ ਧੂਤ (ਟਾਂਡਾ) : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, Treasury ਬੈਂਚ ਨੂੰ ਆਦਤ ਹੋ ਗਈ ਹੈ ਕਿ ਪਹਿਲਾਂ ਇਕ ਬਿਲ ਲਿਆ ਕੇ ਪਾਸ ਕਰਾ ਲੈਂਦੇ ਹਨ ਫੇਰ ਉਸ ਤੇ amendments ਲਿਆਉਂਦੇ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ । ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਦੀ ਵੀ ਕੋਈ ਮੁਕੱਮਲ ਬਿਲ ਨਹੀਂ ਲਿਆਂਦਾ ! ਹੁਣ ਵੀ ਇਕ ਬਿਲ Disqualifications ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਲਿਆਂਦਾ ਹੈ ਜਿਸ ਨੂੰ ਪਾਸ ਕਰਾਂਦੇ ਹੀ amendment ਦੀ ਲੋੜ ਪੈ ਗਈ ਅਤੇ ਇਹ ਜਿਹੜਾ ਬਿਲ ਇਸ ਵੇਲੇ ਸਾਡੇ ਸਾਮ੍ਹਣੇ ਹੈ ਓਹਦਾ ਵੀ ਇਹੋ ਹਾਲ ਹੈ ।

ਇਸ ਬਿਲ ਦੇ ਮੁਤਅਲਕ ਅਰਥ ਹੈ ਕਿ ਦੋ ਸਾਲ ਦੀ ਮਿਆਦ ਦੇ ਕੇ ਦਰਖਾਸਤ ਕਰਨ ਦੀ ਇਜਾਜ਼ਤ ਤਾਂ ਦੇ ਦਿੱਤੀ ਹੈ ਪਰ ਜੋ ਕੁਝ ਪਹਿਲਾਂ ਹੁੰਦਾ ਰਿਹਾ ਹੈ ਉਸ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਕੋਈ ਸਹੂਲਤ ਦੇਣ ਵਲ ਧਿਆਨ ਨਹੀਂ ਦਿਤਾ ਗਿਆ । ਸ੍ਰੀ ਰਾਮ ਕਿਸ਼ਨ ਜੀ ਨੇ ਜਾਲੰਦਰ ਦੀਆਂ ਮਿਸਾਲਾਂ ਦਿੱਤੀਆਂ ਹਨ ਕਿ ਮਕਾਨਾਂ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਕੀ ਤਕਲੀਫ਼ ਪੇਸ਼ ਆਉਂਦੀਆਂ ਹਨ । ਮੈਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਨਹੀਂ ਦੋਹਰਾਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਅਤੇ ਇਹ ਦਸਦਾ ਹੈ ਕਿ ਪਿੰਡਾਂ ਵਿਚ ਇਸ Act ਉਤੇ ਕਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਅਮਲ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ । ਮੇਰੀ ਅਰਜ਼ ਹੈ ਕਿ ਪਿੰਡਾਂ ਵਿਚ ਹਾਲਤ ਹੋਰ ਵੀ ਖਰਾਬ ਹੈ । ਮੇਰੇ ਪਾਸ ਹਜ਼ਾਰਾਂ ਅਰਜ਼ੀਆਂ ਹਨ ਜਿਹੜੀਆਂ ਵਜ਼ੀਰਾਂ ਨੂੰ ਭੇਜੀਆਂ ਗਈਆਂ ਸੀ । ਉਨ੍ਹਾਂ ਤੋਂ ਮਲੂਮ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਜ਼ਮੀਨ ਕਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਲਈ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚਾਰਿਆਂ ਨਾਲ ਕੀ ਸਲੂਕ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ । ਮੈਂ ਇਕ ਮਿਸਾਲ ਦੇਂਦਾ ਹਾਂ । ਇਕ ਆਦਮੀ ਦੀ ਬਾਰਾਂ ਏਕੜ ਜ਼ਮੀਨ ਲੈ ਲਈ ਗਈ । ਉਸ ਦੇ ਟੱਬਰ ਦੇ ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਆਦਮੀ ਹਨ ਅਤੇ ਓਹਦੀ ਜ਼ਮੀਨ ਨਹਿਰ ਦੇ ਦੋਹਾਂ ਪਾਸੇ ਆ ਗਈ ਹੈ । ਗੁਜ਼ਾਰਾ ਬੜੀ ਮੁਸ਼ਕਲ ਨਾਲ ਹੁੰਦਾ ਹੈ । ਉਸ ਨੇ ਬਹੁਤ ਕਿਹਾ ਕਿ derequisition ਕਰ ਦਿਓ ਪਰ ਕੁਝ ਅਸਰ ਨਾ ਹੋਇਆ । ਫੇਰ ਓਹਦਾ ਮਾਲੀਆ ਵੀ ਲਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ । ਮਕਾਨਾਂ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਵੀ ਇਹ ਸ਼ਿਕਾਇਤ ਹੈ ਕਿ Property-tax ਵੀ ਮਾਲਕਾਂ ਨੂੰ ਦੇਣਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ । ਸਰਕਾਰ ਨੇ tax ਅਤੇ ਮਾਲੀਆ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਕੋਈ ਸਹੂਲਤ ਨਹੀਂ ਦਿੱਤੀ । ਇਸ ਪਾਸੇ ਧਿਆਨ.....

ਸੂਫ਼ੀ ਸੰਤੀ : On a point of order, Sir. ਮੈਂ ਮੈਂਬਰ ਸਾਹਿਬ ਕੀ ਟੋਕਨਾ ਨਹੀਂ ਚਾਹੁੰਦਾ ਸਗਰ ਧੰਨ ਅੱਜ ਕਰ ਦੁੱ ਕਿ ਇਸ ਬਕਤ ਸਾਰਾ ਏਕਟ ਹਮਾਰੇ ਸਾਮਨੇ ਨਹੀਂ ਇਸ ਲਿਏ ਮੈਂ ਆਪ ਕੇ ਫ਼ਾਰਾ ਉਨ੍ਹਾਂ ਸੇ ਵਰਖਾਸਤ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਕੇ ਸਿਫ਼ amending bill ਪਰ ਕਹਿਸ ਕਰੋਂ ।

ਸਰਦਾਰ ਚੰਨਣ ਸਿੰਘ ਧੂਤ : ਮੈਂ, ਸ਼੍ਰੀਮਾਨ ਜੀ, ਤਰਮੀਮੀ ਬਿਲ ਉਤੇ ਹੀ ਬੋਲ ਰਿਹਾ ਹਾਂ । ਮੈਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਰਖਾਸਤਾਂ ਦੇ ਬਾਰੇ ਜ਼ਿਕਰ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹਾਂ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਲਈ ਇਹ ਕਾਨੂੰਨ ਲਿਆਂਦਾ ਗਿਆ ਹੈ । ਮੈਂ ਦਸ ਰਿਹਾ ਹਾਂ ਕਿ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦਰਖਾਸਤਾਂ ਦਾ ਕੀ ਹਸਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ । ਤੇ ਪਹਿਲੇ ਕਾਨੂੰਨ ਵਿਚ ਕੀ ਨੁਕਸ ਹਨ । ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਲੋਕਾਂ ਦੀ property

[ਸਰਦਾਰ ਚੰਨਣ ਸਿੰਘ ਧੂੜ]

ਲਈ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਦਰਖਾਸਤਾਂ ਸੁਣਨ ਵਾਲੇ ਅਫਸਰ ਬਹੁਤ ਤਕਲੀਫ਼ ਦਿੰਦੇ ਹਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਅਫਸਰਾਂ ਨੂੰ ਇਸ ਤਰਜ਼ੀ ਵਿਚ ਸਭਾ ਦੇਣ ਦਾ ਕੋਈ ਪ੍ਰਬੰਧ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਮਾਨਯੋਗ ਚੌਧਰੀ ਲਹਿਰੀ ਸਿੰਘ ਜੀ ਨੇ ਖੁਦ ਮੰਨਿਆ ਸੀ ਕਿ ਉਸ ਫ਼ਮੀਨ ਦੇ ਮਾਲਕਾਂ ਨੂੰ ਜਿਹੜੀ Bhakra Dam ਵਾਸਤੇ ਲਈ ਗਈ ਹੈ ਮੁਆਵਜ਼ਾ ਤਾਂ ਦੇ ਦਿਤਾ ਗਿਆ ਹੈ ਪਰ ਮਾਲੀਆ ਅਜੇ ਵੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਕੋਲੋਂ ਵਸੂਲ ਕੀਤਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਇਹ ਗਲ ਠੀਕ ਨਹੀਂ ਇਹੋ ਗਲ ਸਾਡੇ ਦੁਆਬੇ ਵਿਚ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ ਜਿਥੇ ਨਹਿਰਾਂ ਕਈਆਂ ਗਈਆਂ ਹਨ, ਖੜੀਆਂ ਫ਼ਸਲਾਂ ਤਬਾਹ ਕਰ ਦਿਤੀਆਂ ਗਈਆਂ ਸਨ ਤੇ ਕਿਸੇ ਪਰਵਾਹ ਨਹੀਂ ਸੀ ਕੀਤੀ। ਸਿਰਫ਼ ਦਰਖਾਸਤਾਂ ਦਾ ਪ੍ਰਬੰਧ ਕਰ ਦੇਣ ਨਾਲ ਕੋਈ ਫਰਕ ਨਹੀਂ ਪਵੇਗਾ। ਮੈਂ ਕਹਿੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਇਸ ਗਲ ਦਾ ਵੀ ਪ੍ਰਬੰਧ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਕਿ ਜਿਹੜੇ ਅਫਸਰ ਠੀਕ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦਰਖਾਸਤਾਂ ਨਹੀਂ ਸੁਣਨਗੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਸਜ਼ਾ ਦਿਤੀ ਜਾਵੇਗੀ। ਮੈਂ ਫੇਰ ਕਹਿੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਦਰਖਾਸਤਾਂ ਦੇ ਦੇਣ ਨਾਲ ਸਾਡਾ ਮਸਲਾ ਹਲ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ। ਜਿਸ ਵੇਲੇ ਕਿਸੇ ਦੀ ਫ਼ਮੀਨ ਤੇ ਕਬਜ਼ਾ ਕੀਤਾ ਜਾਵੇ ਉਸ ਤੋਂ ਬਾਦ ਮਾਲੀਆ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਦੇਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਫੇਰ ਜੇ ਮਕਾਨ ਲਿਆ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਉਸ ਦਾ ਠੀਕ ਕਿਰਾਇਆ ਅਤੇ ਫ਼ਮੀਨ ਲਈ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਉਸਦੀ ਠੀਕ ਕੀਮਤ ਮਾਲਕ ਨੂੰ ਵੇਲੇ ਸਿਰ ਮਿਲਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਜਿਹੜੇ ਅਫਸਰ ਇਸ ਗਲ ਵਿਚ ਕੋਤਾਹੀ ਕਰਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਸਜ਼ਾ ਮਿਲਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ।

ਸਰਦਾਰ ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ (ਸਮਰਾਲਾ) : ਮਾਨਯੋਗ ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ ! ਮੈਂ ਆਪ ਜੀ ਦੀ ਚੋਣ ਵੇਲੇ ਹਾਜ਼ਰ ਨਹੀਂ ਸੀ ਤੇ ਇਸ ਲਈ ਮੈਂ ਆਪ ਜੀ ਨੂੰ ਹੁਣ ਮੁਬਾਰਿਕਬਾਦ ਪੇਸ਼ ਕਰਦਾ ਹਾਂ। ਮੈਂ ਅਰਜ਼ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਐਸ ਵੇਲੇ ਮੈਂ ਕੋਈ ਲੰਮੀ ਰੋੜੀ ਤਕਰੀਰ ਨਹੀਂ ਕਰਨੀ ਚਾਹੁੰਦਾ। ਮੈਂ ਕੇਵਲ ਐਨਾਂ ਕਹਿਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਮੈਂ ਅਪਣੇ ਮਾਨਯੋਗ ਮਿਤ੍ਰ Comrade ਰਾਮਕਿਸ਼ਨ ਜੀ ਦੇ ਦਰ ਉਸ ਲਵਜ਼ ਦੀ ਤਾਈਦ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਜਿਸ ਨਾਲ ਉਨ੍ਹਾਂ ਇਸ Act ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਦਾ ਨਕਸ਼ਾ ਖਿੱਚਿਆ ਹੈ। ਜੇ bureaucracy ਜਾਂ Hitlerism ਦਾ ਨਕਸ਼ਾ ਇਸ Act ਦੇ ਤਹਿਤ ਅਫਸਰਾਂ ਨੇ ਬਣਾ ਰੱਖਿਆ ਹੈ। ਜੇ ਇਸ ਦੇ ਬਾਰੇ ਕੁਝ ਨ ਕਿਹਾ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਚੰਗਾ ਹੋਵੇਗਾ। ਇਹ Act ਬਹੁਤ ਹੀ ਜ਼ਿਆਦਾ misuse ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਜਦ ਇਹ Act ਬਣਿਆ ਸੀ ਤਾਂ ਇਹ ਇਕ emergency measure ਸੀ। ਇਹ war days ਵਿਚ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਇਆ ਸੀ ਜਦ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਡੇਜ਼ੀ ਅਫਸਰਾਂ ਤੇ ਹੋਰ ਜ਼ਰੂਰੀ ਕੰਮਾਂ ਲਈ ਥਾਂਵਾਂ ਦੀ ਲੋੜ ਪੈਂਦੀ ਸੀ। ਹੁਣ ਇਹ ਇਕ normal feature of the day ਬਣ ਗਿਆ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਵੀ ਕੋਈ ਨਵਾਂ ਮਕਾਨ ਬਣਨਾ ਸ਼ੁਰੂ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿਸੇ ਨ ਕਿਸੇ ਅਫਸਰ ਦੀ ਅੱਖ ਉਸ ਪਾਸੇ ਲਗ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਜਿਸ ਵੇਲੇ ਹੀ ਮਕਾਨ ਮੁਕੰਮਲ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਉਹ ਅਫਸਰ ਇਕ informer ਜਾਂ ਮੁਖਬਿਰ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ Deputy Commissioner ਨੂੰ ਜਾ ਦਸਦਾ ਹੈ ਤੇ ਮਕਾਨ requisition ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਮਕਾਨ ਦਾ ਮਾਲਕ ਅਪਣੀ ਮਰਜ਼ੀ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਅਪਣੀ Property ਨੂੰ ਵਰਤ ਨਹੀਂ ਸਕਦਾ। ਮੈਂ ਕਹਿੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਜਿਵੇਂ ਸਾਡੀ constitution ਵਿਚ ਲਿਖਿਆ ਹੈ ਹਰ ਇਕ ਆਦਮੀ ਨੂੰ ਇਹ ਬੁਨਯਾਦੀ ਹਕ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਕਿ ਜਿਵੇਂ ਉਸ ਦਾ ਜੀ ਚਾਹੇ ਅਪਣੀ property ਦਾ ਇਸਤੇਮਾਲ ਕਰੇ। ਇਸ ਵਿਚ ਕੋਈ interference ਨਹੀਂ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ। ਇਸ ਮਾਮਲੇ ਬਾਰੇ Exceptions ਬਹੁਤ ਘੱਟ ਵਰਤੋਂ

ਵਿਚ ਲਿਆਂਦੀਆਂ ਜਾਣੀਆਂ ਚਾਹੀਦੀਆਂ ਹਨ। ਜੇ ਅਸੀਂ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਹੀਂ ਕਰਦੇ ਤਾਂ ਮੈਂ
ਕਹਾਂਗਾ ਕਿ ਅਸੀਂ ਅਪਣੀ Constitution ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਕੰਮ ਨਹੀਂ ਕਰ ਰਹੇ ਤੇ
democracy ਦੀ ਅਹਿਮੀਯਤ ਨੂੰ ਨਹੀਂ ਸਮਝਦੇ। ਹੁਣ ਗਲ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਮਕਾਨ
ਜਾਂ ਜ਼ਮੀਨ requisition ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਪਰ ਉਸ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਵਿਚਾਰੇ ਮਾਲਕ ਮਕਾਨ ਤੇ
ਮਾਲਕ ਜ਼ਮੀਨ ਵਿੱਚ ਵਿੱਚ ਚਾਰ ਚਾਰ ਮਾਲ ਵਰਖਾਸਤ। ਦੋ ਦੋ ਕੰਥ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਪਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ
ਨ ਕੋਈ ਕਿਰਾਇਆ ਮਿਲਦਾ ਹੈ ਤੇ ਨਹੀਂ ਮੁਆਵਜ਼ਾ। ਇਹੀ ਨਹੀਂ ਕਿਰਾਇਆ ਜਾਂ ਕੀਮਤ
ਮੁਕਰਰ ਹੀ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੇ। ਕੋਈ arbitrator ਹੀ ਮੁਕਰਰ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ। ਹਾਂ
ਇਹ ਬਹੁਤ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਅਫ਼ਸਰ ਮਾਲਕ ਮਕਾਨਾਂ ਨੂੰ ਹੁਕਮ ਦੇ ਦਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਮਕਾਨਾਂ ਦੀ ਮੁਰੰਮਤ
ਕਰਾਓ। ਮਾਲਕ ਮਕਾਨ ਮੁਰੰਮਤ ਕਿਥੇ ਕਰਾਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਕਿਰਾਇਆ ਹੀ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦਾ। ਦੋਰ
ਜੇ ਕਿਸੇ ਸੂਰਤ ਮਿਲੇ ਤਾਂ ਸਰਕਾਰ ਦਾ ਕਿਰਾਇਆ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਕਿਰਾਏ ਦੀ ਨਿਸਬਤ ਹੁੰਦਾ ਹੀ
ਬਹੁਤ ਘੱਟ ਹੈ। ਨਤੀਜਾ ਇਹ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਮਕਾਨ ਢਠ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਮੈਂਨੂੰ ਇਨ੍ਹਾਂ
ਗਲਾਂ ਦਾ ਢਾਤੀ ਤਜਰਬਾ ਹੈ। ਲੁਧਿਆਣੇ ਮੇਰੇ ਘਰ ਦੇ ਸਾਹਮਣੇ ਇਕ ਮਕਾਨ ਹੈ। ਉਸ
ਦਾ ਕਿਰਾਇਆ ਕਿਨੀ ਦੋਰ ਨਹੀਂ ਦਿਤਾ ਗਿਆ। ਮਾਲਕ ਮਕਾਨ ਵਿਚਾਰਾ ਮੁਰੰਮਤ ਨ
ਕਰਵਾ ਸਕਿਆ। ਪਹਿਲੇ ਇਕ ਕਮਰਾ ਗਿਰਿਆ। ਜਿਹੜਾ ਅਫ਼ਸਰ ਵਿਚ ਰਹਿੰਦਾ ਸੀ
ਉਸਨੇ ਸਾਮਾਨ ਦੂਜੇ ਕਮਰੇ ਵਿਚ ਕਰ ਲਿਆ। ਉਹ ਕਮਰਾ ਵੀ ਗਿਰ ਗਿਆ। ਉਸ
ਨੇ ਸਾਮਾਨ ਤੀਜੇ ਕਮਰੇ ਵਿਚ ਕਰ ਲਿਆ। ਉਹ ਵੀ ਗਿਰ ਗਿਆ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਾਰੀ
ਦੀ ਸਾਰੀ ਫੋਠੀ ਢਠ ਗਈ ਹੈ ਤੇ ਹੁਣ ਜ਼ਾਕੇ ਇਸ ਦੀ requisition ਖਤਮ ਹੋਈ ਹੈ।

ਸ਼੍ਰੀਮਾਨ ਜੀ ! ਮੈਂ ਮੰਨਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਇਸ ਤਰਮੀਮੀ ਬਿਲ ਦਾ ਲਿਆਂਦਾ ਜਾਣਾ ਇਸ
ਗਲ ਦਾ ਸਬੂਤ ਹੈ ਕਿ ਸਾਡੇ Chief Minister ਸਾਹਿਬ ਨੂੰ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਤਕਲੀਫ਼
ਦਾ ਇਹਸਾਸ ਹੈ ਤੇ ਉਹ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਦੂਰ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਪਰ ਮੇਰਾ ਵਿਚਾਰ ਹੈ ਕਿ
ਜਿਹੜਾ ਤਰੀਕਾ ਇਖਤਿਆਰ ਕੀਤਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ ਕਾਫ਼ੀ ਨਹੀਂ। ਜਿਵੇਂ ਮੇਰੇ ਇਕ ਭਰਾ
ਨੇ ਕਿਹਾ ਹੈ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਕਿ ਇਕ report ਤਿਆਰ ਕਰਵਾਏ ਜਿਸ ਤੋਂ
ਪਤਾ ਲਗੇ ਕਿ ਪਿਛਲੇ ਪੰਜਾਂ ਸਤਾਂ ਸਾਲਾਂ ਵਿਚ ਇਸ Act ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਵਿਚ ਕੀ ਕੀ
ਨੁਕਸ ਨਜ਼ਰ ਆਏ ਹਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੁਕਸਾਂ ਨੂੰ ਹਟਾਇਆ ਜਾਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਤੇ ਇਸ ਗਲ ਦਾ ਪ੍ਰਬੰਧ
ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਕਿ rent fix ਕਰਨ ਵਿਚ ਤੇ ਅਦਾ ਕਰਨ ਵਿਚ ਛੇਤੀ ਤੋਂ ਛੇਤੀ ਕੰਮ ਲਿਆ
ਜਾਵੇ। ਮੈਂ ਤਾਂ ਕਹਾਂਗਾ ਕਿ ਜਿਵੇਂ ਨਵੇਂ ਮਕਾਨਾਂ ਨੂੰ ਕੁਝ ਸਾਲ requisition ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ,
requisitioned houses ਨੂੰ ਕੁਝ ਚਿਰ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਛੋੜ ਦੇਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।
ਸਿਰਫ਼ ਦਰਖਾਸਤਾਂ ਦੇਣ ਨਾਲ ਕੁਝ ਨਹੀਂ ਬਣੇਗਾ। ਅਫ਼ਸਰਾਂ ਦੀ ਬਿਤਾਦਰੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਤੇ
ਉਹ ਦਰਖਾਸਤਾਂ ਦਾ ਕੁਝ ਨਹੀਂ ਬਣਨ ਦੇਨਕੇ। ਮੈਨੂੰ ਯਾਦ ਹੈ ਕਿ ਇਸ Act ਦੇ ਬਾਰੇ
ਮੈਂ ਇਕ ਤਕਰੀਰ ਕੀਤੀ ਸੀ। Chief Minister ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਉਸ ਵੇਲੇ ਫਰਮਾਇਆ
ਸੀ ਕਿ ਕੋਈ special case ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਮੈਨੂੰ ਦਸਿਆ ਜਾਵੇ। ਮੈਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਲੁਧਿਆਣੇ
ਦਾ ਇਕ case ਭੇਜਿਆ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ Deputy Commissioner ਤੋਂ report
ਮੰਗੀ। ਉਸ report ਦੀ ਬਿਨਾਂ ਤੇ ਮੈਨੂੰ ਕਹਿ ਦਿਤਾ ਗਿਆ ਕਿ ਕੋਈ ਵਜ੍ਹਾ ਨਹੀਂ
ਕਿ ਇਸ ਮਕਾਨ ਨੂੰ derequisition ਕੀਤਾ ਜਾਵੇ। ਉਹ ਮਕਾਨ ਇਕ ਬੇਵਾ ਦਾ ਸੀ
ਤੇ ਉਸ ਨੂੰ ਅਪਣੇ ਲਈ ਮਕਾਨ ਚਾਹੀਦਾ ਸੀ ਉਹ ਕਹਿੰਦੀ ਸੀ ਕਿ ਜੇ ਉਹ ਅਪਣੇ ਲਈ

[ਸਰਦਾਰ ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ]

ਮਕਾਨ ਨ ਵਰਤੇ ਤਾਂ ਸਰਕਾਰ ਬੇਸ਼ਕ ਫੋਰ requisition ਕਰ ਲਏ। ਪਰ ਉਸ ਦਾ ਮਕਾਨ ਨਹੀਂ ਸੀ ਛੋੜਿਆ ਗਿਆ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਹਾਲਤਾਂ ਵਿਚ ਮੈਂ ਕਹਿੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਇਸ Act ਦਾ ਬਹੁਤ misuse ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਹੋ ਸਕੇ ਤਾਂ ਇਸ ਨੂੰ ਖਤਮ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਜੇ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦਾ ਤਾਂ ਘਟੋ ਘਟ ਲੋਕਾਂ ਦੀਆਂ ਤਕਲੀਫਾਂ ਖਤਮ ਕਰਨੀਆਂ ਚਾਹੀਦੀਆਂ ਹਨ।

ਰਾਮੋ ਗਜਰਾਜ ਸਿੰਘ (ਗੁਡਗਾਂਵ) : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਇਸ ਟਰਮੀਨੀ ਬਿਲ ਦੇ ਸੁਤਅਲਿਕ ਇਤਨਾ ਅੱਜ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਜੋ appeal ਦੇ ਬਾਰੇ ਮੈਂ relief ਦੇ ਦੀ ਗਈ ਹੈ ਉਸ ਮੈਂ ਕਾਫੀ ਦਿਥਕਤੋਂ ਹੋਂਗੀ। ਜਹਾਂ ਤਕ ਇਸ ਏਕਟ ਦੇ working ਦਾ ਸਵਾਲ ਹੈ ਅਪੀਲ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਦੇ ਪਾਸ ਆਏਗੀ ਲੇਕਿਨ ਏਸੀ ਅਪੀਲ ਮਿਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬਾਨ ਨੇ ਤੋ ਸੁਨਨੀ ਨਹੀਂ। ਯਹ ਇਸਤਿਧਾਰਾਤ ਕਿਸੀ ਕੋ delegate ਕਰਨੇ ਹੋਂਗੇ। ਮੇਰੇ ਖ਼ਿਆਲ ਮੈਂ ਬੇਹਤਰ ਹੋਂਗਾ ਕਿ ਏਸੇ ਇਸਤਿਧਾਰਾਤ ਕਿਸੀ Judicial Authority ਦੇ ਸੁਪੁਰਦ ਕਰ ਦਿਏ ਜਾਏ। ਇਸ ਤਰੀਕੇ ਦੇ ਫੈਸਲੇ ਜਲਦੀ ਹੁਆ ਕਰੇਂਗੇ। ਅਗਰ ਅਪੀਲ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਦੇ ਪਾਸ ਆਈ ਤੋ ਕਲਕ ਉਨ ਫਾਈਲਾਂ ਕੋ ਦਬਾ ਕਰ ਬੈਠ ਜਾਏਂਗੇ ਆਰ ਇਸ ਤਰਹ ਦੇ ਏਸੇ cases ਦੇ ਫੈਸਲਾਂ ਮੈਂ ਕਾਫੀ ਦੇਰ ਲਗੇਗੀ। ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਕੋ ਚਾਹਿਏ ਕਿ ਯਹ ਇਸਤਿਧਾਰਾਤ ਡਿਸਟ੍ਰਿਕਟ ਜਜ ਕੋ ਸੌਂਪ ਦੇ ਤਾਕਿ ਸੁਕਦਮਾਂ ਦੇ ਫੈਸਲਾਂ ਮੈਂ ਦੇਰ ਨ ਲਗੇ। ਇਸ ਸਿਲਸਿਲੇ ਮੈਂ ਮੈਂ ਏਕ ਮਿਸਾਲ ਬਤਾ ਸਕਤਾ ਹਾਂ ਕਿ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਨੇ ਕੁਝ ਜ਼ਮੀਨ ਇਸ ਬਿਨਾ ਪਰ requisition ਕੀ ਕਿ ਧਰਧਾਰੀ ਆਈਓ ਦੇ ਲਿਧੇ Work Centre ਬਨਾਨਾ ਹੈ। ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਨੇ 10,000 ਰੁਪਏ ਬਤੌਰ, ਸੁਆਵਜ਼ਾ ਦੇਨੇ ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਕੀਯਾ ਲੇਕਿਨ ਅਜੀ ਤਕ ਨ ਉਨ ਲੋਗਾਂ ਕੋ ਸੁਆਵਜ਼ਾ ਦਿਯਾ ਗਯਾ ਆਰ ਨਹੀਂ Work Centre ਬਨਾ ਹੈ। ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਨੇ ਵਹ ਜ਼ਮੀਨ ਕਈ ਲਾਖਾਂ ਰੁਪਏ ਪਰ ਬੇਚ ਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਤਰਹ ਦੇ ਇਸ ਏਕਟ ਪਰ ਅਮਲ ਹੋਤਾ ਹੈ। ਇਸ ਲਿਧੇ ਮੈਂ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਦੇ ਗੁਜ਼ਾਰਿਸ਼ ਕਰੇਂਗਾ ਕਿ ਵਹ ਇਸ ਮਾਮਲੇ ਮੈਂ ਪੂਰੀ ਏਹਤਿਧਾਤ ਦੇ ਕਾਮ ਲੇ ਤਾਕਿ ਲੋਗਾਂ ਕੋ ਉਸੇ ਬਦਨਾਮ ਕਰਨੇ ਦਾ ਸੌਕਾ ਨ ਮਿਲੇ। ਗੁਡਗਾਂਵ ਮੈਂ ਸੁਆਵਜ਼ਾ ਦਿਧੇ ਬਿਨਾ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਨੇ requisition ਕੀ ਹੁਈ ਜ਼ਮੀਨ ਬੇਚ ਡਾਲੀ ਹੈ। ਯਹ ਜ਼ਮੀਨ ਕੋਈ ਥੋਡੀ ਜ਼ਮੀਨ ਨਹੀਂ ਥੀ ਬਲਕਿ ਦੋ ਤੀਨ ਸੌ ਵੀਧਾ ਜ਼ਮੀਨ ਥੀ ਜਿਸਪਰ ਅਜੀ ਤਕ ਕੋਈ Work Centre ਨਹੀਂ ਬਨਾਯਾ ਗਯਾ। ਇਸ ਲਿਧੇ ਮੈਂ ਗੁਜ਼ਾਰਿਸ਼ ਕਰੇਂਗਾ ਕਿ Executive order ਹੋਨਾ ਚਾਹਿਧੇ ਕਿ ਜਿਸ purpose ਦੇ ਲਿਧੇ ਜ਼ਮੀਨ requisition ਕੀ ਜਾਏ ਵਹ ਕਿਸੀ ਦੂਸ purpose ਦੇ ਲਿਧੇ ਇਸਤੇਮਾਲ ਮੈਂ ਨ ਲਾਈ ਜਾਵੇ। ਕੁਝ ਅਰਸਾ ਪਹਲੇ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਨੇ ਏਕ ਬਿਲਡਿੰਗ ਇਸ ਗਰਜ ਦੇ requisition ਕੀ ਕਿ Civil Supplies ਦੇ ਕਰਮਚਾਰੀਓ ਦੇ ਲਿਧੇ ਜਗਹ ਚਾਹਿਧੇ। ਵਹ ਬਿਲਡਿੰਗ ਅਜੀ ਤਕ derequisition ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕੀ। ਇਸ ਲਿਧੇ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਕੋ ਚਾਹਿਧੇ ਕਿ ਇਸ ਪਰ ਸਖ਼ਤੀ ਦੇ ਅਮਲ ਕਰੇ ਆਰ ਯਹ ਇਸਤਿਧਾਰਾਤ ਡਿਸਟ੍ਰਿਕਟ ਜਜ ਦੇ ਹਵਾਲੇ ਕੀਧੇ ਜਾਏ। ਸਟੇਟ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਕੋ ਯਹ ਇਸਤਿਧਾਰਾਤ ਅਪਨੇ ਪਾਸ ਨਹੀਂ ਰਖਨੇ ਚਾਹਿਧੇ ਤਾਕਿ ਕਿਸੀ ਕੋ ਉਸ ਦੇ ਖਿਲਾਫ ਕਹਨੇ ਦਾ ਸੌਕਾ ਨ ਮਿਲੇ। ਮੈਂ ਨਹੀਂ ਸਮਝਤਾ ਕਿ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਯਹ ਇਸਤਿਧਾਰਾਤ ਅਪਨੇ ਹਾਥ ਮੈਂ ਲੇ ਕਰ ਕੀਧੇ ਬਦਨਾਮ ਹੋਨਾ ਚਾਹੁੰਦੀ ਹੈ।

ਪੰਡਿਤ ਆਰੀ ਰਾਮ ਸ਼ਰਮਾ (ਸੋਨੀਪਤ) : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਯਹ ਬਿਲ ਜੋ ਪਹਲੇ ਕਾਨੂਨ ਮੈਂ ਟਰਮੀਨ ਕਰਤਾ ਹੈ ਏਕ ਖਾਸ ਅਹਮੀਧਤ ਦਾ ਬਿਲ ਹੈ। ਬਾਤ ਯਹ ਹੈ ਕਿ ਜਬ ਲਡਾਈ ਦਾ ਜ਼ਮਾਨਾ ਥਾ ਤੋ ਅੰਗਰੇਜ਼ਾਂ ਕੋ ਇਸ ਬਾਤ ਕੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਪੜੀ ਕਿ ਅਪਨੇ ਦਫਤਰਾਂ ਦੇ ਲਿਧੇ ਆਰ ਕਾਰਖਾਨਾਂ ਦੇ ਲਿਧੇ ਜਗਹ requisition ਕੀ ਜਾਏ। ਹਮੇਂ ਯਹ ਖ਼ਿਆਲ ਥਾ ਕਿ ਯਹ ਕਾਨੂਨ ਸਿਰਫ emergency

के वक्त इस्तेमाल में लाया जायेगा लेकिन यह कानून पास कर के गवर्नमेंट को मज्जा आया और जो कानून पहले लड़ाई या emergency के वक्त इस्तेमाल होता था उसको रोजमर्रा के इस्तेमाल में लाने के लिये आज जरूरत महसूस हो रही है। आज जो तरमीम सरकार इस कानून में करने लगी है उस से पता चलता है कि सरकार अंग्रेजों की तरह वही कानून बना रही है जो जंग के वक्त या किसी खास emergency के वक्त बनाया जाता था। इस का अमल इस तरह से होता है कि जब गवर्नमेंट को अपने दफ्तरों या किसी और काम के लिये मकान या जमीन की जरूरत पड़ती है तो उन के मालिकों को नोटिस दे कर उन जगहों को requisition कर लिया जाता है। पेश्तर इस के कि मालिक यह कहें कि यूँ न किया जाये सरकार उन की जायेदादों पर कब्जा कर लेती है। इस मौजूदा कानून में जो तरमीम की जा रही है उस के मुतअल्लिक स्पीकर साहिब में यह कहूँगा कि यह कानून एक भारी Scandal की शकल इस्तिवार कर चुका है। जिस डंग से इस कानून का इस्तेमाल किया जाता है उस से लोगों में काफी परेशानी पैदा हो चुकी है। इस के मुतअल्लिक गवर्नमेंट के पास बेहद शिकायतें पहुंची हैं और इन शिकायतों को कम करने के लिये माननीय मुख्य मंत्री और मिनिस्टर इन्चार्ज के दिल में ख्याल आया कि लोगों के लिये कुछ आसानी कर दें। इस कानून को पास करते वक्त गवर्नमेंट ने इस पर गौर करने की कोशिश नहीं की। अगर लोगों को शिकायत न होती, कोई तकलीफ न होती तो आज यह तरमीमी बिल लोगों को सहूलियत देने के लिये पेश करने की जरूरत ही नहीं थी। इस से साफ जाहिर है कि गवर्नमेंट महसूस करती है कि पिछले कानून से लोगों को बहुत तकलीफ और परेशानी हो रही है। अब गवर्नमेंट को ख्याल आया है कि यह तरमीम की जाये। अगर कोई फायदा इस तरमीम से हो जाने वाला हो तो खुशी की बात है और मैं ऐसी हालत में इस बिल की हिमायत करूँगा। लेकिन मैं समझता हूँ कि इस कानून की तह में scandal और अंधेरगद्दी मौजूद है और मैं कहूँगा कि इस तरमीम के बावजूद रत्ती भर भी फर्क नहीं पड़ेगा। अगर हजारवाँ हिस्सा फर्क पड़ भी गया तो गवर्नमेंट कितनी भी भली बनना चाहे और लोगों को यकीन दिलाने की कोशिश करे कि इस कानून में तरमीम कर के लोगों की तकलीफों को दूर कर रहे हैं लेकिन मैं समझता हूँ कि पंजाब के लोगों को अफसूस खिलाने से थोड़ी देर नशे में रख कर खुश नहीं किया जा सकता। शिकायत यह है कि अफसरान जब चाहते हैं जैसा चाहते हैं सरकारी दफ्तरों के लिये मुलाजिमों के लिये या और कोई सरकारी काम के बहाने लोगों के मकान छीन लेते हैं। उन को किराया देना तो दरकिनार उन के मकान derequisition नहीं किये जाते और वह बेचारे चीखो पुकार करते रहते हैं। उन की ऐसी तकलीफें मेरे नोटिस में आई हैं और मैं उन्हें गाहे बगाहे अफसरान के नोटिस में लाता रहता हूँ। (अध्यक्ष महोदय की घंटी की आवाज सुन कर) मैं गुजारिश करना चाहता हूँ कि अगर घंटी बजाने का यह मतलब है कि मैं बैठ जाऊँ तो मैं कहूँगा कि बिल पर गौर महदूद वक्त के लिये बोलने का हर एक मੈम्बर का unfettered right है और वह तब तक बोल सकता है जब तक कि वह irrelevant न हो। मुझे Rules of Procedure इजाजत देते हैं कि जब तक मैं सही तरीके से बोलता जाऊँ मुझे बिठाने

[पंडित श्री राम शर्मा]

की आप को जरूरत नहीं है। अगर कोई ऐसा कायदा है जिस की बिना पर मुझे दस बीस मिनट के बाद रोका जा सकता है और मुझे ऐसी बात महसूस हो कि मैं एक handicap के नीचे बोल रहा हूँ तो मैं इस बिल पर और ज्यादा बोलूंगा। मैं जानता हूँ कि resolution पर बोलते हुए या adjournment motion पर बोलते हुए time limit मुररर की जा सकती है लेकिन जहाँ तक बिलों पर बोलने का ताल्लुक है मैं समझता हूँ कि हर मੈम्बर का यह unfettered right है कि वह जितना चाहें बोल सकता है। अलबत्ता स्पीकर साहिब जब चाहें irrelevancy या repetition की बिना पर मੈम्बर को रोक सकते हैं। मैं यह बात बड़े अदब से कहता हूँ।

अध्यक्ष महोदय : माननीय मੈम्बर ने कहा है कि मੈम्बर का unfettered right है कि वह जितना चाहें बिल पर बोल सकते हैं लेकिन मैं अर्ज करूंगा कि वह repetition न करें क्योंकि मुझे हाऊस के वक्त का पूरा पूरा ख्याल है।

पंडित श्री राम शर्मा : स्पीकर साहिब, अगर वक्त जाया हो तो आप कह सकते हैं, परन्तु अगर बड़े बड़े कानूनों के बारे में मुख्यमंत्री साहिब और हमारी सरकार यह ख्याल ले कर यहां आ जाए कि उन को एक दम पास करा लेंगे तो यह पंजाब के लोगों के साथ एक धोखा होगा।

इसमें शक नहीं कि यह बिल छोटा है। परन्तु इस के द्वारा उस ऐक्ट को amend किया जा रहा है जो scandalous बन चुका है और जिस की बिना पर लोगों के मकान और जायदादें सरकारी अफसर बिला वजह छीन लेते हैं जिस का उन लोगों के पास कोई इलाज नहीं। इस लिये मैं कहता हूँ कि ऐसी तरमीम लाई जाए जिस से लोगों को कुछ relief मिले। यह मामला बहुत अहिम है। अगर इस बारे में लोगों को relief मिले तो वह आप को दुआएं देंगे और यह ईवान भी अपना फर्ज पूरा करेगा। आप, श्रीमान् जी, जानते हैं कि लोग सरकार के कानूनों पर हंसते हैं। हमारे यहां यह रिवाज बन गया है कि जो भी कानून पास होता है, उस की थोड़ी देर बाद तीन तीन और चार चार तरमीमें आ जाती हैं। लोग हंसते हैं कि हमारे legislator कानून पास करने में जल्दबाजी में काम लेते हैं। इस लिये मैं चाहता हूँ कि इस बिल की अहमियत का अंदाजा लगाते हुए जो इस सम्बन्ध में relevant बातें कही जाएं आप उन्हें कहने की इजाजत दें। और इस बात की परवाह न करें कि जो बात किसी वजीर साहिब के दिल में आई है उसी के मुताबिक काम हो।

दूसरे मैं आप से यह अर्ज करना चाहता हूँ कि जब तक किसी मिनिस्टर को कोई अहिम काम न हो उन को अपने महकमे के बारे में किसी बिल पर बहस के वक्त यहां मौजूद होना चाहिये। शराफत का तकाजा है कि जो वजीर उस महकमे का incharge है वह यहां मौजूद हो। इसी वजह से श्री विट्ठल भाई पटेल ने एक बार Commander in-Chief से पुत्राको मांगने के लिये कहा था क्योंकि वह उस वक्त हाऊस से बाहर चले गए थे जब उन के महकमे पर बहस हो रही थी।

अध्यक्ष महोदय : कृपा कर के बिल पर बोलिये।

पंडित श्री राम शर्मा : मैं श्रीमान् जी, कह रहा था कि यह तरमीम क्या है। मैं on principle इस की मुखालफत करता हूँ। एक तरफ तो यह डोल पीटा जा रहा है कि हम executive को judiciary से जुदा कर रहे हैं और हम सरकारी अफसरों को अदालती नौइयत के इस्तियार नहीं देना चाहते। दूसरी तरफ इस किस्म के तरमीमी बिल लाए जाते हैं। अगर किसी आदमी का मकान requisition कर लिया जाए तो ऐक्ट के अधीन उस की न अपील होती है न कोई और सुनवाई। अब कहा जाता है कि क्योंकि बाकायदा तरीके से अपील नहीं हो सकती है इस लिये आप को अपील का मौका देते हैं। अब कहा जाता है कि अगर कोई मकान requisition हो जाए तो दो साल तक उस की कोई अपील नहीं हो सकती। दो साल के बाद फिर वह आदमी competent अफसर के पास जा सकता है और गालबन वह competent अफसर वही होगा जिस ने वह मकान requisition किया था। यह कहा जात है कि दो साल के बाद वही अफसर तुम्हारी बात सुनेगा। और अगर वह न सुने तो फिर तुम गवर्नमेंट के पास आ सकते हो। गवर्नमेंट का क्या मतलब है? चीफ मिनिस्टर : उन के पास पहले ही इतने महकमे हैं कि वह law and order के इलावा किसी में दिलचस्पी नहीं ले सकते। दिन बसो लेना तो दरकिनार उन्हें तो महकमों को देखने की फुरसत ही नहीं होती है। मुझे भी खुशकिसमती से या बदकिसमती से एक ऐसे महकमे का charge मिला जिस के incharge Chief Minister हुआ करते थे। मैंने देखा कि कई जेलों का पचास पचास सालों से किसी चीफ मिनिस्टर ने inspection नहीं किया था। जो महकमे चीफ मिनिस्टर के पास हैं, उन के बारे में किसी को अपनी शिकायत सुनाने के लिये उन तक रसाई नहीं होती। यह काम मातेहत अफसर ही करते हैं। यह मामला भी ऐसा है। अगर दो साल के बाद नीचे के अफसरों से कोई अपील नामनजूर हो जाए तो वह फिर चीफ मिनिस्टर के पास आएगी।

आजकल जो होता है वह सरकारी पार्टी के दो मैम्बरों ने बयान कर दिया है। वह सदस्य पार्टी के discipline को तो मानते हैं मगर ख्यालात के इजहार की आज्ञा दी उन्हें कुछ रास आ गई है। उन्होंने बताया है कि सरकार ने एक जमीन requisition की और बाद में उस को भारी कीमत ले कर बेच दिया। राम्रो गजराज सिंह और कामरेड रामकिशन ने आज जो administration का खाका खेंचा है वह ठीक है। उन्होंने बताया है कि किस तरह से मकान requisition किये जाते हैं। उन की मुरम्मत और किराया तो दरकिनार उन के मालकों को छोटी छोटी सहूलियतें भी नहीं दी जाती हैं। दूसरी तरफ आबादी के करीब की जमीनें ले कर सरकार खुद ब्लैक मारकीट करती है। अब तक यह होता रहा है कि जो भी वजीर जाता है उस के सामने दरखास्तों वाले खड़े हो जाते हैं। अब यह प्रबन्ध कर दिया गया है कि दो साल के बाद उसी अफसर के पास जाओ जिस ने तुम्हारा मकान requisition कर तुम्हारा बेड़ा तबाह किया है, अगर वह वजीरों के पास आएंगे, तो उन्हें उन की बातें सुनने की फुरसत नहीं होगी। अपीलों के मुतअल्लिक

[पंडित श्री राम शर्मा]

काम उन के मातहत दर मातहत अफसर करेंगे और वही फैसला करेंगे। मैंने अपने जिले में सुना कि एक महकमे का वजीर एक छोटे दर्जे के एक अफसर के घर उसे मिलने गया। और वहां बरामदे में दस मिनट तक उसे इंतजार करना पड़ा। फिर उस अफसर के चपड़ासी ने कह दिया कि वह खाना खा रहे हैं हालांकि वह खाना नहीं खा रहा था।

अध्यक्ष महोदय : जो बहस हो रही है उस का बिल से क्या सम्बन्ध है ?

पंडित श्री राम शर्मा : इस बिल के पास होने के बाद जो अमली तौर पर होना है उस का थोड़ा सा खाका सरकारी पार्टी के सदस्यों ने खेंच कर दिखाया है। गुड़गांव के लोगों ने एक सराए बनवाई परन्तु एक महकमे ने उसे requisition कर लिया और उस में अफसर बैठ गए। अब वह लोग और trustee कुछ नहीं कर सकते हैं।

मैं यह कहता हूँ कि इस बिल के पास हो जाने से क्या फर्क पड़ जायगा। आज भी इस मामले में उन्हें पूरे इस्तिथारात हासिल है। वह चाहें तो आज भी requisitioned मकानों को छोड़ सकते हैं मगर वह ऐसा नहीं कर रहे। अब कहते हैं कि इस बिल के पास हो जाने के बाद उन के पास बाकायदा अपीलें आयेंगी। मैं कहता हूँ कि उन के पास बाकायदा अपीलें सुनने के लिये वक्त ही नहीं होगा। कोई भी वजीर ऐसे माहौल में नहीं रहता कि वह नीचे से आई हुई किसी चीज में कोई तबदीली कर सके। with the best of intentions, कोई, वजीर उस माहौल से नहीं निकल सकता।

जायदाद के requisition या derequisition करने का मामला इस नोईयत का है कि इस का फैसला अदालतों को करना चाहिये। Requisitioned जायदाद काफ़ी वजुहत दे कर छुड़ाई जा सकती है। ऐसे मामलों में अपीलें किसी न किसी तरीके से judicial officers या जजों के पास जरूर जानी चाहियें ताकि वह उन executive orders का जिन के मातेहत जायदाद को requisition किया गया है judicial, dispassionate और Independent तरीके से review कर सकें और देख सकें कि सरकार को किसी दफ्तर या किसी अफसर के लिये इतनी जगह की जरूरत थी या नहीं जितनी कि किसी case में requisition की गई है। गवर्नमेंट के पास अपीलें आयेंगी तो पोजीशन वही की वही रहेगी। गवर्नमेंट को अपीलें सुनने के रास्ते में अब भी कोई रुकावट नहीं है।

अध्यक्ष महोदय : मैं आपके हकूक की इज्जत करता हूँ मगर repetition करने और गैर-जरूरी बातें कहने की इजाजत नहीं दे सकता।

पंडित श्री राम शर्मा : मैं आप को यकीन दिलाता हूँ कि मैं बिल्कुल repetition नहीं करूंगा।

मेरा इस बिल में की गई provisions से असूली मतभेद है। मैं नहीं चाहता कि अपीलों का फैसला executive तौर पर गवर्नमेंट करे। अगर अपीलों के पास जजों के पास जायें तो लोगों को इन्साफ़ मिल सकता है वरना नहीं। हम देखते हैं कि जब पार्टी गवर्नमेंट कायम हो तो लोगों को अगर नीचे इन्साफ़ नहीं मिलता तो

ਭਾਗ ਮੀ ਨਹੀਂ ਸਿਫਤਾ । ਅਸਲੀ ਤੀਰ ਪਰ ਇਸ ਮਾਮਲਾ ਮੈਂ ਕਾਫ਼ੀ ਖਰਾਬੀਆਂ ਪਾਏ ਜਾਣੀ ਹਨ । ਅਗਰ
ਵਯਾਤਰ ਕੀ ਇਨ ਖਰਾਬੀਆਂ ਕੀ ਫ਼ਰਕਰਨਾ ਹੈ ਤੇ ਉਸ ਅਧੀਨ ਕੀ ਸੁਨੇ ਕਾ ਅਧਿਕਾਰ judicial
authorities ਕੀ ਫ਼ਰੇ ਪਰ ਏਤਰਾਜ਼ ਨਹੀਂ ਹੋਨਾ ਚਾਹੀਏ ।

Chief Parliamentary Secretary: Sir, I beg to move—

That the question be now put.

Mr. Speaker: Question is—

That the question be now put.

After ascertaining the votes of the House by voice Mr. Speaker said "I think the Ayes have it." This opinion was challenged and division was claimed. Mr. Speaker after calling upon those Members who challenged the decision and supported the claim for a division to rise in their places declared that the division was unnecessarily claimed.

The motion was declared carried.

ਅਰਥ ਮੰਤ੍ਰੀ (ਸਰਦਾਰ ਉੱਜਲ ਸਿੰਘ) : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਇਸ ਛੋਟੇ ਜਿਹੇ ਬਿਲ
ਉਪਰ ਜਹੜੀਆਂ ਲੰਮੀਆਂ ਚੌੜੀਆਂ ਤਕਰੀਰਾਂ ਹੋਈਆਂ ਹਨ, ਮੈਂ ਸਮਝਦਾ ਹਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਬਿਲਕੁਲ
ਹੋਈ ਲੋੜ ਨਹੀਂ ਸੀ । ਇਨ੍ਹਾਂ ਤਕਰੀਰਾਂ ਵਿਚ ਇਸ ਤਰਮੀਮੀ ਬਿਲ ਸੰਬੰਧੀ ਤਾਂ ਕੋਈ
ਗਲ ਨਹੀਂ ਕਹੀ ਗਈ, ਕੇਵਲ ਉਨ੍ਹਾਂ ਸ਼ਿਕਾਇਤਾਂ ਦਾ ਹੀ ਸ਼ਿਕਰ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ ਜਿਹੜੀਆਂ
ਮੌਜੂਦਾ ਕਾਨੂੰਨ ਸੰਬੰਧੀ ਕੁਝ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਹਨ ।

ਧੰਡਿਤ ਆਰਾਮ ਸ਼ਰਮਾ : ਮੈਂ ਨੇ ਕਹਾ ਹੈ ਕਿ ਧਰ ਬਿਲ ineffective ਹੈ ।

ਅਰਥ ਮੰਤ੍ਰੀ : ਮੇਰੇ ਮਿਤਰ ਨੇ ਤਾਂ ਸਾਰਾ ਵਕਤ ਮੌਜੂਦਾ ਕਾਨੂੰਨ ਦੀ ਜਿਸ ਤਰੀਕੇ ਤੇ
ਵਰਤੋਂ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ, ਉਹੀ ਦਸਣ ਵਿਚ ਲਾ ਦਿਤਾ ਸੀ । ਉਨ੍ਹਾਂ ਤੇ ਹੋਰ ਮੈਂਬਰਾਂ ਨੇ ਇਹੋ
ਹੀ ਦਸਿਆ ਹੈ ਕਿ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਐਸ ਵੇਲੇ ਕੀ ਤਕਲੀਫ਼ ਹਨ । ਇਹ ਕਿਸੇ ਨਹੀਂ ਦਸਿਆ ਕਿ
ਇਸ ਤਰਮੀਮੀ ਬਿਲ ਵਿਚ ਕੀ ਨੁਕਸ ਹਨ ।

ਮੈਂ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਦਸ ਦੇਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਕੋਈ ਜਾਇਦਾਦ ਉਸ ਵੇਲੇ ਤਾਈਂ
requisition ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਜਦ ਤਕ ਉਹਦੀ ਕਿਸੇ public purpose ਲਈ
ਲੈਣ ਦੀ ਲੋੜ ਨਾ ਪਵੇ । ਜੇ ਕੋਈ ਮਕਾਨ ਸਰਕਾਰ ਆਪਣੇ ਕਣਕ ਵਿਚ ਲੈਂਦੀ ਹੈ ਤਾਂ
ਆਮ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਲੋੜ ਨੂੰ ਪੂਰਾ ਕਰਨ ਲਈ ਲੈਂਦੀ ਹੈ ।

ਮੇਰੇ ਦੋਸਤਾਂ ਨੇ ਪੁੱਛਿਆ ਹੈ ਕਿ ਲੜਾਈ ਵੇਲੇ ਤਾਂ ਇਸ ਕਾਨੂੰਨ ਦੀ ਲੋੜ ਸੀ, ਹੁਣ
ਕੀਹ ਲੋੜ ਹੈ । ਮੈਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਕੀ ਦਸਾਂ । ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਪਤਾ ਹੀ ਹੈ ਕਿ
ਵੰਡਾਰੇ ਤੋਂ ਪਿਛੋਂ ਸਭੇ ਕੋਲ ਨਾ ਦਫਤਰਾਂ ਲਈ ਥਾਂ ਸੀ ਤੇ ਨਾਂ ਹੀ public servants
ਦੇ ਰਹਿਣ ਲਈ । ਨਵੀਂ ਰਾਜਧਾਨੀ ਇਥੇ ਬਣ ਰਹੀ ਹੈ ਪਰ ਹਾਲੀ ਵੀ ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਦਫਤਰ
ਹੋਰ ਥਾਵਾਂ ਤੇ ਚਲ ਰਹੇ ਹਨ । ਮਕਾਨਾਂ ਦੀ ਹਾਲੇ ਵੀ ਬੜੀ ਸਖਤ ਕਿੱਲਤ ਹੈ । ਮੈਂ ਸਭਾ ਨੂੰ
ਯਕੀਨ ਦਿਵਾਉਂਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਇਹ ਕਾਨੂੰਨ public purpose ਲਈ ਹੀ ਵਰਤਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ,
ਹੋਰ ਕਿਸੇ ਮਤਲਬ ਲਈ ਨਹੀਂ ।

[ਅਰਥ ਮੰਤ੍ਰੀ]

ਫਿਰ ਨਹਿਰਾਂ ਬਣਾਉਣ ਲਈ ਜ਼ਮੀਨਾਂ ਲੈਣ ਦੀ ਲੋੜ ਪੈਂਦੀ ਹੈ। ਉਹ ਵੀ ਇਸ ਕਾਨੂੰਨ ਰਾਹੀਂ ਲਈਆਂ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ ਤਾਂ ਜੋ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਕਿਸਾਨਾਂ ਨੂੰ ਪਾਣੀ ਮਿਲੇ ਤੇ ਉਹ ਖੁਸ਼ਹਾਲ ਹੋਣ।

ਜੇਕਰ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਅਜੇ ਤਕ ਮੁਆਵਜ਼ਾ ਨਹੀਂ ਮਿਲਿਆ ਤਾਂ ਸਰਕਾਰ ਵੇਖੇਗੀ ਕਿ ਕੀ ਗਲ ਹੈ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਅਜੇ ਤਕ ਮੁਆਵਜ਼ਾ ਨਹੀਂ ਦਿਤਾ ਗਿਆ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਮੁਆਵਜ਼ਾ ਦਿਵਾਇਆ ਜਾਵੇਗਾ। ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ, ਫਿਰ ਇਹ ਕਿਹਾ ਗਿਆ ਹੈ ਕਿ ਮਕਾਨਾਂ ਦੀ requisition ਕਰਨ ਵਿਚ ਬਹੁਤ ਸਾਰੀਆਂ ਬੇਕਾਇਦਗੀਆਂ ਹੋਈਆਂ ਹਨ। ਅਸੀਂ ਇਹ ਤਰਮੀਮੀ ਬਿਲ ਇਸੇ ਖਾਤਿਰ ਲਿਆਏ ਹਾਂ ਕਿ ਜੇਕਰ ਕਿਸੇ ਆਦਮੀ ਨੂੰ ਪਹਿਲੇ ਅਰਜ਼ੀ ਦੇਣ ਦਾ ਮੌਕਾ ਨਹੀਂ ਮਿਲ ਸਕਿਆ ਤਾਂ ਉਹ ਹੁਣ ਦੇ ਦਵੇ ਤਾਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਬੇਕਾਇਦਗੀਆਂ ਨੂੰ ਦੂਰ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕੇ।

ਮੇਰੇ ਦੋਸਤ ਸੋਨੀ ਸਾਹਿਬ ਅਤੇ ਕਾਮਰੇਡ ਰਾਮ ਕਿਸ਼ਨ ਨੇ ਕਿਹਾ ਹੈ ਕਿ ਕਈ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਮਕਾਨ requisition ਹੋਇਆਂ ਨੂੰ ਪੰਜ ਪੰਜ ਅਤੇ ਸਤ ਸਤ ਸਾਲ ਹੋ ਚੁਕੇ ਹਨ। ਜੇਕਰ ਇਹ ਗਲ ਹੈ ਤਾਂ ਉਹ ਲੋਕ ਤੇ ਫੋਰਨ ਹੀ ਦਰਖਾਸਤ ਦੇ ਸਕਦੇ ਹਨ। ਮੈਨੂੰ ਸਮਝ ਨਹੀਂ ਆਈ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਇਸ ਦਲੀਲ ਵਿਚ ਕੀ ਵਜ਼ਨ ਹੈ? ਜੇਕਰ ਦੋ ਸਾਲ ਦਾ ਅਰਸਾ ਬੀਤ ਚੁਕਾ ਹੈ ਤਾਂ ਮਾਲਕ ਮਕਾਨ ਆਪਣੇ ਮਕਾਨ ਨੂੰ derequisition ਕਰਾਉਣ ਲਈ ਦਰਖਾਸਤ ਦੇ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤਰਮੀਮੀ ਬਿਲ ਦਾ ਇਹੋ ਮਤਲਬ ਹੈ ਕਿ ਜੇਕਰ ਉਸ ਵਕਤ ਖਾਸ ਹਾਲਾਤ ਦੇ ਮਾਤਹਿਤ ਮਾਲਕ ਮਕਾਨ ਦਰਖਾਸਤ ਨਹੀਂ ਦੇ ਸਕਿਆ ਤਾਂ ਉਹ ਹੁਣ ਦੇ ਦਵੇ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਉਸਦੀ ਤਕਲੀਫ਼ ਦੂਰ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਜਿੰਨ੍ਹਾਂ ਭਰਾਵਾਂ ਨੇ ਇਹ ਕਿਹਾ ਹੈ ਕਿ ਲੋਕ ਇਸ ਡਰ ਨਾਲ ਨਵੇਂ ਮਕਾਨ ਨਹੀਂ ਬਣਾ ਰਹੇ ਕਿ requisition ਨਾ ਹੋ ਜਾਣ ਮੇਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਕੋਲੋਂ ਪੁਛਨਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਕਿਨੇ ਨਵੇਂ ਮਕਾਨ requisition ਕੀਤੇ ਗਏ ਹਨ, ਇਹ ਸਾਡੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਨਵੀਂ ਪਾਲਿਸੀ ਬਣਾਈ ਹੈ ਕਿ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਨਵੇਂ ਮਕਾਨ ਨਾ requisition ਕੀਤੇ ਜਾਣ ਤਾਕਿ ਲੋਕ ਨਵੇਂ ਮਕਾਨ ਬਣਾਉਣ ਅਤੇ ਮਕਾਨਾਂ ਦੀ ਕਿੱਲਤ ਸਟੇਟ ਵਿਚੋਂ ਦੂਰ ਹੋਵੇ।

ਫਿਰ ਮੇਰੇ ਦੋਸਤਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਹੈ ਕਿ appeal ਦੀ provision ਦਾ ਕੀ ਫਾਇਦਾ ਹੋਵੇਗਾ? ਇਸ ਦੇ ਬੜੇ ਫਾਇਦੇ ਹਨ। ਇਕ ਤਾਂ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਮਾਲਕ ਮਕਾਨ ਦੋ ਸਾਲ ਦੇ ਬਾਅਦ ਅਤੇ ਕਈ ਹਾਲਤਾਂ ਵਿਚ ਦੋ ਸਾਲ ਦੀ ਮਿਆਦ ਤੋਂ ਪਹਿਲੋਂ ਵੀ ਆਪਣੇ ਮਕਾਨ ਨੂੰ derequisition ਕਰਵਾਉਣ ਲਈ ਦਰਖਾਸਤ ਦੇ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਦੂਸਰੀ ਗਲ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਜੇ ਕਰ ਫੈਸਲਾ ਉਸ ਦੇ ਬਰਖਲਾਫ਼ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਉਹ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਨੂੰ 21 ਦਿਨ ਦੇ ਅੰਦਰ appeal ਵੀ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਫਿਰ ਇਤਰਜ਼ਾ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ ਕਿ ਅਪੀਲ ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਕਰਨ ਦਾ ਇਖਤਿਆਰ ਕਿਸੇ judicial authority ਦੇ ਹੱਥ ਵਿਚ ਕਿਉਂ ਨਹੀਂ ਰਖਿਆ ਗਿਆ। ਪੰਡਤ ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਸ਼ਰਮਾ ਜੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਹੈ ਕਿ ਵਜ਼ੀਰਾਂ ਨੂੰ ਆਪ ਤੇ ਫ਼ਰਜ਼ਤ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ। ਇਨ੍ਹਾਂ appeals ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ Secretary ਜਾਂ ਕੋਈ ਕਲਰਕ ਕਰਣਗੇ।

ਪੰਡਿਤ ਐਚ. ਰਾਮ ਸ਼ਰਮਾ : ਸੈਂ ਨੇ ਤੋ ਕਹਾ ਥਾ ਕਿ ਸੁਫ਼ਤ ਸਾਨ੍ਹੀ ਕੀ ਸਮਧ ਨਹੀਂ ਮਿਲਤਾ।

ਅਰਥ ਮੰਤ੍ਰੀ : ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਮੁੱਖ ਮੰਤ੍ਰੀ ਦਾ ਤਜਰਬਾ ਤਾਂ ਨਹੀਂ ਹੋਇਆ ਅਲਬੱਤਾ ਵਜ਼ੀਰ ਬਣਣ ਦਾ ਮੌਕਾ ਜ਼ਰੂਰ ਮਿਲਿਆ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਆਪ ਕੋਈ ਗਲਤ ਫੈਸਲਾ ਕੀਤਾ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਪਤਾ ਹੋਵੇਗਾ। ਵਜ਼ੀਰ ਤਾਂ ਹਰ ਇਕ ਕੇਸ ਦੀ ਬੜੀ ਛਾਨ ਬੀਨ ਕਰਦੇ

ਹਨ। ਉਸ ਤੋਂ ਪਹਿਲੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ Secretary ਕੋਸ ਨੂੰ ਵੇਖਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਬੜੇ ਗੌਰ ਖੈਸ਼ ਦੇ ਬਾਅਦ ਹਰ ਇਕ ਗਲ ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਮੁਖ ਮੰਤਰੀ ਤਾਂ ਹੋਰ ਵੀ ਜ਼ਿਆਦਾ ਖਿਆਲ ਰਖਦੇ ਹਨ। ਪਹਿਲੇ file ਨੂੰ ਕਲਰਕ ਵੇਖਦਾ ਹੈ ਫਿਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ Secretary ਜਿਹੜਾ ਕਿ ਤਜਰਬਾਕਾਰ ਅਫ਼ਸਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਬਾਅਦ ਵਿਚ ਉਹ ਖੁਦ ਵੇਖਦੇ ਹਨ।
(interruption) I do not give way, ਮੇਰਾ ਮਤਲਬ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਜਿਹੜਾ ਖਦੜਾ ਅਪਣੇ ਤਜਰਬੇ ਤੋਂ ਪੈਦਾ ਹੋਇਆ ਹੈ ਉਹ ਨਹੀਂ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ। ਅਜਿਹੀਆਂ ਗਲਾਂ ਬਿਲਕੁਲ ਨਹੀਂ ਹੋਣਗੀਆਂ ਅਤੇ ਹਰ ਮਾਮਲੇ ਵਿਚ ਇਨਸਾਫ਼ ਹੋਵੇਗਾ। ਇਹ ਬਿਲ ਲੋਕ ਹਿਤ ਲਈ ਹੈ ਅਤੇ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਭਲਾਈ ਲਈ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਤਕਲੀਫ਼ਾਂ ਨੂੰ ਦੂਰ ਕਰਨ ਲਈ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਮੈਂ ਅਤਿ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਇਸ ਨੂੰ ਬਿਨਾਂ ਕਿਸੇ ਹੀਤ ਹੁਜ਼ਤ ਦੇ ਪਾਸ ਕਰ ਦਿਤਾ ਜਾਵੇ।

Mr. Speaker : Question is—

That the Punjab Requisitioning and Acquisition of Immovable Property (Amendment) Bill be taken into consideration at once.

The motion was carried.

Mr. Speaker : Now the House will proceed to consider the Bill clause by clause.

CLAUSE 2

Mr. Speaker : Question is—

That Clause 2 stand part of the Bill.

The motion was carried

CLAUSE 3

ਅਧਿਕਾਰ ਸ਼ਹੀਦਯ : ਸਰਦਾਰ ਸਰੂਪ ਸਿੰਘ ਦੀ amendment ਸੁਝਾਵਕਤ ਪਰ ਨਹੀਂ ਜਿਲੀ। ਇਸ ਲਿਖੇ ਕੇ ਉਸ ਪਰ ਇਸ ਸਮਧ ਤਕਰੀਰ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦੇ ਐਰ ਉਨ ਦੀ amendment admit ਨਹੀਂ ਕੀ ਜਾ ਸਕਦੀ।

ਪੰਡਿਤ ਆਰਾਧ ਸ਼ਰਮਾ : On a point of order, Sir. ਧਹ ਠੀਕ ਹੈ ਕਿ amendment ਉਚਿਤ ਸਮਧ ਪਰ ਦੀ ਜਾਨੀ ਚਾਹਿਯੇ। ਲੇਕਿਨ ਆਪ ਕੋ ਇਲਤਿਯਾਰ ਹੈ ਕਿ ਆਪ ਕੋਈ amendment ਕਿਸੀ ਕਕਤ ਪਰ ਆੀ admit ਕਰ ਸਕਦੇ ਹੈ।

Mr. Speaker : Very well, I use my discretion in his favour.

Sardar Sarup Singh may move his amendmant.

Sardar Sarup Singh (Amritsar City, East): Sir, I beg to move that—

In the proposed Section 10 A (1), lines 4-8, for "within twenty one days... State Government" substitute "within thirty days from the date of service of the order, prefer an appeal to the District Judge."

ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ। ਪਹਿਲਾਂ ਤਾਂ ਮੈਂ ਆਪ ਜੀ ਨੂੰ ਨਵੇਂ ਉਹਦੇ ਦੀ ਵਧਾਈ ਦੇਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਅਤੇ ਮੈਂਨੂੰ ਉਮੀਦ ਹੈ ਕਿ ਤੁਸੀਂ ਇਸ ਨੂੰ ਕਾਮਯਾਬੀ ਨਾਲ ਸੰਭਾਲ ਸਕੋਗੇ। ਇਸ ਦੇ ਬਾਅਦ ਮੈਂ ਇਹ ਅਰਜ਼ ਕਰਨੀ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਇਸ ਤਰਜੀਹੀ ਬਿਲ ਵਿਚ ਲਿਖਿਆ ਹੋਇਆ ਹੈ ਕਿ ਛੇਤਰ ਮਾਤਰੇ ਮਕਾਨ ਦੀ ਅਰਜ਼ੀ reject ਹੋ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਉਹ ਉਸ ਦੀ appeal ਗਵਰਨਮੈਂਟ

[ਸਰਦਾਰ ਸਰੂਪ ਸਿੰਘ]

ਕੋਲ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਮੇਰੀ ਅਰਜ਼ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਉਸ ਦੀ ਅਪੀਲ ਦੀ ਮਿਆਦ 21 ਦਿਨ ਦੀ ਬਜਾਏ 30 ਦਿਨ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। Competent Authority ਦੇ ਬਾਅਦ ਉਸਦੀ ਅਪੀਲ District Judge ਕੋਲ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਨਹੀਂ ਤੇ ਇਸ ਬਿਨ ਨਾਤ ਲੋਕਾਂ ਦਾ ਕੋਈ ਭਲਾ ਨਹੀਂ ਹੋਣ ਲਗਾ। ਇਸ ਦੀ ਵਜ੍ਹਾ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਸੂਬੇ ਵਿਚ ਮਕਾਨਾਂ ਦੀ ਕਿਲੱਤ ਹੋ ਅਤੇ ਇਸ ਕਰਕੇ Competent Authority ਕਦੇ ਵੀ ਇਹ ਗਲ ਨਹੀਂ ਕਰਨ ਲਗੀ ਕਿ ਮਕਾਨ derequisition ਕਰ ਦੇਵੇ। Competent authority ਦੀ definition Section 2 (b) ਵਿਚ ਇਉਂ ਦਿਤੀ ਹੋਈ ਹੈ —

“Competent authority” means any person or authority, authorised by the State Government by a notification in the Official Gazette to perform the functions of the competent authority under this Act for such area as may be prescribed in the notification.

ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਇਹ Competent Authority ਆਮ ਤੌਰ ਤੇ ਜ਼ਿਲੇ ਦਾ ਆਲਾ ਹਾਕਮ—ਡਿਪਟੀ ਕਮਿਸ਼ਨਰ ਹੀ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਡਿਪਟੀ ਕਮਿਸ਼ਨਰ ਇਹ ਵੇਖਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਸ ਦੇ ਜ਼ਿਲੇ ਵਿਚ ਕੰਮ ਕਰ ਰਹੇ ਅਫਸਰਾਂ ਨੂੰ ਰਹਿਣ ਲਈ ਮਕਾਨਾਂ ਦੀ ਲੋੜ ਹੈ ਤਾਂ ਉਸ ਲਈ ਇਹ ਮਜਬੂਰੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਕਿ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਮਕਾਨਾਂ ਨੂੰ requisition ਕਰ ਲਵੇ। ਜੇ ਉਹ ਮਜਬੂਰੀ ਉਸ ਦੇ ਸਾਹਮਣੇ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਕੋਈ ਵਜ੍ਹਾ ਨਹੀਂ ਕਿ ਭਾਵੇਂ derequisition ਬਾਰੇ ਕਿੰਨੀਆਂ ਵੀ ਦਰਖਾਸਤਾਂ ਕਿਉਂ ਨਾ ਆਈਆਂ ਹੋਣ, ਉਹ ਕੋਈ ਵੀ ਮਕਾਨ derequisition ਕਰ ਸਕੇ। ਇਸ ਲਈ ਮੈਂ ਸਮਝਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ competent authority ਨੂੰ ਚਾਹੇ ਦੋ ਸਾਲਾਂ ਬਾਅਦ ਦਰਖਾਸਤ ਦਿਤੀ ਜਾਵੇ ਚਾਹੇ ਇਕ ਸਾਲ ਬਾਅਦ ਉਸਦਾ ਕੋਈ practical effect ਨਹੀਂ ਹੋਵੇਗਾ।

ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ ! ਇਸ ਬਿਲ ਦੁਆਰਾ ਸਾਡੇ ਚੀਫ-ਮਿਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਨੇ owners of the property ਨੂੰ ਜਿਹੜਾ right ਦਿੱਤਾ ਹੈ ਉਹ ਸਿਰਫ ਇਤਨਾ ਹੀ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਇਕ application ਅਪਣੀ property ਨੂੰ ਸਰਕਾਰੀ ਕਬਜ਼ੇ ਤੋਂ ਛੁੜਾਉਣ ਲਈ ਹੋਰ ਦੇ ਦੇਣ। ਮੈਂ ਇਹ ਅਰਜ਼ ਕਰਨੀ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਇਸ ਸੂਬੇ ਵਿਚ ਰਹਿਣ ਵਾਲੇ ਮਕਾਨਾਂ ਦੇ ਮਾਲਿਕ ਸਿਰਫ applications ਦੇਣ ਦਾ right ਹੀ ਨਹੀਂ ਮੰਗਦੇ ਉਹ ਤਾਂ ਆਪਣੇ ਆਪਣੇ ਮਕਾਨ ਵਾਪਿਸ ਲੈਣਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਲਈ Competent Authority ਤੋਂ ਬਾਦ ਇਹ right of appeal ਸਟੇਟ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਦੇ ਪਾਸ ਹੋਵੇਗਾ ਤਾਂ ਮੈਂ ਯਕੀਨ ਨਾਲ ਇਹ ਕਹਿ ਸਕਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਉਸ ਦਾ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਕੋਈ ਫਾਇਦਾ ਨਹੀਂ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿਉਂਕਿ Competent Authority ਦੇ ਸਾਹਮਣੇ ਉਸ property ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਕਬਜ਼ੇ ਵਿਚ ਰਖਣ ਦੀ ਜਿਹੜੀ necessity ਹੈ ਕਿ ਮਕਾਨ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਦੇ ਅਫਸਰਾਂ ਲਈ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਉਸ ਦੇ ਹੁੰਦਿਆਂ ਹੋਇਆਂ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਵੀ ਉਸਨੂੰ derequisition ਕਰਨ ਦੇ ਆਰਡਰ ਦੇਣ ਲਈ ਕਦੀ ਤਿਆਰ ਨਹੀਂ ਹੋਵੇਗੀ। ਇਸ ਲਈ ਜੇ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਸਚ ਮੁਚ ਉਨ੍ਹਾਂ ਮਕਾਨਾਂ ਨੂੰ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਮਾਲਕਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਆਪ ਲਈ ਲੋੜ ਹੈ, derequisition ਦੀਆਂ facilities ਦੇਣਾ ਚਾਹੁੰਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਇਹ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ ਕਿ executive ਦੀ ਥਾਂ ਇਹ right of appeal ਡਿਸਟ੍ਰਿਕਟ ਜੱਜ ਨੂੰ ਦਿਤਾ ਜਾਵੇ। ਇਸ ਹਾਲਤ ਵਿਚ ਤਾਂ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਇਨਸਾਫ ਮਿਲਣ ਦੀ ਆਸ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਹਾਲਤ ਵਿਚ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਉਮੀਦ

ਜੇ ਸਕਦੀ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਉਸ property ਨੂੰ ਜਿਹੜੀ ਸਾਲਹਾ ਸੀਤ ਤੋਂ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਨੇ
ਆਪਣੇ ਕਬਜ਼ੇ ਵਿਚ ਰਖੀ ਹੋਈ ਹੈ ਛੁਡਾਉਣ ਲਈ ਕੋਈ relief ਮਿਲੇ। ਇਸ ਲਈ ਸਹੀ ਤੌਰ
ਪੁਰ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਫਾਰਿਦਾ ਤਾਂ ਹੀ ਹੋਵੇਗਾ ਜੇ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ requisition ਵੀਤ ਹੋਏ
ਮਕਾਨ ਵਾਪਸ ਕਰ ਦੇਵੇ ਅਤੇ ਹਰ ਡਿਸਟ੍ਰਿਕਟ headquarter ਤੇ ਅਪਣੀ ਲੋੜ ਪੂਰੀ
ਕਰਨ ਲਈ ਆਪਣੇ district headquarter ਲਈ ਬਿਲਡਿੰਗਾਂ ਬਣਾਏ।

ਅਧ୍ୟਕਸ਼ ਸਹੋਦਯ : ਮੈਂ ਸਰਦਾਰ ਸਾਹਿਬ ਸੇ ਦਰਖਾਸਤ ਕਰੁੰਗਾ ਕਿ ਵਹ ਮੇਹਰਵਾਨੀ ਕਰਕੇ ਅਬ
ਬੈਠ ਜਾਓ। ਆਪ ਦੀ Amendment ਸੁਝੇ 5.55 p. m. ਪਰ ਮਿਲੀ। ਹਾਲਾਂਕਿ ਇਸ
ਥੋੜੇ ਸੇ notice ਪਰ ਇਸੇ admit ਨਹੀਂ ਕਿਆ ਜਾ ਸਕਤਾ ਥਾ, ਫਿਰ ਭੀ ਮੈਂ
as a Matter of good-will gesture ਆਪ ਕੋ ਬੋਲਨੇ ਕੇ ਲਿਯੇ ਇਜ਼ਾਜ਼ਤ ਦੇ ਦੀ।
ਅਗਰ ਏਸੀ ਕੋਈ ਚੀਜ਼ ਸਰਕਾਰੀ ਬੰਚੋਂ ਕੀ ਟਰਫ ਸੇ ਇਤਨੇ ਥੋੜੇ notice ਮੇਂ ਆਤੀ ਤੋ
ਸ਼ਾਇਦ ਮੈਂ ਇਸ ਕੀ ਇਜ਼ਾਜ਼ਤ ਨ ਦੇਵਾ। ਇਸ ਲਿਯੇ, ਆਪ ਬੈਠ ਜਾਓ।

Mr. Speaker : Motion moved —

In the proposed Section 10-A (1), lines 4-8, for "within twenty-one days....
State Government" Substitute "within thirty days from the date of
service of the order, prefer an appeal to the District Judge."

ਪੰਡਿਤ ਭੀ ਰਾਮ ਸ਼ਰਮਾ : On a point of order, Sir. ਅਗਰ ਕਿਸੀ ਬਿਲ ਪਰ ਕੋਈ
ਟਰਮੀਮ ਪੇਸ਼ ਕੀ ਜਾਏ ਤੋ ਉਸ ਪਰ ਬੋਲਨੇ ਕੇ ਲਿਯੇ ਕਿਸੀ ਟਰਹ ਕੀ ਕੋਈ restriction
ਨਹੀਂ ਲਗਾਈ ਜਾ ਸਕਤੀ।

ਅਧ୍ୟਕਸ਼ ਸਹੋਦਯ : ਲੇਕਿਨ ਆਪ ਜਾਨਤੇ ਹੋ ਕਿ ਇਸ ਟਰਮੀਮ ਕੋ ਪੇਸ਼ ਕਰਨੇ ਕੀ ਇਜ਼ਾਜ਼ਤ ਖਾਸ
ਹਾਲਾਤ ਮੇਂ ਦੀ ਗਈ ਹੈ।

ਭੀ ਭੀ ਚੰਦ (ਬਹਾਦੁਰ ਗੜ) : ਸਾਹਿਬ ਸਦਰ ! ਮੈਂ ਆਪ ਕਾ ਅਜ਼ਹਦ ਗੁਫ਼ਾਜ਼ਾਰ ਹੂੰ ਕਿ ਆਪਨੇ
ਇਤਨੇ short notice ਪਰ ਇਸ amendment ਕੋ move ਕਰਨੇ ਕੀ
ਇਜ਼ਾਜ਼ਤ ਦੇ ਦੀ ਹੈ। ਯਹ ਇਤਨੀ ਜ਼ਰੂਰੀ amendment ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਕੋ ਕਬੂਲ ਕਰਨੇ ਸੇ
ਇਨਕਾਰ ਨਹੀਂ ਕਿਆ ਜਾਨਾ ਚਾਹਿਏ। ਮੈਂ ਹੈਰਾਨ ਹੂੰ ਕਿ ਬਾਰ ਬਾਰ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਕੀ ਟਰਫ ਸੇ ਯਹ ਡੰਡੀਰਾ
ਪੀਟਾ ਜਾਤਾ ਹੈ ਕਿ ਵਹ executive ਕੇ ਸਮੀ ਇਸ਼ਤਿਆਰਾਤ ਛੋਟੇ ਅਦਾਰੋਂ ਕੋ ਸੌਂਪ ਦੇਨੇ
ਕੇ ਹੁਕਮ ਮੇਂ ਹੈ। ਲੇਕਿਨ ਆਪ ਸੁਝੇ ਬਤਾਯੋ ਕਿ ਇਸ ਬਿਲ ਮੇਂ ਵਹ ਕੌਨ ਸਾ provision ਹੈ
ਜਿਸ ਮੇਂ ਏਸਾ ਕਿਆ ਗਿਆ ਹੋ ? ਇਸ ਮੇਂ ਤੋ ਜੋ Judiciary ਕਾ scope ਥਾ ਵਹ ਭੀ
ਛੀਨ ਕਰ executive ਕੋ ਦੇ ਦਿਆ ਜਾ ਰਹਾ ਹੈ। ਮੈਂ ਆਪ ਕੇ ਭਰਿਏ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਕਾ ਧਿਆਨ
ਇਸ ਬਾਤ ਕੀ ਆਰ ਦਿਲਾਨਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹੂੰ ਕਿ ਯਹ ਏਕ Judicial Act ਹੈ Executive Act
ਨਹੀਂ। ਯਹ ਗੈਰ ਸਰਕਾਰੀ ਆਦਮਿਯੋਂ ਕੀ ਜਾਇਦਾਦ ਕਾ ਮਾਮਲਾ ਹੈ। ਇਸ ਲਿਯੇ ਯਹ ਠੀਕ ਨਹੀਂ ਕਿ
ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਕੇ ਖਿਲਾਫ ਜੋ appeal ਕੀ ਜਾ ਰਹੀ ਹੋ ਉਸ ਪਰ ਫੈਸਲਾ ਕਰਨੇ ਕੇ ਇਸ਼ਤਿਆਰਾਤ ਭੀ
ਵਹ ਖੁਦ acquire ਕਰ ਲੇ। ਸ਼ੇਰ ਸਾਹਿਬ ! ਆਪ ਖੁਦ ਹੀ ਖ਼ਿਆਲ ਕਰਸਾਓ ਕਿ ਕਿਆ ਯਹ ਇਨਸਾਫ਼
ਹੈ ਕਿ ਲੋਗੋਂ ਸੇ ਯਹ ਕਹ ਕਰ ਜ਼ਮੀਨ ਲੀ ਗਈ ਕਿ ਯਹਾਂ ਪਰ refugees ਕੇ ਲਿਯੇ ਫੁਲਾਂ ਫੁਲਾਂ ਕਿਸਮ ਕੇ
ਕਾਰਖਾਨੇ ਕਾਯਮ ਕੀਏ ਜਾਯੋਗੇ ਲੇਕਿਨ ਬਾਦ ਮੇਂ ਉਸੇ ਲਾਖੋਂ ਰੁਪਏ ਕੀ ਕੀਮਤ ਪਰ ਨੀਲਾਮ ਕਿਆ ਗਿਆ ?
ਸੁਝੇ ਆਪ ਬਤਾਓ ਕਿ ਕਿਆ ਦੁਨਿਆ ਕੀ ਕੋਈ ਭੀ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਇਸ ਬਾਤ ਕੋ ਜਾਇਜ਼ ਕਰਾਰ ਦੇ ਸਕਤੀ ਹੈ
ਕਿ ਸ਼ਰਨਾਥਿਯੋਂ ਕੇ ਲਿਯੇ ਚੂੜੀਯੋਂ ਕੇ ਕਾਰਖਾਨੇ ਖੋਲਨੇ ਕੇ ਲਿਯੇ ਜ਼ਮੀਨ ਕੋ acquire

[श्री श्री चंद]

किया जाए और अपने promise को fulfil करने की बजाए बाद में उसे लाखों हाथों पर तोताम किया जाए? मुझे आप बताएं कि क्या किसी भी गवर्नमेंट को यह हक है कि

अध्यक्ष महोदय : आप तो अब इस बिल पर general discussion करने लग पड़े हैं। मेहरबानी करके अपनी तकरीर को इस particular amendment तक महदूद रखें और जल्दी खत्म करें।

श्री श्री चंद : यह सब कुछ, स्पीकर साहिब, मैं इस लिये कह रहा हूँ कि अगर appeal के लिए District Judge को authority बना दिया जाए तो वह देखेगा कि जिस गज्र से गवर्नमेंट ने किसी property को requisition या acquire किया है, जाइज भी है या नहीं। वह यह देखेगा कि जिस बात का सहारा लेकर वह property ली गई है वह उसी purpose के लिये इस्तेमाल हो रही है या नहीं। क्या यह भी इनसाफ है कि लोगों से सस्ते दामों पर जमीन ली जाए और उसके बाद उसे बेच कर लाखों रुपया का मुनाफ़ा कमाया जाए?

इस के इलावा मैं आप से एक गुज़ारिश करना चाहता हूँ कि अगर बिल या amendment पर बोलने के लिए सारे हिंदुस्तान या दुनिया की किसी भी असेम्बली में पाबन्दी लगाने का कोई असूल हो तो आप बड़ी खुशी से मुझे अपनी speech जल्दी खत्म करने के लिये कह सकते हैं। लेकिन मुझे पता है कि लोक सभा या किसी भी प्रादेशिक असेम्बली में यह कायदा नहीं कि किसी भी मੈम्बर की speech के लिये टाईम की पाबन्दी लगाई जाए। हाँ, अगर मैं irrelevant हूँ या repetition करूँ तो आप मुझे बेशक बैठ जाने का हुक्म दे दें। अगर यह कारण हो कि वज़ीर साहिबान के पास टाईम नहीं या मੈम्बर साहिबान सैर करने के लिये बाहर जाना चाहते हों तो कोई वजह नहीं कि आप मुझे बोलने से बन्द करें या वक्त की पाबन्दी लगाएं। अगर आप हुक्म देते हैं तो मैं बैठ जाता हूँ। लेकिन आप इस practice को यहां तभी जारी कर सकते हैं अगर देश की किसी असेम्बली में यह practice पहले भी कायम हुई हो।

अध्यक्ष महोदय : आप को मालूम होना चाहिए कि मैंने exceptional हालात में इस amendment को move करने की इजाज़त दी है। अगर आप अपने इस खैये पर insist करेंगे तो इस का मतलब यह होगा कि आइन्दा के लिये मुझे भी यह concession देने से पहले.....

पंडित श्री राम शर्मा : On a point of order Sir. मैं गुज़ारिश करना चाहता हूँ कि जब किसी भी वजह से आप ने एक बार amendment को move करने की इजाज़त दे दी है तो आप इस इजाज़त पर इस stage पर कोई शर्त नहीं लगा सकते। इस तरमीम को पेश करने की इजाज़त आपने किसी भी वजह से ही क्यों न दी हो, लेकिन जब आपने यह मेहरबानी कर दी है तो इस पर वही कायदे और कानून लागू होंगे जो आम तौर पर किसी मੈम्बर पर तकरीर करने के लिये होते हैं। इसलिए मैं आप की रुलिंग चाहता हूँ कि आया ऐसे मौके पर आप की तरफ से वक्त की कोई पाबन्दी लगाई जा सकती है?

THE PUNJAB REQUISITIONING AND ACQUISITION OF IMMOVABLE (2)71
PROPERTY (AMENDMENT) BILL, 1954

अध्यक्ष महोदय : रूलिंग की इस वक्त कोई जरूरत नहीं। आप मेरे कहने की स्पिरिट शायद नहीं समझे। आप बेशक जितना बोलना चाहें बोलिये।

श्री श्री चन्द : आप की बहुत मेहरबानी। मैं हाऊस का ज्यादा वक्त नहीं लूंगा, थोड़े इलफ़ाज़ में अपनी बात को ख़त्म कर दूंगा।

साहिबे सदर ! मेरे कहने का मतलब यह है कि मिनिस्टर साहिबान के पास न टाईम है न वह माहौल और न ही वह तरबीयत जो कि असल में होनी चाहिए— (*Interruptions*) वह situation की seriousness को नहीं समझेंगे। डिप्टी कमिश्नर जो भी रिपोर्ट कर देगा उसी के मुताबिक वह कहेंगे कि फ़्लां २ वजूहात की बिना पर property को छोड़ा नहीं जा सकता। इस लिये यह असूल कि गवर्नमेंट के फ़ैसलों के खिलाफ appeal करने के लिये appellate authority भी गवर्नमेंट खुद रहेगा एक ग़लत असूल है। गवर्नमेंट को कोई हक़ नहीं कि लोगों से वे मकान लेकर जिनका आम तौर पर 100 रुपया माहवार किराया हो, 10 और 15 रुपया माहवार किराया पर अपने अफ़सरों को दे दे। इन हालात में आप मुझे बताएं कि इस अपील का क्या फ़ायदा होगा जो कि गवर्नमेंट के अपने फ़ैसलों के खिलाफ गवर्नमेंट के पास ही दायर की जाएगी ? जो कुछ डिप्टी कमिश्नर रिपोर्ट कर देगा उसी के मुताबिक मिनिस्टर साहिब का हुक्म होगा। इन हालात में मैं दरखास्त करूंगा कि अपील की authority डिस्ट्रिक्ट जज के पास होनी चाहिए न कि मिनिस्टर साहिब के पास।

The Assembly then adjourned till 3-00 P.m. On Wednesday the 19th May, 1954.

1. The first part of the report deals with the general situation of the country and the progress of the work of the Commission.

2. The second part of the report deals with the work of the Commission in the field of education.

3. The third part of the report deals with the work of the Commission in the field of health.

4. The fourth part of the report deals with the work of the Commission in the field of agriculture.

5. The fifth part of the report deals with the work of the Commission in the field of industry.

6. The sixth part of the report deals with the work of the Commission in the field of commerce.

7. The seventh part of the report deals with the work of the Commission in the field of public works.

8. The eighth part of the report deals with the work of the Commission in the field of social services.

9. The ninth part of the report deals with the work of the Commission in the field of culture.

10. The tenth part of the report deals with the work of the Commission in the field of sports and recreation.

11. The eleventh part of the report deals with the work of the Commission in the field of science and technology.

12. The twelfth part of the report deals with the work of the Commission in the field of law and justice.

13. The thirteenth part of the report deals with the work of the Commission in the field of international relations.

14. The fourteenth part of the report deals with the work of the Commission in the field of foreign trade.

15. The fifteenth part of the report deals with the work of the Commission in the field of public administration.

Punjab Legislative Assembly

Debates

19th May, 1954

VOL. II—No. 3

OFFICIAL REPORT



CONTENTS

<i>Wednesday, 19th May, 1954</i>	PAGES
Starred Questions and Answers ..	1—26
Short Notice Question and Answer ..	26—28
Privilege Motion ..	28-29
Adjournment Motions ..	29—33
Transaction of Government Business on Thursday, 20th May, 1954 (Motion withdrawn) ..	33—37
Election of Deputy Speaker ..	37—40
Leave of Absence ..	41
Ruling of the Speaker ..	<i>ib</i>
Bill (s)—	
The Punjab Requisitioning and Acquisition of Immovable Property (Amendment)— (Resumption of Discussion) ..	42—58
The Punjab State Legislature (Prevention of Disqualification) (Second Amendment).— ..	58—67

CHANDIGARH :

Printed by the Controller of Printing and Stationery, Punjab
1956

Price : Rs 2/12/-

PUNJAB LEGISLATIVE ASSEMBLY

Wednesday, 19th May, 1954

*The Assembly met in the Assembly Hall, Sector 10, Chandigarh
Capital at 2 p. m. of the clock. Mr Speaker
(Sardar Gurdial Singh Dhillon) in the chair.*

STARRED QUESTIONS AND ANSWERS

TERRITORIAL ARMY IN THE STATE.

***3359. Shri Ram Chandra Comrade :** Will the Chief Minister be pleased to state the total number of camps to be organized in the State in connection with the national drive to form a territorial army, along with the places where these camps are proposed to be organized or are being held in the State ?

Chief Parliamentary Secretary (Shri Prabodh Chandra) : There is no "National drive to form a Territorial Army" and therefore the question of the places where these camps are proposed to be organised or are being held in the State does not arise. If however, the Hon'ble member is referring to Auxiliary Territorial Army Camps, the required information is given below:—

List of Auxiliary Territorial Army Camps held so far in the Punjab—

- (i) Achal Sahib (Gurdaspur)—7th to 14th January, 1954.
- (ii) Khasa (Amritsar)—22nd to 29th January, 1954.
- (iii) Ferozepore Cantonment—8th to 15th February, 1954.
- (iv) Ambala Cantonment—9th to 16th March, 1954.
- (v) Simla—2nd to 9th April, 1954.

More camps are expected to be held during next winter. Detailed programme of these camps is awaited.

MACHINERY FOR LOCAL DEVELOPMENT WORKS.

***3482. Shri Ram Kishan :** Will the Minister for Development be pleased to state whether the Government has received any instructions from the Planning Commission for setting up a machinery for the selection, execution, financing and accounting of the local Development works under the First Five-Year Plan; if so, the details of the instructions and the action taken by the Government for their implementation ?

Sardar Partap Singh Kairon : Yes. A copy of the Planning Commission, Government of India letter No. PC/PUB/52/53, dated the 11th August, 1953, together with a copy of Punjab Government letter No.1046-P-53/475, dated the 22nd September, 1953, to all Deputy Commissioners in this State

[Minister for Development]
containing the instructions issued for the implementation of local Development Works are given below :—

GOVERNMENT OF INDIA

PLANNING COMMISSION

No. PC/Pub/52/53

From

SHRI Y.N. SUKTHANKAR, I.C.S.,
Secretary Planning Commission.

To

ALL STATE GOVERNMENTS (THE DEPUTY SECRETARY TO THE
GOVERNMENT OF PUNJAB, DEVELOPMENT DEPARTMENT.)
New Delhi, the 11th August, 1954.

Subject:—ASSISTANCE FOR LOCAL DEVELOPMENT WORKS.

Sir,

I am directed to refer to the correspondence ending with the Planning Commission's letter No PC(VI)/SS/15/53, dated the 1st April, 1953, on the above subject.

2. The Government of India have been further considering the principles and procedure to be adopted in the selection, execution, financing the accounting of the works and their views are set out in the paragraphs below—

3(a) The term "Local Development Works" is intended to cover schemes which have their origin in the people themselves working through voluntary associations, village pan-chayats, etc. The basic idea is to stimulate the enthusiasm of the people for the Five-Year Plan through local schemes for the execution of which they will be prepared to contribute either in cash or in kind (by supply of materials) or through voluntary labour.

(b) The categories of works most suitable for assistance are : —

- (i) drinking water-supply schemes;
- (ii) permanent works for improvement of agriculture;
- (iii) permanent works for the improvement of rural sanitation;
- (iv) village roads including small bridges and culverts;
- (v) improvements to school or dispensary buildings where such institutions already exist, and are inadequately housed;
- (vi) construction of godowns for storage of goods provided the benefit accrues to the public generally, and
- (vii) schemes for enabling students to work in Community Projects.

The above list is meant to be illustrative rather than exhaustive and other schemes which are likely to improve conditions in the country-side or benefit the community as a whole would also be eligible for assistance.

(c) The local contribution in cash or kind or through voluntary labour together with any contribution that the State Government or a local body may make, should be a minimum of 50 per cent of the total cost of each work. The intention is to spread the benefit over as wide an area and to as many people as possible, and the maximum limit of the Central Government grant has been fixed at Rs 10,000 for each work. This implies that the cost of a scheme should not exceed Rs. 20,000. The nature of the work should be such as will not involve much recurring expenditure on subsequent maintenance. Where such recurring expenditure is unavoidable, one of the definite conditions of the grant should be that adequate and effective arrangements are made for the maintenance of the works after their

execution. It is expected that the schemes will be mainly in those parts of the country which do not stand to benefit directly from schemes already included in the plans of the Central Government and State Governments. Money should not be expended in buying tools and implements which may be obtained on loan from the P.W.D. or local bodies or hired, if this is not possible.

SELECTION, SCRUTINY AND APPROVAL OF STATE SCHEMES

4. The schemes should be selected by a mixed committee of officials and non-officials (the latter drawn on a representative basis) for every district/Sub-Division. The actual composition of the Committee is left to the State Government but in constituting it the need to secure the speedy disposal of business and effective supervision over the work by an agency which can be held accountable should be borne in mind. The Planning Commission will be glad if the State Government will furnish them, in due course, with a statement showing the composition and membership of the various committees.

5. In view of the large number of schemes likely to be involved and the fact that they will spread all over the country the Government of India must leave it to the State Government to arrange for the detailed scrutiny of the schemes before they are accepted and for making adequate provision for supervising their proper execution. The Planning Commission will be glad if particulars of the machinery which the State Government propose to set up for this purpose are intimated to them. In this connection, the Planning Commission also suggest that the State Government should nominate a Liaison Officer for each district or other suitable unit (generally a senior Revenue Officer) for the purpose of checking the execution of the works and for the maintenance of such initial accounts as may be necessary. In order to expedite the completion of the schemes the State Government may find it necessary to arrange to advance funds for meeting the expenditure. These advances should, as far as possible, be made through the Liaison Officer and an account of these advances and their recovery should be maintained for purposes of subsequent audit.

6. Subject to the broad principles set out above, individual schemes will be scrutinised and sanctioned by the State Government.

PROGRESS REPORTS OF STATE SCHEMES

7. The State Governments should furnish quarterly progress report beginning from the quarter ending 30th September 1953 in the form in annexure 1 to this letter (with 12 spare copies) arranged by districts, and indicating the total cost of each scheme, the local contribution in each case, the amount contributed by the State Government or local bodies, the expenditure to date and, where necessary, the arrangements made for their future maintenance.

CENTRAL RESERVE GRANT

8. A slightly different procedure will be necessary in the case of schemes financed from the amount reserved by the Planning Commission for direct grant to voluntary associations. The Planning Commission will accord sanction to such schemes in consultation with State Governments, on specific points such as the Standing of the sponsoring associations, etc. The Planning Commission will be grateful if they could utilise the State machinery for payment. For this purpose a copy of each sanction issued by the Planning Commission to a sponsoring authority will be endorsed to the State Government concerned, and the necessary finance placed at the disposal of the State Government, as a specific grant.

FINANCING AND ACCOUNTING PROCEDURE

9. The Government of India propose to consult the Comptroller and Auditor-General regarding the arrangements for the accounting and audit of the expenditure on local works and, subject to the advice which the Comptroller and Auditor-General may give them, they propose the following procedure to be adopted;

(a) The amount earmarked for each State should be placed at the disposal of the State Government as a grant-in-aid in suitable instalments.

(b) The State Government should arrange to transfer these amounts to a special fund for financing local development works. Any contribution which may be made by a local authority for this purpose should be credited to State revenues and similarly transferred to the fund along with any cash contribution which the State Government may themselves wish to make,

[Minister for Development]

(c) The cash expenditure on individual schemes will take the form of expenditure directly incurred by Government or grant-in-aid to local bodies, or non-official organisations. Provision in either case should be made for the expenditure in the State budget in the ordinary way and an equivalent amount transferred to revenue from the fund mentioned in Para (b) above. At the end of each year a consolidated statement should be furnished to the Planning Commission showing the expenditure incurred on the various approved schemes with a view to keep a watch over the proper utilisation of the amount placed at the disposal of the State Government. The difference between the amount paid as grants-in-aid in any year to any State and half the expenditure on the Schemes, as explained in paras 3 and 4 above, will be refunded by or paid to the State Government as the case may be in the following year.

MISCELLANEOUS PROVISIONS

10. For facility of correspondence it is requested that the State Government, designate an Officer to whom all matters relating to Local Development Works in the State might be referred. His name and designation may be intimated to the Planning Commission. In the Planning Commission, Shri O.K. Gosh, Deputy Secretary, will be the corresponding Officer.

11. A copy of any orders that the State Government might issue to District Officer/ Liaison Officers, etc, in regard to these matters may please be forwarded to the Planning Commission for information and record.

INTIMATION OF APPROVAL OF PRINCIPLES AND PROCEDURE

12. The Planning Commission will be grateful if the concurrence of the State Government in the principles and procedure set out in this letter is communicated to them at a very early date.

Yours faithfully,

Y.N. SUKTHANKAR,
Secretary.

(ANNEXURE I)

Quarterly Progress Report on Approved Local Development Works in _____ State.
For the period ending _____ 1953.

Serial Number	Particulars of scheme	Total cost as approved	Cash contribution				Value of Local contribution in supplies and labour.		Total	Estimated time for completion	Arrangements for maintenance after completion	Date of commencement of work	Expenditure to the end of previous quarter	Progress			REMARKS (special features etc.).
			Central Grant	State Grant	Local Bodies	People	Supplies	Labour						Expenditure during the quarter	Total Expenditure to the end of quarter	Percentage (column 16 to column 3)	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18
				Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.			Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	

NOTES .—(1) Schemes should be arranged according to accepted categories and under each category the scheme should be arranged according to types and districts. Abstracts covering statements giving the total expenditure by types may also be added for facility of reference.

(2) The return should reach the Planning Commission within two months of the quarter to which the progress report relates.

(3) Special features, for example, students' participation in schemes should be indicated in the "Remarks Column."

column 10 should tally with the cost shown at "column 3".

[Minister for Development]
IMMEDIATE

No. 1046-P-53/475

Dated Simla-2, the 22nd September, 1954.

From

SHRI M.D. AHUJA,

Under Secretary to Government,
Punjab, Development Department,
(Planning)

To

All Deputy Commissioners in the Punjab

Subject:— Local Development Works

SIR,

I am directed to forward herewith a copy of Planning Commission's letter No. PC/Pub/52/53, dated the 11th August, 1953, wherein the principle and procedure to be adopted for the selection, execution, financing and accounting for Local Development works, has been laid down. It will be observed that the local development works are intended to cover schemes which have their origin in the people themselves, working through voluntary association, village panchayats, etc. and the basic idea is to stimulate the enthusiasm of the people for the Five-Year Plan. With the object of spreading the benefits of the scheme over as wide an area and to as many people as possible the Planning Commission have fixed a maximum limit of Central Government Grant to Rs 10,000 for each scheme. This would mean that the total cost of any local works scheme should not exceed Rs 20,000 because 50 per cent of the total cost of each work is to be met by local contribution in cash, gifts or free labour, etc.

2. For the current year 1953-54, the Planning Commission, Government of India, have allocated a sum of Rs 8.9 lacs for local development works in this State. It was decided sometime ago to distribute this grant as follows —

- | | |
|------------------------|-------------------|
| 1. Kangra District | .. Rs. 3.0 lacs. |
| 2. Hissar District | .. Rs. 1.00 lacs. |
| 3. Gurgaon District | .. Rs. 2 lacs. |
| 4. Rohtak District | .. Rs. 40,000 |
| 5. Hoshiarpur District | .. Rs. 2.50 lacs. |

The Development schemes under this programme in the remaining districts of the State are likely to be taken up in the remaining years of the Plan.

3. It will be seen that paragraph 4 of the Planning Commission's letter referred to above, requires, that local development schemes should be selected by a mixed committee of officials and non-officials. It is, therefore, requested that the names of the local officials and non-officials for the constitution of the said Committee in your district may be submitted to Government for approval at an early date. This committee will, of course, function for the Schemes to be selected for the next year.

4. I am also to request you to designate an intelligent Extra Assistant Commissioner as District Development Officer *immediately*. He should be held responsible for the execution of local works schemes in the district specially and also for advising you on National Extension Service and Community Projects Programme, which might have been or may be taken up in your district. It is suggested that preferably the Revenue Assistant may be entrusted with this job, but if you consider that he is already over-worked, you may designate another officer for the purpose under intimation to Government. This officer will, of course, work also as the Liaison Officer, as mentioned in the Planning Commission's letter. As separately intimated, a proposal for provision of a whole-time Development Officer is under consideration of Government but seeing that Development work in districts is only gradually gaining pace, it is hoped that it will not be at all difficult for you to get the job done by an officer on your existing strength,

5. As a reply has to go *immediately* to the Planning Commission, you are requested to expedite intimation in regard to formation of the advisory committees and the particulars of the officer designated as District Development Officer.

6. *For Deputy Commissioners, Hissar, Kangra and Hoshiarpur only.* The scheme already submitted by you are being examined to ensure that they conform to the principles laid do by the Planning Commission. A separate communication in the matter will however be made to you in due course, if necessary, for the revision etc. of such schemes, as are found in excess of the maximum financial limit prescribed.

7. *For the Deputy Commissioner, Gurgaon Only.* As Government have already made a commitment for the grant of Rs 2.00 lacs for the Rewari Town Water Supply Scheme, it has been decided to approach the Planning Commission to accord their approval to the grant of Rs 2.00 lacs for the purpose out of the total allocation of Rs 8.5 lacs for this State. In order, therefore, to enable this Department to make a suitable reference to the Planning Commission, a detailed note explaining the entire scheme, the cost involved and other necessary particulars may kindly be supplied *immediately*. The progress of collections of voluntary contributions by the people should also be intimated at once.

8. *For Deputy Commissioner, Rohtak.* As any individual scheme to be taken up under the local development works is not to exceed Rs 20,000 it is requested that the desirability of splitting up the scheme relating to the construction of Gohana-Khandrai-Gangesar and Bichpari road into packets of less than Rs 20,000 each may kindly be considered and details thereof submitted to Government immediately. Government feel that it should be possible to split up the said scheme into four packets or even more if necessary, so as to bring it within the purview of the Local Development works. This can be done by dividing the scheme into four or more villages groups and the scheme split as (1) Village A to village B (2) Village C to D etc.

Yours faithfully,
Sd/ M.D. AHUJA,
Under Secretary, Planning.

No. 1046-P-53/475-A.

A copy with a copy of enclosure is forwarded to the Deputy Development Commissioner, Punjab, for information and guidance in regard to Schemes for enabling students to work in Community Projects.

M.D. AHUJA,
Under Secretary, Planning.

श्री राम किशन : जो Statement मुझे मुहैया की गई है इस में Planning Commission की हिदायत है कि हर जिले में Officials और non-officials की एक कमेटी बनाई जाये। क्या हर जिले में ऐसी कमेटी बन गई है।

मुख्य मंत्री : Local Development Works के बारे में Deputy Commissioners को लिखा गया है कि वे अपने जिले के M. L. A.s और दूसरे लोगों से मशवरा करके स्कीमें बनायें और सरकार को भेजें।

श्री राम किशन : Planning Commission की चिट्ठी में लिखा है कि कमेटियां अपनी report भेजेंगी। क्या किसी जिले की कमेटी से सरकार को कोई report आई है।

मुख्य मंत्री : अगर आपने notice दिया होता तो मैं सब बात तफसील से आप को बता सकता।

श्री राम किशन : Planning Commission की तरफ से हिदायत है कि हर जिले में एक Liaison Officer मुकरर हो। क्या यह अफसर मुकरर किये गये है?

मुख्य मंत्री : मैं आप की तसल्ली के लिये अर्ज कर दूँ कि Local Development Community Projects वगैरा का जितना काम है, कि इसे कैसे एक दूसरे से link करना है और इस स्कीम के बारे में कैसे अफसर मुकरर करने हैं यह सब मामला जेरे गौर हैं।

श्री राम किशन : Planning Commission की चिट्ठी में लिखा है कि हर जिले से Local Development Works की स्कीम के बारे में report आये कि आया वहाँ पर कोई scheme बनी है। मैं जानना चाहता हूँ कि किस किस जिले में स्कीमों तैयार हो चुकी हैं ?

मुख्य मंत्री : आप को मालूम ही है कि Local Development Works क्या हैं। ये वे स्कीमों हैं जिन में ५० फी सदी Contribution सरकार की तरफ से होनी है। बाकी ५० फीसदी Local Communities या Local Finances से आना है। इन तमाम बातों के बारे में Deputy Commissioners को लिख दिया गया है और स्कीमों तलब की गई हैं। जब स्कीमों आ जायेंगी तो उन्हें approve किया जायेगा और उस के बाद उन पर अमल होगा। Organization के बारे में मुझे यह कहना है कि सारी Organization का सिलसिला हमारे जेरे गौर है। हमने Organization Committee बनाई है। इस सिलसिला में District Boards वगैरा से कैसे काम लेना है और Sub-Divisions और Development Centres कैसे बनने हैं, ये सारी चीजें हमारे जेरे गौर हैं।

श्री राम किशन : Planning Commission की report के मुताबिक ६ लाख रुपया हमारी सरकार को केंद्रीय सरकार से मिला। क्या मैं जान सकता हूँ कि इस में से कितना रुपया इस्तेमाल हो चुका है ?

मुख्य मंत्री : यह Fair तो न था कि आप यह सवाल पूछते। परन्तु मैं आप की तसल्ली के लिये इस का जवाब दे देता हूँ। जब हमें यह रुपया मिला और हिंदू सरकार ने हमें इस स्कीम के बारे में लिखा तो हमारे पास वक्त कम था इस लिये यह रुपया इस्तेमाल न हो सका। यही बात दूसरी States में भी हुई। लेकिन मैं आप को यह अर्ज किये देता हूँ कि यह रुपया lapse नहीं हुआ। यह रुपया आगे चला जाता है और दूसरे साल इसका इस्तेमाल हो सकता है।

श्री राम बिशन : क्या डिप्टी कमिश्नरों को हिदायतें भेजी गई हैं कि कांगड़ा, हिसार और होशियारपुर.....

अध्यक्ष महोदय : माननीय मੈम्बर को चाहिये था कि वह इस सिलसिला में नोटिस दे देते ताकि मिनिस्टर साहिब इस का जवाब दे सकें। इस तरह से Supplementary Questions करना ठीक नहीं।

मुख्य मंत्री : मैं अर्ज करूंगा कि जब लोकल वर्क्स के लिये रुपया अलाट किया गया था उस वक्त हमारे लिये यह जानना जरूरी था कि किन किन इलाकों को हम तरजीह दें। इलाकों को चुनते वक्त हमने उन इलाकों को तरजीह दी जो पसमांदा हैं और जहाँ development की ज्यादा जरूरत है। हमारी यह आम पालिसी है कि कांगड़ा, गुड़गांव और होशियारपुर वगैरा के जो पिछड़े हुए इलाके हैं उन की तरफ ज्यादा तवज्जुह दी जाये। इस पालिसी के तहत लोकल वर्क्स की जो amounts हैं उन्हें इन इलाकों में ज्यादा बांटा गया है।

श्री राम किशन : सितम्बर, १९५३ में कांगड़ा के मुतग्रल्लिक कुछ स्कीमें गवर्नमेंट के पास approval के लिये भेजी गई थीं। मैं पूछना चाहता हूं कि क्या गवर्नमेंट ने उन्हें approve किया है, अगर किया है तो उस बारे में क्या कार्रवाई की गयी है ?

मुख्य मंत्री : पहिले स्कीमें गवर्नमेंट के पास आती हैं। फिर भारत सरकार ने उन्हें approve करना होता है। यह स्कीमें approve हो कर हमारे पास देर से आई इस लिये इन पर हम कोई steps नहीं ले सके। पिछले साल जो काम रह गया था, वह इस साल पूरा हो जायगा।

श्रीमती शन्नो देवी : प्लैनिंग कमिशन ने जो हिदायत जारी की है कि अफसर District wise रखने हैं, इन के यहां सुना देने से तो कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं जानना चाहती हूं कि क्या ये implement हो रही हैं या नहीं।

मुख्य मंत्री : मैं माननीय मंत्री को बता देना चाहता हूं कि हम पूरी कोशिश कर रहे हैं कि इन की पूरी तरह implementation की जाये ताकि जल्दी से जल्दी काम हो सके।

पंडित श्री राम शर्मा : सवाल में पूछा गया है कि गवर्नमेंट ने प्लैनिंग कमिशन की हिदायत को implement करने के लिये क्या क्या काम किया है? चीफ मिनिस्टर साहिब के जवाब से मालूम होता है कि जो instructions आई थीं वे डिप्टी कमिश्नरों को भेज दी गई थीं। मैं दरियाफ्त करना चाहता हूं कि डिप्टी कमिश्नरों को भेजने के अलावा क्या और कोई कार्रवाई भी गवर्नमेंट ने की है ?

मुख्य मंत्री : जो हिदायतें हमें मिलीं कि हम इतना रुपया खर्च कर सकते हैं उन के मुताबिक पहले हम ने यह फैसला करना था कि किस तरह से यह रुपया बांटें। हमने कुछ इलाके determine किये कि कौनों इलाके को हम इतना रुपया दें और पिछड़े हुए इलाकों की ज्यादा मदद करें। दूसरा step implementation का हमने यह लिया कि हमने डिप्टी कमिश्नरों को लिखा कि वे अपनी स्कीमें भेजें। जब वे स्कीमें हमारे पास आईं तो बहुत तंग था इस लिये भारत सरकार के पास भेजने और approve कराने में देर लग गई। इन हालात में जो स्कीमें approve हुई थीं वे execute न हो सकीं। वह रुपया lapse नहीं हुआ वह इस साल में इस्तेमाल हो जायगा।

पंडित श्री राम शर्मा : अब काम कब शुरू होने की उम्मीद की जा सकती है ?

मुख्य मंत्री : काम तो हो रहा है।

पंडित श्री राम शर्मा : जो काम हो रहा है.....

अध्यक्ष महोदय : माननीय मंत्री बोलने से पहले मेरी इजाजत ले लिया करें।

पंडित श्री राम शर्मा—मेरे खड़े होने से पता लगता है कि मैं supplementary सवाल करना चाहता हूं। मैं दरियाफ्त करना चाहता हूं कि District-wise क्या क्या काम हो चुका है ?

Mr Speaker : The Hon. Member should give a fresh notice of this question.

श्री श्री चन्द : क्या यह सच है कि रुपया उन इलाकों को दिया जा रहा है जो वज़ीरों की constituencies में आते हैं और इस बात का ख्याल नहीं रखा जाता कि backward इलाकों को मदद की जाए ।

मुख्य मंत्री : यह बात बिल्कुल ग़लत है । मैं अर्ज़ करूंगा कि रुपया बांटते वक़्त इस बात का ख्याल रखा गया है कि जो इलाके backward हैं और जहाँ कम development हुई है वहाँ ज्यादा रुपया दिया जाये ।

श्री श्री चन्द : रोहतक ज़िले में झज्जर तहसील को, जो backward इलाका है, कुछ नहीं दिया गया और सोनी पत के लिये रुपया अलाट किया गया है ।

पंडित श्री राम शर्मा : जो पिछड़े हुए इलाके हैं उन्हें कितनी कितनी ज्यादा रकम दी गई है ।

Mr. Speaker : It does not arise out of the main question. The hon. Member should give fresh notice of this question.

श्रीमती शन्नो देवी : मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया गया । मैं पूछना चाहती हूँ कि district-wise जो अफ़सर रखने हैं वह services में से रखने हैं या बाहिर से रखने हैं ? इस के मुतअल्लिक गवर्नमेंट का क्या विचार है ?

Mr. Speaker : The hon, Lady member should give a fresh notice of this question.

MISAPPROPRIATION OF GOVERNMENT MONEY IN GOVERNMENT LIVE STOCK FARM, HISSAR.

***3492. Pandit Shri Ram Sharma:** Will the Minister for Development be pleased to state whether any cases of misappropriation of Government money, fire wood and milk were detected at the Government Live Stock Farm, Hissar during the year 1951-52; if so, the total loss of money sustained by the Government or defalcation in the accounts detected along with the action, if any, taken by the Government against the defaulters?

Sardar Partap Singh Kairon: The information is being collected and will be supplied to the member, when ready.

DAMAGE BY WILD ANIMALS IN HOSHIARPUR DISTRICT.

***3523. Shri Jagat Ram Bhardwaj:** Will the Minister for Development be pleased to state:—

- (a) whether he is aware of the fact that wild animals have been multiplying in the Kandi illaqa of Hoshiarpur District and are damaging the crops and killing the cattle;

(b) whether he is also aware of the fact that the district authorities are very reluctant to issue gun licences;

(c) if the answers to parts (a) and (b) above be in the affirmative, the steps Government has taken or proposes to take to protect the interests of the cultivators?

Sardar Partap Singh Kairon: The requisite information is being collected and will be supplied to the Member, as soon as possible.

BASIC SCHEDULE OF RATES FOR RIVER VALLEY PROJECTS.

***3484. Shri Ram Kishan:** Will the Minister for Irrigation be pleased to state whether the Committee set up by the Union Government to recommend a basic schedule of rates for river valley projects has visited the State Projects; if so, the recommendations made by the committee and the action taken by the department concerned on those recommendations?

Chaudhri Lahri Singh: The Committee appointed by the Union Government has not so far visited Punjab Projects.

श्री राम किशन : क्या सिचाई मंत्री बतायेंगे कि जो कमेटी भारत सरकार ने projects के बारे में basic schedule of rates मुक़रर करने के लिये बनाई है गो उस ने हमारे projects को अभी visit नहीं किया,—उस सिलसिलामें data इकट्ठा करने के लिये कोई instructions जारी की गई हैं ?

मंत्री : अभी ऐसी कोई instructions जारी नहीं की गई। Government of India ने वह कमेटी यह देखने के लिये बनाई है कि आया सब projects के रेट uniform करने का कोई formula बन सकता है या नहीं। इस उद्देश्य के लिये वह कमेटी तमाम projects को visit कर रही है।

श्री राम किशन : इस सिलसिले में Government of India ने जो Chief Engineers की कानफ़ेंस की थी, क्या उस ने data इकट्ठा करने के बारे में कोई फैसला किया था ?

मंत्री : नंगल में एक Engineers का seminar हुआ था। उस में इस उद्देश्य के लिये एक कमेटी बनाई गई थी।

श्री राम किशन : उस कमेटी में यह फैसला किया गया था कि data इकट्ठा किया जाए। क्या उस फैसले पर काम हुआ है या नहीं ?

मंत्री : मैंने कहा है कि वह कमेटी Union Government ने बनाई है। वह data इकट्ठा करने के लिये सब projects को inspect करेगी। वह हर जगह जा रही है।

पंडित श्री राम शर्मा : Union Government की बनाई हुई वह कमेटी पंजाब का दौरा करके क्या कोई recommendations कर चुकी है या नहीं ?

मंत्री : मैं कह चुका हूँ कि पंजाब में वह कमेटी अभी तक आई नहीं। (हंसी)।

CHANGE IN THE LINING OF DUBBETA DRAIN.

*494. **Pandit Shri Ram Sharma**: Will the Minister for Irrigation be pleased to state:—

- (a) whether any changes in the original lining of the said drain have been made; if so, the reasons therefor;
- (b) whether it is a fact that the lining in the low level has been changed into high level; if so, the reasons therefor and the total estimated additional expenditure incurred by the Government in this connection?

Chaudhri Lahri Singh : (a) and (b) Scheme of Dobbeta Drain has not yet been finalised.

पंडित श्री राम शर्मा : क्या मैं जान सकता हूं कि वह स्कीम किस stage पर है ? क्या वह Government तक नहीं आई या अभी Head of the Department तक भी नहीं आई है ?

मंत्री : पहली स्कीम का मकसद यह था कि drain बनाया जाए । बाद में Engineers ने बताया कि खर्च ज्यादा आएगा । इस लिये वह काम बन्द किया गया । उस के बाद Engineers ने कहा कि pumping sets लगा कर वहां से पानी canal में डाला जाए । जब उस का estimate लगाया गया तो वह भी costly निकला । फिर drain के lining करने का फैसला किया गया ।

पंडित श्री राम शर्मा : पहली जो lining की स्कीम थी वह क्यों छोड़ी गई है ?

मंत्री : वह स्कीम finalise नहीं की गई थी । उस को approve नहीं किया गया था ।

PERENNIAL SPRINGS IN HOSHIARPUR TEHSIL.

*3522. **Shri Jagat Ram Bhardwaj**: Will the Minister for Irrigation be pleased to state :—

- (a) whether he is aware of the fact that there are some perennial springs in the hills of Hoshiarpur Tehsil ;
- (b) whether these springs were to some extent utilized for Irrigation purposes before the partition ;
- (c) whether he is also aware of the fact that hundreds of acres of land can be irrigated from these sources; if so, the steps, if any, the Government proposes to take in this matter?

Chaudhri Lahri Singh : (a) Yes.

(b) No.

(c) No.

The schemes can be examined if specific springs that can do extensive irrigation are indicated.

श्री जगत राम भारद्वाज : क्या मंत्री जी को मालूम है कि इस से पहले वहां पर इन चशमों के पानी से पांच-पांच सात-सात सौ ग्रामों की जमीन सैराब हो रही थी परन्तु अब वहां कोई जमीन सैराब नहीं हो रही है ? इस की क्या वजह है ?

मंत्री : सरकार हर जगह पर मदद करने के लिये तैयार है। होशियारपुर में एक पार्टी survey के लिये भेजी गई है।

पंडित श्री राम शर्मा : क्या सरकार जानती है कि United Punjab में सरकार इन नदियों के पानी से जमीन सैराब करने का इरादा कर रही थी ? अब यह क्यों नहीं किया जाता ?

मंत्री : पिछले २०० साल से इन नदियों का किसी ने प्रोग्राम नहीं बनाया था। अगर आप कोई ऐसी स्कीम बताएं तो हम खुशी से उसे हाथ में ले लेंगे।

श्री जगत राम भारद्वाज : Partition से पहले इन चशमों के पानी से जो जमीन सैराब हो रही थी वह अब नहीं हो रही। परन्तु उस पानी का आब्याना अभी तक क्यों लिया जा रहा है ?

अध्यक्ष महोदय : इस के लिये नये नोटिस की जरूरत है।

ਸਰਦਾਰ ਚੰਨਣ ਸਿੰਘ : ਮੰਤ੍ਰੀ ਜੀ ਨੇ ਸਵਾਲ ਦੇ ਭਾਗ (b) ਦਾ ਉਤ੍ਰ 'ਨਾਂ' ਵਿਚ ਦਿਤਾ ਹੈ। ਪ੍ਰੰਤੂ ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਹੁਸ਼ਿਆਰਪੁਰ ਵਿਚ ਇਨ੍ਹਾਂ ਚਸ਼ਮਿਆਂ ਦੇ ਪਾਣੀ ਦਾ ਆਬਿਆਨਾ ਅਜੇ ਵੀ ਵਸੂਲ ਕੀਤਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਮੈਂ ਪੁੱਛਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਮੰਤ੍ਰੀ ਜੀ ਨੇ ਕਿਸ ਚੀਜ਼ ਦਾ 'ਨਾਂ' ਵਿਚ ਜਵਾਬ ਦਿੱਤਾ ਹੈ ?

मंत्री : सवाल का part (b) यह है (b) Whether these springs were to some extent utilized for irrigation purposes before the partition. इस का जवाब है "No."

श्री श्री चन्द : क्या यह ठीक है कि इन चशमों के पानी से जो आबपाशी होती है उस का आब्याना लिया जाता है ?

मंत्री : सरकार की तरफ से इन चशमों के पानी से irrigation नहीं होती। अगर कोई आब्याना लिया जाता है तो आप नोटिस दे दें। मैं पता करके बता दूंगा।

श्री जगत राम भारद्वाज : क्या सरकार की ignorance दूर करने का कोई जरिया है जिसे यह नहीं पता कि पानी नहीं दिया जा रहा परन्तु आब्याना वसूल किया जा रहा है ?

मंत्री : अगर आप नोटिस दें तो मैं बता सकता हूं।

ਸਰਦਾਰ ਹਰਕਿਸ਼ਨ ਸਿੰਘ ਸੁਰਜੀਤ : On a point of information, Sir. ਮੰਤ੍ਰੀ ਜੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਹੈ ਕਿ ਇਨ੍ਹਾਂ ਚਸ਼ਮਿਆਂ ਦੇ ਪਾਣ ਨਾਲ ਆਬਪਾਸ਼ੀ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ ਪ੍ਰੰਤੂ ਮਾਨਯੋਗ ਮੈਂਬਰ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਆਬਿਆਨਾਂ ਲਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ।

ਸੰਤ੍ਰੀ : ਮੇਰਾ ਜਵਾਬ ਹੈ ਕਿ इन springs के पानी से कोई आबपाशी नहीं होती । अगर कहीं आब्याना लिया जाता है तो आप मुझे बताएं गवर्नमेंट पता करेगी ।

DEVELOPMENT OF KANGRA DISTRICT.

***3483. Shri Ram Kishan :** Will the Minister for Finance be pleased to state :—

- (a) whether the Government has prepared any scheme for the exploitation and development of the hidden resources of Kangra District ;
- (b) whether any correspondence has passed between the Union Government and the State Government for exploitation and financing of the said scheme; if so, the details of the scheme and the reply of the Union Government in the matter as it stands to day ?

Sardar Ujjal Singh : (a) No.

(b) Does not arise.

Sir, with your permission I want to inform the House that the Geological Survey of India have included the following items relating to Kangra District at our request in their Field Programme for the year 1953-54. (The Survey year begins from the 1st November.) :—

- (i) Continuation of systematic mapping of the Dharmsala-Mandi area ;
- (ii) Investigation of the alleged occurrence of Mineral oil at Naba Bir Village ;
- (iii) Study of lead, antimony, silver, copper, borax and sulphur in the Spiti Valley near Shigri ;
- (iv) Mapping of structures suitable as potential oil fields in the Hoshiarpur and Kangra Districts ;
- (v) Investigation of copper deposits near Gadsa in Mauza Bhalan and Naurul village in Kulu Tehsil, and
- (vi) Collection of Primates and other vertebrate fossils in Kangra-Hamirpur area.

In regard to the following items, the Survey of India have intimated that the regional survey which is already on in this District will help to locate the deposits in due course :—

(i) Survey in Kangra District of Coal, Petroleum, Iron Ores, Calcium Carbonate and Sodium Chloride.

(ii) to tap sites for minerals like Zinc, Iron, Manganese etc, near about Joginder Nagar and Mandi in Kangra Valley.

ਰਾਏ ਰਘੁਬੀਰ ਸਿੰਘ : यह बात कि ज़िला कांगड़ा में कौन कौन सी मादनियात मिल सकती है, तो काफी समय से मालूम हो चुकी है। एक सवाल के जवाब में भी यह सूचना दी जा चुकी है कि क्या पंजाब सरकार केंद्रीय सरकार के साथ इस सिलसिल में अब कोई correspondence कर रही है ?

ਸੰਤਰੀ : मैंने वे चीज़ें बताई हैं जो Geological Survey Department के उस प्रोग्राम में शामिल हैं जो उन्होंने १ नवम्बर, १९५३ से लेकर ३१ अक्टूबर १९५४ तक के लिए बना रखा है। इन minerals की तरफ़ ख़ास तौर पर तवज़ूह दी जा रही है। देखा जायेगा कि इन में से कौन २ सी चीज़ काफ़ी मिकदार में निकल सकती है।

ਰਾਏ ਰਘੁਬੀਰ ਸਿੰਘ : यह तो पांच दस साल पहले मालूम हो चुका था।

ਅਧਿਕਸ਼ ਮਹੋਦਯ : यह सवाल नहीं है।

I can't allow you to make a statement.

ਸ਼ਰੀ ਰਾਮ ਕਿਸ਼ਨ : क्या मंत्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि Central Mineral Research Committee की ओर से ज़िला कांगड़ा में survey के काम के लिये कोई grant मंज़ूर की गई है ?

ਅਰਥ ਮੰਤਰੀ : मेरे पास इस किसम ਦੀ ਕੋਈ ਇੱਤਲਾਹ ਨਹੀ ਹੈ। ਮਾਨੂੰ ਇਹੋ ਪਤਾ ਹੈ ਕਿ Geological Department ਦੇ Research Officers ਉਥੇ ਕੰਮ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ।

ਸ਼ਰੀ ਰਾਮ ਕਿਸ਼ਨ : इस बात के पेछे-नज़र कि यह एक central subject है, क्या Central Government की Minerals Research Committee ने ज़िला कांगड़ा के geological survey के लिये कोई grant मंज़ूर की है ?

Mr. Speaker : It does not arise.

ਸਰਦਾਰ ਚੰਨਣ ਸਿੰਘ ਧੂਤ : मादनीआत ਦੇ survey ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਹਾਸਿਲ ਕਰਨ ਦੀ ਸਕੀਮ ਪੰਜ-ਸਾਲਾ ਪਲਾਨ ਵਿਚ ਸ਼ਾਮਿਲ ਕੀਤੀ ਜਾਏਗੀ ਤੇ ਜਾਂ ਕਿਸੇ ਹੋਰ ਸਕੀਮ ਦਾ ਹਿੱਸਾ ਬਣੇਗੀ ?

ਮੰਤਰੀ : survey ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਪਤਾ ਲੱਗੇਗਾ ਕਿ ਕਿਸ ਥਾਂ ਤੇ ਕਿਹੜੀ ਚੀਜ਼ ਮਿਲ ਸਕਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਕਿਹੜੀ commercial purposes ਲਈ exploit ਕੀਤੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਸਕੀਮ ਬਣਾਉਣ ਦੇ ਸੁਆਲ ਤੇ ਉਸ ਤੋਂ ਪਿਛੋਂ ਵਿਚਾਰ ਕੀਤਾ ਜਾਏਗਾ।

ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਕਿਸ਼ਨ : ਕਥਾ ਸੰਤਰੀ ਜੀ ਕੁਪਯਾ ਬਤਾਏਗੇ ਕਿ ਇਸ ਸਿਲਸਿਲੇ ਮੇਂ ਕੇਂਦਰੀ ਸਰਕਾਰ ਦੀ ਸੁਕੁਮਲ ਰਿਪੋਰਟ ਕਦੇ ਤਕ ਉਨ ਦੇ ਪਾਸ ਪਹੁੰਚ ਜਾਏਗੀ ?

ਮੰਤਰੀ : ਇਹ ਤਾਂ ਮੈਂ ਕਹਿ ਨਹੀਂ ਸਕਦਾ ਕਿ ਮੁਕੰਮਲ ਰਿਪੋਰਟ ਕਦੇ ਤਕ ਪਹੁੰਚ ਜਾਏਗੀ। ਹਾਂ, ਅਸੀਂ ਕੇਂਦਰੀ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਬੇਨਤੀ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹਾਂ ਕਿ survey ਮੁਕੰਮਲ ਕਰ ਕੇ ਛੇਤੀ ਤੋਂ ਛੇਤੀ ਰਿਪੋਰਟ ਸਾਡੇ ਕੋਲ ਭੇਜ ਦਿਤੀ ਜਾਏ।

ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਕਿਸ਼ਨ : Second Five-Year Plan ਦੇ ਸਮੇਂ minerals ਨੂੰ exploit ਕਰਨ ਦੇ ਫਾਰੇ ਮੇਂ ਜਾਰੀ ਕੀਤੀ ਗਈ ਹਿਦਾਯਤ ਦੇ ਮੁਤਾਬਿਕ ਜੋ ਸਕੀਮ ਬਣਾਈ ਜਾਏਗੀ ਕਥਾ ਉਸ ਮੇਂ ਪੰਜਾਬ ਸਰਕਾਰ ਇਨ ਮਾਦਨਿਆਤ ਦੀ, ਜਿਨ ਕਾ ਸੰਤਰੀ ਜੀ ਨੇ ਜ਼ਿਕਰ ਕੀਤਾ ਹੈ, ਸ਼ਾਮਲ ਕਰੇਗੀ।

ਮੰਤਰੀ : ਮੇਂ ਯਕੀਨੀ ਤੌਰ ਤੇ ਨਹੀਂ ਕਹਿ ਸਕਦਾ ਕਿ Planning Commission ਵਲੋਂ ਇਸ ਸਿਲਸਿਲੇ ਵਿਚ ਕੀਹ ਹਿਦਾਇਤਾਂ ਜਾਰੀ ਕੀਤੀਆਂ ਗਈਆਂ ਹਨ। ਅਸੀਂ ਇਨ੍ਹਾਂ ਚੀਜ਼ਾਂ ਦੇ ਸ਼ਾਮਲ ਕੀਤੇ ਜਾਣ ਤੇ ਜ਼ਰੂਰ ਜ਼ੋਰ ਦਿਆਂਗੇ।

ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਕਿਸ਼ਨ : ਅਗਰ ਬਿਨ ਸੰਤਰੀ ਜੀ ਦੇ notice ਮੇਂ ਧਰੁ ਹਿਦਾਯਤ ਆਏਗੀ, ਤੋ ਕਥਾ ਉਸ ਦੇ ਬਾਦ mineral exploitation ਦੇ ਸਿਲਸਿਲੇ ਮੇਂ ਰੁਕਾਵਟ ਕਰਵਾਈ ਜਾਏਗੀ

Mr. Speaker : It is a hypothetical question.

ਸ਼੍ਰੀ ਬਾਬੂ ਦਯਾਲ : ਜਿਨ ਮਾਦਨਿਆਤ ਦੇ ਫਾਰੇ ਮੇਂ survey ਹੋਨਾ ਹੈ, ਕਥਾ ਉਸ ਮੇਂ, mica ਭੀ ਜੋ ਕਿ ਇਕ important mineral ਹੈ, ਸ਼ਾਮਲ ਹੈ ?

ਮੰਤਰੀ : ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਚੀਜ਼ਾਂ ਦੇ ਸੰਬੰਧ ਵਿਚ ਕੁਝ ਪਤਾ ਸੀ ਉਹ ਸਭ ਸ਼ਾਮਲ ਕੀਤੀਆਂ ਗਈਆਂ ਹਨ। ਜੇ mica ਸੰਬੰਧੀ ਮੈਂਬਰ ਸਾਹਿਬ ਪਾਸ ਕੋਈ ਖਾਸ ਇਤਲਾਹ ਹੈ ਤਾਂ ਲਿਖ ਕੇ ਭੇਜ ਦੇਣ। ਅਸੀਂ mica ਦਾ ਕੋਈ ਖਾਸ ਖਿਆਲ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ।

ਅਧਯਕਸ਼ ਸਹੋਦਯ : ਸਾਹਿਬਾਨ ! ਸੁਭੇ Press gallery ਦੀ ਰਾਫ਼ ਸੇ ਲਿਖਾ ਹੁਆ ਇਕ ਨੋਟ ਆਯਾ ਹੈ ਕਿ ਆਕਾਸ਼ ਸੁਨਾਈ ਨਹੀਂ ਦੇਂਦੀ। ਇਸ ਲਿਖੇ ਮੈਂਬਰ ਸਾਹਿਬਾਨ ਸੇ ਮੈਂ ਅਰਜ਼ ਕਰੁੰਗਾ ਕਿ ਵੇ

THE PUNJAB REQUISITIONING AND ACQUISITION OF IMMOVABLE PROPERTY (3)43
(AMENDMENT) BILL.

कल से जो तकरीरें हो रही हैं वे सारे ऐक्ट पर हो रही हैं हालांकि वह इस बिल से सम्बन्ध नहीं रखती है ।

अध्यक्ष महोदय : आप की amendment Section 10-A के बारे में है, सलिये आप उसी पर बहिस को confine करें । सारे बिल पर बहिस नहीं हो सकती है ।

श्री श्री चन्द : साहिबे सदर ! मैं कह रहा था कि अपील डिस्ट्रिक्ट जज के पास होनी चाहिये । मैं यह बता रहा हूँ कि ये हालात हैं जिन में मिनिस्टर साहिबान को सही हालात का पता नहीं लग सकता । ये हालात हैं जिन की बाबत अपील में किसी आदमी ने सब कुछ कहना है । चीफ मिनिस्टर साहिब कहते हैं कि हम सारे ऐक्ट पर बहिस कर रहे हैं । यह बात नहीं है । मैं केवल वे बातें और वे grounds बता रहा हूँ जो किसी आदमी ने जिस का मकान requisition किया गया हो, अपील में देने हैं ।

यहां चंडीगढ़ में मिनिस्टरज को फुरसत ही नहीं होती है कि वे किसी की बात सुन सकें । यह हाल बड़े आदमियों का है । और आम आदमी की बात यहां कैसे सुनी जायेगी यह आप खुद अन्दाज़ा लगा सकते हैं । इस के उलट सेशन जज के पास अगर अपील जाएगी तो वह उस के लिये तारीख देगा और वहां सारे हालात सुनने का माहौल होगा । वहां एक आदमी वकील ले जा सकता है । और फिर उन को ट्रेनिंग होती है यह देखने के लिये कि दोनों पार्टियों में से किस का case strong और ठीक है । अगर District Judge के पास अपील जाए तो यह बिद्दत और लानत, जिस से लोगों को तंग किया जा रहा है, खत्म हो सकती है । अब यह हो रहा है कि जिस मकान का २०० रुपये किराया होता है उसे २० रुपये पर requisition किया जाता है । इस वक्त इस मामले में डिप्टी कमिशनर जो हिटलरशाही कर रहे हैं वह डिस्ट्रिक्ट जज को अपील सुनने के इस्तिथार दे कर खत्म की जा सकती है । और फिर जो अफसर मकान requisition करता है उसी को अपील सुनने के इस्तिथारात नहीं दिये जाने चाहियें । अपील सुनने के इस्तिथारात District Judge को होने चाहियें । इसी लिये मैंने यह amendment पेश की है ।

प्रोफेसर मोता सिंह आनन्दपुरी (आदमपुर) : स्पीकर साहिब ! इस में शक नहीं कि इस मौके पर Requisitioning और Acquisition of Immovable Property Act के बारे में बहुत कुछ कहने की जरूरत नहीं है क्योंकि यह amendment Section 10-A के बारे में है । Section 6-A के अधीन जब कोई application reject हो जाए तो 10-A के मुताबिक उस की अपील हो सकती है । बहस का मुद्दा यह है कि अपील करने वाले आदमी के साथ इनसाफ़ हो । जिस मामले को आज हम इस democratic age में हल करने की कोशिश कर रहे हैं और जिसे हम बरतानवी राज के समय से हल करने का यत्न करते आए हैं वह है Executive की Judiciary से अलहदगी । जब तक वह इकट्ठे रहेंगे, इनसाफ़ नहीं होगा । आज एक application दी जाती है । Competent Authority जो उस का केस सुनने वाली है वह executive है । वहां से इनसाफ़ की उम्मीद कैसे हो सकती है ? इस के अलावा मैं अर्ज करूंगा कि चीफ मिनिस्टर साहिब आज खुद उस बात को violate कर रहे हैं जो वह खुद कहते आए हैं । Executive का काम है requisition करना ।

[ਸ਼੍ਰੀ ਸ਼੍ਰੀ ਚੰਦ]

ਉਸ ਕਾ ਕਾਮ appellate court ਕਾ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਤਾ । ਅਗਰ Executive ਹੀ appellate court ਕਾ ਕਾਮ ਕਰੇਗੀ ਤੋ ਇਨਸਾਫ਼ ਕਮੀ ਨਹੀਂ ਹੋਗਾ । ਇਸਲਿਏ ਮੈਂ ਧਰ ਚਾਹੁਤਾ ਹੂੰ ਕਿ ਅਪੀਲ ਕਾ ਹੁਕ ਸੈਸ਼ਨ ਕੋਰਟ ਕੋ ਦਿਯਾ ਜਾਏ ਕਰਨਾ ਕਿਸੀ ਇਨਸਾਫ਼ ਕੀ ਕਰਕੀ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਤੀ । Opposition ਕੇ ਮੈਂਬਰੋਂ ਨੇ ਕਾਰ ਕਾਰ ਇਸ ਕਾਨ ਪਰ ਜ਼ੋਰ ਦਿਯਾ ਹੈ ਕਿ ਅਗਰ ਅਪੀਲ ਸੁਨਨੇ ਕਾਲਾ ਕਹੀ ਹੋ ਜੋ ਇਸ ਕੇਸ ਮੇਂ ਖ਼ੁਦ ਪਾਈ ਹੋ ਤੋ ਇਨਸਾਫ਼ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਤਾ । ਇਸਲਿਏ ਮੈਂ ਕਹੁਤਾ ਹੂੰ ਕਿ Section 10-A ਕੇ ਸੁਭਾਕਿਕ ਅਪੀਲ ਸੁਨਨੇ ਕਾ ਹੁਕ State Government ਕੀ ਕਜਾਏ Sessions Court ਕੋ ਹੋਨਾ ਚਾਹਿਏ ।

ਸਰਦਾਰ ਅੱਛਰ ਸਿੰਘ ਛੀਨਾ (ਅਜਨਾਲਾ) : ਸ਼੍ਰੀਮਾਨ ਜੀ ! ਇਹ

ਜੇਹੜਾ ਬਿਲ ਪਾਸ ਕੀਤਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ, ਲਗਦਾ ਤਾਂ ਬਹੁਤ ਸੋਹਣਾ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਇਸ ਰਾਹੀਂ ਅਪੀਲ ਦਾ ਹੱਕ ਦਿੱਤਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ, ਪਰ ਇਹ ਅਪੀਲ ਕਿਸ ਪਾਸ ਹੋਣੀ ਹੈ ? ਇਹ ਅਪੀਲ ਉਸ ਅਫ਼ਸਰ ਦੀ higher authority ਪਾਸ ਹੋਣੀ ਹੈ ਜਿਸ ਨੇ ਪਹਿਲਾ ਆਰਡਰ ਦਿੱਤਾ ਸੀ । ਸਾਡਾ ਇਹ ਤਲਖ ਤਜਰਬਾ ਹੈ ਕਿ ਕਿਸੇ ਮਹਿਕਮੇ ਵਿਚ ਜੇ ਗਲ ਬੱਲਿਉਂ ਲਿਖੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ, ਉਪਰ ਤਕ ਉਹੋ ਕਾਇਮ ਰੱਖੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ । ਜੇ ਕੁਝ ਇਕ ਪਟਵਾਰੀ ਲਿਖ ਦਿੰਦਾ ਹੈ ਕਮਿਸ਼ਨਰ, ਡਿਨਾਨਸ਼ਲ ਕਮਿਸ਼ਨਰ ਅਤੇ ਵਜ਼ਾਰਤ ਤਕ ਉਸੇ ਤੇ ਮੱਖੀ ਤੇ ਮੱਖੀ ਮਾਰੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ । ਇਸ ਲਈ ਮੈਂ ਕਹਿੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਜੇ ਅਪੀਲ judicial branch ਪਾਸ ਨਹੀਂ ਜਾਣੀ ਤਾਂ ਇਸ ਦਾ ਕੋਈ ਲਾਭ ਨਹੀਂ ਹੋਵੇਗਾ ।

ਮੈਂ ਸਰਕਾਰੀ ਕੰਮ ਦੀ ਇਕ ਮਿਸਾਲ ਦਿੰਦਾ ਹਾਂ । ਲੋਕਾਂ ਨੇ Executive Engineer ਪਾਸ ਦਰਖਾਸਤਾਂ ਦਿੱਤੀਆਂ ਕਿ ਸਾਡੀ crop destroy ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੈ । ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਉਹ ਦਰਖਾਸਤਾਂ S.D.O. ਨੂੰ ਭੇਜ ਦਿੱਤੀਆਂ । ਫੇਰ ਪਤਾ ਲੱਗਾ ਕਿ ਉਹ ਜੰਡਿਆਲਾ ਡਵੀਜ਼ਨ ਵਿਚ ਭੇਜੀਆਂ ਗਈਆਂ ਹਨ, ਹਾਲਾਂਕਿ ਉਸ ਡਵੀਜ਼ਨ ਨਾਲ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਕੋਈ ਸੰਬੰਧ ਨਹੀਂ ਸੀ । ਫੇਰ ਜਦੋਂ ਲੋਕ ਦਫ਼ਤਰ ਵਿਚ ਪਤਾ ਕਰਨ ਆਉਂਦੇ ਹਨ ਤਾਂ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਤੁਹਾਡੀਆਂ ਦਰਖਾਸਤਾਂ ਜੰਡਿਆਲਾ ਡਵੀਜ਼ਨ ਵਿਚ ਗਈਆਂ ਹਨ, ਐਥੇ ਨਿਕਲ ਜਾਉ । ਇਸ ਲਈ ਅਸੀਂ ਕਹਿੰਦੇ ਹਾਂ ਕਿ judiciary ਅਤੇ executive ਅਡ ਅਡ ਹੋਣ । ਉਸ ਅਪੀਲ ਦਾ ਕੋਈ ਮਤਲਬ ਨਹੀਂ ਜਿਹੜੀ ਇਕ authority ਤੋਂ ਦੂਜੀ ਪਾਸ ਹੋਵੇਗੀ ਕਿਉਂਕਿ ਉਹ ਜ਼ਰੂਰ ਨਾਮਨਜ਼ੂਰ ਹੋ ਜਾਵੇਗੀ । ਜੇ ਅਪੀਲ ਹੋਣੀ ਹੈ ਤਾਂ ਉਹ ਸੈਸ਼ਨ ਜੱਜ ਪਾਸ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਜੋ ਉਹ ਸਾਰੇ ਹਾਲਾਤ ਸਮਝ ਕੇ ਫੈਸਲਾ ਕਰੇ ।

ਸਰਦਾਰ ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ (ਸਮਰਾਲਾ) : ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ ! ਸਰਕਾਰ ਦਾ ਹਰ ਇਕ action ਅਜਿਹਾ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਜਿਹੜਾ above suspicion ਹੋਵੇ ਅਤੇ justice administer ਕਰਨ ਵਾਲੀ authority ਤੇ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਕਿਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਸ਼ਕ ਦੀ ਗੁੰਜਾਇਸ਼ ਹੀ ਨ ਹੋਵੇ । Justice ਦੋ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ । ਇਕ ਤਾਂ between citizen and citizen, ਅਤੇ ਦੂਜੀ between citizens and State । ਤੁਸੀਂ Rent Restriction Act ਦੀ ਮਿਸਾਲ ਲਓ । ਜੇ ਕੋਈ ਮਾਲਕ ਕਿਸੇ ਕਿਰਾਏਦਾਰ ਤੋਂ ਆਪਣਾ ਮਕਾਨ ਛੁੜਾਣਾ ਚਾਹੇ ਤਾਂ ਇਹ ਮੁਕੱਦਮਾ ਦੋ ਸ਼ਹਿਰੀਆਂ ਵਿਚ ਹੁੰਦਾ ਹੈ, ਇਹਦਾ ਫ਼ੈਸਲਾ ਸਬ-ਜਜ਼ First Class ਕਰਦਾ ਹੈ । ਐਕਟ ਵਿਚ provide ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ ਕਿ ਅਜਿਹੇ ਮੁਕੱਦਮਿਆਂ ਦੀਆਂ ਅਪੀਲਾਂ District Judge ਨੂੰ ਕੀਤੀਆਂ ਜਾ ਸਕਦੀਆਂ ਹਨ ।

ਮੈਂ ਸਮਝਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਇਸ ਬਿਲ ਰਾਹੀਂ ਅਪੀਲਾਂ ਆਪ ਸੁਣਨ ਦਾ ਅਧਿਕਾਰ ਲੈਣ ਦੀ ਸਰਕਾਰ ਪਾਸ ਕੋਈ justification ਨਹੀਂ । Competent authority ਭਾਂਵੇਂ ਕੋਈ ਹੋਵੇ, ਜੇ ਉਹਨੂੰ ਪਤਾ ਹੋਵੇ ਕਿ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਕਿਸੇ ਜਾਇਦਾਦ ਦੇ ਛਡਣ ਦੇ ਹੱਕ ਵਿਚ ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਉਹ ਕਦੇ ਵੀ ਸਰਕਾਰ ਦੀ ਮਨਸ਼ਾ ਦੇ ਖਿਲਾਫ਼ ਫ਼ੈਸਲਾ ਨਹੀਂ ਦੇਵੇਗੀ ਤੇ ਨਾ ਹੀ ਉਨੂੰ ਇੰਜ ਕਰਨ ਦੀ ਜੁਰਅਤ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ ।

ਇਸ ਕਰ ਕੇ ਜੇ ਅਪੀਲ competent authority ਕੋਲ ਜਾਣੀ ਹੈ ਤਾਂ ਅਪੀਲ ਦਾ ਹੱਕ ਦੇਣਾ ਨਾ ਦੇਣਾ ਬਰਾਬਰ ਹੋਏਗਾ । ਜੇ ਸਰਕਾਰ ਸਚਮੁਚ ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕਿ ਬਿਲ ਦੇ objects and reasons ਦੇ statment ਵਿਚ ਲਿਖਿਆ ਹੋਇਆ ਹੈ—ਲੋਕਾਂ ਦੀਆਂ ਤਕਲੀਫ਼ਾਂ ਨੂੰ ਮਹਿਸੂਸ ਕਰਦੀ ਹੈ ਤੇ ਦੂਰ ਵੀ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਉਹ ਅਪੀਲਾਂ ਨੂੰ ਅਦਾਲਤਾਂ ਵਿਚ ਜਾਣ ਦੇਵੇ । Competent authorities ਦੇ ਫ਼ੈਸਲਿਆਂ ਦੀ ਅਪੀਲ ਹਮੇਸ਼ਾ judicial officers ਕੋਲ ਹੁੰਦੀ ਹੈ । Requisition ਤੇ acquisition ਦੀਆਂ ਜਿਹੜੀਆਂ powers District Magistrates ਨੂੰ ਮਿਲੀਆਂ ਹੋਈਆਂ ਹਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਉਹ State Government ਦੇ behalf ਤੇ exercise ਕਰਦੇ

[ਸਰਦਾਰ ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ]

ਹਨ। ਪੰਜਾਬ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਆਪ ਹੀ ਜਾਇਦਾਦ ਨੂੰ requisition ਕਰੇ ਜਾਂ acquire ਕਰਨ ਦਾ ਫ਼ੈਸਲਾ ਕਰੇ ਤੇ ਆਪ ਹੀ ਉਸ ਫ਼ੈਸਲੇ ਦੇ ਖਿਲਾਫ਼ ਅਪੀਲ ਸੁਣੇ ਤਾਂ ਇਹਦਾ ਮਤਲਬ ਤਾਂ ਇਹ ਹੋਇਆ ਕਿ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਆਪ ਹੀ ਇਕ ਪਾਰਟੀ ਹੋਵੇਗੀ ਤੇ ਆਪ ਹੀ ਜੱਜ ਹੋਏਗੀ। ਜੇ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਸ਼ਹਾਦਤ ਦੀ ਲੋੜ ਪਏਗੀ ਤਾਂ District Magistrate aggrieved ਆਦਮੀ ਦੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਦੀ ਤਰਦੀਦ ਕਰਨ ਲਈ ਝੱਟ ਕੋਈ ਗਵਾਹ ਪੇਸ਼ ਕਰ ਦੇਵੇਗਾ ਜਿਹੜਾ ਕਹੇਗਾ ਕਿ applicant ਜੋ ਕੁਝ ਕਹਿ ਰਿਹਾ ਹੈ ਬਿਲਕੁਲ ਗਲਤ ਹੈ। ਪੰਜਾਬ ਸਰਕਾਰ ਆਪ ਹੀ ਇਕ ਪਾਰਟੀ ਹੋਵੇਗੀ, ਆਪ ਹੀ evidence ਪੇਸ਼ ਕਰੇਗੀ ਤੇ ਆਪ ਹੀ ਫ਼ੈਸਲਾ ਦੇਵੇਗੀ। ਇਹ ਤਾਂ ਇਕ ਬੜੀ ਅਜੀਬ ਜਿਹੀ ਪੋਜ਼ੀਸ਼ਨ ਹੈ। ਮੇਰੇ ਖਿਆਲ ਵਿਚ out of 100, ਇਕ ਕੇਸ ਵਿਚ ਵੀ ਫ਼ੈਸਲਾ ਜਾਇਦਾਦ ਦੇ ਮਾਲਕ ਦੇ ਹੱਕ ਵਿਚ ਨਹੀਂ ਹੋਵੇਗਾ। Consolidation Act ਦੀ ਦਫ਼ਾ ੪੨ ਨੂੰ ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਪੰਜਾਬ ਗਵਰਨਮੈਂਟ misuse ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ, ਹੋਰ ਕਿਸੇ ਐਕਟ ਦੀ ਕਿਸੇ ਵੀ ਦਫ਼ਾ ਦਾ ਅੱਜ ਤਕ ਗ਼ਲਤ ਇਸਤੇਮਾਲ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਇਹ ਸਵਾਲ citizens ਦੀ ਲੱਖਾਂ, ਕਰੋੜਾਂ ਰੁਪੈ ਦੀ ਜਾਇਦਾਦ ਉਪਰ ਕਬਜ਼ਾ ਕਰਨ ਦਾ ਹੈ। ਪੰਜਾਬ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਦਾ appellate ਅਧਿਕਾਰ ਆਪਣੇ ਤਾਈਂ ਰਖਣਾ ਲੋਕਾਂ ਨਾਲ ਜ਼ਿਆਦਤੀ ਅਤੇ ਧੋਕਾ ਹੈ। Competent authority ਦੇ ਫ਼ੈਸਲਿਆਂ ਦੀਆਂ ਅਪੀਲਾਂ ਨੂੰ ਅਦਾਲਤਾਂ ਵਿਚ ਨਾ ਜਾਣ ਦੇਣਾ ਇਨਸਾਫ਼ ਦਾ ਮਖੌਲ ਉੜਾਣਾ ਹੈ। ਜੇ ਸਰਕਾਰ ਨੇਕ-ਨੀਯਤੀ ਨਾਲ ਲੋਕਾਂ ਦੀਆਂ grievances ਨੂੰ ਦੂਰ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਅਪੀਲਾਂ ਸੁਣਨ ਦਾ ਅਧਿਕਾਰ District Judges ਨੂੰ ਦਿੱਤਾ ਜਾਏ। ਤਾਂ ਹੀ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਇਨਸਾਫ਼ ਮਿਲਣ ਦੀ ਆਸ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ।

Punjab Rent Restriction Act ਦੀ ਜ਼ਦ ਵਿਚ ਆਉਣ ਵਾਲੇ ਕੇਸਾਂ ਦਾ ਤਾਂ revision High Court ਵਿਚ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਜੇ ਇਸ ਤਰਮੀਮ ਨੂੰ ਪਰਵਾਨ ਨਾਂ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਤਾਂ requisition ਤੇ acquisition ਦੇ cases ਨੂੰ ਬਿਨਾਂ writ ਦੇ ਕੋਈ aggrieved party High Court

ਵਿਚ ਨਹੀਂ ਲੈ ਜਾ ਸਕੇਗੀ। ਇਸ ਤਰਮੀਮ ਨੂੰ ਮੰਜ਼ੂਰ ਕਰ ਕੇ ਸਰਕਾਰ ਸਹੀ ਮੈਨਿਆ ਵਿਚ ਲੋਕਾਂ ਵਿਚ confidence restore ਕਰੇਗੀ।

ਮੌਲਵੀ ਅਬਦੁਲ ਗਨੀ ਭਾਰ (ਨੂਹ) : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ ! ਮੈਂ ਬੜਾ ਖੁਸ਼ ਹੋਇਆ ਸੀ, ਇਹ ਵੇਖ ਕੇ ਕਿ ਤੁਹਾਡੇ ਪ੍ਰਧਾਨ ਬਣਦਿਆਂ ਹੀ ਮੁਖਯ ਮੰਤ੍ਰੀ ਹੋਰਾਂ ਇਕ ਅਜਿਹਾ ਤਰਮੀਮੀ ਬਿਲ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਜਿਹੜਾ public ਦਾ ਭਾਰ ਹਲਕਾ ਕਰਨ ਵਾਲਾ ਦਿਸਦਾ ਸੀ। ਮੈਂ ਸੋਚਿਆ ਕਿ ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ ਵੀ ਨੌਜਵਾਨ ਹਨ ਅਤੇ ਮੁਖਯ ਮੰਤ੍ਰੀ ਹੋਰੀਂ ਵੀ ਰੁਖ ਬਦਲ ਰਹੇ ਹਨ ; ਹੁਣ ਤਾਂ ਜਨਤਾ ਦੀ ਭਲਾਈ ਜ਼ਰੂਰ ਹੋਵੇਗੀ। ਪਰ ਅਜ ਪਤਾ ਲੱਗਾ ਹੈ ਕਿ ਮੁਖਯ ਮੰਤ੍ਰੀ ਅਸਲ ਵਿਚ ਲੋਕਾਂ ਦਾ ਭਾਰ ਹਲਕਾ ਨਹੀਂ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦੇ। ਪਿਛਲੇ ਦੋ ਸਾਲਾਂ ਤੋਂ ਜਿੰਨੇ ਬਿਲ ਹਾਊਸ ਵਿਚ ਪੇਸ਼ ਕੀਤੇ ਜਾ ਰਹੇ ਹਨ, ਲੋਕਾਂ ਤੇ ਭਾਰ ਪਾਉਣ ਵਾਲੇ ਹਨ।

ਇਸ ਬਿਲ ਨੂੰ ਵੇਖ ਕੇ ਮੈਨੂੰ ਲਪੌੜਸੰਖ ਦੀ ਗਲ ਯਾਦ ਆਉਂਦੀ ਹੈ। ਉਹਦੇ ਕੋਲੋਂ ਕਿਸੇ ਨੇ ਪੰਜ ਰੁਪਏ ਉਧਾਰ ਮੰਗੇ ਤੇ ਉਹ ਕਹਿਣ ਲਗਾ 'ਪੰਜ ਕਿਉਂ ਜੀ, ਤੁਸੀਂ ਪੰਜਾਹ ਲਓ'। ਜਦ ਮੰਗਣ ਵਾਲੇ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ 'ਪੰਜ ਹੀ ਦੇ ਦਿਓ, ਪੰਜਾਹ ਤਾਂ ਮੈਂ ਸ਼ਾਇਦ ਵਾਪਸ ਹੀ ਨਾ ਕਰ ਸਕਾਂ', ਤਾਂ ਲਪੌੜਸੰਖ ਕਹਿਣ ਲਗਾ 'ਤੁਸੀਂ ੫੦੦ ਰੁਪਏ ਲੈ ਲਓ ਜੀ, ਤੇ ਤਿਜਾਰਤ ਕਰੋ'। ਮੰਗਣ ਵਾਲਾ ਉਹਦਾ ਮੂੰਹ ਤਕਣ ਲਗ ਪਿਆ ਤਾਂ ਲਪੌੜਸੰਖ ਬੋਲਿਆ 'ਮੈਂ ਤੁਹਾਨੂੰ ਪੰਜ ਹਜ਼ਾਰ ਦਿਆਂਗਾ, ਤੁਸੀਂ ਛਿਕਰ ਨ ਕਰੋ'। (ਹਾਸਾ) ਸਾਡੀ ਸਰਕਾਰ ਦਾ ਬਿਲਕੁਲ ਉਹੀ ਹਾਲ ਹੈ। ਪੰਜ ਰੁਪਏ ਤਾਂ ਦੇਣ ਲਈ ਤਿਆਰ ਨਹੀਂ ਤੇ ਲਾਰੇ ਬੜੇ ੨ ਦਿੰਦੀ ਹੈ। ਜੇ ਮੁਖਯ ਮੰਤ੍ਰੀ ਸਚਮੁਚ ਸਮਝਦੇ ਹਨ ਕਿ ਲੋਕਾਂ ਨਾਲ ਬੇਇਨਸਾਫ਼ੀ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ, ਜੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਲੋਕਾਂ ਦੀਆਂ ਤਕਲੀਫਾਂ ਦਾ ਅਹਿਸਾਸ ਹੈ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਅਦਾਲਤਾਂ ਵਿਚ ਅਪੀਲ ਕਰਨ ਦਾ ਹੱਕ ਦੇਣ ਤੋਂ ਸੰਕੋਚ ਨਾ ਕਰਨ। ਅਸਲ ਗਲ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਹੁਣ ਇਸ ਕਾਨੂੰਨ ਦੀ ਕੋਈ ਖਾਸ ਲੋੜ ਹੀ ਨਹੀਂ। ਜੰਗ ਦੇ ਦਿਨਾਂ ਵਿਚ ਤੇ ਬਟਵਾਰੇ ਦੇ ਕੁਝ ਚਿਰ ਪਿਛੋਂ ਇਹਦੀ ਬਹੁਤ ਲੋੜ ਸੀ, ਹੁਣ ਨਹੀਂ। ਅੱਜ ਸਾਡੇ ਪ੍ਰਧਾਨ ਇਕ ਖੁਸ਼ਬਖ਼ਤ ਨੌਜਵਾਨ ਹਨ ; ਮੈਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਰਾਹੀਂ ਸਰਕਾਰੀ ਬੈਂਚਾਂ ਤੇ ਬੈਠੇ ਭਰਾਵਾਂ ਨੂੰ ਕਹਿਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਉਹ ਲਪੌੜਸੰਖਾਂ ਵਾਲੀਆਂ

[ਮੌਲਵੀ ਅਬਦੁਲ ਗਨੀ ਡਾਰ]

ਗੱਲਾਂ ਨ ਕਰਨ ਤੇ ਲੋਕਾਂ ਦੀਆਂ ਤਕਲੀਫ਼ਾਂ ਦਾ ਅਹਿਸਾਸ ਕਰ ਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਇਲਾਜ ਕਰਨ।

ਬਜਟ ਸੈਸ਼ਨ ਵਿਚ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਰੌਲਾ ਰਾਮ ਤੇ ਰਾਜਾ ਰਘੁਵੀਰ ਸਿੰਘ ਵਰਗੇ ਮੈਂਬਰਾਂ ਨੇ ਸਰਕਾਰ ਦਾ ਧਿਆਨ red-tapism ਵਲ ਦਿਵਾਇਆ ਸੀ।

ਅਧਯਕਸ਼ ਸਹੋਦਯ : ਆਪ amendment ਪਰ ਬੋਲੋ, general discussion ਨ ਕਰੋ।

ਮੌਲਵੀ ਅਬਦੁਲ ਗਨੀ ਡਾਰ : ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ ! ਮੈਂ ਇਹ ਕਹਿ ਰਿਹਾ ਸੀ ਕਿ ਜੇ ਸਰਕਾਰ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਹਾਲਤ ਬੇਹਤਰ ਬਣਾਉਣਾ ਚਾਹੁੰਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਉਹ judiciary ਦਾ ਕੰਮ judiciary ਨੂੰ ਹੀ ਦੇਵੇ ਤੇ Opposition ਵਲੋਂ ਜਿਹੜੀ ਤਰਮੀਮ ਆਈ ਹੈ ਉਸਨੂੰ ਇਹ ਸਮਝ ਕੇ ਮਨਜ਼ੂਰ ਕਰ ਲਵੇ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਆਪਣੀ ਹੀ ਤਰਮੀਮ ਹੈ।

ਕੀਹ ਇਹ ਅਨਿਆਏ ਨਹੀਂ ਕਿ ਸਰਕਾਰ ਕਿਸੇ ਦੀ ਜਾਇਦਾਦ ਉਪਰ ਕਬਜ਼ਾ ਕਰ ਲਏ ਤੇ ਉਸਨੂੰ ਅਦਾਲਤ ਵਿਚ ਜਾਣ ਦਾ ਹਕ ਵੀ ਨ ਦੇਵੇ ? ਕੀਹ ਅਜਿਹਾ ਕਰਨਾ ਲੋਕਾਂ ਦੇ fundamental rights ਤੇ ਛਾਪਾ ਮਾਰਨ ਦੇ ਤੁਲ ਨਹੀਂ ਹੈ ? ਮੈਂ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਫਿਰ ਬੇਨਤੀ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਉਹ ਇਸ amendment ਨੂੰ ਮੰਨ ਲਏ ਤਾਂ ਜੋ ਲੋਕਾਂ ਦਾ ਉਹਦੇ ਵਿਚ confidence ਵਧ ਜਾਏ ਤੇ ਜਕੀਨ ਹੋ ਜਾਏ ਕਿ ਇਸ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਹਥੋਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਇਨਸਾਫ਼ ਮਿਲ ਸਕਦਾ ਹੈ।

ਸੂਫ਼ਯ ਸੰਤ੍ਰੀ (ਐਮੀਸ ਸੈਨ ਸਚਚਰ) : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ ! ਕਹਿਸ ਕਾ ਦਾਧਰਾ ਬਹੁਤ ਕਸੀਹ ਕਰ ਦਿਯਾ ਗਯਾ ਹੈ। ਅਸਲ ਮੈਂ ਬਾਤ ਤੋ ਕਹੁਤ ਸਾਮੂਲੀ ਥੀ। ਬਾਤ ਕੀ ੫ ਰੁਪਏ ਸੇ ਕਫ਼ਾ ਕਰ ੫ ਹਜ਼ਾਰ ਐਂਡ ੧੦ ਹਜ਼ਾਰ ਤਕ ਲੇ ਜਾਯਾ ਗਯਾ। ਅਗਰ ਤਨ ਕੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ੫ ਰੁਪਏ ਕੀ ਥੀ ਤੋ ਫਿਰ ੫ ਹਜ਼ਾਰ ਤਕ ਲੇ ਜਾਨੇ ਕਾ ਕਯਾ ਸਤਲਕ ਥਾ ? ਮੈਂਨੇ ਕਲ ਮੀ ਅਰਜ਼ ਕੀ ਥੀ ਐਂਡ ਆਜ ਫਿਰ ਅਰਜ਼ ਕਰਤਾ ਹੂੰ ਕਿ ਇਸ ਕਲਾਜ਼ ਕਾ ਸਤਲਕ ਯਹ ਹੈ ਕਿ ਜਬ requisition ਕੀ ਸਾਰੀ stage ਗੁਜ਼ਰ ਜਾਤੀ ਹੈ ਯਾਨੀ orders ਹੋ ਜਾਤੇ ਹੈ ਐਂਡ property requisition ਹੋ ਜਾਤੀ ਹੈ ਫਿਰ ਸਾਲਿਕ ਸਕਾਨ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਕੇ ਪਾਸ appeal ਕਰ ਸਕਤਾ ਹੈ। ਯਹ ਸਬ ਬਾਤੋਂ original Act ਮੈਂ provide ਕੀ ਗਈ ਹੈ। ਇਸ ਕੇ ਸਿਵਾਏ ਸਾਲਿਕ ਸਕਾਨ ਕੇ ਪਾਸ ਕੋਈ ਚਾਰਾ ਨਹੀਂ ਹੋਤਾ ਥਾ ਐਂਡ property ਕੀ requisition ਹੁਏ ਸਾਲੋਂ ਗੁਜ਼ਰ ਜਾਤੇ ਥੇ। ਯਹਾਂ ਤਕ ਕਿ ਤਸੇ requisition ਹੁਏ ਕਿਤਨਾ ਹੀ ਅਰਸਾ ਗੁਜ਼ਰ ਜਾਤਾ ਥਾ ਲੇਕਿਨ

THE PUNJAB REQUISITIONING AND ACQUISITION OF IMMOVABLE PROPERTY (3)49
(AMENDMENT) BILL.

जब तक authorities खुद नहीं move करती थीं तब तक derequisition करवाने के लिये कोई कार्यवाही नहीं की जाती थी। जब मैंने देखा कि properties बहुत पुराने समय से requisition हुई हुई हैं तो मैंने अहकाम जारी कर दिये कि जिले के अफसरान न मामलों की देख भाल करें और मेरी तमल्ली करें कि एक property जो ५ साल से requisition हुई है क्यों derequisition नहीं हो सकती। उन को महकमाना तौर पर instructions दे दी गई हैं कि वे ऐसे केसों को तैयार करें और अब इन instructions को हम कानून की शकल देना चाहते हैं। अगर पहली बार किसी को कामयाबी नहीं होती तो वह दोबार मामला खड़ा कर सकता है। दो साल की मियाद का होना जरूरी है। यह बात उचित नहीं है कि हर वक्त पर दरखास्त दी जा सके। दो साल के बाद मालिक को दरखास्त देने का कानूनी हक मिल जाता है और फिर अपील का हक भी मिल जाता है। अब बात यह रह गई कि जो दरखास्त derequisition के लिये दी गई है अगर वह reject हो जाती है तो यह देखने का right कि वह दरखास्त मुनासिब तौर पर reject हुई है किस authority पर छोड़ा जाये। हमने यह हक गवर्नमेंट को दिया है। मैम्बर साहिबान को यह बात नहीं भूलनी चाहिए कि original Act में requisition की गई property के बारे में जो appeal करनी होती है वह भी Government के पास ही करनी होती है। मैंने जिला के अफसरान को instructions दी हैं कि वे इन cases को light-heartedly न deal करें बल्कि पूरी छानबीन से और न्याय की दृष्टि से उन का फ़ैसला करें। स्पीकर साहिब ! यह कहा गया है कि District authority के फ़ैसलों के बरखिलाफ़ appeal judicial authorities के पास होनी चाहिये तो मैं यह अर्ज करूंगा कि जब किसी मामले का फ़ैसला judicial authorities करती हैं तो वह मामला बहुत लम्बा हो जाता है। शहादतें होती हैं, गवाहियां होती हैं और Lawyers को engage करना पड़ता है जो कि जरूर करते हैं। इस तरह बहुत सारा additional खर्च हो जाता है। बहुत सारा material इकट्ठा करना पड़ता है। इस तरह इस procedure में काफ़ी दिक्कत पैदा हो जाती है। इसी लिये हमने appeal का right गवर्नमेंट के पास रखा है

स्पीकर साहिब ! उन की बहस का सारांश तो यही है कि लोगों को इन्साफ़ मिले, शीघ्र मिले और इन्साफ़ लेने में उन्हें तकलीफ़ न हो। इस सिलसिले में मैं अर्ज करना चाहता हूं कि अगर जनता की यह तकलीफ़ें हमारे पेशेनज़र न होतीं तो हम को यह तरमीमी बिल लाने की जरूरत ही न पड़ती। सरकार भी यही कुछ चाहती है और यही सरकार की पालिसी है। जब पालिसी नेक नीयती पर मबनी है तो फिर उन्हें चिन्ता किस बात की है ? मैं अपने इन दोस्तों को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि मुझे उन के विचारों का बहुत इहत्थाम है और मैं खुद देखूंगा कि उन के विचारों को सामने रख कर ज्यादा से ज्यादा क्या कुछ किया जा सकता है। यह जरूरी नहीं है कि यह authority गवर्नमेंट के ही पास रहे, authority बादअज़ां delegate भी की जा सकती है। उन के ख्यालात की ज्यादा से ज्यादा कदर हम किस तरह कर सकते हैं यह हम देख लेंगे। जहां तक इस बात का ताल्लुक है कि affected persons के केसिज को light-heartedly न deal किया जाए, इस के बारे में मैंने पहले भी Deputy Commissioners को instructions

[मुख्य मंत्री]

की हुई हैं। अब दोबारा कर दूंगा कि उन को और भी rigidly follow किया जाए। स्पीकर साहिब! अन्त में मैं यह फिर कहना चाहता हूं कि यह तरसीभी बिल लोगों के आराम के पेशेनजर ही लाया गया है। इस लिये मेरी हाऊस से दरखास्त है कि इस को जल्दी ही पास किया जाए।

Mr. Speaker : Question is—

In the proposed section 10-A (1), lines 4—8,

For “ within twenty-one days State Government ” substitute “ within thirty days from the date of service of the order, prefer an appeal to the District Judge.”

After ascertaining the votes of the House by voices, Mr. Speaker said, “I think the Noes have it.” This opinion was challenged and division was claimed. Mr. Speaker, after calling upon those Members who challenged the decision and supported the claim for a division, to rise in their places, declared that the division was unnecessarily claimed.

The motion was declared lost

Mr. Speaker : Question is—

That Clause 3 stand part of the Bill.

The motion was carried

CLAUSE 1

Mr. Speaker : Question is—

That Clause 1 stand part of the Bill.

The motion was carried

TITLE

Mr. Speaker : Question is—

That Title be the Title of the Bill.

The motion was carried

Chief Minister (Shri Bhim Sen Sachar) : Sir, I beg to move—

That the Punjab Requisitioning and Acquisition of Immovable Property (Amendment) Bill be passed.

Mr. Speaker : Motion moved—

That the Punjab Requisitioning and Acquisition of Immovable Property (Amendment) Bill be passed.

ਸਰਦਾਰ ਸਰੂਪ ਸਿੰਘ (ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਸ਼ਹਿਰ ਪੂਰਬ) : ਸਪੀਕਰ

ਸਾਹਿਬ! ਇਹ ਜਿਹੜਾ ਬਿਲ ਅੱਜ ਸਾਡੇ ਸਾਮ੍ਹਨੇ ਹੈ ਇਸ ਦੇ ਪਾਸ ਹੋਣ ਨਾਲ ਮੈਂ ਸਮਝਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਇਸ ਵਿਚ ਲਿਖੇ ਗਏ objects and reason-
ਦਾ purpose serve ਹੋਣੀ ਨਹੀਂ ਸਕਦਾ। ਇਸ statement ਵਿਚ ਦਸਿਆ ਗਿਆ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਬਿਲ ਇਸ ਲਈ ਲਿਆਂਦਾ ਗਿਆ ਹੈ ਤਾਂ ਜੋ ਜਿਨ੍ਹ

ਲੋਕਾਂ ਦੀਆਂ properties requisition ਜਾਂ acquisition ਕੀਤੀਆਂ ਦੀਆਂ ਹਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਇਹ derequisition ਕਰਾਉਣ ਲਈ ਕੋਈ relief ਪਹੁੰਚਾਈ ਜਾਵੇ। ਮੈਂ ਸਮਝਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਜੇ relief ਦੇ ਮੈਹਨੇ ਇਹੀ ਹਨ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਇਕ ਹੋਰ authority ਪਾਸ ਦਰਖਾਸਤ ਦੇਣ ਦੀ permission ਦਿੱਤੀ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਮੈਂ ਸਮਝਦਾ ਹਾਂ ਇਸ ਨਾਲ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਕੋਈ ਫ਼ਾਇਦਾ ਨਹੀਂ ਹੋਵੇਗਾ। ਹਾਂ, ਜੇ ਇਸ ਦਾ ਮਤਲਬ ਇਹ ਹੋਵੇ ਕਿ ਇਹ relief ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਹੋਰ ਵੀ refined ਤੌਰ ਪੁਰ ਦਿੱਤੀ ਜਾਵੇ ਫ਼ਿਰ ਤਾਂ ਇਸ ਦਾ ਕੋਈ ਲਾਭ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਪਰ ਮੈਂ ਸਮਝਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਇਸ ਦੀ ਰਾਹੀਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੀ property ਵਾਪਸ ਲੈਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰਨ ਲਈ ਅੱਗੇ ਨਾਲੋਂ ਕੋਈ ਵਧੇਰੀ relief ਨਹੀਂ ਦਿੱਤੀ ਜਾ ਰਹੀ।

ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ ! ਚੀਫ਼ ਮਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਬੜੀ ਵਾਰੀ ਇਹ ਕਿਹਾ ਕਿ derequisition ਕਰਾਉਣ ਲਈ ਜਿਹੜੀਆਂ ਦਰਖਾਸਤਾਂ ਸਾਡੇ ਕੋਲ ਆਉਣ ਗੀਆਂ ਅਸੀਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਉਤੇ ਬੜੇ sympathetically ਗੌਰ ਕਰਾਂਗੇ ਪਰ ਸਵਾਲ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਜ਼ਿਲ੍ਹਿਆਂ ਵਿਚ ਇਸ ਮਕਸਦ ਲਈ ਜਿਹੜੀ competent authority ਹੈ ਉਹ ਆਮ ਤੌਰ ਤੇ ਜ਼ਿਲ੍ਹੇ ਦਾ ਡਿਪਟੀ ਕਮਿਸ਼ਨਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਸਾਮ੍ਹਨੇ ਹਰ ਵੇਲੇ ਇਕ ਦਿੱਕਤ ਦਰਪੇਸ਼ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਉਹ ਹੈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਜ਼ਿਲ੍ਹੇ ਦੇ ਅਫ਼ਸਰਾਂ ਲਈ accommodation provide ਕਰਨਾ। ਇਹ ਦਿੱਕਤ ਇਤਨੀ compelling ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਇਜਾਜ਼ਤ ਹੀ ਨਹੀਂ ਦਿੰਦੀ ਕਿ ਉਹ ਕਿਸੇ property ਨੂੰ de-requisition ਕਰਨ ਲਈ ਮਨ ਸਕਨ ਭਾਵੇਂ ਉਹ ਆਪਣੇ ਦਿਲ ਵਿਚ ਇਹ ਮਹਿਸੂਸ ਕਰਨ ਕਿ ਉਹ case genuine ਹੈ। ਇਸ ਦਿੱਕਤ ਦੇ ਹੁੰਦਿਆਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ minds ਕਦੇ ਵੀ open ਨਹੀਂ ਰਹਿ ਸਕਦੇ—ਉਹ ਹਮੇਸ਼ਾਂ biased ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਲਈ ਜੇ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ authority ਨੂੰ appellate authority ਬਣਾਇਆ ਜਾਵੇ ਜਿਸ ਦੇ ਸਾਮ੍ਹਨੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਮਕਾਨਾਂ ਜਾਂ property ਨੂੰ requisition ਕੀਤੇ ਰਹਿਣ ਦੀ necessity ਮੌਜੂਦ ਹੋ ਤਾਂ ਮੈਂ ਸਮਝਦਾ ਹਾਂ ਕਿ owner of the property ਨੂੰ ਕਿਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਕੋਈ relief ਨਹੀਂ ਮਿਲ ਸਕਦੀ। ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਨੇ ਵੀ ਤਾਂ the man at

[ਸਰਦਾਰ ਸਰੂਪ ਸਿੰਘ]

the spot ਕੋਲੋਂ ਹੀ ਕਿਸੇ ਦੀ ਅਪੀਲ ਉੱਤੇ ਰੀਪੋਰਟ ਮੰਗਵਾਣੀ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਇਨ੍ਹਾਂ ਹਾਲਤਾਂ ਵਿਚ competent authority ਜਾਂ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਦਾ mind ਕਦੇ ਵੀ open ਨਹੀਂ ਰਹਿ ਸਕਦਾ। ਉਹ ਦਿੱਕਤਾਂ ਜਿਹੜੀਆਂ ਕਿ ਡਿਸਟ੍ਰਿਕਟ ਦੇ ਅਫਸਰਾਂ ਨੂੰ ਪੇਸ਼ ਆਉਂਦੀਆਂ ਹੋਣਗੀਆਂ ਜ਼ਰੂਰ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਦੇ ਫ਼ੈਸਲੇ ਨੂੰ influence ਕਰਨਗੀਆਂ।

ਇਸ ਮਾਮਲੇ ਵਿਚ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡੀ ਦਿੱਕਤ ਇਹ ਹੈ ਕਿ district headquarters ਵਿਚ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਦੇ ਆਪਣੇ ਮਕਾਨ ਜਾਂ building ਕੋਈ ਨਹੀਂ। ਉਸ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਦਫਤਰਾਂ ਅਤੇ ਅਫਸਰਾਂ ਨੂੰ accommodation provide ਕਰਨ ਦੀ ਇਕ perpetual necessity ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਇਨ੍ਹਾਂ ਹਾਲਤਾਂ ਵਿਚ ਕੀਹ ਇਹ ਆਸ ਕੀਤੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ ਕਿ competent authority ਜਾਂ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਦਾ mind justly work ਕਰੇ ? ਜੇ ਇਨ੍ਹਾਂ properties ਨੂੰ derequisition ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਦੇ ਸਾਮ੍ਹਣੇ ਇਹ problem ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਅਫਸਰ ਅਤੇ ਦਫਤਰ ਕਿਥੇ ਜਾਣ ? ਇਸ compelling necessity ਦੇ ਹੁੰਦਿਆਂ ਹੋਦਿਆਂ competent authority ਹੋਵੇ ਜਾਂ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਦੋਨਾਂ ਦਾ mind moribund ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਕਿੰਨੀਆਂ ਵੀ ਅਪੀਲਾਂ ਕਿਉਂ ਨਾ ਕੀਤੀਆਂ ਜਾਣ ਇਹ ਜ਼ਰੂਰਤ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਇਜਾਜ਼ਤ ਹੀ ਨਹੀਂ ਦਿੰਦੀ ਕਿ ਕਿਸੇ property ਨੂੰ derequisition ਕੀਤਾ ਜਾਵੇ। ਇਸ ਲਈ ਜੇ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਚਾਹੁੰਦੀ ਹੈ ਕਿ ਵਾਕਿਏ ਇਨ੍ਹਾਂ ਚੀਜ਼ਾਂ ਪੁਰ ਕੋਈ judicial ਫ਼ੈਸਲਾ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਇਹ authority ਡਿਸਟ੍ਰਿਕਟ ਜਜ ਨੂੰ ਦਿੱਤੀ ਜਾਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਸੀ ਤਾਂਕਿ ਉਸ ਨੂੰ ਅਫਸਰਾਂ ਅਤੇ ਦਫਤਰਾਂ ਲਈ ਮਕਾਨਾਂ ਦੀ necessity prevail upon ਨਾ ਕਰ ਸਕੇ। ਜੇ ਇਹ ਨ ਕੀਤਾ ਜਾਏ ਤਾਂ ਮੈਂ ਸਮਝਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਇਸ ਬਿਲ ਦਾ ਕੋਈ ਫਾਇਦਾ ਨਹੀਂ, ਇਹ ਬਿਲਕੁਲ ਬੇਮੈਨੀ ਹੈ ਅਤੇ ਇਹ ਇਕ time wasting refinement ਹੀ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਮੈਂ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਇਸ ਨੂੰ ਪਾਸ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ ਜਾਣਾ ਚਾਹੀਦਾ।

ਦੀਵਾਨ ਜਗਦੀਸ਼ ਚੰਦ (ਲੁਧਿਆਣਾ ਸ਼ਹਿਰ—ਸਦਰ) : ਜਨਾਬ ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ ! ਇਸ ਬਿਲ ਦੇ ਜ਼ਰਿਏ ਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਇਲਾਕਿਆਂ ਦੇ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਮਕਾਨਾਂ ਤੇ ਯਾ properties ਦੀ requisition ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ derequisition ਕਰਾਉਣ ਦੇ ਲਿਏ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਤੌਰ ਪਰ ਦਰਖਾਸਤ ਕਰਨ ਦੇ ਹੱਕ ਮਿਲ ਗਏ ਹਨ। ਇਸ ਦੇ ਇਲਾਵਾ ਕੇ ਲੋਗ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਤੌਰ ਪਰ ਅਪੀਲ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹਨ।

**THE PUNJAB REQUISITIONING AND ACQUISITION OF IMMOVABLE PROPERTY (3)53
(AMENDMENT) BILL.**

लेकिन मैं इस मौके का फायदा उठाते हुए अपनी ओर से चीफ मिनिस्टर साहिब
हैं की खिदमत में एकाग्र गुजारिश करना चाहता हूँ ।

जनाबे बाला ! तजुहवा यह बताता है कि जब derequisition के लिये कोई
दरखास्त दी जाती है तो अफसरान एक मरतबा भी उस पर हमदर्दी से गौर नहीं करते और उसे
एकदम नामन्जूर किया जाता है । सिर्फ एक बहाना सामने लाया जाता है कि क्योंकि कोई
alternative accommodation available नहीं इसलिये इस मकान को
derequisition नहीं किया जा सकता । नतीजा यह होता है कि दरखास्त कुनिन्दा
भी मुश्किलता पर कतअन गौर नहीं किया जाता । इसलिये अगर इस वक्त judicial
authority को ये अपील के इस्तिथारात देने मुनासिब नहीं समझे गए तो कम से कम
इस किस्म की हिदायात जरूर जारी की जाएं कि जब derequisition की कोई दरखास्त
आए तो दोनों तरफों से गौर किया जाए । चीफ मिनिस्टर साहिब की तरफ से गो आर्डर
किये गए कि लोगों की जो requisitioned properties हैं उन के मुतदिलक अफसरान
justification दें और बताएं कि क्यों अभी तक requisitioned रखी हुई है, लेकिन इस
के बाद भी जब कोई दरखास्त अफसरान के पास जाती थी तो लिख दिया
जाता था कि हमारे पास अफसरों के रहने के लिये मकान नहीं हैं इसी लिये
उसे requisition रखा जा रहा है । लेकिन, स्पीकर साहिब, ऐसी कोई बात
नहीं । दर असल मकान उन को गौर मिल सकते हैं—नए भी मिल सकते हैं । मगर फर्क सिर्फ
इतना होता है कि वे मकान या तो उन के दफातर से दूर होते हैं या उन का किराया पहले
मकानों की तिस्रवत ज्यादा होता है । इस लिये, मुझे यही अर्ज करना है कि जब लोगों की दरखास्त
पर गौर किया जाए तो चाहे यह Competent Authority हो या गवर्नमेंट, उसे
मालकाय property की मुश्किलता को जरूर सामने रखते हुए—उन पर जरूर गौर
करना चाहिये ।

ਸ਼੍ਰੀ ਵਧਾਵਾ ਰਾਮ (ਫ਼ਾਜ਼ਿਲਕਾ) : ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ ! ਮੈਂ ਇਸ
ਤਰਮੀਮੀ ਬਿਲ ਪੁਰ ਸਿਰਫ਼ ਇਕ ਦੋ ਗੁਜ਼ਾਰਸ਼ਾਂ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਅਤੇ
ਮੈਂਨੂੰ ਆਸ ਹੈ ਕਿ ਸਾਡੇ ਵਜ਼ੀਰ ਸਾਹਿਬ ਇਨ੍ਹਾਂ ਤੇ ਜ਼ਰੂਰ ਧਿਆਨ ਦੇਣਗੇ ।
ਅੱਗੇ ਵੀ ਮਕਾਨਾਂ ਵਗ਼ੈਰਾ ਉਤੇ ਕਾਫ਼ੀ ਗੱਲਾਂ ਬਾਤਾਂ ਹੋਇਆਂ ਹਨ ਅਤੇ
ਇਹ ਵੀ ਦਸਿਆ ਗਿਆ ਹੈ ਕਿ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਇਸ ਸਿਲਸਿਲੇ ਵਿਚ ਕਿਹੜੀਆਂ
੨ ਤਕਲੀਫ਼ਾਂ ਹੋ ਰਹੀਆਂ ਹਨ । ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੋਵਾਂ ਚੀਜ਼ਾਂ ਉਪਰ ਮੇਰੇ ਕਈਆਂ
ਮਾਨਯੋਗ ਮਿਤ੍ਰਾਂ ਨੇ ਕਾਫ਼ੀ ਰੋਸ਼ਨੀ ਪਾਈ ਹੈ । ਪਰ ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ, ਮੈਂ ਉਨ੍ਹਾਂ
ਜ਼ਮੀਨਾਂ ਬਾਰੇ ਵੀ ਅਰਜ਼ ਕਰਨੀ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਜਿਹੜੀਆਂ ਕਿ ਸਰਕਾਰ ਇਕ
ਵਾਰੀ ਲੋਕਾਂ ਕੋਲੋਂ ਲੈ ਲੈਂਦੀ ਹੈ ਪਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਵਾਪਿਸ ਕਰਨ ਦਾ ਫ਼ਿਰ
ਨਾਉਂ ਹੀ ਨਹੀਂ ਲੈਂਦੀ । ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਾਡੇ ਨਾਲ ਬੜੀ ਬੇ-ਇਨਸਾਫ਼ੀ ਹੁੰਦੀ
ਹੈ । ਇਹ ਠੀਕ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਤਰਮੀਮੀ ਬਿਲ ਵਿਚ ਇਹ ਦਸਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼

[ਸ੍ਰੀ ਵਧਾਵਾ ਰਾਮ]

ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਦੀ ਰਾਹੀਂ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਕੁਝ ਨਾ ਕੁਝ ਸਹੂਲੀਅਤ ਦਿੱਤੀ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ ਪਰ ਮੈਂਨੂੰ ਯਕੀਨ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਨਾਲ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਕੋਈ ਫਾਇਦਾ ਨਹੀਂ ਹੋਣ ਲਗਾ। ਖਾਸ ਕਰਕੇ ਅਪੀਲ ਦੇ ਮਾਮਲੇ ਵਿਚ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਵਧੇਰੀਆਂ ਔਕੜਾਂ ਆ ਜਾਣਗੀਆਂ। ਇਹ ਤਾਂ ਉਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੋਵੇਗਾ ਜਿਵੇਂ ਕਿਸੇ ਆਦਮੀ ਨੂੰ ਕਿਸੇ ਥਾਨੇਦਾਰ ਨੇ ਸਜ਼ਾ ਦਿੱਤੀ ਹੋਵੇ ਜਾਂ ਮਾਰ ਕੁਟਾਈ ਕੀਤੀ ਹੋਵੇ। ਜਦੋਂ ਉਹ Superintendent Police ਦੇ ਪਾਸ ਦਰਖਾਸਤ ਦਿੰਦਾ ਹੈ ਤੇ ਉਹ ਮੁੜ ਉਹੀ ਦਰਖਾਸਤ ਉਸੇ ਥਾਨੇਦਾਰ ਪਾਸ ਰੀਪੋਰਟ ਲਈ ਭੇਜ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਦਾ ਨਤੀਜਾ ਇਹ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਥਾਨੇਦਾਰ ਉਸ ਆਦਮੀ ਨੂੰ ਬੁਲਾ ਕੇ ਮੁੜ ਝਾੜ ਝਪਟ ਕਰਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਉਸ ਨੂੰ ਡਰਾਉਂਦਾ ਤੇ ਧਮਕਾਉਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਤੂੰ ਕਿਉਂ ਮੇਰੇ ਖਿਲਾਫ਼ ਇਹ ਦਰਖਾਸਤ ਦਿੱਤੀ ਸੀ ? ਕਰ ਲੈਂਦਾ ਹਾਂ ਮੈਂ ਤੇਰਾ ਬੰਦੋਬਸਤ। ਮੈਨੂੰ ਪਤਾ ਹੈ, ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ, ਕਿ ਇਸ ਸਿਲਸਿਲੇ ਵਿਚ ਵੀ ਇਹੋ ਕੁਝ ਹੋਵੇਗਾ। ਜੇ ਕਿਸੇ ਅਫਸਰ ਦੇ ਕੋਲ ਕਿਸੇ ਮਾਲਿਕ ਮਕਾਨ ਨੇ ਅਪੀਲ ਕੀਤੀ ਜਾਂ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਪਾਸ ਅਪੀਲ ਕੀਤੀ ਤਾਂ ਜਿਸ ਵੇਲੇ ਉਹ ਇਸ ਪੁਰ ਰੀਪੋਰਟ ਮੰਗਣਗੇ ਤਾਂ ਅਫਸਰਾਂ ਨੂੰ ਇਹੋ ਖਿਆਲ ਰਹੇਗਾ ਕਿ ਜੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਫ਼ੈਸਲੇ ਦੇ ਖਿਲਾਫ਼ ਕੋਈ ਫ਼ੈਸਲਾ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਅਫਸਰਾਂ ਦੇ ਵੱਕਾਰ ਨੂੰ ਬੜਾ ਭਾਰਾ ਧੱਕਾ ਲਗੇਗਾ। ਪਰ ਵੇਖਿਆ ਇਹ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਚੀਜ਼ ਦੀ ਸਜ਼ਾ ਉਸ ਥਾਨੇਦਾਰ ਵਾਂਗੂੰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਅਫਸਰਾਂ ਨੂੰ ਨਹੀਂ ਦਿੱਤੀ ਜਾਂਦੀ ਕਿਉਂਕਿ ਫ਼ਿਰ ਉਹੀ ਗਲ ਸਾਹਮਣੇ ਆ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਕਿ ਜੇ ਅਫਸਰਾਂ ਨੂੰ ਸਜ਼ਾ ਦਿੱਤੀ ਗਈ ਤਾਂ ਸਰਕਾਰ ਦੀ administration ਦਾ ਵਕੱਰ ਘਟ ਜਾਏਗਾ। ਇਹ ਵਕੱਰ ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕਾਇਮ ਰਹੇਗਾ ਅਤੇ ਮੈਨੂੰ ਪਤਾ ਹੈ ਕਿ ਕੋਈ ਗਲ ਬਣਨੀ ਬਣਾਨੀ ਨਹੀਂ। ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ ! ਤੁਸੀਂ ਇਹ ਸੁਣਕੇ ਹੈਰਾਨ ਹੋਵੋਗੇ ਕਿ ਜਦੋਂ ਇਹ ਸਰਕਾਰ ਕਿਸਾਨਾਂ ਦੀਆਂ ਜ਼ਮੀਨਾਂ ਸੇਮ ਨਾਲਿਆਂ ਲਈ ਜਾ ਨਹਿਰਾਂ ਲਈ ਲੈਂਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਕੀ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਕਿਸਾਨ ਨੂੰ ਉਸ ਵੇਲੇ ਜਾ ਕੇ ਪਤਾ ਲਗਦਾ ਹੈ ਜਦੋਂ ਉਹਦੀ ਖਲੀ ਖਲੋਤੀ, ਹਰੀ ਭਰੀ ਅਤੇ ਜੋਬਨ ਤੇ ਆਈ ਹੋਈ ਫ਼ਸਲ ਨੂੰ ਮਹਿਕਮਾ ਨਹਿਰ ਦੇ ਅਫਸਰ ਵੱਢ ਚੁਕੇ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਉਹ ਹੈਰਾਨ ਹੋ ਕੇ ਵੇਖਦਾ ਹੀ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਕੀ ਹੋ ਗਿਆ, ਮੈਨੂੰ ਤਾਂ ਕੋਈ ਇਤਲਾਹ ਨਹੀਂ ਦਿੱਤੀ ਗਈ, ਕੋਈ ਨੋਟਿਸ ਹੀ ਨਹੀਂ ਦਿੱਤਾ ਗਿਆ

ਤਾਂ ਜੋ ਮੈਂ ਇਸ ਫਸਲ ਨੂੰ ਵਢ ਹੀ ਲੈਂਦਾ, ਕੋਈ ਦਾਣੇ ਫੱਕੇ ਘਰ ਪਾ ਲੈਂਦਾ ਜਾਂ ਪਸ਼ੂਆਂ ਲਈ ਚਾਰਾ ਹੀ ਇਕੱਠਾ ਕਰ ਲੈਂਦਾ। ਜਦੋਂ ਵਿਚਾਰਾ ਕਿਸਾਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਅਫਸਰਾਂ ਕੋਲੋਂ ਪੁਛਦਾ ਹੈ ਕਿ ਭਾਈ ਕੀ ਗਲ ਹੈ ਤਾਂ ਜਵਾਬ ਸਿਰਫ ਇਹੋ ਮਿਲਦਾ ਹੈ ਕਿ ਡਿਪਟੀ ਕਮਿਸ਼ਨਰ ਦਾ ਹੁਕਮ ਸੀ। ਕਿੰਨੇ ਅਫਸੋਸ ਦੀ ਗਲ ਹੈ, ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਕਿ ਉਸ ਵਿਚਾਰੇ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਫਸਲ ਸਾਂਭ ਲੈਣ ਲਈ ਕੁਝ ਦਿਨਾਂ ਦੀ ਮੋਹਲਤ ਵੀ ਨਹੀਂ ਦਿਤੀ ਜਾਂਦੀ—ਉਸ ਫਸਲ ਨੂੰ ਸਾਂਭਣ ਦੀ ਜਿਸਦੀ ਬਿਜਾਈ ਲਈ ਉਸਨੇ ਆਪਣਾ ਰਤ ਪਸੀਨਾ ਇਕ ਕਰਕੇ ਮਿਹਨਤ ਕੀਤੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ!

ਸ਼੍ਰੀਮਾਨ ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ ! ਸਾਡਾ ਇਲਾਕਾ ਬੇਟ ਦਾ ਇਲਾਕਾ ਹੈ। ਉਥੇ ਦੋ ਚੀਜ਼ਾਂ ਤੰਗ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ। ਇਕ ਤਾਂ ਸੂਅਰ ਜਿਹੜੇ ਕਿ ਰਿਾਤ ਨੂੰ ਬਗੈਰ ਨੋਟਿਸ ਦਿਤਿਆਂ ਖੇਤਾਂ ਵਿਚ ਆ ਪੈਂਦੇ ਨੇ। ਦੂਜੇ.....

ਸ਼੍ਰੀ ਸਪੀਕਰ : ਮਾਨਯੋਗ ਮੈਂਬਰ ਇਸ ਗਲ ਦਾ ਖਿਆਲ ਰਖਣ ਕਿ ਸੂਅਰਾਂ ਦਾ requisition ਨਾਲ ਕੋਈ ਤਾਅਲੁਕ ਨਹੀਂ।

ਸ਼੍ਰੀ ਵਧਾਵਾ ਰਾਮ : ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ ! ਮੈਂ ਅਰਜ਼ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹਾਂ ਕਿ ਉਥੇ ਸੂਅਰ ਦਿਨ ਦਿਹਾੜੇ ਬਗੈਰ ਨੋਟਿਸ ਦਿਤਿਆਂ ਖੇਤਾਂ ਵਿਚ ਆ ਪੈਂਦੇ ਨੇ ਅਤੇ ਅਜਕਲ.....

ਸ਼੍ਰੀ ਸਪੀਕਰ : ਆਪ ਬਿਲ ਦੀ ਵਜ਼ਾਹਤ ਕਰੋ ਜਿਹੜਾ ਕਿ ਇਸ ਵੇਲੇ ਹਾਊਸ ਦੇ ਅੱਗੇ ਪੇਸ਼ ਹੈ ਅਤੇ ਸੂਅਰਾਂ ਨੂੰ discuss ਨਾ ਕਰੋ।

ਸ਼੍ਰੀ ਵਧਾਵਾ ਰਾਮ : ਮੇਰੀ ਬੰਨਤੀ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਸਾਡੇ ਇਲਾਕੇ ਵਿਚ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਜ਼ਮੀਨਾਂ acquire ਕੀਤੀਆਂ ਹਨ ਅਤੇ ਹਾਲਾਂ ਤਾਈਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਮਾਲਕਾਂ ਨੂੰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਮੁਆਵਜ਼ਾ ਨਹੀਂ ਦਿਤਾ। ਹੋਰ ਗਲ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਜ਼ਮੀਨਾਂ acquire ਕਰਨ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਸਰਕਾਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਨੋਟਿਸ ਵੀ ਨਹੀਂ ਦੇਂਦੀ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਖੜੀਆਂ ਵਾਹੀਆਂ ਫਸਲਾਂ ਤੇ ਆ ਕੇ ਕਬਜ਼ਾ ਕਰ ਲਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਮਾਨਯੋਗ ਵਜ਼ੀਰਾਂ ਅਗੇ ਮੇਰੀ ਇਹ ਦਰਖਾਸਤ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਇਸ ਗਲ ਦਾ ਪ੍ਰਬੰਧ ਕਰਨ ਕਿ ਜਦੋਂ ਕਿਸੇ ਕਿਸਾਨ ਦੀ ਜ਼ਮੀਨ requisition ਕੀਤੀ ਜਾਣੀ ਹੋਵੇ

[ਸ਼੍ਰੀ ਵਿਧਾਵਾ ਰਾਮ]

ਤਾਂ ਉਸ ਨੂੰ ਪਹਿਲਾਂ ਤੋਂ ਨੋਟਿਸ ਦਿਤਾ ਜਾਵੇ। ਮੈਂ ਅਰਜ਼ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਮੈਂ ਇਸ ਸਿਲਸਿਲੇ ਵਿਚ ਉਥੇ ਦੇ ਡਿਪਟੀ ਕਮਿਸ਼ਨਰ ਨੂੰ ਵੀ ਮਿਲਿਆ ਸੀ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਔਗੇ ਇਸ ਬਾਰੇ ਦਰਖਾਸਤ ਕੀਤੀ ਸੀ। ਪਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਸੀ ਕਿ ਕਿਸਾਨ ਮੇਰੇ ਪਾਸ ਦਰਖਾਸਤਾਂ ਦੇਣ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਕਿੰਨੀ ਕਿੰਨੀ ਜ਼ਮੀਨ acquire ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੈ। ਮੈਂ ਅਰਜ਼ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਇਹ ਤਾਂ ਇਹ ਗਲ ਹੋਈ ਕਿ:

ਨਿਮਾਜ਼ ਬਖਸ਼ਾਵਣ ਗਏ

ਤਾਂ ਰੋਜ਼ੇ ਵੀ ਗਲ ਪੈ ਗਏ।

ਹੁਣ ਵਿਚਾਰੋ ਕਿਸਾਨ ਦਰਖਾਸਤ ਦੇਣ ਲਈ ਪਟਵਾਰੀਆਂ ਕੋਲੋਂ ਆਪਣੀ ਜ਼ਮੀਨ ਦਾ ਰਕਬਾ ਪੁਛਣ ਲਈ ਜਾਣ ਅਤੇ ਪਿਛੋਂ ਦਰਖਾਸਤ ਦੇਣ। ਮੈਂ ਹਾਊਸ ਨੂੰ ਦਸਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਕਿਸਾਨਾਂ ਦੀ ਬਹੁਤ ਭੈੜੀ ਹਾਲਤ ਹੋ ਗਈ ਹੈ। ਮਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਉਥੇ ਜਾਕੇ ਖੁਦ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਹਾਲਤ ਦੇਖ ਸਕਦੇ ਨੇ। ਸੇਮ ਦੇ ਨਾਲੇ ਹੇਠਾਂ ਜਿਹੜੀ ਜਿਹੜੀ ਜ਼ਮੀਨ ਆਈ ਹੈ ਉਸ ਦਾ ਮੁਆਵਜ਼ਾ ਹਾਲਾਂ ਤਾਈਂ ਉਸ ਦੇ ਮਾਲਕਾਂ ਨੂੰ ਨਹੀਂ ਮਿਲਿਆ ਅਤੇ ਉਸ ਦਾ ਮਾਮਲਾ ਹਾਲਾਂ ਤਾਈਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਕੋਲੋਂ ਵਸੂਲ ਕੀਤਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ।

ਸ਼੍ਰੀ ਸਪੀਕਰ : ਆਪ ਨੇ ਜਿੰਨੀ ਵੀ ਤਕਰੀਰ ਕੀਤੀ ਹੈ ਉਹ ਸਾਰੀ ਦੀ ਸਾਰੀ ਬਿਲਕੁਲ irrelevant ਸੀ। ਆਪ ਕਿਰਪਾ ਕਰਕੇ relevant ਤਕਰੀਰ ਕੀਤੀ ਕਰੋ।

ਭਾਨ ਅਬਦੁਲ ਗਫ਼ਾਰ ਖ਼ਾਨ (ਅੰਮਬਾਲਾ ਸ਼ਹਿਰ) : ਜਨਾਬ ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ ! ਇਸ requisition ਦੇ ਸਿਲਸਿਲੇ ਮੈਂ ਮੈਂ ਕੁਝ ਅਰਜ਼ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਹੁਣ ਤੱਕ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਹਮਾਰੇ ਚੀਫ਼ ਮਿਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਧਕੀਨ ਦਿਲਾਇਆ ਹੈ ਕਿ ਉਨ੍ਹोंने ਹੁਕਮ ਕੀ instructions ਜਾਰੀ ਕਰ ਦੀ ਹੈਂ ਆਰ ਉਨ੍ਹोंने ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਦੀ ਪਾਲਿਸੀ ਕਾ ਇਜ਼ਹਾਰ ਕੀ ਕਰ ਦਿਯਾ ਹੈ। ਜਹਾਂ ਤਕ ਚੀਫ਼ ਮਿਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਕਾ ਤਾਲਲੁਕ ਹੈ, ਉਨ੍ਹोंने ਤਹਦਿਲ ਸੇ ਇਸ ਬਾਤ ਕੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੀ ਹੈ ਕਿ ਲੋਗਾਂ ਕੀ ਤਕਲੀਫ਼ ਕੀ ਕਮ ਕੀਯਾ ਜਾਏ। ਲੇਕਿਨ ਮੈਂ ਜਾਤੀ ਤਜ਼ੁਬੇ ਕੀ ਬਿਨਾ ਪਰ ਅਰਜ਼ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਇਸ ਸਿਲਸਿਲੇ ਮੈਂ ਲੋਗਾਂ ਕੀ ਬਹੁਤ ਤਕਲੀਫ਼ ਪੇਸ਼ ਆ ਰਹੀ ਹੈ। ਸਿਮਲਾ ਮੈਂ ਏਕ ਸਰਕਾਰੀ ਮੁਲਾਜ਼ਮ ਏਕ ਮਾਲਿਕ ਮਕਾਨ ਕੇ ਪਾਸ ਗਯਾ ਆਰ ਉਸ ਨੇ ਉਸੇ ਕਹਾ ਕਿ ਅਪਨਾ ਮਕਾਨ ਮੁਝੇ ਕਿਰਾਏ ਪਰ ਦੇ ਦੋ ਆਰ ਵਹ ਮੀ ਬਿਲਕੁਲ ਮਾਮੂਲੀ ਕਿਰਾਏ ਪਰ। ਮਾਲਿਕ ਮਕਾਨ ਨੇ ਕਹਾ ਕਿ ਵਹ ਉਸੇ ਅਪਨੇ ਲਿਯੇ ਚਾਹਿਏ। ਇਸ ਪਰ ਉਸ ਸਰਕਾਰੀ ਮੁਲਾਜ਼ਮ ਨੇ ਬੜੇ ਫ਼ਤਿਹੀਆ ਅਨਦਾਜ਼ ਮੈਂ ਕਹਾ ਕਿ ਦੇਖੁੰਗਾ ਕਿ ਤੁਮ ਕਿਸ ਤਰਹ ਨਹੀਂ ਦੇਂਦੇ। ਧਹ ਕਹ ਕਰ ਕ

THE PUNJAB REQUISITIONING AND ACQUISITION OF IMMOVABLE PROPERTY (3)57
(AMENDMENT) BILL,

चला गया और जा कर उस मकान को requisition कराने की कोशिश की। लेकिन जब इस बात का इल्म मालिक मकान को हुआ तो उस ने मुझ से जिक्र किया। मैं इस सित्तिजे में चीफ सैक्रेटरी साहिब से मिला और उन्होंने बड़ी मेहरबानी करके हुक्म जारी कर दिया कि यह मकान requisition न किया जाए। आप मुलाहजा फरमाए कि जिस शर्त की पहुंच सरकारी हुकाम के पास नहीं होती उसे अपने मकान को derequisition कराने में कितनी तकलीफात और मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा और यह भी नहीं कहा जा सकता कि उस का मकान derequisition हो भी सकेगा या नहीं। इसलिये बेहतर होगा कि यह इस्तिथार judiciary को दे दिये जाएं। अगर किसी हालत में यह इस्तिथार judiciary को नहीं सौंपे जा सकते तो इस बात का कोई और हल देखना और परखना होगा। महज चीफ मिनिस्टर साहिब की instructions जारी करने से और पालिसी का इजहार कर देने से लोगों की यह तकलीफ दूर नहीं हो सकेगी। मैं उन की खिदमत में अर्ज करता हूं कि उन के जो नीचे के ओहदेदारान हैं वह इन instructions की जरा भी परवाह नहीं करते। वह नीचे से ही ऐसी चीजें लिख कर भेजते हैं कि यह भी उन की रिपोर्ट के मुताबिक फैसला करने पर मजबूर हो जाते हैं।

(इस पर अप्पोजीशन वालों की तरफ से तालियां बजाई गईं)।

अप्पोजीशन वालों को इन बातों पर खुश नहीं होना चाहिये। क्योंकि हम जो कुछ अपने मिनिस्टर साहिबान की खिदमत में कहना चाहते हैं वह इसलाह के लिये कहना चाहते हैं और यह जो कहना चाहते हैं वह इसलाह के खिलाफ और प्रापेगेंडा के लिये कहना चाहते हैं। यह फर्क है उन के कहने और हमारे कहने में।

मैं चीफ मिनिस्टर साहिब की खिदमत में अर्ज करना चाहता हूं कि वह उन गरीब लोगों को जिन की सरकारी अफसरान तक पहुंच नहीं होती और जिन्होंने मकानात अपने रहने के लिये, अपने मुफाद के लिये या अपने रिश्तेदारों के फायदे के लिये बनाये हैं और वह requisition होगये हैं, इन्हें मुसीबतों से बचाने के लिये कुछ नए कदम उठाएं ताकि उन की यह मुसीबत दूर हो और उनको तसल्ली हो कि अब उन पर इस किस्म के मुजालिम न होंगे।

मुख्य मंत्री (श्री भीम सैन सच्चर) : स्पीकर साहिब, मैंने हाऊस में requisition करन और derequisition कराने के लिये दरखास्त देने के फर्क को समझाने की कोशिश तो की थी। मेरे मुअज्जिज दोस्त खान अब्दुल गफ्फार खां ने जो शिकायत की है वह requisition के सिलसिले में है। मैं अर्ज करता हूं कि जब किसी मकान को requisition किया जाता है तो सब चीजों को ध्यान में नहीं रखा जाता और रखा भी कैसे जा सकता है क्योंकि उस वक्त emergency होती है और यही वजह है कि यह काम judicial authority के हाथ में नहीं सौंपा जा सकता। हम जो कर सकते हैं वह यही है कि अफसरान को हिदायत जारी कर दें। और अगर मੈम्बर साहिबान देखते हैं कि कहीं उन हिदायत की violation हुई है तो यह उन का फर्ज है कि वह केस हमारे नोटिस में लायें। अब जो चीज हाऊस पास कर रहा है वह derequisition के बारे में है। हम ने यह देखना है कि derequisition करने के वक्त जो authorities derequisition कर सकती है वह लोगों की दरखास्तों को हमदरदी से देखें और यह उन के लिये routine matter बन जाये कि जितनी तबज्जुह उन्हें दरखास्त में दर्ज की गई बातों

[मुख्य मंत्री]

की तरफ देनी चाहिये वह उतनी तबज्जुह दें। मुझे उम्मीद है कि ऐसा हो जायेगा क्योंकि गवर्नमेंट की पोलिसी यही है कि दरखास्त में जितनी वजूहात दी गई हों उन सब का पूरी तरह से वजन किया जाये। लेकिन एक बात मैं अर्ज कर दूँ कि जो चीज गैर-सरकारी तौर पर समझी जा सकती है और appreciate की जा सकती है वह सरकारी तौर पर नहीं समझी जा सकती और appreciate नहीं की जा सकती। इस लिये मैं आप को बताना चाहता हूँ और announce करना चाहता हूँ कि derequisition की दरखास्तों पर कार्यवाही करने के लिये जो competent authority होगी उस में ३ आदमी होंगे—एक official जैसे Deputy Commissioner या और कोई और 2 non-officials जैसे M.L.A.s वगैरा। यह competent authority applications को receive करेगी और उन पर फैसला करेगी कि आया यह property छोड़ दी जाये या न। इसी के साथ साथ मैं यह भी ऐलान करता हूँ कि वह competent authority सिर्फ उन्हीं दरखास्तों पर गैर नहीं करेगी जो इस बिल के पास होने और ऐक्ट बनने के बाद की जायेंगी बल्कि यह हुक्म जारी कर देंगे कि आज तक जितनी भी requisitions हो चुकी हैं उन तमाम को review करने के लिये competent authority की strength वही होगी यानी एक सरकारी और २ गैर-सरकारी मैम्बर (तालियाँ)। इस तरह यह कहा जा सकता है कि गवर्नमेंट ने इस तरफ पूरी कोशिश की है और मुझे आप से पूरा इत्तिफाक है कि लोगों को requisition के मामले में कम से कम तकलीफ होनी चाहिये। कम से कम property को requisition किया जाना चाहिये और मैं आप को यकीन दिलाता हूँ कि अगर कोई दूसरी property मिलती हो—चाहे उस का हमें ज्यादा ही किराया देना पड़े—तो कोई वजह नहीं कि किसी मकान को requisition किया जायें। यह हुक्म मैं जारी कर चुका हूँ और जिस तरह मेरे साथी ने निहायत मौजू और मुनासिब इलफाज में मुझे याद दिलाया है उस बात को मद्देनजर रखते हुए मैंने जो announcement की मुझे उम्मीद है कि उसे House पसन्द करेगा और इस से लोगों की तकलीफ भी दूर हो जायेंगी।

Mr. Speaker : Question is—

That the Punjab Requisitioning and Acquisition of Immovable Property (Amendment) Bill be passed.

The motion was carried.

THE PUNJAB STATE LEGISLATURE (PREVENTION OF DISQUALIFICATION) (SECOND AMENDMENT) BILL.

Chief Minister (Shri Bhim Sen Sachar) : Sir, I beg to introduce the Punjab State Legislature (Prevention of Disqualification) (Second Amendment) Bill.

Chief Minister : Sir, I beg to move —

That the Punjab State Legislature (Prevention of Disqualification) (Second Amendment) Bill be taken into consideration at once.

Mr. Speaker : Motion moved—

That the Punjab State Legislature (Prevention of Disqualification) (Second Amendment) Bill be taken into consideration at once.

ਸਰਦਾਰ ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ (ਸਮਰਾਲਾ) : ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ ! ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਾਡੀ ਗਵਰਨਮੈਂਟ piecemeal ਤਰੀਕੇ ਤੇ disqualifications remove ਕਰਨ ਸੰਬੰਧੀ ਐਕਟ ਵਿਚ amendments, ਹਾਊਸ ਦੇ ਸਾਮ੍ਹਣੇ ਲਿਆਉਂਦੀ ਹੈ, ਉਸ ਤੋਂ ਸਚਮੁਚ ਇਸ ਹਾਊਸ ਦੇ ਮੈਂਬਰਾਂ ਵਿਚ ਹੀ ਨਹੀਂ ਸਗੋਂ ਸਾਰੇ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਵਿਚ ਇਹ ਜਾਇਜ਼ ਸ਼ਕ ਪੈਦਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਇਹ ਸਭ ਕੁਝ ਕਿਉਂ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ । ਜੇਕਰ ਮੈਨੂੰ ਇਜਾਜ਼ਤ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਮੈਂ ਆਖਾਂਗਾ ਕਿ ਇਹ ਸਭ ਕੁਝ ਕਿਸੇ ਖਾਸ ਆਦਮੀ ਨੂੰ ਧਿਆਨ ਵਿਚ ਰਖਕੇ ਕੀਤਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ । ਜੇਕਰ ਅਜਿਹੀ ਗਲ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਬਿਲ ਕਿਸੇ individual ਨੂੰ ਪਾਲਣ ਵਾਸਤੇ ਲਿਆਂਦਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ ਤਾਂ ਪਬਲਿਕ ਦਾ ਸ਼ਕ ਜਾਇਜ਼ ਹੈ । ਜੇਕਰ ਅਜਿਹੀ ਕੋਈ ਗਲ ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਇਸ ਬਿਲ ਵਿਚ ਕੋਈ ਕਾਬਿਲੇ ਇਤਰਾਜ਼ ਗਲ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦੀ । ਮਗਰ ਮੈਂ ਸਮਝਦਾ ਹਾਂ ਅਤੇ ਜ਼ੋਰ ਦੇਕੇ ਕਹਿੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਇਸ ਬਿਲ ਨੂੰ ਕਿਸੇ ਆਦਮੀ ਦੀ disqualification remove ਕਰਨ ਲਈ ਲਿਆਈ ਹੈ । ਮੈਂ ਅਰਜ਼ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਸਾਨੂੰ ਵੀ ਤਾਂ ਦਸ ਦਿਓ ਕਿ ਉਹ ਕੌਣ ਹੈ ਜਿਸ ਲਈ ਇਹ ਕੁਝ ਕੀਤਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ । ਮੈਂ ਸਮਝਦਾ ਹਾਂ ਕਿ Receiver ਦੀ capacity official ਹੈ non-official ਨਹੀਂ । ਕਿਉਂਕਿ ਉਸ ਦੀ appointment ਅਤੇ removal ਵਗੇਰਾ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਵਲੋਂ ਹੁੰਦੀ ਹੈ । ਉਹ insolvency ਦੇ cases ਵਿਚ property ਨੀਲਾਮ ਕਰਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਉਸ ਨੂੰ ਕਮਿਸ਼ਨ ਮਿਲਦੀ ਹੈ । ਇਹ ਗਲ ਵਖਰੀ ਹੈ ਕਿ ਅਜ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਆਮਦਨੀ ਕਿਸੇ ਹਦ ਤਕ ਘਟ ਗਈ ਹੈ । ਪਹਿਲਾਂ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਦੀਵਾਨੀ ਮੁਕਦਮੇ ਅਤੇ ਬਾਅਦ ਵਿਚ ਵੇਜ਼ਦਾਰੀ ਮੁਕਦਮੇ ਕਰਨ ਦੀ ਇਜਾਜ਼ਤ ਵੀ ਦੇ ਦਿਤੀ ਸੀ । ਮੈਂ ਸਮਝਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਪੁਜ਼ੀਸ਼ਨ official ਜ਼ਿਆਦਾ ਅਤੇ non-official ਘਟ ਹੈ । ਇਸ ਲਈ ਇਹ ਗਲ Constitutions ਦੇ ਖਿਲਾਫ ਹੈ । ਇਸ ਲਈ Peoples Act ਦੇ ਤਹਿਤ election ਵਿਚ official ਦਖਲ ਨਹੀਂ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ । ਇਹ ਪਬਲਿਕ ਦੇ ਨੁਮਾਇੰਦੇ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦੇ ਜੋ official position ਰਖਦੇ ਹੋਣ ਅਤੇ ਉਹ ਕਿਸੇ election ਵਿਚ ਹਿੱਸਾ ਨਹੀਂ ਲੈ ਸਕਦੇ । ਮੈਂ ਸਮਝਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਾਲੋਂ ਤਾਂ ਪਟਵਾਰੀ ਅਤੇ

[ਸਰਦਾਰ ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ]

ਲੰਬਰਦਾਰ ਦੀਆਂ official duties ਬਹੁਤ ਘਟ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ ਅਤੇ ਇਹ ਫਿਰ ਵੀ official position ਵਾਲੇ ਗਿਣੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਕਦੇ ਸਾਲ ਪਿਛੇ ਪੰਚੇਤਰਾ ਕਠਾ ਕਰਦੇ ਜਾਂ ਕਿਸੇ ਤਫਤੀ ਵਿਚ ਹਿੱਸਾ ਲੈਂਦੇ ਹਨ। Elections ਵਿਚ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਮੱਦਦ corruption ਸਮਝੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਦੇ ਉਲਟ Receivers ਤਾਂ 24 ਘੰਟੇ ਦੇ ਸਰਕਾਰੀ ਮੁਲਾਜ਼ਮ ਹੋਏ। ਇਸ ਲਈ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ elections ਵਿਚ ਹਿੱਸਾ ਲੈਣ ਦੀ ਇਜਾਜ਼ਤ ਦੇਣਾ ਅਸੂਲ ਦੇ ਖਿਲਾਫ਼ ਹੈ। ਮੈਂ ਬੇਨਤੀ ਕਰਾਂਗਾ ਕਿ ਜੇਕਰ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਇਹ ਬਿਲ ਕਿਸੇ ਆਦਮੀ ਨੂੰ ਧਿਆਨ ਵਿਚ ਰਖ ਕੇ ਲਿਆ ਰਹੀ ਹੈ ਤਾਂ ਇਹ ਚੰਗੀ ਗਲ ਨਹੀਂ। ਆਪ ਉਹ ਗਲ ਕਰੋ ਜੋ ਸਹੀ ਮਾਨਿਆਂ ਵਿਚ ਅਜਿਹੀ ਹੋਵੇ ਕਿ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਸ਼ਕ ਦੀ ਗੁੰਜਾਇਸ਼ ਨ ਰਹੇ।

ਸਰਦਾਰ ਅੱਛਰ ਸਿੰਘ ਛੀਨਾ (ਅਜਨਾਲਾ) : ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ! ਅਸੈਂਬਲੀ

ਬਣਨ ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ Cabinet ਦੀ ਇਹ practice ਹੋ ਗਈ ਹੈ ਕਿ ਕੋਈ ਨਾ ਕੋਈ ਅਜਿਹਾ ਬਿਲ ਲਿਆਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਜਿਸ ਵਿਚ ਕਿਸੇ ਦੀ disqualification remove ਕਰਨ ਦਾ ਪ੍ਰਬੰਧ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਪਹਿਲਾਂ ਲੰਬਰਦਾਰ, ਜ਼ੇਲਦਾਰ ਲਏ ਗਏ, ਫਿਰ N.C.C. ਵਾਲਿਆਂ ਅਤੇ Notary Public ਦੀ ਵਾਰੀ ਆਈ ਅਤੇ ਹੁਣ Official Receiver ਦੀ disqualification remove ਕਰਾਉਣਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ ਲੋਕਾਂ ਨਾਲ ਬੜਾ ਮਖੌਲ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਰਿਹਾ ਹੈ ਤੇ ਹੁਣ ਇਹ ਹਾਸੋ-ਹੀਣੀ ਜਿਹੀ ਗਲ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ। ਹੁਣ ਬਸ ਪੁਲਿਸ ਦੇ ਐਸ. ਪੀ. ਅਤੇ ਡੀ. ਐਸ. ਪੀ. ਜਾਂ ਡੀ. ਪੀ. ਹੀ ਰਹਿ ਗਏ ਹਨ। ਇਕ ਆਦਮੀ ਜੋ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਕੋਲੋਂ ਤਨਖਾਹ ਲੈਂਦਾ ਹੈ ਉਹ office of profit ਹੋਲਡ (hold) ਕਰਦਾ ਹੈ। ਲੰਬਰਦਾਰਾਂ ਵਾਰੀ ਅਸੀਂ ਸਮਝਿਆ ਕਿ ਲੰਬਰਦਾਰਾਂ ਤੇ ਮਿਹਰਬਾਨੀ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ। ਕੁਝ ਲੰਬਰਦਾਰਾਂ ਨੇ ਦਰਖਾਸਤਾਂ ਭੀ ਦਿਤੀਆਂ। ਅਸਲ purpose ਦਾ ਬਾਅਦ ਵਿਚ ਪਤਾ ਲਗਿਆ ਕਿ ੫ ਜਾਂ ੬ ਕਾਂਗਰਸੀ ਬੈਂਚਾਂ ਵਾਲਿਆਂ ਨੇ ਹਟ ਜਾਣਾ ਹੈ ਤਾਂ ਝਟਪਟ ਬਿਲ ਲੈ ਆਂਦਾ। ਮੈਂ ਦਸਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਇਹ Constitu-
tion ਦੇ Article ੧੯੧ ਦੇ ਖਿਲਾਫ਼ ਹੈ। Office of profit, hold ਕਰਨ

ਵਾਲੇ election ਵਿਚ ਕੋਈ ਹਿੱਸਾ ਨਹੀਂ ਲੈ ਸਕਦੇ ਅਤੇ ਆਪਣੀ official position ਦੀ ਵਰਤੋਂ elections ਲਈ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦੇ ।

ਫਿਰ ਇਹ ਜਿਹੜੀਆਂ disqualifications remove ਕਰਾਈਆਂ ਜਾ ਰਹੀਆਂ ਹਨ ਇਹ piece-meal ਕਰਾਈਆਂ ਜਾ ਰਹੀਆਂ ਹਨ । ਜੇਕਰ ਇਹ ਸਾਰੀਆਂ ਇਕੱਠੀਆਂ ਹੀ ਕਰਵਾਈਆਂ ਜਾਂਦੀਆਂ ਤਾਂ ਹਾਊਸ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਕਦੇ ਵੀ ਪਾਸ ਨਾ ਕਰਦਾ ।

ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ ! ਪਹਿਲਾਂ ਲੰਬਰਦਾਰਾਂ ਤੋਂ disqualifications remove ਕੀਤੀਆਂ ਅਤੇ ਫਿਰ Notary Public ਅਤੇ N.C.C. ਤੋਂ ਇਹ ਪਾਬੰਦੀ ਹਟਾਈ ਗਈ ਤਾਂ ਜੋ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਕੁਝ ਆਪਣੇ ਆਦਮੀ ਸਰਕਾਰੀ ਬੈਂਚਾਂ ਤੋਂ ਚਲੇ ਜਾਣ । ਮੈਨੂੰ ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੀ ਸ਼ਕ ਹੈ ਕਿ ਕੋਈ ਜਾਂ ਤਾਂ Official receiver ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਨਜ਼ਰ ਵਿਚ ਹੈ ਜਿਸ ਨੂੰ ਇਸ ਪਾਸੇ ਖਿਚਣਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਨ ਜਾਂ ਕੋਈ ਹੋਰ ਹੈ ਅਤੇ ਉਸ ਨੂੰ ਖਿਆਲ ਹੈ ਕਿ ਉਸਨੇ ਆਫੀਸਲ ਰੀਸੀਵਰੀ ਤੋਂ ਚਲਿਆ ਜਾਣਾ ਹੈ, ਇਸ ਲਈ ਬਿਲ ਲਿਆਂਦਾ ਹੈ । ਮੈਂ ਤਾਂ ਅਪੀਲ ਕਰਾਂਗਾ ਕਿ ਕਿਉਂ ਨਹੀਂ ਇਕੋ ਵੇਰ ਸਾਰੀ ਲਿਸਟ ਤਿਆਰ ਕਰ ਲੈਂਦੇ ਕਿ ਇਨ੍ਹਾਂ ਸਭ ਦੀਆਂ disqualifications remove ਹੋ ਜਾਣ । ਹਰ ਦੂਜੇ ਦਿਨ ਬਿਲ ਲਿਆਂਦਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ।

ਫਿਰ, ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ ਅਸਾਡੀ ਪਵਿਤਰ Constitution ਦੀ ਦਫ਼ਾ ੧੯੧ ਅਧੀਨ ਆਫੀਸਲ ਰੀਸੀਵਰ ਨੂੰ office of profit ਦਾ holder ਮੰਨਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਅਸੀਂ ਆਪਣਾ ਇਕ ਇਕ ਆਦਮੀ ਵਾਰੀ ਵਾਰੀ ਬਿਠਾਣ ਕਰਕੇ ਉਸ Constitution ਦੀਆਂ ਜੜ੍ਹਾਂ ਖੋਖਲੀਆਂ ਕਰ ਰਹੇ ਹਾਂ । ਅਸੀਂ in the name of justice, Constitution ਦੇ provision ਦਾ ਓਲੰਘਣ ਕਰ ਰਹੇ ਹਾਂ । ਜੇਕਰ ਕੋਈ Notary Public ਹੈ ਤਾਂ ਉਸ ਤੋਂ ਪਾਬੰਦੀਆਂ ਹਟਾ ਲਵੋ । ਕਿਸ ਲਈ ? ਇਸ ਲਈ ਕਿ ਉਹ ਆਪਣਾ ਅਸਰ ਵਰਤ ਕੇ ਮੈਂਬਰ ਬਣ ਸਕੇ । ਜੇਕਰ ਰੀਸੀਵਰ ਹੈ ਤਾਂ ਉਸ ਤੋਂ disqualifications remove ਕਿਉਂ ਹੋਣ ਇਸ ਲਈ ਕਿ ਉਸਦਾ ਕਾਫ਼ੀ ਅਸਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ । ਮੈਂ, ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ ਆਪ ਦੀ ਰਾਹੀਂ ਪੁਛ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਕੈਬੀਨਟ ਦੱਸੇ ਕਿ ਕਿਹੜੇ ਕਿਹੜੇ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ ਤਾਂ ਜੋ ਸਾਰਿਆਂ ਦੀ ਇਕੋ ਵੇਰ ਲਿਸਟ

[ਸਰਦਾਰ ਅੱਛਰ ਸਿੰਘ ਛੀਨਾ]

ਬਣਾ ਦਿਤੀ ਜਾਵੇ। ਮੈਨੂੰ ਤਾਂ ਇਉਂ ਪਤਾ ਲਗਦਾ ਹੈ ਕਿ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ mania ਹੈ ਕਿ ਹਰ ਸੈਸ਼ਨ ਵਿਚ ਬਿਲ ਆਂਦਾ ਜਾਵੇ ਕਿ ਫੁਲਾਨੀ category ਤੋਂ disqualifications remove ਕੀਤੀਆਂ ਜਾਣ। ਇਹ Constitution ਦੇ ਪ੍ਰਬੰਧਾਂ ਦੀ ਉਲੰਘਣਾ ਹੈ ਅਤੇ ਆਮ ਜੰਤਾ ਨਾਲ injustice ਕੀਤਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਮੈਂ ਸਰਕਾਰ ਪਾਸ ਅਪੀਲ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ Constitution ਨੂੰ ਹਾਸੇ ਹੀਣਾ ਨਾ ਬਣਾਓ ਅਤੇ ਆਫੀਸ਼ਲ ਰੀਸੀਵਰ ਤੋਂ disqualifications ਨਾ ਹਟਾਓ। ਕੋਈ ਆਦਮੀ ਆਫੀਸ਼ਲ ਰੀਸੀਵਰ ਵੀ ਰਹੇ ਅਤੇ ਐਮ. ਐਲ. ਏ. ਵੀ ਰਹੇ। ਇਹ ਦੋਵੇਂ ਕੰਮ ਇਕੋ ਆਦਮੀ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦਾ ਅਤੇ ਡਿਊਟੀ ਪੂਰੀ ਨਹੀਂ ਦੇ ਸਕਦਾ। ਤੁਸੀਂ ਅਗੇ ਹੀ ਆਪਣੇ ਆਦਮੀਆਂ ਨੂੰ ਲਗਾਣ ਲਈ ਨੰਬਰਦਾਰਾਂ ਤੋਂ ਪਾਬੰਦੀਆਂ ਹਟਾਈਆਂ ਹਨ ਅਤੇ ਫਿਰ ਨੋਟਰੀ ਪਬਲਿਕ ਤੋਂ disqualifications remove ਕੀਤੀਆਂ ਹਨ।

ਸ਼੍ਰੀ ਸਪੀਕਰ : ਆਪ ਨੇ ਜੋ ਗੱਲ ਪਹਿਲਾਂ ਕਹੀ ਹੈ ਉਹੀ repeat ਕਰੀ ਜਾ ਰਹੇ ਹੋ। ਆਪ repetition ਨਾ ਕਰੋ। ਫਿਰ ਤੁਸੀਂ ਇਕ ਅਜਿਹੀ ਗਲ ਤੇ ਵਿਚਾਰ ਕਰ ਰਹੇ ਹੋ ਜੋ ਹਾਊਸ ਦੀ ਰਾਏ ਨਾਲ ਪਾਸ ਹੋ ਚੁਕੀ ਹੈ। ਜਿਸ ਤੇ ਤੁਸੀਂ ਪਿਛਲੇ ਸੈਸ਼ਨ ਵਿਚ decision ਦੇ ਚੁਕੇ ਹੋ। ਇਸ ਲਈ Notary Public ਤੇ ਤੁਸੀਂ attack ਨਾ ਕਰੋ। ਇਸ ਤੇ ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ ਫੈਸਲਾ ਹਾਊਸ ਨੇ ਬਹੁਸੰਮਤੀ ਨਾਲ ਕੀਤਾ ਹੈ।

ਸਰਦਾਰ ਅੱਛਰ ਸਿੰਘ ਛੀਨਾ : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ ! ਮੈਂ attack ਕਿਸੇ ਤੇ ਨਹੀਂ ਕਰ ਰਿਹਾ; ਮੈਂ ਤਾਂ reference ਦੇ ਰਿਹਾ ਹਾਂ। ਮੈਨੂੰ ਪੂਰਾ ਸ਼ਕ ਹੈ ਕਿ ਕਿਸੇ ਖਾਸ ਆਦਮੀ ਨੂੰ ਲਿਆਉਣ ਲਈ ਇਹ ਬਿਲ ਲਿਆਂਦਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਮੈਨੂੰ ਤਾਂ ਡਰ ਹੈ ਕਿ ਇਕ ਇਕ ਕਰਕੇ ਸਭ ਤੋਂ disqualifications remove ਕਰ ਦਿਤੀਆਂ ਜਾਣਗੀਆਂ ਅਤੇ ਵਕਤ ਦੂਰ ਨਹੀਂ ਕਿ ਡਿਪਟੀ ਕਮਿਸ਼ਨਰਾਂ ਅਤੇ ਐਸ. ਪੀ. ਤੋਂ ਵੀ disqualifications remove ਕਰ ਦਿਤੀਆਂ ਜਾਣਗੀਆਂ।

ਮੇਰੀ ਤਾਂ ਅਪੀਲ ਹੈ ਕਿ ਤੁਸੀਂ ਇਹ disqualifications remove ਕਰਕੇ Constitution ਨੂੰ ਮਖੌਲ ਨਾ ਕਰੋ ਅਤੇ amendment ਲਿਆ ਕੇ

ਇਸ ਨੂੰ ਹਾਮੋ-ਹੀਣਾ ਨਾ ਬਣਾਉ । ਇਸ ਨਾਲ favouritism ਅਤੇ nepotism ਵਧੇਗੀ ।

ਸ਼੍ਰੀ ਮੂਲ ਚੰਦ ਜੈਨ (ਸੰਭਾਲਕਾ) : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਮੇਰੇ ਖੜੇ ਹੋਣੇ 'ਤੇ Opposition ਦੇ ਭਾਈ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਇਸ ਬਿਲ ਦੀ ਮੁਖਾਲਿਫਤ ਕੀ ਹੈ ਪਰੇਸ਼ਾਨ ਹੈ । ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਕੌਨ ਸਾ ਪਹਾੜ ਟੂਟਣੇ ਵਾਲਾ ਹੈ । ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਜੋ ਨਕਸ਼ਾ ਇਸਦੇ ਬਾਰੇ ਮੈਂ ਖੀਂਚਾ ਹੈ ਉਸ ਤੋਂ ਪਤਾ ਚਲਦਾ ਹੈ ਕਿ ਕੋਈ ਭਾਰੀ ਆਕਰਸ਼ਣ ਆਉਣ ਵਾਲੀ ਹੈ । ਮੈਂ ਇਸ ਬਿਲ ਦੇ ਬਾਰੇ ਮੈਂ ਕੁਝ ਵਾਰੇ ਹਾਊਸ ਦੇ ਨੋਟਿਸ ਮੈਂ ਲਾਨਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ । ਇਹ ਬਿਲ ਜੋ Leader of the House ਨੇ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਹੈ ਪਹਿਲੇ ਹੀ Government of India Act, 1935 ਦੀ ਕਲਾਜ਼ ੩੦੭ 'ਚ ਦਰਜ ਹੈ । ਇਸ ਲਿਖੇ ਮੇਰੇ ਦੋਸਤਾਂ ਨੇ ਜੋ ਨਕਸ਼ਾ ਖੀਂਚਾ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਬਿਲ ਐਮ. ਐਲ. ਐਫ਼. ਦੇ ਬਚਾਨੇ ਦੇ ਲਿਖੇ ਹੈ ਬਿਲਕੁਲ ਬੇਬੁਨਿਆਦ ਹੈ । ਇਹ ਬਿਲ ਪਹਿਲੇ ਹੀ ਐਕਟ ਦੀ ਸ਼ਕਲ 'ਚ ਮੇਰੇ ਪਾਸ ਹੈ । ਜੋ Removal of disqualifications ਦਾ ਬਿਲ ਪਿਛਲੇ ਸੈਸ਼ਨ 'ਚ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਸੀ ਉਸ 'ਚੋਂ ਇਸੀ ਕਾਨੂੰਨ ਦੇ ਮੁਤਾਬਿਕ ਤਰਸੀਮ ਕੀਤੀ ਗਈ ਸੀ । ਅੱਜ ਅੱਗੇ ਵੀ ਤਰਸੀਮ ਕੀਤੀ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ । ਇਹ ਕੋਈ ਨਵੀਂ ਚੀਜ਼ ਨਹੀਂ । ਇਹ ਤਰਸੀਮ ਪਹਿਲੇ ਤਰਸੀਮੀ ਬਿਲ ਦੇ ਸਮੇਂ ਨਹੀਂ ਲਾਈ ਗਈ ਅੱਜ ਲਾਈ ਗਈ ਹੈ ਅਤੇ ਅੱਗੇ ਲਾਈ ਗਈ ਹੈ । ਮੈਂ Government of India Act, 1935 ਦਾ ਹਵਾਲਾ ਦਿੰਦਾ ਹਾਂ । ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਮੈਂ ਆਪ ਦੀ ਵਸਤੂਤਤ ਤੋਂ ਐਕਟ ਦੀ ਕਲਾਜ਼ ੩੦੭ ਦੇ ਭਾਗ "ਬੀ" ਦੀ ਪੜ੍ਹਕਰ ਸੁਣਾਉਂਦਾ ਹਾਂ । ਸਾਰਾ ਸੈਕਸ਼ਨ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੈ:—

" 307. For purposes of the first elections of persons to serve as Members of the Federal Legislature and of Provincial Legislatures, no person shall be subject to any disqualification by reason only of the fact that he holds—

(a).....

(b) an office which is not a whole-time office remunerated either by salary or by fees."

ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ ! ਇਸ ਕਲਾਜ਼ ਦੇ ਮੁਤਾਬਿਕ ਆਫੀਸ਼ਲ ਰੀਸੀਵਰ ਦਾ office whole-time office ਨਹੀਂ ਹੈ । Part-time office ਹੈ । ਅੱਜ ਇਹ exempt ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ । ਫਿਰ ਮੇਰੇ ਦੋਸਤ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਇਹ ਬਿਲ ਠੀਕ ਤਰੀਕੇ ਤੋਂ ਨਹੀਂ ਲਿਆ ਗਿਆ ।

੧੯੩੫ ਦੇ ਐਕਟ ਦੇ ਬਾਦ ਮੱਧ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ ਦਾ ੧੯੫੦ ਦਾ ਐਕਟ ਹੈ । ਜਿਸ ਦਾ ਪੂਰਾ ਨਾਮ ਹੈ "Madhya Pradesh Offices of Profits, Removal of Disqualifications Act, 1952" । ਇਸ ਐਕਟ 'ਚ ਜੋ offices exclude ਕੀਤੇ ਗਏ ਹਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਗਿਣਤੀ ੧੩ ਹੈ ਅਤੇ ਆਇਟਮ ਨੰ. ੭ ਹੈ "Official Receiver-Appointed under Non-Provincial Insolvency Act, 1900".

ਤਾਂ ਮੈਂ ਦੋ ਕਾਨੂੰਨਾਂ ਦੇ ਹਵਾਲੇ ਦਿੰਦਾ ਹਾਂ । ਅੱਜ ਅੱਗੇ ਮੇਰੇ ਅਪਪੋਜੀਸ਼ਨ ਦੇ ਭਾਈ ਨੇ ਸਮਝੇਂ ਤਾਂ ਮੈਂ ਕੀਤਾ ਕਹਾਂ । ਅੱਜ ਇਸੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦਾ ਕਾਨੂੰਨ ਪਹਿਲੇ ਪੰਜਾਬ 'ਚ ਨਹੀਂ ਲਿਆ ਗਿਆ ਹੈ ਤਾਂ ਇਸ 'ਚੋਂ ਕੋਈ ਹਰਜ਼ ਨਹੀਂ । ਇਹ ਕੋਈ ਨਵੀਂ ਚੀਜ਼ ਨਹੀਂ ਜਿਸ ਤੋਂ favouritism ਅਤੇ nepotism ਦਾ ਡਰ ਮੇਰੇ Opposition ਦੇ ਦੋਸਤਾਂ 'ਚ ਹੋ । ਮੈਂ ਇਸੀ ਲਿਖੇ ਤਾਂ ਕਾਨੂੰਨ ਅੱਜ ਪੜ੍ਹ ਕਰ ਸੁਣਾਇਆ ਹੈ । ਇਨ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਸਾਥ ਮੈਂ ਇਸ ਬਿਲ ਦੀ ਪੂਰੇ ਜ਼ੋਰ ਤੋਂ ਸਹਾਇਤਾ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ।

ਸਰਦਾਰ ਸਰੂਪ ਸਿੰਘ (ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਸ਼ਹਿਰ, ਪੂਰਬੀ) : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ ! ਮੇਨੂੰ ਹੋਰਾਨੀ ਉਨੀ ਚੀਜ਼ ਮਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਦੇ ਬਿਲ ਪੇਸ਼ ਕਰਨ

[ਸਰਦਾਰ ਸਰੂਪ ਸਿੰਘ]

ਤੇ ਨਹੀਂ ਹੋਈ ਜਿੰਨੀ ਕਿ ਸ਼੍ਰੀ ਮੂਲ ਚੰਦ ਸ਼ੇਨ ਦੀ ਇਸ ਬਿਲ ਨੂੰ support ਕਰਨ ਤੇ ਹੋਈ ਹੈ ਅਤੇ 1935 ਦੇ ਐਕਟ ਨੂੰ quote ਕਰਨ ਤੇ ਹੋਈ ਹੈ। ਮੈਂ ਜੇਨ ਸਾਹਿਬ ਨੂੰ ਦਸ ਦੇਵਾਂ ਕਿ 1935 ਦਾ law ਤਾਂ inoperative ਹੋ ਚੁਕਾ ਹੈ। ਇਸ ਦੀ ਥਾਂ ਤੇ Constitution of India ਦਾ Article 191 ਹੈ ਜਿਸ ਵਿਚ Official Receiver ਦੇ office ਨੂੰ Office of Profit ਕਿਹਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ 1935 ਦਾ ਐਕਟ quote ਕਰਨਾ ਜੇਨ ਸਾਹਿਬ ਦੀ ਜ਼ਿਆਦਤੀ ਅਤੇ ਭੁਲ ਸੀ।

ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ! ਅਸਾਡੀ Constitution ਨੇ contractors ਨੂੰ disqualify ਕੀਤਾ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਇਹ ਕਾਫ਼ੀ ਅਸਰ ਵਾਲੇ ਹੁੰਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ exploit ਕਰ ਸਕਦੇ ਹਨ। ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਲਾਹੌਰ ਦਾ Official Receiver ਖਵਾਜਾ ਨਜ਼ੀਰ ਅਹਿਮਦ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਵੀ ਨਹੀਂ ਭੁਲਿਆ ਹੋਣਾ। ਉਸਨੇ ਲੱਖਾਂ, ਕਰੋੜਾਂ ਦੀ ਜਾਇਦਾਦ ਬਣਾ ਲਈ ਸੀ। ਇਸ ਲਈ ਆਫੀਸ਼ਲ ਰੀਸੀਵਰ, ਨੰਬਰਦਾਰ, ਪਟਵਾਰੀ ਅਤੇ ਨੋਟਰੀ ਪਬਲਿਕ ਜੋ ਹਨ these are officials of immense influence ਅਤੇ ਆਫੀਸ਼ਲ ਰੀਸੀਵਰ, ਨੰਬਰਦਾਰ, ਪਟਵਾਰੀ ਆਦਿ ਕਈਆਂ ਦੀਆਂ ਜਾਨਾਂ ਕੜਕੀ ਵਿਚ ਲੈ ਆਂਦੇ ਹਨ। ਹੁਣ ਇਕ ਪਟਵਾਰੀ ਹੈ। ਉਹ ਆਪਣੇ ਹਲਕੇ ਦੇ ਵੋਟਰਾਂ ਤੋਂ ਵੋਟ ਨਹੀਂ ਲੈ ਸਕਦਾ, ਚੋਣਾਂ ਵਿਚ ਖੜ੍ਹਾਂ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦਾ, convass ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦਾ ਅਤੇ ਕਿਸੇ ਪਾਰਟੀ ਦਾ Political Agent ਨਹੀਂ ਬਣ ਸਕਦਾ। ਇਸ ਲਈ requisite Law ਵੀ ਮੌਜੂਦ ਹੈ ਕਿ ਕਿਤੇ ਉਹ ਆਪਣੇ ਅਸਰ ਨੂੰ ਨਾ ਵਰਤ ਸਕੇ। ਫਿਰ ਦੀਦਾ ਦਾਨਿਸਤਾ amendment ਪੇਸ਼ ਕਰਨੀ Constitution ਨਾਲ ਭੱਦਾ ਮਜ਼ਾਕ ਹੈ।

ਇਸ ਸੰਬੰਧ ਵਿਚ ਮੇਰੇ ਵੀਰ ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ ਨੇ ਖੋਜ ਕਰਨ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤੀ ਹੈ ਕਿ ਇਹ amendment ਕਿਸੇ ਸਜਨ ਨੂੰ M.L.A. ਬਣਾਉਣ ਦਾ ਇਕ ਰਸਤਾ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਸਿਵਾ ਨ ਤਾਂ ਇਸ amendment ਦੀ ਕੋਈ ਜ਼ਰੂਰਤ ਹੈ ਤੇ ਨ ਹੀ ਇਸ ਨੂੰ ਪੇਸ਼ ਕਰਨ ਵਿਚ sense ਹੈ। ਮੈਂ ਸਮਝਦਾ ਹਾਂ ਕਿ better sense prevail ਕਰੇਗੀ ਜੇਕਰ disqualifications ਤੇ strictly ਅਮਲ ਕੀਤਾ ਜਾਵੇ ਅਤੇ ਆਫੀਸ਼ਲ ਰੀਸੀਵਰ ਤੇ disqualifications

mike को मुंह के नज़दीक रख कर बोलें और ऊंची आवाज़ से बोलें ताकि उन को आवाज़ सुनाई दे ।

श्री बाबू दयाल : क्या मंत्री सहोदय बताने की कृपा करेंगे कि इस से पहले सरकार ने किसी विशेषज्ञ की राय नहीं पूछी कि आया इन पहाड़ों में mica उपलब्ध है या नहीं । सरकार ने किस बिना पर यह सर्वे (survey) शुरू करवाया है ?

मंत्री : इस ਤੋਂ ਪਹਿਲੇ ਸਾਡੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਕੁਝ ਸਰਸਰੀ survey ਕਰਵਾਇਆ ਸੀ ਅਤੇ ਇਸ ਕਰਕੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਚੀਜ਼ਾਂ ਦੀ ਕੁਝ ਵਾਕਫੀਅਤ ਸੀ ਫਿਰ ਅਸਾਂ ਕੇਂਦਰੀ ਸਰਕਾਰ ਨਾਲ ਗਲ ਬਾਤ ਕਰਕੇ ਮੁਕੰਮਲ survey ਕਰਨ ਦਾ ਇਰਾਦਾ ਕੀਤਾ ਹੈ । ਸਾਨੂੰ ਉਮੀਦ ਹੈ ਕਿ ਉਥੋਂ ਇਹ ਚੀਜ਼ਾਂ ਮਿਲ ਜਾਣਗੀਆਂ ।

RESTORATION OF LAND TO UMAID AND OTHER MEOS IN DISTRICT GURGAON

*3493. Pandit Shri Ram Sharma: Will the Minister for Finance be pleased to state:—

- (a) whether the names of Umaid and Chand Khan and others of Thana Alam, Police Station Tauru, District Gurgaon are entered in the special census of Meos;
- (b) whether the lands of the said two persons and others have been restored to them ; if not, the reasons therefor ?

Sardar Ujjal Singh : (a) The names of Umaid and Chand Khan of village Thana Alam are not entered in the Special Census of Meos. The residents of this village whose names appear in the census Registers are (1) Khairati son of Khuda Bux (2), Chheetan, son of Wahid, (3) Chahat, son of Sukha and (4) Nur Mohammad son of Rasula.

(b) The lands of Umaid and Chand Khan were not restored because they could not prove themselves non-evacuees. The lands of Kharaiti Chheetar, Chahat and Nur Mohammad referred to in part (a) above were duly restored to them.

ਪੰਡਿਤ ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਸ਼ਰਮਾ : ਕਜ਼ੀਰ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਧਰਮ ਫਰਮਾਇਆ ਹੈ ਕਿ ਉਮੈਦ ਆਰ ਚਾਨ੍ਦ ਖਾਨ ਦੇ ਨਾਮ census ਰਜਿਸਟਰ ਮੇਂ ਦਰਜ ਨਹੀਂ ਹੈਂ । ਤੋ ਕਯਾ ਧਰਮ ਉਨ ਕੋ ਇਲਮ ਨਹੀਂ ਹੈ ਕਿ ਉਨ੍ਹੋਂ ਨੇ ਸਰਕਾਰ ਕੋ ਦਰਖਾਸਤ ਭੇਜੀ ਹੈ ਆਰ ਉਸ ਕੇ ਸਾਥ ਉਨ੍ਹੋਂ ਨੇ ਇਸ ਬਾਤ ਕਾ ਸਬੂਤ ਭੇਜਾ ਹੈ ਕਿ ਉਨ ਕੇ ਨਾਮ census ਰਜਿਸਟਰ ਮੇਂ ਦਰਜ ਹੈਂ ?

ਅਰਥ ਮੰਤ੍ਰੀ : ਮੈਂ ਇਸ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਜ਼ਿਆਦਾ ਤਾਂ ਨਹੀਂ ਜਾਣਦਾ ਲੇਕਿਨ ਇਹ ਗਲ ਸਹੀ ਹੈ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਨਾਮ Census Register ਵਿਚ

[ਅਰਥ ਮੰਤ੍ਰੀ]

ਦਰਜ ਨਹੀਂ ਹਨ ਅਤੇ ਇਹ ਗਲ ਅਸੀਂ ਦਰਿਆਫਤ ਕਰ ਚੁਕੇ ਹਾਂ। ਬਾਕੀ ਅਜੇ ਤਕ ਇਹ ਗਲ ਉਹ ਸਾਬਤ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕੇ ਕਿ ਉਹ non-evacuees ਹਨ। ਇਸ ਕਰ ਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਜਮੀਨ ਵਾਪਸ ਨਹੀਂ ਦਿੱਤੀ ਗਈ।

ਪੰਡਿਤ ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਸ਼ਰਮਾ: ਕਥਾ ਸੰਤ੍ਰੀ ਸਹੋਦਯ ਧਰੁ ਕਰਨੇ ਕੀ ਕੁਪਾ ਕਰੇਂਗੇ ਕਿ ਕੀਸੀ ਤਾਰੀਖ ਕੋ ਭਨ ਕੀ ਫਰਕਾਸਤ ਪਰ ਕੀਸੀ ਅਫ਼ਸਰ ਨੇ ਫ਼ੈਸਲਾ ਮੀ ਕੀਯਾ ਥਾ ?

ਮੰਤ੍ਰੀ: ਮੇਰੀ ਤਾਂ ਇਤਨੀ ਯਾਦਦਾਸ਼ਤ ਨਹੀਂ ਹੈ ਕਿ ਮੈਨੂੰ ਇਹ ਯਾਦ ਹੋਵੇ ਕਿ ਕਿਸ ਤਾਰੀਖ ਨੂੰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਦਰਖਾਸਤਾਂ ਉਪਰ ਫੈਸਲਾ ਦਿੱਤਾ ਗਿਆ ਸੀ। ਹਾਂ, hon. Member ਦੀ ਯਾਦਦਾਸ਼ਤ ਬਹੁਤ ਤੇਜ਼ ਹੈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਭਾਵੇਂ ਇਹ ਗਲ ਯਾਦ ਹੋਵੇ।

ਪੰਡਿਤ ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਸ਼ਰਮਾ: ਵਾਸਤਵ ਮੇਂ ਮੇਰਾ ਸਤਲੁਕ ਤਾਰੀਖ ਪੂਛਨੇ ਸੇ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਮੇਰਾ ਸਤਲੁਕ ਤੋ ਧਰੁ ਹੈ ਕਿ ਕੀਸੀ stage ਪਰ ਭਨ ਕੀ ਫਰਕਾਸਤੀਂ ਪਰ ਕੋਫ਼ੈ ਫ਼ੈਸਲਾ ਦਿਯਾ ਗਯਾ ਥਾ ਯਾ ਨਹੀਂ ?

ਮੰਤ੍ਰੀ: ਜੇਕਰ hon. Member ਇਸ ਸਵਾਲ ਦਾ ਨੋਟਿਸ ਦੇਣ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਜਵਾਬ ਦਿਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ।

WIDOW HOMES IN THE STATE.

*3546. Shrimati Sita Devi: Will the Minister for Finance be pleased to state :—

- (a) the total number of Widow Homes in the State at present and the names of persons incharge of the same along with their salaries;
- (b) the total number of widows and children kept in each of the said Homes at present ?

Sardar Ujjal Singh: (a) There are the following five Women Homes in the State. The names of the superintendents incharge of the Homes and their monthly emoluments are given against each—

Serial No.	Name of the Home	Superintendent	Scale of pay
1	Gandhi Vanita Ashram, Jullundur	Miss Krishna Thapar	Rs 250 (Consolidated) plus Rs 50 as special pay for Training-cum-Production Centre
2	Mahila Ashram, Hoshiarpur	Miss Damyanti Sehgal	Ditto

[Minister for Finance]

Serial No.	Name of the Home	Superintendent	Scale of pay
3	Mahila Ashram, Karnal	Miss P.K. Makhan Singh	Rs 250 (Consolidated) plus Rs 50 as special pay for Training-eum-Production Centre
4	Mahila Ashram, Rohtak	Miss Harbans Kaur Sundhuwalia	Ditto
5	Seva Sadan, Jullundur	Miss Shakuntla Kapur	Rs 175 (Consolidated)

(b) The total number of widows and children kept in the these homes is as under—

1. Gandhi Vanita Ashram, Jullundur	..	1,262
2. Mahila Ashram, Hoshiarpur	..	1,378
3. Mahila Ashram, Karnal	..	1,445
4. Mahila Ashram, Rohtak	..	1,450
5. Seva Sadan, Jullundur	..	216

ਸ਼੍ਰੀਮਤੀ ਸੀਤਾ ਦੇਵੀ : ਕਧਾ ਵਯੀਰ ਸਾਹਿਬ ਬਤਾਨੇ ਕੀ ਕ੍ਰਪਾ ਕਰੋਗੇ ਕਿ इन Widow Homes में अब admission बन्द हो गई है या कि होती है ?

ਮੰਤ੍ਰੀ : ਉਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਤਾਂ ਇਹ ਸਵਾਲ ਪੈਦਾ ਹੀ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ । ਇਹ ਵੀ ਮੈਂ ਅਪਣੀ ਭੈਣ ਨੂੰ ਕਹਿਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਹੁਣ ਕੇਂਦਰੀ ਸਰਕਾਰ ਦਾ ਹੁਕਮ ਆ ਗਿਆ ਹੈ ਕਿ Widow Homes ਵਿਚ ਦਾਖਲਾ ਕਰਨ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਸਾਡੀ ਮਨਜ਼ੂਰੀ ਲਵੇ । ਇਸ ਕਰਕੇ ਦਾਖਲਾ ਬਿਲਕੁਲ ਤਾਂ ਨਹੀਂ ਬੰਦ ਹੋਇਆ ਲੇਕਿਨ ਬੜੀ ਇਹਤਿਆਤ ਨਾਲ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ।

ਸ਼੍ਰੀ ਸੂਲ ਚੰਦ ਜੈਨ : ਕਧਾ ਮੰਤ੍ਰੀ ਸਹੋਦਯ ਬਤਾਨੇ ਕੀ ਕ੍ਰਪਾ ਕਰੋਗੇ ਕਿ ਜੋ ਸਹਿਲਾ इन बिड़डो होमज़ (Widow Homes) में दाखिल कर ली जाती है उस को indefinite period के लिये रखा जाता है या कि कुछ अरसे के लिये training ਦੇ ਕਰ ਬਾਹਰ ਭੇਜ ਦਿਯਾ ਜਾਤਾ ਹੈ ?

ਮੰਤ੍ਰੀ : ਜਿੜੀ ਵਿਧਵਾ ਜਾਂ ਬੱਚਾ ਇਨ੍ਹਾਂ Widow Homes ਵਿਚ ਦਾਖਿਲ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਜਦੋਂ ਤਕ ਤਾਂ ਉਸਦਾ ਕੋਈ ਸਹਾਰਾ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ ਉਸ ਨੂੰ ਉਥੇ ਰਖਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ । ਲੇਕਿਨ ਜਦੋਂ ਕੋਈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ compensation ਮਿਲ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਬਾਹਰ ਜਾ ਕੇ ਅਪਣੇ ਗੁਜ਼ਾਰੇ ਦਾ ਬੰਦੋਬਸਤ ਕਰਨ ਲੇਕਿਨ ਸਰਕਾਰ ਦਾ ਇਹ ਫ਼ੈਸਲਾ ਹੈ ਕਿ ਜਦੋਂ ਉਹ ਬਾਹਰ ਜਾਣ ਤਾਂ ਸਰਕਾਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਰਿਹਾਇ ਦਾਸ਼ ਇੰਤਜ਼ਾਮ ਕਰ ਦੇਵੇ ।

श्रीमती सीता देवी : क्या वज़ीर साहिब कृपया बतायेंगे कि इन विधवाओं को हमेशा के लिये रखा जाता है या कि जब वे कोई काम सीख लें तो उन को rehabilitate करने का भी प्रबन्ध किया जाता है ?

अरब मंत्री : ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿਧਵਾਵਾਂ ਨੂੰ ਕੰਮ ਸਿਖਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਅਤੇ ਜਦੋਂ ਕੰਮ ਸਿਖ ਜਾਣ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ rehabilitate ਕਰਨ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

श्रीमती सीता देवी : क्या वज़ीर साहिब बताने की कृपा करेंगे कि गवर्नमेंट ने इस बारे कोई कमेटी सुकरें की हुई है जो यह देखे कि जिस औरत को काम सिखाया जाता है उस को rehabilitate किया भी गया है या नहीं ?

अरब मंत्री : ਇਹ Supplementary question ਪੈਦਾ ਹੀ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ। ਜੇ ਕਰ ਤੁਸੀਂ ਨੋਟਿਸ ਦਿਓ ਤਾਂ ਇਸ ਦਾ ਜਵਾਬ ਦਿੱਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ।

अध्यक्ष महोदय : मैं hon. Lady Member से दरखास्त करूंगा कि वह ऐसे सवाल पूछे जिन का main question से कुछ ताल्लुक कायम किया जा सकता हो। जिन Supplementary questions का ताल्लुक main question से नहीं कायम किया जा सकता, ऐसे सवाल पूछ कर हाऊस का वक्त जाया न करें।

श्रीमती सीता देवी : मैं स्पीकर साहिब से यह जानना चाहती हूं कि जो जवाब वज़ीर साहिबान की तरफ से दिया जाता है उस में से जो Supplementary arise होते हैं वे पूछे जा सकते हैं कि नहीं ?

अध्यक्ष महोदय : कमेटी वगैरा का तो सवाल पैदा ही नहीं होता।

श्रीमती सीता देवी : श्री मूल चन्द जैन के प्रश्न में जो उत्तर वज़ीर साहिब ने दिया था उस में से यह Supplementary पैदा होता है कि क्या सरकार ने इस बात की जांच के लिये कोई कमेटी बनाई है कि नहीं ? मैंने irrelevant question नहीं पूछा।

अध्यक्ष महोदय : फिर भी मैं hon. Members को एहतियात रखने की गुजारिश करूंगा और hon. Ministers को तो ऐसे सवालों का जवाब देने की तकलीफ ही नहीं करनी चाहिए।

श्री मूल चन्द जैन : क्या वज़ीर साहिब बतायेंगे कि जो औरतें सन् १९४८ में महिला आश्रमों में दाखिल हुईं और जिन के बच्चे अब नौजवान हो कर रोज़गार में लग गये हैं, वे अब इन आश्रमों में रह सकती हैं या इन्हें अब निकाल दिया जायेगा ?

मंत्री : इस का जवाब मैं ऐसे नहीं दे सकता। इस के लिये आप अलग नोटिस दें।

PAY AND ALLOWANCES PAID TO DIRECTOR REHABILITATION ETC.

*3547. Shrimati Sita Devi : Will the Minister for Finance be pleased to state :—

- (a) the pay and allowances being paid at present to the Director, Rehabilitation and Directress, Rehabilitation, Women Section, respectively;
- (b) whether they are being paid any conveyance allowance as well as free accommodation or any allowance in lieu thereof ; if so, the details thereof ?

Sardar Ujjal Singh :

- (a) There is no Director, Rehabilitation in these days. There is only one Director, Women Section, who is being paid Rs 750 (consolidated) per month.
- (b) No conveyance, accommodation or any other allowance is being paid to the Director, Women Section.

ਸ਼੍ਰੀਮਤੀ ਸੀਤਾ ਦੇਵੀ : ਜਕ ਕਹੁ ਬਾਹਰ ਫੀਰੇ ਪਰ ਜਾਤੀ ਹੈ ਤੋ ਕਯਾ ਕਹੁ ਅਪਨੀ ਕਾਰ ਪਰ ਜਾਤੀ ਹੈ ਯਾ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਕੀ ਕਾਰ ਪਰ ? ਇਸ ਕੇ ਇਲਾਕਾ ਕਯਾ ਤਨਹੂੰ ਕੋਈ conveyance allowance ਮੀ ਦਿਆ ਜਾਤਾ ਹੈ ?

ਮੰਤ੍ਰੀ : ਉਹ ਚੀਜ਼ conveyance allowance ਵਿਚ ਨਹੀਂ ਆਉਂਦੀ ਉਹ ਤਾਂ Travelling allowance ਹੈ ਜਿਹੜਾ ਕਿ rules ਦੇ ਮੁਤਾਬਿਕ ਸਾਰਿਆਂ ਸਰਕਾਰੀ ਮੁਲਾਜ਼ਮਾਂ ਨੂੰ ਦਿੱਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ।

ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ ਮੋਤਾ ਸਿੰਘ ਆਨੰਦਪੁਰੀ : ਮਿਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਫਰਮਾਇਆ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਵੇਲੇ ਇਸ ਮਹਿਕਮੇ ਵਿਚ ਕੋਈ ਡਾਇਰੈਕਟਰ ਨਹੀਂ । ਕੀ ਉਹ ਕਿਰਪਾ ਕਰਕੇ ਦਸਣਗੇ ਕਿ ਜਿਹੜਾ ਕੰਮ ਪਹਿਲਾਂ ਡਾਇਰੈਕਟਰ ਕਰਦਾ ਸੀ ਉਸਨੂੰ ਹੁਣ ਕੌਣ ਕਰਦਾ ਹੈ ?

ਮੰਤ੍ਰੀ : ਉਹ ਕੰਮ ਹੁਣ Under-Secretary (Rural) ਕਰਦਾ ਹੈ ; ਡਾਇਰੈਕਟਰ ਕੋਈ ਨਹੀਂ ।

WIDOW HOMES

*3548. Shrimati Sita Devi : Will the Minister for Finance be pleased to state —

- (a) the total expenditure so far incurred by the Government on the Widow Homes in the State ;

[Shrimati Sita Devi]

(b) the amount so far paid in cash to the Children and Women in these Homes together with the amount spent on the staff working therein ?

Sardar Ujjal Singh : (a) It is not possible to give separate figures of expenditure incurred on the administration and maintenance of Women Homes prior to the year 1950-51, as the expenditure on these institutions was booked collectively with the other expenditure on the Relief Camps in the State.

From April 1950, to March 1954, a total amount of Rs. 70,78,338 was incurred on Women Homes.

(b) Prior to July 1951, no cash allowances were paid to the inmates of the Homes as all of them were issued rations in kind, clothing, etc.

Under the instructions of the Government of India, cash doles are being paid to the inmates of the Homes from July 1951. A total amount of Rs 44,22,483 upto March, 1954 has been incurred on this account. A sum of Rs 5,91,346 was during 1950-54, spent on the administrative staff of the Women Homes.

श्री मूल चन्द जैन : क्या वजीर साहिब बतायेंगे कि इन महिलाओं और बच्चों को जो cash allowance दिया गया था वह भी इसी 70,78,338 रुपए वाली रकम में शामिल है ?

मंत्री : जी हां, इसी में शामिल है।

FAMILY PLANNING.

***3358. Shri Ram Chandra Comrade.** Will the Minister for Education be pleased to state whether the Government has received any grant from the Union Government for educating people in regard to family planning; if so, the terms and conditions thereof and the action taken so far by the Government in the matter ?

Shri Jagat Narain : No.

~ श्रीमती सीतादेवी : मिनिस्टर साहिब ने उत्तर में कहा है—“जी नहीं”। मैं जानना चाहती हूँ कि क्या गवर्नमेंट इस बात पर सोचना जरूरी समझती है या नहीं ?

मंत्री : सोच रही है।

~ श्रीमती सीता देवी : यदि आप सोच रहे हैं तो क्या मैं पूछ सकती हूँ कि गवर्नमेंट ने इस उद्देश्य के लिये कोई स्कीम बनाई है या कोई स्कीम तैयार करने के लिये किसी को कोई आदेश दिया है ?

मंत्री : जी हां, कहा है।

श्री राम किशन : क्या पंजाब गवर्नमेंट की हिदायत के मुताबिक किसी जिला में कोई Family Planning Committee बनाई गई है ?

मंत्री : कई जगहों पर छोटे छोटे हस्पताल जरूर खोले गए हैं, कमेटियां कोई नहीं बनाई गई ।

पंडित श्री राम शर्मा : वजीर साहिब ने फ़रमाया है कि पंजाब गवर्नमेंट इस सवाल पर ग़ौर भी कर रही है और कुछ किया भी गया है । क्या मैं पूछ सकता हूँ कि सरकार ने अब तक क्या कुछ किया है ?

मुख्य मंत्री : मੈम्बर साहिब की इत्तलाह के लिये मैं यह कह देना चाहता हूँ कि Family Planning की movement non-official तौर पर चलाई जा रही है, गवर्नमेंट की तरफ से नहीं । कर्नल खोसला यह काम एक कमेटी की शकल में चला रहे हैं । इस लिये जाहिर है कि यह एक non-official organisation है, सरकारी नहीं । हाँ, अगर इस कमेटी को किसी वक़्त गवर्नमेंट की मदद की जरूरत हो तो वह उसे हासिल कर सकती है ।

श्रीमती सीता देवी : चीफ़ मिनिस्टर साहिब ने बताया है कि यह scheme non-official तौर पर चलाई जा रही है । उन्होंने यह भी फ़रमाया है कि अगर उसे जरूरत हो तो गवर्नमेंट उस की मदद कर सकती है । मैं पूछना चाहती हूँ कि क्या आप इस बात की जरूरत महसूस करते हैं कि इस आन्दोलन को official तौर पर organise किया जाए ?

मुख्य मंत्री : यह कोई सवाल नहीं ।

पंडित श्री राम शर्मा : वजीर मुतअल्लिका ने बताया कि गवर्नमेंट खुद इस चीज़ पर सोच रही है और इस के लिये कुछ कर रही है लेकिन चीफ़ मिनिस्टर साहिब ने बताया है कि यह काम non-official तौर पर किया जा रहा है । मैं जानना चाहता हूँ कि क्या यह आन्दोलन official है या non-official और गवर्नमेंट ने अब तक इस सिलसिला में क्या मदद दी है ?

मुख्य मंत्री : सवाल में यह चीज़ बिल्कुल नहीं पूछी गई थी । सवाल तो सिर्फ़ यह था कि यूनियन गवर्नमेंट ने इस के लिये क्या ग्रांट दी है न कि यह कि पंजाब गवर्नमेंट ने क्या मदद दी है ।

पंडित श्री राम शर्मा : जब मनिस्टर मुतअल्लिका ने बताया कि सरकार इस बात पर ग़ौर कर रही है, स्कीम बना रही है और काम हो रहा है तो लाज़मी तौर पर आप ने कोई न कोई मदद सरकारी तौर पर इस सिलसिला में दी होगी ।

अध्यक्ष महोदय : यह सवाल पैदा ही नहीं होता ।

ਸਰਦਾਰ ਸਰੂਪ ਸਿੰਘ : ਚੀਫ਼ ਮਿਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਦੱਸਿਆ ਹੈ ਕਿ ਇਹ organisation non-official ਤੋਰ ਤੇ ਕੰਮ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ । ਮੈਂ ਜਾਨਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਕੀ ਉਸ ਕਮੇਟੀ ਵਿਚ ਕੋਈ lady member ਵੀ ਹੈ ? ਜੇ ਹੈ ; ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਨਾਉਂ ਕੀ ਹੈ ?

ਵਿਕਾਸ ਮੰਤ੍ਰੀ : ਨਾਓਂ ਜਾਣ ਕੇ ਤੁਸਾਂ ਕੀ ਕਰਨਾ ਹੈ।

FEE CONCESSION TO HARIJAN STUDENTS.

***3521. Shri Jagat Ram Bhardwaj :** Will the Minister for Education be pleased to State —

- (a) the total number of Harijan students whose fees have not been paid by the Government for the year 1953-54 ;
- (b) the total number of those students whose scholarships have not been paid so far by the Government ;
- (c) the steps, if any, that are under the consideration of the Government to equalise the pays of Government College Teachers and University Teachers?

Shri Jagat Narain : The required information is not ready. It is being collected and will be supplied to the member.

CONTRACT WITH KRISHAN TRADING COMPANY, PATTI, DISTRICT AMRITSAR.

***3476. Sardar Sarup Singh :** Will the Minister for Public Works be pleased to state :—

- (a) (i) whether any resolution No. 113 regarding a contract about the supply of water for sprinkling purposes from the tube-well of Krishan Trading Company, Patti, District Amritsar, with the said Company was passed by the Municipal Committee, Patti, District Amritsar, during 1951 ; if so, when ;
- (ii) a copy of the said resolution be laid on the table ;
- (iii) the terms of the contract referred to in part (a) (i) above ;
- (b) the list of the Municipal Commissioners who participated in the meeting in which the said resolution was passed ;
- (c) whether any of the Members referred to in part (b) above were the share-holders of the Krishan Trading Company, referred to in part (a) (i) above, during the year 1951 ; if so, their list ;
- (d) whether any explanation was called for by the Government from the Members referred to in part (c) above for action under section 48 of the Municipal Act ; if so, when, if not, the reasons therefor ;
- (e) (i) whether the President, Municipal Committee, Patti, referred to above, was called upon to explain his conduct in connection with certain Municipal affairs wherein certain allegations were made against him by the Deputy Commissioner, Amritsar,—vide his memorandum No. LFCI/3511-M-53, dated 29th March, 1954 ; if so, a copy of the allegations made therein be laid on the Table ;

- (e) (ii) whether any reply was submitted by him on or about 5th April, 1954 to the Deputy Commissioner, Amritsar ; if so, a copy of the reply received by the Deputy Commissioner be laid on the Table ;
- (f) (i) whether in the reply referred to in part (e) (ii) above any charges of having entered into the contract were levelled by the said President against the Members referred to in part (e) above ; if so, their list ;
- (ii) whether any enquiry was ordered by the Deputy Commissioner, Amritsar, on the basis of the said charges referred to in part (f) (i) above against the Members concerned ; if so, when ;
- (iii) the name of the person who conducted the said enquiry ;
- (g) the result of this enquiry, and the action, if any, taken by the Government in the matter ?

Sardar Gurbachan Singh Bajwa : The information is being collected and it will be supplied to the member when ready.

CATTLE FAIRS

***3532. Shri Ram Kumar Bidhat :** Will the Minister for Public Works be pleased to state —

- (a) the names of urban local bodies which hold, manage and derive income from the cattle fairs in the State ;
- (b) whether the Government has recently received any complaint from the Town Committee, Loharu, regarding the income derived by it from the cattle fair, held within the Municipal limits of Loharu being taken away by the District Board, Hissar ; if so, the action, if any, taken by the Government in the matter ?

Sardar Gurbachan Singh Bajwa : (a) Information is being collected and will be supplied to the member when ready.

(b) *Part I.*—Yes.

Part II.—The matter is under the consideration of Government.

MEDICAL REPORT OF THE LABOUR COMMISSIONER

***3360. Shri Ram Chandra Comrade :** Will the Minister for Labour be pleased to state—

- (a) whether the present Labour Commissioner was declared medically unfit by the Civil Surgeon, Ambala ; if so, the grounds of unfitness recorded by him ;
- (b) whether it is a fact that subsequently he was examined by the Medical Board at Amritsar and declared fit ; if so, the names of the members of the said Board along with their recommendations ?

Chaudhri Sundar Singh : (a) Yes, on account of Glycosurea by the Standing Invalidment Committee, Ambala, of which the Civil Surgeon, Ambala was the Chairman.

(b) Yes ; (1) Dr. Tulsi Das, P.C.M.S., Eye, Ear, Nose and Throat Specialist, V. J. Hospital, Amritsar.

(2) Dr. Hukam Chandra, P.C.M.S., Civil Surgeon, Amritsar.

(3) Dr. R. P. Malhotra, P.C.M.S., Assistant Professor of Medicine, Glancy Medical College, Amritsar, were members of the Special Medical Board who declared Shri Nigam fit for Government service ; on the basis of the report of the Provincial Bacteriological Laboratory Department of Pathology, Glancy Medical College, Amritsar, which did not indicate existence of traces of Glycosurea in his urine. Apart from this there was no recommendation.

SHORT NOTICE QUESTION AND ANSWER

POSTPONEMENT OF THE ELECTION TO SHIROMANI GURDWARA PRABANDHAK COMMITTEE

***3586. Sardar Hari Singh :** Will the Chief Minister be pleased to state whether he has received any request from a large number of Sikh Members of the Punjab Legislative Assembly requesting the Government to postpone the elections to Shiromani Gurdwara Prabandhak Committee to sometime in winter ?

Shri Bhim Sen Sachar : Yes.

ਸਰਦਾਰ ਗੋਪਾਲ ਸਿੰਘ : ਕੀ ਪੰਜਾਬ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਇਸ ਗੱਲ ਲਈ committed ਨਹੀਂ ਕਿ ਗੁਰਦੁਆਰਾ ਪ੍ਰਬੰਧਕ ਕਮੇਟੀ ਦੀਆਂ elections ਇਸ ਜੁਲਾਈ ਵਿਚ ਕਰਾਈਆਂ ਜਾਣਗੀਆਂ ।

मुख्य मंत्री : पंजाब गवर्नमेंट ने इस बात की रज़ामन्दी जाहिर की थी कि वह elections कराने को तैयार है अगर कमेटी इस बात के लिये कोई तजवीज़ ले आए । चुनावि पंजाब गवर्नमेंट ने ख्याल किया था कि जुलाई में elections करा दी जायें । अब मैम्बर साहिबान की तरफ़ से representations आई है और कुछ मिनिस्टरज़ का भी ख्याल यही है कि जुलाई का महीना elections के लिए मौसम के लिहाज़ से और चावल वगैरा लगाने का सीज़न होने की वजह से मुनासिब नहीं है । आप ने शायद देखा होगा कि अभी जो सरसा में elections हुई थीं वहां बहुत थोड़े वोटरज़ अपने वोट देने के लिये आए थे क्योंकि ज़िम्मीदार अपने काम में लगे हुए थे । इसी तरह वह अब जुलाई में अपने काम में लगे होंगे और अगर उन्हें अपने काम से हटाया जाये तो उनका नुकसान होगा और अगर वे न आयेंगे तो यह अन्देशा जाहिर किया जायेगा कि जो लोग elect हुए हैं वे उन के ठीक representatives नहीं होंगे । इस बिना पर यह दरखास्त की गई है कि इस election को बजाए जुलाई के थोड़ा सा आगे कर दिया जाये जब कि मौसम कुछ थोड़ा

ਅਚਾਨ ਹੋ ਜਾਏਗਾ। ਅੱਥਰ ਆਪ ਸਮਝ ਸਕਦੇ ਹੋ ਕਿ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਕੋ ਇਸ ਬਾਰੇ ਮੈਂ ਕਧਾ ਫੈਸਲਾ ਕਰਨਾ ਚਾਹਿਏ।

ਸਰਦਾਰ ਗੋਪਾਲ ਸਿੰਘ : ਕੀ ਮੈਂ ਪੁਛ ਸਕਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਜਿਸ ਵੇਲੇ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਜੁਲਾਈ ਵਿਚ election ਕਰਾਉਣ ਦਾ ਏਲਾਨ ਕੀਤਾ ਸੀ ਤਾਂ ਕੀ ਉਸ ਵੇਲੇ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਇਸ ਗਲ ਦਾ ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਸੀ ਕਿ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਵਿਚ ਬਾਰਸ਼ਾਂ ਜੁਲਾਈ ਦੇ ਮਹੀਨੇ ਵਿਚ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ ਅਤੇ ਚਾਵਲਾਂ ਦੀ ਬਿਜਾਈ ਦੇ ਦਿਨ ਇਹੋ ਹੀ ਹੁੰਦੇ ਹਨ ?

ਮੁੱਖ ਮੰਤਰੀ : ਮਾਨਨੀਯ ਮੈਂਬਰ ਨੇ ਬਹੁਤ ਮੁਨਾਸਿਬ ਸਵਾਲ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਮੈਂਨੇ ਧਰ ਦੇਖਾ ਹੈ ਕਿ ਬਾਜ਼ ਐਕਾਤ Democratic ਤਰੀਕਾ ਕੋ ਚਲਾਨੇ ਕੀ ਕੜੀ ਖਵਾਹਿਸ਼ ਹੋਤੀ ਹੈ ਐਰ ਉਸਕੀ ਕਜਹ ਸੇ ਜਲਦੀ ਹੋ ਜਾਤੀ ਹੈ। ਐਰ ਸ਼ਾਧਦ Leader of the Opposition ਕੋ ਸਵਾਲਸੇ ਇਸ ਚੀਜ਼ਕੀ ਟਾਇੰਦ ਹੋਤੀ ਹੈ ਕਿ ਜੁਲਾਈ ਕੋ ਮਹੀਨੇ ਮੈਂ ਕਰਸਾਤ ਲਗ ਜਾਤੀ ਹੈ। ਮੈਂ ਇਸ ਗਲਤੀ ਕੋ ਮਾਨ ਲੇਤਾ ਹੂੰ ਕਿ ਪਹਲੇ ਇਸ ਬਾਤ ਕਾ ਖ਼ਯਾਲ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ ਗਧਾ ਕਿ ਜੁਲਾਈ ਮੈਂ ਕਰਸਾਤ ਸ਼ਰੂ ਹੋ ਜਾਤੀ ਹੈ ਐਰ ਕੋਟਰੋਂ ਨੇ ਮੋਟਰੋਂ ਮੈਂ ਸਫ਼ਰ ਕਰਨਾ ਹੋਤਾ ਹੈ। ਮੈਂ ਮਾਨਨੀਯ ਮੈਂਬਰ ਕੋ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਦਿਲਾਤਾ ਹੂੰ ਕਿ ਆਇੰਦਾ ਕੋ ਲਿਯੇ ਇਸ ਬਾਤ ਕਾ ਖ਼ਯਾਲ ਰਖਾ ਜਾਯੇਗਾ।

ਸ਼ਰੀ ਪ੍ਰੋਬੋਧ ਚੰਦਰ : ਕਧਾ ਚੀਫ਼ ਮਿਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਕਤਾਯੋਂਗੇ ਕਿ ਕਧਾ ਧਰ ਸਚ ਹੈ ਕਿ ਫਾਜ਼ਿਲਕਾ ਸਰਸਾ ਕੀ ਇਲੈਕਸ਼ਨ ਕੋ ਸਿਲਸਿਲ ਮੈਂ ਉਨ ਕੋ ਪਾਸ ਇਸ ਬਾਰੇ ਸ ਕੜੀ ਸ਼ਿਕਾਧਤੋਂ ਆਈ ਥੀਂ ਕਿ ਕਟਾਈ ਕਾ ਮੀਸਮ ਹੋਨੇ ਕੀ ਕਜਹ ਸੇ ਕਹੁਤ ਸਾਰੇ ਕੋਟਰ ਆਪਨੇ ਕੋਟ ਨਹੀਂ ਦੇ ਸਕੇ ਥੇ ਐਰ election ਉਸ ਕਧਤ ਮੁਕਰੰਰ ਕਰਕੇ ਉਨਕੋ ਕੋਟ ਦੇਨੇ ਕੋ ਹਕ ਸੇ ਮਹਰੂਮ ਕੀਤਾ ਗਧਾ ਹੈ ?

ਸਰਦਾਰ ਗੋਪਾਲ ਸਿੰਘ : ਕੀ ਚੀਫ਼ ਮਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਦਸਣਗੇ ਕਿ ਸਰਕਾਰ ਪਾਸ ਕੋਈ ਇਹੋ ਜਿਹੀਆਂ representations ਵੀ ਆਈਆਂ ਹਨ ਕਿ elections ਜੁਲਾਈ ਵਿਚ ਜ਼ਰੂਰ ਕਰਾਈਆਂ ਜਾਣ।

ਮੁੱਖ ਮੰਤਰੀ : ਥੋਡਾ ਅਰਸਾ ਫੁਆ ਹੈ ਮੇਰੇ ਫਾਜ਼ਿਲ ਕੋਸਤ ਕੀ ਤਰਫ਼ ਸੇ ਐਕ representation ਇਸ ਬਾਰੇ ਮੈਂ ਆਈ ਥੀ ਜਿਸ ਮੈਂ ਐਕ ਟੋ Trust ਕੋ ਸਿਲਸਿਲੇ ਮੈਂ ਕੁਝ ਲਿਖਾ ਥਾ ਐਰ ਦੂਸਰਾ ਸਾਧ ਹੀ election ਕੋ ਬਾਰੇ ਮੈਂ ਲਿਖਾ ਥਾ।

ਸਰਦਾਰ ਹਰਕਿਸ਼ਨ ਸਿੰਘ ਸੁਰਜੀਤ : ਕੀ ਚੀਫ਼ ਮਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਦਸਣਗੇ ਕਿ ਇਹ postponement indefinite ਸਮੇਂ ਲਈ ਤਾਂ ਨਹੀਂ ਹੋਵੇਗੀ ? ਕੀ ਇਹ ਠੀਕ ਹੈ ਕਿ ਇਹ elections ਫੇਵਲ ਬਰਸਾਤ ਕਰਕੇ ਅਤੇ sowing seasons ਕਰਕੇ ਹੀ ਅਗੇ ਨੂੰ ਮੁਲਤਵੀ ਕੀਤੀਆਂ ਜਾ ਰਹੀਆਂ ਨੇ।

मुख्य मंत्री : मैं हाऊस को विद्वास दिलाता हूं कि यह Elections ज़रूर माह अक्टूबर या नवम्बर में हो जायेंगी। बहर हाल यह दिसम्बर से पहले पहले ज़रूर हो जायेंगी। ऐसा न करने की कोई सुरत दिखाई नहीं देती।

श्री सपीकर : हुंन तं इह सवाल काढी साढ हें गिआ है।

सरदार हरकिशन सिंह सुरजीत : की मानजोग चीढ
मनिसटर इस सभा विच इह ऐलान करन हूं तਿਆर हन कि
इह elections इस साल दे अंदर अंदर ज़रूर हें जाਣगीआ।

मुख्य मंत्री : मैं पूरे तौर पर जोर से कह सकता हूं कि यह ३१ दिसम्बर १९५४ तक ज़रूर हो जायेंगी।

पंडित श्री राम शर्मा : मैं यह दरियाफत करना चाहता हूं कि सितम्बर के महीने में जब कि मौसम अच्छा होता है यह Elections क्यों नहीं कराई जातीं ?

मुख्य मंत्री : वह बिजाई का मौसम होता है।

सरदार वजीर सिंह : की चीढ मनिसटर साहिब हूं इस गल दा पता नही कि नवंबर अउे दसंबर विच वी बिजाई कीती जांदी है।

मुख्य मंत्री : माननीय मੈम्बर को इस बात का पता होना चाहिए कि उस मौसम में किसी फसल की बिजाई नहीं की जाती है।

PRIVILEGE MOTION.

Mr. Speaker : Pandit Shri Ram Sharma has given notice of a Privilege Motion, which runs like this :

“ I have to raise a question of breach of privilege of the House, namely, the anticipation of the decision of the House in the matter of the election of the Speaker, as published in the Tribune dated the 18th May, 1954, page 1, column 6 that— “ Today Sardar Gurdial Singh Dhillon acted for the Great Dead. Tomorrow he will be elected by the House to step into his shoes.”

My ruling on this Privilege Motion is as follows—

Privilege Motion is a fundamental right of the House and of its individual Members against the prerogatives and rights of other authorities which are generally accepted as necessary for the exercise of its constitutional functions by the House. Privileges of such rights are absolutely necessary for the due execution of its power by the House.

In the context of this definition, it is not understood how a privilege of the House has been breached. Breaches of privileges are distinguished as

“contempts”. It is not understood how the alleged news amounts to a ‘contempt’. Besides the House in the enjoyment of its privileges cannot and should not infringe or restrict the rights of freedom of speech and expression of any other body or individual unless that exercise violates in any way the dignity or prestige of the House. The alleged news in the Newspaper amounts at best to wishful thinking or guess on the part of the Paper and does not in my opinion amount to an anticipation of the decision of the House.

Therefore, under Rule 173(A) of the Rules of Procedure and Conduct of Business in this Assembly, I do not give consent to this matter being raised as a breach of privilege either of a Member or of the House.

ADJOURNMENT MOTIONS

Mr. Speaker : The first adjournment motion of Pandit Shri Ram Sharma is in regard to the partiality of the Government in allowing their own party functions and public meetings and refusing the permission to other political parties.....

पंडित श्री राम शर्मा : इसे पूरा पढ़ देते तो अच्छा होता जैसा कि कल फैसला किया गया था ।

अध्यक्ष महोदय : फैसला तो कुछ और होगा मगर मैं पूरा पढ़ देता हूँ । वह adjournment motion यह है —

“ Pandit Shri Ram Sharma to ask for leave to make a motion for the adjournment of the business of the House to discuss a matter of urgent public importance, namely, the partiality of the Government in allowing their own party functions and public meetings and refusing the permission to other political parties for instance at Sonapat and Rohtak Congress functions and meetings were held on the 4th and 15th May, while the Jan Sangh, Janta Congress and Backward Classes were not permitted to do so.”

Is the hon. Member now satisfied ?

Pandit Shri Ram Sharma : Yes, Sir.

Mr. Speaker : I declare this adjournment motion out of order on technical grounds. This matter should have been brought to the notice of the House on the 18th when other adjournment motions were taken up because “the Member who wishes to give notice of an adjournment motion must do so at the first available opportunity”. I am quoting this from an authority which, if the hon. Member so desires, he is welcome to see for himself.

This motion can be ruled out of order for another reason as well. This motion, although it has been worded in a different language, substantially raises that very matter, i.e., ban on holding public meetings, on which I gave my ruling yesterday. A matter identical with one already decided in the same Session cannot be raised again.

श्रीमती शत्रो देवी सहगल : On a point of order, Sir, मैंने पहले भी गुजारिश की है कि आप अपनी seat पर खड़े न रहें ताकि श्रीरमेश्वरान को बोलने का मौका मिले ? और जब आप खड़े हों तो किसी मੈम्बर को बोलने न दिया करें ।

अध्यक्ष महोदय : यह तो advice है, Point of order नहीं । जब तक मैं कोई चीज पढ़ता हूँ मैं कैसे देख सकता हूँ कि कोई मੈम्बर खड़ा हुआ है कि नहीं ।

Mr. Speaker : The second adjournment motion of the hon. Member is about the refusal of the District Magistrate, Ludhiana to grant licence to Sardar Gopal Singh Khalsa, Leader of the Opposition in this House and a prominent leader of a political party of the Punjab, who has a reasonable apprehension to his life and property.

यह एक individual का सवाल है और urgent public importance का मामला नहीं है। इस लिये इसे मैं out of order करार देता हूँ।

Mr. Speaker : His third adjournment motion is in connection with the 'action of the Rohtak police in misinforming the Chief Minister through their touts and stooges whom they collected and brought to the Canal Rest House, Rohtak, on the 4th May last about the alleged atrocities during the anti-dacoit operations of January last'—

यह तो ज़रा language की बात है। अगर कोई आदमी Chief Minister साहिब से मिलने जाता है तो क्या मालूम वह क्या बात कहनी चाहता है और यह पता नहीं कि क्या इस में कोई बात अहम भी होगी कि नहीं। इस motion को भी मैं rule out करता हूँ।

Mr. Speaker : The fourth adjournment motion of the hon. Member runs like this :

“ Pandit Shri Ram Sharma, to ask for leave to make a motion for the adjournment of the business of the House to discuss a matter of urgent public importance, namely, the continued lapse of the Government in not making available copies of the Bills to the Members for five clear days before the day on which the Bills are taken up for consideration as for example in the case of the Punjab Requisitioning and Acquisition of Immovable Property (Amendment) Bill, 1954.”

इस का फैसला तो कल ही कर दिया गया था।

पंडित श्री राम शर्मा : आपने आज ruling देने के लिये कहा था।

अध्यक्ष महोदय : मैं आप को सब कुछ समझा चुका हूँ। Copies २० अप्रैल को दे दी गई थीं। अब पता नहीं आप इस।

पंडित श्री राम शर्मा : आज ज़रा मुझे कुछ अर्ज करने के लिये मौका दें। मानना न मानना आप का इस्तिहार है।

अध्यक्ष महोदय : आप को मौका कल दफ़्तर में दिया गया था।

Mr. Speaker : His fifth adjournment motion runs like this—

“ Pandit Shri Ram Sharma to ask for leave to make a motion for the adjournment of the business of the House to discuss a matter of urgent public importance, namely, the unlawful obstruction by the Rohtak police in the way of Comrade Randhir Singh of the Praja Socialist Party, when he was going to be present at the place of recording the statements of the victimised women before the Chief Minister on the 4th May last.”

यह ४ मई का मामला है और आज १६ मई हो गई है इसे पहले पेश किया जाना चाहिये था। इस लिये इसे मैं rule out करता हूँ।

Mr. Speaker : His sixth adjournment motion runs like this—

“ Pandit Shri Ram Sharma to ask for leave to make a motion for the adjournment of the business of the House to discuss a matter of urgent public importance, namely, the favouritism of the Government in granting pensions and lands to the particular group of persons in the name of political sufferers and, national workers at the cost of the real sufferers.”

इस का फैसला तो कल ही कर दिया गया था । इस लिये इसे भी मैं rule out करता हूँ ।

Mr. Speaker : His seventh adjournment motion reads like this—

“ Pandit Shri Ram Sharma to ask for leave to make a motion for the adjournment of the business of the House to discuss a matter of urgent public importance, namely, the improper and irregular re-instatement of Hissar Dairy Farm Assistant Gurbhagwant Singh who was dismissed after thorough enquiry and procedure as required in the Government Servants Conduct Rules.”

ऐसी मामूली बातों पर तो adjournment motions नहीं लाई जातीं । अगर किसी official की transfer हो गई तो adjournment motions ले आए, appointment हो गई तो ले आए, demotion हो गई तो ले आए और promotion हो गई तो adjournment motion ले आये । यह बातें urgent public importance की नहीं हैं । इस लिये मैं इस adjournment motion को rule out करता हूँ ।

Mr. Speaker : The eighth adjournment motion of the hon. Member pertains to the decision of the Education Department in reintroducing the principle of selection involving supersession of senior incumbents in the matter of departmental promotions from P.E.S. Class III to Class II.

इसे भी पहले दिन पेश किया जाना चाहिये था, इस लिये मैं इसे rule out करता हूँ ।

पंडित श्री राम शर्मा : श्रीमान जी ! आप मुझे मौका दें । मैं आप को satisfy कर दूंगा कि आया यह मामला urgent public importance का है या नहीं ।

अध्यक्ष महोदय : मुझे इस की जरूरत नहीं । मैं इस मामले को ब्यूबी समझता हूँ ।

श्रीमती शशो देवी सहगल : On a point of Order, Sir, स्पीकर साहिब ! आपने मेरी इस बात की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया कि adjournment motions का तर्जुमा भी अंग्रेजी के साथ साथ हिंदी में पढ़ कर सुनाया जाये ।

अध्यक्ष महोदय : आप adjournment motions को समझ तो रही हैं ।

पंडित श्री राम शर्मा : On a point of Order, Sir, यह एक रूल है कि किसी भी मामले पर जो अंग्रेजी में बात कही जाये उस का हिंदुस्तानी या पंजाबी में तर्जुमा होना चाहिए ।

अध्यक्ष महोदय : जरूर होना चाहिए । (तालियां) ।

पंडित श्री राम शर्मा : यह जो आप मेरी adjournment motions reject कर रहे हैं आप कहें तो इस का तर्जुमा मैं करता जाऊँ ।

अध्यक्ष महोदय : मैं तो आप ही की मदद कर रहा हूँ कि आपकी adjournment motions पढ़ रहा हूँ । आपने पहले नहीं कहा । आप मुझ से दो काम लेना चाहते हैं । एक स्पीकर का और दूसरा translator का । आप मेरी मदद करने की बजाए काम को बढ़ा रहे हैं । अगर आप चाहें तो मैं हिन्दी में तर्जुमा कर सकता हूँ । मगर एक बात है, अगर आपकी motions हिन्दी में होतीं तो मैं उन्हें हिन्दी में ही पढ़ कर सुना देता ।

ਸਰਦਾਰ ਵਜ਼ੀਰ ਸਿੰਘ

ਸਰਦਾਰ ਚੰਨਣ ਸਿੰਘ ਧੂਤ

ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਚ ਕਹੋ ਜੀ ।

ਸ਼੍ਰੀ ਸਪੀਕਰ : Adjournment motions ਨੂੰ ਸਾਰੇ ਸਮਝ ਤਾਂ ਰਹੇ ਹਨ ਪਰ ਜੇਕਰ ਕੋਈ ਜਾਣਕੇ ਮਚਲਾ ਬਣ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਉਸਦਾ ਕੀ ਇਲਾਜ ?

Mr. Speaker : The last adjournment motion of the hon. Member runs like this—

“ Pandit Shri Ram Sharma, M.L.A., to ask for leave to make a motion for the adjournment of the business of the House to discuss a matter of urgent public importance, namely, the undue official pressure in raising the National Plan Loan for example the Deputy Commissioner, Gurgaon and the Additional District Magistrate, Ludhiana presided over the meetings called for this purpose.”

इस adjournment motion के बारे में आप को कल मौका मिला था और आप इस को discuss कर चुके हैं । इस लिये it is ruled out of order.

Pandit Shri Ram Sharma: Thank you, Sir.

Mr. Speaker : Sardar Gopal Singh Khalsa and Sardar Sarup Singh have also given notice of an adjournment motion. It runs like this—

“ Sardar Gopal Singh and Sardar Sarup Singh to ask for leave to make a motion for the adjournment of the business of the House to discuss a matter of urgent public importance, namely, the cancellation of the Arms Licence of the renowned Sikh leader Master Tara Singh Ji ”.

इस adjournment motion पर भी वही ruling है जो सरदार गोपाल सिंह खालसा के बारे में पेश की गई adjournment motion पर दिया गया था । यह कोई public importance का केस नहीं । Therefore, I rule it out of order.

Mr. Speaker : One adjournment motion stands in the name of Professor Mota Singh. It is in connection with the death of a seven year old child by the over-dosing of chloroform in the operation room of the Civil Hospital, Ambala, on the 24th April, 1954, when the child was going to be operated upon for Tonsillitis.

Since the incident occurred on the 24th April, the matter should have been brought forward on the "first available opportunity" i.e., on the 18th May, for which day it was received too late.

Before I give my ruling, I would like to know from the Minister for Education whether he is in a position to give any information in the matter.

शिक्षा मंत्री (श्री जगत नारायण) : स्पीकर साहिब ! ज्योंही मुझे adjournment motion की कापी आप ने भेजी मैंने उमी वक्त Civil Surgeon, Ambala, को telephone किया.....

पंडित श्री राम शर्मा : On a point of order, Sir, क्या यह adjournment motion in order करार दे दी गई है और क्या इसी लिये मिनिस्टर साहिब तकरीर करने लगे हैं ।

अध्यक्ष महोदय : यह adjournment motion technical grounds पर out of order है लेकिन मिनिस्टर साहिब ने इस के बारे में कुछ कहना था इस लिये उन्हें इजाजत दी गई है ।

शिक्षा मंत्री : इस accident की पड़ताल के लिये एक senior officer मुकर्रर कर दिया गया है । इस adjournment motion के आने से पहले ही enquiry शुरू कर दी गई है । जब enquiry की पूरी रिपोर्ट आएगी तो आप को बता दी जाएगी ।

प्रोफेसर मोता सिंह आनन्दपुरी : On a point of Order, Sir. स्पीकर साहिब ! स बात को हुए एक महीने के करीब हो गया है और यह एक tragic death का केस है । अगर इस काम में देर की गई तो इस तरह और भी मौतें हो जाएंगी ।

TRANSACTION OF GOVERNMENT BUSINESS ON THURSDAY, THE 20TH MAY, 1954

Chief Minister (Shri Bhim Sen Sachar) : Sir, I beg to move—

That Rule 23 of the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Punjab Legislative Assembly be suspended and Government business transacted on Thursday, the 20th May, 1954.

मुझे इन साहिबान की तरफ से (आपोजीशन की तरफ इशारा करते हुए) कहा गया था कि मेहरबानी करके जल्दी छट्टी करें । बिलों को एक ही दिन में dispose of कर दें और इस काम के लिये बेशक कल यानी वीरवार का non-official दिन भी ले लें । इन्हीं के कहने पर यह motion move की गई है । इस लिये अगर इन की यह ख्वाहिश है तो मुझे ऐसा करने में क्या एतराज हो सकता है ।

Mr. Speaker : Motion moved—

That Rule 23 of the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Punjab Legislative Assembly be suspended and Government business transacted on Thursday, the 20th May, 1954.

ਸਰਦਾਰ ਹਰਕਿਸ਼ਨ ਸਿੰਘ ਸੁਰਜੀਤ (ਨਕੋਦਰ) : ਸਪੀਕਰ

ਸਾਹਿਬ ! ਚੀਫ ਮਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਹਵਾਲਾ ਦਿਤਾ ਹੈ ਕਿ ਇਹ motion ਮੈਂਬਰਾਂ ਦੇ ਕਹਿਣ ਤੇ ਲਿਆਂਦੀ ਗਈ ਹੈ। ਮੈਂ ਇਸ ਹਵਾਲੇ ਦੇ ਸੰਬੰਧ ਵਿਚ ਜ਼ਿਆਦਾ ਨਹੀਂ ਕਹਿਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ। ਪਰ ਇਤਨਾ ਜ਼ਰੂਰ ਕਹਾਂਗਾ ਕਿ ਇਹ ਇਲ਼ਾਕਾ ਮੇਰੇ ਵਲ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਮੈਂ ਇਹ ਗਲ ਆਖੀ ਸੀ ਅਤੇ ਹੁਣ ਵੀ ਕਹਿੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਜਿਸ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਤੁਸੀਂ ਇਜਲਾਸ ਕਰ ਰਹੇ ਹੋ ਇਹ ਤਰੀਕੇ ਹਾਊਸ ਦੇ ਅਤੇ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਦੇ ਵੱਕਾਰ ਨੂੰ ਉਚਿਆਂ ਨਹੀਂ ਕਰਦੇ। ਇਸ ਲਈ ਸੈਸ਼ਨ ਨੂੰ ਜਲਦੀ ਖਤਮ ਕੀਤਾ ਜਾਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਮੈਂਬਰਾਂ ਨੂੰ ਇਲ਼ਾ ਤੇ ਵਿਚਾਰ ਕਰਨ ਅਤੇ ਤਰਮੀਮਾਂ ਲਿਆਉਣ ਲਈ ਪੂਰਾ ਸਮਾਂ ਦਿਤਾ ਜਾਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਜੇਕਰ ਬਹਿਸ ਅਤੇ ਬਿਲਾਂ ਤੇ ਵਿਚਾਰ ਕਰਨ ਲਈ ਪੂਰਾ ਸਮਾਂ ਨਹੀਂ ਦਿਤਾ ਜਾਣਾ ਤਾਂ ਸੈਸ਼ਨ ਕਰਨ ਦੀ ਲੋੜ ਕੀਹ ਹੈ? ਕਿਤੇ ਵੀ ਦੋ ਦੋ ਦਿਨ ਦੇ ਸੈਸ਼ਨ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੇ। ਬਜਟ ਸੈਸ਼ਨ ਤੁਸਾਂ ੧੬ ਦਿਨਾਂ ਵਿਚ ਮੁਕਾ ਲਿਆ ਅਤੇ ਬਜਟ ਕਾਹਲੀ ਕਾਹਲੀ ਪਾਸ ਕਰਵਾ ਲਿਆ। ਇਸ ਦੀ ਮਿਸਾਲ ਕਿਤੇ ਵੀ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦੀ। ਤੁਸੀਂ ਕੋਈ ਸਮਾਂ ਨਹੀਂ ਦੇਣਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਕਿ ਆਰਾਮ ਨਾਲ ਵਿਚਾਰ ਕਰੀਏ ਅਤੇ ਬਿਲਾਂ ਦੀ ਪੜਚੋਲ ਕਰੀਏ। ਹਿਮਾਚਲ ਦੀ ਛੋਟੀ ਜਿਹੀ ਅਸੈਂਬਲੀ ਨੇ ਵੀ ਬਜਟ ਲਈ ੬੦ ਦਿਨ meet ਕੀਤਾ।

ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ ! ਮੈਂ ਤਾਂ ਇਹ ਆਖਿਆ ਸੀ ਕਿ ਇਸ ਨੂੰ ਰਵਾਜ ਨਾ ਬਣਾ ਲਿਆ ਜਾਵੇ ਕਿ ਹਰ ਵੇਰ non-official day ਨੂੰ ਸਰਕਾਰੀ ਕੰਮ ਲਈ ਵਰਤ ਲਿਆ ਜਾਵੇ। ਸਾਰੇ ਬਜਟ ਸੈਸ਼ਨ ਵਿਚ ਇਕ ਦਿਨ non-official ਕੰਮ ਲਈ ਰਖਿਆ ਗਿਆ। ਮੈਂ ਇਹ ਕਿਹਾ ਸੀ ਕਿ ਅਜਿਹੇ ਦੋ ਦਿਨ ਦੇ ਇਜਲਾਸਾਂ ਨੂੰ ਖਤਮ ਕਰ ਦਿਤਾ ਜਾਵੇ। ਜ਼ਰੂਰੀ ਬਿਲ ਪੇਸ਼ ਹੋ ਰਹੇ ਹਨ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਨਵੇਂ ਟੈਕਸ ਲਾਣ ਦੀ ਤਜਵੀਜ਼ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਟੈਕਸਾਂ ਦਾ ਭਾਰ ਲੋਕਾਂ ਤੇ ਪੈਣਾ ਹੈ, ਇਸ ਲਈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਬਿਲਾਂ ਤੇ ਪੂਰੀ ਪੂਰੀ ਵਿਚਾਰ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਅਸੀਂ ਆਪਣੀ ਗਲ ਤੇ ਹੁਣ ਵੀ ਕਾਇਮ ਹਾਂ ਕਿ ਕਾਹਲੀ ਦੇ ਵਿਚ ਬਿਲ ਤਿਆਰ ਕੀਤੇ ਜਾ ਰਹੇ ਹਨ ਅਤੇ ਕਾਹਲੀ ਵਿਚ ਹੀ ਪਾਸ ਕਰਨ ਲਈ ਪੇਸ਼ ਕੀਤੇ ਜਾ ਰਹੇ ਹਨ। ਇਸ ਨੂੰ practice ਨਹੀਂ ਬਣਾ ਲੈਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਸਗੋਂ ਮੌਕਾ ਦੇਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਕਿ Opposition ਨੂੰ ਸਮਾਂ ਮਿਲੇ ਅਤੇ ਹੋਰ ਲੋਕ ਵੀ suggestions ਦੇ ਸਕਣ। ਮੇਰੀ ਤਾਂ ਸਰਕਾਰ

ਪਾਸ ਬੇਨਤੀ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਰਿਵਾਜ ਨਾ ਬਣਾਵੇ ਅਤੇ ਹਕੀਕਤ ਵੀ ਇਹੋ ਹੈ ਕਿ ਸਰਕਾਰ ਬਗੈਰ ਤਿਆਰੀ ਦੇ ਕਾਹਲੀ ਕਾਹਲੀ important bills ਲਿਆ ਰਹੀ ਹੈ। ਪਹਿਲਾਂ ਹੋਰ ਤਜਵੀਜ਼ ਸੀ ਹੁਣ ਇਹ ਤਜਵੀਜ਼ ਹੈ ਕਿ ਸੈਸ਼ਨ ੨੧ ਤੀਕ ਤਕ ਖਤਮ ਕਰ ਦਿਤਾ ਜਾਵੇ ਪਰ ਤਿੰਨਾਂ ਦਿਨਾਂ ਲਈ ਐਨਾ ਖਰਚ ਅਤੇ ਖੋਚਲ ਕਰਕੇ ਸੈਸ਼ਨ ਕਰਨ ਦੀ ਕੀਹ ਲੋੜ ਸੀ? ਮੈਂ ਇਹ ਮੰਨਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਤੁਸੀਂ ਹਰ ਗੱਲ ਅਤੇ ਹਰ ਕਾਨੂੰਨ ਨੂੰ ਪਾਸ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹੋ। ਤੁਹਾਡੀ majority ਹੈ। ਤੁਹਾਨੂੰ ਐਨੀ support ਹਾਸਿਲ ਹੈ ਕਿ ਤੁਸੀਂ ਚਾਹੋ ਤਾਂ ਦਿਨ ਨੂੰ ਰਾਤ ਆਖਕੇ ਵੀ ਪਾਸ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹੋ। ਮੇਰੀ ਤਾਂ ਅਪੀਲ ਹੈ ਅਤੇ ਬੇਨਤੀ ਹੈ ਕਿ ਇਸ motion ਨੂੰ ਇਕ ਰਿਵਾਜ ਨਾ ਬਣਾਇਆ ਜਾਏ ਅਤੇ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਇਜਲਾਸ ਨੂੰ ਹਾਸੇ ਹੀਣਾ ਨਾ ਹੋਣ ਦਿਤਾ ਜਾਏ। ਜੇ ਇਲ ਸਭਾ ਵਿਚ ਪੇਸ਼ ਕੀਤੇ ਜਾਣ ਉਸ ਤੇ ਪੂਰੀ ਵਿਚਾਰ ਕਰਨ ਦਾ ਮੌਕਾ ਦੇਵੇ। ਜੇਕਰ ਤੁਸੀਂ ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੀ ਕਾਹਲ ਵਿਚ ਸੈਸ਼ਨ ਬੁਲਾਂਦੇ ਰਹੋ ਅਤੇ ਕਾਨੂੰਨ ਪਾਸ ਕਰਦੇ ਰਹੋ ਤਾਂ ਤੁਸੀਂ ਹਾਊਸ ਦੀ honour ਅਤੇ prestige ਨੂੰ, ਸਭਾ ਦੇ ਵੱਕਾਰ ਨੂੰ, ਅਤੇ ਆਪਣੇ ਵੱਕਾਰ ਨੂੰ ਖਤਮ ਕਰ ਦਿਓਗੇ। ਇਸ ਲਈ ਮੈਂ ਚੀਫ ਮਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਵਲੋਂ ਵੀਰਵਾਰ ਦਾ ਦਿਨ ਲੈਣ ਲਈ ਪੇਸ਼ ਕੀਤੇ ਮਤੇ ਦੀ ਵਿਰੋਧਤਾ ਕਰਦਾ ਹਾਂ। ਇਹ ਮੁਸ਼ਤਾਵ ਵਾਪਿਸ ਲਿਆ ਜਾਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

ਪੰਡਿਤ ਭੀ ਰਾਮ ਸ਼ਰਮਾ (ਸੋਨੀਪਤ) : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ ! ਧਨ ਕੋਈ ਨਵੀਂ ਗੱਲ ਨਹੀਂ ਹੈ ਬਲਕਿ ਬਾਕਾਧਿਕਾਰੀ ਰਿਵਾਜ ਬਨ ਚੁਕਾ ਹੈ ਕਿ ਕਿਸੀ ਭਵਿੱਖ ਮੇਂ ਅਗਰ ਭਵਿੱਖਾਕ ਸੇ ਕੋਈ ਦਿਨ ਗੱਰ ਸਰਕਾਰੀ ਕਾਰਵਾਈ ਕੇ ਲਿਯੇ ਰੱਖ ਦਿਯਾ ਜਾਏ ਤੋ ਉਸ ਸੇ ਏਕ ਦਿਨ ਪਹਲੇ ਧਨ ਤਹਰੀਕ ਪੇਸ਼ ਕਰ ਦੀ ਜਾਤੀ ਹੈ ਕਿ ਉਸ ਰੋਜ਼ ਸਰਕਾਰੀ ਕਾਰਵਾਈ ਹੋ। ਇਸ ਕੀ ਧਨ ਨੇ ਹਮੇਸ਼ਾ ਸੁਖਾਲਿਕਤ ਕੀ ਹੈ। Opposition ਨੇ ਹਮੇਸ਼ਾ ਇਸ ਗੱਲ ਕਾ ਬੁਰਾ ਸਨਾਯਾ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਗੱਲ ਮੇਂ ਧਨ rules ਐਂਡ regulations ਕੋ ਸਜ਼ਾਕ ਬਨਾ ਦਿਯਾ ਗਯਾ ਹੈ। ਸਗਰ ਆਜ ਧਨ ਕਹਾ ਗਯਾ ਹੈ ਕਿ ਧਨ ਤਹਰੀਕ ਖੁਦ Opposition ਕੀ ਫਰਕਾਸਤ ਪਰ ਕੀ ਗਈ ਹੈ ਐਂਡ ਅਗਰ ਮੇਰੇ ਫੋਲੋਰ ਇਸ ਸਾਮਲੇ ਕੀ ਕੁਜ਼ਾਹਤ ਨ ਕਰਤੇ ਤੋ ਇਸ ਗੱਲ ਮੇਂ ਸਬ ਕੋ ਗਲਤਫਹਿਮੀ ਰਹਤੀ। ਗੱਲ ਧਨ ਹੈ ਕਿ ਜਬ ਬਿਲ ਠੀਕ ਹਾਲਤ ਮੇਂ ਨਹੀਂ ਹੈ Legislation ਕੇ ਕਾਮ ਕੀ ਠੀਕ ਤੈਯਾਰੀ ਨਹੀਂ ਹੈ ਐਂਡ ਇਸ ਸਿਲਸਿਲੇ ਮੇਂ ਕੋਈ ਕਾਰਵਾਈ ਭੀ ਠੀਕ ਨਹੀਂ ਤੋ ਭਵਿੱਖਾਕ ਜਾਰੀ ਰਖਨਾ ਕੋਈ ਸਾਨੇ ਨਹੀਂ ਰਖਤਾ। ਇਸੀ ਲਿਯੇ ਕਹਾ ਗਯਾ ਥਾ ਕਿ ਕਾਰਵਾਈ ਕੇ ਲਿਯੇ ਪੂਰੀ ਤੈਯਾਰੀ ਕੀਜਿਯੇ, ਮੈਂਬਰਾਂ ਕੋ ਭੀ ਸੌਕਾ ਦੀਜਿਯੇ ਕਿ ਧਨ ਤੈਯਾਰੀ ਕਰ ਸਕੇਂ ਐਂਡ amendments ਭੇਜ ਸਕੇਂ। ਸਗਰ ਧਨ ਹਮੇਸ਼ਾ ਧਨ ਕੀਯਾ ਜਾਤਾ ਹੈ ਕਿ agenda ਸਿਰਫ ਏਕ ਦਿਨ ਪਹਲੇ ਦੇ ਦਿਯਾ ਧਨ ਮੇਂ ਮੇਂਜ਼ ਪਰ ਰੱਖਾ ਹੁਆ ਮਿਲ ਗਯਾ। ਏਸੀ ਸੂਰਤ ਮੇਂ

ਅਧਿਕਸ਼ ਸਹੋਦਧ : ਸਵਾਲ ਤੋ ਧਨ ਹੈ ਕਿ ਕਲ ਸਰਕਾਰੀ ਕਾਮ ਕੀਯਾ ਜਾਏ। ਇਸ ਕੇ ਗੱਲ ਮੇਂ ਆਪ ਕੀ ਕਹਨਾ ਚਾਹਤੇ ਹੈਂ ?

पंडित श्रीराम शर्मा : मुझे यह बातें कहने की जरूरत न पड़ती अगर चीफ मिनिस्टर साहिब यह न कहते कि यह मोशन Opposition की दरखास्त पर पेश की गई है। मेरे दोस्त ने इसी लिये उन को टोका। अगर वह न टोकते तो इस House के अंदर और बाहर भी यही impression होता कि हम खुद चाहते थे कि गैर-सरकारी काम के दिन सरकारी काम किया जाए। हम ने तो कहा था कि खुद भी तैयारी करके काम करो और हम को भी तैयारी का मौका दो। इस हालत में उन को यह बात कहना मुनासिब न था।

दूसरी बात में यह कहना चाहता हूं कि इस चीज को रिवाज न बना लिया जाए। हमारे हां यह permanent feature बन गया है। House की dignity और शान इसी में है कि सब काम पूरी तैयारी और बाकायदगी से हों। लेकिन जैसा कि मेरे दोस्त ने कहा है हिंदुस्तान भर में कोई State ऐसी नहीं जहां इतने कम इजलास होते हों। मैं तो खुल्लम खुल्ला इजलास लगाता हूं कि हमारी गवर्नमेंट नहीं चाहती कि एक दिन भी इजलास हो।

आखिर में मैं इस मोशन की मुखालिफ़त तो नहीं करता मगर यह वाजिह कर देना जरूरी समझता था कि यह बात क्यों कही गई थी।

मुख्य मंत्री (श्री भीम सैन सच्चर) : स्पीकर साहिब, मैंने तो यह गुज़ारिश की थी कि Opposition ने खाहिश ज़ाहिर की थी कि शुक्रवार का काम वीरवार को कर लिया जाए, और इस लिये मैंने यह मोशन पेश की थी। बस इतनी सी बात थी। मुझे समझ नहीं आती कि इस में तैयारी या न तैयारी का क्या सवाल है। जहां तक वीरवार की कार्रवाई का ताल्लुक है उस के लिये resolution वगैरा determine हो चुके हैं और उन पर तकरीरों की तैयारी के लिये आप के पास काफी वक्त और सब material मौजूद था। इस लिये कोई यह बात नहीं कह सकता कि वीरवार के काम की तैयारी के लिये वक्त नहीं मिला। शुक्रवार के दिन का काम अगर ठीक वक्त पर तैयार न हो या आप को उस के लिये rules के मुताबिक तैयारी का मौका न मिले तो आप एतराज कर सकते हैं और अगर स्पीकर साहिब आप से agree करें तो वह out हो जायेगा। मैंने इसी लिये कहा कि Opposition कि तरफ़ से यह कहा गया था.....

मरदाना हरकिशन सिंह मुरलीधर : On a point of Order, Sir. ਕੀਹ ਮੈਂ ਇਹ ਗਲ ਬਿਲਕੁਲ ਸਾਫ਼ ਨਹੀਂ ਕਰ ਦਿੱਤੀ ਕਿ ਮੈਂ ਉਹ ਗਲ Opposition ਵਲੋਂ ਨਹੀਂ ਬਲਕਿ ਕੇਵਲ ਆਪਣੀ ਪਾਰਟੀ ਵਲੋਂ ਹੀ ਆਖੀ ਸੀ।

मुख्य मंत्री : तो बेशक गलती हुई। मैं यही समझा था कि यह बात सिर्फ़ एक पार्टी नहीं बल्कि सारी Opposition की तरफ़ से कही जा रही है।

पंडित श्रीराम शर्मा : On a point of Order, Sir. क्या चीफ़ मनिस्टर साहिब को Leader of the Opposition से बात करके फैसला नहीं करना चाहिये था या कि वह हर एक मੈम्बर से बात करके ऐसी मोशन पेश करने का फैसला कर सकते हैं ?

अध्यक्ष महोदय : यह तो आप खुद चीफ़ मनिस्टर साहिब से मिल कर फैसला कर ले कि क्या तरीका मुमकिन होगा ।

पंडित श्री राम शर्मा : मैं आप का ruling चाहता हूं कि क्या चीफ़ मनिस्टर साहिब हर एक मैम्बर से मिल कर इस किसम का फैसला कर सकते हैं या उन्हें Leader of the Opposition से बात करनी चाहिये ?

अध्यक्ष महोदय : मैं इस बारे में इस वक्त कोई ruling नहीं देता । आप मुझ से मेरे कमरे में सारी बात कर लें, उस के बाद आप को बता दूंगा ।

मुख्य मंत्री : यह बहस ही irrelevant है । Leader of the Opposition से बात करने की तो उस वक्त जरूरत होगी जब मैं कुछ करना चाहूं और उस के लिये उन की रज़ामंदी लेनी हो । यहां तो खुद मुझ से कहा गया था कि गैर-सरकारी काम के लिये रखा हुआ दिन सरकारी काम के लिये ले लो ।

मौलवी अब्दुल गनी डार : On a point of Order, Sir. क्या आप इस बात की इजाजत देंगे कि चीफ़ मनिस्टर साहिब सिर्फ़ एक मैम्बर से बात करके इस किसम की बातों का सब की तरफ से फैसला कर लिया करें ?

अध्यक्ष महोदय : यह आपका और चीफ़ मनिस्टर साहिब का मामला है । अगर आप के आदमी उन के पास जाते और कुछ कहते हैं तो मेरा इस से कोई तास्लुक नहीं ।

श्री श्री चन्द : On a point of order, Sir; यह सीधा सा सवाल था । चाहे एक से मिल कर फैसला किया चाहे दो से मिल कर किया । लेकिन

अध्यक्ष महोदय : आप का point of order क्या है ?

मुख्य मंत्री : मेरी इस मोशन का basis यह था कि मुझ से इस बारे में दरखास्त की गई थी । अज चूंकि पता चलता है कि मेम्बर साहिबान की यह राय नहीं है इस लिये मैं अपनी मोशन withdraw करता हूं ।

Mr Speaker : It is the pleasure of the House that the Motion be withdrawn?

The motion was by leave withdrawn.

ELECTION OF DEPUTY SPEAKER

मुख्य मंत्री (श्री भीम सैन सच्चर) : श्रीमान जी, मैं तजवीज़ करता हूं कि चौधरी सरूप सिंह एडवोकेट आफ़ हिसार को जो कि इस हाऊस में हाज़िर हैं Deputy Speaker चुना जाये ।

विकास मंत्री (सरदार परताप सिंह कैरों) : मैं इस तजवीज़ की ताईद करता हूं ।

ਸ਼੍ਰੀ ਸ਼੍ਰੀ ਚੰਦ (ਬਹਾਦੁਰਗੜ੍ਹ) : ਮੈਂ ਤਜਵੀਜ਼ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਸ਼੍ਰੀ ਮਾਮਚੰਦ ਜੀ ਨੂੰ ਜੋ ਇਸ ਹਾਊਸ ਵਿੱਚ ਚੁਣਿਆ ਜਾਵੇ। ਮੈਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਬਾਰੇ ਦੋ ਲਫਜ਼ ਕਹਿਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ। ਸਾਡੇ ਹਾਊਸ ਦੇ ਹਰਿਜਨ ਮੈਂਬਰ ਹਨ। ਕਿਉਂਕਿ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਹਰਿਜਨਾਂ ਦੇ ਲਿਏ ੧੬ ਫੀ ਸਦੀ ਰਿਜ਼ਰਵ ਕਰ ਰੱਖੀ ਹੈ, ਮੈਂ ਸਮਝਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਹਰਿਜਨਾਂ ਨੂੰ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਸਾਡੇ ਹਾਊਸ ਵਿੱਚ ੭ ਮੰਤਰੀ ਹਨ, ਇੱਕ ਚੀਫ਼ ਪਾਰਲੀਮੈਂਟਰੀ ਸਕਰਟਰੀ ਅਤੇ ਇੱਕ ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ ਹਨ। ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕੁਝ ਆਰੀਜ਼ ਵਾਲੇ ਕੌਂਸਲਰ ਮੈਂ ਹਾਂ। ਦੋਨਾਂ ਹਾਊਸਾਂ ਵਿੱਚ ੧੨ ਪੋਸਟਾਂ ਹਨ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ੧੬ ਫੀ ਸਦੀ ਦੇ ਹਿਸਾਬ ਨਾਲ ੨ ਪੋਸਟਾਂ ਹਰਿਜਨਾਂ ਨੂੰ ਮਿਲਣੀ ਚਾਹੀਦੀਆਂ ਹਨ। ਪਰ ਅੱਜ ਤੱਕ ਇੱਕ ਹੀ ਹਰਿਜਨ ਮਿਨਿਸਟਰ ਨਿਯੁਕਤ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਇਸ ਹਾਲਾਤ ਵਿੱਚ ਡਿਪਟੀ ਸਪੀਕਰ ਨੂੰ ਕਿਸੇ ਹਰਿਜਨ ਨੂੰ ਚੁਣਿਆ ਜਾਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਸਿਰਫ਼ ਛੋਟੀ-ਛੋਟੀ ਚਪੜਾਸੀਆਂ ਨੂੰ ਰਿਜ਼ਰਵ ਕਰ ਕੇ ਹਰਿਜਨ ਖੁਸ਼ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦੇ। ਅਤੇ ਫਿਰ ਡਿਪਟੀ ਸਪੀਕਰਸ਼ਿਪ ਵੀ ਇੱਕ ਬਹੁਤ ਵੱਡੀ ਚੀਜ਼ ਨਹੀਂ ਹੈ।

ਚੌਧਰੀ ਮਾਮ ਚੰਦ ਚਾਰ ਦਫ਼ਾ ਜੇਲ ਵਿੱਚ ਗਏ। ਸ਼੍ਰੀ ਮਾਮਚੰਦ ਜੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਜਦੋਂ ਕਾਂਗਰਸ ਦੀ ਸਰਕਾਰ ਹਰਿਜਨ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਸ਼ਾਮਲ ਕਰੇਗੀ। ਅੱਜ ਇਥੇ ਹਰਿਜਨ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ, ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਡਿਪਟੀ ਸਪੀਕਰ ਬਣਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ (ਹਾਂਸੀ)। ਚੌਧਰੀ ਮਾਮਚੰਦ ਜੀ ਕਾਂਗਰਸ ਕਮੇਟੀ ਦੇ ਪ੍ਰੈਜੀਡੈਂਟ ਰਹਿ ਚੁੱਕੇ ਹਨ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਾਂਗਰਸ ਦਾ ਕੰਮ ਬਹੁਤ ਚੰਗੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕੀਤਾ। ਮੈਂ ਤਜਵੀਜ਼ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਡਿਪਟੀ ਸਪੀਕਰ ਚੁਣੇ ਜਾਣ।

ਸ਼੍ਰੀ ਵਧਾਵਾ ਰਾਮ (ਫ਼ਾਜ਼ਿਲਕਾ) : ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ! ਮੈਂ ਚੌਧਰੀ ਸਿਰੀ ਦੇਵ ਜੀ ਦੀ ਤਜਵੀਜ਼ ਦੀ ਤਾਈਦ ਕਰਨ ਲਈ ਉੱਠਿਆ ਹਾਂ ਤੇ ਮੈਂ ਪੂਰੇ ਜ਼ੋਰ ਨਾਲ ਇਸ ਦੀ ਤਾਈਦ ਕਰਦਾ ਹਾਂ। ਹੁਣੇ ਹੁਣੇ ਸਾਡੇ ਵਜ਼ੀਰ ਸਾਹਿਬਾਨ ਨੇ ਅਪਣਾ ਪ੍ਰਸਤਾਵ ਵਾਪਸ ਲੈ ਕੇ ਬੜੀ ਫ਼ਰਾਬ ਦਿਲੀ ਵਿਖਾਈ ਹੈ ਤੇ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਅਸੀਂ Opposition ਦੀ ਗਲ ਮੰਨ ਲੈਂਦੇ ਹਾਂ। ਸਵਾਦ ਤੇ ਤਦ ਹੀ ਜੇ ਸਾਡੀ ਇਹ ਤਜਵੀਜ਼ ਵੀ ਮੰਨ ਲੈਣ। ਜਿਸ ਆਦਮੀ ਦਾ ਨਾਮ ਅਸੀਂ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਹੈ, ਇਹ ਠੀਕ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਵਕੀਲ ਨਹੀਂ ਤੇ ਨਹੀਂ ਉਹ ਬਹੁਤ ਪੜ੍ਹਿਆ ਲਿਖਿਆ ਹੈ, ਪਰ ਇਹ ਇੱਕ ਖੂਨ ਦੇਣ ਵਾਲਾ ਮਜ਼ਨੂ ਹੈ (ਹਾਂਸੀ)। ਇਸ ਯੋਧੇ ਨੇ ਉਸ ਵੇਲੇ ਕੌਮ ਦੀ ਖਿਦਮਤ ਕੀਤੀ ਸੀ ਜਿਸ ਵੇਲੇ ਆਜ਼ਾਦੀ ਦਾ ਨਾਂ ਲੈਣਾ ਜ਼ਰੂਰ ਸੀ। ਇਹ ਜਲਿਆਂਵਾਲਾ ਬਾਗ ਦੇ ਵੇਲੇ ਦਾ ਸਿਪਾਹੀ ਹੈ। ਇਸ ਨੂੰ ਡਿਪਟੀ ਸਪੀਕਰਸ਼ਿਪ ਦਾ ਐਹਦਾ ਦੇਣਾ ਕੋਈ ਬੜੀ ਗਲ ਨਹੀਂ। ਸਾਡੇ ਮਿਤ ਕਹਿੰਦੇ ਤਾਂ ਹਰ ਵੇਲੇ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਹਰੀਜਨ ਸਾਡੇ ਬਾਪੂ ਦੇ ਪਿਆਰੇ ਹਨ ਪਰ ਇਨ੍ਹਾਂ ਲਈ ਕਰਦੇ ਕੁਝ ਨਹੀਂ। ਵਿਚਾਰੋ ਹਰੀਜਨਾਂ ਦੀ ਤਾਂ ਇਹ ਗਲ ਹੈ ਕਿ ਤੇਲੀ ਵੀ ਬੇਲੀ ਤੇ ਜੁੰਡੇ ਵੀ ਰੱਖੇ।

अध्यक्ष महोदय : आप तजवीज की ताइद कर रहे हैं या किसी stage पर तकरीर कर रहे हैं ?

ਸ਼੍ਰੀ ਵਧਾਵਾ ਰਾਮ : ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ ! ਮੈਂ ਕਹਿਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਸਾਡੇ ਮੰਤਰੀ ਹਰ ਵੇਲੇ ਇਹ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਹਰੀਜਨਾਂ ਦਾ ਖਿਆਲ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਕਰਕੇ ਸਾਡਾ ਵਿਚਾਰ ਸੀ ਕਿ ਸ਼ਾਇਦ ਇਹ ਕਿਸੇ ਹਰੀਜਨ ਦਾ ਨਾਂ Deputy Speakership ਲਈ ਪੇਸ਼ ਕਰਨਗੇ ਮੈਂ ਕਹਿੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਜੇ ਹੁਣ ਵੀ ਇਹ ਕਿਸੇ ਹਰੀਜਨ ਦਾ ਨਾਂ ਪੇਸ਼ ਕਰ ਦੇਣ ਤਾਂ ਅਸੀਂ ਅਪਣਾ ਨਾਂ ਵਾਪਸ ਲੈਣ ਲਈ ਤਿਆਰ ਹਾਂ।

अध्यक्ष महोदय : इस तरह आप सरकार को condemn नहीं कर सकते। आप ऐसा न कीजिये। मैं आप को सरकार पर नुबत। चीनी करने के लिए बहुत मौका दूंगा। आप इस समय संजीदा तौर पर तकरीर करें।

ਸ਼੍ਰੀ ਵਧਾਵਾ ਰਾਮ : ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ ! ਮੈਂ ਕਹਿੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਅਸਾਂ ਦੁਧ ਪੀਣ ਵਾਲਾ ਮਜ਼ਨੂੰ ਪੇਸ਼ ਨਹੀਂ ਕਰ ਰਹੇ। ਅਸਾਂ ਖੂਨ ਦੇਣ ਵਾਲਾ ਮਜ਼ਨੂੰ ਪੇਸ਼ ਕਰ ਰਹੇ ਹਾਂ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਲਫਜ਼ਾਂ ਨਾਲ ਮੈਂ ਚੌਧਰੀ ਸਿਰੀ ਚੰਦ ਜੀ ਦੀ ਤਜਵੀਜ਼ ਦੀ ਤਾਈਦ ਕਰਦਾ ਹਾਂ।

Mr. Speaker : Is there any other proposal ?

Shri Sri Chand : No. Sir.

Mr. Speaker : Then according to rules, I take up the first proposal. The question is—

That Chaudhri Surup Singh, Advocate of Hissar who is sitting in the House be elected as Deputy Speaker of this House.

Those who are in favour of the motion please rise in their seats. (*Members rose in their seats*).

Those who are against the motion please rise in their seats. (*Some Members rose in their places*).

Since an overwhelming majority of the Members present in the House have supported the motion moved by the Chief Minister and seconded by the Minister for Development, I declare that it is carried. (*Cheers*).

Mr. Speaker : Now I request Chaudhri Sarup Singh to occupy the seat of the Deputy Speaker.

इस से पेशतर कि हाउस का काम शुरू किया जाये मैं चौधरी सरूप सिंह जो इस हाउस के डिप्टी स्पीकर मुतखिब हुए हैं को अपनी तरफ से सुबारिक्बाद देता हूँ।

[अध्यक्ष महोदय]

चौधरी सरूप सिंह हाऊस के उन मैम्बरो में से हैं जिन की जात के लिये और जिन की काबलियत का हाऊस को पूरा एहतयाग है। वह हिसार के सरकर्दा गेडवोकेट हैं और वहां की public life में नुमाया हिस्सा लेने वाले सज्जन हैं। उन को काफी पार्लिमेंटरी तजुर्बा भी है और मुझे खुशी है कि उन्हें थोड़ा बहुत तजुर्बा हाऊस को proceedings को conduct करने का भी है। वह हिसार के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के Vice-Chairman भी हैं और छः साल से ज्यादा अरसे से इस ओहदे पर काम कर रहे हैं। जहां तक मेरी उन से वाकफीयत है वह ठंडे स्वभाव वाले, समझदार और तमाम औसाफ के मालिक हैं। डिप्टी स्पीकर के ओहदे पर मैं भी यहा रहा हूं और स्पीकर बनने के बाद इस ओहदे को काफी हसरत की निगाह से देखता हूं। यह बड़ा enviable office है। हाऊस में बतौर मैम्बर के भी बैठना, तकरीर भी करना, सवाल भी पूछना और फिर कभी कभी सभापति की कुर्सी पर विराजमान हो जाना; फिर चंडीगढ़ में न रहना और घर में practice को जारी रखना, यह सब सहूलतें उन्हें मिलेंगी। इस पोजीशन के लिये मैं उन्हें मुबारिकबाद पेश करता हूं।

श्रीमती शन्नो देवी : On a point of order, Sir.....

अध्यक्ष महोदय : आप का point of order किस बात पर है ?

श्रीमती शन्नो देवी : क्योंकि बात करने का और कोई तरीका नहीं है इस लिये point of order raise करना पड़ता है।

पंडित श्री राम शर्मा : On a point of order, Sir. उनकी बात तो सुन लें।

Mr. Speaker : This is no point of order.

श्रीमती शन्नो देवी : मुझे किसी वकील की जरूरत नहीं। आप खड़े हैं इस लिये मैं खड़ी नहीं होना चाहती। अगर कोई बात कहनी हो तो सिर्फ point of order raise करके ही कही जा सकती है।

Mr. Speaker : The hon. Lady Member should maintain the dignity of the House.

COMMITTEE ON PETITIONS

Mr. Speaker : Under Rule 177 of the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Punjab Legislative Assembly, I nominate the following Members as Members of the Committee on Petitions—

(1) Chaudhri Sarup Singh, Deputy Speaker—*ex-Officio* Chairman,

(2) Dewan Jagdish Chandra, M.L.A.

(3) Shri Chand Ram Ahlawat, M.L.A.

(4) Sardar Darbara Singh, M.L.A.

(5) Sarda Mohan Singh, Jathedar, M.L.A.

LEAVE OF ABSENCE

Mr. Speaker : I have received the following application from Sardar Nidhan Singh, M.L.A.—

“ I have not still recovered fully from my long illness and the Doctors have advised me complete rest for the time being. It will, therefore, be not possible for me to attend the May, 1954 Session of the Punjab Legislative Assembly. I, therefore, request that I be granted leave of absence from the the whole Session.

Thanking you ”.

Question is—

That the leave asked for be granted.

The leave was granted

RULING BY THE SPEAKER

Mr. Speaker : Yesterday, a point of order was raised by Pandit Shri Ram Sharma to the effect that if a Bill is received by a Member from the Assembly Secretariat at any time for his information, should the period of notice, namely, five days, be counted from that date or from the date when a regular notice relating to that Bill is sent to him.

In this connection, I would like to draw the attention of the hon. Member to the relevant Rule. Proviso to Rule 95 of our Rules lays down—

“ Provided that no such motion shall be made until after copies of the Bill have been made available for the use of the Members, and that any Member may object to any such motion being made unless copies of the Bill have been so made available for five clear days before the day on which the motion is made and such objection shall prevail unless the Speaker, in the exercise of his power to suspend this Rule, allows the motion to be made ”.

The position is perfectly clear. The period of notice is to be counted from the date of the receipt of the Bill by the Members.

पंडित श्री राम शर्मा : आप का ruling सिर माथे पर....

अध्यक्ष महोदय : आप बैठ जाईए ।

पंडित श्री राम शर्मा : On a point of order, Sir.....

अध्यक्ष महोदय : Point of order raise करने की इजाजत नहीं । आप तयारीफ़ रखिये ।

मौलवी अबदुल गनी : On a point of information Sir, जनाब ने जो नाम पढ़े हैं क्या उस कमेटी में Opposition का कोई मैम्बर नहीं लिया गया ? हो सकता है कि मैं ने शायद नाम न सुना हो ।

RESUMPTION OF DISCUSSION ON THE PUNJAB REQUISITION-
ING AND ACQUISITION OF IMMOVABLE PROPERTY
(AMENDMENT) BILL, 1954

CLAUSE 3

Mr. Speaker : Yesterday when the Assembly adjourned, Shri Sri Chand was on his legs. He was discussing the amendment put forward by Sardar Sarup Singh to clause 3 of the Bill. I call upon him to resume his speech.

श्री श्री चन्द (बहादुर गढ़) : साहिबे सदर ! तरमीम यह है कि अपील बजाए इस के कि गवर्नमेंट के पास की जाये, डिस्ट्रिक्ट जज के पास होनी चाहिए और बजाए इस के कि मियाद २१ दिन की हो यह ३० दिन की होनी चाहिये। Section 3 पर यह मेरी तरमीम है। हमारी गवर्नमेंट की तरफ से बार बार यह दावा किया गया है कि हम कोई इस्तिथारात के भूके नहीं हैं बल्कि हमारे पास जो इस्तिथार हैं वे हम नीचे वालों यानी पंचायतों को दे रहे हैं। हम उन्हें अपने पास नहीं रखना चाहते। साहिबे सदर ! यह एक ऐसा ग्रहम मामला है कि जिस का सीधा लोगों की जायदाद से ताल्लुक है। गवर्नमेंट का किसी के मकान को requisition करना या किसी की जमीन को acquire करना कोई मामूली सी बात नहीं जब कि एक आदमी की सारी की सारी जायदाद एक मकान या थोड़ी सी जमीन ही हो। ज्यों ही एक आदमी अपने रहने के लिये मकान बनाना शुरू करता है, तो मैजिस्ट्रेट को झट पता लग जाता है और वह मकान मुकम्मल हो जाने पर वह डिप्टी कमिश्नर को कह कर उसे requisition करा लेता है। वह मकान मुकम्मल होता है और अगले ही दिन मालिक मकान को नोटिस मिल जाता है कि तुम्हारा मकान requisition किया जा रहा है और तुम खुद इस मकान में नहीं आ सकते। ऐसे मामलात की अपील इस बिल के मुताबिक गवर्नमेंट के पास होगी। वजीर साहिब ने खुद तो ऐसे मामलों की तहकीकात नहीं करनी होती। जो रिपोर्टें नीचे से आयेंगी, उन के मुताबिक ही गवर्नमेंट ने फैसला कर देना है।

हमारी amendment यह है कि बजाए इस के कि अपील मुनने के इस्तिथारात भी मिनिस्टर साहिब के पास हों, वे एक डिस्ट्रिक्ट जज के पास होने चाहियें ताकि वह गरीब आदमी जिस का मकान requisition किया जाता है उस के सामने पेश हो कर अपनी मुश्किलात बता सके। इस तरह वह यह बता सकेगा कि उस की क्या जरूरियात हैं और उस का मकान किन हालात में requisition किया गया है। मैं इस बारे में दो मिसालें पेश करता हूं जिन से पता लगेगा कि मकान किस तरह से requisition किये जाते हैं। जिस आदमी का मकान requisition किया हुआ होता है उसे डिप्टी कमिश्नर का हैड क्लर्क बुलाता है। वह उसे कहता है कि मेरे एक दोस्त को मकान किराये पर चाहिये। अगर तुम २५ रुपये माहवार पर मकान दे दो तो वह derequisition हो सकता है।

मुख्य मंत्री : On a point of order, Sir. इस वक्त clause 3 जेर बहस है। इस वक्त यह सवाल नहीं है कि किस तरह से मकान requisition होते हैं और किस तरह से नहीं होते हैं। मामला जेरे बहस यह है कि जो मकान requisition हो चुका हो उस को derequisition कराने के लिये अपील हो सकती है।

ਰਹਿਣੀਆਂ ਚਾਹੀਦੀਆਂ ਹਨ । ਜਿਸ ਦੇ ਹਥ ਵਿਚ ਕਿਸੇ ਦੀ ਜਾਇਦਾਦ ਆ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਉਹ ਉਸ Property ਨੂੰ misuse ਕਰਦਾ ਹੈ । ਇਸ ਲਈ ਅਜਿਹੇ Official Receiver ਤੋਂ disqualification remove ਕਰਨਾ Constitution ਅਤੇ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਹੱਠਾਲ ਬੇਇਨਸਾਫੀ ਹੋਵੇਗੀ । ਇਸ ਲਈ ਮੈਂ ਇਸ ਬਿਲ ਨੂੰ ਪੇਸ਼ ਕਰਨ ਦੇ ਪ੍ਰਸਤਾਵ ਨੂੰ oppose ਕਰਦਾ ਹਾਂ ।

ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ ਮੋਤਾ ਸਿੰਹ ਅਨੰਦਪੁਰੀ (ਆਦਮਪੁਰ) : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਇਸ ਬਿਲ ਨੂੰ ਲਾਨੇ ਕਾ ਮਕਸਦ ਮੈਂ ਉਨ ਅਲਫਾਜ਼ ਮੈਂ ਨਹੀਂ ਬਤਾਨਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਜਿਨ ਮੈਂ ਮੇਰੇ ਬਾਜ਼ ਦੋਸਤਾਂ ਨੇ ਬਯਾਨ ਕੀਤਾ ਹੈ । ਲਕਿਨ ਬਾਰ ਬਾਰ ਇਸ ਕਿਸਮ ਦੀ ਤਜਵੀਜ਼ ਲਾਨੇ ਕਾ ਮਕਸਦ ਸਾਫ਼ ਜਾਹਿਰ ਹੈ । ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਸੈਕਸ਼ਨ ੧੬੧ ਮੈਂ disqualifications ਦੀ ਇਸੀ ਨਜ਼ਰਿਆ ਸੇ elucidation ਕੀ ਗਈ ਹੈ ਕਿ officials ਕੋਈ influence ਨ ਡਾਲ ਸਕੇਂ । ਅਗਰ ਕੋਈ official ਏਸਾ ਕਰਤਾ ਹੈ ਤੋ democracy ਫੇਲ ਹੋ ਜਾਯਗੀ । ਆਜ ਅਗਰ democracy ਦੇ ਫੇਲ ਹੋਨੇ ਕੇ ਅਲਫਾਜ਼ ਸੁਨਨੇ ਮੈਂ ਆ ਰਹੇ ਹੈਂ ਤੋ ਇਸ ਦੀ ਵਜਹ ਯਹ ਹੈ ਕਿ elections ਠੀਕ ਨਹੀਂ ਹੋ ਰਹੇ ਐਰ ਜਹਾਂ ਸਰਕਾਰੀ influence ਐਰ brandy ਐਰ wine ਕਾ ਸੁਆਮਲਾ ਹੋ ਵਹਾਂ elections ਕਾ ਕਾਮ ਠੀਕ ਨਹੀਂ ਚਲ ਸਕਤਾ । ਪਸ ਅਗਰ ਵਹ official ਸਿਫ part-time official ਭੀ ਹੋ ਤਬ ਭੀ ਉਸ ਕੋ ਯਹ ਹਕ ਨ ਦੇਨਾ ਚਾਹਿਏ ਕਯੋਂਕਿ ਵਹ influence ਤੋ hold ਕਰਤਾ ਹੈ ਐਰ ਇਸ ਲਿਏ ਠੀਕ elections ਨ ਹੋ ਸਕੇਂਗ । ਪਸ ਅਗਰ ਆਪ Democratic State ਬਨਾਨਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹੈਂ, ਅਗਰ ਆਪ democratic ਹਕੂਮਤ ਕਾਯਮ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹੈਂ ਐਰ ਅਗਰ ਆਪ ਮੁਲਕ ਮੈਂ ਸਚਮੁਚ democracy ਚਲਾਨਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹੈਂ ਤੋ ਕਿਸੀ ਭੀ official ਕੋ ਯਹ ਹਕ ਨਹੀਂ ਦੇਨਾ ਚਾਹਿਏ ।

ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਬਾਜ਼ ਸਾਥਿਯੋਂ ਨ ਇਸ ਬਾਰੇ ਮੈਂ ਬਹੁਤ ਕੁਝ ਕਹਾ ਹੈ, ਕਿ ਕੋਈ ਮੈਂਬਰ Receiver ਬਨਨੇ ਵਾਲਾ ਹੈ ਐਰ ਯਹ ਬਿਲ ਇਸ ਲਿਏ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਗਯਾ ਹੈ । ਮੇਰੇ ਦਿਲ ਮੈਂ ਕੋਈ ਏਸੀ ਬਾਤ ਨਹੀਂ ਹੈ । ਮੈਂ ਤੋ principle ਦੀ ਬਿਨਾ ਪਰ ਕਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਅਗਰ democracy ਚਲਾਨਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹੋ ਤੋ ਠੀਕ ਤਰੀਕੇ ਸੇ ਚਲਾਓ ਨਹੀਂ ਤੋ ਵਹ autocracy ਬਨ ਜਾਏਗੀ ।

ਦੀਵਾਨ ਜਗਦੀਸ਼ ਚੰਦਰ (ਲੁਧਿਆਣਾ ਸ਼ਹਿਰ-ਉੱਤਰ) : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਅਪ੍ਰੋਜੀਸ਼ਨ ਕੇ ਦੋਸਤਾਂ ਨ ਇਸ ਬਿਲ ਦੀ ਇਸ ਵਜਹ ਸੇ ਮੁਖਾਲਿਫਤ ਕੀ ਹੈ ਕਿ Receiver ਲੋਗੋਂ ਪਰ ਨਾਜਾਇਜ਼ ਦਬਾਵ ਡਾਲੇਗਾ । ਮੈਂ ਸਮਝਤਾ ਹਾਂ ਕਿ ਜੋ ਵਕੀਲ ਮੈਂਬਰ ਸਾਹਿਬਾਨ practise ਕਰਤੇ ਹੈਂ ਉਨ ਕੋ ਮਾਲੂਮ ਹੋਨਾ ਚਾਹਿਏ ਕਿ ਏਕ Receiver ਕਿਤਨਾ ਨਾਜਾਇਜ਼ ਦਬਾਵ ਡਾਲ ਸਕਤਾ ਹੈ ਯਾ ਡਲਵਾ ਸਕਤਾ ਹੈ । ਇਸ ਬਿਲ ਕਾ ਮਕਸਦ ਯਹੀ ਹੈ ਕਿ democracy ਅਚੱਢੀ ਤਰਹ ਚਲ ਸਕੇ ਐਰ ਲੋਗ ਆਜਾਦੀ ਸੇ election ਮੈਂ ਹਿੱਸਾ ਲੇ ਸਕੇਂ ਐਰ ਰਾਏ ਦੇ ਸਕੇਂ । ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਵਕਾਲਤ ਕਾ ਪੇਸ਼ਾ ਏਸਾ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਮੈਂ ਹਰ ਵਕਤ ਅਫਸਰੋਂ ਐਰ ਅਦਾਲਤੋਂ ਸੇ ਕਾਮ ਪੜ੍ਹਤਾ ਰਹੁੰਦਾ ਹੈ । ਅਦਾਲਤੋਂ ਉਨ ਦੀ commission ਭੀ ਮੁਕਰੰ ਕਰ ਦੇਂਦੀ ਹੈ ਐਰ ਇਸ ਕਾਮ ਕੇ ਉਨ ਕੋ ਪੈਸੇ ਭੀ ਮਿਲਤੇ ਹੈਂ । ਇਸੀ ਤਰਹ auctioneer ਵਧੇਰਾ ਭੀ ਹੈਂ । ਏਸੇ ਲੋਗੋਂ ਕੋ ਅਫਸਰੋਂ ਐਰ ਪਬਲਿਕ ਦੋਨੋਂ ਸੇ ਵਾਸਤਾ ਪੜ੍ਹਤਾ ਹੈ । ਇਨ ਸਬ ਕੇ ਬਾਰੇ ਮੈਂ ਯਹ ਬਾਤ ਨਹੀਂ ਕਹੀ ਜਾ ਸਕਤੀ ਕਿ ਵਹ ਪਬਲਿਕ ਪਰ ਨਾਜਾਇਜ਼ ਅਸਰ ਡਾਲੇਗੇ ।

Sardar Sarup Singh : On a point of order, Sir, I think the hon. Member is confusing the Official Receiver with the lawyers who are given day to day commissions. He appears to be labouring under a wrong impression.

अध्यक्ष महोदय : क्या यह प्वाइंट ऑफ़ आर्डर है ?

दीवान जगदीश चंद्र : मैं यह कहता हूँ कि यह सब ऐसी चीजें हैं कि इन के बारे में कोई भी यह बात नहीं कह सकता कि इन्हें रखने वाला या यह काम करने वाला पब्लिक का नुमाईदा नहीं बन सकता। पस जो पब्लिक के नुमाइन्दे बन सकते हैं और लोगों के ख्यालात यहां आ कर पेश कर सकते हैं उन को क्यों रोका जाये। इस तरह तो वकीलों के बारे में भी कहा जा सकता है कि उन को लोगों के नुमाईदे बन कर आने की इजाजत नहीं होनी चाहिये। क्या ऐसा करना ठीक होगा ? मैं अपने दोस्तों से पूछता हूँ कि वह ऐसी बातें क्यों करते हैं।

स्पीकर साहिब, यह बात सब जानते हैं कि Receiver को सिर्फ property के मुताल्लिक काम करना पड़ता है और उस को सियासी बातों से कोई वास्ता नहीं होता। फिर उस पर यह पाबन्दी क्यों लगाई जाए ? वह तो लोगों पर किसी किस्म का नाजाइज दबाव नहीं डाल सकता। पस इस बिल को पेश करके यह नाजाइज पाबन्दी दूर की जा रही है।

Mr. Speaker : Question is—

That the Punjab State Legislature (Prevention of Disqualification) (Second Amendment) Bill be taken into consideration at once.

The motion was carried.

Mr. Speaker : Now the House will proceed to consider the Bill clause by clause.

CLAUSE 2

Mr. Speaker : Question is—

That Clause 1 stand part of the Bill.

The motion was carried.

CLAUSE 1

Mr. Speaker : Question is—

That Clause 1 stand part of the Bill.

The motion was carried.

TITLE

Mr. Speaker : Question is—

That Title be the Title of the Bill.

The motion was carried.

Chief Minister : (Shri Bhim Sen Sachar) : Sir, I beg to move—

That the Punjab State Legislature (Prevention of Disqualification) (Second Amendment) Bill be passed.

THE PUNJAB STATE LEGISLATURE (PREVENTION OF DISQUALIFICATION) (3)67
(SECOND AMENDMENT) BILL,

Mr. Speaker : Motion moved—

That the Punjab State Legislature (Prevention of Disqualification) (Second Amendment) Bill be passed.

ਸਰਦਾਰ ਸਰੂਪ ਸਿੰਘ (ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਸ਼ਹਿਰ, ਪੂਰਬ) : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਮੈਂ ਸਿਰਫ ਇਹ ਅਰਜ਼ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ Leader of the House ਨੂੰ ਇਸ ਬਿਲ ਨੂੰ defend ਕਰਨ ਦੀ ਵੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਨਹੀਂ ਹੋਈ। ਜਿਸ ਦਾ ਮਤਲਬ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਬਿਲ ਬਹੁਤ ਹੀ ਨਕੱਲਾ ਹੈ। ਇਸ ਵਾਸਤੇ ਮੈਂ ਅਰਜ਼ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਇਸ ਨੂੰ ਬਿਲਕੁਲ ਪਾਸ ਨਹੀਂ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ।

ਮੁੱਖ ਮੰਤਰੀ (ਸ਼੍ਰੀ ਭੀਸ਼ ਸੇਨ ਸਚਚਰ) : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਤਕਰੀਰਾਂ ਦਾ ਜਵਾਬ ਦੋ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਦਿੱਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਏਕ ਤੋਂ ਤਕਰੀਰ ਦਾ ਜਵਾਬ ਤਕਰੀਰ ਦੇ ਆਰ ਦੂਸਰੇ ਵਾਜ਼ ਤਕਰੀਰਾਂ ਏਸੀ ਹੋਤੀ ਹੈ ਕਿ ਤਨ ਦਾ ਜਵਾਬ ਖਾਮੋਸ਼ੀ ਦੇ ਹੀ ਦਿਤਾ ਜਾਤਾ ਹੈ। (*Hear, hear*)

Mr. Speaker : Question is—

That the Punjab State Legislature (Prevention of Disqualification) (Second Amendment) Bill be passed.

The motion was carried.

(The Assembly then adjourned till 3 p.m. on Wednesday the 20th May, 1954.)

1. The first step is to identify the problem or question that needs to be answered. This involves understanding the context and the specific information required.

100-443887-10

1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 26

1. 1990年12月15日，在《中国日报》发表题为“中国：一个令人鼓舞的开端”的社论，认为中国改革已迈出第一步，中国正处在历史性的转折点上。

abha
library

Punjab Legislative Assembly Debates

20th May, 1954

Vol. II—No. 4
OFFICIAL REPORT



CONTENTS

Thursday, 20th May, 1954

	PAGES
Starred Questions and Answers ..	1—39
Short Notice Questions and Answers ..	39—49
Adjournment Motion ..	49—50
Leave of Absence ..	50
Resolution(s)—	
<i>Re. Amending of East Punjab University (Amendment) Act, 1948, to extend to Shastris the right of vote at elections to the Punjab University Senate</i> ..	50—72
<i>Re. Appointment of a Police Reorganisation Committee</i> ..	72—88

CHANDIGARH :

Printed by the Controller, Printing and Stationery, Punjab,
1956

Price : Re 3-0-0

PUNJAB LEGISLATIVE ASSEMBLY

Thursday, 20th May, 1954.

The Assembly met in the Assembly Hall, Sector 10, Chandigarh Capital, at 3 p. m. of the Clock. Mr Speaker (Sardar Gurdial Singh Dhillon) in the Chair.

STARRED QUESTIONS AND ANSWERS

RAID ON VILLAGE JALALABAD, DISTRICT AMRITSAR, BY STATION HOUSE OFFICER, PURAN SINGH

***3436. Sardar Darshan Singh :** Will the Chief Minister be pleased to state—

- (a) whether it is a fact that the Station House Officer, Puran Singh, Incharge, Police Station, Verowal, Tehsil Tarn Taran, District Amritsar raided village Jalalabad in tehsil Tarn Taran on 25th December, 1953 in connection with the recovery of illicit liquor; if so, the quantity of illicit liquor recovered and the total number of persons arrested by him in this connection,
- (b) whether it is a fact that the village panchayat in the Resolution of December 29, 1953, protested against the insulting behaviour of the said Puran Singh towards the members of the Panchayat and the residents of the village during the said raid if so, the action, if any, taken by the Government in the matter

Chief Parliamentary Secretary (Shri Prabodh Chandra) : (a) Yes. The houses of three persons in village Jalalabad were raided by the S. H. O., Verowal (S.I. Puran Singh), on 25th December, 1953, in connection with the recovery of illicit liquor and he recovered the liquor as under :—

- (i) 76 Ozs. of illicit liquor.
- (ii) About 45 seers of lahan in two pitchers.
- (iii) Some implements of illicit distillation.

Three persons were arrested and challaned. All of them (including one Karnail Singh who confessed his guilt in the court) were convicted and sentenced to various terms of imprisonment.

(b) Yes. The village Panchayat passed a resolution against the behaviour of S. I. Puran Singh in this connection. A complaint was also lodged by one Jagir Singh, Jat of the same village, in the court of the Additional District Magistrate, Amritsar, which is still pending.

As the case is *sub judice*, no further action is contemplated till the decision of the court is announced in the complaint case.

ਸਰਦਾਰ ਦਰਸ਼ਨ ਸਿੰਘ : ਮੈਂ ਮਿਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਕੋਲੋਂ ਪੁਛਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਜਿਹੜਾ ਰੇਜ਼ੋਲਿਊਸ਼ਨ ਜਲਾਲਾਬਾਦ ਪੰਚਾਇਤ ਨੇ ਪੁਰਨ ਸਿੰਘ ਬਾਨੇਦਾਰ ਦੇ ਖਿਲਾਫ ਪਾਸ ਕੀਤਾ ਸੀ ਉਸ ਸੰਬੰਧ ਵਿਚ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਉਸ ਬਾਨੇਦਾਰ ਦੇ ਖਿਲਾਫ ਕੋਈ ਕਾਰਵਾਈ ਕੀਤੀ ਹੈ ?

ਚੀਫ ਪਾਰਲੀਆਮੈਂਟਰੀ ਸੈਕਰਟਰੀ : Case ਦੀ ਸਮਾਜਤ ਅਦਾਲਤ ਮੈਂ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ ਅਤੇ ਅਗਰ ਅਦਾਲਤ ਨੇ ਥਾਨੇਦਾਰ ਦੇ ਖਿਲਾਫ ਕੋਈ strictures ਪਾਸ ਕੀਏ ਤਾਂ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਉਸ ਦੇ ਖਿਲਾਫ action ਲੇਗੀ ।

ਸਰਦਾਰ ਚੰਨਣ ਸਿੰਘ ਧੂਤ : ਉਸ case ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ ।

ਚੀਫ ਪਾਰਲੀਆਮੈਂਟਰੀ ਸੈਕਰਟਰੀ : यह case *sub judice* ਹੈ ।

ਸਰਦਾਰ ਦਰਸ਼ਨ ਸਿੰਘ : ਬਾਨੇਦਾਰ ਦੇ insulting behaviour ਦਾ case ਅਡ ਹੈ ; ਉਸ ਸੰਬੰਧ ਵਿਚ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਨੇ ਕੀ enquiry ਕੀਤੀ ਹੈ ?

ਪੰਡਿਤ ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਸ਼ਰਮਾ : ਕੀ ਚੀਫ ਪਾਰਲੀਆਮੈਂਟਰੀ ਸੈਕਰਟਰੀ ਸਾਹਿਬ ਬਤਾਏਗੇ ਕਿ ਵੱਧਾਂ ਦੀ ਗਾਂਥ ਦੀ ਪੰਚਾਇਤ ਨੇ ਜੋ ਥਾਨੇਦਾਰ ਦੇ ਖਿਲਾਫ ਸ਼ਿਕਾਇਤ ਕੀਤੀ ਸੀ ਕਿ ਉਸ ਨੇ ਪੰਚੀ ਅਤੇ ਦੂਸਰੇ ਲੋਗਾਂ ਦੀ ਬੇਇਜ਼ਜ਼ਤੀ ਕੀਤੀ ਹੈ, ਉਸ ਦੇ ਬਾਰੇ ਮੈਂ ਕੋਈ ਮੁਕਦਮਾ ਜ਼ੋਰੇ ਸਮਾਜਤ ਹੈ ਅਤੇ ਕੀ ਫੈਸਲਾ ਹੁਆ ਹੈ ਕਿ ਥਾਨੇਦਾਰ ਬੇਇਜ਼ਜ਼ਤੀ ਕੀ ਹੈ ਜਾਂ ਨਹੀਂ ।

ਚੀਫ ਪਾਰਲੀਆਮੈਂਟਰੀ ਸੈਕਰਟਰੀ : Part (b) ਮੈਂ ਬਤਾਇਆ ਗਿਆ ਹੈ ਕਿ ਪੰਚਾਇਤ ਦੇ ਇਲਾਵਾ ਇਸ ਸਿਲਸਿਲੇ ਮੈਂ ਜਾਗੀਰ ਸਿੰਘ ਜਾਟ ਨੇ ਐਡੀਸ਼ਨਲ ਡਿਸਟ੍ਰਿਕਟ ਮੈਜਿਸਟ੍ਰੇਟ ਦੀ ਅਦਾਲਤ ਮੈਂ ਏਕ ਦਰਖਾਸਤ ਦੀ ਦਿਤੀ ਹੈ । ਚੁੰਕਿ ਦੋਨਾਂ cases allied ਹੈ ਅਤੇ ਉਨ ਕਾ ਅਜੀ ਤਕ ਫੈਸਲਾ ਨਹੀਂ ਹੁਆ ਇਸ ਲਿਯੇ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਇਸ ਕੇ ਮੁਤਅਲਿਕ ਕੋਈ ਰਾਯ ਨਹੀਂ ਦੇ ਸਕਤੀ ।

ਪੰਡਿਤ ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਸ਼ਰਮਾ : ਕੀ ਚੀਫ ਪਾਰਲੀਆਮੈਂਟਰੀ ਸੈਕਰਟਰੀ ਸਾਹਿਬ ਬਤਾਏਗੇ.....

ਅਧਿਕਸ਼ ਮਹੋਦਯ : ਜਬ ਆਪ ਸਵਾਲ ਪੁਛਨੇ ਕੇ ਲਿਯੇ ਲਏਂ ਤੋ ਪਹਲੇ 'supplementary question' ਕੇ ਅਲਫ਼ਾਜ਼ ਕਹ ਦਿਯਾ ਕਰੋਂ ।

ਪੰਡਿਤ ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਸ਼ਰਮਾ : Supplementary question, Sir. ਮੈਂ ਯਹ definite ਤੌਰ ਪਰ ਮਾਲੂਮ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਜੋ ਪੰਚਾਇਤ ਨੇ ਥਾਨੇਦਾਰ ਦੇ ਰਵੱਧੇ ਕੇ ਖਿਲਾਫ Resolution ਪਾਸ ਕਰ ਕੇ ਸ਼ਿਕਾਇਤ ਕੀਤੀ ਸੀ ਕੀ ਵਹ ਮਾਮਲਾ ਅਦਾਲਤ ਮੈਂ ਜ਼ੋਰੇ ਸਮਾਜਤ ਹੈ ਕਿ ਆਯਾ ਬੇਇਜ਼ਜ਼ਤੀ ਕੀ ਗਈ ਹੈ ਜਾਂ ਨਹੀਂ ਜਾਂ ਅਤੇ ਕੋਈ ਦੂਸਰਾ ਮੁਕਦਮਾ ਅਦਾਲਤ ਮੈਂ ਚਲ ਰਹਾ ਹੈ ?

ਅਧਿਕਸ਼ ਮਹੋਦਯ : ਇਸ ਸਵਾਲ ਕਾ ਆਪ ਅਲਹਦਾ ਨੋਟਿਸ ਦੇਂ ।

ਪੰਡਿਤ ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਸ਼ਰਮਾ : On a point of order, Sir. ਸਵਾਲ ਕੇ part (b) ਮੈਂ ਦਰਿਯਾਫ਼ਤ ਕੀਯਾ ਗਿਆ ਥਾ ਕਿ ਕੀ ਯਹ ਅਮਰ ਵਾਕਯਾ ਹੈ ਕਿ ਜਲਾਲਾਬਾਦ ਦੀ ਪੰਚਾਇਤ ਨੇ roteest ਕੀਯਾ ਥਾ ਕਿ ਥਾਨੇਦਾਰ ਨੇ ਪੰਚੀ ਅਤੇ ਦੂਸਰੇ ਲੋਗਾਂ ਕੇ ਸਾਥ ਬੇਇਜ਼ਜ਼ਤੀ ਕਾ ਰਵੱਧਾ

इस्तिथार किया था। इस का जवाब दिया गया है चूंकि यह *case sub judice* है इस लिये इस का जवाब नहीं दिया जा सकता है। मैं दरियाफ्त करना चाहता हूं कि क्या यही *case* जेरेसमाअत है कि थानेदार का सलूक लोगों और पंचों के साथ *insulting* था या कोई और मुकद्दमा जेरेसमाअत है ? ५

चीफ़ पार्लीयामेण्ट्री सैक्रेटरी : जैसे सवाल के part (b) में जवाब दिया गया है कि पूरन सिंह थानेदार के खैये के खिलाफ पंचायत ने एक रैजोल्यूशन पास किया था इसी तरह से एक अलहदा *case* जागीर सिंह ने उसी थानेदार के खिलाफ अदालत में दायर किया हुआ है। अगर इसी नौईयत का *case* अदालत में चल रहा हो तो गवर्नमैण्ट पंचायत के रैजोल्यूशन पर कोई फैसला कर दे तो उस *case* पर असर पड़ने का एहतमाल है। जब तक अदालत में उस *case* का फैसला नहीं हो जाता तब तक गवर्नमैण्ट पंचायत के रैजोल्यूशन पर कोई फैसला नहीं कर सकती।

मरदार चंनठ सिंघ पृउ : ਪੰਚਾਇਤ ਐਕਟ ਦੇ ਮਾਤਹਿਤ ਪੰਚਾਇਤ ਰੈਜ਼ੋਲਿਊਸ਼ਨ ਪਾਸ ਕਰਦੀ ਹੈ । ਕੀ ਇਸ ਰੈਜ਼ੋਲਿਊਸ਼ਨ ਦਾ ਜਵਾਬ ਡਿਪਟੀ ਕਮਿਸ਼ਨਰ ਜਾਂ ਕਿਸੇ ਹੋਰ ਅਫ਼ਸਰ ਨੇ ਦਿਤਾ ਹੈ ।

Mr. Speaker : This question does not arise.

पंडित श्री राम शर्मा : इस बात के पेशे नज़र कि जागीर सिंह ने इसी मतलब के लिए अदालत में एक दरखास्त दी हुई है जिस का जिक्र किया जा रहा है, मैं पृछना चाहता हूं कि महकमाना तौर पर इस रैजोल्यूशन पर क्या कार्रवाई की गई है ? ४

अध्यक्ष महोदय : आप ने यह सवाल दूसरी शबल में दरियाफ्त किया है जिस का जवाब वह दे चुके हैं।

मरदार दरमन सिंघ : ਜਲਾਲਾਬਾਦ ਦੀ ਪੰਚਾਇਤ ਨੇ ਜਿਹੜਾ ਰੈਜ਼ੋਲਿਊਸ਼ਨ ਪਾਸ ਕੀਤਾ ਹੈ ਉਸ ਮੰਬੰਧ ਵਿਚ ਕੀ ਕਾਰਵਾਈ ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੈ ? ੭

अध्यक्ष महोदय : इस का जवाब दिया जा चुका है।

FIRING BETWEEN INDIAN AND PAKISTAN POLICE

***3466. Shri Ram Chandra Comrade :** Will the Chief Minister be pleased to state whether any firing between the Indian and the Pakistan Police took place on the West Indo-Pakistan Border in the second week of April ; if so, its details ?

Chief Parliamentary Secretary (Shri Prabodh Chandra) : Yes. There was a long drawn out firing on the Amritsar Border between the Indian and the Pak. Border Police on the 9th/10th April, 1954, as a sequel to the Pak-Border Police attempts to encroach on 60/70 acres of Indian land falling within the revenue limits of village Jhugian Nur Mohd. A patrol of

[Chief Parliamentary Secretary]

The Pak-Border Police was noticed in this land on the morning of 8th April, 1954, who, on being challenged not to trespass into Indian territory, withdrew from the spot. However, during the night they dug a few morchas and collected some reinforcements. This was noticed by our observation post on the morning of the 9th April. The Head Constable in charge of our picket rushed to the spot, with a party of 8 F. Cs, and seeing the Pak-Border Police standing on Indian soil, he asked them to withdraw forthwith. Instead of doing so, the Pakistan Patrol claimed sovereignty over the entire area of 60/70 acres lying across Dhan Khakha Nullah, referred to above. The Head Constable replied that he had no authority to enter into any negotiations with them and that if they had any claim over the land, they had better prefer the same through their civil authorities. He again warned them that in case they failed to withdraw from Indian territory, they shall do so at their own risk. Thereupon, the Pakistan Border Police men retreated a few paces and went into their dug-up positions. Simultaneously, our P. A. P. Party was fired upon by another party of Pak-Border Police. Fortunately, no one on our side was injured. Our men also took up positions and returned the fire.

The information about firing was immediately sent to the Border Inspector, who collected whatever forces he could and rushed to the spot. A message was also sent to Amritsar wherefrom more reinforcements arrived later.

The Senior Superintendent of Police and Superintendent of Police, Border-Amritsar, also reached the spot and made strenuous efforts to contact the Pak Border Police Officers on telephone, to bring about a cease-fire, but without any success. Meanwhile, firing continued. The Pakistanis directed their bren-gun firing on our picket building itself, which was damaged.

Finally, Senior Superintendent of Police, Amritsar, was able to contact Additional Superintendent of Police, Kasur, at 2 a.m., on 10th April 1954, and a meeting was held that morning and a cease-fire was brought about by 8 a.m. Thus the Pakistani designs were thwarted by the timely action of the P.A.P. A strong protest has since been lodged with the Pakistan Government by the Government of India.

श्री बाबू दयाल : मैं यह जानना चाहता हूँ कि इस clash में कुल कितने आदमी injure हुए और कितने मरे ?

चीफ़ पार्लियामेण्टरी सैक्रेटरी : इस का हमें पता नहीं है ।

VISITS OF FOREIGNERS

***3486. Shri Ram Kishan :** Will the Chief Minister be pleased to state—

- (a) the total number of Foreigners who visited the Hilly Districts of Kangra and Simla during the year 1953 ;
- (b) whether any missionaries also came with these Foreigners and indulged in any undesirable activity ;
- (c) the names of different countries from where these Foreigners came ?

Chief Parliamentary Secretary (Shri Prabodh Chandra) : (a) The total number of Foreigners who visited the Hilly Districts of Kangra and Simla during the years 1953 and 1954 was 70 and 21, respectively.

(b) The number of foreigner missionaries who visited these districts during the period was 30, but none of them came to notice indulging in any undesirable activity.

(c) The foreigners came from America, Austria, Australia, Belgium, Britain, China, Czechoslovakia, Holland, Denmark, France, Germany, Italy, Iran, Ireland, Japan, Norway, Poland, Switzerland, Sweden, Spain, Afghanistan and Ethopia.

श्री राम किशन : Foreign missionaries का इन इलाकों को visit करने का मकसद क्या था ?

चीफ़ पार्लियामेण्ट्री सैक्रेटरी : इस सवाल में पूछा गया है कि कितने foreigners ने इन जिलों को visit किया ? इस का जवाब दिया गया है कि 30 आए और ऐसी कोई बात नोटिस में नहीं आई जिस से पता चले कि उन्होंने अपने आप को किसी undesirable activity में engage किया हो। अगर आप उन के आने का मकसद जानना चाहते हैं तो और सवाल पूछिये।

श्री बाबू दयाल : जो missionary वहां गए उन में से कितने बरतानिया के थे, कितने हालैंड के और कितने फ्रांस के ?

Mr. Speaker: It does not arise, the hon. Member should give a separate notice for that.

श्री राम किशन : क्या चीफ़ पार्लियामेण्ट्री सैक्रेटरी बतायेंगे कि जितने दिन वह foreign missionary वहां रहे क्या उन की activities के बारे में पुलिस ने कोई रिपोर्ट (report) सरकार को भेजी थी और अगर भेजी थी तो वह क्या है ?

चीफ़ पार्लियामेण्ट्री सैक्रेटरी : यही रिपोर्ट (report) आई है कि उन की कोई undesirable activity नहीं देखी गई।

श्री राम किशन : इन foreign missionaries के अलावा जो कई और foreigners भी आए तो उन के बारे में सरकार को क्या रिपोर्ट (report) आई है ?

चीफ़ पार्लियामेण्ट्री सैक्रेटरी : आप नोटिस दें तो इसलाह पहुंचा दी जायगी।

PUNITIVE POLICE POST AT VILLAGE TANGWALI, DISTRICT FEROZEPORE

***3495. Pandit Shri Ram Sharma :** Will the Chief Minister be pleased to state—

(a) whether it is a fact that village Tangwali, Sub-Tehsil Nathana, district Ferozepore, has had a punitive police post for more than two years ; if so, the total amount already realised for the said punitive post and the amount yet to be realised ;

(b) the detailed reasons for which the said post was established ?

Chief Parliamentary Secretary (Shri Prabodh Chandra) : (a) Yes, punitive police was posted on village Tungwali, district Ferozepore, for the periods from 1st November, 1950 to 31st October, 1952 and from 15th June, 1953 to 14th June, 1954. A sum of Rs 6,707-7-6 has been realised from the village for the period from 1st November, 1950 to 31st October, 1952, and a sum of Rs 171-8-6 is still recoverable for this period. No amount has so far been realised for the period from 15th June, 1953 to 14th June, 1954. The amount to be realised from this period from the inhabitants of this village is yet to be worked out.

(b) A statement is given below.

Reasons for the posting of punitive police on village Tungwali, P. S. Nathana, District Ferozepore.

Village Tungwali was found to be in a disturbed state and the conduct of its inhabitants demanded an increase in the number of the Police.

Figures given below show the state of crime in this village during the years 1947 to 1953 :—

Year	Cases reported from the village	
1947	.. Murder	.. 1
	Attempt to murder	.. 1
	Thefts	.. 3
	Excise Act	.. 3
	Arms Act	.. 3
	Hurt	.. 1
	Total	.. 12
1948	.. Murder	.. 1
	Attempt to murder	.. 1
	Grievous hurt	.. 1
	Theft	.. 1
	Canal cut	.. 1
	Arms Act	.. 6
	Excise Act	.. 2
	Opium Act	.. 5
	House-trespass	.. 1
	Total	.. 19
1949	.. Robbery	.. 1
	Thefts	.. 4
	Burglary	.. 1
	Canal cut	.. 1
	Excise Act	.. 4
	Arms Act	.. 2
	Telegraph Act	.. 1
	Total	.. 14

<i>Year</i>		<i>Cases reported from the village</i>	
1950	Murder	..	1
	Attempt to murder	..	1
	Theft	..	2
	Cheating	..	1
	Burglary	..	1
	Arms Act	..	1
	Opium Act	..	2
	Excise Act	..	2
	Total	..	<u>11</u>
1951	Murder	..	1
	Attempt to murder	..	2
	Canal cut	..	2
	Burglary	..	3
	Trespass	..	1
	Arms Act	..	5
	Excise Act	..	1
	Gambling	..	1
1952	Total	..	<u>16</u>
	Murder	..	2
	Attempt to murder	..	1
	Arms Act	..	6
	Opium Act	..	5
	Excise Act	..	1
	Total	..	<u>15</u>
1953	Robbery	..	1
	Arms Act	..	7
	Opium Act	..	4
	Excise Act	..	5
	Total	..	<u>17</u>

(Chief Parliamentary Secretary]

<i>Year</i>		<i>Cases traced to the Village</i>
1947	.. Dacoity	.. 1
	Robbery	.. 1
	Theft	.. 1
	Total	.. 3
1948	.. Attempt to murder	.. 5
	Dacoity	.. 1
	Total	.. 6
1949	.. Dacoity	.. 3
	Thefts	.. 3
	Total	.. 6
1950	.. Burglary	.. 1
	Theft	.. 1
	Total	.. 2
1951	.. Robbery	.. 3
	Burglary	.. 2
	Theft	.. 1
	Total	.. 6
1952	.. Burglary	.. 2
	Theft	.. 2
	Total	.. 4
1953	.. Robbery	.. 1
	Burglary	.. 1
	Theft	.. 3
	Total	.. 5

The village has been notorious for the murderous tendencies of its inhabitants. It witnessed 4 murders during the last 3 years. Apart from the gruesome murders, the incidence of other crime has also been heavy. One, Nikka, a condemned escapee, assisted by one, Ballo, of this village, formed a gang of desperadoes and committed broad-day light murders in the village. These murders were committed to wreak vengeance in old feuds and this gang was assisted and harboured by the interested parties of the village.

The inhabitants displayed a non-co-operating attitude towards the administration. This Nikka-Ballo gang is still at large.

There are 10 B. C.s under surveillance in this village.

Tungwali is situated at a distance of 12 miles from the Police Station with no kucha or pucca road connecting it ; this renders control from the Police Station extremely difficult.

पंडित श्री राम शर्मा: यह statement जो मुझे दिया गया है इस में यह बयान किया गया है कि चूँकि उस गांव के दो आदमी ऐसे हैं जो absconders हैं और उन्होंने एक gang बनाया हुआ है इस लिये वहां punitive post बिठाई गई है। मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या उन दो मफ़रूरों की वजह से वहां पर police post रखी गई है या इस लिये कि वहां के लोग उन की मदद कर रहे हैं। अगर वे उन की मदद कर रहे हैं तो इस बारे में सरकार के पास क्या इत्तलाह है?

चीफ़ पार्लियामेंट्री सैक्रेटरी: जिन दो मफ़रूरों का जिक्र आया है उन के अलावा सारे गांव की tendency ऐसी है। The village has been notorious for the murderous tendencies of its inhabitants.

पंडित श्री राम शर्मा: इस statement में लिखा है “One Nikka, a condemned escapee, assisted by one Ballu of this village, formed a gang of desperadoes and committed broad-day light murders in the village.” क्या गवर्नमेंट के पास कोई सबूत है कि गांव के लोग उन के मददगार हैं?

चीफ़ पार्लियामेंट्री सैक्रेटरी: Statement में लिखा है कि “The inhabitants displayed a non-co-operating attitude towards the administration.” इस से साफ़ जाहिर है कि उन्होंने गवर्नमेंट की मदद नहीं की।

पंडित श्री राम शर्मा: इस statement में लिखा है “This gang was assisted and harboured by the interested parties of the village.” गांव के कौन आदमी उन की मदद कर रहे हैं और इस बारे में सरकार के पास क्या इत्तलाह है?

चीफ़ पार्लियामेंट्री सैक्रेटरी: लोगों का general attitude non-co-operative है। अगर खास आदमियों का पता हो तो गवर्नमेंट उन के खिलाफ़ action ले सकती है।

—
NASRALA CHO

***1790. Sardar Chanan Singh Dhut :** Will the Minister for Irrigation be pleased to state —

- (a) whether he is aware of the fact that as a result of the embankment built in April, 1950, to protect the Nasrala Railway Bridge, the water of Nasrala Cho was diverted towards village Meghowal, district Hoshiarpur ;
- (b) whether he is further aware of the fact that as a result of the diversion referred to in part (a) above a large number of houses of village Meghowal were destroyed and lands of this village rendered unfit for cultivation ; if so, whether any compensation was given by the Government to the residents of village Meghowal for the losses they suffered, together with the details thereof;

[Sardar Chanan Singh Dhut]

- (c) whether it is a fact that the residents of the said village have been pressing for compensation equal to their losses ; if so, the steps Government proposes to take in the matter ?

Chaudhri Lahri Singh : The answer to this Assembly Question is not yet ready. The information is being collected and will be supplied to the member as soon as possible.

ਸਰਦਾਰ ਚੰਨਣ ਸਿੰਘ ਧੁਤ : On a point of order, Sir. ਇਹ ਸਵਾਲ ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ 1952 ਦਾ ਜਾਰੀ ਹੈ। ਹਰ ਸੈਸ਼ਨ ਵਿਚ ਇਹੋ ਜਵਾਬ ਦਿੱਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਆਖਰ ਇਸ ਵਿਚ ਕੀ ਦਿੱਤਾ ਹੈ ਅਤੇ ਉਹ ਕਿਹੜਾ ਅਫ਼ਸਰ ਹੈ ਜਿਹੜਾ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਇਤਲਾਹ ਨਹੀਂ ਦੇ ਰਿਹਾ ?

ਸ੍ਰੀ ਸਪੀਕਰ : ਅਸੀਂ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ force ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦੇ। ਜਦੋਂ information ਇੱਕੱਠੀ ਹੋ ਗਈ ਤਾਂ ਜਵਾਬ ਦੇ ਦਿੱਤਾ ਜਾਵੇਗਾ।

ਪੰਡਿਤ ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਸ਼ਰਮਾ : क्या आप के पास या हाऊस के पास इस बात का कोई इलाज है कि अगर किसी सवाल का जवाब न दिया जाए तो उस का जवाब मांगा जाये ?

अध्यक्ष महोदय : इस का कोई इलाज नहीं है।

FALSE AND INCORRECT GIRDAWARIS IN THE STATE

***2002. Sardar Harkishan Singh Surjit :** Will the Minister for Development be pleased to state—

- the total number of false and incorrect Girdawaris in the State brought to the notice of the Government during the year 1953 ;
- the number of cases in which the Girdawaris have been corrected during the period mentioned in part (a) above district-wise ;
- the action, if any, taken by the Government against the landlords and officials for making false entries of Girdawaris ?

Sardar Partap Singh Kairon : The information is being collected and will be supplied to the Member, as soon as possible.

ਸ਼੍ਰੀ ਸ਼੍ਰੀ ਚੰਦ : On a point of order, Sir. Procedure यह है कि अगर कोई मंत्री किसी सवाल का बिला-बजह जवाब न दे या इस को टालने की कोशिश करे तो Chair कह सकती है कि उस का जवाब इतने अरसे के अन्दर जरूर दिया जाए। मंत्रियों को खुली छद्दी नहीं कि वे किसी सवाल का जवाब दें या न दें। Chair उन्हें जवाब देने पर मजबूर कर सकती है।

अध्यक्ष महोदय—यह तो तब हो सकता है जब कोई मंत्री जवाब देने से इनकार करे। उन्होंने तो केवल यही कहा कि information इकट्ठी की जा रही है। इस लिये force करने का सवाल पैदा ही नहीं होता।

ਵਿਕਾਸ ਮੰਤਰੀ : Information ਵੀ ਕਿੰਨੀ ਇਕੱਠੀ ਕਰਨੀ ਸੀ ਸਾਰੇ ਸੂਬੇ ਦੀ—
The total number of cases in which girdawaries have been corrected ? ਕੀ ਜਦੋਂ ਤੋਂ ਹਾਊਸ prorogue ਹੋਇਆ ਸੀ ਉਦੋਂ ਤੋਂ ਪਿਛੋਂ ਇਹ ਸਾਰੀ information ਇਕੱਠੀ ਕੀਤੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਸੀ ?

ਸ਼੍ਰੀ ਦੇਵ ਰਾਜ ਸੇਠੀ : On a point of order, Sir. ਪਿਛਲੇ ਸੈਸ਼ਨ ਆਰ ਉਸ ਸੇ ਪਹਿਲੇ ਅਕਤੂਬਰ ਸੈਸ਼ਨ ਮੇਂ ਜਿਨ ਸਵਾਲਾਂ ਕੇ ਜਵਾਬ ਇਸ ਬਿਨਾ ਪਰ ਨਹੀਂ ਦਿਏ ਗਏ ਥੇ ਕਿ information ਇਕੱਠੀ ਕੀ ਜਾ ਰਹੀ ਥੀ. ਉਨ ਕੇ ਬਾਰੇ ਮੈਂ ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਫ਼ੁਕਮ ਕੀਆ ਥਾ ਕਿ ਉਨ ਕੇ ਜਵਾਬ ਮੈਂਬਰ ਸਾਹਿਬਾਨ ਕੋ ਡਾਕ ਕੇ ਜ਼ਰੀਏ ਭੇਜ ਦਿਏ ਜਾਯੋਂ। ਲੇਕਿਨ ਇਨ ਸਵਾਲਾਂ ਕੇ ਜਵਾਬ ਅਜੀਂ ਤਕ ਨਹੀਂ ਭੇਜੇ ਗਏ ਹਾਲਾਂਕਿ ਉਸ ਵਕਤ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਨੇ ਮਾਨ ਲਿਆ ਥਾ ਕਿ ਇਨ ਕੇ ਜਵਾਬ in due course ਭੇਜ ਦਿਏ ਜਾਯੋਂਗੇ। ਲੋਕ ਸਭਾ ਕੇ ਸਪੀਕਰ ਕੇਂਦਰੀਯ ਵਿਭਾਗਤ ਕੋ ਕਈ ਬਾਰ ਇਸ ਸਿਲਸਿਲੇ ਮੇਂ warning ਦੇ ਚੁਕੇ ਹਨ।

ਅਧ്യਕਸ਼ ਸਹੀਦਯ : ਆਪ point of order raise ਕਰ ਰਹੇ ਹੋਂ ਯਾ ਤਕਰੀਰ ਕਰ ਰਹੇ ਹੋਂ ?

ਸ਼੍ਰੀ ਦੇਵ ਰਾਜ ਸੇਠੀ : ਮੈਂ ਆਪੋ point of order ਕੀ ਸਜ਼ਬੂਤੀ ਕੇ ਲਿਯੇ ਕੁਝ ਵਾਕਿਆਸ਼ਤ ਜਨਾਬ ਕੋ ਬਤਾ ਰਹਾ ਥਾ।

ਵਿਕਾਸ ਮੰਤਰੀ : ਜਦ House prorogue ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਸਭ ਮੈਂਬਰਾਂ ਦਾ notice lapse ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਸਰਦਾਰ ਚੰਨਣ ਸਿੰਘ ਧੂਤ : On a point of order, Sir. ਵਜ਼ੀਰ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਕਿਹਾ ਹੈ ਕਿ ਬੜੀ information ਇਕੱਠੀ ਕਰਨ ਦੀ ਲੋੜ ਹੈ। ਇਕ ਪਿੰਡ ਦਾ ਸਿਰਫ਼ ਵਾਕਿਆ ਹੈ—1950 ਦਾ—

ਅਧ്യਕਸ਼ ਸਹੀਦਯ : ਆਪ ਬੈਠ ਜਾਈਏ।

ਸਰਦਾਰ ਚੰਨਣ ਸਿੰਘ ਧੂਤ : ਸ਼੍ਰੀਮਾਨ ਜੀ, ਤੁਸੀਂ ਮੇਰੀ ਗਲ ਸੁਣ ਤਾਂ ਲੋ।

Mr. Speaker : The hon. Member may please resume his seat. This is no point of order. (Cries of order, order.)

ਸਰਦਾਰ ਚੰਨਣ ਸਿੰਘ ਧੂਤ : ਮੈਂ ਕਿਹੜੀ ਗਲਤ ਚੀਜ਼ ਕੀਤੀ ਹੈ ?

ਅਧ്യਕਸ਼ ਸਹੀਦਯ : Order, order. ਸਪੀਕਰ ਮੰਤਰੀਆਂ ਕੋ ਜਵਾਬ ਦੇਣੇ ਕੇ ਲਿਯੇ force ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਤਾ। ਯਹ ਉਨ ਕੀ ਸਰਜ਼ੀ ਹੈ ਕਿ ਕਿਸੀ ਸਵਾਲ ਕਾ ਜਵਾਬ ਕਿਸ ਵਕਤ ਦੇਂ।

ਪੰਡਿਤ ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਸ਼ਰਮਾ : On a point of order, Sir. ਜਬ ਮੰਤਰੀ ਕਿਸੀ ਸਵਾਲ ਕੇ ਜਵਾਬ ਦੇਣੇ ਕਾ ਵਾਧਦਾ ਕਰੋਂ ਆਰ ਉਸੇ ਪੁਰਾਨ ਕਰੋਂ ਤੋਂ ਇਸ ਮਾਮਲਾ ਮੇਂ Chair ਹਾਊਸ ਕੀ ਕਿਸ ਹਦ ਤਕ ਸਦਦ ਕਰ ਸਕਤੀ ਹੈ ? ਸਹੀਨੋਂ ਤਕ ਅਗਰ ਯਹ ਕਹਾ ਜਾਏ ਕਿ information collect ਕੀ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ, ਤੋਂ ਵਜ਼ੀਰੋਂ ਕੀ ਏਸੀ ਕਾਰਜਵਾਹਿਯੋਂ ਕੇ ਖ਼ਿਲਾਫ਼ ਆਪ ਕਯਾ ਕਰ ਸਕਤੇ ਹੋ ? ਮੈਂ ਇਸ ਮਾਮਲਾ ਪਰ ਆਪ ਕੀ ruling ਚਾਹੁਤਾ ਹੂੰ।

अध्यक्ष महोदय : जहाँ तक वायदा कर के सवालात के जवाब न देने का ताल्लुक है, मैं आप के point of order को appreciate करता हूँ । इस के मुताबिक मैं सोच रहा हूँ और इस सम्बन्ध में कोई procedure बनाने की तजवीज मेरे खेरेगीर है ।

सरदार चंनू सिंघ पट्ट : On a point of order, Sir. (Interruptions).

Minister for Development : Keep quiet now.

पंडित श्री राम शर्मा : मैं जनाब की इस बात पर ruling चाहता हूँ कि क्या सभा का कोई मैम्बर किसी और मैम्बर को 'keep quiet' कह सकता है ।

अध्यक्ष महोदय : मेरे लिये अब आप के points of order का जवाब देने का काम ही तो रह गया है । (हंसी) ।

पंडित श्री राम शर्मा : अगर कोई मैम्बर unparliamentary words का इस्तेमाल करे, तो क्या वे withdraw नहीं किये जाने चाहिये ?

अध्यक्ष महोदय : अगर आप चाहें मखाह interruptions करें, तो दूसरे भी कुछ न कुछ कह जाते हैं । इस लिये अगर आप किसी का कोई remark महीं सुनना चाहते, तो किसी को interrupt ही न किया करें ।

पंडित श्री राम शर्मा : मैं इस बात पर protest करता हूँ कि मेरे point of order raise करने को स्पीकर साहिब मदाखलत का नाम दे रहे हैं ।

अध्यक्ष महोदय : मैंने आप की तरफ reference नहीं किया था । मैंने तो कहा था कि कोई भी मैम्बर किसी और को interrupt न करे । आप हर बात को अपनी तरफ मनसूब कर लेते हैं ।

पंडित श्री राम शर्मा : I want to raise a point of order. I have a right to raise any point of order. इस House में अगर कोई मैम्बर दूसरे को 'keep quiet' कहे, तो क्या यह चीज unparliamentary नहीं है और withdraw नहीं की जानी चाहिये ?

(Mr. Speaker rose in his seat but Pandit Shri Ram Sharma kept standing.)

Mr. Speaker : Order, please sit down.

(Cries of sit down from Treasury Benches).

Pandit Shri Ram Sharma : I don't take orders from any Minister or any other member except the Speaker.

अध्यक्ष महोदय : मेरे ख्याल में चूंकि बाहर गर्मी ज्यादा है, इस लिये हाऊस में भी गर्मी पैदा हो रही है । पंडित जी ने जो कुछ कहा है मैं उसे protest के तौर पर नहीं ले रहा हूँ । मैं सिर्फ यही कहूंगा कि हाऊस में गर्मी पैदा करना कोई अच्छी बात नहीं ।

सरदार चंनू सिंघ पट्ट : On a point of information, Sir. उम्मी बिग है बि बेसी interruption नहीं होनी चाहीसी । जे बज्जीस साहिब साहू 'keep quiet' बिगि सबदे रन, उं बी असीं उंनुं हिय गल नही बिगि सबदे ।

अध्यक्ष महोदय : आप तशरीफ रखिये ।

TENANTS IN THE STATE

*2172. **Shri Wadhawa Ram** : Will the Minister for Development be pleased to state—

- (a) the total number of tenants of land-owners having holdings of 30 acres or less than 30 acres district-wise ;
- (b) the total area of land district-wise under the tenants referred to in part (a) above ?

Sardar Partap Singh Kairon :

	(a)	(b)
1. Hissar ..	18,616	389,486
2. Rohtak ..	23,073	128,567
3. Gurgaon ..	31,121	163,596
4. Karnal ..	4,169	20,869
5. Ambala ..	63,531	219,097
6. Simla ..	72	126
7. Kangra ..	1,77,093	255,773
8. Hoshiarpur ..	134,717	185,590
9. Jullundur ..	162,366	163,443
10. Ludhiana ..	29,375	73,952
11. Ferozepore ..	71,215	443,136
12. Amritsar ..	30,715	201,739
13. Gurdaspur ..	32,549	192,854

CONFIRMATION OF STAFF WORKING IN DEPUTY COMMISSIONERS' OFFICES

*2433. **Sardar Khem Singh** : Will the Minister for Development be pleased to state —

- (a) whether Government servants with 10 years' service at their credit in all the Deputy Commissioners' Offices in the State have been confirmed ; if not, the reasons therefor ;
- (b) the minimum period of service required in the offices of the Deputy Commissioners for confirmation ?

Sardar Partap Singh Kairon : The information is being collected and it will be supplied to the member.

TACCAVI LOANS TO SCHEDULED CASTES

***2435. Sardar Khem Singh :** Will the Minister for Development be pleased to state the number of persons in the State belonging to Scheduled Castes to whom Taccavi Loans have been granted by the Government during the period from 17th April, 1952 to March, 1953 ?

Sardar Partap Singh Kairon : 28,101.

DAMAGE CAUSED BY FLOODS IN RIVER JAMUNA

***2490. Sardar Bachan Singh :** Will the Minister for Development be pleased to state—

- (a) the total number of villages affected by floods in river Jamuna in District Karnal during the years 1951, 1952 and 1953; and
- (b) the extent of damage caused each year along with the action, if any, taken by the Government to protect these villages from floods in future?

Sardar Partap Singh Kairon : The information is given below.

(a) The total number of villages affected by the floods in river Jamuna in Karnal District during the years 1951, 1952 and 1953 is as under :—

<i>Year</i>	<i>Number of Villages</i>	
1951	..	101
1952	..	101
1953	..	74

(b) Damage caused during the years in question is as below :—

<i>Year</i>	<i>Rs</i>	<i>Acreage of damaged areas</i>
1951	.. 62,000	1,242 acres.
1952	.. 82,000	1,265 acres.
1953	.. 38,000	730 acres.

(c) Babail bund to protect 27 villages in Tahsil Panipat was built in the year 1953 by voluntary labour of villagers. A sum of Rs 14,600 was also distributed as seed taccavi to the affected cultivators during the year 1952. No relief was issued during the years 1951 and 1953 as the damage to the extent of Rs 62,000 and Rs 38,000 was spread over a number of villages and no case of relief was made out.

DAMAGE CAUSED BY FLOODS IN DISTRICT FEROZEPUR

***2491. Sardar Bachan Singh :** Will the Minister for Development be pleased to state whether it is a fact that floods have been destroying crops in ilaqa Bet of Tehsil Zira of District Ferozepur during the years 1947, 1948, 1950, 1951, 1952 and 1953; if so, the damage to crops done by the floods each year and the steps, if any, taken by the Government to prevent the recurring of such floods together with the relief, if any, given by the Government to the sufferers each year ?

Sardar Partap Singh Kairon : Yes. There was damage to crops in the years 1947 and 1950 due to floods.

	1947	1950
Damage to crops (Acres)	.. 13,010	19,738
Estimated loss in Maunds	.. 116,889	150,624
Relief by Government	.. Nil Gratuitous relief.	Rs 1,33,304 Taccavi loans Rs 9,49,800

Other steps taken by Government

A bund has been constructed which has minimized the further chances of damage by floods.

WASTE LANDS IN THE STATE

***2494. Shri Wadhawa Ram :** Will the Minister for Development be pleased to state :—

- the total area of waste land in acres in the State which the Government has so far given to the Landless Tenants for cultivation purposes ;
- the total area of such land, so far given to the landless tenants which belongs to (i) the landlords, and (ii) the Government, respectively ;
- the total amount so far collected by the Government on account of sale through auction of this waste land together with the amount which yet remains to be realized in instalments ;
- the area of waste land district-wise, owned by the Government or private persons which has not so far been given by either to any one else ;
- the number of persons out of the landless persons district-wise in the State who did not own any land during the current year, together with the number of persons who are unemployed and have not been able to acquire land even as tenants ?

Sardar Partap Singh Kairon :

- 46,627 acres.
- (i) 45,304 acres.
(ii) 1,323 acres.

[Sardar Partap Singh Kairon]

(c) (i) Rs 1,32,098-6-6

.. Amount collected.

(ii) Rs 1,41,074

.. Amount yet to be realized.

(d) and (e)

.. The statement giving the requisite information district-wise is enclosed.

STATEMENT

	AREA OF WASTE LAND WHICH HAS NOT SO FAR BEEN GIVEN TO ANY ONE ELSE		Number of landless persons	Number of unemployed landless persons
	Private land Acres	Government land Acres		
	1	2	3	4
Hissar ..	337,245	16	53	50
Rohtak	570	29,641	..
Gurgaon	10,817	18,058	33,421
Karnal ..	86,003	658	7,393	6,006
Ambala ..	31,733
Simla ..	63	36
Kangra ..	92,578	..	846	58,970
Hoshiarpur ..		Not available		
Jullundur ..	23,086	..	3,488	83,823
Ludhiana ..	37,737	2,311
Ferozepore ..	46,286		Not available	
Amritsar ..	39,940	..	47,978	40,579
Gurdaspur ..	1,486

ਸ਼੍ਰੀ ਵਧਾਵਾ ਰਾਮ : ਕੀ ਵਜ਼ੀਰ ਸਾਹਿਬ ਦਸਣ ਦੀ ਖੋਚਲ ਕਰਨਗੇ ਕਿ ਇਸ ਸਵਾਲ ਦਾ ਨੋਟਿਸ ਕਦੇ ਦਾ ਆਇਆ ਹੋਇਆ ਹੈ ?

Mr. Speaker : No, please. This is not a supplementary question.

RESTORATION OF TENANCIES

*2627. Shri Wadhawa Ram : Will the Minister for Development be pleased to state—

(a) the total number of tenancies district-wise in the State who applied for the restoration of their tenancies after the enforcement of the Punjab Security of Land Tenures Act, 1953 ;

- (b) the total number of tenants, district-wise, so far ejected by the landlords since August, 1947, in each year separately;
- (c) the total number of tenants district-wise who have actually been restored their lands so far after the enforcement of the Punjab Security of Land Tenures Act, 1953 ;
- (d) the total number of applications for the restoration of land so far rejected together with the number of applications still pending in each district ?

Sardar Partap Singh Kairon : The information is being collected and will be supplied to the Member as soon as possible.

GOVERNMENT CULTURABLE LAND

***2712. Sardar Harkishan Singh Surjit :** Will the Minister for Development be pleased to state—

- (a) the total area of Government culturable land auctioned during the years 1952 and 1953 district-wise in the State ;
- (b) the total number of persons who received such lands after auction district-wise in the State together with the number of Harijans amongst them ?

Sardar Partap Singh Kairon : A statement giving the requisite information is given below :--

	Gurdaspur	Amritsar	Kangra	Hoshiarpur	Jullundur	Ludhiana	Ferpozepore
(a) The total area of Government culturable land auctioned during the years 1952 and 1953 district-wise in the State.	During 1952 and 1953— 279 Kanals 5 Marlas	No Govern- ment land has been leased out in this dist- rict	During 1952 and 1953— 324 Kanals and 5 Marlas	No culturable Government land was auctioned during the year 1952 in this district but in 1953 159 Kanals 7 Marlas of land was auctioned for Rs 420 in favour of Shri Har- cham Singh, son of Shri Sadhu Singh, caste Saini of Chhaunni Kalan	During 1952— 213 Kanals and 3 Marlas During 1953— 213 Kanals and 3 Marlas	During 1952— 353 Acres During 1953— 343 Acres	During 1952- 53—1,324.73 Acres. During 1953- 54—1,054.73 Acres
(b) The total number of persons who received such lands after auc- tion district-wise in the State together with the number of Harijans amongst them.	Two persons but none of them was Harijan	Nil	5 persons but none of them was Harijan	One person but he was not Harijan	5 persons in 1952 and 6 persons in 1953. None of them was Harijan	1952— 73 Other 1 Harijan 1953—70 Other 1 Harijan	79 persons. None of them was Harijan.

Hissar	Rohtak	Gurgaon	Karnal	Ambala	Simla
(a) (i) During 1952-53— 945 Acres	During 1952— 1,400½ Acres	During 1952— 13.91 Acres	1952— 219 Acres	..	1 Bigha 17 Biswas.
(ii) During 1953-54— 991 Acres	During 1953— 1,049½ Acres	During 1953— ..	1953— 257 Acres	539 Acres of Govern- ment culturable land was given on lease.	..
(b) The total number of persons is 147 and the number of Hari- jans amongst them is 16	Total number of persons is 111 but out of them 7 are Harijans	One person but he was not Harijan	Total 52 persons but none of them is Harijan	60 persons out of them 4 were Harijans	One person but he was not Harijan

EJECTMENT OF TENANTS IN CERTAIN VILLAGES OF GURDASPUR DISTRICT

***2805. Sardar Achhar Singh Chhina :** Will the Minister for Development be pleased to state—

- (a) the total number of ejectment notices served on tenants by the landlords during the year 1953 in the villages Narot Jaimal Singh, Kathlor, Tibri and Kiri Khurd of Tehsil Pathankot, District Gurdaspur ;
- (b) whether it is a fact that the tenants in these villages have already been declared to be ejected by the Revenue Officer and the Deputy Commissioner of the said district ; if so, the reasons therefor ?

Sardar Partap Singh Kairon :—

(a) <i>Name of village</i>	<i>Number of ejectment notices served on tenants</i>
Narot Jaimal Singh ..	52
Kathlor ..	4
Kiri Khurd ..	16
Tibri (Tahsil Gurdaspur) ..	2

(b) No.

ਸਰਦਾਰ ਅੱਛਰ ਸਿੰਘ ਛੀਨਾ : ਕੀ ਵਜ਼ੀਰ ਸਾਹਿਬ ਖੋਚਲ ਕਰ ਕੇ ਦਸਣਗੇ ਕਿ ਕਢੇ ਹੋਏ ਮੁਜ਼ਾਰਿਆਂ ਨੂੰ ਫਿਰ ਵਸਾਉਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੈ ਕਿ ਨਹੀਂ ? ✓

ਮੰਤਰੀ : ਇਹ ਸਵਾਲ ਤਾਂ ਪੁਛਿਆ ਹੀ ਨਹੀਂ ਗਿਆ । ਜੇ ਕਰ ਮਾਨਯੋਗ ਮੈਂਬਰ ਇਸ ਦਾ ਨੋਟਿਸ ਦੇਣ ਤਾਂ ਇਸ ਦਾ ਜਵਾਬ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਦੇ ਦਿਤਾ ਜਾਵੇਗਾ ।

CASES AGAINST TENANTS AND KISAN WORKERS IN DISTRICT GURDASPUR

***2806. Sardar Achhar Singh Chhina :** Will the Minister for Development be pleased to state—

- (a) the total number of cases against tenants and Kisan workers tried in the court of Revenue Assistant, Gurdaspur, during the years 1952 and 1953 ;
- (b) the number of cases decided in favour of the tenants ;
- (c) the number of cases still pending and the period for which they have remained pending ?

Sardar Partap Singh Kairon : (a) 35.

(b) 14.

(c) Only one case is pending since 19th November, 1953.

CASES OF NON-PAYMENT OF RENT IN DISTRICT GURDASPUR

***2807. Sardar Achhar Singh Chhina :** Will the Minister for Development be pleased to state —

- (a) the total number of cases instituted by the landlords in courts in district Gurdaspur during the year 1953 regarding non-payment of rent by the tenants ;
- (b) whether it is a fact that receivers have been appointed in cases of non-payment of rent who have taken over possession of all the crops in such cases, even though the value of the crops is made which is more than what is claimed by more than the claim of the landlords ; if so, the reasons therefor and the action proposed to be taken by the Government in the matter ?

Sardar Partap Singh Kairon : (a) 277.

(b) Receivers were appointed in ten cases only to take possession of the sufficient produce of a particular harvest to satisfy the decree prayed for. The value of the crop in excess of the value of the decree was refundable.

Government regret they cannot intervene in such *sub judice* cases.

ਸਰਦਾਰ ਚੰਨਣ ਸਿੰਘ ਧੂਤ : ਕੀ ਵਜ਼ੀਰ ਸਾਹਿਬ ਵਸਣ ਦੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਨਗੇ ਕਿ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਕੇਸਾਂ (cases) ਵਿਚ ਕਬਜ਼ਾ Receivers ਨੂੰ ਦਿਤਾ ਗਿਆ ਹੈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਮੁਜ਼ਾਇਆਂ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਕੇਸ (case) ਅਦਾਲਤਾਂ ਵਿਚ ਭੀ ਚਲਦੇ ਰਹੇ ਹਨ ?

ਮੰਤ੍ਰੀ : ਇਹ supplementary question arise ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ।

ਸਰਦਾਰ ਚੰਨਣ ਸਿੰਘ ਧੂਤ : ਕੀ ਇਹ ਹਕੀਕਤ ਨਹੀਂ ਹੈ ਕਿ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਅਫਸਰਾਂ ਨੇ Receivers ਮੁਕਰਰ ਕੀਤੇ ਹਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਕੋਲ ਹੀ ਬੇਦਖਲੀ ਦੇ ਕੇਸ ਵੀ ਆਉਂਦੇ ਰਹੇ ਹਨ ?

Minister : Does this supplementary question arise, Sir?

Mr. Speaker : No please. It does not arise.

WILD BIRDS AND ANIMALS

***3465. Shri Ram Chandra Comrade :** Will the Minister for Development be pleased to state whether there are any special varieties of wild birds and animals in the Punjab Forests ; if so, the steps taken by the Government to prevent their extinction ?

Sardar Partap Singh Kairon : The information is being collected and will be supplied to the Member as soon as possible.

CLOSING DOWN OF CANAL PASSING THROUGH VILLAGES KANAHLI TO ROHAD, DISTRICT ROHTAK

***3496. Pandit Shri Ram Sharma :** Will the Minister for Irrigation be pleased to state whether it is a fact that the canal passing through villages Kanahli to Rohad, district Rohtak, is being closed and in its place canal water is proposed to be diverted through newly-dug canal from Bhalaut Head to Rohad *via* Rurki Pakasma ; if so, the reasons therefor and the advantage for this change along with the cost of new construction ?

Chaudhri Lahri Singh : There is no such proposal.

ROTATION OF WATER FLOW IN CANALS OF HARYANA DIVISION

***3497. Pandit Shri Ram Sharma :** Will the Minister for Irrigation be pleased to state—

- (a) the rotation of water flow in the canals of the Haryana Division during the last winter before the rains ;
- (b) the quantity of water proposed to be increased in the Bhalaut Distributary after the Beri and Jhajjar Canals are made perennial ;
- (c) the names of extensions made on the two canals referred to above ?

Chaudhri Lahri Singh : (a) Rotation of flow of water, i.e., full supply for 8 days in 24 days was the same as on other channels of Western Jumna Canal.

(b) 360 cusecs during Rabi and none in Kharif.

(c) Extensions made are :—

- (i) Extension of Jasrana Minor.
- (ii) Bakra Extension.
- (iii) Jehangirpur Minor.
- (iv) Mattenhale Minor.
- (v) Surkhpur Minor.

पंडित श्री राम शर्मा : क्या मंत्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि क्या पानी की जो मात्रा बढ़ाई गई है काफी रहेगी ? *

Minister : Does this supplementary arise, Sir?

पंडित श्री राम शर्मा : जनाब मेरा मतलब यह है कि Beri और Jhajjar canals को perennial बनाने के बारे में जो मिकदार पानी की Bhalaut Distributary में बढ़ाई गई है क्या गवर्नमेंट ने इस बारे में पूरी तसल्ली कर ली है कि पानी सब को पूरा मिलेगा ? और ऐसी बात तो नहीं होगी कि किसी को कम मिले और किसी को ज्यादा मिले ? *

Minister : Does this supplementary arise, Sir? The original question reads :—

‘the quantity of water proposed to be increased in the Bhalaut Distributary after the Beri and Jhajjar Canals are made perennial’.

My answer is that : 360 cusecs during Rabi and none in Kharif. I have nothing more to say.

पंडित श्री राम शर्मा : यदि गवर्नमेंट के पास इस का जवाब तैयार है तो वजीर साहिब कृपया बतायेंगे कि extension के लिये जो पानी बढ़ाया गया है क्या वह काफी समझा गया है । और यदि यह जवाब तैयार नहीं तो हम इस बारे में further notice दे सकें । *

ਮੰਤਰੀ : ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ original question ਵਿਚ 'ਕਾਫੀ' ਨਹੀਂ ਪੁਛਿਆ ਬਲਕਿ extension ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਪੁਛਿਆ ਹੈ। ਬਾਕੀ ਦੀ information ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਮਹਿਕਮਾ ਨਹਿਰਾਂ ਦੇ ਵਜ਼ੀਰ ਸਾਹਿਬ ਆਕੇ ਦਸਣਗੇ।

SALE OF EVACUEE RESERVE LAND

***2013. Sardar Chanan Singh Dhut :** Will the Minister for Finance be pleased to state—

- (a) whether it is a fact that the Government has sold or intends to sell and allot the Evacuee Reserve Land with the Government ;
- (b) whether it is a fact that the tenants have so far been cultivating the Government Reserve Lands on "CHAKOTA " ; if so, the number of tenants thus cultivating during the years 1949, 1950, 1951, 1952 and 1953, respectively;
- (c) whether it is a fact that after the sale or allotment of the Government Reserve Land, the tenants who have been cultivating these lands are liable to be ejected ; if so, the total area of the land already disposed of by the Government and the number of tenants ejected so far ;
- (d) the action, if any, Government proposes to take to protect the tenants cultivating the Government Reserve Lands ?

Sardar Ujjal Singh : (a) Government have neither sold nor intends selling any Evacuee Reserve Land. As regards allotment of such land, Government reserved some land for the Jail, Agricultural and Forest Departments for extension, seed farms and nursery plantation respectively, which will be allotted to displaced land-holders as and when released by the Departments concerned.

(b) Some land in Ludhiana, Ferozepore and Hissar Districts had been and is being cultivated by tenants on " CHAKOTA ". A list showing their year-wise number is given below.

(c) Yes. After such allotment, the tenants who are cultivating these lands will be liable to ejectment.

Only 146 acres of such land has been disposed of in Hissar District and 15 tenants were ejected.

(d) So far the above 15 ejected tenants have since been absorbed elsewhere. As regards the tenants who are cultivating these lands and are liable to ejectment, Government will endeavour to allow them to continue cultivating these lands under the new allottees or they will be absorbed against some other land.

Year-wise List of tenants who have been cultivating Government Reserved Lands on "CHAKOTA"

District	YEAR-WISE NUMBER OF TENANTS				
	1949	1950	1951	1952	1953
Ludhiana	12
Ferozepore	..	8	3	7	5
Hissar	..	15	15

ਸਰਦਾਰ ਚੰਨਣ ਸਿੰਘ ਧੂਤ : ਕੀ ਵਜ਼ੀਰ ਸਾਹਿਬ ਇਹ ਦਸਣ ਦੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਨਗੇ ਕਿ ਜਿਹੜੀ ਜ਼ਮੀਨ ਸਰਕਾਰ ਨੇ (reserve) ਰੱਖੀ ਹੋਈ ਹੈ ਉਸ ਨੂੰ ਵਾਹੁਣ ਵਾਲੇ ਮੁਜ਼ਾਹਰ ਪੁਰਾਣੇ ਸਨ ਕਿ ਨਵੇਂ ?

ਮੰਤ੍ਰੀ : ਮੈਂ ਇਸ ਸਵਾਲ ਦਾ ਜਵਾਬ off hand ਤਾਂ ਨਹੀਂ ਦੇ ਸਕਦਾ। ਜੇਕਰ hon. member ਇਸ ਦਾ ਨੋਟਿਸ ਦੇਣ ਤਾਂ ਜਵਾਬ ਦਿਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ।

ਸ਼੍ਰੀ ਸ਼੍ਰੀ ਚੰਦ : ਕਥਾ ਵਜ਼ੀਰ ਸਾਹਿਬ ਬਤਾਨੇ ਦੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰੋਗੇ ਕਿ ਜੋ ਜ਼ਮੀਨ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਕੇਂਦਰੀ ਸਰਕਾਰ ਦੇ evacuee property ਮੈਂਬਰਾਂ ਲਈ ਉਸ ਦੀ ਕੋਈ ਕੀਮਤ ਵੀ ਹੈ ?

ਮੰਤ੍ਰੀ : ਸਾਡੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਅਜਿਹੀ ਕੋਈ ਜ਼ਮੀਨ ਕੇਂਦਰੀ ਸਰਕਾਰ ਕੋਲੋਂ ਨਹੀਂ ਲਈ ਉਹ ਤਾਂ ਅਸਾਂ ਮਹਿਕਮਾ ਜੰਗਲਾਤ ਅਤੇ ਜ਼ਰਾਇਤ ਕੋਲੋਂ ਆਰਜ਼ੀ ਤੌਰ ਉਪਰ ਲਈ ਹੈ।

ਸ਼੍ਰੀ ਸ਼੍ਰੀ ਚੰਦ : ਕਥਾ ਕੋਈ ਕਿਰਾਏ ਹਮਾਰੀ ਸਰਕਾਰ Government of India ਕੋ ਇਸ ਜ਼ਮੀਨ ਦੇ ਲਿਯੇ ਦੇ ਰਹੀ ਹੈ ?

ਮੰਤ੍ਰੀ : ਇਹ ਤਾਂ ਸਵਾਲ ਹੀ ਨਹੀਂ ਪੈਂਦਾ ਹੁੰਦਾ। ਅਸਾਂ ਜ਼ਮੀਨ ਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਕੋਲੋਂ ਲਈ ਹੀ ਨਹੀਂ ਅਤੇ ਕਿਰਾਇਆ ਕਾਹਦਾ ਦੇਣਾ ਹੈ ?

ਸਰਦਾਰ ਚੰਨਣ ਸਿੰਘ ਧੂਤ : ਕੀ ਵਜ਼ੀਰ ਸਾਹਿਬ ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਕੇ ਦਸਣਗੇ ਕਿ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਲੋਕਾਂ ਕੋਲ ਇਹ ਜ਼ਮੀਨਾਂ ਹਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਇਹ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਦਿਤੀਆਂ ਹਨ ਜਾਂ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਆਪ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰਕੇ ਲਈਆਂ ਹਨ ?

ਮੰਤ੍ਰੀ : ਇਹ ਤਾਂ ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਖੁਦ ਇਹ ਜ਼ਮੀਨਾਂ ਲਈਆਂ ਹਨ ਜਾਂ ਕਿ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਦਿਤੀਆਂ ਹਨ। ਲੇਕਿਨ ਇਹ ਸਾਨੂੰ ਪਤਾ ਹੈ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਜ਼ਮੀਨਾਂ ਦਿਤੀਆਂ ਜਾਂ ਚੁਕੀਆਂ ਹਨ।

ਸ਼੍ਰੀ ਫੇਕ ਰਾਜ ਸੇਠੀ : ਸੈਂਕੜੀਂ ਏਕੜ ਜ਼ਮੀਨ seed farming ਦੇ ਲਿਯੇ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਦੇ ਹੇਠ ਹੈ। ਕਥਾ ਉਸ ਦੇ ਲਿਯੇ ਕੋਈ rent ਜਾਂ allowance money ਜਮਾ ਕਰਾਇਆ ਗਿਆ ਹੈ ਜਾਂ ਨਹੀਂ ?

Mr. Speaker : It does not arise out of the main question.

ਚੀਫ਼ ਪਾਲਿਟੀਮੈਂਟਰੀ ਸੈਕਰਟਰੀ : ਕਧਾ ਵਜ਼ੀਰ ਸਾਹਿਬ ਕਤਾਧੌਗੇ ਕਿ ਆਧਾ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਨੇ ਧਹ ਫ਼ੈਸਲਾ ਕੀਯਾ ਫ਼ੁਆ ਹੈ ਕਿ ਜਹਾਂ ਕਹੀਂ ਆੀ waste land ਹੈ ਵਹਾਂ ਸੁਯਾਰੀਂ ਕੀ ਜਲਦੀ ਸੇ ਜਲਦੀ ਕਸਾਧਾ ਜਾਏ ਆਰ ਇਸ ਤਰਹ ਉਨ੍ਹੋਂ ਕਹੀਂ ਆੀ ਕਸੀਨ ਕੀ ਨ ਰਹਨੇ ਦਿਯਾ ਜਾਏ ? ੲ

ਮੰਤਰੀ : ਇਹ ਠੀਕ ਹੈ ਕਿ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਨੇ ਇਸ ਗਲ ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਕੀਤਾ ਹੈ ਕਿ ਜਿਹੜੇ ਮੁਜ਼ਾਰੇ ਆਪਣੀਆਂ ਜ਼ਮੀਨਾਂ ਤੋਂ ਕੱਢੇ ਗਏ ਹੋਣਗੇ, ਹੱਤਲਵਸਾ ਇਹ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇਗੀ ਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਕਿਸੇ ਨਾਂ ਕਿਸੇ ਥਾਂ ਜ਼ਮੀਨ ਦਿੱਤੀ ਜਾਵੇ ।

ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਚੰਦਰ ਕਾਸਰੇਡ : On a point of order, Sir. ਮੈਂ ਧਹ ਜਾਨਨਾ ਚਾਹੁਨਾ ਫ਼ੁੰ ਕਿ ਕਧਾ ਚੀਫ਼ ਪਾਲਿਟੀਮੈਂਟਰੀ ਸੈਕਰਟਰੀ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਸੇ ਸਵਾਲਾਤ ਕੀ ਸੰਬੰਧ ਮੈਂ ਕੀਏ supplementary questions ਪੁੱਛ ਸਕਤੇ ਫ਼ੁੰ ? ੲ

ਮੰਤਰੀ : ਜੀ ਹਾਂ ।

ਸ਼੍ਰੀ ਵਧਾਵਾ ਰਾਮ : ਵਜ਼ੀਰ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਦਸਿਆ ਹੈ ਕਿ ਜਿਹੜੇ ਮੁਜ਼ਾਰੇ ਕਿਸੇ ਜਗਹ ਤੋਂ ਕੱਢੇ ਜਾਨਗੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਮੁੜ ਕਿਸੇ ਦੂਜੇ ਥਾਂ ਜ਼ਮੀਨ ਦਿੱਤੀ ਜਾਵੇਗੀ । ਕੀਹ ਮੈਂ ਵਜ਼ੀਰ ਸਾਹਿਬ ਕੋਲੋਂ ਪੁੱਛ ਸਕਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਫ਼ਰਜ਼ ਕੀਤਾ ਕਿ ਫ਼ਾਜ਼ਿਲਕਾ ਤੋਂ ਕਿਸੇ ਮੁਜ਼ਾਰੇ ਨੂੰ ਬੇਦਖਲ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਕੀਹ ਉਸ ਨੂੰ ਉਥੇ ਹੀ ਨੜੇ ਤੜੇ ਕੋਈ ਜ਼ਮੀਨ ਦਿੱਤੀ ਜਾਵੇਗੀ ਜਾਂ ਕਿਸੇ ਹੋਰ ਜ਼ਿਲੇ ਵਿਚ ? ਜੇਕਰ ਕਿਸੇ ਹੋਰ ਜ਼ਿਲੇ ਵਿਚ ਉਸਨੂੰ ਜ਼ਮੀਨ ਦਿੱਤੀ ਗਈ ਤਾਂ ਉਸ ਹਾਲਤ ਵਿਚ ਉਸ ਦੇ ਆਵਾ ਜਾਈ ਤੇ ਜਿਹੜਾ ਖਰਚ ਹੋਵੇਗਾ ਉਹ ਕੌਣ ਬਰਦਾਸ਼ਤ ਕਰੇਗਾ ? ੲ

ਮੰਤਰੀ : ਮੈਂ ਫ਼ਰਜ਼ੀ ਸਵਾਲ ਦਾ ਜਵਾਬ ਨਹੀਂ ਦੇ ਸਕਦਾ । ਫੇਰ ਇਹ ਇਕ ਜ਼ਿਲੇ ਦਾ ਸਵਾਲ ਨਹੀਂ ਸਾਰੇ ਸੂਬੇ ਦਾ ਸਵਾਲ ਹੈ । ਅਸੀਂ ਇਹ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰ ਰਹੇ ਹਾਂ ਕਿ ਜਿੱਥੇ ਵੀ ਕੀਧਰੇ ਜ਼ਮੀਨ ਹੋਵੇ ਉਥੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਮੁੜ ਵਸਾਇਆ ਜਾਵੇ । ਅੱਗੇ ਵੀ ਅਸੀਂ ਤਕਰੀਬਨ ੫੦,੦੦੦ ਏਕੜ ਜ਼ਮੀਨ ਮੁਖਤਲਿਫ਼ ਜ਼ਿਲਿਆਂ ਵਿਚ ਉਨ੍ਹਾਂ ਮੁਜ਼ਾਰਿਆਂ ਨੂੰ ਦੇ ਚੁਕੇ ਹਾਂ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਪਾਸ ਕੋਈ ਜ਼ਮੀਨ ਨਹੀਂ ਸੀ ।

ਸ਼੍ਰੀ ਵਧਾਵਾ ਰਾਮ : ਮੈਂ ਤੇ ਇਹ ਪੁੱਛਨਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਕਰਨਾਲ ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ ਕਰਨਾਲ ਵਿਚ ਹੀ ਜ਼ਮੀਨ ਦਿੱਤੀ ਜਾਵੇਗੀ ਜਾਂ

ਮੰਤਰੀ : ਠੀਕ ਹੈ, ਮੈਂ ਤੁਹਾਡਾ ਸਵਾਲ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਮਝ ਗਿਆ ਹਾਂ । ਇਹ ਸਵਾਲ ਸਿਰਫ਼ ਕਰਨਾਲ ਦਾ ਹੀ ਨਹੀਂ, ਸਵਾਲ ਬਹੁਤ ਸਾਰਿਆਂ ਬਾਕੀ ਜ਼ਿਲਿਆਂ ਦਾ ਵੀ ਹੈ । ਮੈਂ ਅੱਗੇ ਵੀ ਇਹ ਅਰਜ਼ ਕਰ ਚੁਕਾ ਹਾਂ ਕਿ ਬਹੁਤ ਸਾਰੀ ਜ਼ਮੀਨ—੫੦,੦੦੦ ਏਕੜ ਦੇ ਲਗਭਗ—ਅੱਗੇ ਵੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਮੁਜ਼ਾਰਿਆਂ ਨੂੰ ਦਿੱਤੀ ਜਾ ਚੁਕੀ ਹੈ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਪਾਸ ਕੋਈ ਜ਼ਮੀਨ ਨਹੀਂ ਸੀ । ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਜਿਹੜੀ waste land ਹੈ ਉਹ ਵੀ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਦਿੱਤੀ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ । ਇਸ ਲਈ position ਹੁਨ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਜੇ ਉਸ ਜ਼ਿਲੇ ਵਿਚ ਜ਼ਮੀਨ available ਨਾ ਹੋਵੇ ਜਿਸ ਵਿਚ ਕਿ ਉਹ ਖਾਸ ਮੁਜ਼ਾਰਾ ਰਹਿ ਰਿਹਾ ਸੀ ਤਾਂ ਉਸ ਹਾਲਤ ਵਿਚ ਉਸ ਨੂੰ ਕਿਸੇ ਦੂਜੇ ਜ਼ਿਲੇ ਵਿਚ ਜ਼ਮੀਨ ਦਿੱਤੀ ਜਾਵੇਗੀ ।

ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਚੰਦਰ ਕਾਸਰੇਡ : ਜੀ ਜ਼ਮੀਨ ਆਕ ਤਕ ਦੀ ਗਈ ਹੈ, ਕਧਾ ਮੈਂ ਪੁੱਛ ਸਕਤਾ ਫ਼ੁੰ ਕਿ ਕਹ ਕਿਤਨੇ ਆਰਸੇ ਕੀ ਲਿਏ ਦੀ ਗਈ ਹੈ ? ੲ

ਮੰਤਰੀ : ਮੈਂ ਇਹ ਠੀਕ ਨਹੀਂ ਕਹਿ ਸਕਦਾ । ਪਰ ਖਿਆਲ ਹੈ ਕਿ ਪੰਜ ਸਾਲਾਂ ਤੋਂ ਲੈਕੇ ੧੫ ਸਾਲਾਂ ਤਕ ਪਏ ਪੁਰ ਦਿੱਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ।

ਪੰਡਿਤ ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਸ਼ਰਮਾ : ਵਜ਼ੀਰ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਫਰਮਾਇਆ ਹੈ ਕਿ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਯਹ ਫ਼ੈਸਲਾ ਕਰ ਚੁਕੀ ਹੈ ਕਿ ਜਿਨ ਸੁਝਾਰੀਆਂ ਨੂੰ ਬੇਦਖਲ ਕੀਤਾ ਜਾਏਗਾ ਉਨ੍ਹਾਂ ਅਗਰ ਏਕ ਜ਼ਿਲਾ ਮੇਂ ਨਹੀਂ ਤੋ ਦੂਸਰੇ ਜ਼ਿਲਾ ਮੇਂ ਭਰਾ ਦੋਬਾਰਾ ਜ਼ਮੀਨ ਦੀ ਜਾਏਗੀ । ਕਥਾ ਮੈਂ ਜਾਨ ਸਕਤਾ ਹੂ ਕਿ ਆਯਾ ਇਸ ਸਕੀਮ ਪਰ ਅਮਲ ਹੋਨਾ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋ ਗਯਾ ਹੈ ? ਕਥਾ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਨੇ ਕਿਸੀ ਨੂੰ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕਰਵਾਇਆ ਹੈ ?

ਮੰਤਰੀ : ਮੈਂ ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ ਇਹ ਦਸ ਚੁਕਿਆ ਹਾਂ ਕਿ ਜਿਹੜੀ ਤਕਰੀਬਨ 50,000 ਏਕੜ unallotted evacuee land ਸੀ ਉਹ ਉਨ੍ਹਾਂ ਮੁਜ਼ਾਰਿਆਂ ਨੂੰ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਕਿ ਪਹਿਲੀ ਥਾਂ ਤੋਂ ਬੇਦਖਲ ਕੀਤਾ ਜਾ ਚੁਕਿਆ ਹੈ, allot ਕਰ ਦਿੱਤੀ ਗਈ ਹੈ । ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਹੋਰ ਵੀ ਜਿਹੜੀ ਜ਼ਮੀਨ ਸਾਡੇ ਕੋਲ ਹੋਵੇਗੀ—ਨਿਕਾਸੀ ਜਾਂ ਹੋਰ ਕਿਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ—ਉਸ ਨੂੰ ਵੀ ਅਸੀਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਦੇਨ ਲਈ ਗੋਰ ਕਰਾਂਗੇ ।

ਅਧਯਕਸ਼ ਸਹੋਦਯ : ਮਾਨਨੀਯ ਕਾਮਰੇਡ ਰਾਮ ਚੰਦਰ ਜੀ ਨੇ ਅਜ਼ੀ ਅਜ਼ੀ ਏਕ ਪ੍ਰਾਇੰਟ ਆਫ ਆਰਡਰ (point of order) ਉਠਾਇਆ ਥਾ । ਕਥਾ ਵਹ ਮੋਹਰਬਾਨੀ ਕਰ ਕੇ ਉਸੇ ਦੋਹਰਾਏਂਗੇ ?

ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਚੰਦਰ ਕਾਮਰੇਡ : ਮੈਨੇ ਯਹੀ ਪੁੱਛਾ ਥਾ ਕਿ ਆਯਾ ਚੀਫ ਪਾਲਿਯਾਮੈਂਟਰੀ ਸੈਕਟਰੀ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਸੇ ਸਵਾਲਾਤ ਪਰ ਕੋਈ supplementary information ਦਰਿਆਫਤ ਕਰ ਸਕਤੇ ਹੈਂ ? ਮੇਰੇ ਕਹਨੇ ਕਾ ਮਤਲਬ ਯਹ ਹੈ ਕਿ ਆਯਾ ਚੀਫ ਪਾਲਿਯਾਮੈਂਟਰੀ ਸੈਕਟਰੀ ਜੋ ਹਾਊਸ ਮੇਂ ਸਰਕਾਰ ਦੀ ਆਰ ਸੇ ਸਵਾਲਾਤ ਕਾ ਤਰਕ ਦੇਤੇ ਹੈਂ ਕਥਾ ਉਨ੍ਹੇਂ ਯਹ ਹਕ ਹਾਮਿਲ ਹੈ ਕਿ ਵਹ ਇਸ ਹਾਊਸ ਮੇਂ ਸੇ supplementary questions ਕਰੇਂ ਆਰ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸੇ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਸੇ ਕੋਈ information ਦਰਿਆਫਤ ਕਰੇਂ ?

ਅਧਯਕਸ਼ ਸਹੋਦਯ : ਸਵਾਲ ਯਹ ਹੈ ਕਿ ਆਯਾ ਚੀਫ ਪਾਲਿਯਾਮੈਂਟਰੀ ਸੈਕਟਰੀ floor of the House ਪਰ ਕੋਈ ਸਵਾਲ ਪੁੱਛ ਸਕਤੇ ਹੈਂ ਯਾ ਨਹੀਂ ? ਚੂਕਿ ਵਹ ਇਸ ਹਾਊਸ ਮੇਂ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਕੇ ਖ਼ਾਸ ਰੁਕਨ ਹੈਂ ਆਰ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਦੀ ਤਰਫ਼ ਸੇ ਕੋਈ ਮਾਮਲੇ ਪਰ ਖੁਦ House ਕੋ information supply ਕਰਤੇ ਹੈਂ ਇਸ ਲਿਯੇ ਵਹ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਵਾਲਾਤ ਨਹੀ ਪੁੱਛ ਸਕਤੇ । ਯਹੀ ਮੇਰੀ ਇਸ ਪ੍ਰਾਇੰਟ (point) ਪਰ ਰੁਲਿਗ ਹੈ । (Cheers)

ਚੀਫ ਪਾਲਿਯਾਮੈਂਟਰੀ ਸੈਕਟਰੀ : ਗੁਸਤਾਖੀ ਮਯਾਫ਼ । ਕਥਾ ਮੈਂ ਜਾਨ ਸਕਤਾ ਹੂ ਕਿ ਕੌਨ ਸੇ ਰੁਲ ਕੇ ਮਾਤਹਨ ਆਪਨੇ ਯਹ ਰੁਲਿਗ ਦੀ ਹੈ ? ਚੀਫ ਪਾਲਿਯਾਮੈਂਟਰੀ ਸੈਕਟਰੀ ਆਰ ਚੀਫ ਵਿਪ (Chief Whip) ਕਾ ਯਹ ਹਕ ਹੈ ਕਿ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਦੀ ਪਾਲਿਸੀ ਕੋ ਵਾਜ਼ੋਯਾ ਕਰਨੇ ਕੇ ਲਿਯੇ ਵਜ਼ੀਰੋਂ ਸੇ ਸਵਾਲਾਤ ਪੁੱਛ ਸਕੇ ।

ਅਧਯਕਸ਼ ਸਹੋਦਯ : ਅਗਰ ਆਪ ਵਾਜ਼ਿਯਾ ਤੌਰ ਪਰ ਰੁਲਿਗ ਚਾਹਤੇ ਹੈਂ ਤੋ ਮੈਂ ਕਲ ਸੁਬਹ ਬਤਾ ਦੂੰਗਾ । ਲੇਕਿਨ ਵੈਸੇ ਭੀ advisable ਯਹੀ ਹੈ ਕਿ ਖੁਦ ਸਵਾਲਾਤ ਪੁੱਛਨੇ ਦੀ ਬਜਾਏ ਚੀਫ ਵਿਪ ਕਿਸੀ ਦੂਸਰੇ ਮੈਂਬਰ ਸੇ ਵਹ ਸਵਾਲ ਕਰਾ ਦਿਯਾ ਕਰੇਂ । ਖੁਦ ਨ ਕਰੇਂ ।

ALLOTMENT OF HOUSES TO GOVERNMENT SERVANTS

***2434. Sardar Khem Singh :** Will the Minister for Finance be pleased to state—

- (a) the number of applications received by the Government for allotment of houses in urban areas from Government servants during the period from 1st April, 1952 to 31st March, 1953, together with the number accepted and the number rejected ;

[Sardar Khem Singh]

(b) in the case of those applications which were rejected, the grounds for rejection ;

(c) the number of persons belonging to Scheduled Castes ejected from evacuee houses in rural areas during the period from 7th April, 1952 to March, 1953, together with the grounds on which their ejections were effected ?

Sardar Ujjal Singh : (a) 5,192. Out of these only 1,870 were accepted and the remaining 3,322 were rejected.

(b) (i) There were more than one applicants for a single unit in many cases. Applications were decided on merits and the cases of less deserving applicants were rejected.

(ii) Applications of Government servants for allotment of houses previously allotted to non-Government servants were also generally rejected, as Government servants were entitled to allotment of only such houses as were occupied by Government servants.

(c) 114. These persons were evicted as they were in unauthorised possession of evacuee property or were in possession of houses belonging to evacuee land-owners and as such were to be allotted to the displaced land-owners.

ਸ਼੍ਰੀ ਵਧਾਵਾ ਰਾਮ : ਕੀ ਮਿਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਦਸਨਗੇ ਕਿ ਮਾਲਕਾਂ ਅਤੇ ਗ਼ੈਰ ਮਾਲਕਾਂ ਦੇ ਮਕਾਨਾਂ ਦੀ ਕੀ ਪਛਾਣ ਹੈ ?

ਮੰਤ੍ਰੀ : ਮੇਰੇ ਦੋਸਤ ਪਟਵਾਰੀ ਰਹੇ ਹਨ—ਉਹ ਆਪਣੇ ਜ਼ਮਾਨੇ ਦੇ ਚੰਗੇ ਮੱਠੇ ਹੋਏ ਪਟਵਾਰੀ ਸਮਝੇ ਜਾਂਦੇ ਸਨ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਪਤਾ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਕਿ ਪਿੰਡਾਂ ਵਿਚ ਹਰ ਇਕ ਆਦਮੀ ਨੂੰ ਪਤਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਮਕਾਨ ਮਾਲਿਕ ਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਇਹ ਗ਼ੈਰ-ਮਾਲਿਕ ਦਾ। ਕੱਮੀਆਂ ਦੇ ਮਕਾਨ ਮਾਲਕਾਂ ਦੇ ਮਕਾਨਾਂ ਨਾਲੋਂ ਅਲਹਿਦਾ ਹੁੰਦੇ ਹਨ।

ਸ਼੍ਰੀ ਅੰਗਦ : ਕਥਾ ਧਰੁ ਸਤ੍ਯ ਹੈ ਕਿ ਜੋ ਗ਼ੈਰ-ਮਾਲਕਾਨ ਕੀ ਯੁਸ਼ੀਨ ਹੈ ਕਹੁ ਮਾਲਕਾਨ ਕੀ ਲਿਖ ਦੀ ਗਈ ਹੈ ?

ਮੰਤ੍ਰੀ : ਇਹ ਬਿਲਕੁਲ ਫ਼ਰਜ਼ੀ ਗਲ ਹੈ। ਇਸ ਗਲ ਵਿਚ ਸਚਾਈ ਨਹੀਂ।

ਸਰਦਾਰ ਪੂਰਨ ਸਿੰਘ : ਕੀਹ ਕੱਮੀਆਂ ਦੀ ਜ਼ਮੀਨ ਜ਼ਮੀਂਦਾਰਾਂ ਨੂੰ ਅਲਾਟ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ ?

Mr. Speaker : This question does not arise.

ਸਰਦਾਰ ਚੰਨਣ ਸਿੰਘ ਧੂਤ : ਕੀ ਮਿਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਦਸਨਗੇ ਕਿ ਇਹ ਸਚ ਹੈ ਕਿ ਮਾਡਲ ਵਿਲੇਜਜ਼ (Model villages) ਦੇ ਨਾਂ ਤੇ ਕੱਮੀਆਂ ਦੀ ਜ਼ਮੀਨਾਂ ਮਾਲਕਾਂ ਨੂੰ ਅਲਾਟ ਕਰ ਦਿਤੀਆਂ ਗਈਆਂ ਹਨ ?

ਮੰਤ੍ਰੀ : ਇਹ ਸਵਾਲ ਪੈਦਾ ਹੀ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ। ਇਸ ਲਈ ਜੇਕਰ ਮਾਨਯੋਗ ਮੈਂਬਰ ਇਸ ਸਵਾਲ ਦਾ fresh notice ਦੇਣ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਇਸ ਸੰਬੰਧ ਵਿਚ ਸੂਚਨਾ ਦਿਤੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ।

ਸਰਦਾਰ ਪੂਰ ਸਿੰਘ : ਕੀ ਪਨਵਰ ਪਿੰਡ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਵਲੋਂ ਵਜ਼ੀਰ ਸਾਹਿਬ ਨੂੰ ਕੋਈ ਦਰਖਾਸਤ ਆਈ ਹੈ ? ੨੭

ਮੰਤਰੀ : ਇਸ ਗਲ ਦਾ ਮੈਨੂੰ ਕੋਈ ਇਲਮ ਨਹੀਂ । ਵੇਰ ਵੀ ਮੈਂ ਹਾਊਸ ਨੂੰ ਯਕੀਨ ਦਿਵਾਉਂਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਜੇ ਕੋਈ ਵੀ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਦਰਖਾਸਤ ਆਵੇ ਜਿਥੇ ਕਿ ਕੌਮੀਆਂ ਦੀਆਂ ਜ਼ਮੀਨਾਂ ਜਾਂ ਮਕਾਨ ਕਿਸੇ ਦੂਜੇ ਨੂੰ ਦਿੱਤੇ ਗਏ ਹੋਣ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਪੁਰ ਮੈਂ ਬੜੀ ਹਮਦਰਦੀ ਨਾਲ ਵਿਚਾਰ ਕਰਾਂਗਾ।

ਸ਼੍ਰੀ ਸ਼੍ਰੀ ਚੰਦ ਜੈਨ : On a point of order, Sir. ਕੀ ਕਿਸੀ section of the public ਕੋ 'ਕਮਰਸ਼ੀ' ਜੈਸੇ ਨਫ਼ਰਤ-ਆਪੇਜ਼ ਆਲੋਚਨਾ ਸੇ ਪੁਕਾਰਨਾ proper ਹੈ ? ੪੪

ਮੰਤਰੀ : ਪਿੰਡਾਂ ਦੇ ਰੈਵਿਨਿਊ ਰੀਕਾਰਡ ਵਿਚ ਇੰਦਰਾਜ ਹੀ ਇਸ ਨਾਂ ਤੇ ਹੋਏ ਹੁੰਦੇ ਹਨ।

ਵਿਕਾਸ ਮੰਤਰੀ : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਮੈਂ ਇਸ ਮਾਮਲੇ ਦੀ ਥੋੜੀ ਜਹੀ ਵਜ਼ਾਹਤ ਕਰ ਦੇਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ। ਜਿਸ ਵੇਲੇ ਮਕਾਨਾਂ ਦੀ ਜਾਂ ਜ਼ਮੀਨਾਂ ਦੀ ਅਲਾਟਮੈਂਟ ਹੋਣੀ ਸੀ ਤਾਂ proprietors and non-proprietors ਦੇ ਮਕਾਨਾਂ ਵਿਚੋਂ ਜੇਕਰ proprietors ਦੇ ਮਕਾਨ ਜ਼ਿਆਦਾ ਸਨ ਤਾਂ ਉਹ non-proprietors ਨੂੰ ਅਲਾਟ ਕੀਤੇ ਗਏ। ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਜੇ non-proprietors ਦੇ ਮਕਾਨ ਜ਼ਿਆਦਾ ਸਨ ਤਾਂ ਉਹ proprietors ਨੂੰ ਦਿੱਤੇ ਗਏ ਅਤੇ ਉਸ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਜਿਹੜੇ ਰਹਿ ਗਏ ਉਹ ਦੁਜ਼ਿਆਂ ਨੂੰ ਦਿੱਤੇ ਗਏ। ਮੈਂ ਹਾਊਸ ਨੂੰ ਯਕੀਨ ਦਿਲਾਂਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਅਸੀਂ ਅਪਣੀ ਇਸੇ ਪਾਲਿਸੀ ਉੱਤੇ ਕਾਰਬੰਦ ਰਹਾਂਗੇ।

BUILDING OF TENEMENTS IN THE STATE

*3464. **Shri Ram Chandra Comrade :** Will the Minister for Labour be pleased to state—

- (a) the total amount received by the State Government from the Union Government as loan and subsidy for building tenements in the Industrial areas of the State during the years 1952, 1953 and 1954 respectively ;
- (b) the total number of tenements built so far in each industrial centre in the State along with the area covered by each tenement and the accommodation thereof ;
- (c) the method of allotment of the tenements to the workers ; together with the rate of rent being charged by the Government for these tenements ?

Chaudhri Sundar Singh : The reply is as follows :—

- (a) State Government have taken Rs 3.26 lacs from the Union Government as loan and Rs 2,01,680 as subsidy under the Subsidized Industrial Housing Scheme during the year 1953-54. Nothing was taken in the preceding years.

- (b) So far only 200 tenements have been completed at Amritsar.

Minister for Labour]

Area covered by each tenement

Plinth area	.. 293 s. ft. exclusive of bathing platform and latrine which are 3' x 4' each.
Accommodation	.. Room 12' x 16'. Verandah 12' x 6' including kitchen 8' x 5' portion projecting.
Size of Plot	.. 13½' x 45'.

(c) A committee consisting of equal number of representatives of employers and employees drawn from the industrial area of Amritsar with the Labour Inspector as *ex officio* Chairman has been appointed for allotment of quarters to the workers employed in the various registered factories at Amritsar.

The rent fixed by the Government of India for each such tenement is Rs 10 per mensem per quarter exclusive of electricity and water charges.

ADMISSION TO REFUGEE CAMPS

*3549. **Shrimati Sita Devi** : Will the Minister for Finance be pleased to state—

- the name of the final authority who allows admission to the refugee camps ;
- the powers of the Advisory Committee appointed by the Government in connection with admissions to the Refugee camps ?

Sardar Ujjal Singh : (a) The Government of India in the Ministry of Rehabilitation finally allows admissions into the Homes/Infirmarys. The State Government is only a recommending authority.

(b) The Advisory Committees appointed by Government scrutinize the admission applications and record their recommendations on the basis of which the cases are referred to the Government of India for final orders.

श्रीमती सीता देवी : मिनिस्टर साहिब ने सवाल के जवाब में यह कहा है कि पंजाब गवर्नमेंट ने एक advisory कमेटी बनाई है जो applications मांग कर उन पर अपनी सिफारिशें गवर्नमेंट के पास भेजती हैं और जो फिर Government of India को भेजी जाती हैं। तो मैं उन से प्रछती हूं कि क्या यह सच है कि यह कमेटी नया procedure अपना रही है कि वह अपनी सिफारिशें कर के सीधा भारत सरकार के पास भेज देती है ?

मंजू : मेरे पास उन अजिगी बेसी information नहीं आयी जिहजी कि बैरुनी के बचे नें।

श्रीमती सीता देवी : तो क्या मिनिस्टर साहिब बतायेंगे कि पिछले तीन महीनों में कितनी प्रजियां कमेटी ने recommend कर के पंजाब सरकार के पास भेजी हैं।

ਮੰਤ੍ਰੀ : ਇਸ ਸਵਾਲ ਲਈ ਜੇਕਰ ਭੇਟ ਜੀ ਨਵਾਂ ਨੋਟਸ ਦੇ ਦੇਣ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਜਵਾਬ ਦਿਤਾ ਜਾਵੇਗਾ ।

ਪंडित श्री राम शर्मा : मेरी बहिन श्रीमती सीता देवी ने मिनिस्टर साहिब से नये procedure के बारे में दरियाफत किया है और उन्होंने recommend की गई अर्जियों की तादाद नहीं पूछी । क्या मिनिस्टर साहिब procedure के बारे में बताने की कृपा करेंगे ?

WIDOW HOMES IN THE STATE

***3550. Shrimati Sita Devi :** Will the Minister for Finance be pleased to state—

- the total number of women so far admitted in the widow homes in the State along with the total number of such women who have received training in these camps and have been rehabilitated ;
- the total number of women who received vocational training and the names of vocation taught ;
- the total number of women who received training in nursing and teaching respectively ;
- the total number of women who were given grants and the amount of grant allowed in each case ?

Sardar Ujjal Singh : (a) The total number of women admitted so far in the Women Homes is 16,622. This number includes 3,173 women recovered from Pakistan and handed over to their relatives and 66 orphan girls received from Pakistan who were married.

1,716 women have, so far, received training in the various Training-cum-Production Centres. Of this number 1,125 have been rehabilitated.

(b) 1,716 women have received training in the following vocations :—

Tailoring, Weaving, Machine Embroidery, Hand Embroidery, Plastic and Leather Works, Khajji-work, Nala Making, Pickle Making, Chakki Work, Hosiery, Spinning, Basketry, Calico Printing, Durrie-making, Knitting, Niwar-making and Soap-making.

(c) 178 women received training as Midwives, Nurses and Nurse Dais and 157 received training in J. T., J. S. T., and Basic Teachers training courses.

(d) 1,125 have been given rehabilitation grants at the rate of Rs 250 each.

श्रीमती सीता देवी : माननीय मिनिस्टर साहिब ने सवाल के (b) और (c) भाग के जवाब में कहा है कि तकरीबन १,८०० स्त्रियों ने कैम्पस (camps) में training ले ली है । तो मैं जानना चाहती हूं कि जिन स्त्रियों ने training ले ली है क्या वह rehabilitate हो गई हैं या सब की सब कैम्पस (camps) में ही रहती हैं ।

ਮੰਤਰੀ: ਮੈਂ ਸਵਾਲ ਦੇ ਜਵਾਬ ਵਿਚ ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ ਇਹ ਦਸ ਚੁਕਾ ਹਾਂ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚੋਂ 1.125 ਔਰਤਾਂ rehabilitate ਹੋ ਚੁਕੀਆਂ ਹਨ ਤੇ ਬਾਕੀ ਹਾਲਾਂ ਤਾਈਂ ਕੈਂਪਸ ਵਿਚ ਹੀ ਹਨ।

ਸ਼੍ਰੀਮਤੀ ਸੀਤਾ ਦੇਵੀ: ਕੀ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਨੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਲਈ ਕੁਝ rules ਭੀ ਬਣਾਏ ਹਨ ਕਿ ਜੋ ਸ਼ਿਕਾਇਤਾਂ ਕਿਸੀ ਨ ਕਿਸੀ ਕਾਮ ਦੀ training ਲੈ ਚੁਕੀ ਹੈ ਉਹ training ਲੈਣ ਦੇ ਬਾਦ ਇੰਨੇ ਸਮੇਂ ਤਕ ਦੇ ਲਈ ਕੈਂਪ (camp) ਵਿੱਚ ਰਹਿ ਸਕੇਗੀ ਅਤੇ ਬਾਦ ਵਿੱਚ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਵੱਧ ਨਹੀਂ ਰਹਿਣ ਦਿੱਤਾ ਜਾਵੇਗਾ ?

ਮੰਤਰੀ: ਇਸ ਸਵਾਲ ਦਾ ਜਵਾਬ ਮੈਂ ਇਸ ਵੇਲੇ ਨਹੀਂ ਦੇ ਸਕਦਾ।

ਪੰਡਿਤ ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਸ਼ਰਮਾ: ਕੀ ਮੈਂ ਮਿਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਨੂੰ ਪਤਾ ਹੈ ਕਿ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਦੇ ਆਲੋਚਕਾਂ ਨੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ rehabilitate ਹੋਣੇ ਦਾ ਕੀ ਮਤਲਬ ਹੈ ?

ਮੰਤਰੀ: ਜਿਹੜੀਆਂ ਇਸਤਰੀਆਂ ਕਿਸੇ ਕੰਮ ਦੀ training ਲੈ ਚੁਕੀਆਂ ਹਨ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਜੀਵਨ ਦਾ ਆਪਣਾ ਕੰਮ ਖੋਜਣਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਸਰਕਾਰ 250 ਰੁਪਿਆਂ ਇਮਦਾਦ ਦੇ ਤੌਰ ਤੇ ਦੇ ਕੇ ਕੈਂਪ ਵਿਚੋਂ ਬਾਹਰ ਜਾ ਕੇ ਵਸਣ ਲਈ ਰੁਖਸਤ ਕਰ ਦੇਂਦੀ ਹੈ।

ਪੰਡਿਤ ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਸ਼ਰਮਾ: ਮਿਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਦੇ ਕਹਿਣੇ ਦੇ ਮੁਤਾਬਿਕ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ rehabilitation ਦਾ ਕੀ ਮਤਲਬ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਜਿਸ ਸ਼ਹਿਰੀ ਨੂੰ confidence ਮਿਲੇਗਾ ਉਸ ਨੂੰ 250 ਰੁਪਿਆਂ ਦੇ ਦਿੱਤਾ ਜਾਵੇਗਾ ਅਤੇ ਕੈਂਪ ਤੋਂ ਬਾਹਰ ਭੇਜ ਦਿੱਤਾ ਜਾਵੇਗਾ ?

ਮੰਤਰੀ: ਮੈਂ ਇਹ ਕਿਹਾ ਹੈ ਕਿ ਪਹਿਲੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਇਸਤਰੀਆਂ ਨੂੰ ਕਿਸੇ ਨਾ ਕਿਸੇ ਕੰਮ ਦੀ training ਦਿੱਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਤੇ ਉਸ ਦੇ ਪਿਛੋਂ ਜਦੋਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਆਪ ਵਿਚ confidence ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ 250 ਰੁਪਿਆਂ ਇਮਦਾਦ ਦੇ ਤੌਰ ਤੇ ਦਿੱਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣਾ ਕੰਮ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰਨ ਵਿਚ ਆਸਾਨੀ ਹੋਵੇ।

ਸ਼੍ਰੀਮਤੀ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਕੌਰ: ਕੀ ਮਿਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਦਸਣ ਦੀ ਕਿਰਪਾ ਕਰਨਗੇ ਕਿ refugee camps ਵਿਚ ਜਿਹੜੀਆਂ ਔਰਤਾਂ ਹਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚੋਂ ਕੋਈ ਅਜਿਹੀਆਂ ਵੀ ਹਨ ਜਿਹੜੀਆਂ ਜ਼ਿੰਮੀਦਾਰਾਂ ਦੇ ਘਰ ਦੀਆਂ ਹੋਣ ਅਤੇ ਕੁਝ ਜ਼ਮੀਨਾਂ own ਕਰਦੀਆਂ ਹੋਣ ?

ਮੰਤਰੀ: ਇਸ ਸਵਾਲ ਦੇ ਜਵਾਬ ਲਈ ਤੈਨੂੰ ਜੀ ਨੋਟਿਸ ਦੇਣ ਤਾਂ ਚੰਗਾ ਹੋਵੇਗਾ।

ਸ਼੍ਰੀਮਤੀ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਕੌਰ: ਕੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਵਸਾਉਣ ਲਈ ਜ਼ਮੀਨਾਂ ਦੇਣ ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਕੀਤਾ ਹੈ ?

ਸ਼੍ਰੀ ਸਪੀਕਰ: ਇਹ ਸਵਾਲ ਉਤਪਨ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ ਜਦੋਂ ਕਿ ਮਿਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ ਨੋਟਿਸ ਦੇਣ ਲਈ ਕਹਿ ਦਿੱਤਾ ਹੈ।

ਸ਼੍ਰੀ ਸੁਲ ਚੰਦ ਜੈਨ : ਸਾਨੀਧ ਮਿਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਬਤਾਯਾ ਹੈ ਕਿ ੧,੧੨੫ ਸਿਰਧਾਂ rehabilitate ਹੋ ਗਏ ਹੈਂ ਜਕਕਿ 1,716 ਕੋ vocational training ਦੀ ਗਏ ਹੈਂ ਆਰ ੭੮ ਤੜ ੧੫੮ ਸਿਰਧਾਂ ਮੋਂ ਸੇ rehabilitate ਹੁਏ ਹੈਂ ਜਿਨ੍ਹੋਂ nursing ਕੇ ਕਾਸ ਮੋਂ training ਦੀ ਜਾ ਚੁਕੀ ਹੈਂ । ਤੋ ਕਧਾ ਵਹੁ ਬਤਾਯੋਂਗੇ ਕਿ ਜੋ ਸਿਰਧਾਂ trained ਹੋ ਚੁਕੀ ਹੈਂ ਵੇ ਅਖੀ ਤਕ rehabilitate ਕਧੋਂ ਨਹੀਂ ਹੁਏ ਆਰ ਕੈਂਪਸ (camps) ਮੋਂ ਕਧੋਂ ਰਹੁ ਰਹੀ ਹੈਂ ?

ਮੰਤ੍ਰੀ : ਮੇਂ ਇਸ ਸਵਾਲ ਦਾ ਜਵਾਬ ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ ਦੇ ਚੁਕਿਆ ਹਾਂ ਕਿ ਸਿਰਧਾਂ ਇਸਤ੍ਰੀਆਂ ਨੂੰ ਕੰਮ ਸਿਖਾਇਆ ਗਿਆ ਹੈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚੋਂ ਸਿਰਧਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਵਿਚ confidence ਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਉਹ rehabilitate ਹੋ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ ਤੇ ਸਿਰਧਾਂ ਨੂੰ confidence ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਅਸੀਂ ਕਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਕੈਂਪਸ ਵਿਚੋਂ ਕੱਢ ਸਕਦੇ ਹਾਂ ।

ਸ਼੍ਰੀ ਸੁਲ ਚੰਦ ਜੈਨ : ਇਸ ਬਾਤ ਕੇ ਪੇਸ਼ੇਜ਼ਰ ਕਿ ਤਨ ਕੋ training ਦੀ ਜਾ ਚੁਕੀ ਹੈ ਆਰ ਵੇ ਆਪ ਕਸਾ ਕਰ ਗੁਜ਼ਾਰਾ ਕਰਨੇ ਕੇ ਕਾਬਲ ਹੋ ਗਏ ਹੈ ਕਧਾ ਮਿਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਇਸ ਬਾਤ ਕੇ ਲਿਯੇ policy ਬਨਾਨੇ ਕੋ ਤੈਧਾਰ ਹੈਂ ਕਿ.....

ਮੰਤ੍ਰੀ : ਇਸ ਦੇ ਮੁਤੱਲਿਬ ਪਾਲਿਸੀ (policy) Central ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਬਣਾਉਂਦੀ ਹੈ State ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਨਹੀਂ ਬਣਾਉਂਦੀ ।

WORKERS IN GOVERNMENT TRANSPORT DEPARTMENT

***3435. Sardar Darshan Singh :** Will the Minister for Education be pleased to state—

- the number of and the names of the workers employed in the Government Transport Department who were discharged from service during the years 1952 and 1953 together with the reasons therefor in each case ;
- the total number of accidents that occurred during the years 1952 and 1953 in which the workers were involved and the compensation, if any, paid by the Government in each case ;
- the maximum hours of duty of a workman per day and period of weekly rest or recreation , if any, provided by the Government to the said workers ?

Shri Jagat Narain : (a) 31 workers were discharged from service in Government Transport Services during the years 1952 and 1953. Their names and reasons for discharge are given below :—

1. Shankar Dass, Conductor	..	Unauthorised absence from duty.
2. Harjit Singh, Conductor	..	Ditto
3. Sudha Singh, Driver	..	Ditto
4. Darshan Singh, Driver	..	Ditto
5. Jalmeja Singh, Conductor	..	Ditto

[Minister for Education]

6. Gurdev Singh, Conductor	..	Alleged fraud and misappropriation of Government money.
7. Krishan Gopal, Conductor	..	Ditto
8. Satya Paul, Conductor	..	Ditto
9. R. C. Jeoki, Conductor	..	Ditto
10. R. S. Mittal, Conductor	..	Ditto
11. Ghanisham Singh, Conductor	..	Ditto
12. Harcharan Singh, Conductor	..	Ditto
13. Ranbir Singh, Conductor	..	Ditto
14. Jamna Dass, Conductor	..	Ditto
15. Kartar Singh, Conductor	..	Ditto
16. Narain Dass, Conductor	..	Ditto
17. Babu Ram, Driver	..	Acceptance of illegal gratification from the public.
18. Brij Mohan Mahajan, Conductor	..	Unauthorised absence, excess of Cash while on Government duty and refusal to associate with enquiry.
19. Makhan Singh, Driver	..	Declared medically unfit for Government service.
20. Pritam Singh, Driver	..	Ditto
21. Tehal Singh, Driver	..	Ditto
22. Rakha, Sweeper	..	For pilferage and theft of Government Stores etc.
23. Gurnam Singh, Cleaner	..	Ditto
24. Gurbachan Singh, Cleaner	..	Ditto
25. Avtar Singh, Welder	..	Ditto
26. Teg Bahadur, Chowkidar	..	For negligence of duty and dishonesty.
27. Kundan Singh, Chowkidar	..	For unsatisfactory work.
28. Mulagar Singh, Welder	..	Misconduct for being previous convict.
29. Lakhbir Singh, Fitter	..	For unauthorised absence.

30. Mohan Lal, Sweeper .. Misconduct for being previous convict.
31. Kishan Lal, Cleaner .. For unsatisfactory work.
- (U) Total number of accidents .. 48.
- Compensation paid .. Nil.
- (c) Maximum hours of duty .. 9 hours in a day or 54 hours a week in case of Drivers and Conductors and 8 hours a day in case of technicians and others.

(In case of Drivers employed on vehicles covering over 200 miles daily two off days are given in a week).

FEE CONCESSION TO HARIJAN STUDENTS IN HIGH SCHOOL, MANDI JAKHAL, DISTRICT HISSAR

***3437. Sardar Darshan Singh :** Will the Minister for Education be pleased to state the total number of Harijan students studying in High School, Mandi Jakhal, District Hissar, at present and the number out of them who enjoy full fee concessions ?

Shri Jagat Narain : There is no High School at Jakhal Mandi. There is, however, a D. B. Middle School at this place. Twenty-eight Harijans students are studying in the school and 24 are enjoying full fee concession. The remaining 4 students belong to Pepsu.

MATERNITY AND CHILD WELFARE SERVICES SCHEME

***3485. Shri Ram Kishan :** Will the Minister for Education be pleased to state whether the Government has received any scheme from the Central Health Ministry for the expansion of Maternity and Child Welfare Services in the rural areas of the State ; if so, the gist of the circular and the scheme so received and the action Government has taken or intends to take for implementing the scheme ?

Shri Jagat Narain : Yes. A draft scheme relating to the extension of Maternity and Child Welfare Services in the State, particularly in rural areas, with financial assistance from the Central Government is under consideration of the State Government. A copy of the Government of India's original communication on the subject is appended.

Copy of letter No. F-2—4/53-P, dated the 14th December, 1953, from the Under-Secretary to the Government of India, Ministry of Health, New Delhi, to the State Governments of Bombay, Madhya Pradesh, Madras, Punjab, Uttar Pradesh, West Bengal, Bihar, Assam, Orissa, Madhya Bharat, Pepsu, Rajasthan, Saurashtra, Himachal Pradesh, Hyderabad, Delhi and Kutch

Subject.—Training of Health personnel for the Community Development Programme.

I AM directed to refer to this Ministry's letter No. F-2-4/53-P, dated the 14th November, 1953, on the subject mentioned above, and to say that the Government of India have since drawn up a scheme for the training of Health personnel for the Community Development Programme which is explained in the following paragraphs.

[Minister for Education]

The Planning Commission has approved a programme of 600 Community Blocks in various States for the Plan period. For this programme the requirements of the various categories of health personnel are expected to be of the following order :—

(a) Doctors	..	600
(b) Compounders	..	600
(c) Sanitary Inspectors	..	600
(d) Lady Health Visitors	..	600
(e) Mid-wives	..	2,400

After taking into consideration the existing facilities available and the additional requirements, it is considered that so far as Doctors, Compounders and Sanitary Inspectors are concerned there will be no difficulty in getting the requisite number for the programme. For the training of Lady Health Visitors and Mid-wives, however, the existing facilities are inadequate and it is necessary to take steps to expand the training facilities for these categories of personnel. In addition, it is considered necessary to provide for the training of certain auxiliary personnel who may be called 'Auxiliary nurse and mid-wife' and who will, to some extent, bridge the gap in respect of Lady Health Visitors whose number cannot be increased sufficiently for another 2 or 3 years.

LADY HEALTH VISITORS

3. At present there are the undermentioned nine health schools which turn out Lady Health Visitors—

- (1) Health School, Bombay.
- (2) Health School, Khed.
- (3) Health School, Nagpur.
- (4) Health School, Madras,
- (5) Health School, Ludhiana.
- (6) Silver Jubilee Health School, Lucknow.
- (7) Sir John Anderson Health School, Calcutta.
- (8) Niloufer Health School, Hyderabad.
- (9) Lady Reading Health School, Delhi.

These Schools together can train normally about 150 health visitors but their annual output is only about half that number. It is proposed to expand the existing facilities at these schools so that they could train the 600 health visitors required for the Community Projects.

Training as health visitors is, at present, given to registered mid-wives who hold a senior certificate in mid-wifery and who have attained the Matriculation standard. The duration of the training is 18 months in most of these schools, and is one year in some of them. The candidates thus have 2½ years to 3 years training after completing their school education (1½ year mid-wifery and 1 to 1½ years health visitors training). Since the basic educational qualification prescribed for the health visitors' course is higher than that required for candidates who take up mid-wifery training only, considerable difficulty is being experienced in recruiting trained mid-wives with adequate school education.

To ensure that the required number of health visitors are trained and posted in the project area as soon as possible and within the Plan period, it is proposed to conduct the following two courses at each of the nine health schools :—

- (i) One course of 18 months training for candidates who possess necessary school education and mid-wifery training, and
- (ii) a regular integrated 2½ years training as recommended by the Indian Nursing Council to provide mid-wifery and health visitors training for candidates recruited immediately after passing Matriculation.

The mid-wifery part of the training for a period of 18 months will be conducted in co-operation with established hospitals attached to these schools.

Sixty students will be admitted for these two courses at each school except the Lady Reading Health School which will turn out about 120 health visitors in these two courses during the period of the Plan.

Financial assistance is proposed to be given for the expansion of the existing schools for :—

- (a) additions and alterations to the existing buildings,
- (b) additional staff and equipment,
- (c) stipends to the trainees.

No assistance is proposed under this scheme for the Lady Reading Health School as the expansion of this school has been provided for separately under the Five-Year Plan. Appendix I to this letter gives the details of the expenditure involved on the training of the Lady Health Visitors.

MID-WIVES

4. Training facilities are mostly concentrated in Part 'A' and some of the Part 'B' States. Leaving aside States like Bombay, Madras and West Bengal the other States are short of this personnel. As the training of mid-wives is conducted locally in local languages it will be desirable to have training facilities in the local area itself. It is, therefore, proposed that States which do not have adequate facilities for training may be given assistance in the form of stipends to trainees and the provision of additional equipment, furniture and other training facilities. It is proposed to organise 10 centres for the purpose one in each of the States of Madhya Pradesh, Bihar, Assam, Orissa, Pepsu, Madhya Bharat, Rajasthan, Saurashtra, Himachal Pradesh and Kutch to cater to the needs of the States as well as of the adjoining States.

The period of training prescribed for mid-wifery by the Indian Nursing Council is 18 months of which approximately one year is spent in the hospital and six months training in domiciliary mid-wifery service is given in the field. At each of these centres 10 candidates would be admitted every six months. Thus before the end of the Plan period about 100 trained mid-wives would have come out of these centres and another 200 would be under training. Appendix II to this letter gives the details of the expenditure involved on the training of mid-wives.

5. In so far as the financial arrangements are concerned, it is proposed that the Central Government should bear the entire non-recurring expenditure and the recurring expenditure for the initial period of six months beginning from the 1st January 1954, 66-2/3 per cent of the recurring expenditure for the next one year, 50 per cent of the recurring expenditure for the next following year and 33-1/3 per cent of the recurring expenditure for the remaining months in 1956-57 ; while the State would contribute the balance of the recurring expenditure in each of the years mentioned. The total period of Central financial assistance will thus be three complete years.

AUXILIARY NURSE MID-WIVES

6. A scheme for the training of Auxiliary Mid-wives is under preparation and a further communication will follow.

7. I am to suggest that if the State Government agree to the scheme, steps may kindly be taken to start the training of Lady Health Visitors and Midwives with effect from the 1st January, 1954. The Government of India would be glad to receive a reply indicating the State Government's concurrence in the Scheme and the action being taken by them by the 25th December, 1953.

[Minister for Education]

APPENDIX I

Estimated expenditure for re-organisation of Lady Health Visitors Training Schools

(A) (1) *Courses to be organised:—*

(a) Integrated course for 2½ years	..	One Course during Plan period.
(b) Short-term course for 1½ years	..	Ditto
(2) Number of trainees in each course	..	30
(3) Total number to be trained as L.H.V. during the Plan period at 8 centres :—		
(a) Trained mid-wives	..	240
(b) Matriculate girls	..	240
Total	..	480

(Note.—The remaining 120 V.L.H. will be trained at Lady Reading Health Centre)

(B) *Average expenditure per centre for reorganisation—*(1) *Nonrecurring :—*

		Rs
(a) Additions and alterations to existing buildings	..	50,000
(b) Equipments including F.F.	..	20,000
Total	..	70,000

(2) *Recurring :—*(a) *Additional staff*

		Annual expenditure including allowances	
		Grade	Rs
(i) Sister tutor to work in attached Hospital, one..	250—25—400 plus Dearness Allowance, etc.		4,200
(ii) Assistant Superintendent, two	.. 150—10—250 plus D. A., etc.		6,000
(b) Other establishments		2,000
Total		12,200

(c) *Contingencies :—*

(i) For schools	..	3,000	..
(ii) For attached Hospital	..	1,000	..
Total Recurring Expenditure per year	..	4,000	16,200

(3) *Stipends :—*

For 60 trainees for 12 months at Rs 50 per mensem		36,000
Total	..	52,200

Pattern of expenditure. For one School :—

	<i>Central Govern- ment's share</i>	<i>State Govern- ment's share</i>
Non-recurring	..	70,000 ..
Recurring—		
First 6 months	..	26,000 ..
Next 12 months at 66-2/3 per cent	..	35,000 17,000
Next 12 months at 50 per cent	..	26,000 26,000
Next 6 months at 33½ per cent	..	8,650 17,350
Total	..	95,650 60,350

APPENDIX II

Estimated expenditure for the training of Mid-wives in existing established Hospitals

(A) (a) Course to be organised	..	Regular course of 1½ years	
(b) Number of trainees in each course	..	30, to be taken up in 3 sections	
(c) Total number to be trained during the Plan period at 10 centres		(i) Fully trained mid-wives	300
		(ii) Girls having completed 6 months training	100
		(iii) Girls having completed one year's training	100

(B) *Average expenditure per centre. (1) Non-recurring :—*

(a) Additions to existing buildings, equipments, furniture, etc.	..	Rs 5,000
--	----	-------------

	<i>Grade</i>	<i>Annual expenditure including allowance</i>
(2) Recurring	Rs	Rs
(h) Additional staff :—		
(i) Sisters (2)	.. 125—5—150-10—200 plus 100 all allowances	5,400
(ii) Trained staff nurses (2)	.. 100—5—185 plus 100 all allowances	4,800
(iii) Contingencies	..	1,000
Total recurring expenditure per year	..	11,200

(3) Stipends :—

(a) Total Stipends :—

(a) Total stipends for 30 trainees for 12 months at Rs 50 per mensem	Rs 18,000
Total	.. 29,200
or say	.. 30,000

[Minister for Education]

(D) *Pattern of expenditure.* For one centre—

		Central Govern- ment's share	State Govern- ment's share
		Rs	Rs
Non-recurring	..	5,000	..
Recurring—			
First six months	..	15,000	..
Next 12 months at 66 2/3 per cent	..	20,000	10,000
Next 12 months at 50 per cent	..	15,000	15,000
Next 6 months at 33 1/3 per cent	..	5,000	10,000
Total	..	55,000	35,000

LOCAL BODIES CONFERENCE AT AMBALA

***3487. Shri Ram Kishan :** Will the Minister for Public Works be pleased to state whether any Punjab State Local Bodies Conference was held at Ambala during the third week of February, 1954 ; if so, the details of the decisions arrived at by the Conference and the action Government proposes to take on each such decision ?

Sardar Gurbachan Singh Bajwa : Yes, a Conference consisting of delegates from all the Local Bodies in the State as also representatives of their employees was held at Ambala from the 18th to 20th February, 1954, and it passed a number of important resolutions which are in the nature of recommendations to Government. A copy of the proceedings* of the Conference is enclosed. Government are examining each recommendation. No decision has so far been taken on any recommendation because the time-lag has been too brief.

ARRESTS OF WORKERS AND TRADE UNIONISTS IN THE STATE

***2220. Sardar Chanan Singh Dhut :** Will the Minister for Labour be pleased to state —

- the total number of workers and trade unionists arrested in connection with strikes in different centres in the State during the years 1952 and 1953 ;
- the total number of workers arrested under section 7 of the Criminal Law Amendment Act in different industrial centres in the State during the years 1952 and 1953 together with the reasons therefor in each case and the number of persons arrested in each strike ;
- the total number of cases against workers and trade unionists filed under section 7 of the Criminal Law Amendment Act in which the Courts convicted the accused, acquitted the accused respectively and the number of cases relating to 1952 and 1953 separately which are still pending ?

*Kept in the library.

Chaudhri Sundar Singh : (a) 1952 : 161
1953 : 273

(b) 1952 : 161—

44 were arrested for taking out a procession forcing open the door of the Oriental Carpet Factory, Chheharta and asking the workers to go on strike ;

8 persons were arrested as they encroached on P. W. D. land by pitching tents in front of Government Central Workshop with a view to ask the workers to go on strike ;

109 persons were arrested for picketing the gate of Pearl Hosiey, Ludhiana, with regard to the wages of workers in batches of 76, 7, 18 and 8 on four different dates.

1953 : 84 :—

49 persons were arrested for picketing the office of the Development Board, New Township, Faridabad ;

3 were arrested as they incited the labourers working in the Hindustan Embroidery Mills, Amritsar, to abstain from working ;

10 persons were arrested for picketing the gate of Guru Narak Oil Mills, Khanna, on account of a dispute with regard to wages of workers ;

22 were arrested for picketing the gate of Khalsa Nirbhai Transport Company, Ludhiana, on account of wage dispute in batches of 13 and 9.

	1952	1953
(c) Conviction ..	4	50
Discharged ..	157	34
Pending ..	Nil	Nil

SHORT NOTICE QUESTIONS AND ANSWERS

REPRESENTATION FROM MUNSHI RAM, HARIJAN CHAMAR OF VILLAGE BHAWAR, DISTRICT ROHTAK

***3582. Shri Manu Chand :** Will the Chief Minister be pleased to state —

(a) whether it is a fact that one Munshi Ram, Harijan Chamar of village Bhawar, district Rohtak, repeatedly reported to the district authorities against his being unlawfully beaten by the Assistant Sub-Inspector of Police, Ajmer Singh ;

(b) whether any enquiry was held by the district authorities on the repeated complaints of the said Munshi Ram ; if so, to what result ?

Chief Parliamentary Secretary (Shri Prabodh Chandra) : (a) Yes. Two applications, dated 22nd November, 1953 and 15th January, 1954, were received from Munshi Ram, Harijan of Village Bhawar, against Assistant Sub-Inspector Ajmer Singh.

(b) Necessary enquiries were made by the District Inspector but the allegations made against the Assistant Sub-Inspector were found to be false and baseless. Munshi Ram himself also deposed before the District Inspector, Gohana, that he had made false allegations against the Assistant Sub-Inspector and that he may be pardoned.

पंडित श्री राम शर्मा : क्या मैं दर्शाफ्त कर सकता हूँ कि मुन्शी राम ने जो शिकायत की वह गालबत यह थी कि उसे पुलिस ने पीटा। क्या उस की तहकीकात के लिये कोई अपरसर मौका पर भेजा गया ? क्या मुन्शी राम को हाज़िर होने का मौका दिया गया ? १७

चीफ पार्लियामेण्ट्री सैक्रेटरी : इस मामले में तहकीकात करने के लिये District Inspector Gohana गए। सब से पहले मुन्शी राम को बुलाया गया। उस ने बताया कि जो शिकायत उस ने की है वह झूठी है। इस पर बाकायदा तफ़्तीश की जरूरत नहीं समझी गई।

पंडित श्री राम शर्मा : क्या मुन्शी राम ने दोबारा शिकायत की कि उस की पहली शिकायत की बिना पर A.S.I. ने उसे दोबारा बुला कर पीटा है ? १८

चीफ पार्लियामेण्ट्री सैक्रेटरी : इस के लिये माननीय सदस्य नोटिस दें।

पंडित श्री राम शर्मा : सवाल में पहिले ही पूछा है कि क्या उस ने शिकायत की थी कि उसे बार २ पीटा गया और इस बारे सरकार की तरफ से क्या action लिया गया है ? १९

चीफ पार्लियामेण्ट्री सैक्रेटरी : मैं तो पहले बता चुका हूँ कि उस ने तो कह दिया था कि शिकायत ही बेबुनियाद है।

श्री श्री चन्द : क्या गवर्नमेंट को इस बात की इत्तलाह है कि उस ने इस बिना पर दोबारा शिकायत की थी कि उसे पहली शिकायत करने पर पीटा गया है ? २०

चीफ पार्लियामेण्ट्री सैक्रेटरी : माननीय सदस्य इस के लिये notice दें।

श्री श्री चन्द : गलत शिकायत करने पर उस के खिलाफ क्या action लिया गया ? २१

चीफ पार्लियामेण्ट्री सैक्रेटरी : माननीय सदस्य इस के लिये भी notice दे दें।

पंडित श्री राम शर्मा : क्या मुन्शी राम की शिकायत पुलिस के दफतर में मौजूद है, अगर है तो क्या वह गवर्नमेंट के नोटिस में आई है ? २२

चीफ पार्लियामेण्ट्री सैक्रेटरी : जी हाँ, गवर्नमेंट के नोटिस में आई है। तभी तो ज़िला इन्स्पेक्टर को तफ़्तीश के लिये मुक़र्रर किया गया था और मुन्शी राम को मौका दिया गया था कि वह अपना case बयान करे, मगर उस ने आकर कह दिया कि शिकायत ही बेबुनियाद है।

श्री मूल चन्द जैन : क्या यह अमर वाक्या नहीं है कि District Inspector of Police के पास उस के बयान होने के बाद मुन्शी राम ने फिर शिकायत की कि उस का बयान गलत लिखा गया है ? २३

चीफ़ पार्लियामेण्ट्री सैक्रेटरी : इस के लिये नोटिस चाहिये ।

पंडित श्री राम शर्मा : मुन्शी राम ने District Inspector of Police के सामने यह ब्यान दिया बताया गया है कि उस की शिकायत गलत थी, क्या वह शिकायत गवर्नमेण्ट के पास मौजूद है और क्या इसे table पर रखा जा सकता है ?

चीफ़ पार्लियामेण्ट्री सैक्रेटरी : यह इस वक्त मेरे पास नहीं है ।

पंडित श्री राम शर्मा : अगर अब इस मामले की तहकीकात की जाए और पहली तहकीकात पर Inspector की report गलत निकले तो क्या उस के खिलाफ गवर्नमेण्ट कोई कार्यवाही करने को तैयार है ।

चीफ़ पार्लियामेण्ट्री सैक्रेटरी : ऐसी कोई वजह दिखाई नहीं देती कि Inspector के खिलाफ कोई कार्यवाही की जाए ।

NATIONAL PLAN LOAN

***3561. Shri Ram Kishan :** Will the Minister for Finance be pleased to state —

(a) whether the State Government has received any instructions from the Union Government regarding the National Plan Loan collections ; if so, the details of such instructions and the total collections made by the State Government in this connection to date ;

(b) the steps, if any, taken or intended to be taken for these collections ?

Sardar Ujjal Singh : (a) Yes. It will not, however, be in public interest to disclose these instructions. The figures are not available and the time and labour involved in collection of data would not be commensurate with any benefit that may accrue. The relevant figures regarding total collections in the Punjab will in due course become available from the Government of India when the acceptance of contributions to the loan is stopped.

(b) The appeal issued by the Prime Minister for contributions to the National Plan Loan has been suitably brought to the notice of all officers of Government and the people of the State, and they have been invited to contribute liberally to the loan. Officers of Government have also been permitted to associate themselves with organizations for the promotion of contributions to the loan. Women's organizations in the State have also been approached to extend their fullest help and co-operation in the matter.

श्री राम किशन : क्या Finance Minister साहिब बतायेंगे कि क्या सिर्फ़ सारी जयबन्दियों को कह देने से ही यह काम चल जाएगा ?

मंज़ी : सारीਆਂ ਜਥੇਬੰਦੀਆਂ ਨੂੰ ਸਿਰਫ਼ ਕਿਹਾ ਹੀ ਨਹੀਂ ਗਿਆ ਸਗੋਂ ਅਪੀਲ ਵੀ ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੈ ਅਤੇ ਅਸੀਂ ਪੂਰੇ ੨ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਵੀ ਕਰ ਰਹੇ ਹਾਂ ਕਿ ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਹਰਿਕ ਵਸਨੀਕ ਇਸ ਕੰਮ ਵਿਚ ਵਧ ਤੋਂ ਵਧ ਹਿੱਸਾ ਲਵੇ । ਇਸ ਕੰਮ ਤੋਂ ਲਾਭ ਨ ਸਿਰਫ਼ ਪੰਜਾਬ ਨੂੰ ਹੀ ਹੋਣਾ ਹੈ ਸਗੋਂ ਸਾਰੇ ਦੇਸ਼ ਨੂੰ ਵੀ ।

श्री राम किशन : क्या कोई और step भी इस बारे में गवर्नमेण्ट की तरफ़ से लिए जा रहे हैं ?

ਮੰਤਰੀ : ਜੇ ਤਰੀਕੇ ਸਾਨੂੰ ਸੁਝੇ ਅਸੀਂ ਅਪਣਾਏ ਹਨ ਅਤੇ ਹੋਰ ਜੇ ਸਾਡੇ ਦੋਸਤ ਦਸਣਗੇ ਉਹ ਵੀ ਅਪਣਾਵਾਂਗੇ ।

ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਕਿਸ਼ਨ : ਕੀ ਸਰਕਾਰ collections ਕਰਨ ਦੇ ਲਿਏ ਆਰੋਗੀ ਤਰੀਕੇ ਭੀ ਸੋਚੇਗੀ ? ੯

ਮੰਤਰੀ : ਜੇ ਵੰਗ ਸਾਨੂੰ ਸੁਝੇ ਅਸੀਂ ਇਸਤੇਮਾਲ ਕੀਤੇ ਹਨ ਜਿਵੇਂ ਸਾਰੀਆਂ ਜਥੇਬੰਦੀਆਂ, associations, chambers of commerce ਆਦਿ ਨੂੰ ਕਿਹਾ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਦਾ ਪ੍ਰਚਾਰ ਕੀਤਾ ਹੈ । ਆਪਣੇ ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਅਫਸਰਾਂ ਨੂੰ ਬਿਨਾਂ ਕਿਸੇ ਤੇ ਦਬਾ ਪਾਏ, ਇਸ ਕੰਮ ਲਈ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਪਰੇਰਨਾ ਕਰਨ ਲਈ ਕਿਹਾ ਹੈ । ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਅਸੀਂ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਉਤਸ਼ਾਹ ਹੀ ਦਿਵਾ ਸਕਦੇ ਹਾਂ ਅਤੇ ਸਮਝਾਉਂਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਇਸ ਕੰਮ ਵਿਚ ਜਿਥੇ ਦੇਸ ਦਾ ਭਲਾ ਹੈ ਉਥੇ ਖੁਦ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਜ਼ਾਤੀ ਫਾਇਦਾ ਭੀ ਹੈ ।

ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਕਿਸ਼ਨ : ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਨੇ ਕੁਝ ੨ industrialists ਆਰਥੀਕੀਦਾਰੀਆਂ ਨੂੰ national loan ਦੇ ਲਿਏ ਖਰੀਦ ਕਰਨ ਦੇ ਲਿਏ ਕੀਤਾ ਹੈ ਅਤੇ ਅਸੀਂ ਕੀ ਕਰਦੇ ਹਾਂ ? ੧੦

ਮੰਤਰੀ : ਮੈਨੂੰ ਸਮਝ ਨਹੀਂ ਆਉਂਦੀ ਕਿ ਮੇਰੇ ਦੋਸਤ ਕੀ ਪੁਛਣਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਨ । ਮੈਂ ਦਸਿਆ ਹੈ ਕਿ ਅਸੀਂ ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਨੂੰ ਹੋਰ ਜੋ ਵੀ ਸਾਧਨ ਸਾਡੇ ਪਾਸ ਹਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਰਾਹੀਂ ਇਹ loan ਲਈ collections ਸਭ ਲੋਕਾਂ ਪਾਸੋਂ ਕਰ ਰਹੇ ਹਾਂ । ਉਨ੍ਹਾਂ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਜੇਕਰ ਮੇਰੇ ਦੋਸਤ ਹੋਰ ਕਈ ਤਰੀਕੇ ਦਸਣਗੇ ਤਾਂ ਅਸੀਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਅਪਣਾਵਾਂਗੇ ।

ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਕਿਸ਼ਨ : ਕੀ ਇਸ ਸਿਲਸਿਲਾ ਵਿੱਚ services ਨੂੰ ਕੋਈ circular ਜਾਰੀ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ ਕਿ ਕੋਈ ਵੀ ਜਿਤਨਾ ਰੁਪਯਾ ਇਸ ਕੰਮ ਦੇ ਲਿਏ ਦੇ ਸਕਦੇ ਹਨ ? ੧੧

ਮੰਤਰੀ : ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਨੇ ਫੈਸਲਾ ਕੀਤਾ ਹੈ ਕਿ ਹਰ ਸਰਕਾਰੀ ਮੁਲਾਜ਼ਮ ਨੂੰ ਕਰਜ਼ੇ ਵਿਚ ਦੋਣ ਲਈ ਆਪਣੇ ਮਹੀਨੇ ਦੀ ਤਨਖਾਹ ਬਰਾਬਰ advance ਦਿਤਾ ਜਾਵੇਗਾ ਜਿਸ ਦੀ ਵਸੂਲੀ ਹੌਲੀ ਹੌਲੀ ਕਿਸਤਾਂ ਵਿਚ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇਗੀ ।

ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਕਿਸ਼ਨ : ਕੀ ਧਰਮ ਫੈਸਲਾ Local Government ਦੇ ਮੁਲਾਜ਼ਮੀਨ ਪਰ ਭੀ ਲਾਗੂ ਹੋਵੇਗਾ ਜਾਂ ਕਿ ਕੇਵਲ ਸਰਕਾਰੀ ਮੁਲਾਜ਼ਮਾਂ ਤੱਕ ਹੀ ਸਹੂਲਤ ਦਿੱਤੀ ਜਾਵੇਗੀ ? ੧੨

ਮੰਤਰੀ : ਮੈਂ ਸਰਕਾਰੀ ਮੁਲਾਜ਼ਮਾਂ ਬਾਰੇ ਹੀ ਕਹਿ ਸਕਦਾ ਹਾਂ । ਅਸੀਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਸਾਹਮਣੇ ਇਕ ਮਿਸਾਲ ਕਾਇਮ ਕਰ ਦਿਤੀ ਹੈ । ਵੈਸੇ ਇਹ ਕੰਮ ਹੋਰ ਕਈ ਤਰ੍ਹਾਂ ਵੀ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ ।

ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਕਿਸ਼ਨ : ਕੀ ਕਿਸੇ ਮੰਤਰੀ ਸਾਹਿਬ ਫਰਮਾਏਗੇ ਕਿ National Plan Loan ਦੀ ਸਕੀਮ ਨੂੰ publicity ਦੇਣ ਦੇ ਲਿਏ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਨੇ ਕੀਤਾ ੨ ਫੈਸਲਾ ਕੀਤਾ ਹੈ ? ੧੩

ਮੰਤਰੀ : ਕੋਈ ਕਰਜ਼ੇ ਲਈ ਅਪੀਲਾਂ ਕੀਤੀਆਂ ਗਈਆਂ ਹਨ । Prime Minister ਸਾਹਿਬ ਦੀ ਅਪੀਲ ਛਪਵਾਈ ਗਈ ਹੈ । ਇਸ ਕਰਜ਼ੇ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਚੀਫ ਮਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਵੀ ਇਕ ਤਕਰੀਰ broadcast ਕੀਤੀ ਹੈ ਅਤੇ ਮੈਂ ਵੀ ਇਕ ਤਕਰੀਰ broadcast ਕੀਤੀ ਸੀ । ਅਸੀਂ ਹਰ ਸੰਭਵ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਇਸ ਕਰਜ਼ੇ ਦੇ purpose ਦਸ ਰਹੇ ਹਾਂ ਅਤੇ ਇਸ ਨੂੰ ਵਧ ਤੋਂ ਵਧ publicity ਦੇ ਰਹੇ ਹਾਂ ।

ਪੰਡਿਤ ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਸ਼ਰਮਾ : ਕੀ ਵਜ਼ੀਰ ਸਾਹਿਬ ਬਰਾਏ ਮੇਹਰਬਾਨੀ ਫਰਮਾਯੋਗੇ ਕਿ National Plan Loan ਦੀ ਫਰਾਹਮੀ ਦੇ ਬਾਰੇ ਸੋ Union Government ਨੇ ਜੋ instructions State Governments ਕੋ ਦੀ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਕਾਮ ਦੇ ਲਿਏ ਸਰਕਾਰੀ machinery ਕੋ ਪੂਰੇ ਤੌਰ 'ਤੇ utilize ਕੀਆ ਜਾਏ, ਉਸ 'ਚੋ 'ਤਰਗੀਬ' ਦੀ item ਹੈ ਉਸ ਕਾ ਕੀ ਸਤਰਲੇਖ ਹੈ ?

ਮੰਤ੍ਰੀ : “ਤਰਗੀਬ” ਦਾ ਅਰਥ “ਪਰੇਰਨਾ” ਹੈ। “ਸਰਕਾਰੀ” ਮਸ਼ੀਨਰੀ (machinery) ਤੋਂ ਕੰਮ ਲੈਣ ਦਾ ਮਤਲਬ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਮੀਟਿੰਗਾਂ ਕੀਤੀਆਂ ਜਾਣ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਮੀਟਿੰਗਾਂ ਵਿਚ ਡਿਪਟੀ ਕਮਿਸ਼ਨਰ ਅਤੇ ਜਿਥੇ ਉਹ ਨਾ ਹੋਵਣ ਉਥੇ ਵੱਡੇ ਅਫਸਰ preside ਕਰਨ ਅਤੇ ਤਕਰੀਰਾਂ ਕਰਨ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਇਸ ਕਰਜ਼ੇ ਦਾ ਭਾਵ ਦਸਣ ਅਤੇ ਤਕਰੀਰਾਂ ਕਰਨ। ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਪਰੇਰਨਾ ਕਰਨ ਕਿ ਇਸ ਕਰਜ਼ੇ ਵਿਚ ਖੁਲੇ ਗੱਫੇ ਦਿਓ।

ਪੰਡਿਤ ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਸ਼ਰਮਾ : ਕੀ ਮੈਂ ਮਿਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਸੇ ਦਰਿਆਫਤ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹਾਂ ਕਿ Red Cross ਦੇ ਕਰਜ਼ੇ ਆਰ ਇਸ National Plan Loan ਦੀ ਵਸੂਲੀ ਦੇ ਤਰੀਕਿਆਂ 'ਚੋਂ ਕੋਈ ਫਰਕ ਹੈ ?

Mr. Speaker : This question does not arise.

ਪੰਡਿਤ ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਸ਼ਰਮਾ : ਮੈਂ Red Cross ਦੀ ਗੱਲ ਕੋ ਵਾਪਿਸ ਲੈਂਦਾ ਹਾਂ ਆਰ ਏਕ ਆਰ supplementary ਪੁੱਛਦਾ ਹਾਂ। ਕੀ ਕੋਸੀ ਕਰਜ਼ੇ ਕੋ ਤਰਗੀਬ ਦੇਕਰ ਇਕੱਠਾ ਕਰਨੇ ਆਰ ਇਸ ਸੇ ਪਹਲੇ ਅੰਗਰੇਜ਼ਾਂ ਦੇ ਜ਼ਮਾਨੇ 'ਚੋਂ ਕਰਜ਼ਾ ਇਕੱਠਾ ਕਰਨੇ ਦੇ ਤਰੀਕਿਆਂ 'ਚੋਂ ਕੋਈ ਫਰਕ ਹੈ ?

ਮੰਤ੍ਰੀ : ਪਹਿਲੀ ਤੇ ਹੁਣ ਦੀ ਹਕੂਮਤ ਵਿਚ ਜ਼ਮੀਨ ਅਸਮਾਨ ਦਾ ਫਰਕ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਤੇ ਹੁਣ ਦੇ ਕਰਜ਼ੇ ਇਕੱਠੇ ਕਰਨ ਦੇ ਤਰੀਕਿਆਂ ਵਿਚ ਜ਼ਮੀਨ ਅਸਮਾਨ ਦਾ ਫਰਕ ਹੈ। ਇਹ ਕਰਜ਼ਾ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਭਲਾਈ ਲਈ ਹੈ, ਕੌਮ ਦੀ ਭਲਾਈ ਲਈ ਹੈ ਅਤੇ ਉਹ ਗ਼ੈਰ ਦੀ ਹਕੂਮਤ ਸੀ ਤੇ ਕਰਜ਼ਾ ਹੋਰਾਂ ਦੀ ਭਲਾਈ ਲਈ ਸੀ।

ਸਰਦਾਰ ਚੰਨਣ ਸਿੰਘ ਧੂਤ : ਕੀ ਇਹ ਠੀਕ ਹੈ ਕਿ ਯੂਨੀਅਨ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਨੇ ਸਟੇਟ ਗਵਰਨਮੈਂਟਸ ਲਈ ਕਰਜ਼ੇ ਦੇ ਕੋਟੇ ਮੁਕੱਰਰ ਕੀਤੇ ਹਨ ਅਤੇ ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ State Governments ਨੇ ਅਗੇ ਹਰ ਜ਼ਿਲ੍ਹੇ ਲਈ ਕੋਟਾ ਮੁਕੱਰਰ ਕਰ ਦਿਤਾ ਹੈ ਕਿ ਐਨਾ ਰੁਪਿਆ ਕਰਜ਼ਿਆਂ ਵਜੋਂ ਇਕੱਠਾ ਕਰੇ।

ਮੰਤ੍ਰੀ : ਅਜਿਹੀ ਕੋਈ ਗੱਲ ਨਹੀਂ। ਪਰ ਕਿਉਂਕਿ ਕਰਜ਼ੇ ਨੂੰ ਇਕੱਠਾ ਕਰਨ ਲਈ ਕੋਈ ਨ ਕੋਈ ਪਲਾਨ (plan) ਤਾਂ ਬਣਾਣੀ ਸੀ ਇਸ ਲਈ ਜ਼ਿਲ੍ਹਿਆਂ ਦੇ ਅਧਿਕਾਰੀਆਂ ਨੂੰ ਕਿਹਾ ਗਿਆ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਐਨਾ loan ਇਕੱਠਾ ਕਰਨ ਅਤੇ ਤਹਿਸੀਲਾਂ ਵਾਲੇ ਐਨਾ ਇਕੱਠਾ ਕਰਨ। ਇਸ ਨਾਲ ਕਿਸੇ ਤੇ ਦਬਾ ਨਹੀਂ ਪਾਇਆ ਗਿਆ ਸਗੋਂ ਇਹ ਕਿਹਾ ਗਿਆ ਹੈ ਕਿ ਕਰਜ਼ਾ ਇਕੱਠਾ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਉਤਸ਼ਾਹ ਨਾਲ ਕੰਮ ਕਰਨ ਤਾਂ ਜੋ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਹਿੰਮਤ ਨਾਲ ਕਰਜ਼ਾ ਇਕੱਠਾ ਹੋ ਜਾਵੇ। ਅਸੀਂ ਕਰਜ਼ੇ ਨੂੰ ਇਕੱਠਾ ਕਰਨ ਲਈ ਕੋਈ ਗੱਲ ਤਰੀਕਾ ਇਖਤਿਆਰ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ। ਅਸੀਂ ਤਾਂ ਲੋਕ ਰਾਜ ਅਤੇ ਜਨਤਾ ਦੇ ਰਾਜ ਦੇ ਤਰੀਕਿਆਂ ਨੂੰ ਹੀ ਅਸਲੀ ਤਰੀਕਾ ਸਮਝਦੇ ਹਾਂ।

ਸਰਦਾਰ ਚੰਨਣ ਸਿੰਘ ਧੂਤ : ਕੀ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਦੀ ਇਹ ਪਾਲਿਸੀ (policy) ਹੈ ਕਿ ਸਰਕਾਰੀ ਮੁਲਾਜ਼ਮਾਂ ਤੋਂ National Plan Loan ਲਈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਤਨਖਾਹਾਂ ਦਾ ਕੋਈ ਹਿੱਸਾ ਲਿਆ ਜਾਵੇ ਜਾਂ ਇਹ ਉਨ੍ਹਾਂ ਤੇ ਛੱਡ ਦਿਤਾ ਗਿਆ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਇਸ ਕਰਜ਼ੇ ਲਈ ਕੁਝ ਹਿੱਸਾ ਪਾਣ ਭਾਵੇਂ ਨਾ ਪਾਣ। ੫

Mr. Speaker : This does not arise.

ਵਿਕਾਸ ਮੰਤਰੀ : ਮੈਂ ਆਪਣੇ ਮਿਤਰਾਂ ਨੂੰ ਇਹ ਦਸ ਦੇਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਕਿਸੇ ਸਰਕਾਰੀ ਅਫਸਰ ਜਾਂ ਮੁਲਾਜ਼ਮ ਨੂੰ ਕਰਜ਼ੇ ਸਬੰਧੀ ਜਬਰੀ ਤਨਖਾਹ ਦੇਣ ਲਈ ਨਹੀਂ ਕਿਹਾ ਜਾਵੇਗਾ। ਇਹ ਤਾਂ ਕੌਮੀ ਕੰਮ ਹੈ ਅਤੇ ਕੌਮ ਦੀ ਭਲਾਈ ਦਾ ਕੰਮ ਹੈ। ਇਸ ਵਿਚ ਹਰੇਕ ਸਰਕਾਰੀ ਕਰਮਚਾਰੀ ਆਪਣਾ ਫਰਜ਼ ਸਮਝਕੇ ਕਰਜ਼ਾ ਦੇ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਇਥੇ ਸਰਕਾਰੀ ਮੁਲਾਜ਼ਮ ਜਾਂ ਗ਼ੈਰ-ਸਰਕਾਰੀ ਮੁਲਾਜ਼ਮ ਹੋਣ ਦਾ ਕੋਈ ਸੁਆਲ ਨਹੀਂ ਅਤੇ ਕਿਸੇ ਸਰਕਾਰੀ ਮੁਲਾਜ਼ਮ ਨਾਲ ਜ਼ਿਆਦਤੀ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇਗੀ। ਜੇ ਕਰਜ਼ਾ ਦੇ ਸਕਦਾ ਹੈ ਦੇਵੇ ਕਿਉਂ ਜੋ ਇਹ ਕੌਮ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਆਪਣੇ ਭਲੇ ਲਈ ਵਰਤਿਆ ਜਾਣਾ ਹੈ।

ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਕਿਸ਼ਨ : ਕੀ ਕਿਸੇ ਸੰਤਰੀ ਸਾਹਿਬ ਕਰਮਚਾਰੀ ਕਿ Union Government ਨੇ ਇਸ National Loan ਦੀ ਕੋਈ ਖਾਸ limit ਸੁਕਰੰਦ ਕੀ ਹੈ? ੪੦

ਅਰਥ ਮੰਤਰੀ : ਜੀ ਨਹੀਂ।

ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਕਿਸ਼ਨ : ਆਪਕਾ target ਕੀ ਹੈ ? ੪੧

ਮੰਤਰੀ : ਸਾਡਾ target ਦੇਸ਼ ਅਤੇ ਕੌਮ ਦੇ ਵਧ ਤੋਂ ਵਧ ਭਲੇ ਲਈ ਹੈ ਅਤੇ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਧ ਤੋਂ ਵਧ National Loan ਇਕੱਠਾ ਹੋਵੇਗਾ ਉਹ ਕੌਮ ਦੇ ਭਲੇ ਲਈ ਵਰਤਿਆ ਜਾਵੇਗਾ।

ਸ਼੍ਰੀ ਸੂਰਜ ਚੰਦ ਜੈਨ : ਕੀ ਵੱਡੀ ਸਾਹਿਬ ਫਰਮਾਯੋਗੇ ਕਿ ਜੋ ਗ਼ੈਰ-ਸਰਕਾਰੀ ਲੋਗ ਇਸ National Loan ਦੀ ਇਕੱਠਾ ਕਰਨੇ ਦੇ ਲਿਏ ਦੇਹਾਤੀ ਇਲਾਕਿਆਂ ਤੋਂ ਜਾਨਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਨ ਕੀ ਉਨ ਦੇ ਲਿਏ ਟ੍ਰਾਂਸਪੋਰਟ (Transport) ਦਾ ਪ੍ਰਬੰਧ ਕੀਤਾ ਜਾਵੇਗਾ? ੪੨

ਮੰਤਰੀ : ਮੈਂ ਆਪਣੇ ਦੇਸ਼ ਜੈਨ ਸਾਹਿਬ ਦਾ ਧਨਵਾਦੀ ਹਾਂ ਕਿ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਸਰਕਾਰ ਦਾ ਧਿਆਨ ਇਸ ਪਾਸੇ ਵਲ ਦਿਵਾਇਆ ਹੈ। ਅਸੀਂ ਅਜਿਹੇ ਆਦਮੀਆਂ ਲਈ ਟ੍ਰਾਂਸਪੋਰਟ ਦਾ ਪ੍ਰਬੰਧ ਕਰਾਂਗੇ

ਸਰਦਾਰ ਸਰੂਪ ਸਿੰਘ : ਕੀ ਚੀਫ ਮਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਦਸਣਗੇ ਕਿ ਇਸ ਕਰਜ਼ੇ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਲਈ ਸਰਕਾਰੀ ਮਸ਼ੀਨਰੀ ਨੂੰ ਵਰਤੋਂ ਵਿਚ ਲਿਆਉਣ ਨਾਲ ਇਸ ਸੰਬੰਧੀ ਲੋਕਾਂ ਵਿਚ ਕੁਝ ਉਤਸ਼ਾਹ ਵਧ ਗਿਆ ਹੈ ਜਾਂ ਨਹੀਂ? ੪੩

ਵਿਕਾਸ ਮੰਤਰੀ : ਉਤਸ਼ਾਹ ਵਧਿਆ ਹੈ।

ਸਰਦਾਰ ਸਰੂਪ ਸਿੰਘ : ਇਸ ਦਾ ਕੀ ਸਬੂਤ ਹੈ? ੪੪

ਵਿਕਾਸ ਮੰਤਰੀ : ਸਬੂਤ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਲੋਕ ਜਲਸੇ ਕਰਦੇ ਹਨ ਮੀਟਿੰਗਾਂ ਕਰਦੇ ਹਨ, ਖੁਸ਼ੀਆਂ ਮਨਾਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਵਧ ਚੜ੍ਹਕੇ National Loan ਵਿਚ ਹਿੱਸਾ ਪਾਉਂਦੇ ਹਨ, ਮੈਂ ਤਾਂ ਆਪਣੇ ਮਿਤਰਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਕਹਾਂਗਾ ਕਿ ਉਹ ਵੀ ਉੱਦਮ ਕਰਨ, ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਉਤਸ਼ਾਹ ਦੇਣ ਅਤੇ ਆਪ ਵੀ ਇਸ ਕਰਜ਼ੇ ਵਿਚ ਹਿੱਸਾ ਪਾਣ।

CLASSICAL TEACHERS

***3576. Pandit Shri Ram Sharma :** Will the Minister for Education be pleased to state —

- (a) whether the classical teachers are pressing the Government for acceptance of their demands ; if so, the nature of their demands and the action Government proposes to take thereon ;
- (b) the present position of the classical teachers regarding their pay and grades as compared with the English teachers before the year 1942 and at present ?

Shri Jagat Narain : (a) Yes, their present demands are :—

- (i) Better start .. not less than Rs 80 per mensem
- (ii) Better rate of increment .. not less than Rs 5 per mensem in third grade Rs 8 per mensem in the second grad and Rs 10 per mensem in the first grade.
- (iii) Higher maximum .. not less than Rs 250.
- (iv) Benefit of service in the matter of refixation of pay in the proposed new scales.

These demands are under examination.

(b) A statement showing the comparative position is given below.

Statement showing the grades of pay of teachers (Men) before and after 1st April, 1931

				<i>Men's Branch</i>	
				Rs	
<i>Prior to 1st April, 1931</i>					
Anglo-Vernacular	..	Class I	..	200—10—250.	
		Class II	..	140—10—190.	
		Class III	..	110—5—135.	
		Class IV	..	80—4—100.	
		Class V	..	55—3—70.	
Vernacular	..	Class I	..	140—10—190.	
		Class II	..	110—5—135.	
		Class III	..	80—4—100.	
		Class IV	..	55—3—70.	
		Class V	..	35—3—50.	
<i>Grades on 1st April, 1931</i>					
Anglo-Vernacular	..	As stated above	..	} Less 15 per cent cut.	
Vernacular	..	Ditto	..		

[Minister for Education]

Grades as on 1st April, 1937

Anglo-Vernacular	.. Class I	Rs .. 200—10—250.	
		150—8—190	(New entrants).
	.. Class II	.. 140—10—190.	
		105—7—140	„
	.. Class III	.. 110—5—135.	
		80—4—100	„
	.. Class IV	.. 80—4—100.	
		65—3—80	„
	.. Class V	.. 55—3—70.	
		45—2—55	„
Vernacular	.. Class I	.. 140—10—190	
		110—5—135	„
	.. Class II	.. 110—5—135	
		80—4—100	„
	.. Class III	.. 80—4—100	
		65—3—80	„
	.. Class IV	.. 55—3—70	
		45—2—55	„
	.. Class V	.. 35—3—50	
		30—2—40	„

Grades as on 1st April, 1942

Anglo-Vernacular	..	As on 1st April, 1937.
Vernacular	.. Class I	Rs .. 140—10—190.
	.. Class II	.. 105—7—140.
	.. Class III	.. 40—3—70-P/2—3—85-P/1—4—105.

Grades as on 1st April, 1946

Anglo-Vernacular	.. Class I	.. 230—10—270/10—300.
	.. Class II	.. 150—10—190/10—220.
	.. Class III	.. 90—5—150.
Vernacular	.. Class I	.. 140—10—220.
	.. Class II	.. 105—7—140.
	.. Class III	.. 50—3—80/4—100.

पंडित श्री राम शर्मा : गवर्नमेंट ने आज मुझे जो figures दी हैं उन की बिना पर मैं पूछना चाहता हूं कि यह figures उस वक्त की हैं जब अंग्रेजों का राज्य था। अंग्रेजी टीचरों और वर्नेकुलर टीचरों की तन्खवाहों में $2\frac{1}{2}$ गुना का फर्क था और अब यह फर्क बढ़ा कर double से ज्यादा हो गया है। इन टीचरों के ग्रेडों (grades) में $2\frac{1}{2}$ गुना का फर्क था जो आज और ज्यादा हो गया है। मैं यह अर्ज करना चाहता हूं कि अब जब कि अंग्रेजी की वह importance नहीं रही इन को व्यों हिंदी पंजाबी टीचरों पर preference दी जा रही है ?

मंत्री : मैं तो पहले ही कह चुका हूं कि इस बात पर गौर हो रहा है।

श्री दयादा राम : मैं मनिस्टर साहिब से पूछना चाहता हूं कि हर मामले में बिना सोचा है कि गौर कर रहे हैं कि इस "गौर कर" की बिनी व लंभी मिलाए है।

पंडित श्री राम शर्मा : मैं शिक्षा मंत्री जी से यह मालूम करना चाहता हूं कि यह जो गौर किया जा रहा है अब जब कि अंग्रेजी राज्य में अंग्रेजी जरूरी थी.....

अध्यक्ष महोदय : आप सवाल को repeat कर रहे हैं।

पंडित श्री राम शर्मा : मैं तो यह कह रहा था कि वजीर साहिब ने अभी फरमाया है कि मामला ज़ेर-गौर है। लेकिन यह fact है कि अंग्रेजी और Vernacular टीचरों में disparity दिन बदिन बढ़ती जा रही है तो मैं पूछना चाहता हूं कि सरकार अब किस बात पर गौर कर रही है।

अध्यक्ष महोदय : इसी बात का जवाब तो उन्होंने दिया है।

GRANT-IN-AID TO PRIVATE COLLEGES IN THE STATE

***3585. Shri Ram Kishan :** Will the Minister for Education be pleased to state —

- (a) the total grant-in-aid proposed to be given by the Government to private Colleges in the State during the year 1954-55 ;
- (b) whether the Government has laid down any principles regarding the disbursement and utilization of the said grant ; if so, what ?

Shri Jagat Narain : (a) 5 lacs.

(b) The rules for its distribution are under preparation.

श्री राम किशन : वजीर साहिब ने फरमाया है कि grants के बारे में rules बनाये जा रहे हैं। क्या grants देते वक्त गवर्नमेंट की तरफ से कोई ऐसी instructions दी गई हैं कि इन को किस तरह इस्तेमाल किया जाए ?

मंत्री : मैंने तो यह अर्ज किया है कि पहले दो लाख रुपया दिया जाता था, अब उस में ३ लाख बढ़ा कर ५ लाख कर दिया गया है और इस सिलसिले में Principals' Union और Professors' Union वालों से पूछा है कि आप सोच विचार करके बताएं कि इन grants को किस तरीके से दिया जाए।

श्री राम किशन : वजीर साहिब ने कहा है कि ५ लाख की grants दी गई हैं । . . .

मंत्री : दी नहीं गई, अभी देनी हैं ।

श्री राम किशन : क्या Private Colleges की तरफ से कोई मांग की गई है कि उन्हें इस तरीके से grants दी जाएं ?^{११}

मंत्री : हमने Principals' Union और Professors' Union से पूछा है कि दोनों मिल कर हमें बतायें कि किस तरीके से उन्हें grants दी जायें ।

श्री राम किशन : क्या University Senate ने इस बारे में कोई resolution पास किया था और University Committee ने 1949 में कोई recommendations भी की थीं ?^{१२}

मंत्री : इस सवाल के लिये तो ताज़ा नोटिस चाहिये ।

श्री मूल चन्द जैन : क्या मैं वजीर साहिब से पूछ सकता हूं कि क्या वह grants मनजूर करते वक्त Backward इलाकों का ख़ास ख़याल रखेंगे ?^{१३}

मंत्री : मैं अर्ज कर चुका हूं कि इन दोनों Unions वालों से कहा गया है कि हमें इस बारे में अपनी स्कीम दें । आप उन लोगों से मिलें ताकि वह इस चीज़ का अपनी स्कीम बनाते समय विशेष ख़याल रखें ।

सरदार चंनू सिंह पट्ट : बी recognised कालज़ां नुं बेसी भुक्क़रा रकम दिती ज़ांदि है ज़ां बरिआ भुर्बिआ रुपिआ उनुं विर उकसीम कर दिंता ज़ांदा है ।^{१४}

मंत्री : उन का ख़र्च और घाटा देख कर grants दी जाती हैं ।

सरदार चंनू सिंह पट्ट : बी वजीर साहिब recognised कालज़ां नुं permanent aid उनुं लिआठ वासते तਿਆर हन ?^{१५}

मंत्री : Permanent aid का क्या मतलब है ?

सरदार चंनू सिंह पट्ट : बी उनुं नुं permanent उेर ते एकर भुक्क़रा रकम देठ दा इंतज़ाम कीता ज़ावेगा तं कि उनुं नुं पता रहे कि किंता रुपिआ उनुं नुं मिलेता है ?^{१६}

मंत्री : यह रकम तो सब कालजों के मुतअलक पेश होने वाली स्कीम के मुताबिक दी जायेगी ।

श्रीमती सीता देवी : वजीर साहिब ने कहा है कि Principals' Union और Professors' Union वाले मिल कर स्कीम तैयार करेंगे, क्या उन में Women's Colleges वाले भी शामिल हैं ?

मंत्री : जी हाँ ।

श्रीमती सीता देवी : क्या ऐसे College भी हैं जिन को permanent aid मिल रही है ?^{१७}

मंत्री : Aid हासिल करने का सब कालजों को हक है ।

प्रोफेसर शेर सिंह : यह जो पांच लाख की grant है इसमें से किस को कितना देना है । क्या इस बारे में Professors' Union ने कोई hint दिया है ? १७

मंत्री : पहले Private Colleges को सिर्फ २ लाख दिया जाता था । Principals' Union वाले हमारे पास आए और कहा कि इसे बढ़ाकर 6 लाख कर दी जाए । हमने सब बातों पर गौर कर के 5 लाख देने का फैसला किया और उन से कहा कि वे कोई स्कीम पेश करें जिस के मुताबिक सब को uniform grant दी जा सके । फिर उन से यह भी कहा गया कि Professors' Union से भी बात कर लें और दोनों मिल कर स्कीम पेश करें ।

प्रोफेसर शेर सिंह : क्या गवर्नमेंट ने कोई सिद्धांत बनाया है जिस के मुताबिक grants दी जायेंगी ? १८

मंत्री : हमने Union वालों से कह दिया है कि जो स्कीम वह पेश करेंगे उस के मुताबिक अमल किया जायेगा ।

प्रोफेसर शेर सिंह : अलग अलग कालाजों को funds allocate करने के लिये कैसे पता चलेगा कि किसे कितनी जरूरत है ? इस बारे में सिद्धांत क्या है ? १९

मंत्री : Grant दो तरीकों से दी जा सकती है । एक तो कालिज की आमदन और खर्च देख कर उस का घाटा मालूम कर लिया और उस की बिना पर grant दे दी । दूसरे staff और उस का खर्च देख कर घाटा पूरा कर दिया । अब Principals' Union ने कहा है कि वह line of action बतायेंगे । पस अगर वह staff की बिना पर कहेंगे तो हम staff की list मंगावेंगे और salaries वगैरा का हिसाब देख कर pro rata grants दे देंगे । और अगर उन्होंने आमदन और खर्च की बिना पर कहा तो खर्च की list मंगवा कर उस की बिना पर grants prorata दे दी जायेंगी ।

ADJOURNMENT MOTION

अध्यक्ष महोदय : सरदार चानन सिंह की तरफ से एक *Adjournment Motion आई है । अगर यह motions इसी रफतार से आती रहीं तो हमें इस बारे में कोई तरीका सोचना पड़ेगा । इन का मुद्दा यह है कि पंजाब में दफा 144 लगाने और जिला गुरदासपुर में मुज्जारों पर जो सखती हो रही है उस पर बहस की जाये । मैं दफा 144 के बारे में 3 दिन से rulings देता रहा हूं । पहली बात तो यह थी कि इस बारे में motions पहले ही दिन आनी चाहियें थीं । अगले दो दिनों में फिर identical motions आईं उन के बारे में भी यही कहा गया । फिर यह ऐसा मसला है जो ordinary law से ताल्लुक रखता है ।

*Sardar Chanan Singh, M. L. A., to ask for leave to make a motion for the adjournment of the business of the House to discuss a definite matter of urgent public importance, namely, the serious situation arising out of imposition of Section 144 and other repressive measures resorted to by the Police and Revenue officials in order to help the land lords in the large scale evictions of the tenants in the districts of Gurdaspur, Ferozepore and Hissar.

[अध्यक्ष महोदय]

इसके अलावा पैं एक नया point पेश करता हूं। यह दफा 144 लगाने का order एक Executive order नहीं होता बल्कि Judicial होता है और इसे अदालत में challenge किया जा सकता है। इस लिये इस बारे में adjournment motion पेश नहीं हो सकती।

सरदार चंनट सिंघ पट्ट : सपीकर साहिब, मै' एह बिगुला चहुंदा हां कि एह पंजाब विच हर बां उे लागू है। असल गल एह है कि सरकार opposition नूं दबाटा चहुंदी है।

विकास मंत्री : हरगिज नहीं।

सरदार चंनट सिंघ पट्ट : एह बिलकुल ठीक है।

अध्यक्ष महोदय : आप मेरे ruling पर comment नहीं कर सकते।

(At this stage the members of the Communist Party walked out of the House)

LEAVE OF ABSENCE

Mr. Speaker : I have received the following application from Shri D. D. Puri, M.L.A.

“I came abroad on business for a short stay but am having to prolong it on grounds of health. I understand a Session of the Assembly has been summoned for the 17th instant. Please excuse my absence from this Session.”

Question is—

That the leave asked for be granted.

The leave was granted.

RESOLUTIONS

AMENDING OF EAST PUNJAB UNIVERSITY (AMENDMENT) ACT, 1948, TO EXTEND TO SHASTRIS THE RIGHT TO VOTE AT ELECTIONS TO THE PUNJAB UNIVERSITY SENATE

Shri Rala Ram (Mukerian) : Sir, I beg to move—

This Assembly recommends to the Government that the East Punjab Universitys (Amendment) Act, 1948, be further amended so as to extend to all Shastri the right to vote at elections to the Punjab University Senate.

अध्यक्ष महोदय ! संस्कृत ही हमारी एक ऐसी प्राचीन भाषा है जिस के द्वारा हमारी तमाम regional languages की पालना हुई है और अब भी यही भाषा उन को बेहतर बना कर उन्नति की तरफ ले जा सकती है । यदि हम चाहते हैं कि पंजाबी एक अच्छी भाषा बने तो हमें संस्कृत से फायदा उठाना चाहिये । बंगला, महाराष्ट्र, गुजराती, तामिल आदि सब भाषाओं ने संस्कृत के द्वारा ही उन्नति प्राप्त की है । यह सब भाषाएं संस्कृत पर आधारित हैं । इस लिये अब जब कि भारत स्वतन्त्र हो गया है संस्कृत पढ़ाने वालों को वह मान प्राप्त होना चाहिये जो अंग्रेज के राज्य में अंग्रेजी पढ़ाने वालों को दिया जाता था । अंग्रेज को यह बात अच्छी लगती थी कि अंग्रेजी का बोल बाला हो और अंग्रेजी पढ़े हुए लोगों का मान हो । अंग्रेजी पढ़े हुए लोगों की अजारादारी के कारण 100 साल से कोई संस्कृत पढ़ा हुआ शास्त्री सिडीकट तो क्या सनेट के दरवाजे तक पहुंच नहीं पाया हालांकि कोई भी इस बात से इन्कार नहीं कर सकता कि एक शास्त्री को बहुत ज्यादा research करनी पड़ती है । लेकिन चूंकि उस पर अंग्रेजी की मुहर नहीं होती वह सनेट में शामिल नहीं हो सकता है । हैरानी यह है कि स्वतन्त्र भारत में भी यह हालत है । मैं समझता हूं कि संस्कृत पढ़ाने वालों का दर्जा (status) अवश्य ऊंचा किया जाना चाहिये । यह दो तरीकों से हो सकता है । पहला तो यह है कि हमारे स्कूलों, कालेजों और यूनिवर्सिटियों में संस्कृत पढ़ाने वालों को यही वेतन मिले जो दूसरों को मिलता है । लेकिन इस समय मैं इस सवाल में नहीं जाना चाहता ।

दूसरा कारण यह है कि हमारे देश की educational policy बनाने में संस्कृत पढ़े हुए लोगों का हाथ अवश्य होना चाहिये । मैं मानता हूं कि पश्चिमी शिक्षा बहुत जरूरी है । क्योंकि हम वैज्ञानिक शिक्षा की उपेक्षा नहीं कर सकते । लेकिन बात यह है कि सारी शिक्षा को भारतीय रूप देना बहुत आवश्यक है । इस लिये हमें उन लोगों का दर्जा जिन्होंने संस्कृत की हमेशा रक्षा की है और जिन्होंने भारतीय संस्कृति को सदैव कायम रखा है ऊंचा करना चाहिये । यह तब हो सकता है कि यदि अंग्रेजी पढ़े लिखों की अजारादारी को खत्म किया जाये और शास्त्रियों को सनेट की elections में मताधिकार मिले जैसे B. A. वालों को होता है । अध्यक्ष महोदय ! मैं आप के द्वारा यह कहना चाहता हूं कि जहां तक literary culture का सम्बन्ध है मैं दावे से कह सकता हूं कि शास्त्री में एक Graduate की अपेक्षा literary taste कहीं ज्यादा होता है । वह जानता है कि रस क्या है और literary standards क्या होते हैं । शास्त्री की डिग्री लेने से पहले उसे बहुत सी शिक्षा प्राप्त करनी होती है । पहले मेरा ख्याल था कि इस प्रस्ताव में प्रभाकर और ज्ञानी भी शामिल कर लूं । लेकिन उन्हें मैंने इस लिये शामिल नहीं किया क्योंकि पांच जमायतें ही पास करने के बाद यह इम्तहान दिये जा सकते हैं । शास्त्री के बारे में यह नहीं कहा जा सकता । शास्त्री की डिग्री लेने में 10 या 12 साल लग जाते हैं और step by step चलना पड़ता है । शास्त्री से पहले विशारद का इम्तहान पास करना होता है ।

वक्त आयेगा कि जब ज्ञानी और प्रभाकर को भी अधिकार देना होगा लेकिन मैं समझता हूं कि वह समय थोड़ी देर के बाद आयेगा । शास्त्री जो हैं उन का literary standard होता है और उन्हें इस सम्बन्ध में काफी training होती है इस लिये अगर हम

[श्री रत्ना राम]

उन्हें मत अधिकार दे दें तो हम किसी प्रकार से पंजाब यूनिवर्सिटी को खतरे में नहीं डालते। हां, अध्यक्ष महोदय, यह बात जरूर है कि संस्कृत पढ़े हुए चालाक नहीं होते और सरल वृत्ति होना कोई पाप नहीं है। यह लोग नाजायज़ फायदा कम उठाते हैं, और कोई दोष उन में नहीं होता। इस बात को समझते हुए कि वह अंग्रेजी पढ़े हुए व्यक्तियों की अपेक्षा चालाक कम होते हैं मैं समझता हूं कि यह वोट न देने की **disqualification** नहीं होनी चाहिए। यदि आप इस बात को देखें कि जिन्होंने शास्त्री पास की है, अध्यक्ष महोदय, उन का ऋण हमारे कंधों पर है। किन्तु हालात में उन्होंने संस्कृत की शिक्षा सूखे टुकड़े खा कर हासिल की जब अंग्रेज़ उस पर एक पाई भी खर्च नहीं करना चाहते थे।

जैसे कि यहां पंजाब यूनिवर्सिटी है, इसी तरह से इस से पहले टंडला में शास्त्री पढ़ाने की **institution** थी। संस्कृत में **M.A.** जिन्होंने करना होता था वे अवश्य वहां जाते थे। अध्यक्ष महोदय यह बात मैं आप के द्वारा मंत्रिमंडल के नोटिस में लाना चाहता हूं कि जो लोग संस्कृत में **M.A.** पास करते थे वे महसूस करते थे कि जब तक वे शास्त्री न होंगे उन में संस्कृत समझने की काबलियत नहीं आ सकती। मेरे पास इस सिलसिले में कई मिसालें हैं। श्री दीना बन्धू जिन्होंने **M.A.** संस्कृत में **record beat** किया उन्होंने महसूस किया कि शास्त्री की परीक्षा पास करनी चाहिये। जहां उन्होंने **M.A.** संस्कृत की फिर उन्होंने शास्त्री की परीक्षा पास की। इस लिये संस्कृत की शिक्षा प्राप्त करने के लिये अंग्रेज़ों ने लोगों को अंधकार में रखा था हमारा उन के प्रति कर्तव्य भी है कि अब हम उन को मान का दर्जा दें जिस के वे अधिकारी हैं। इस लिये मैं समझता हूं कि काबलियत के लिहाज़ से, सेवा के लिहाज़ से संस्कृत जानने वाले अंग्रेजी जानने वालों का ही दर्जा रखते हैं। अध्यक्ष महोदय आप को मालूम ही है कि पंजाब के खाते पीते लोग अपने लड़के लड़कियों को संस्कृत की तरफ जाने नहीं देते थे। हमारे शिक्षा मंत्री के पूज्य पिता की मिसाल **exceptional** थी। वह समझते थे कि वह व्यक्ति जो अच्छे खाते पीते थे उन के दिल में यह ख्याल है कि अपने बच्चों को संस्कृत पढ़ाने की जरूरत नहीं। उन जैसे व्यक्तियों ने संस्कृत को इस देश में जीवित रखा। या संस्कृत को जीवित रखा उन लोगों ने जिन्होंने सूखे टुकड़े खा कर शास्त्री आदि की परीक्षाएं पास कीं और संस्कृत का प्रचार किया। इन शब्दों के साथ मैं यह प्रस्ताव प्रस्तुत करता हूं और मुझे आशा है कि हाऊस इस छोटी सी मेरी प्रार्थना को स्वीकार करेगा। मैं समझता हूं कि जब शास्त्री पास व्यक्ति **literary attainment** के लिहाज़ से किसी तरह भी **B.A.** से कम नहीं हैं तो उन्हें यूनिवर्सिटी सैनेट में अलैक्शन में मत अधिकार का अवसर मिलना चाहिये जैसा कि **graduates** को मिलता है।

Mr. Speaker : Motion moved—

This Assembly recommends to the Government that the East Punjab University (Amendment) Act, 1948, be further amended so as to extend to all Shastris the right to vote at elections to the Punjab University Senate.

There is an amendment to this Resolution which stands in the name of Sardar Achhar Singh Chhina. I call upon him to move it.

Sardar Achhar Singh Chhina (Ajnala) : Sir, I beg to move—

That in line 3, between the words "Shastris" and "the right" the words "and Gianis" be inserted.

ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ, ਇਹ ਬੜੀ ਖੁਸ਼ੀ ਦੀ ਗੱਲ ਹੈ ਕਿ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਰਲਾ ਰਾਮ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਇਹ ਰੈਜ਼ੋਲਿਊਸ਼ਨ ਹਾਊਸ ਦੇ ਸਾਹਮਣੇ ਲਿਆਂਦਾ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਆਪਣੀ ਤਕਰੀਰ ਵਿਚ ਕਿਹਾ ਹੈ ਕਿ ਹਿੰਦੀ ਨੂੰ ਵੀ ਉਹੀ ਮਾਣ ਦਾ ਦਰਜਾ ਦੇਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਜਿਹੜਾ ਅਜਕਲ ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਨੂੰ ਮਿਲਿਆ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਇਸ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਮੈਂ ਸਮਝਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਸਾਹਿਬ ਇਹ ਮੰਨਣਗੇ ਕਿ ਇਸ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਸੂਬੇ ਵਿਚ ਜਿਥੇ ਪੰਜਾਬੀ ਬੋਲੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਉਥੇ ਗਿਆਨੀ ਨੂੰ ਬੀ. ਏ. ਦੇ ਬਰਾਬਰ ਸਮਝਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਜੋ ਸਾਡੀਆਂ ਆਪਣੀਆਂ ਜ਼ਬਾਨਾਂ ਅਰਥਾਤ ਹਿੰਦੀ ਤੇ ਪੰਜਾਬੀ ਵੀ ਉਹੀ ਦਰਜਾ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਜਿਹੜਾ ਇਸ ਵੇਲੇ ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਮੈਂ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਸਾਹਿਬ ਅਤੇ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ ਕਰਾਂਗਾ ਕਿ 'ਸ਼ਾਸਤਰੀ ਪਾਸ' ਦੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਬਾਅਦ 'ਗਿਆਨੀ ਪਾਸ' ਦੇ ਸ਼ਬਦ ਵੀ ਆਪਣੇ ਰੈਜ਼ੋਲਿਊਸ਼ਨ ਵਿਚ ਸ਼ਾਮਲ ਕਰ ਲੈਣ ਤਾਂ ਜੋ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਦੀ ਸੈਨੇਟ ਵਿਚ ਜਿਸ ਨੇ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਦੇ ਕਾਨੂੰਨ ਤੇ ਕਾਇਦੇ ਬਨਾਉਣੇ ਹਨ ਤੇ ਉਸਨੂੰ ਚਲਾਉਣਾ ਹੈ ਗਿਆਨੀ ਪਾਸ ਵੀ ਆਪਣੀ ਰਾਏ ਦੇ ਸਕਣ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਪੰਜਾਬ ਵਿਚ ਪੰਜਾਬੀ ਨੂੰ ਵੀ ਉਹੀ ਮਾਣ ਦਾ ਦਰਜਾ ਮਿਲ ਜਾਏਗਾ ਜਿਹੜਾ ਇਸ ਵੇਲੇ ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਨੂੰ ਮਿਲਿਆ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਮੈਂ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ ਕਰਾਂਗਾ ਕਿ ਮੇਰੇ ਮਾਨਯੋਗ ਮਿਤ੍ਰ ਇਸ ਮੇਰੀ ਤਜਵੀਜ਼ ਨੂੰ ਮੰਨ ਲੈਣਗੇ।

Mr. Speaker : Motion moved—

That in line 3, between the words " Shastris " and " the right " the words " and Gianis " be inserted.

The main resolution and this amendment will now be discussed together.

ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਕਿਸ਼ਨ (ਜਾਲੰਧਰ ਸ਼ਹਰ ਉਤਰ ਪਸ਼ਚਿਮ) : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ ! ਮੇਰੇ ਮਾਨਯੋਗ ਦੋਸਤ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਰਲਾ ਰਾਮ ਨੇ ਜੋ ਪ੍ਰਸਤਾਵ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਹੈ ਮੈਂ ਉਸ ਦੀ ਤਾਇਦ ਕਰਨੇ ਦੇ ਲਿਖੇ ਖੜਾ ਹੁਆ ਹਾਂ। ਧਰ੍ਮ ਪ੍ਰਸਤਾਵ ਬਿਲਕੁਲ ਬੇਜ਼ਰਰ ਹੈ ਐਰ ਮੈਂ ਸਮਝਤਾ ਹਾਂ ਕਿ ਜੋ rules and regulations ਐਰ procedure ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਰਾਜ ਮੈਂ ਚਲਤੇ ਥੇ ਆਜ ਵਹੀ ਸਵਤਨਤਰ ਭਾਰਤ ਮੈਂ ਚਲ ਰਹੇ ਹੈ ਐਰ ਜਗਹ ਜਗਹ ਪਰ ਉਨ੍ਹੇਂ ਬਦਲੇ ਹੁਏ ਹਾਲਾਤ ਕੇ ਸੁਭਾਬਿਕ ਤਬਦੀਲ ਕਰਨੇ ਦੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਹੈ। ਆਜ ਜਬ ਕਿ ਹਮ foreign language ਪਛੇ ਹੁਏ graduates ਕੋ University Senate ਮੈਂ ਵੋਟ ਦੇਨੇ ਕਾ ਹਕ ਦੇਤੇ ਹੈਂ ਤੋ ਏਸੀ language ਕੇ ਜਾਨਕਾਰੀ ਕੋ ਜਿਸੇ mother of all languages ਕਹਤੇ ਹੈਂ —(ਮੇਰਾ ਇਸ਼ਾਰਾ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਕੀ ਤਰਫ ਹੈ) ਧਾਨੀ ਜੋ ਸ਼ਾਸਤਰੀ ਪਾਸ ਹੈਂ ਉਨ ਕੋ ਹਕ ਨ ਮਿਲਨਾ ਏਕ ਤਰਹ ਸੇ ਇਸ language ਕੇ ਸਾਥ ਥੜਕਾ ਕਰਨੇ ਕੇ ਕੁਲਧ ਹੋਗਾ।

ਕੁਝ ਦਿਨ ਹੁਏ ਜਾਲੰਧਰ ਮੈਂ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਕਾ ਏਕ ਸਹਾ ਸਮੇਲਨ ਹੁਆ ਥਾ ਐਰ ਵਹਾਂ ਬਡੇ ਬਡੇ ਪੰਡਿਤ ਇਕਠੇ ਹੁਏ। ਇਸ ਸਮੇਲਨ ਮੈਂ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਕੇ ਬਾਰੇ ਮੈਂ ਕਈ ਪ੍ਰਸਤਾਵ ਪਾਸ ਕੀਏ ਗਏ। ਪੰਜਾਬ ਕੇ ਚੀਫ ਮਿਨਿਸਟਰ ਸ਼੍ਰੀ ਭੀਮ ਸੈਨ ਸਚਚਰ ਵਹਾਂ ਤਸ਼ਰੀਫ ਲਾਏ ਥੇ। ਉਨ੍ਹੋਂਨੇ ਵਹਾਂ announcement ਕੀ ਕਿ ਪੰਜਾਬ ਮੈਂ ਕੁਲਖੇਤਰ ਮੈਂ ਹਮ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਕੀ ਯੂਨਿਵਰਸਿਟੀ ਬਨਾਨਾ ਚਾਹਤੇ ਹੈਂ। ਹਮਾਰੇ Home Minister, Government of India, ਡਾ. ਕੈਲਾਸ਼ ਨਾਥ ਕਾਟਜ਼ ਐਰ ਦੂਸਰੇ ਬਡੇ ਬਡੇ ਨੇਤਾ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਮੈਂ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਕੋ ਊਂਚਾ ਸਥਾਨ ਦੇਨਾ ਚਾਹਤੇ ਹੈਂ। ਹਮਾਰੇ Prime Minister ਪੰਡਿਤ ਜਵਾਹਰ ਲਾਲ ਨੇਹਰੂ ਨੇ 'Discovery of India' ਮੈਂ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਕੋ ਬਹੁਤ ਉੱਚ ਕੋਟਿ

[श्री राम किशन]

का दर्जा दिया है। इस से जाहिर होता है कि संस्कृत के जानने वालों को Senate के निर्वाचन में मताधिकार मिलना चाहिये। आप को मालूम है कि हिंदुस्तान में संस्कृत को वह हक हासिल नहीं है, जो आज से 2,000 वर्ष पहले था। जितने बड़े बड़े Historian यहां आये उन्होंने इस बारे में लिखा है कि हिंदुस्तान में तक्षशिला में और नालिंदा में यूनिवर्सिटियां थीं जहां संस्कृत की तालीम मिलती थी और बड़े बड़े देशों से लोग administrative training के लिये यहां आया करते थे।

आज जब कि हिंदुस्तान स्वतन्त्र हो चुका है, सारे देश में छोटी छोटी सब भाषाओं को तरक्की दी जा रही है। इन हालात में अगर संस्कृत टीचरज को जो हर तरह से योग्य हैं यूनिवर्सिटी सैनेट के चुनाव में वोट का हक भी न दिया जाए तो यह उचित न होगा और फिर सारे पंजाब में शास्त्रियों की कुल गिनती २॥ या तीन हजार है। अगर उन की इस छोटी सी मांग को पूरा कर दिया जाए तो इस से संस्कृत भाषा को सहायता मिलेगी। मुझे आशा है कि पंजाब सरकार इस मांग को पूरा कर देगी और इस प्रस्ताव को स्वीकार करेगी। इन शब्दों के साथ मैं प्रिंसिपल रला राम के इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री देव राज सेठी (रोहतक शहर) : अध्यक्ष महोदय, प्रिंसिपल रला राम ने यह प्रस्ताव हाऊस के सामने रख कर पंजाब गवर्नमेंट को इम्तहान में डाल दिया है। इस से इस बात का पता मिलेगा कि अंग्रेज के वक्त में अंग्रेजी तालीम की डिग्रियों की जो कदर होती थी और इस शानदार भाषा संस्कृत से सौतेली मां वाला ही नहीं बल्कि कसाई वाला व्यवहार होता था, आया आज भी हमारी सरकार वही व्यवहार जारी रखेगी या इसे बदलेगी। पिछले पचास साठ सालों में इस बीसवीं सदी में संस्कृत के विद्वानों को बहुत सी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। हिंदी और संस्कृत को दबाए रखने के लिये सरकार ने संस्कृत के विद्वानों के रास्ते में बहुत सी मुश्किलों और रुकावटें पैदा कर रखी थीं। उन को बर्ज़ीफ़े नहीं दिये जाते थे। उनकी बाकायदा पढ़ाई का कोई इन्तजाम नहीं था और पढ़ाई का standard ऊंचे से ऊंचा रखा हुआ था। इसी लिये बहुत से विद्यार्थी संस्कृत के इम्तहान में फेल होते थे। दूसरे इम्तहानों के मुकाबले में उन में फेल होने वालों की तादाद ज्यादा होती थी। परन्तु इन तमाम मुश्किलों के बावजूद संस्कृत के विद्यार्थी शास्त्री का इम्तहान देते रहे। मगर उस विदेशी राज में उन की फिर भी कदर न हुई। वे अंग्रेजीदान ग्रेजुएट्स के मुकाबले में किसी लिहाज से भी कम नहीं हैं। वे basic sciences के लिहाज से, ट्रेनिंग और culture के लिहाज से और राए बनाने की शक्ति के लिहाज से दूसरे ग्रेजुएट्स से कम नहीं हैं। अगर यह बातें हैं तो हमारी सरकार उन को खुशी से क्यों यह हक नहीं देती है कि वे भी यूनिवर्सिटी सैनेट के चुनाव में वोट दे सकें। Registered Graduates की कुल तादाद इस समय दस, ग्यारह हजार के करीब है और अगर दो तीन हजार शास्त्री उन में शामिल हो जाएं तो कोई बड़ा फ़र्क नहीं पड़ेगा। सैनेट के उम्मीदवारों को उस हालत में केवल बीस पच्चीस फी सदी वोट ज्यादा लेने पड़ेंगे। जिन लोगों के साथ हमेशा बेइनसाफ़ी हुई है आज अगर हम उन को यह हक दे दें तो यह कोई बड़ी बात नहीं। आखिर हम उन्हें कोई पैनशन तो दे नहीं रहे हैं। यह कोई ऐसी रियायत नहीं जिस के लिये बहुत सोच की जरूरत हो। इस लिये सरकार को यह प्रस्ताव बिला ताम्रमुल मनज़ूर कर लेना चाहिये।

श्री तेग राम (खुइयां सरवर) : प्रधान जी, आज मुझे बड़ी खुशी हुई है कि एक ऐसा अच्छा प्रस्ताव इस विधान सभा में प्रस्तुत किया गया है जो पंजाब के लोगों की बड़ी पुरानी मांग थी। एक विद्वान का कथन है कि अगर धन गया तो कुछ नहीं गया, अगर आज्ञादी भी चली जाए तो कोई बात नहीं परन्तु अगर किसी जाति का साहित्य चला जाये तो वह जाति बर्बाद हो जाती है। आप जानते हैं कि हिंदुस्तान में संस्कृत भाषा हजारों साल पुरानी है। दुनिया में सब से उच्च कोटी का साहित्य इस भाषा में है। हमारे शास्त्र और हमारा पवित्र ग्रंथ गीता इसी भाषा में हैं। अगर हम से हमारा संस्कृत साहित्य छीन लिया जाये तो यह हानी उस हानी से भी अधिक होगी जो ऐटम बम्ब गिर जाने से होगी। हिंदुस्तान में हिंदुस्तानियों का प्राचीन साहित्य हमारे ऋषियों और मुनियों ने सैकड़ों सालों की तपस्या से रचा। अगर यह साहित्य हम से छिन जाए तो हमारा सब कुछ चला जायेगा। इन संस्कृत के विद्वानों ने कई कई साल संस्कृत व्याकरण के रट्टे लगा लगा कर संस्कृत साहित्य की रक्षा की। इस तरह से उन्होंने हमारे वेदों की रक्षा की। अगर हम उनका यह थोड़ा सा सम्मान भी नहीं करेंगे कि वह यूनिवर्सिटी सैनेट के लिये अपना वोट दे सकें तो मैं समझता हूँ हम उन का घोर अपमान करेंगे।

जब प्राचीन ज़माने में प्रैस नहीं होता था तो विद्वान पुस्तक दर पुस्तक रट रट कर संस्कृत साहित्य की रक्षा करते थे। वह विद्वान भूकों मर मर कर वेदों तथा शास्त्रों की रक्षा करते थे और उन को याद रखते थे। अब इस साहित्य को शास्त्री की परीक्षा पास करने वाले देश के सामने रखते हैं। हमारा कर्तव्य है कि हम उन का मान करें।

हिंदी के युग प्रवर्तक महाकवि भार्तेन्दु हरिश्चन्द्र ने ठीक कहा है—

निज भाषा उन्नति अहि सब उन्नति को मूल,

बिन निज भाषा ज्ञान के खिलत नहीं हिय को फूल।

कोई भी देश या जाति तब तक तरक्की नहीं कर सकती जब तक उस की भाषा तरक्की न करे। भाषा के ज्ञान के बगैर मनुष्य के हृदय का फूल नहीं खिलता। हमारी उन्नति तब होगी अगर हमारी राष्ट्रीय भाषा हिंदी तरक्की करेगी और उस की जननी संस्कृत है।

(At this stage Mr. Deputy Speaker occupied the Chair amidst cheers)

संस्कृत साहित्य ज्ञान का एक अक्षय भंडार है जिस में संसार का सब ज्ञान मौजूद है। कौन सा विषय है जो वेदों में, अथर्व शास्त्र में, दर्शनों में आयुर्वेद, आदि में नहीं है? सब विषयों का ज्ञान संस्कृत साहित्य में भरा पड़ा है।

हम देश के सामने और देश की जनता के सामने इस ज्ञान के भंडार को भली भाँति तभी रख सकते हैं जब हम विद्वानों का सम्मान करें और लोगों को ज्यादा से ज्यादा संख्या में संस्कृत पढ़ाएं। संस्कृत के सनातकों का मान करने से ही हम इस प्राचीन भाषा की उन्नति कर सकते हैं और इसे देश के हर कोने में रहने वाले लोगों तक पहुंचा सकते हैं।

इस प्रस्ताव का समर्थन करने पर मुझे प्रबल मान है। हमें चाहिये कि हम इसे शीघ्र ही पास करें ताकि उन लोगों को जिन्होंने कठोर तपस्या कर के संस्कृत साहित्य की रक्षा की है उनको अधिकार मिलें जिन के वे योग्य हैं।

इन शब्दों के साथ, मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ।

श्रीमती सीता देवी (जालन्धर शहर दक्षिण पूर्व) : डिप्टी स्पीकर साहिब, मैंने भी इसी प्रस्ताव का नोटिस दिया था। वह भी ballot में चौथे नम्बर पर आया हुआ है। मैं इस के समर्थन में अभी बोल देती हूँ ताकि शिक्षा-मंत्री को केवल एक ही बार जवाब देना पड़े।

यह प्रस्ताव इतना आवश्यक है कि इस के महत्व से कोई भी इनकार नहीं कर सकता। लार्ड मैकाले एक किताब में लिखते हैं कि 'हम हिंदुस्तानियों को इस प्रकार की तालीम देना चाहते हैं कि वे वेष-भूषा में तो वे हिंदुस्तानी रहें परन्तु विचारों में बिल्कुल 'दास' बन जायें। यह अंग्रेजों की दी हुई तालीम का ही असर है कि स्वतन्त्रता आ जाने के बाद भी हमारे बहुत सारे पढ़े लिखे भाइयों में गुलामी की मनोवृत्ति पाई जाती है और वे B.As और M.As को ही योग्य समझते हैं और शास्त्री और प्रभाकर की परीक्षाओं को पास करने वालों को उन के बराबर अधिकार देने के लिये तैयार नहीं। ऐसे भाई University में भी हैं और Government में भी, जो संस्कृत, हिंदी और पंजाबी के सनातकों को अंग्रेजी पढ़े ग्रेजुएट्स के बराबर दर्जा नहीं देना चाहते। ऐसे सनातकों की Services में भी कोई कदर नहीं होती। इन को घटिया समझ कर तन्हावा भी कम दी जाती है। अंग्रेजों के शासन काल में उन के साथ ऐसा सलूक किये जाने पर हैरानी नहीं हो सकती थी परन्तु अब जब कि भारत स्वतन्त्र हो चुका है और हम अपनी प्राचीन सभ्यता की महिमा करते नहीं थकते, यह बात बड़ी आवश्यक है कि हम अपनी भाषाओं के विद्वानों का मान करें। कितनी खेदजनक बात है कि जब हम ने अपनी प्राचीन सभ्यता को भुला कर संस्कृत भाषा की उपेक्षा की, तो जर्मनी और दूसरे देशों के विद्वानों ने या बनारस के 'चोटी', धोती' वाले ब्राह्मणों ने इस की रक्षा की।

इस प्रस्ताव में की गई मांग को मनवाने के लिये हम तीन चार सालों से लड़ रहे हैं। उत्तर देते समय शिक्षा मंत्री शायद यह कहेंगे कि 'यह University का मामला है, Senate में पेश किया जाये'। चूंकि उन के उत्तर देने के बाद हम नहीं बोल सकेंगे, इस लिये मैं उन को अभी बता देना चाहती हूँ कि प्रिंसिपल साहिब और मैं Senate के सदस्य हैं, वहां पर हार कर हमें यह प्रस्ताव विधान सभा में पेश करना पड़ा है। मुझे Senate का सदस्य होते हुए यह कहने में ज़रा भी संकोच नहीं कि वहां पर जो प्रभावशाली व्यक्ति हैं उन के दिमाग उसी तरह चलते हैं जिस तरह लार्ड मैकाले ने कहा था और सोचा था। वे शास्त्री, प्रभाकर और ज्ञानी की परीक्षाओं को पास करने वालों को Fellows के चुनने का अधिकार नहीं देना चाहते। हमने वहां पर कई बार प्रस्ताव रखने की कोशिश की परन्तु असफल रहे। यह भी सौभाग्य की बात है कि यह प्रस्ताव ballot में पहले नम्बर पर निकल आया है। Senate के मੈम्बरों को चुनना एक बड़ी महत्वपूर्ण बात है, क्योंकि Senate ही सारे पंजाब में चलने वाली शिक्षा-प्रणाली और परीक्षाओं के लिये जाने के तरीकों का फैसला करती है। Senate के पास बड़ी ताकत और अधिकार हैं। उस के Fellows के निर्वाचन में शास्त्री, हिंदी और ज्ञानी के सनातकों को वोट देने का हक ज़रूर मिलना चाहिये। कोई वजह नहीं कि हमारी भाषाओं के विद्वानों को वही स्थान और दर्जा न दिया जाए जो अंग्रेजी के ग्रेजुएट्स को दिया जाता है।

मैं शिक्षा मंत्री के विचारों को अच्छी तरह जानती हूँ। मुझे पता है कि वह भी ऐसा करने के लिये बड़े उत्सुक हैं। जहाँ तक इन का बस चलेगा वह अपनी भाषाओं के सनातकों को यह अधिकार दिलाने के लिये यत्न करने से संकोच नहीं करेंगे। वह जब से शिक्षा मंत्री बने हैं, progressive measures लेते रहे हैं।

उत्तर प्रदेश के अन्दर हिंदी और संस्कृत की अलग Universities हैं। आगरा यूनिवर्सिटी ने इन की degrees को recognize कर लिया है और Fellows चुनने का अधिकार दे दिया है। अगर उत्तर प्रदेश यह कदम उठा सकता है और वहाँ की Universities शास्त्री पास लड़कों और लड़कियों को सीधा M. A. की परीक्षा में बैठने की आज्ञा दे सकती है तो क्या बजह है कि पंजाब सरकार इस चीज़ के लिये कोशिश न करे। मैं शिक्षा मंत्री से प्रार्थना करती हूँ कि वह जब तक ऐक्ट में संशोधन नहीं करवायेंगे तब तक यह चीज़ होने वाली नहीं। Senate में इस को मनवाने के लिये हम बहुत यत्न कर चुके हैं। मौजूदा Senate तो इस को मानने वाली नहीं। नये चुनाव होंगे, कोई नई Senate आयेगी तो शायद इस प्रस्ताव में की गई तजवीज़ को मान लिया जायेगा मगर मैं समझती हूँ कि उस से पहिले University Act में संशोधन की अति ज़रूरत है। मुझे आशा है कि मंत्री महोदय जो कि बड़े उदार-हृदय वाले हैं ऐसे संशोधन के पेश करने में देर नहीं करेंगे ताकि हमारे प्रान्त में शास्त्री, प्रभाकर और ज्ञानी पास लोगों को वही अधिकार मिल सकें जो ऐसे विद्वानों को दूसरे प्रान्तों में मिल चुके हैं। इन शब्दों के साथ मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करती हूँ।

मौलवी अब्दुल गनी डार (नूह): श्रीमान् जी, मैं बहुत खुश हूँ कि प्रिंसिपल साहिब ने आज एक बहुत ही अच्छा प्रस्ताव सभा के सामने रखा है। जहाँ तक मैं समझ पाया हूँ इस प्रस्ताव के पीछे दो या तीन बातें हो सकती हैं। एक यह कि हम अपनी प्राचीन सभ्यता की भाषा अर्थात् संस्कृत को फ़जता, फ़ुनता देखना चाहते हैं, और चाहते हैं कि जिन्होंने शास्त्री तक विद्या प्राप्त की है उन को भी वही दर्जा और अधिकार मिलें जो B. As को मिले हुए हैं और वे भी Senate में लोगों को भेज सकें और जा सकें। यह बात बिल्कुल ठीक है क्योंकि 'शास्त्री' पास करने वाले का दर्जा B. A. पास करने वाले से किसी तरह कम नहीं।

मैं बहिन सीता देवी की भी प्रशंसा करता हूँ कि उन्होंने बड़े विशाल हृदय के साथ भारत की सरकारी ज़बान हिंदी की 'प्रभाकर' की परीक्षा पास करने वालों के लिये भी उन्हीं अधिकारों की मांग की है जो 'शास्त्री' पास करने वालों को मिलने चाहिये।

बहिन सीता देवी ने पंजाबी ज़बान के जानियों को भी वोट देने के अधिकार के लिये अपील की है। पंजाबी ज़बान एक ऐसी ज़बान है जिस पर उन को, मुझ को सब को, और हमारी सरकार को भी फ़ख़र है। इस लिये मैं उन के मुझाव की तारीफ़ करता हूँ। लेकिन, स्पीकर साहिब, इस के साथ साथ मैं आप को यह अर्ज़ करना चाहता हूँ कि चूंकि हमारी State एक Secular State है। इस के पेशेनज़र यूनिवर्सिटी ने कुछ दूसरी ज़बानों के इमतिहान पास करने की इजाज़त दे रखी है। उस इजाज़त से फायदा उठा कर लोग अदीब फ़ाज़िल

[मौलवी अब्दुल गनी डार]

मुन्शी फाजिल और मौलवी फाजिल के इमतिहान पास करते हैं। तो मेरी अर्ज यह है कि अगर सरकार इस मामले पर विचार करना चाहती है तो उस का फर्ज है कि जहां उस ने अंग्रेजी पढ़े हुए ग्रेजुएटों को मौका दिया है कि वे अपने नुमाइंदे Senate में भेज सकें तो उन जवानों के ग्रेजुएटों को भी, जिन के इमतिहानों की इजाजत हमारी यूनिवर्सिटी ने Secular State होने के कारण दे रखी है, वोट देने का हक दे। मैं उम्मीद करता हूं कि पंजाब सरकार जब भी इस मामले पर गौर करेगी तो इस बात का ध्यान रखेगी कि उन दूसरे लोगों को भी वोट देने का पूरा पूरा मौका दिया जाये जिन्होंने कि यूनिवर्सिटी की हिदायतों के मुताबिक सख्त मेहनत करके तालीम हासिल की है। स्पीकर साहिब, इस में शक नहीं कि संस्कृत की जितनी महिमा की जाए कम है, पंजाबी के जितने गुण गाये जायें कम हैं, पंजाब सरकार और भारत सरकार का जितना यश किया जाए उतना ही कम है लेकिन इस के साथ ही साथ मैं यह भी दखलवास्त करता हूं कि जिन जवानों को यूनिवर्सिटी ने Secular State होने के कारण बराबर का दर्जा दिया हुआ है उन के पढ़ने वालों को भी वोट देने का पूरा पूरा अधिकार दिया जाये।

श्री कन्हैया लाल बुटेल (पालमपुर): अध्यक्ष महोदय, संस्कृत का जन्म भारतवर्ष में हुआ। संस्कृत पढ़ने की इच्छा रखने वाले विद्वान जर्मनी, अमरीका, चीन, जापान आदि देशों से हजारों मील का सफर तय करके और हजारों नहीं बल्कि लाखों रुपये खर्च कर के भारतवर्ष में आते थे। और यहां पर आ कर संस्कृत सीखते थे। यहां के गरीब लोग, जिन को न तो सरकार ही कोई सहारा देती थी और न ही वे अपनी दरिद्रता के कारण पढ़ने लिखने का खर्च ही बर्दाश्त कर सकते थे, बड़ी मुश्किल से संस्कृत सीखते रहे। बावजूद इन तमाम कठिनाइयों के न सिर्फ उन्होंने संस्कृत ही सीखी बल्कि उन्होंने शास्त्री बन कर ऐसे २ कार्य अपने कठोर परिश्रम के द्वारा किये जिस से न केवल भारत के नाम को ही जीवित रखा बल्कि भारतवासियों की शान को भी जीवित रखा। जब वे लोग गुरुकुलों में से शास्त्री बन कर निकलते थे तो सरकार की तरफ से उन को किसी प्रकार का प्रोत्साहन नहीं मिलता था। उन के गुजारे का कोई जरिया ही नहीं होता था। उन को दफतरो में नौकरी भी नहीं दी जाती थी। परन्तु इस बात का श्रेय उन को जाता है कि वे लोग बावजूद इन घोर कठिनाइयों के हौसला नहीं हारते थे। उन लोगों ने बड़े बड़े और हर प्रकार के ग्रंथों का अध्ययन किया, हर प्रकार के अनुसंधान और विश्लेषण किये और जहां तक कि उन्होंने स्वयं भी विविध प्रकार के ग्रंथों की रचना की। उन विद्वानों ने अपने आप को कष्टों में डाल कर अपने अखिल और भरसक प्रयत्नों द्वारा ज्योतिष और आधुनिक आदि विद्याओं और विज्ञानों को जीवित रखा और इस प्रकार हमारे देश और देशवासियों की सेवा की और उन पर बड़ा उपकार किया। आज जो हमारी प्राचीन विद्याएँ, हमारी संस्कृति और सभ्यता हमारे सामने जीवित मौजूद हैं यह सब उन संस्कृत के विद्वानों की घोर तपस्या का ही परिणाम है। वे भूखे रहते थे, अपना जीवन दरिद्रता में बिताते थे लेकिन उन में आत्म गौरव अवश्य था वे लोग नाम मात्र ट्यूशन लेकर लोगों को संस्कृत पढ़ाते रहे कथा वार्ता का आश्रय लेकर रामायण, महाभारत आदि महा ग्रंथों की कथा लोगों को सुना कर अपना निर्वाह और बच्चों का निर्वाह करते रहे। और इस प्रकार उन्होंने इन ग्रंथों को भी जीवित

रखा। शास्त्रों, उपनिषदों और दूसरे धार्मिक ग्रंथों से लोगों को वाकिफ किया। और उन के कानों को पवित्र किया। यदि संस्कृत के विद्वान् न होते तो आज कल ये सब ग्रंथ हमारे दृष्टिगोचर न होते इन का नाम तक लोगों को भूल जाता। इन लोगों ने भाषा के क्षेत्र में गद्य और पद्य दोनों प्रकार की रचनाएं कीं। अंग्रेजी के ग्रेजुएटों को जब नौकरी नहीं मिलती तो उन के संमुख बड़ी भारी समस्या खड़ी हो जाती है, वे लोग रोटी नहीं कमा सकते। इस के विपरीत संस्कृत के विद्वानों और शास्त्रीयों को आत्म-अभिमान होता है, वे लोग कष्ट उठा कर भी अपना निर्वाह करते हैं और साथ २ देशवासियों पर उपकार भी करते हैं। अध्यक्ष महोदय, इन परिस्थितियों के अन्तर्गत कोई कारण नहीं हो सकता कि ऐसे लोगों को अपना मत देने का अधिकार न दिया जाये। अब जब कि हमारा देश स्वतन्त्र हो चुका है इन लोगों को इस अधिकार से वंचित नहीं रखा जा सकता। इस के साथ ही यदि हिंदी के प्रभाकर और पंजाबी के ज्ञानियों को भी यह अधिकार दे दिया जाये तो मुझे और भी प्रसन्नता होगी।

(At this stage the Speaker occupied the Chair)

ਸ਼੍ਰੀ ਵਧਾਵਾ ਰਾਮ (ਫ਼ਾਜ਼ਿਲਕਾ) : ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ, ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਸਹਿਬ ਜਿਹੜਾ ਮਤਾ ਲਿਆਏ ਹਨ ਉਸ ਨਾਲ ਹਰ ਇਕ ਅਦਮੀ ਖੁਸ਼ ਹੈ। ਜੇਕਰ ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਖੁਦ ਹੀ ਇਸ ਵਿਚ 'ਗਿਆਨੀ' ਦਾ ਲਫਜ਼ ਵੀ ਦਰਜ ਕੀਤਾ ਹੁੰਦਾ ਤਾਂ ਸੋਨੇ ਉਪਰ ਸੁਹਾਗੇ ਦਾ ਕੰਮ ਹੋ ਜਾਂਦਾ। ਮੈਨੂੰ ਹੁਣ ਵੀ ਉਮੀਦ ਹੈ ਕਿ ਸਾਡੇ ਸੁਝਾਉ ਨੂੰ ਮੰਨਿਆ ਜਵੇਗਾ। ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ, ਆਪ ਜੀ ਨੂੰ ਪਤਾ ਹੈ ਕਿ ਜਦੋਂ ਕੋਈ ਬਾਹਰ ਦਾ ਮੁਲਕ ਕਿਸੇ ਦੇਸ਼ ਤੇ ਹਲਾ ਕਰਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਪਹਿਲੇ ਉਸਦੀ ਜ਼ਬਾਨ ਤੇ ਵਾਰ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਤੇ ਕਈ ਹਮਲਾਵਰ ਆਉਂਦੇ ਰਹੇ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਸਾਡੀ ਜ਼ਬਾਨ ਨੂੰ ਵੀ ਵਗੜਨ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤੀ ਲੇਕਿਨ ਸਾਡੇ ਪੰਜਾਬੀ ਵੀਰਾਂ ਨੇ ਬਾਵਜੂਦ ਇਨ੍ਹਾਂ ਮੁਸੀਬਤਾਂ ਦੇ ਇਸ ਦੀ ਸ਼ਾਨ ਨੂੰ ਕਾਇਮ ਰੱਖਿਆ। ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਵਕਤ ਵਿਚ ਗਿਆਨੀ ਦਾ ਇਮਤਿਹਾਨ ਪਾਸ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਨੂੰ ਤਾਂ ਕੋਈ ਨੌਕਰੀ ਹੀ ਨਹੀਂ ਦਿਤੀ ਜਾਂਦੀ ਸੀ ਅਤੇ ਨਾ ਹੀ ਉਸਦੀ ਕਿਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਇਜ਼ਤ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਸੀ। ਅਤੇ ਆਜ਼ਾਦੀ ਮਿਲਣ ਦੇ ਪਿਛੋਂ ਸਾਡੀ ਦੇਸ਼ ਭਗਤ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਦਿਲ ਵਿਚ ਵੀ ਨਹੀਂ ਆਇਆ ਕਿ ਜਿਹੜੇ ਲੋਕ ਪੰਜਾਬੀ ਪੜ੍ਹੇ ਹੋਏ ਹਨ ਜਾਂ ਹਿੰਦੀ ਪੜ੍ਹੇ ਹੋਏ ਹਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਤਨਖਾਹਾਂ ਵੀ ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਪੜ੍ਹੇ ਹੋਏ ਮੁਲਾਜ਼ਿਮਾਂ ਦੇ ਬਰਾਬਰ ਕਰ ਦਿਤੀਆਂ ਜਾਣ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕੋਈ ਇਹੋ ਜਿਹੀ ਵਿਧੀ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ। ਮੈਂ ਅਰਜ਼ ਕਰਨੀ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਜੇਕਰ ਸਾਡੀ ਸਰਕਾਰ ਪੰਜਾਬ ਨੂੰ ਉਪਰ ਉਠਾਉਣਾ ਚਾਹੁੰਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਉਸ ਨੂੰ ਪੰਜਾਬੀ ਜ਼ਬਾਨ ਨੂੰ ਮਾਣ ਬਖਸ਼ਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਕੋਈ ਕੌਮ ਤਰੱਕੀ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦੀ ਜਦੋਂ ਤੀਕ ਉਸ ਦੀ ਜ਼ਬਾਨ ਨੂੰ ਉਚਿਆਂ ਨਾ ਚੁਕਿਆ ਜਵੇ। ਸਾਡੀ ਜ਼ਬਾਨ ਦੇ ਬਹੁਤ ਸੌਖੇ ਅਤੇ ਸਰਲ ਲਫਜ਼ ਹਨ ਕਈ ਵਾਰੀ ਕਿਸਾਨਾਂ ਦੇ ਮੂੰਹ ਵਿਚੋਂ ਬੈਠਿਆਂ ਬਿਠਾਇਆਂ ਐਡੇ ਸੁੰਦਰ ਸ਼ਬਦ ਨਿਕਲਦੇ ਹਨ ਜਿਹੜੇ ਕਿ ਪਹਿਲਾਂ ਕਦੀ ਨਹੀਂ ਸੁਣੇ ਹੁੰਦੇ। ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ, ਮੈਨੂੰ ਕਿਹਾ ਗਿਆ ਸੀ ਕਿ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿਚ ਬੋਲੋ। ਮੈਨੂੰ ਇਸ ਗੱਲ ਦੀ ਖੁਸ਼ੀ ਹੋਵੇਗੀ ਜੇਕਰ ਸਰਕਾਰ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ ਅਤੇ ਹਿੰਦੀ ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ ਵੋਟ ਦੇਣ ਦਾ ਹਕ ਦੇਵੇਗੀ। ਜਿਹੜੇ ਆਲਿਮ ਫ਼ਾਜ਼ਿਲ ਹਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਜ਼ਰੂਰ ਹੋਸਲਾ ਅਫਜ਼ਾਈ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਵੋਟ ਦੇਣ ਦਾ ਹਕ ਮਿਲਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਲੇਕਿਨ ਪੰਜਾਬੀ ਦੇ ਗਿਆਨੀ ਨੂੰ ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਮਿਲਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਅਸੀਂ ਸਭ ਪੰਜਾਬੀ ਹਾਂ ਅਤੇ ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਡੀ ਮਾਟਰੀ ਜ਼ਬਾਨ ਹੈ। ਅਸੀਂ ਸਭ ਪੰਜਾਬੀ ਬੋਲਦੇ ਹਾਂ। ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਚ ਅਸੀਂ ਕਿੱਡੀ ਆਸਾਨੀ

[ਸ੍ਰੀ ਵਧਾਵਾ ਰਾਮ]

ਅਤੇ ਮੁੰਦਰਤਾ ਨਾਲ ਗਲ ਬਾਤ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹਾਂ ਜੇਕਰ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਪੰਜਾਬੀ ਦੇ ਬਿਨਾਂ ਕਿਸੇ ਹੋਰ ਜ਼ਬਾਨ ਵਿਚ ਗਲ ਕਰਨੀ ਪਵੇ ਤਾਂ ਉਸ ਨੂੰ ਕਿੱਡੀ ਮੁਸ਼ਕਿਲ ਬਣਦੀ ਹੈ ਕਿੰਨਾ ਜ਼ੋਰ ਲਗਾਉਣਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਇਕ ਇਕ ਲਵਸ਼ ਰੁਕ ਰੁਕ ਕੇ ਮੂੰਹ ਵਿਚੋਂ ਨਿਕਲਦਾ ਹੈ।

ਅਜ ਜੇ ਅਸੀਂ ਪੰਜਾਬ ਨੂੰ ਮੱਥੇ ਮੈਨਿਆਂ ਵਿਚ ਉਰਿਆਂ ਚੁਕਣਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਾਂ ਤਾਂ ਇਹ ਸਾਡਾ ਫਰਜ਼ ਹੈ ਕਿ ਜਿਵੇਂ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਸਾਹਿਬ ਸ਼ਾਸਤਰੀਆਂ ਲਈ ਇਹ ਮਤਾ ਲਿਆਏ ਹਨ, ਉਸ ਵਿਚ ਗਿਆਨੀ ਪਾਸ ਭਰਾਵਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਸ਼ਾਮਲ ਕੀਤਾ ਜਵੇ। ਸਾਨੂੰ ਪਤਾ ਹੈ ਕਿ ਸਾਡੇ ਵਜ਼ੀਰ ਸਾਹਿਬ ਇਹਨੂੰ ਵੀ ਸ਼ਾਮਲ ਕਰ ਲੈਣਗੇ ਅਤੇ ਅਜਿਹਾ ਕਰਨ ਵਿਚ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਕੋਈ ਇਤਰਾਜ਼ ਨਹੀਂ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿਉਂਕਿ ਉਹ ਵੀ ਤਾਂ ਆਖਿਰ ਪੰਜਾਬੀ ਹਨ। ਚਾਹੇ ਉਹ ਇਸ ਹਾਊਸ ਵਿਚ ਮੱਲ ਮੱਲੀ ਹਿੰਦੀ ਬੋਲਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰਨ ਜਾਂ ਬਾਹਰ ਤਾਂ ਸਾਡੇ ਨਾਲ ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਚ ਹੀ ਗਲਬਾਤ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਮੈਨੂੰ ਪਤਾ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਇਤਨੀ ਚੰਗੀ ਹਿੰਦੀ ਨਹੀਂ ਸਿਖ ਸਕੇ ਕਿਉਂਕਿ ਦੇਸ਼ ਭਗਤੀ ਦਾ ਕੰਮ ਕੋਈ ਮੌਖਾ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ।

ਸਾਨੂੰ ਹਿੰਦੀ ਦੇ ਖ਼ਿਲਾਫ਼ ਕੋਈ ਸ਼ਿਕਾਇਤ ਨਹੀਂ ਪਰ ਮੁਸ਼ੀਬਤ ਇਹ ਹੈ, ਪ੍ਰਧਾਨ ਸ਼੍ਰੀ, ਕਿ ਸਾਡੇ ਇਹ ਭਰਾ ਇਤਨੀ ਔਖੀ ਹਿੰਦੀ ਬੋਲਦੇ ਹਨ ਕਿ ਸਾਡੇ ਪੱਲੇ ਹੀ ਕੁਝ ਨਹੀਂ ਪੈਂਦਾ। ਜਦੋਂ ਇਹ 'ਪ੍ਰਸਤਾਵ' ਅਤੇ 'ਸਨਸ਼ੋਧਨ' ਵਰਗੇ ਮੋਟੇ ਮੋਟੇ ਲਵਜ਼ ਬੋਲਦੇ ਹਨ ਤਾਂ ਸਾਨੂੰ ਸਮਝ ਹੀ ਨਹੀਂ ਆਉਂਦੀ ਕਿ ਇਹ ਕਹਿਣਾ ਕੀ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਸਾਨੂੰ ਜੇਕਰ ਤੁਸੀਂ ਹਿੰਦੀ ਸਿਖਾਉਣੀ ਹੈ ਤਾਂ ਪਹਿਲਾਂ ਮੈਥੇ ਸੋਧੇ ਲਵਜ਼ਾਂ ਨੂੰ ਅੱਗੇ ਲਿਆਓ।

एक सदस्य: यह इस लिए किया जाता है ताकि आप के अन्दर हिन्दी सीखने का बज्जबा पैदा हो।

ਸ੍ਰੀ ਵਧਾਵਾ ਰਾਮ : ਪਰ ਤੁਹਾਡੀ ਨੀਯਤ ਵੀ ਤਾਂ ਸਾਨੂੰ ਹਿੰਦੀ ਪੜ੍ਹਾਉਣ ਦੀ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਨਾਉਂ ਤਾਂ ਹਿੰਦੀ ਦਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਪਰ ਇਸਤੇਮਾਲ ਕਰਦੇ ਓ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਦੇ ਲਵਜ਼। ਕੀ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਵੀ ਕਿਸੇ ਭਾਸ਼ਾ ਨੂੰ ਆਮ ਵਿਵਹਾਰ ਵਿਚ ਲਿਆਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨ ਹੀ ਉਸਦੀ ਤਰੱਕੀ ਹੋਵੇਗੀ ਅਤੇ ਨ ਹੀ ਕੋਈ ਇਸ ਨੂੰ ਸਿੱਖ ਸਕੇਗਾ। ਇਸ ਲਈ ਮੈਂ ਸਮਝਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਸਾਡੇ ਸਾਰਿਆਂ ਦਾ ਅਤੇ ਖਾਸਕਰ ਇਸ ਹਾਊਸ ਵਿਚ ਬੈਠੇ ਹੋਏ ਸਾਰੇ ਭਰਾਵਾਂ ਅਤੇ ਭੈਣਾਂ ਦਾ ਇਹ ਫਰਜ਼ ਹੈ ਕਿ ਪੰਜਾਬੀ ਦੇ ਪ੍ਰਚਾਰ ਵਲ ਖ਼ਾਸ ਧਿਆਨ ਦੇਣ ਅਤੇ ਪੰਜਾਬੀ ਨਾਲ ਆਪਣਾ ਪਿਆਰ ਜ਼ਹਿਰ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਗਿਆਨੀਆਂ ਨੂੰ ਵੀ ਮੈਨਿਟ ਦੀ ਮੋਬਰੀ ਅਤੇ ਮੋਬਰਾਂ ਦੀਆਂ ਚੋਣਾਂ ਵਿਚ ਹਿੱਸਾ ਲੈਣ ਦੀ ਖੁਲ ਦੇਣ ਅਤੇ ਜਿਹੜੀ ਹਿੰਦੀ ਬੋਲੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਉਹ ਅਨਪੜ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਸਿਖਾਉਣ ਵਾਲੀ ਬੋਲੀਏ ਨਾ ਕਿ ਬਾਹਮਨਾਂ ਵਾਲੀ।

श्री जगत राम भारद्वाज (होशियारपुर): स्पीकर साहिब, मैं समझता हूँ कि प्रिंसिपल रत्ना राम जी ने यह प्रस्ताव पेश करके सूबे की एक बड़ी भारी सेवा की है। इस के इलावा जितने भी माननीय सदस्यों ने इस पर स्पीचें की हैं उन सब ने इस को support ही किया है।

इस सम्बन्ध में एक बात बिल्कुल साफ़ है और वह यह कि अगर हमारी कीम और हमारा देश अपने आप को ऊँचा उठाना चाहते हैं तो सब से पहले हमें अपने तालीम के निश्चय और तरीक़े को ठीक करना होगा। जब तक हमारी तालीम दुस्त नहीं होती तब तक हम

**RESOLUTION RE. AMENDING OF EAST PUNJAB UNIVERSITY (AMENDMENT) (4)61
ACT, 1948, TO EXTEND TO SHASTRIS THE RIGHT TO VOTE AT ELECTIONS
TO THE PUNJAB UNIVERSITY SENATE**

ਕੌਮੀਯਤ ਕੇ ਰੰਗ ਮੇਂ ਨਹੀਂ ਰੰਗੇ ਜਾ ਸਕਦੇ । ਆਜ ਹਮ ਯਹ ਦੇਖਦੇ ਹੁੰ ਕਿ ਹਮਾਰੀ ਯੂਨਿਵਰਸਿਟੀ ਦੀ ਸੇਨੇਟ ਕੇ ਅੰਦਰ ਜਿਤਨੇ ਭੀ ਲੋਗ ਬੈਠੇ ਹੁਏ ਹਨ ਵੇ ਲੋਗ ਮਗਰਬੀ ਰੰਗ ਕੇ ਅੰਦਰ ਇਸ ਕਦਰ ਰੰਗੇ ਹੁਏ ਹਨ ਕਿ ਵੇ ਅਪਨੀ ਨਿਜੀ ਸਮਝਤਾ ਆਰ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤਿ ਸੇ ਕੋਸੀਂ ਦੂਰ ਹਨ । ਨਤੀਜਾ ਯਹ ਹੋਤਾ ਹੈ ਕਿ ਹਮਾਰੇ ਤਨ ਬੱਚੀਂ ਪਰ ਭੀ ਜੋ ਕਿ ਯੂਨਿਵਰਸਿਟੀ ਸਿੱਖਾ ਲੇਕਰ ਬਾਹਰ ਨਿਕਲਦੇ ਹਨ, ਵਹੀ ਰੰਗ ਚੜ੍ਹਾ ਹੁਆ ਹੋਤਾ ਹੈ । ਤਾਲੀਮੀ ਇਦਾਰੀਂ ਮੇਂ ਸੇ ਨਿਕਲ ਕਰ ਨ ਤੋ ਵੇ ਧਰ ਕੇ ਕਿਸੀ ਕਾਮ ਕੇ ਰਹਦੇ ਹਨ ਆਰ ਨ ਅਪਨੇ ਆਪ ਕੋ ਦੂਸਰੀ ਜਗਹੀਂ ਪਰ adjust ਕਰ ਸਕਦੇ ਹਨ ਸਿਵਾਏ ਇਸ ਕੇ ਕਿ ਕੋਟ ਪਤਲੂਨ ਪਹਨ ਕਰ ਵੱਡੀ ਟੀਪ ਟਾਪ ਸੇ ਇਸਰ ਸੇ ਉਧਰ ਆਰ ਉਧਰ ਸੇ ਇਧਰ ਧੂਮਦੇ ਫਿਰਦੇ ਹਨ । ਇਸ ਕੇ ਮੁਕਾਬਿਲੇ ਮੇਂ ਆਪ ਸ਼ਾਸਤਰੀ, ਜ਼ਾਨੀ, ਪ੍ਰਭਾਕਰ ਪਾਸ ਵਗੈਰਾ ਲੋਗੀਂ ਕੋ ਦੇਖੋਂ ਤੋ ਆਪ ਕੋ ਦੋਨੀਂ ਪ੍ਰਕਾਰ ਕੇ graduates ਮੇਂ ਅਮੀਨ ਆਸਮਾਨ ਕਾ ਫੰਕ ਨਜ਼ਰ ਆਯੇਗਾ । ਜਬ ਵੇ ਲੋਗ ਹਮਾਰੇ ਪਾਸ ਆਕਰ ਬੈਠਦੇ ਹਨ ਤੋ ਏਸਾ ਮਾਲੂਮ ਹੋਤਾ ਹੈ ਕਿ ਕਾਕੀ ਇਨ ਮੇਂ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨੀਯਤ ਹੈ । ਇਨ ਕੇ ਅੰਦਰ ਆਪ ਕੋ ਬਹੁਤ ਕਮ ਲੋਗ ਹੀ ਏਸੇ ਨਜ਼ਰ ਆਯੇਗੇ ਜੋ ਮਗਰਬੀ ਰੰਗ ਮੇਂ ਰੰਗੇ ਹਨ । ਇਸ ਲਿਯੇ ਮੇਂ ਯਹ ਜ਼ਰੂਰੀ ਸਮਝਤਾ ਹੁੰ ਕਿ ਅਗਰ ਹਮਾਰੀ ਕੌਮ ਨੇ ਤਰਕਕੀ ਕਰਨੀ ਹੈ, ਸਦਿਯੀਂ ਸੇ ਗੁਲਾਮ ਰਹੇ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨੀਯੀਂ ਕੇ ਅੰਦਰ ਕੌਮੀਯਤ ਦੀ ਨਵੀਂ ਰੂਹ ਫੁੱਕਨੀ ਹੈ ਤੋ ਯਹ ਆਵਸ਼ਯਕ ਹੈ ਕਿ ਹਮਾਰੇ ਜੋ ਭਾਈ ਸ਼ਾਸਤਰੀ, ਪ੍ਰਭਾਕਰ, ਜ਼ਾਨੀ ਵਗੈਰਾ ਹਨ ਉਨ੍ਹੇਂ ਭੀ ਤਾਲੀਮੀ ਇਦਾਰੀਂ ਕੇ ਅੰਦਰ ਪ੍ਰਤਿਨਿਧਿਤਵ ਦਿਯਾ ਜਾਏ । ਅਗਰ ਇਨ ਲੋਗੀਂ ਕੋ ਭੀ ਸੈਨੇਟ ਕੇ ਮੈਂਬਰ ਬਨਾ ਦਿਯਾ ਗਯਾ ਆਰ ਮੈਂਬਰ ਚੁਨਨੇ ਕਾ ਹਕ ਦੇ ਦਿਯਾ ਗਯਾ ਤੋ ਯਕੀਨਨ ਮੇਂ ਸਮਝਤਾ ਹੁੰ ਕਿ ਹਮੇਂ ਅਪਨੀ ਪੁਰਾਨੀ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤਿ ਆਰ ਸਮਝਤਾ ਕੋ ਫਿਰ ਸੇ ਜੀਵਿਤ ਕਰਨੇ ਕਾ ਏਕ ਅਚੱਲਾ ਮੌਕਾ ਮਿਲੇਗਾ । ਮੁਝੇ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਹੈ ਕਿ ਸਾਰੇ ਕਾ ਸਾਰਾ ਹਾਊਸ ਇਸ ਪ੍ਰਸਤਾਵ ਕੀ ਤਾਇਦ ਕਰੇਗਾ ਆਰ ਹਮਾਰੇ ਸਿੱਖਾ ਮੰਤਰੀ ਜੋ ਇਸ ਰੈਜ਼ੋਲੂਸ਼ਨ ਕੋ ਦਲ ਸੇ ਕਬੂਲ ਕੀਏ ਹੁਏ ਹਨ ਜ਼ਾਹਿਰਾ ਤੌਰ ਪਰ ਭੀ ਇਸੇ ਕਬੂਲ ਫਰਮਾਏਗੇ ।

ਸਰਦਾਰ ਦਰਬਾਰਾ ਸਿੰਘ (ਨੂਰਮੋਹਲ) : ਸਪੀਕਰ ਸਹਿਬ, ਇਹ ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਮਤਾ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਦਲਾ ਰਾਮ ਸਹਿਬ ਨੇ ਇਸ ਹਦੂਸ ਵਿਚ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਹੈ, ਮੈਂ ਸਮਝਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਇਸ ਉਪਰ ਹਦੂਸ ਦੇ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸਜਨ ਨੂੰ ਕੋਈ ਇਤਰਾਜ਼ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦਾ । ਸਪੀਕਰ ਸਹਿਬ, ਜੇ ਅਸੀਂ ਭਾਰਤਵਰਸ਼ ਦੇ ਪੁਰਾਣੇ ਇਤਿਹਾਸ ਨੂੰ ਧਿਆਨ ਦੇਵੀਏ ਤਾਂ ਪਤਾ ਲਗਦਾ ਹੈ ਕਿ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਵਿਚ ਕਈ ਇਹੋ ਜਿਹੀਆਂ ਥਾਵਾਂ ਮਿਲਨ ਗਈਆਂ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਅਜ ਦੁਨੀਵਰਸਟੀਆਂ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਹਜ਼ਾਰਾਂ ਦੀ ਗਿਨਤੀ ਵਿਚ ਭੜ੍ਹਾਕੂ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿਦਿਆ ਹਮਿਲ ਕਰਕੇ ਆਪਣਾ ਜੀਵਨ ਵਤੀਤ ਕਰਦੇ ਸਨ ਤੇ ਇਸ ਜ਼ਬਾਨ ਵਿਚ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਸਿਖਿਆ ਦੇਂਦੇ ਸਨ । ਅਜ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਸਹਿਬ ਨੇ ਇਸ ਮਤੇ ਨੂੰ ਲਿਆ ਕੇ ਇਕ ਪੁਰਾਣੇ ਸਵਲ ਨੂੰ ਪੁਨਰਜੀਵਿਤ ਕੀਤਾ ਹੈ ਕਿ ਸ਼ਾਸਤਰੀਆਂ ਨੂੰ ਜਿਹੜੇ ਕਿ ਵੱਡੀ ਦੇਰ ਤੋਂ ਨਜ਼ਰਅੰਦਾਜ਼ ਕੀਤੇ ਗਏ ਹਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਮੁੜ ਆਪਣੀ ਅਸਲੀ ਥਾਂ ਪੁਰ ਲਿਆਂਦਾ ਜਾਵੇ ਅਤੇ ਉਸ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਭਾਸ਼ਾ ਦਾ ਪ੍ਰਚਾਰ ਕੀਤਾ ਜਾਵੇ ਜਿਸ ਵਿਚ ਦੁਨੀਆ ਦਾ ਬਹੁਮੁਲਾ ਖਜ਼ਾਨਾ ਭਰਿਆ ਹੋਇਆ ਹੈ । ਇਸ ਗੱਲ ਤੋਂ ਇਲਾਵਲ ਇਨਕਾਰ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਕਿ ਇਸ ਦੇ ਪੜ੍ਹਨ ਨਾਲ ਸਾਡੀ ਪੁਰਾਨੀ ਸਭਿਅਤਾ ਅਤੇ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤੀ ਦਾ ਪੁਨਰਜਨਮ ਹੋਵੇਗਾ । ਇਹ ਬਹੁਤ ਚੰਗੀ ਗੱਲ ਹੈ । ਮੈਂ ਇਸ ਮਤੇ ਦੀ ਪਰੋਤ੍ਯਾ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਪਰ ਨਾਲ ਹੀ ਮੈਂ ਸਮਝਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਜੇ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਸਹਿਬ ਸ਼ਾਸਤਰੀ ਵਾਂਗੂ ਗਿਆਨੀ, ਪ੍ਰਭਾਕਰ ਅਤੇ ਮੁਨਸ਼ੀਫ਼ਾਜ਼ਿਲ ਜਿਹੀਆਂ ਡਿਗਰੀਆਂ ਨੂੰ ਵੀ ਇਸ ਮਤੇ ਵਿਚ ਲੈ ਆਉਂਦੇ ਤਾਂ ਸਚਮੁਚ ਇਹ ਮਤਾ ਆਪਣੇ ਆਪ ਵਿਚ ਇਲਾਵਲ ਪੁਰਾ ਹੁੰਦਾ । ਮੈਂ ਸਮਝਦਾ ਹਾਂ ਜਦੋਂ ਇਕ ਗਿਆਨੀ ਪਸ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਸਜਨ ਨੂੰ 20 ਨਹੀਂ ਵਲਕਿ 40, 40, ਅਤੇ 50, 50 ਕਿਤਾਬਾਂ ਪੜ੍ਹਨੀਆਂ ਪੈਂਦੀਆਂ ਹਨ, ਉਸ ਦੀ ਵਿਦਵਤਾ ਇਕ ਐਮ. ਏ. ਪਾਸ ਤੋਂ ਘੱਟ

[ਸਰਦਾਰ ਦਰਬਾਰਾ ਸਿੰਘ]

ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ—ਉਹ ਉਸ ਵਰਗਾ ਹੀ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਪੰਜਾਬੀ ਉਹ ਸੁਖਬੂ ਅਤੇ ਜੀਂਦੀ ਜਾਗਦੀ ਭਾਖਾ ਹੈ ਜਿਸਨੂੰ ਭਾਈ ਵੀਰ ਸਿੰਘ ਵਰਗੇ ਕਵੀ ਪੈਦਾ ਕਰਨ ਦਾ ਉਚਾ ਮਨ ਪ੍ਰਪਤ ਹੈ। ਭਾਈ ਵੀਰ ਸਿੰਘ ਨੂੰ ਕੌਣ ਨਹੀਂ ਜਾਨਦਾ? ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਮਿੱਠੀ ਅਤੇ ਸੁਰੀਲੀ ਬਾਣੀ ਨੇ ਇਸ ਪੰਜਾਬ ਨੂੰ ਪੁਨਰਜੀਵਿਤ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਲਿਖਤਾਂ ਨੇ ਪੰਜਾਬੀ ਜਵਾਨਾਂ ਵਿਚ ਆਸ ਅਤੇ ਉਤਸ਼ਾਹ ਦੀ ਇਕ ਨਵੀਂ ਸਪਿਰਿਟ ਭਰ ਦਿਤੀ ਹੈ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਇਕ ਨਵੀਂ ਰੂਹ ਫੁੱਕੀ ਹੈ ਜਿਸਦੇ ਨਾਲ ਸਾਡੇ ਸੂਬੇ ਦਾ ਬੱਚਾ ਬੱਚਾ nationalism ਦੇ ਪਵਿਤਰ ਵਿਚਾਰਾਂ ਨਾਲ ਝੁਮ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਕੌਣ ਨਹੀਂ ਜਾਨਦਾ ਕਿ ਸਰਦਾਰ ਨਾਨਕ ਸਿੰਘ—ਪੰਜਾਬੀ ਦੇ ਮੱਠੇ ਪਰਮੇਸ਼ਨੇ novelist ਨੂੰ? ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਜਿਹੜੀਆਂ ਲਿਖਤਾਂ ਲਿਖੀਆਂ ਹਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਸਚਮੁਚ ਇਕ ਇਹੋ ਜਿਹਾ ਖੂਨ ਪੈਦਾ ਕੀਤਾ ਹੈ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਪੜ੍ਹ ਕੇ ਪੰਜਾਬ ਵਿਚ ਵਸਨ ਵਾਲੇ ਹਰ ਇਕ ਮਨੁੱਖ ਦੇ ਦਿਲ ਵਿਚ ਇਕ ਨਵਾਂ ਜੋਸ਼, ਇਕ ਨਵੀਂ ਟੀਸ ਅਤੇ ਨਵਾਂ ਵਲਵਲਾ ਪੈਦਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਪ੍ਰਭਾਕਰ ਅਤੇ ਮੁਨਸ਼ੀ-ਫ਼ਾਹਿਲ ਪਾਸ ਕਰਨ ਵਾਲਿਆਂ ਲਈ ਵੀ ਬਹੁਤ ਰੁਝ ਕਿਹਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਇਹ ਬਹੁਤ ਹੈ ਕਿ ਜਿਥੇ ਦੂਜੇ graduates ਨੂੰ Senate ਦੀਆਂ ਚੋਣਾਂ ਵਿਚ ਵੋਟ ਦਾ ਹੱਕ ਹੈ ਉਥੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਇਹ ਹੱਕ ਮਿਲਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਕਿ ਪੰਜਾਬ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਦੀ ਸੈਨੇਟ ਦੇ ਮੈਂਬਰ ਬਣ ਸਕਣ ਅਤੇ ਉਸਦੀਆਂ ਚੋਣਾਂ ਵਿਚ ਹਿੱਸਾ ਲੈ ਸਕਣ।

ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਸਾਡੇ ਮੁਲਕ ਦਾ ਇਕ ਵੱਡਾ ਭਾਗੀ ਮੁਲਕ ਹੈ। ਇਸ ਵਿਚ ਇਤਨਾ ਲੰਬਾ ਚੌੜਾ ਇਤਿਹਾਸ ਹੈ ਕਿ ਸਾਨੂੰ ਇਸ ਵਿਚੋਂ ਬਹੁਤ ਕੁਝ ਮਿਲ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਇਹੋ ਵਜਹ ਸੀ ਕਿ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ਾਂ ਨੇ ਇਸ ਮੁਲਕ ਵਿਚ ਪੈਰ ਧਰਦਿਆਂ ਹੀ ਸਾਨੂੰ ਆਪਣੀ ਪੁਰਾਣੀ ਸਭਿਅਤਾ ਤੋਂ ਬੇਮੁਖ ਕਰਨ ਲਈ ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ—ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਦਾ ਪ੍ਰਚਾਰ ਕੀਤਾ। ਅੱਜ ਅਸੀਂ ਇਕ ਆਜ਼ਾਦ ਮੁਲਕ ਦੇ ਵਾਸੀ ਹਾਂ। ਇਸ ਮਤੇ ਦੀ spirit ਨੂੰ ਅਪਨਾਉਣ ਦਾ ਇਹ ਫਾਇਦਾ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਅਸੀਂ ਜਿੱਥੇ political ਗੁਲਾਮੀ ਤੋਂ ਅਜ਼ਾਦ ਹੋ ਗਏ ਹਾਂ ਉੱਥੇ ਇਸ ਭਾਸ਼ਾ ਦੀ ਗੁਲਾਮੀ ਤੋਂ ਵੀ ਆਜ਼ਾਦ ਹੋ ਜਾਵਾਂਗੇ ਅਤੇ ਸਾਨੂੰ ਇਹ ਅਹਿਸਾਸ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਸਾਡੀ ਅਸਲੀ ਸਭਿਅਤਾ ਕੀ ਹੈ। ਇਸ ਨਾਲ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਸੂਬੇ ਵਿਚ ਇਕ ਖਾਸ ਕਿਸਮ ਦੀ ਲਿਆਕਤ ਪੈਦਾ ਹੋਵੇਗੀ। ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਅਤੇ ਦੂਜੀਆਂ ਭਾਸ਼ਾਵਾਂ ਵਿਚ ਇਕੋ ਜਿਹੀਆਂ characteristic ਚੀਜ਼ਾਂ ਹਨ ਜਿਹੜੀਆਂ ਸਾਡੇ ਸੂਬੇ ਨੂੰ ਅੱਗੇ ਲੈ ਜਾਣਗੀਆਂ ਅਤੇ ਇਸ ਵਿਚ ਨਵਾਂ ਜੀਵਨ ਪੈਦਾ ਕਰਨਗੀਆਂ। ਇਸ ਲਈ ਬਹੁਤ ਰੁਝ ਨਾ ਕਹਿੰਦਾ ਹੋਇਆ ਮੈਂ ਅਰਬ ਕਰਾਂਗਾ ਕਿ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਸਾਹਿਬ ਆਪਣੇ ਮਤੇ ਵਿਚ ਗਿਆਨੀ, ਪ੍ਰਭਾਕਰ ਅਤੇ ਮੁਨਸ਼ੀ ਫ਼ਾਹਿਲ ਨੂੰ ਵੀ ਸ਼ਾਮਲ ਕਰ ਲੈਣ। ਇਸ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਪੰਜਾਬ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਦੇ ਪਾਸ approach ਅਤੇ request ਕੀਤੀ ਜਾਵੇ ਕਿ ਇਸ ਮਤੇ ਨੂੰ ਕਬੂਲ ਕਰੇ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਕੁਝ ਸ਼ਰਤਾਂ ਨਾਲ ਮੈਂ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਸਾਹਿਬ ਦੇ ਮਤੇ ਦੀ ਪਰੋਖਤਾ ਕਰਦਾ ਹਾਂ।

ਸ਼੍ਰੀ ਬਨਾਰਸੀ ਦਾਸ ਗੁਪਤਾ (ਥਾਨੇਸਰ) : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਮੈਂ ਇਸ ਰੰਜੋਲਯੂਸ਼ਨ ਕੋ ਜੋ ਕਿ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਰਲਾ ਰਾਮ ਜੀ ਨੇ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਹੈ support ਕਰਨੇ ਕੇ ਲਿਯੇ ਖੜਾ ਹੁਆ ਹੂੰ। ਮੈਂ ਸਮਝਤਾ ਹੂੰ ਕਿ ਭਾਵੇਂ ਇਹੋ ਇਕ ਬਹੁਤ ਆਲੀ spirit ਕੋ ਲੇ ਕਰ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਗਏ ਹੈ, ਇਸ ਲਿਯੇ ਇਸ ਹਾਊਸ ਕਾ ਕੋਈ ਆ ਮਾਨਨੀਯ ਮੈਂਬਰ ਇਸ ਸੇ ਇਕਤਿਲਾਫ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਤਾ।

ਮੈਂ ਸਮਝਤਾ ਹੂੰ ਕਿ ਆਪਣਾ ਇਕੋ ਆਜ਼ਾਦ ਸਾਧਨ ਹੈ ਕਿ ਜਿਸ ਕੇ ਭਰਿਯੇ ਕਿਸੀ ਕੀਸ ਕੀ ਸਮਝਤਾ ਆਰ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤੀ ਜੀਵਿਤ ਰਹ ਸਕਤੀ ਹੈ। ਧਰੀ ਵਜਹ ਥੀ ਕਿ ਜੂਹੀ ਆਗੇਜ਼ਾਂ ਨੇ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਕੀ ਭੂਮੀਨ ਪਰ ਕਦਮ ਰਖਾ, ਤਨਹੀਨੇ ਆਪਨੇ ਰੰਗ ਕੋ ਧਰੀ ਫੈਲਾਨੇ ਕੇ ਲਿਯੇ ਹਰ ਯਗਹ ਆਗੇਜ਼ੀ ਕੋ ਫੈਲਾਯਾ।

जगह जगह पर स्टेशनों, होटलों, दफ्तरों और दूसरे अदरों में अंग्रेजी का ही इस्तेमाल किया गया ताकि लोग अंगरेजी पढ़ें और उन के सिद्धांतों और विचारों को अपना लें और अपनी सभ्यता को बिल्कुल भूल जायें ।

लेकिन आज तो अंग्रेज सदा के लिये भारतवर्ष को छोड़ कर चले गए हैं । आज तो हम आजाद देश हैं । इसलिये क्यों हम अब भी उन की जवान की गुलामी में चलते रहें ? मैं समझता हूँ कि अंग्रेजों के चले जाने के बाद आज हमें हिंदुस्तान में एक नया जीवन पैदा करना है—कौमीयत का नया और कभी न भिट सकने वाला रंग भरना है, अपने हरेक भाई और बहिन के दिल और दिमाग में । आज हिंदुस्तान आहिस्ता आहिस्ता नहीं बल्कि बड़ी तेजी के साथ अपनी उन्नति कर रहा है । आज हिंदुस्तान उन गलतियों और तकलीफों को जो कि अंग्रेजों के राज्य में हुई, दूर करने के लिये प्रयत्न कर रहा है ।

मैं समझता हूँ कि शास्त्री संस्कृत का जो सब से बड़ा इमतिहान है वह अंग्रेजी के M.A. के equivalent परीक्षा है । भारत में जितनी भाषाएं हैं, जैसे हमारे पंजाब में हिंदी और पंजाबी भाषाएं बोली जाती हैं, इन सब की mother language संस्कृत है । अगर किसी को अच्छी संस्कृत नहीं आती है तो उस को अच्छी हिंदी या पंजाबी नहीं आ सकती । मैं समझता हूँ कि संस्कृत को सर्वोत्तम स्थान मिलना चाहिए । अगरचि हिंदी को हमारी नेशनल language का स्थान मिल चुका है और संस्कृत को national language नहीं माना गया लेकिन किसी को हिंदी अच्छी तरह नहीं आ सकती है जब तक कि वह संस्कृत नहीं जानता । आप ने देखा है कि अभी अभी जालन्धर में जो संस्कृत का सम्मेलन हुआ है उस में भारत के कोने कोने से बड़े बड़े आदमियों ने अपने सन्देश भेजे थे । अब अफगानिस्तान में भी संस्कृत पढ़ाई जाने लगी है । यह सिर्फ भारत की भाषाओं की mother language नहीं है बल्कि दुनिया की languages की माता समझी जाती है । मैंने संस्कृत पढ़ी है और मैं समझता हूँ कि संस्कृत का जो साहित्य है वह अंग्रेजी से किसी हालत में कम नहीं है । लेकिन अंग्रेज की पालिसी की वजह से इस को नीचे लाया गया और इस को वह दर्जा हासिल नहीं हो सका जो इस को दिया जाना चाहिये । हम देखते हैं कि शास्त्री पास को २५ से ५० रुपये माहवार तक वेतन पर नौकर रखा जाता है जब कि अंग्रेजी के graduate को १५० रुपये तक की नौकरी मिल जाती है बल्कि पहले तो इस से कहीं ज्यादा की मिल जाती थी । आज हमें इन गलतियों को हटाना चाहिये और हमें इस बात का अहिंसा होना चाहिये कि किस तरह हम संस्कृत को प्रोत्साहन दें और उस को ठीक दर्जा दें ।

एक चीज मैं और अर्ज करना चाहता हूँ । वह यह है कि हिंदी का जो प्रभाकर का इमतिहान है उस को भी वही दर्जा दिया जाना चाहिये क्योंकि जो यह इमतिहान पास करते हैं वह सनातक कहलाते हैं । बम्बई में और उत्तर प्रदेश में इसे वह स्थान प्राप्त हो गया है । प्रधान जी, मैं अर्ज करता हूँ कि यदि हम ऐसा करेंगे तो यकीनी तौर पर हम एक कदम और आगे उठायेंगे और अभी तो हम ने और बहुत सारी चीजें करनी हैं । यदि हम यह चीजें करनी शुरू करेंगे तो हमें

श्री बनारसी दास गुप्ता]

अहिंसा हो जायेगा कि हम दर्जा बदलने की तरफ की कर रहे हैं। मैं हाऊस का बहुत time लेता हुआ प्रिंसिपल रला राम के प्रस्ताव की तारीफ करता हूँ कि शास्त्री और प्रभाकर को graduates के equivalent दर्जा दिया जाना चाहिये।

श्री राम चंद्र कामरेड (नूरपुर): अध्यक्ष महोदय, यूनिवर्सिटी एक तरह से विद्या मन्दिर है और यूनिवर्सिटी के चलाने वाले लोगों को थोड़ा फ़राख-दिल होना चाहिये और उस में तमाम विद्वानों का एक स्थान होना चाहिए। यह अफ़सोस की बात है कि हमारी यूनिवर्सिटी की सैनिट इस मामले में conservative view ले रहा है। हमारी असेम्बली के माननीय सदस्य प्रिंसिपल रला राम और श्रीमती सीता देवी दोनों ही सैनिट के मੈम्बर हैं। उन्हें वहाँ से निराश होकर आखिर असेम्बली में यह प्रस्ताव पेश करना पड़ा है। श्रीमान् प्रधान जी, मैं आप की तबज़ुह स्वर्गीय लाला लाजपत राय के लिखे एक article की तरफ़ दिलाना चाहता हूँ जिस का heading उन्होंने 'Art of Throwing Bombs' दिया था। लाला जी ने उस article में लिखा था कि हमने सारी चीज़ों को बदलना है, इस के लिये हम किस मनुष्य पर बम्ब फेंकेंगे। वह दिन एक बड़े संघर्ष के दिन थे। उन्होंने यह राय दी कि इन सब चीज़ों को बदलने के लिये हमें लोगों के स्यालात को bomb करना होगा। जो हम लोगों में अहिंसा कमतरी है इस के तबदील हो जाने से हर एक चीज़ तबदील हो जायेगी। मैं यह कहना चाहता हूँ कि आज जब कि हम ने आज़ादी ले ली है तो हमें इस अहिंसा से कमतरी पर बम्ब फेंकना चाहिए। मैं तो आशा करता था के आज़ादी के बाद हकूमत इन चीज़ों को आने आप अपने हाथ में लेगी लेकिन वह कुछ दीगर ज़रूरी चीज़ों में मसरूफ़ होने की वजह से शायद इस तरफ़ ध्यान नहीं दे सकी। खैर अब श्री रला राम जी ने इस अहिंसा से कमतरी को हटाने के लिये यह प्रस्ताव असेम्बली के सामने पेश किया है जो कि अंग्रेज़ी हकूमत ने इस स्याल से हम लोगों में संस्कृत की न्यूनता का विचार पैदा किया था कि इस देश के स्वाभिमान को कुचल दिया जाये और इस का निरादर किया जाये। मैं अर्ज़ करता हूँ कि संस्कृत ज़बान आज भी culture के लिहाज़ से इतनी बलुन्द है और इस में इतना समरिया है कि सारी दुनिया के लोग ज्ञान की खोज में यहां आते हैं और इस का अध्ययन करते हैं। इस लिये हमें चाहिये कि हम ऐसे कदम उठाये जिन से यह सूबा फले फूले। अंग्रेज़ का इस भाषा की तरक्की में रुकावट डालने का एक ही मतलब था कि यहां स्वतन्त्र विचार वाले लोग पैदा न हों। अंग्रेज़ी पढ़े लाज़मी तौर पर संस्कृत, हिंदी और ज़ानी के विद्वानों से लायक नहीं होने। इन्हें केवल इतनी तालीम दी जाती थी कि विदेशी सरकार के कारिन्दे बन सकें। अकबर इलाहाबादी ने इस सम्बन्ध में खूब कहा है।

उन्हीं के मतलब की कह रहा हूँ, ज़बान है मेरी बात उन की।

उन्हीं के मतलब की लिख रहा हूँ, कलम है मेरा दवात उन की।

अब मौका आ गया है इस अहिंसा से कमतरी को हटाने का। इसी लिये यह resolution पेश किया गया है। अंग्रेज़ों ने जहां प्रभाकर को, ज़ानी को, मौलवी फ़ाज़िल को और मुन्शी फ़ाज़िल को अंग्रेज़ी के graduates के बराबर का हतवा नहीं दे रखा था वहां National University College के graduates को भी सैनिट की election में हिस्सा लेने का हक नहीं दिया था। मैं ने एक बार इस सिलसिले में एक article

भी लिखा था और अब यह प्रस्ताव भी पेश हुआ है। मैं मिनिस्टर साहिबान की तबज्जुह इस बात की तरफ दिलाना चाहता हूँ कि जब वह कानून बनायें तो शास्त्री, प्रभाकर, जानी व उर्दू की डिगिरियों के इलावा नेशनल कालेज के graduates को भी चुनाव में voting का अधिकार दें। इन शब्दों के साथ मैं प्रिंसिपल रला राम जी के resolution का समर्थन करता हूँ।

दिवान जगदीश चंद्र (लुधियाना शहर उत्तरी) : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रिंसिपल साहिब के इस resolution की तारीफ के लिये खड़ा हुआ हूँ। इस एवान में इस resolution के बारे में जो तकरीरें हुई हैं, उन्हें मैंने बड़े ध्यान से सुना है। आजादी आने के बाद हमने adult franchise शुरू कर के हर बालग इन्सान को वोट का हक दे दिया है। यह खुशगवार तब्दीली अवाम को आजादी द्वारा प्राप्त अधिकारों से ही मुमकिन हो सकी है। अवाम की हालत पर यूनिवर्सिटीयों का गहरा असर पड़ता है, इस लिये इन में भी बेहतरी के लिये तब्दीली आनी चाहिये। मैं समझता हूँ कि जबानें तो महज साधन हैं जिन के जरिये तालीम या ज्ञान लोगों को दिया जाता है। इस लिये मैं समझता हूँ कि अगर वोट देने का हक शास्त्रियों को दिया जाए तो जिन्होंने उर्दू degrees हासिल की हैं, उन्हें भी वोट का हक होना चाहिए। बल्कि मैं तो यह कहूँगा कि अगर कोई चीनी या कोई और भाषा पढ़ा हुआ हो तो उसे भी ऐसा हक मिलना चाहिये। शकुन्तला नाटक जैसे राग संस्कृत में गाए गए और दूसरी जबानों में भी ऐसे ही राग गाए गए, मगर मस्द सब का एक ही था। आज इस बदले हुए जमाने में नई किस्म के राग गाने की जरूरत है और वह हैं किसान और मजदूर के राग, जिन से देश में जागृती पैदा हो। इस लिये मैं कहूँगा कि आज की जरूरियात का अहिंसास करते हुए इस resolution को इस तरह पास कर दिया जाए कि न सिर्फ academic qualifications वालों को ही Senate में अपने प्रतिनिधि भेजने का हक मिले बल्कि Technicians और Engineers को भी हक मिल जाए ताकि अवाम को तरक्की की तरफ ले जाने और उन की जरूरियात को पूरा करने वाले लोग भी यूनिवर्सिटी में पहुंच जायें। मैं अर्ज करूँगा कि हमें इस बात का खास तौर पर ध्यान रखना चाहिये। वित्त मंत्री इस बहस का ज्वाब देंगे और गालिबन यह कहेंगे कि चूंकि इस resolution को हाऊस में इतनी unanimous support मिली है, इस लिये हम इस बात पर विचार कर के तब्दीली करेंगे। तो उस वकत जहां art और academic qualifications को ध्यान में रखा जाए वहां अवाम की जरूरतों को भी ध्यान में रखा जाए ताकि अवाम की हालत बेहतर हो और हिंदुस्तान तरक्की करे। जिन लोगों के पास ज्ञान हो उन्हें राय का हक होना चाहिये ताकि तरीकेतालीम, जिस के बारे में रोजाना गोर मचाया जाता है, पर अच्छा असर पड़े। इस लिये यूनिवर्सिटी ऐक्ट में तरमीम करते वकत इस बात को ध्यान में रखें।

श्री दौलत राम शर्मा (हमीरपुर) : अध्यक्ष महोदय, प्रिंसिपल रलाराम जी ने यह प्रस्ताव पेश कर के देश की एक आवश्यकता को पूरा किया है। जब तक देशी भाषाओं का प्रचार अच्छी तरह से नहीं होता मुल्क तरक्की नहीं कर सकता। एक Italian author Machiavelli ने एक किताब लिखी है जिस में उस ने हुकूमत करने के

[श्री दीलत राम शर्मा]

गुर बताये हैं। उस ने एक गुर यह बताया है कि अगर किसी दूसरे मुल्क पर हुकूमत करना चाहते हो तो उस मुल्क की ज़बान और culture को खत्म कर दो। यही गुर अंग्रेज़ों ने हिंदुस्तान पर लागू किया। उन्होंने यहां की भाषाओं का पढ़ना लिखना बिल्कुल बंद कर दिया और अंग्रेज़ी भाषा को प्रचलित किया। लेकिन हमें हैरानी तो तब होती है जब हम अपने ही लोगों को अपनी ही भाषा के रास्ते में रोड़े अटकाते देखते हैं। जैसा कि सभी को पता है, कांग्रेस सरकार ने फैसला कर दिया है कि 15 साल के बाद अंग्रेज़ी नहीं रहेगी, इस की जगह हिन्दी ले लेगी। सरकारी कार्य हिन्दी में होगा। फिर समझ नहीं आती कि यूनिवर्सिटी के कार्यकर्ता क्यों अंग्रेज़ी से चिपटे हुए हैं और उन का mind हिन्दी के मुताबिक क्यों prejudiced है। उ हें जमाने की रफ़्तार के मुताबिक चलना चाहिये और इस resolution के मुताबिक देशी भाषाओं को ऊपर उठाना चाहिये। इस resolution में पंजाबी, जो पंजाब की भाषा है, की degree 'ज्ञानी' और हिन्दी, जो राष्ट्र भाषा है, की degree 'प्रभाकर' को शामिल करना चाहिये ताकि यह भाषाएं प्रचलित हों और लोगों को इन के पढ़ने पढ़ाने में उत्साह मिले और इन भाषाओं का प्रचार हो। संस्कृत बहुत पुरानी ज़बान है और कम अज़ कम Northern India की सारी भाषाएं तो इस में से निकली ही हैं। जैसा कि पहले एक मित्र ने कहा कि अफ़ग़ानिस्तान की भाषा पश्तो भी संस्कृत से ही निकली है। इसी प्रकार Persian भी इसी में से निकली है।

केंद्रीय सरकार ने यह फैसला कर लिया है कि हिंदुस्तान में आगे को हिन्दी ज़बान रायज होगी। इस के लिये जितने नये इलफ़ाज़ की ज़रूरत पड़ेगी वे सब संस्कृत से ही लिये जायेंगे, उन सब का base संस्कृत ही होगी। इस लिये हमें संस्कृत को भी प्रचलित करना चाहिए और यह resolution पास करके University Act में तरमिम करनी चाहिये जिस से शास्त्री, प्रभाकर और ज्ञानी पास लोगों को बोट का हक मिले। अंग्रेज़ी तो अब 10 साल और है। उस के बाद तो Syndicate का काम भी हिन्दी में होगा इस लिये इस के कार्यकर्ताओं को हिन्दी से डरना नहीं चाहिये बल्कि इस की तरफ ध्यान देने की कोशिश करनी चाहिये।

इन शब्दों के साथ मैं अपने स्थान पर बैठता हूं।

(At this stage the hon. Speaker left the Chair and Dewan Jagdish Chandra a member of the panel of Chairmen, occupied it.)

ਸ਼੍ਰੀਮਤੀ ਡਾ: ਪਰਕਾਸ਼ ਕੌਰ (ਦਮਦਮ): ਚੇਅਰਮੈਨ ਸਾਹਿਬ, ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਜੋ resolution ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਹੈ ਇਹ ਬੜਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ ਅਤੇ ਮੈਂ ਇਸ ਦੀ ਪਹੇਲਤਾ ਵਿਚ ਹੁਣ ਕਹਿਣਾ ਚਾਹੁੰਦੀ ਹਾਂ। ਸ਼੍ਰੀਮਤੀ ਸੀਤਾ ਦੇਵੀ ਤੋਂ ਇਹ ਸੁਣ ਕੇ ਕਿ ਸ਼ਾਸਤਰੀਆਂ ਨੂੰ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਸਾਡੀ ਇਸ ਪੁਰਤੀ ਭਾਸ਼ਾ ਨੂੰ ਫਿੰਦਾ ਰਖਿਆ ਹੈ, ਵੋਟ ਦੇਣ ਦਾ ਹਕ ਨਹੀਂ ਹੈ ਮੈਨੂੰ ਅਫਸੋਸ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਜਦ ਸਾਡੀ ਸਦਕਰ ਨੇ ਇਹ ਫੈਸਲਾ ਕੀਤਾ ਹੈ ਕਿ ਜਦ 10 ਸਾਲਾਂ ਬਾਅਦ ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਦੀ ਥਾਂ ਸਾਡੀ ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਨੇ ਲੈ ਲੈਣੀ ਹੈ, ਤਾਂ ਕੋਈ ਵਜਹ ਨਹੀਂ ਕਿ ਪਰਾਚੀਨ ਅਤੇ ਸਾਦੀਆਂ ਏਲੀਆਂ ਦੀ source ਮੰਨਦਿਤ ਨੂੰ, ਜਿਸ ਵਿਚੋਂ ਕਿ ਦੁਸ਼ੀਆਂ ਸ਼ਾਦੀਆਂ ਏਲੀਆਂ ਨਿਕਲੀਆਂ ਹਨ, recognise ਨਾ ਕੀਤਾ ਜਾਵੇ।

ਇਸ ਬਾਰੇ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਸਾਹਿਬ ਦਾ ਮਤਾ ਬਹੁਤ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ। ਅਸਾਨੂੰ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਕਿ ਸਰਬ ਸਮਿੱਤੀ ਨਾਲ ਇਸ ਨੂੰ accept ਕਰੀਏ। ਮੈਨੂੰ ਇਹ ਵੇਖ ਕੇ ਅਫਸੋਸ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਲੋਕਾਂ ਨੇ ਅਸਾਡੀ language ਨੂੰ ਜ਼ਿੰਦਾ ਰਖਿਆ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਵਿਚ literature ਅਤੇ ਆਰਟ ਪੇਂਟ ਕੀਤਾ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਅਸਾਡੇ ਵਿਚ life ਪੈਦਾ ਕੀਤੀ ਜਿਵੇਂ ਕਿ ਧਨੀ ਰਾਮ ਜੀ ਚਾਤ੍ਰਕ ਵਰਗੇ ਕਵੀ ਹਨ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਅਸੀਂ ਪੂਰੀ ਕਦਰ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ। ਸ਼ਾਸਤਰੀਆਂ ਨੇ ਵੀ ਅਸਾਡੀ ਮਾਤ੍ਰੀ ਭਾਸ਼ਾ ਨੂੰ ਜ਼ਿੰਦਾ ਰਖਿਆ ਹੈ। ਮੈਨੂੰ ਅਫਸੋਸ ਹੈ ਕਿ ਅਜਿਹੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਪੰਜਾਬ ਯੂਨੀਵਰਸਟੀ ਦੀਆਂ ਚੋਣਾਂ ਤੇ ਵੋਟ ਦੇਣ ਦਾ ਹੱਕ ਕਿਉਂ ਨਹੀਂ ਦਿਤਾ ਗਿਆ। ਮੈਂ ਬਹੁਤੇ ਲਫਜ਼ਾਂ ਵਿਚ ਨਾ ਕਹਿੰਦੀ ਹੋਈ ਇਤਨਾ ਹੀ ਕਹਾਂਗੀ ਕਿ ਅਸੀਂ foreign language ਨੂੰ ਕਦਣਾ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਦੀ ਥਾਂ ਤੇ ਹਿੰਦੋਸਤਾਨੀ ਤੇ ਰਸ਼ਟਰੀ ਭਾਸ਼ਾ ਨੂੰ ਸਥਾਪਿਤ ਕਰਨਾ ਹੈ ਅਤੇ ਨਾਲ ਹੀ ਆਪਣੀ regional ਭਾਸ਼ਾ ਨੂੰ ਵੀ ਉਪਰ ਚੁਕਣਾ ਹੈ। ਅਸਾਨੂੰ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਹੋਸਲਾ ਅਵਜ਼ਾਈ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਦੀ ਸੀ ਪਰ ਹੁਣ ਵੀ ਅਸੀਂ ਜ਼ਿਆਦਾ ਲੋਟ ਨਹੀਂ ਜ਼ੋਰ ਸਟਕਾਰ ਇਸ resolution ਨੂੰ accept ਕਰ ਲਵੇ ਅਤੇ ਸ਼ਾਸਤਰੀਆਂ ਨੂੰ ਅਤੇ ਬਾਕੀ ਪ੍ਰਭਾਕਰ, ਗਿਆਨੀ, ਮੁਨਸ਼ੀ ਫਾਜ਼ਲ ਆਦਿ ਨੂੰ ਸੈਨੇਟ ਦੀਆਂ ਚੋਣਾਂ ਵਿਚ ਵੋਟ ਦੇਣ ਦੇ ਹੱਕ ਨੂੰ recognise ਕਰੇ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕਰਨ ਨਾਲ ਇਹ ਲੋਕ ਮਾਤ੍ਰੀ ਭਾਸ਼ਾ ਦੀ ਸੇਵਾ ਵਿਚ ਵਧ ਚੜ੍ਹ ਕੇ ਹਿੱਸਾ ਲੈਣਗੇ ਅਤੇ ਯੂਨੀਵਰਸਟੀ ਦੇ studies ਬੇਰੁਝਾਈ ਦੀ ਮਦਦ ਕਰਨਗੇ।

ਮੈਂ ਇਨ੍ਹਾਂ ਲਈ ਨਾ ਸਿਰਫ ਵੋਟ ਦੇਣ ਦੇ ਹੱਕ ਤੇ ਜ਼ੋਰ ਦਿੰਦੀ ਹਾਂ ਸਗੋਂ ਇਕ ਬਦਮ ਹੋਰ ਅਗਾਂਹ ਜਾਣਾ ਚਾਹੁੰਦੀ ਹਾਂ ਅਤੇ ਕਹਿੰਦੀ ਹਾਂ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ English Teachers ਵਾਲੇ ਗਰੇਡ ਦਿੱਤੇ ਜਾਣ ਤਾਂ ਜੋ ਮੁਲਕ ਦੀ ਆਜ਼ਾਦੀ ਉਪ੍ਰੰਤ ਉਹ ਆਪਣੀ culture ਨੂੰ ਹੋਰ ਵੀ ਉਚਾ ਕਰ ਸਕਣ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਲਫਜ਼ਾਂ ਨਾਲ ਮੈਂ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਰਲਾ ਰਾਮ ਜੀ ਦੇ resolution ਦੀ ਤਾਈਦ ਕਰਦੀ ਹਾਂ ਅਤੇ ਮੰਗ ਕਰਦੀ ਹਾਂ ਕਿ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਸਾਹਿਬ ਗਿਆਨੀ, ਪ੍ਰਭਾਕਰ, ਮੁਨਸ਼ੀ ਫਾਜ਼ਲ ਅਤੇ ਮੇਲਵੀਆਂ ਨੂੰ ਵੀ ਇਸ resolution ਵਿਚ ਸ਼ਾਮਲ ਕਰ ਲੈਣ ਕਿਉਂਕਿ ਸ਼ਾਸਤਰੀਆਂ ਦੇ ਨਾਲ ਨਾਲ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਵੋਟ ਦਾ ਹੱਕ ਮਿਲਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ ਮੋਤਾ ਸਿੰਘ ਅਨੰਦਪੁਰੀ (ਆਦਮਪੁਰ) : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਜੋ ਪ੍ਰਸਤਾਵ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਰਲਾ ਰਾਮ ਨੇ ਸਭਾ ਦੇ ਸਾਹਮਣੇ ਰਖਿਆ ਹੈ ਇਹ ਬੜੀ ਅਹਮੀਤ ਰਖਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਕੋਈ ਮਾਮੂਲੀ nature ਦਾ ਪ੍ਰਸਤਾਵ ਨਹੀਂ। ਹਿੰਦ ਦੀ ਪੁਰਾਣੀ ਜ਼ਬਾਨ ਅਤੇ ਮਦਰੀ ਜ਼ਬਾਨ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਨੂੰ ਉੱਚਿਆਂ ਕਰਨ ਅਤੇ ਉਸ ਦੀ dignity ਨੂੰ ਉੱਚਾ ਕਰਨ ਲਈ ਇਸ ਪ੍ਰਸਤਾਵ ਰਾਹੀਂ ਆਵਾਜ਼ ਉਠਾਈ ਗਈ ਹੈ। ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਭਾਸ਼ਾ ਨੇ ਇਸ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਅੰਦਰ ਪ੍ਰਾਚੀਨ culture ਅਤੇ civilization ਨੂੰ ਉੱਚਿਆਂ ਕਰਨ ਲਈ ਸਾਹਿਤ ਪੈਦਾ ਕੀਤਾ। ਇਸ ਭਾਸ਼ਾ ਦੀ ਕਦਰ ਤੇ ਮਨ ਨਾ ਕੇਵਲ ਭਾਰਤ ਵਿਚ ਸਗੋਂ ਬਾਹਰਲੇ ਦੇਸ਼ਾਂ ਮਸਲਨ ਅਮਰੀਕਾ, ਯੋਰਪ ਆਦਿ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਵਿਚ ਬਹੁਤ ਜ਼ਿਆਦਾ ਹੈ। ਯੋਰਪ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਨੇ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ literature ਅਤੇ culture ਨੂੰ ਉਚਾ ਕਰਨ ਦੇ ਯਤਨ ਕੀਤੇ ਹਨ। ਜਰਮਨ ਨੇ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਗ੍ਰੰਥਾਂ ਦਾ translation ਕਰਵਾਇਆ ਹੈ ਇਹ ਵੇਖਣ ਲਈ ਕਿ ਹਿੰਦ ਦੀ ਪੁਰਾਣੀ culture ਅਤੇ civilization ਕੀ ਸੀ ? ਪਰ ਮੈਨੂੰ ਅਫਸੋਸ ਨਾਲ ਕਹਿਣਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਪਾਸੇ ਕੋਈ ਧਿਆਨ ਅਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਵਿਚ ਨਹੀਂ ਦਿਤਾ ਜਾ ਰਿਹਾ। ਅਸਾਡੇ ਮੁਲਕ ਵਿਚ ਇਸ ਜ਼ਬਾਨ ਦੀ ਬੜੀ ਤੇ ਬੜੀ ਡਿਗਰੀ ਸ਼ਾਸਤਰੀ ਦੀ ਹੈ।

[ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ ਮੋਤਾ ਸਿੰਘ ਅਨੰਦਪੁਰੀ]

ਸ਼ਾਸਤਰੀ ਦਾ ਦਰਜਾ ਐਮ. ਏ. ਦੇ ਬਰਾਬਰ ਹੈ ਪਰ ਰੈਜ਼ੋਲਯੂਸ਼ਨ ਤੋਂ ਪਤਾ ਲਗਦਾ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਦਾ ਦਰਜਾ ਬੀ. ਏ. ਪਾਸ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਬਰਾਬਰ ਵੀ ਨਹੀਂ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਇਕ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਜ਼ਬਾਨ ਨਾਲ ਬੰਦਿਨਸਾਫੀ ਕੀਤੀ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ। ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਜ਼ਬਾਨ ਹੀ ਅਜਿਹੀ ਹੈ ਜਿਸ ਰਾਹੀਂ ਅਸੀਂ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਰਾਸ਼ਟਰ ਭਾਸ਼ਾ ਕਦਿਮ ਕਰਨੀ ਹੈ। ਰਾਸ਼ਟਰ ਭਾਸ਼ਾ ਦੀ ਬੁਨਿਆਦ ਇਸ ਦਾ root, ਅਤੇ ਇਸ ਦੀ foundation ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਹੈ। ਅਗਰ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਦੀ ਕਦਰ ਨਹੀਂ ਹੋਵੇਗੀ ਤਾਂ ਰਾਸ਼ਟਰ ਭਾਸ਼ਾ ਦੀ ਕਦਰ ਨਹੀਂ ਹੋਵੇਗੀ। ਹਿੰਦੀ ਭਾਸ਼ਾ ਦੀ ਕਦਰ ਨਹੀਂ ਹੋਵੇਗੀ।

ਮੈਨੂੰ ਇਕ ਗੱਲ ਦਾ ਜ਼ਰੂਰ ਅਵਸੇਸ ਹੈ ਕਿ ਪੰਡਤ ਜੀ ਨੇ ਆਪਣੇ ਰੈਜ਼ੋਲਯੂਸ਼ਨ ਵਿਚ ਹਿੰਦੀ ਨਹੀਂ ਰਖੀ, ਪੰਜਾਬੀ ਨਹੀਂ ਰਖੀ ਅਤੇ ਉਰਦੂ ਨਹੀਂ ਰਖੀ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਸ਼ਾਸਤਰੀਆਂ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਹਕ ਮਿਲਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਬੀਬੀ ਪਰਕਾਸ਼ ਕੌਰ ਜੀ ਨੇ ਜੋ ਤਜਵੀਜ਼ ਕੀਤੀ ਹੈ ਕਿ ਅਦੀਬ ਫ਼ਜ਼ਲ, ਗਿਆਨੀ, ਪ੍ਰਭਾਕਰ, ਮੁਨਸ਼ੀ ਫ਼ਜ਼ਲ ਅਤੇ ਮੋਲਵੀ ਫ਼ਜ਼ਲ ਨੂੰ ਵੀ ਵੋਟ ਦਾ ਹਕ ਮਿਲੇ, ਮੈਂ ਉਸਦੀ ਹਮਇਤ ਕਰਦਾ ਹਾਂ। ਮੇਰਾ ਖਿਆਲ ਹੈ ਕਿ ਪੰਡਤ ਜੀ ਨੂੰ ਸ਼ਾਇਦ ਇਹ ਖਿਆਲ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਪਹਿਲੇ ਸ਼ਾਸਤਰੀਆਂ ਲਈ ਵੋਟ ਦਾ ਹਕ ਲੈ ਲਵੇ ਫਿਰ ਬਾਕੀਆਂ ਲਈ ਲਵਾਂਗੇ ਪਰ ਮੈਂ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿਉਂ ਨਾ ਹੁਣੇ ਹੀ ਇਸ ਰੈਜ਼ੋਲਯੂਸ਼ਨ ਵਿਚ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਸ਼ਾਮਲ ਕੀਤਾ ਜਵੇ। ਇਹ ਠੀਕ ਹੈ ਕਿ language ਦਾ ਆਧਾਰ ਅਦਬੀ ਤਾਦਨ ਤੇ ਹੈ। ਜਿਸ ਮੁਲਕ ਦੀ ਜ਼ਬਾਨ ਦਾ ਆਧਾਰ culture ਤੇ ਨਹੀਂ ਉਹ ਕਦੀ ਵੀ ਅਪਣਾ ਸਿਰ ਉਚਾ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦੀ। ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਭਾਸ਼ਾ ਹੈ ਅਤੇ ਰਾਸ਼ਟਰ ਭਾਸ਼ਾ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਇਸ ਵਿਚ ਉਨਤੀ ਕਰਨ ਲਈ ਵੋਟ ਦਾ ਹਕ ਜ਼ਰੂਰ ਦੇਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

ਇਸ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ Honours in Hindi, Honours in Punjabi ਅਤੇ Honours in Urdu ਨੂੰ ਵੀ ਸ਼ਾਮਲ ਕਰ ਲੈਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਕਿਉਂ ਜੋ ਮੁਨਸ਼ੀ ਫ਼ਜ਼ਲ ਦਾ ਦਰਜਾ ਵੀ ਸ਼ਾਸਤਰੀ ਦੇ ਬਰਾਬਰ ਹੈ। ਮੈਂ ਆਪ ਇਹ ਇਮਤਿਹਾਨ ਪਾਸ ਕੀਤਾ ਹੈ ਅਤੇ ਮੈਨੂੰ ਪਤਾ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਕਿਤਨਾ ਮੁਸ਼ਕਲ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਮੈਂ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਹੌਰਸ ਸਰਵ ਮੰਮਤੀ ਨਾਲ ਇਸ ਰੈਜ਼ੋਲਯੂਸ਼ਨ ਨੂੰ ਪਾਸ ਕਰੇ ਅਤੇ ਸ਼ਾਸਤਰੀਆਂ ਦੇ ਨਾਲ ਨਾਲ ਗਿਆਨੀ, ਪ੍ਰਭਾਕਰ, ਮੋਲਵੀ ਫ਼ਜ਼ਲ ਨੂੰ ਵੀ ਵੋਟ ਦਾ ਹਕ ਦਿਤਾ ਜਵੇ। ਸ਼ਾਸਤਰੀ ਦੇ ਕੋਰਸਾਂ ਦਾ ਦਰਜਾ ਜਿਵੇਂ ਹੈ ਉਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹਿੰਦੀ ਦੇ ਕੋਰਸਾਂ ਦਾ ਹੈ। ਜੇਕਰ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਵਿਚ fiction ਹੈ, poetry ਹੈ ਤਾਂ ਹਿੰਦੀ ਵਿਚ ਵੀ ਹੈ ਅਤੇ ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਚ ਵੀ ਹੈ। ਜਿਥੋਂ ਤਕ knowledge ਦਾ ਸਵਾਲ ਹੈ ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕੋਈ Honours in Hindi, Honours in Punjabi ਅਤੇ Honours in Urdu ਇਲਮ ਹਾਸਲ ਕਰਦਾ ਹੈ ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸ਼ਾਸਤਰੀ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਉਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੀ ਕਠਨ ਹੈ ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕੋਈ ਪੰਜਾਬੀ ਪੜ੍ਹਿਆ ਜਰਮਨ ਜ਼ਬਾਨ ਸਿਖੇ ਜਾਂ ਜਰਮਨ ਜਾਣਦਾ ਆਦਮੀ ਪੰਜਾਬੀ ਜ਼ਬਾਨ ਸਿਖੇ। ਇਸ ਲਈ Honours ਦਾ ਦਰਜਾ ਬਹੁਤ ਉਚਾ ਹੈ ਇਸ ਲਈ ਘੱਟੋ ਘੱਟ ਸ਼ਾਸਤਰੀ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਗਿਆਨੀ, ਮੋਲਵੀ, ਪ੍ਰਭਾਕਰ ਨੂੰ ਵੀ ਵੋਟ ਦਾ ਹਕ ਦਿਤਾ ਜਾਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਵਾਸਤੇ ਯੂਨੀਵਰਸਟੀ ਐਕਟ ਵਿਚ ਉਚਿਤ ਤਰਮੀਮ ਕੀਤੀ ਜਵੇ ਤਾਂ ਜੋ ਜ਼ਬਾਨ ਦਾ ਦਰਜਾ ਉਚਾ ਹੋਵੇ ਅਤੇ ਸਚੇ ਮਹਿਨੇ ਵਿਚ ਮਾਦਰੀ ਜ਼ਬਾਨ ਦੀ ਉਨਤੀ ਹੋਵੇ।

ਇਸ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਮੈਂ ਅਰਜ਼ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਇਸ ਮਤੇ ਨੂੰ ਇਹ ਸ਼ਕਲ ਦੇ ਕੇ communal ਬਣਾਇਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਇਸ ਨੂੰ non-communal ਬਣਾਉਣ ਦੇ ਖਿਆਲ

ਨਾਲ ਕੰਮ ਕੀਤਾ ਜਾਵੇ। ਇਸ ਵਿਚ ਗਿਆਨੀ, ਪ੍ਰਭਾਕਰ, ਮੋਲਵੀ, ਸ਼ਾਮਲ ਕੀਤੇ ਜਾਣ ਤਾਂ ਜੋ ਇਹ ਰੋਜ਼ੋਲਯੂਸ਼ਨ ਪਾਸ ਹੋਣ ਤੇ ਦੁਨੀਆਂ ਕਹੇ ਕਿ ਪੰਜਾਬ ਨੇ ਇਸ ਪਾਸੇ ਇਕ ਸ਼ਾਨਦਾਰ ਕਦਮ ਉਠਾਇਆ ਹੈ।

ਸਰਦਾਰ ਰਾਜੇਂਦਰ ਸਿੰਘ ਗਿਆਨੀ (ਰੋਪੜ) : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਇਸ ਗਲ ਬਾਰੇ ਦੋ ਰਵਾਂ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦੀਆਂ ਕਿ ਬਦਲੇ ਹੋਏ ਹਾਲਾਤ ਵਿਚ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਰਲਾ ਰਾਮ ਜੀ ਵਲੋਂ ਪੇਸ਼ ਕੀਤੇ ਗਏ ਪ੍ਰਸਤਾਵ ਅਨੁਸਾਰ Honours in Sanskrit ਸ਼ਾਸਤਰੀ ਨੂੰ Senate ਦੀ ਵੇਰਿੰਗ ਵਿਚ ਸ਼ਾਮਲ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਮੈਂ ਆਪਣੇ ਭਾਵਲ ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ ਮੋਤਾ ਸਿੰਘ ਜੀ ਦੇ ਖਿਆਲਾਂ ਨਾਲ ਸਹਿਮਤ ਹਾਂ ਕਿ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਲੋਕਾਂ ਨੇ ਭਾਰੀ ਮੋਹਨਤ ਕਰਕੇ ਅਨੇ ਐਥੇ ਇਮਤਿਹਾਨ ਪਾਸ ਕੀਤੇ ਹਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਦਰਜਾ ਗਰੈਜੂਏਟਾਂ ਨਾਲੋਂ ਘੱਟ ਨਹੀਂ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ। ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਰਾਜ ਦੇ ਦਿਨਾਂ ਵਿਚ ਹਕੂਮਤ ਦੀ ਇਹ ਪਾਲਿਸੀ ਰਹੀ ਹੈ ਕਿ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਬੋਧਾਨ ਨੂੰ ਤਰਜੀਹ ਦਿਤੀ ਜਾਵੇ ਅਤੇ ਇਸੇ ਕਰਕੇ ਦੇਸੀ ਬੋਧਾਨਾਂ ਨੂੰ ਪਿਛੇ ਸੁਟਿਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਇਸ ਦਾ ਅਸਰ ਯੂਨੀਵਰਸਟੀ ਵਿਚ ਵੀ ਹੋਇਆ ਅਤੇ English Teachers ਵਿਚ superiority complex ਆ ਗਿਆ। ਅਤੇ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਪੜ੍ਹਾਨ ਵਾਲਿਆਂ ਵਿਚ, ਪ੍ਰਭਾਕਰ ਪੜ੍ਹਾਨ ਵਾਲਿਆਂ ਵਿਚ, ਅਤੇ Honours in Punjabi ਪੜ੍ਹਾਨ ਵਾਲਿਆਂ ਵਿਚ inferiority complex ਆ ਗਿਆ। ਇਸ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਤਨਖਾਹਾਂ ਵਿਚ ਵੀ ਭਾਰੀ ਫ਼ਰਕ ਹੈ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਦੇ ਪ੍ਰੋਫੈਸਰਾਂ ਦਾ Senate ਤੇ ਪੂਰਾ ਪੂਰਾ ਕਬਜ਼ਾ ਹੈ। ਇਸ ਕਬਜ਼ੇ ਨੂੰ ਹਟਾਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਅਤੇ ਮੈਂ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਬਦਲੇ ਹੋਏ ਹਾਲਾਤ ਵਿਚ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਤੋਂ ਚੰਗੀ ਜਾਂ ਇਸ ਤੋਂ ਜ਼ਿਆਦਾ precise ਬੋਧਾਨ ਕੋਈ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਮੈਂ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਨਹੀਂ ਪੜ੍ਹੀ ਲੇਕਿਨ ਉਹੋ ਭਰਾਮੇ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਤਰਜਮਾ ਹਿੰਦੀ ਵਿਚ ਹੋਇਆ ਅਤੇ ਹੋਰ ਡਾਕਟਰ ਚਰਨ ਸਿੰਘ ਨੇ ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਚ ਕੀਤਾ ਉਹ ਮੈਂ ਪੜ੍ਹੇ ਹਨ। ਮੈਂ ਅਰਜ਼ ਕਰਾਂਗਾ ਕਿ ਜੇਕਰ ਆਪ Shakespeare ਦੀਆਂ ਰਚਨਾਵਾਂ ਨੂੰ ਦੇਖੋ ਤਾਂ ਮਲੂਮ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਬੋਧਾਨ ਦੀਆਂ ਖੂਬੀਆਂ ਅਤੇ ਇਸਤਿਆਰਿਆਂ ਵਗੇਰਾ ਵਿਚ ਉਹ ਕਾਲੀਦਾਸ ਕੋਲੋਂ ਕਿਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਵੀ ਬਿਹਤਰ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਮਤਲਬ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਕੋਈ ਵਜਹ ਨਹੀਂ ਨਜ਼ਰ ਆਉਂਦੀ ਕਿ ਸ਼ਾਸਤਰੀ ਨੂੰ graduate ਦੇ ਬਰਾਬਰ ਨਾ ਸਮਝਿਆ ਜਾਵੇ।

ਬਾਕੀ ਰਹੀ ਬੀਬੀ ਪਰਕਾਸ਼ ਕੌਰ ਜੀ ਦੀ ਤਜਵੀਜ਼। ਉਸ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਅਰਜ਼ ਹੈ ਕਿ ਜੇਕਰ ਇਹ ਤਜਵੀਜ਼ ਨਾ ਮੰਨੀ ਗਈ ਤਾਂ ਅਸੀਂ ਇਕ ਖਰਾਬੀ ਨੂੰ ਦੂਰ ਕਰਦੇ ਕਰਦੇ ਇਕ ਨਵੀਂ distinction ਦੇ ਦਾ ਕਰ ਦਿਆਂਗੇ। ਆਪ ਜਾਣਦੇ ਹੋ ਕਿ ਪੰਜਾਬੀ, ਉਰਦੂ ਅਤੇ ਹਿੰਦੀ ਦੀ Honours ਨੂੰ University ਨੇ ਬਰਾਬਰੀ ਦਾ ਦਰਜਾ ਦਿੱਤਾ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਅਰਬੀ, ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਅਤੇ ਫ਼ਾਰਸੀ ਦੀ Honours ਦਾ ਵੀ ਇਕੋ ਹੀ ਦਰਜਾ ਹੈ। ਇਸ ਵਾਸਤੇ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਦੇ ਨਾਲ ਅਰਬੀ ਫ਼ਾਰਸੀ Honours ਨੂੰ ਵੀ ਸ਼ਾਮਲ ਕਰ ਲਿਆ ਜਾਵੇ ਭਾਵੇਂ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੀ Honours ਵਾਲੇ ਦੌੜੇ ਹੀ ਹੋਣ। ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹਿੰਦੀ ਦੇ ਨਾਲ ਪੰਜਾਬੀ ਤੇ ਉਰਦੂ ਦੀ Honours ਨੂੰ ਵੀ ਬਰਾਬਰ ਸ਼ਾਮਲ ਕੀਤਾ ਜਾਵੇ। ਇਸ ਵਾਸਤੇ ਮੈਂ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਸਾਹਿਬ ਦੀ ਸੇਵਾ ਵਿਚ ਅਰਜ਼ ਕਰਾਂਗਾ ਕਿ ਉਹੋ ਬੀਬੀ ਪਰਕਾਸ਼ ਕੌਰ ਦੀ ਤਜਵੀਜ਼ ਨੂੰ ਸਵੀਕਾਰ ਕਰ ਲੈਣ ਤਾਂ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਇਕ ਮੁਕੰਮਲ resolution ਮਨਜ਼ੂਰ ਕੀਤਾ ਜਾਵੇ। ਮੇਰਾ ਮਤਲਬ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਹਿੰਦੀ, ਪੰਜਾਬੀ, ਉਰਦੂ, ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ, ਅਰਬੀ, ਫ਼ਾਰਸੀ ਸਭ ਦੀ Honours ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ voters ਬਣਾ ਦਿੱਤਾ ਜਾਵੇ ਤਾਕਿ ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਦੇ ਨਾਲ inferiority ਜਾਂ superiority complex ਬਾਕੀ ਨਾ ਰਹੇ ਅਤੇ ਸਭ ਦਾ ਦਰਜਾ ਬਰਾਬਰ ਹੋ ਜਾਵੇ।

[ਸਰਦਾਰ ਗਜਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਗਿਆਨੀ]

ਅਖਿਰ ਫਿਰ ਮੈਂ ਫੋਰ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਸਹਿਬ ਅਗੇ ਅਰਜ਼ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਬੀ.ਐ. ਦੀ ਬਜਾਏ ਮਨਜ਼ੂਰ ਕਰ ਲੈਣ ਅਤੇ ਉਸ ਤਜਵੀਜ਼ ਦੇ ਨਾਲ ਮੈਂ resolution ਨੂੰ support ਕਰਦਾ ਹਾਂ।

Chief Parliamentary Secretary : Sir, I beg to move—

That the Question be now put.

Mr. Chairman : Question is—

That Question be now put.

The motion was carried.

शिक्षा मंत्री (श्री जगत नारायण) : प्रधान जी ! मैंने अपने सब भाइयों की तकरीरों को बड़े गौर से सुना। मुझे आज खुशी भी है और हैरानी भी। हैरानी तो इस बात की है कि आज गैर-सरकारी काम का दिन था। Opposition वालों और दूसरे सब मैम्बरों को इस से फायदा उठाना चाहिये था। मगर आप देखते हैं कि सब बेंच खाली हैं। चंद इने गिने मेम्बर साहिबान यहां रह गये हैं। लेकिन खैर यह तो उन की मरजी की बात है। मुझे खुशी इस बात की है कि आज यहां एक बड़ा मसला उठाया गया है। संस्कृत बहुत पुरानी ज़बान है। वेद, गीता, उपनिषद्, पुराण सब इस में लिखे हुए हैं। इन की सारी दुनिया इज्जत करती है और मैं भी बहुत इज्जत करता हूं। बस संस्कृत को श्रद्धा के फूल चढ़ाने में मैं उन के साथ हूं। मगर जब यह सवाल पैदा होता है कि संस्कृत की Honours वालों को बी.ए. के बराबर दर्जा दिया जाये तो उस के बारे में मुझे यह अर्ज करना है कि University की degree अर्दीव फ़ाज़िल, मुंशी फ़ाज़िल, मौलवी फ़ाज़िल, प्रभाकर, ज्ञानी और संस्कृत की शास्त्री है। अब सवाल यह है कि Senate के लिये वोट का हक सिर्फ B. A. को क्यों दिया गया। अर्ज यह है कि B.A. की degree उस भाई या बहन को मिलती है जो अंग्रेज़ी के साथ दो और मज़मूनों में इमतिहान पास करे मसलन History, Economics, Mathematics, फ़ारसी, संस्कृत वगैरा में से कोई दो मज़मून पास करने पड़ते हैं। संस्कृत, हिंदी, पंजाबी वगैरा की Honours वालों को दो और मज़मून पास करने पर ही B.A. की degree मिलती है।

अब आपने तो यह मसला यहां आज पेश किया है मगर Punjab Government ने तो बहुत पहले University को लिखा था कि शास्त्री को भी वोट का हक दिया जाए। इस के जवाब में University ने लिखा था कि ऐसा नहीं किया जा सकता और वजह वही दी जो मैं अर्ज कर चुका हूं यानी जब इन जवानों की Honours वालों को B.A. की degree लेने के लिये दो और मज़मूनों का इमतिहान पास करना पड़ता है तो फिर उन को B.A. के बराबर कैसे माना जा सकता है।

बहिन सीता देवी जी जो इस वक़्त यहां मौजूद नहीं हैं उन्होंने फरमाया है कि यह बात Senate में जानी है। मेरे भाई प्रिंसिपल साहिब और बहिन सीता देवी दोनों एक मेम्बर हैं। मगर चि यह मांग पहले यहां से reject हो चुकी है मगर अब कायद

RESOLUTION RE. AMENDING OF EAST PUNJAB UNIVERSITY (AMENDMENT) (4)71
ACT, 1948, TO EXTEND TO SHASTRIS THE RIGHT TO VOTE AT ELECTIONS TO
THE PUNJAB UNIVERSITY SENATE

प्रिन्सिपल साहिब इसे फिर पेश करेंगे। और असल में यह मसला पहले वहां University में ही thrash होना चाहिये। बहर-हाल हमने सरकार की तरफ से पहले ही University को इस बारे में लिखा था मगर वहां से जवाब आया था कि ऐसा नहीं किया जा सकता। जहां तक Government का ताल्लुक है हम इस पर फिर गौर करेंगे। आज की तकरीरों से जाहिर होता है कि यह सिर्फ संस्कृत का मामला नहीं रहा बल्कि उर्दू फार्सी, अरबी, पंजाबी और हिंदी वगैरा को भी आप इस के साथ शामिल करना चाहते हैं।

यह मसला वाकई बहुत गौरतलब है। सरकार ने पहले भी इसे यूनिवर्सिटी के notice में लाने की कोशिश की थी और जवाब मांगा था। परन्तु उन्होंने इस सुझाव को माना नहीं था अब यह मामला फिर सैनेट में पेश होने वाला है। मैं House को यकीन दिलाता हूं कि सरकार इस स्वाल पर पूरी हमदर्दी से गौर करेगी और सैनेट से सलाह लेगी। मेरे मित्र इस बारे में तसल्ली रखें। इन हालात में मैं अपने मित्र प्रिन्सिपल रला राम जी से प्रार्थना करूंगा कि वह अपना प्रस्ताव वापिस ले लें।

श्री रला राम : श्रीमान् जी, शिक्षा मंत्री जी के विश्वास दिलाने पर मैं अपना resolution वापिस लेता हूं।

Mr. Chairman (Dewan Jagdish Chandra) : Since the Resolution has been withdrawn, the question of putting Sardar Achhar Singh Chhina's amendment thereto, to the vote of the House does not arise.

Sardar Achhar Singh Chhina : Sir, I request that my amendment may please be put to the vote of the House.

Minister for Public Works (Sardar Gurbachan Singh Bajwa) : When the Resolution has been withdrawn, how can the amendment of the hon. Member to it be put to the vote of the House. ? The amendment automatically becomes infructuous.

Sardar Achhar Singh Chhina : I am requesting Mr. Chairman and not the hon. Minister. Sir, there is no rule which lays down that if the Resolution is withdrawn, amendments thereto automatically fall through. I would, therefore, request you, Mr. Chairman, to exercise your discretion in my favour and put my amendment to the vote of the House.

Mr. Chairman : Very well. I will put the amendment of the hon. Member to the vote of the House.

Question is—

That in line 3, between the words " Shastris " and " the right " the words " and Gianis " be inserted.

After ascertaining the votes of the House by voices, Mr. Chairman said " I think Noes have it ". This opinion was challenged and Division was claimed. Mr Chairman after calling upon those Members who challenged his decision and supported the claim for a Division to rise in their places, declared that the Division was unnecessarily claimed.

The motion was declared lost.

Minister for Development : I would request Shri Rala Ram to withdraw his Resolution.

Mr. Chairman : He has already withdrawn his Resolution.

Minister for Development : Sir, this is the stage when he should withdraw his Resolution.

Principal Rala Ram : Sir, in view of the assurance given by the Minister for Education, I withdraw my Resolution.

The motion was by leave withdrawn.

Mr. Chairman : Now I call upon Shri Ram Kishan to move his Resolution.

RESOLUTION REGARDING APPOINTMENT OF POLICE REORGANISATION COMMITTEE

Shri Ram Kishan (Jullundur City, North-West): Sir, I beg to move —

This Assembly recommends to the Government that it should appoint a Police Reorganisation Committee to examine in regard to the Police the present system of recruitment and training, the methods of investigation and prosecution and to suggest measures in the light of changed circumstances by which crime may be promptly dealt with and the evil doer brought to book.

चेयरमैन साहिब, यह प्रस्ताव जो मैंने पेश किया है बड़ा महत्वपूर्ण प्रस्ताव है। साल 1949 के आखिर में स्वर्गीय सरदार पटेल भारत सरकार के Home Minister ने सारे देश की States के इन्स्पेक्टर-जनरल पुलिस की एक कानफ्रेंस इस मतलब के लिये बुलाई थी कि हिंदुस्तान के बदले हुए हालात के मुताबिक स्वतन्त्र भारत में जहां तक पुलिस का ताल्लुक है मुस्तलिफ cases की investigation और prosecution के तमाम तरीके जो अंग्रेजी राज के ज़माने में बरते जाते थे और जिन से पुलिस स्टेट कायम हुई हुई थी आज के हालात के मुताबिक जब हिंदुस्तान को Welfare State बनाने की कोशिश की जा रही है बदल कर एक अच्छा system कायम किया जाये। आज़ाद मुल्कों में पुलिस scientific तरीकों से सारे cases की investigation करती है जिस पर आम लोगों को पूरा पूरा confidence होता है। हम चाहते हैं कि investigation के पुराने तरीके न बरते जायें जिस से लोगों को torture किया जाता था बल्कि आज के ज़माने के तरीके जिस से लोग समझें कि हमारा देश अब बिल्कुल आज़ाद हो चुका है। स्पीकर साहिब, मैं इस प्रस्ताव को चार हिस्सों पर तकसीम करता हूं। पहला हिस्सा पुलिस की recruitment के मुताल्लिक है। इस सिलसिले में पिछले साल पंजाब सरकार ने एक District Administrative Reorganisation Committee कायम की थी ताकि पंजाब के राज्य में

administration के सिलसिले में बदले हुए हालात के मुताबिक मुनासिब तब्दीलियां की जायें। इस बारे में कमेटी ने रिपोर्टें और सिफारिशें कीं जिन पर अमल दराबंद हो रहा है। आज का जमाना judicial reforms का जमाना है। आज के जमाने में देश के हर राज्य के हर हिस्से में और हर जगह पर तबदीली हो रही है। हर तरफ reforms हो रही हैं। इस लिये जरूरी है कि जहां तक पुलिस का ताल्लुक है इसमें भी reforms होनी चाहियें। इस सिलसिले में, स्पीकर साहिब, मैं अर्ज करूंगा कि गवर्नमेंट को जल्द से जल्द एक पुलिस Reorganisation Committee बनानी चाहिये जिस में अच्छे अच्छे expert non-officials और officials हों जो सारे system of recruitment पर जो कई सालों से चला आ रहा है गौर करें ताकि educated तबके को इस महकमे के लिये attraction हो। पुलिस का महकमा हमारे पंजाब और हिंदुस्तान की रक्षा करने वाला महकमा है। पुलिस में बड़ी reforms की जरूरत है ताकि हिंदुस्तान का हर शहरी इस पर फरार कर सके। इस सिलसिले में Constables, Head Constables और Assistant Sub-Inspectors की भर्ती करने में तब्दीली की जरूरत है। मौजूदा recruitment के तरीकों को बदलने की जरूरत है। पुलिस हिंदुस्तान की रक्षा के लिये एक जबर्दस्त संस्था है। इस को ज्यादा से ज्यादा सुविधाएं मिलनी चाहियें। मैं गुजारािश करूंगा कि उन्हें भी उसी तरह से सब सहूलतें दी जाएं जो हिंदुस्तान की defence forces को मिलती हैं ताकि वे भी महसूस करें कि गवर्नमेंट उन के लिये बहुत कुछ कर रही है। मैं इस सिलसिले में ज्यादा तफ्तील में नहीं जाना चाहता और यह कहूंगा कि पंजाब सरकार पुलिस के recruitment के तरीके को बदल दे ताकि educated तबके को इस महकमे के लिये attraction हो।

दूसरी बात जो मैं अर्ज करना चाहता हूं वह training के मुताबिक है। हम देखते हैं कि पुलिस को वही training दी जा रही है जो अंग्रेजी राज के जमाने में दी जाती थी। इस लिये स्पीकर साहिब! मैं मिनिस्टर साहिब से अर्ज करूंगा कि इस training के system को बदल देना चाहिये। कम से कम हर पुलिस अफसर को यह मालूम होना चाहिये कि Social Service कैसे की जा सकती है। उन्हें पंचायत ऐक्ट पढ़ना होगा और अपने day-to-day फ़ायज जानने होंगे ताकि पुराने तरीके को ज्यादा से ज्यादा बदला जा सके ताकि हर पुलिस अफसर यह महसूस करें कि वह पुलिस अफसर के तौर पर काम नहीं कर रहा बल्कि Peace Officer के तौर पर काम करता है। हर आदमी यह महसूस करे कि पुलिस मेरी distress में काम आ सकती है और इस तरह से पुलिस पर पूरा विश्वास कर सके। स्पीकर साहिब, बदले हुए हालात के मुताबिक मुझे अफसोस से कहना पड़ता है कि पुलिस पर लोगों का विश्वास नहीं है। इस लिये मैं अर्ज करूंगा कि Reorganisation Committee बनाई जाये जो पुलिस की training का system बदले और देखे कि क्या क्या course होना चाहिये और उन का पब्लिक के साथ कैसा behaviour होना चाहिये।

[श्री राम किशन]

तीसरी बात methods of investigation and prosecution के मुतअल्लिक है। आज का जमाना democracy का जमाना है और मैं समझता हूँ कि बदले हुए हालात में all-round तबदीली आने की जरूरत है। स्पीकर साहिब, मैं ज्यादा लम्बी तफसील में नहीं जाना चाहता और सिर्फ दो तीन मिसालें आप के सामने रखूंगा जिन की बिना पर methods of investigation में जबर्दस्त तबदीली की जरूरत है। आप को मालूम होगा कि हमारे Home Minister डाक्टर कैलाश नाथ काटजू ने महसूस किया कि बदले हुए हालात में हमारे Criminal Procedure Code में कई तरह की तबदीलियों की जरूरत है। इस सम्बन्ध में लोक सभा में एक बिल पेश है। इस लिये मैं आप की विज्ञात से पंजाब सरकार की तवज्जुह इस बात की तरफ दिलाना चाहता हूँ कि methods of investigation को जरूर बदला जाये। इस सिलसिले में जगाधरी की मिसाल हमारे सामने है। इस के इलावा अम्बाला छावनी में भगत सिंह की लड़की को अग्रवा करके ले जाया गया। ऐसी कई और मिसालें हैं जिन पर ज्यादा रोशनी डाली जा सकती है लेकिन मैं आप की तवज्जुह इस बात की तरफ दिलाना चाहता हूँ कि पंजाब सरकार को मालूम है कि अम्बाला छावनी में 16 महीने हो गये हैं कि भगत सिंह की लड़की को अग्रवा किया गया और कई पुलिस अफसर इस case की investigation पर लगाये गये हैं। मुझे मालूम हुआ है कि कई तरह की allegations इन पुलिस अफसरों के खिलाफ लगाई जाती हैं। सब-इन्स्पेक्टर को duty पर तईनात किया गया और फिर आखिर ऐसा वक्त आया कि Sub-Inspector investigation के लिये एक शल्स के साथ जाए। उस बेचारे को रिश्ता का खर्च, टांगे का खर्च और तमाम खर्च बर्दाश्त करने पड़ते हैं। इस सिलसिले में पंजाब गवर्नमेंट के पास शिकायत की गई कि रिश्त के तौर सारे खर्च का बोझ घर वालों पर पड़ रहा है। आपको मालूम है कि investigation करने वालों ने खाना भी होटल में खाना होता है। यह तमाम बातें चीफ मिनिस्टर साहिब के नोटिस में आई तो उन्होंने Assistant Sub-Inspector को मुअत्तल कर दिया। मुअत्तल करने के बाद Giani Lakshmi Narain, Superintendent of Police, को investigation पर लगाया गया और मुझे मालूम नहीं कि उन्होंने इस के मुतअल्लिक क्या रिपोर्ट दी है। बहर-हाल Assistant Sub-Inspector को मुअत्तल किया गया और उस के कुछ दिन बाद वाकियात यूँ होते हैं कि Assistant Sub-Inspector के इशारे पर पुलिस वाले वहाँ जाते हैं और एक आदमी को शराब की बोतल दी जाती है। वह बोतल शराब की होटल में रखी जाती है और उस के बाद पुलिस आ जाती है और उस आदमी को शराब के सिलसिले में गिरफ्तार कर लिया जाता है। उसके बाद यह कोशिश की जाती है कि आपस में compromise कर लिया जाये। पुलिस वालों ने उन्हें कहा कि जो बयान चीफ मिनिस्टर साहिब को भेजा गया है वह बदल दो तो फिर compromise हो सकता है।

स्पीकर साहिब, मैं पंजाब की सारी पुलिस के बारे में यह नहीं कहना चाहता। पंजाब की पुलिस में honest आदमी भी है। परन्तु एक मछली सारे जल को गंदा कर देती है।

इसी तरह से एक बुरा आदमी सारे सिस्टम को बदनाम कर देता है। मैं नहीं कह सकता कि लक्ष्मी नारायण सिंह की रिपोर्ट का क्या बना। मैं नहीं कह सकता कि उस अगवा का क्या नतीजा निकला। यह एक वाकिया है कि पुलिस ने अपना इलजाम छुपाने के लिये एक झूठे तरीके से उस आदमी को फंसाने की कोशिश की। इन हालात में सारे सिस्टम को बदलने की जरूरत है, ताकि लोगों को महसूस हो कि पुलिस उन की सहायता के लिये है। पिछले से पिछले साल जब हमारे चीफ मिनिस्टर साहिब करनाल गये तो एक बुढ़िया रोती हुई उन के पास आई। उस के लड़के को गिरफ्तार किया गया था। फिर पुलिस ने उस को करनाल के नजदीक एक पेड़ के साथ बांध कर इतना मारा कि वह मर गया। पुलिस ने रिपोर्ट दी कि वह डाकू था और डाकुओं से लड़ता हुआ मारा गया था। उस की मौत की तहकीकात के लिये श्री लक्ष्मी नारायण को नियुक्त किया गया। उस तहकीकात में लोगों ने बताया कि वह शस्त्र अंबाले के एक गांव बराडा में था, वहां से पुलिस उसे पकड़ ले गई और फिर करनाल के नजदीक उसे मारा गया। इन हालात में पंजाब गवर्नमेंट के लिये यह जरूरी है कि वह सारे method of investigation को बदले ताकि लोगों को यकीन हो कि investigation ठीक तरह से हो रहा है।

जगाधरी में लड़कियों के अगवा का वाकिया हुआ। उस की investigation के दौरान में बहुत से पुलिस अफसर एक दूसरे के बाद बदले गये। आखिर एक अफसर था जिस पर लोगों ने कहा कि हमें यकीन है। आखिर पहले अफसर क्यों फेल हुए? इन हालात पर सरकार को गौर करना चाहिए और उन अफसरों के खिलाफ action लेना चाहिये।

एक और case इसी तरह का है। हमारे Finance Minister और Deputy Chief Minister को इस बात का इल्म है कि पट्टी में थोड़ा अर्सा हुआ एक कत्ल हुआ। जो कातिल है उस को किसी ने नहीं पूछा और एक Congress worker करतार सिंह के लड़के को महज इस लिये गिरफ्तार कर लिया है कि वह उस शस्त्र के साथ घोड़ी पर जा रहा था जिस ने fire किया और उस से वह आदमी मर गया। वह case अभी किसी अदालत में नहीं गया। इस लिये मैं यह वाकियात हाऊस में बता रहा हूं। वक्त आ गया है कि इस method of investigation को आज के बदले हुए हालात में इन scientific हालात में इस democratic regime में बदला जाए। मैं समझता हूं कि पंजाब की पुलिस ने कुछ अच्छे काम भी किये हैं। परन्तु इस तरह के वाक्यात जो मैं ने बताए हैं पंजाब गवर्नमेंट के democratic regime को बदनाम करने वाले हैं। इस सिलसिले में वक्त आ गया है कि investigation के तरीकों को आज के नये हालात के मुताबिक बदला जाये।

इस के बाद में आप का ध्यान prosecution के तरीके की तरफ दिलाना चाहता हूं। कई बार ऐसा होता है कि cases दो दो तीन तीन सालों तक चलते जाते हैं और मुलजिम पुलिस के रहम पर होते हैं। इन हालात में Prosecution Branch को Watch and Ward Branch से अलहदा करना होगा। आज के scientific और बदले हुए हालात में prosecution के तरीके को

[श्री राम किशन]

बदलने की जरूरत है। जिस तरह इंग्लैंड में सकाटलैंड यार्ड की पुलिस है और हरेक street में और town में उस का एक information room होता है, उसी तरह से यहां भी information rooms होने चाहिए। Traffic Police का अलहदा cadre होना चाहिये। इसी तरह Prosecution का अलहदा और Watch and Ward का अलहदा cadre होना चाहिये। यह सारी चीजें करने के लिए एक कमेटी मुकर्रर की जाये जो पिछले दो तीन सालों की police administration को study करे और यह देखे कि कितने murder हुए, कितनी dacoities और दूसरे जुर्म हुए। फिर उन cases को study करके रिपोर्ट दे? कई जगहों पर पुलिस को अपने cases prove करने के लिये सिवाए touts के कोई आदमी नहीं मिलता। हमें पुलिस को इस तरह reorganise करना चाहिये कि लोगों को उस में confidence हो ताकि एक एक मुहल्ले और गांव में एक एक आदमी यह महसूस करे कि मैं Deference Committee का मैम्बर हूं और मेरा यह फर्ज है कि जो case किसी जगह हो तो मैं उस की investigation में शामिल हूं। हमें rules में और procedure में इस तरह तबदीली करनी चाहिये कि investigation ठीक तरह से हो।

स्वीकर साहिब, मैंने जिस ख्यालात का इजहार किया है उन को सामने रखते हुए उत्तर प्रदेश की सरकार ने एक कमेटी बनाई थी। उस कमेटी ने वाकियात की पड़ताल करके एक रिपोर्ट दी जिस पर उत्तर प्रदेश की सरकार ने अमल करना भी शुरू कर दिया है। इसी तरह मद्रास और बम्बई की सरकारों ने भी कमेटियां बनाई हैं और उन की रिपोर्टों पर अमलदरामद भी हो रहा है। जिस तरह से हम ने District Administration की reorganisation के लिये एक कमेटी बनाई है मुझे आशा है कि पंजाब गवर्नमेंट पुलिस के लिये भी एक कमेटी नियुक्त करेगी। पुलिस administration का एक जबरदस्त अंग है। इसलिये मुझे आशा है कि इस प्रस्ताव को मनजूर किया जायेगा। पुलिस की reorganisation के बाद लोग महसूस करेंगे कि जिस तरह administration के बाकी अंगों में तबदीली आई है उसी तरह से पुलिस में भी तबदीली आई है। तकरीबन ६० फी सदी murder cases में इस वक्त मुलजिम बरी हो जाते हैं। बहुत से cases में गवाह नहीं मिलते। इन सारे वाक्यात पर वह कमेटी गौर करे और फिर रिपोर्ट दे। फिर पंजाब गवर्नमेंट उस रिपोर्ट को अमली जामा पहनाने का यत्न करे।

इस तरह से न केवल efficiency के लिहाज से और cleanliness के लिहाज से पुलिस स्टेशन बेहतर हों बल्कि जो आदमी वहां पुलिस के office में जाये, पुलिस वाले को अपना समझे। वह यह समझे कि उस में और पुलिस में कोई फर्क नहीं। मैं आशा करता हूं कि जिस स्पिरिट से मैंने यह ख्याल प्रकट किये हैं सरकार उसी से उन को जल्दी से जल्दी अमल में लाने का यत्न करेगी ताकि लोग सुख का सांस ले सकें।

Mr. Chairman : Motion moved—

This Assembly recommends to the Government that it should appoint a Police Reorganisation Committee to examine in regard to the Police the present system of recruitment and training, the methods of investigation and prosecution and to suggest measures in the light of changed circumstances by which crime may be promptly dealt with and the evil doer brought to book.

श्री राम चन्द्र कामरेड (नूरपुर) : स्पीकर साहिब, मैं कामरेड राम किशन जी को इतना महत्वपूर्ण प्रस्ताव पेश करने पर बधाई देता हूँ। It stands for a change in the status quo and a change is badly needed. इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता कि मौजूदा निज़ाम और इस के ढांचे में तबदीली की ज़रूरत है। अंग्रेजों ने जो ढांचा अपनी ज़रूरतों को सामने रख कर बनाया था वह हमारे काम नहीं आ सकता। पुलिस की सारी organisation को भरती और ट्रेनिंग के तरीकों को हमें लाज़मी तौर पर बदलना होगा क्योंकि इस महकमे का लोगों से बहुत ज्यादा ताल्लुक पड़ता है। यह महकमा अभी तक उसी तरह चल रहा है जिस तरह अंग्रेजों के शासन-काल में चलता था। मैं मानता हूँ कि इस महकमा में बहुत से अच्छे अफसर भी हैं और मैं उन की कदर करता हूँ मगर पुरानी organisation और पुराने कायदों और system के होते हुए हम उन की लियाकत का पूरा र फायदा नहीं उठा सकते। कई दफा जब मुख्य मंत्री जी का ध्यान अत्याचार की घटनाओं की ओर दिलाया जाता है तो उन को कहना पड़ता है 'पुलिस हमारी मदद नहीं कर सकती अगर्चे मैं मानता हूँ कि अन्याय हुआ है'।

(At this stage Mr. Speaker resumed the Chair.)

अगर हम महसूस करें कि जुल्म हुआ है मगर इन्साफ न दे सकें, तो मैं कहूंगा 'We have no right to exist. We must change our places.'

Minister for Development : Sir, I would submit that we are prepared to hear all due criticism but the hon. Member should confine himself to the resolution before the House. He can suggest changes in the methods of recruitment and investigation but he should not indulge in a condemnation of the police.

Mr. Speaker : Please don't say anything irrelevant.

श्री राम चन्द्र कामरेड : स्पीकर साहिब, मैं यह कहना चाहता हूँ कि तफ़तीश और तहकीकात के जो पुराने तरीके हैं उन में तबदीली करने की ज़रूरत है, पुलिस को तालीम देने की ज़रूरत है ताकि पुलिस के आदमी अपने आप को खिदमतगार समझें। आजकल हर एक policeman जो सड़क पर खड़ा दिखाई देता है अपने आप को हाकम समझता है क्योंकि उसे पुरानी training मिली है। उसको अगर ऐसी तालीम दी जाए जैसी policemen को England और दूसरे देशों में दी जाती है तो वह जनता का सच्चा सेवक बन सकता है और हालात सुधर सकते हैं। इस वक्त हालत यह है कि शहरों और ग्रामों में कत्ल होते हैं, डाके पड़ते हैं, मगर अपराधियों का पता नहीं लगता। अगर वे पकड़े भी जाते हैं तो शहादतें न मिलने के कारण छूट जाते हैं। अगवा के cases होते हैं, समाचार पत्रों में खबरें निकलती हैं, हमदर्दी का इज़हार भी किया जाता है मगर अपराधी नहीं पकड़े जाते और तफ़तीश नाकाम रहती है।

[श्री राम चन्द्र कामरेड]

स्पीकर साहिब, हमारी हालत तो ऐसी है जैसी जेबुलनिसा ने अपने इस शेर में बयान की है।

गरचि मन लैला लिबासम, दिस चूं मजनूं दर खुद अस्त ।

मन बसैहरा मे ज़नम लेकिन चहा जंजीर पा अस्त ।

इस का मतलब यह है कि अगरचें मैं यहां पर लैला की तरह कपड़े पहिन कर बैठी रहूँ तो मेरा दिल मजनू की तरह सैहरा में फिर रहा है। स्पीकर साहिब, हमारे भी पाश्र्व बन्धे हुए हैं। सरकारी बेंचों पर बैठे हैं। ख्यालात के इज़हार पर भी पाबन्दी है मगर फिर भी मैं कहूँगा—
Changes are needed and if we don't introduce them, things will go worse. इस वक्त हालत यह है कि लोगों को पुलिस वालों पर विश्वास नहीं; वे यह नहीं समझते कि पुलिस उन की हिफाज़त के लिये है, किसी न किसी वजह से लोगों और पुलिस में ठास-मेल नहीं है, co-operation की spirit से काम नहीं हो रहा।

इस लिये एक कमेटी का मुकरर किया जाना बहुत ज़रूरी है जो इन तमाम बातों पर और करे। और भरती, training और तफ़्तीश, तहकीकात और prosecution के तरीकों को बेहतर बनाने के लिये सुझाव के ताकि पोलिस के सारे ढांचे को बदले हुए हालात के मुताबिक बदला जा सके। इन शब्दों के साथ मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ।

प्रोफ़ेसर मोता सिंह आनन्दपुरी (आदमपुर) : स्पीकर साहिब, इस Resolution पर mover साहिब ने काफी रौशनी डाली है मगर मिनिस्टर साहिब ने एतराज़ किया है कि इस पर बहिस करते हुए पुलिस पर नुक्ताचीनी न की जाए। मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि अगर इस Resolution के जरिये पुराने system को improve करना मकसूद है तो इस के नकारियस को बताये बिना improvement के लिये सुझाव कैसे दिये जा सकते हैं। इस लिये ज़रूरी है कि मौजूदा system के pros and cons पर यानी दोनों पहिलुओं पर बहिस की जाए। जहां हमें इस की खूबियां बयान करने से संकोच नहीं करना चाहिये वहां इस की बुरियों की उपेक्षा करना एक बड़ी भारी गलती होगी। हकूमत का बकार हमेशा इनसाफ पर मबनी होता है।

पुलिस का महकमा पुराने वक्तों से law and order का custodian चला आता है। जिस देश में ही जुल्म और बेइनसाफी होती है, उस का ज़िम्मेदार यही महकमा होता है। यह वह महकमा है जिस में improvement नहीं हुई, degeneration होती चली गई है। अगर मैं Shakespeare के यह लफ़्ज़ दोहराऊं तो बेजा न होगा।

"Justice has taken to itself wings and flown away."

When there is no Justice, the rulers are bound to degenerate. The department of law, order and justice is of very great importance,

गुरु नानक जी ने भी बिल्कुल यही बात कही है.—

बैठ बाजी, ठामे बमारी,
परम पंथ बर ऐड ठिग

एक कमजोरी को कमजोरी समझ कर दस्त करने में कोई हर्ज नहीं होता। हम फिर शान से कह सकेंगे कि यह वह हुकूमत है जिस के शासन-काल में पुलिस में वह तबदीली की गई जिसकी वजह से वह लोगों पर जुल्म और जबर करने वाली organisation की बजाए एक सच्ची सेवादार संस्था बन गई। इस में जो नकायस इस वक्त है उन पर हमें पर्दा नहीं डालना चाहिये। हमें इस बात को छुपाने की कोशिश नहीं करनी चाहिये कि इसे masses को दबाने और कुचलने के लिये इस्तेमाल किया जा रहा है। कातिल और डाकू तो छोड़ दिये जाते हैं और बेगुनाह लोगों को फंसाया जाता है। मैं ने Chief Minister साहिब के नोटिस में पुलिस की बदउनवानी का एक केस (case) लाया है आदमपुर का Sub-Inspector of Police एक बड़ा बदमाश है.....

Minister for Development: May I request you to kindly give your ruling whether all these things that are being said by the hon. Member opposite are relevant? Will you kindly read the resolution? It recommends the appointment of a Committee to examine the present system of recruitment and training, the method of investigation and prosecution etc?

Will you kindly ask the hon. Member to confine his speech to the subject of the Resolution?

Professor Mota Singh Anandpuri : Sir, I am perfectly relevant. The purport of the Resolution moved by my hon. Friend, Shri Ram Kishan, is that a Reorganisation Committee be appointed to suggest improvements in the Police Department—a Department which is corrupt and which has intolerably degenerated. Sir, I am entitled to point out the excesses and atrocities perpetrated by the Police on the masses of this State. I am quoting these individual cases so that the House may know how the Police Department is functioning; how its officers misuse the powers conferred on them and how the people are maltreated and manhandled by the Police.

अध्यक्ष महोदय: आप ने इस रेजोल्यूशन को पढ़ा है। यह जैनरल नहीं है। इस लिये आप इस पर जैनरल बहस न करें। वैसे तो आप काफी दाना हैं फिर भी मैं आप से अर्ज करूंगा कि आप रैलेवंट (relevant) होने की कोशिश करें।

प्रोफेसर मोता सिंह आनन्दपुरी : स्पीकर साहिब, मैं रैलेवंसी (Relevancy) को छोड़ने वाला नहीं हूँ।

विकास मंत्री: कमी लाने वाले भी नहीं हैं।

प्रोफेसर मोता सिंह आनन्दपुरी: स्पीकर साहिब, इस रेजोल्यूशन में से यह चार प्वाइंट्स (points) निकलते हैं। पहला recruitment, दूसरा इनवैस्टीगेशन (investigation), तीसरा है प्रोसीक्यूशन (prosecution), और चौथा

[ਪ੍ਰੋਫਸਰ ਮੋਧਾ ਸਿੰਹ]

ਹੈ ਪੁਲਿਸ ਦੇ ਅਫਸਰਾਂ ਅਤੇ ਦੂਸਰੇ ਅਧਿਕਾਰੀਆਂ ਦੀ ਟ੍ਰੇਨਿੰਗ ਦਾ ਮਸਲਾ । ਅਰਥਾਤ ਉਨ ਦੀ ਟ੍ਰੇਨਿੰਗ ਦੀ ਜਾਏ ਕਿ ਉਹ ਇਨਸਾਫ ਕਰਨ, ਆਪਣੀ ਆਪਣੀ ਪਾਰਟੀ ਦੇ ਲਾਭ ਲੈ ਕੇ ਦੂਸਰੀ ਪਾਰਟੀ ਦੇ ਨੁਕਸਾਨ ਨਾ ਕਰਨ । ਉਨ ਦੀ ਪਬਲਿਕ ਦੇ ਸਾਥ ਕੈਸਾ treatment ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਏ ਯਹੀ ਮੇਰਾ speech ਕਰਨ ਦਾ objective ਹੈ । ਇਸ objective ਨੂੰ ਸਪੱਸ਼ਟ ਕਰਨ ਦੇ ਲਿਏ ਮੈਂ specific instances ਜੋ ਮੇਰੇ knowledge ਵਿੱਚ ਹਨ ਉਨ ਵਿੱਚੋਂ ਆਪਣੇ ਸਾਹਮਣੇ quote ਕਰ ਰਿਹਾ ਹਾਂ । ਉਹ ਬਾਤਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਆਪਣੇ ਦੁਆਰਾ ਹਾਊਸ ਤੱਕ ਅਤੇ ਹਾਊਸ ਦੇ ਦੁਆਰਾ ਪਬਲਿਕ ਤੱਕ ਪਹੁੰਚਾਨਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ । ਪੁਲਿਸ ਦਾ ਡਿਪਾਰਟਮੈਂਟ ਸਭ ਤੋਂ ਬੁਰਾਦਾ wretched condition ਵਿੱਚ ਹੈ ਅਤੇ degenerate ਹੋ ਚੁਕਾ ਹੈ । ਇਸ ਮੁੱਦੇ ਨੂੰ ਉਠਾਉਣ ਦੇ ਲਿਏ ਯਹ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ ਕਿ ਕੁਝ ਅਧਿਕਾਰੀਆਂ ਦੀ ਆਪਣੀ ਕਮੇਟੀ ਬਣਾਈ ਜਾਵੇ । ਤਾਂਹੀ ਇਸ resolution ਦਾ ਮਨਜ਼ੂਰੀ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ ।

ਅਧਿਕਾਰੀ ਮਹੋਦਯ : ਆਪ ਬੈਠ ਜਾਓ । ਆਪ irrelevancy ਦੇ ਇਲਾਵਾ repetition ਵੀ ਕਰ ਰਹੇ ਹੋ । ਜੋ ਬਾਤਾਂ ਪਹਿਲੇ ਕਹੀ ਗਈਆਂ ਹਨ ਉਨ ਵਿੱਚੋਂ ਆਪ ਦੁਹਰਾ ਨਹੀਂ ਸਕਦੇ ।

ਪ੍ਰੋਫਸਰ ਮੋਧਾ ਸਿੰਹ ਆਨੰਦਪੁਰੀ : ਮੈਂ ਯਹ ਬਾਤ ਕਹ ਕੇ ਖਤਮ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਹੁਕੂਮਤ ਦੀ ਇਜ਼ਤ ਨੂੰ ਕਾਇਮ ਰੱਖਣ ਦੇ ਲਿਏ ਅਤੇ ਅਨਿਆਈਤ ਨੁਕਸਾਨ ਨੂੰ ਕਾਇਮ ਰੱਖਣ ਦੇ ਲਿਏ ਕਮੇਟੀ ਦਾ ਮੁਕਰਰ ਕੀਤਾ ਜਾਣਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ । ਇਸ ਦੇ ਸਾਥ ਹੀ ਮੈਂ ਇਸ Resolution ਦੇ mover ਨੂੰ ਯਹ ਅਰਜ਼ ਕਰਾਂਗਾ ਕਿ ਉਹ ਪਹਿਲੇ Resolution ਦੇ mover ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਆਪਣੇ ਨਾਮ ਨੂੰ ਲੇਵੇ ।

ਸਰਦਾਰ ਮੋਹਨ ਸਿੰਘ (ਤਰਨ ਤਰਨ) : ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ, ਜਿਹੜਾ ਮਤਾ ਮੇਰੇ ਸਾਥੀ ਕਮੇਡ ਰਮਕਿਸ਼ਨ ਨੇ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਹੈ, ਮੈਂ ਉਸ ਦੀ ਤਾਈਦ ਕਰਨ ਲਈ ਖੜਾ ਹੋਇਆ ਹਾਂ । ਸਾਡੀ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਇਸ ਅਤੇ ਉਪਰ ਅਮਲ ਕਰਨ ਦੀ ਬੜੀ ਲੋੜ ਹੈ । ਉਸ ਦੀ ਵਜ੍ਹਾ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਹਲਾਤ ਬਦਲ ਗਏ ਹਨ । ਮੈਂ ਪੁਲਿਸ ਨੂੰ ਹੀ ਸਾਰਾ ਦੋਸ਼ ਨਹੀਂ ਦੇਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਲੇਕਿਨ ਇਹ ਜ਼ਰੂਰ ਕਹਿਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਅਤੇ ਇਸ ਗੱਲ ਦਾ ਦਵਾ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਪੁਲਿਸ ਵਿਚ ਜਿਹੜੀਆਂ ਖਾਮੀਆਂ ਪਹਿਲੇ ਸਨ, ਹੁਣ ਉਹ ਘੱਟ ਹੋ ਗਈਆਂ ਹਨ । ਕੋਰਪਸ਼ਨ (Corruption) ਘੱਟ ਗਈ ਹੈ । ਪਹਿਲੇ ਕੋਈ ਵੀ ਪੁਲਿਸ ਦੀ ਕਰਵਾਈ ਉਪਰ ਨੁਕਸਾਨ ਚੀਨੀ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦਾ ਸੀ । ਹੁਣ ਅਸੀਂ ਲੋਕ ਉਸ ਮਹਿਕਮੇ ਦੀਆਂ ਕਮਜ਼ੋਰੀਆਂ ਉਪਰ ਨੁਕਸਾਨ ਚੀਨੀ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹਾਂ । ਪੁਲਿਸ ਦਾ ਢਾਂਚਾ ਬਦਲਣ ਦੀ ਹੁਣ ਇਸ ਕਰਕੇ ਵੀ ਲੋੜ ਹੈ ਕਿ ਪਹਿਲੇ ਤੋਂ ਕੋਈ ਆਦਮੀ ਭਾਵੇਂ ਕਿਸੇ ਵੀ ਬੰਨਾ ਹੋਵੇ ਪੁਲਿਸ ਵਲੋਂ ਉਸ ਦਾ ਨਾਂ ਕਿਸੇ ਮੁਕਦਮੇ ਵਿਚ ਬਰੋਰ ਰਵਾਹ ਦੇ ਲਿਖ ਦਿੰਦੇ ਸਨ ਅਤੇ ਉਹ ਆਦਮੀ ਪੁਲਿਸ ਦੀ ਮਰਜ਼ੀ ਦੇ ਮੁਤਾਬਿਕ ਹੀ ਆ ਕੇ ਰਵਾਹ ਦੇ ਦਿੰਦਾ ਸੀ । ਪਰ ਹੁਣ ਰਵਾਹ ਸਹਮਣੇ ਆ ਕੇ ਰਵਾਹੀ ਨਹੀਂ ਦਿੰਦੇ ਅਤੇ ਇਸ ਕਰਕੇ ਪੁਲਿਸ ਨੂੰ ਅਪਣਾ ਕੇਸ ਮੁਕੰਮਲ ਕਰਨ ਵਿਚ ਬੜੀਆਂ ਦਿਕੜਾਂ ਆਉਂਦੀਆਂ ਹਨ, — ਇਸ ਲਈ ਤਫ਼ਤੀਸ਼ ਦਾ ਸਿਸਟਮ ਬਦਲਣ ਦੀ ਬੜੀ ਸਖਤ ਲੋੜ ਹੈ । ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ, ਤੁਸੀਂ ਸੁਣ ਕੇ ਹੋਰ ਨ ਹੋਵੋਗੇ ਕਿ ਛੋਟੇ ਮੋਟੇ ਮੁਕਦਮਿਆਂ ਦੀ ਤਾਂ ਕੀ ਗੱਲ ਕਰਨੀ ਹੈ ਕਦੇ ਦੇ ਮੁਕਦਮਿਆਂ ਵਿਚ ਵੀ ਠੀਕ ਰਵਾਹ ਨਾ ਮਿਲਣ ਦੀ ਵਜ੍ਹਾ ਕਰਕੇ ਪੁਲਿਸ ਵਲੋਂ ਬੁਠੀਆਂ ਇਬਤਦਾਈ ਰਿਪੋਰਟਾਂ ਲਿਖ ਦਿੰਦੇ ਹਨ । ਨਤੀਜਾ ਇਹ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਅਸਲੀ ਕਾਣਲ ਤਾਂ ਗਲੀਆਂ ਵਿਚ ਬੁਕੁਦੇ ਫਿਰਦੇ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਉਹ ਬੇਗੁਨਾਹ ਆਦਮੀ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਬਰਖਲਾਫ ਪੁਲਿਸ ਨੇ ਅਪਣੀ ਤਫ਼ਤੀਸ਼ ਨੂੰ ਮੁਕੰਮਲ ਕਰਨ ਦੀ ਖਤਿਰ

ਨੂੰ ਆਈ ਇਕੱਠਾਈ ਵਿਰੋਧੀ ਲਿਖੀਆਂ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ ਅਤੇ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਕਣਕ ਨਾਲ ਦੂਰ ਦਾ ਵਾਸਤਾ ਵੀ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ, ਵਾਸੀ ਦੇ ਤਖਤ ਉਪਰ ਲਟਕਾ ਦਿਤੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ, ਮੈਂ ਤੁਹਾਡੀ ਰਾਹੀਂ ਇਹ ਗਲ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਨੋਟਿਸ ਵਿਚ ਲਿਆਉਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਹੁਣ ਮੁਕੱਦਮਿਆਂ ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਹੋਣ ਵਿਚ ਬੜੀ ਦੇਰ ਲਗ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਅਸਲ ਮੁੱਦਾ ਛਾਇਆ ਹੀ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਮੈਂ ਇਹ ਵੀ ਨਾਲ ਹੀ ਅਰਥ ਕਰਨੀ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਇਸ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਨਿਰਾ ਪੁਰਾ ਪੁਲਿਸ ਨੂੰ ਹੀ ਦੱਸ ਨਹੀਂ ਦਿਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ। ਇਹ ਕੋਲ ਨੀਕ ਹੈ ਕਿ ਪੁਲਿਸ ਦੇ ਕੰਮਾਂ ਵਿਚ ਨੁਕਸ ਹਨ, ਖਾਸੀਆਂ ਹਨ ਲੇਕਿਨ ਹਾਲਾਤ ਹੀ ਇਹੋ ਜਿਹੇ ਹਨ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਰਸਤੇ ਵਿਚ ਬਹੁਤ ਸਾਰੀਆਂ ਖੰਭਾਵਾਂ ਹਨ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਲਈ Law and Order ਨੂੰ ਕਾਇਮ ਰਖਣਾ ਬਹੁਤ ਕਠਨ ਹੋਇਆ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਹਾਲਾਤ ਇਹੋ ਜਿਹੇ ਹਨ ਕਿ ਲੋਕ ਛਾਕੂਆਂ ਅਤੇ ਚੋਰਾਂ ਨੂੰ welcome ਕਰਦੇ ਹਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਪਨਾਹ ਦਿੰਦੇ ਹਨ। ਛਾਕੂ ਅਤੇ ਚੋਰ ਲੋਕ ਵਡੇ ਵਡੇ ਤੁਰੇ ਛਡਕੇ ਢਿਲਾ ਖੰਭੇ ਖਤਰ ਕਚਹਿਰੀਆਂ ਵਿਚ ਆ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਗਵਾਹਾਂ ਨੂੰ ਅਪਣੀ ਤਰਫ਼ ਕਰ ਲੈਂਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਵਜਹ ਕਰਕੇ ਪੁਲਿਸ ਦੀ ਰਾਹ ਵਿਚ ਬੜੀਆਂ ਰੁਕਾਵਟਾਂ ਹਨ। ਲੇਕਿਨ ਇਹ ਰੁਕਾਵਟਾਂ ਤਾਂ ਹੀ ਦੂਰ ਹੋ ਸਕਦੀਆਂ ਹਨ ਅਤੇ ਜਨਤਾ ਨੂੰ ਤਾਂ ਹੀ ਆਰਾਮ ਮਿਲ ਸਕਦਾ ਹੈ ਜੇ ਕਰ ਅਸੀਂ ਅੱਛੇ ਆਦਮੀ ਭਰਤੀ ਕਰੀਏ ਅਤੇ ਤਵੜੀਸ਼ ਦਾ system ਬਦਲੀਏ। ਇਸ ਕਰ ਕੇ ਮੈਂ ਤੁਹਾਡੀ ਰਾਹੀਂ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਇਹ ਬੇਨਤੀ ਕਰਨੀ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਉਹ ਇਕ ਕਮੇਟੀ ਮੁਕੱਦਮੇ ਕਰੇ ਜਿਸ ਦਾ ਇਹ ਕੰਮ ਹੋਵੇ ਕਿ ਉਹ ਬਦਲੇ ਹੋਏ ਹਾਲਾਤ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਵਿਚ ਆਈ ਹੋਈ ਆਬਾਦੀ ਦੀਆਂ ਤਕਲੀਫਾਂ ਨੂੰ ਸਾਹਮਣੇ ਰਖਦਿਆਂ ਹੋਇਆਂ ਰਾਜ ਪ੍ਰਬੰਧ ਨੂੰ ਚਲਾਉਣ ਲਈ ਅਤੇ ਉਸ ਨੂੰ ਕਾਇਮ ਰਖਣ ਲਈ ਪੁਲਿਸ ਦੇ ਪੁਰਾਣੇ ਢਾਂਚੇ ਨੂੰ ਤਬਦੀਲ ਕਰੇ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਸ਼ਬਦਾਂ ਨਾਲ ਮੈਂ ਕਮਰੇਡ ਰਾਮ ਵਿਸ਼ਨ ਦੇ ਮਤੇ ਦੀ ਤਾਈਦ ਕਰਦਾ ਹਾਂ।

ਸ਼੍ਰੀ ਮੂਲ ਚਾਨ੍ਦ ਜੈਨ (ਸਾਮਾਜਕਾ) : ਸ਼੍ਰੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, यह resolution जो House के सामने पेश किया गया है एक खास अहमियत रखता है। लेकिन इस की support में जो speeches की गई हैं, मैं समझता हूँ कि उन में पुलिस के महकमा को खास-मखास बरूरत से ज्यादा बदन्याम किया गया है। अगर हम अपने जाबता फ़ौजदारी और Criminal Law के जो दूसरे कानून हैं उन का मुतालफ़ा करें तो हम देखेंगे कि पुलिस बहुत हद तक मजबूर होती है। इस के साथ ही अगर हम दुनिया के दूसरे देशों के इसी किसम के कानूनों का अपने मुल्क के कानून से मुक़ाबिला करें तो भी हम यही पायेंगे कि हमारी पुलिस कई हालात में बहुत disadvantage में है। इस सिलसिला में मैं सिर्फ़ एक दो मिसालें देना चाहता हूँ। आप अपने मुल्क में रायज़ 'सिट्टे' और 'जूए' की रोकथाम के कानून को ही देखें। यह कानून इतना नाक़स है कि जिस से खाह-म-खाह मुभ्त में पुलिस को बदन्याम किया जाता है। मुल्क के हर हिस्सा में "सिट्टा" चलता है। लेकिन अगर आप कानून को देखें तो पता चलता है कि यह offence cognizable नहीं। फ़ौरन ज़मानत हो जाती है। दो चार या पांच रुपये ज़ुमनि हो जाता है और बस। पुलिस को इस में बख़ल देने का कोई हक़ नहीं। और इस तरह जब कानूनी तौर पर पुलिस कोई खास action नहीं ले सकती तो इसे बदन्याम किया जाता है।

इसी तरह हमारा Indian Evidence Act है। उस में लिखा है—"confession before the police is inadmissible" पुलिस के सामने ज़ुर्मे कबूल नहीं

[श्री मूल चंद जैन]

हो सकता। जहां तक मुझे पता है दुनिया के किसी भी देश में ऐसा कानून नहीं। एक मामूली से मामूली official के सामने इकबाले जुर्म हो सकता है। लेकिन यहां हमारे देश में क्या हालात हैं? यहां पर तो Inspector-General Police के सामने भी इकबाले जुर्म नहीं हो सकता।

जिस माननीय दोस्त ने इस resolution को पेश किया है उन्होंने पुलिस पर कई किस्म के charges लगाए हैं। इस के इलावा उन्होंने यह भी फरमाया कि अगर उन का यह resolution मान लिया गया तो पुलिस के set-up में बहुत सुधार हो जायेगा। इस सिलसिला में मैं उन्हें सिर्फ यही कहना चाहता हूं कि वह आएँ और किसी एक थाने या जिले के इन्तजाम को सम्भाल लें। और दिखाएं कि हालात को किस हद तक बेहतर बनाने में कामयाब हुए हैं। मैं मानता हूँ कि उस लगन को सामने रखते हुए जिस से कि वह इस काम को करेंगे 10 प्रतिशत तक improvement हो सकती है लेकिन जैसा कि उन का ख्याल है कि सारे का सारा नकशा ही पट्ट जायेगा यह बात मुमकिन नहीं।

स्पीकर साहिब, यह कहा गया है कि पुलिस के काम और इन्तजाम में बहुत भारी degeneration हो गई है। मैं इस ख्याल से इत्फाक नहीं करता। दरअसल अगर देखा जाए तो हमारे सूबे में जितनी services हैं उन में से अगर किसी ने पिछले कुछ सालों में कोई improvement की है तो उन में हमें police services ही ऐसी मिलेंगी जो इस कसौटी पर कसी जा सकती हों। यह ठीक है कि कमियाँ हैं, खामियाँ हैं और सुधार का काफी scope अभी है लेकिन जैसा कि मैंने अभी अभी कहा, आजादी मिलने के बाद अगर हमारे सूबे में किसी service ने improvement की है तो वह पुलिस ही है। कई लिहाज से improvement की है इस महकमे में। हाँ! मैं मानता हूँ कि अभी काफी कसर बाकी है। यह ठीक है कि उन के काम में और ज्यादा सुधार लाया जा सकता। पुलिस को और ज्यादा efficient and honest बनाया जा सकता है। लेकिन बजाए उस के काम को appreciate करने के, बजाए उस की प्रशंसा करने के अगर यह कहा जाये कि पुलिस degenerate हो गई है, उस के साथ बे-इनसाफी करना है। मैं हरगिज यह मानने के लिये तैयार नहीं हूँ।

मैं भी एक lawyer हूँ। मैं यह कह सकता हूँ कि पुलिस कानून में कमियाँ होने की वजह से कई बार झूठी गवाहियाँ भी पेश कर देती हैं। लेकिन कई बार हालात ही ऐसे होते हैं कि उन्हें मजबूर हो कर इस तरह की गवाहियाँ और शहादतें पेश करनी पड़ती हैं। लेकिन यह कहना कि 80 और 90 प्रतिशत मुकद्दमे झूठे बनते हैं, बिल्कुल गलत है—gross misrepresentation of facts है। हकीकत यह है कि 89 प्रतिशत मुकद्दमों में बिल्कुल सच्चे होते हैं और बाकियों में उन्हें जरूरत पड़ने पर कई बार शहादतें बनानी पड़ती हैं। आखिर पुलिस भी क्या करे? कई किस्म की तो हमारे हाँ वारदातें होती रहती हैं। किसी ने आकर यह रिपोर्ट की कि मेरा बटुवा चुरा लिया गया है तो कोई आकर यह शिकायत करता है कि मेरा साईकल चोरी हो गया है। इन सारी बातों को पुलिस को देखना पड़ता है और जिस आदमी को सजा मिले वह फिर पुलिस को बदनाम करना शुरू कर देता है।

जहां तक, स्पीकर साहिब, इस resolution की हिमायत करने का सवाल है मैं समझता हूं कि यह अभी बिल्कुल premature है। यह सवाल सिर्फ हमारे अकेले सूबे का नहीं, all-India question है। इसके इलावा अभी लोक सभा में भी जावते के कानून को amend किया जा रहा है। यह सवाल वहां अभी जेरे गौर है। अभी तो पता नहीं कि क्या तरमीम होती है और क्या नहीं। हां, अगर लोक सभा किसी amending Bill को पास करदे और फिर उस के बाद भी अगर कोई जरूरत समझी जाए तो उस हालत में किसी Reorganisation Committee को appoint करने में कोई फायदा हो सकता है। अगर इस वक्त Reorganisation कमेटी बैठा दी जाए और वह कुछ फैसला देदे और उधर पार्लियामेंट (Parliament) में जाबता फौजदारी में कुछ और ही तरमीम हो जायें तो इस तरह, मैं समझता हूं, कि position कुछ embarrassing सी हो जाएगी। इस लिये जहां मैं इस resolution की spirit से agree करता हूं वहां मजबूर हूं यह कहने के लिये कि अभी इस reorganisation कमेटी को बनाने से कोई फायदा नहीं होगा। हां जब जाबता फौजदारी में कोई तरमीम हो गई तो इस सवाल पर फिर दोबारा गौर किया जा सकता है।

दरअसल, स्पीकर साहिब, एक और बिना पर भी मैं इस चीज को पसन्द नहीं करता। इस resolution के जरिए पुलिस को single out किया गया है। दरअसल देखा जाए, तो सारी की सारी administration की खामियां हमारे सामने आती हैं। इन में से सब से बड़ी कमी यह है कि administration के अकसर लोगों की जहनीयत pro-rich है। जब जब भी किसी जगह पर किसी दो तबकों में—अमीर और गरीब, ज़िमींदार और किसान, मालिक और गैर-मालिकों में—कोई conflict होता है तो administration का कोई भी हिस्सा हो—पुलिस हो या महकमा नहर; पब्लिक वर्क्स हो या कोई और 70 या 80 प्रतिशत cases में हाकिम और दूसरे officials अमीर और मालदार असामियों की ही support करेंगे। वे मुकाबलतन एक अमीर आदमी की तरफ होते हैं और गरीब की कोई प्रवाह नहीं करता। इस लिये मैं समझता हूं कि इस resolution के जरिए पुलिस को single out किया गया है, जो, दरअसल ऐसे नहीं किया जाना चाहिये।

अब, स्पीकर साहिब, मैं यह अर्ज करना चाहता हूं कि अगर पुलिस में हम और सुधार करना चाहते हैं तो इस के लिए कुछ तजवीज हैं जो मैं आप के सामने रखना चाहता हूं।

मैं यह महसूस करता हूं कि हरेक थाने में एक जीप होनी चाहिये। आज अगर हम पुलिस की inefficiency के मुतालिक कोई शिकायत सुनते हैं तो उन का सब से बड़ा कारण यह है कि उन के पास transport का खातिर-खाह इन्तजाम नहीं होता। एक रिपोर्ट पुलिस के किसी थाने पर आठ या दस मील के फासले से आती है। थानेदार घोड़े पर सवार होकर उस की तद्दीक्षा करने के लिये जाता है। जब दूसरी तरफ से कोई रिपोर्ट आती है तो वाकई यह कैसे मुमकिन हो सकता है कि एक आदमी एक ही वक्त पर दो मौकों

[श्री मूल चन्द जैन]

का मुतालिया करे? इस लिये, **speedy action** केलिये यह जरूरी है कि **means of transport** आसान होने चाहिए। अगर **transport speedy** होगी तो पुलिस का काम भी बड़ा **efficiently** होगा। अभी तक तो वही पुराना तरीका चल रहा है कि पुलिस वालों को 80 या 90 रुपया घोड़ा अलाऊंस दिया जाता है। इस लिये मैं समझता हूँ कि अगर घोड़े की बजाए हरेक थाने में एक एक जीप का इन्तजाम किया जाये तो **Police** की **efficiency** बहुत हद तक बढ़ जायेगी।

दूसरी तजवीज मेरी **methods of investigation** के मुतालिक है। हिंदुस्तान में तफ्तीश का तरीका भी वही पुराने जमाने वाला चला आ रहा है। यह बिल्कुल **scientific** नहीं। **Touch** और **photography** का **system** हमें अपनाना चाहिए। बेशक उस के लिये ज्यादा खर्च की जरूरत होती है लेकिन यह भी **administration** का एक अहम हिस्सा है। इस लिये मैं सिफारिश करता हूँ कि इस मकसद के लिये बजट में काफ़ी **provision** किया जाए। अगर ये तजवीजें मान ली गईं तो मैं यकीन के साथ कह सकता हूँ कि हमारी पुलिस में बहुत **improvement** होगी।

श्री बनारसी दास गुप्ता (थानेसर) : स्पीकर साहिब, अगर यह **resolution** आज से दो-तीन साल पहले आया होता तो मैं शायद इसकी पूरे तौर से **support** करता। लेकिन मैं समझता हूँ कि आज के बदले हुए हालात में पुलिस ने अपने आप को **accommodate** करने की पूरी कोशिश की है। मुझे यह कहने में ज़रा भी हिचकिचाहट नहीं कि आज पुलिस में वह **corruption** नहीं है जिस के मुतालिक हम पहले कभी शिकायत किया करते थे। आज **investigation** के हर केस में पुलिस दिन-ब-दिन ज्यादा लगन से कोशिश कर रही है। स्पीकर साहिब, आप को पता ही होगा कि आज से तीन साल पहले पुलिस को **efficient** बनाने के लिये एक **Police Training Academy** खोली गई। वहां से जो लड़के निकलेंगे वे आने वाली पुलिस के अफसर और सिपाही बनेंगे। वहां उन के **character** का पूरा ख्याल रखा जाता है और उन को ऐसी **training** दी जा रही है जिस से हिंदुस्तान की और पंजाब की **Police** **efficient** बनेगी। उस पर हमारी पंजाब सरकार हजारों रुपये सिर्फ इस लिये खर्च कर रही है ताकि आज पुलिस के खिलाफ जो इलजाम लगाए जाते हैं वे दूर हो जाएं और जो पुलिस के कर्मचारी वे अपने आप को सुधार सकें। पहले हमारी पुलिस में अनपढ़ लोग थे। मैंने देखा है कि सब इन्स्पेक्टर तक अनपढ़ या मामूली पढ़े लिखे होते थे। और इस पुलिस के अन्दर

अध्यक्ष महोदय : आप **Police** पर न बोलिये **resolution** पर बोलिये।

श्री बनारसी दास गुप्ता : माननीय स्पीकर साहिब, मैंने resolution को पढ़ा है और उसे पढ़ कर इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि जो बातें मैंने कही हैं वह resolution की spirit के मुताबिक हैं। स्पीकर साहिब, मैं समझता हूं कि आज इस बात की जरूरत नहीं है कि कोई reorganisation की जाए क्योंकि आप ने देखा है कि पिछले तीन साल से पंजाब के अन्दर अमन होता गया है और इस की वजह यह है कि पुलिस के रवैया में काफी फर्क आ गया है। आज मैं महसूस करता हूं कि बहुत से ऐसे तरीके हैं जिन के इस्तेमाल से पुलिस काफी improve कर सकती है। मैं उन की तफसील बताना चाहता हूं पर वक्त थोड़ा होने की वजह से बताना नहीं चाहता। आज पंजाब के अन्दर और मेरे जिला में खास तौर पर डाके पड़ने बन्द हो गए हैं। बहुत सारे डाकू या तो पकड़े गए हैं या मार दिये गये हैं और बाकी State छोड़ गये हैं। इस अरसा में Law and Order में काफी तबदीली आई है। अब मैं पुलिस के बारे में कह सकता हूं कि average तौर पर इस में काम करने वाले आदमी बड़े ईमानदार हैं। हमारे हां जो पुलिस की चाकियां ब्रेठी हुई हैं मैं देखता हूं कि उन में वह पहले वाली आदतें नहीं रहीं। वे पहले जिस तरह से गांव में लोगों से bedding वगैरा मांग लेते थे या रोटी वगैरा का बोझ देहाती लोगों पर डालते थे वह बात अब नहीं रही। मैं यह समझता हूं कि अगर हमारे सारे एम. ऐल. एज. पुलिस के काम में interest लें तो लोगों को कोई तकलीफ नहीं हो सकती। जो कमियां अभी इस के काम में बाकी हैं उन की वजह यह है और वह यह है कि हमारे जो फौजदारी के कानून हैं उन में कुछ नुक्स हैं। वे जब ठीक हो जायेंगे—उन को Central Government ही दूर कर सकती है और उन्हें ठीक करने के लिये वह कदम उठा रही है—तो यह बाकी कामियां भी अपने आप ही दूर हो जायेंगी। इस लिये मैं महसूस करता हूं कि आज किसी किसम की reorganisation करने के लिये कोई कमेटी बनाने की जरूरत नहीं है। इस लिये मैं इस resolution की मुखालफत करता हूं।

ਵਿਕਾਸ ਮੰਤਰੀ (ਸਰਦਾਰ ਪ੍ਰਤਾਪ ਸਿੰਘ ਕੈਰੋਂ) : ਸ੍ਰੀ ਮਾਨ ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਜਿਹੜਾ ਮਤਾ ਇਸ ਵੇਲੇ ਸਭਾ ਦੇ ਸਾਹਮਣੇ ਪੇਸ਼ ਹੈ ਉਹ ਬੜਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ ਅਤੇ ਉਹ ਇਸ ਲਈ ਬੜਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਉਹ ਆਪਣੀ ਪੁਲਿਸ ਨੂੰ ਬਿਲ ਕੁਲ ਨਵੇਂ ਜ਼ਮਾਨੇ ਦੇ ਮੁਤਾਬਿਕ ਢਾਲਣ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧ ਰਖਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਗਲ ਵਲ ਸਭਾ ਦਾ ਖਿਆਲ ਕਾਮਰੇਡ ਰਾਮ ਕਿਸ਼ਨ ਨੇ ਦਿਵਾਇਆ ਹੈ। ਮਾਨਯੋਗ ਮੈਂਬਰਾਂ ਨੂੰ ਇਹ ਜਾਣ ਕੇ ਬੜੀ ਖੁਸ਼ੀ ਹੋਵੇਗੀ ਕਿ ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਇਕ ਕਮੇਟੀ ਬਣਾਈ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ ਜਿਹੜੀ ਕਿ ਦੋਵੇਂ ਗਲਾਂ ਤੇ ਵਿਚਾਰ ਕਰੇਗੀ, ਇਕ ਇਹ ਕਿ ਕਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਤਫ਼ਤੀਸ਼ ਕੀਤੀ ਜਾਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਦੂਜੀ ਇਹ ਕਿ ਪੁਲਿਸ ਵਿਚ ਕਿਸ ਵੰਗ ਨਾਲ recruitment ਕੀਤੀ ਜਾਵੇ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਸਾਰੀਆਂ ਚੀਜ਼ਾਂ ਵੱਲ ਪਹਿਲਾਂ ਤੋਂ ਹੀ ਪੰਜਾਬ ਸਰਕਾਰ ਅਤੇ ਭਾਰਤ ਸਰਕਾਰ ਧਿਆਨ ਦੇ ਰਹੀਆਂ ਹਨ ਕਿ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਦੀ ਸਰਕਾਰ ਤਾਂ ਇਥੋਂ ਤਾਂਕੀ ਕਰ ਚੁਕੀ ਹੈ ਕਿ ਸਾਰਿਆਂ ਸੂਬਿਆਂ ਦੇ Inspectors-General of Police ਦੀ ਇਕ conference ਬੁਲਾ ਕੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਚੀਜ਼ਾਂ ਉਤੇ ਵਿਚਾਰ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਉਸ conference ਨੇ ਜਿਹੜੀਆਂ ਸਿਫਾਰਸ਼ਾਂ ਕੀਤੀਆਂ ਹਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਉਤੇ ਹਿੰਦ ਸਰਕਾਰ ਗੌਰ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਉਹ ਉਨ੍ਹਾਂ ਸਿਫਾਰਸ਼ਾਂ ਤੇ ਵਿਚਾਰ ਕਰ ਲਵੇਗੀ ਤਾਂ ਉਹ ਸਿਫਾਰਸ਼ਾਂ ਹਿੰਦ ਸਰਕਾਰ ਰਾਹੀਂ ਸਾਡੇ ਪਾਸ

[ਵਿਕਾਸ ਮੰਤਰੀ]

ਆਉਟਗੀਆਂ। ਫਿਰ ਵੱਖ ਵੱਖ ਚਾਰ ਚਾਰ ਜਾਂ ਪੰਜ ਪੰਜ States Inspectors-General of Police ਦੀ ਕਮੇਟੀ ਬਣਾਈ ਜਾਵੇਗੀ ਜਿਹੜੀ ਉਸ ਰਿਪੋਰਟ ਉੱਤੇ ਵਿਚਾਰ ਕਰੇਗੀ। ਜਦੋਂ ਉਹ ਕਮੇਟੀ ਬਣ ਗਈ ਤਾਂ ਜਿਹੜੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਦੀ ਮੰਗ ਕਾਮਰੇਡ ਰਾਮ ਕਿਸ਼ਨ ਦੇ ਮਤੇ ਵਿਚ ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੈ ਉਹ ਆਪਣੇ ਆਪ ਪੂਰੀਆਂ ਹੋ ਜਾਣਗੀਆਂ। ਜਦੋਂ ਉਹ ਕਮੇਟੀ ਭਰਤੀ ਕਰਨ ਦੇ ਤਰੀਕੇ ਸੋਚੇਗੀ ਅਤੇ ਤਫ਼ਤੀਸ਼ ਕਰਨ ਦੇ ਨਵੇਂ ਤਰੀਕੇ ਦਸੇਗੀ ਤਾਂ ਇਸ ਮਤੇ ਦਾ ਮਕਸਦ ਪੂਰਾ ਹੋ ਜਾਵੇਗਾ।

ਮਾਨਯੋਗ ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਇਹ ਬਹੁਤ ਬੜਾ ਅਤੇ ਜ਼ਰੂਰੀ ਮਸਲਾ ਹੈ। ਸਾਡੇ ਆਪਣੇ ਸੂਬੇ ਵਿਚ ਸਭ ਤੋਂ ਵਧ ਪੈਸਾ ਇਸ ਮਹਿਕਮੇ ਉੱਤੇ ਖਰਚ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਇਸ ਮਹਿਕਮੇ ਰਾਹੀਂ ਸੂਬੇ ਵਿਚ ਅਮਨ ਕਾਇਮ ਰਖਣਾ ਹੈ ਤੇ ਇਸ ਦੀ ਰਾਹੀਂ ਸੂਬੇ ਵਿਚ ਸ਼ਹਿਰੀ ਆਜ਼ਾਦੀ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਮਿਲਦੀ ਹੈ। ਇਹ ਸਾਰੀਆਂ ਚੀਜ਼ਾਂ ਹਨ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਜੰਤਾ ਅਤੇ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧ ਹੈ। ਇਸ ਮਹਿਕਮੇ ਰਾਹੀਂ ਜੰਤਾ ਦਾ ਜੋੜ ਸਰਕਾਰ ਨਾਲ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਸੰਬੰਧ ਵਿਚ ਅਸਾਂ ਵੀਹਵੀਂ ਸਦੀ ਦੇ ਹਾਲਾਤ ਨੂੰ ਸਾਹਮਣੇ ਰਖ ਕੇ ਆਪਣੀ ਪੁਲਿਸ ਨੂੰ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਅਨੁਕੂਲ ਢਾਲਨਾ ਹੈ। ਅਸੀਂ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਇਹ third degree methods ਵਰਤੋਂ ਵਿਚ ਨਾ ਲਿਆਵੇ। ਅਸੀਂ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਉਹ ਤਸਦੱਦ ਤੋਂ ਕੰਮ ਨਾ ਲਵੇ, ਝੂਠੇ ਮੁਕਦਮੇ ਨਾ ਬਣਾਏ, ਝੂਠੇ ਗਵਾਹ ਪੇਸ਼ ਨਾ ਕਰੇ, ਚੀਜ਼ਾਂ ਕਿਸੇ ਦੇ ਘਰ ਸੁਟ ਕੇ ਝੂਠੇ ਚੋਰੀ ਦੇ ਮੁਕਦਮੇ ਨਾਂ ਚਲਾਵੇ। ਜਿਵੇਂ ਮੈਂ ਪਹਿਲਾਂ ਕਹਿ ਚੁਕਾ ਹਾਂ ਇਹ ਕਮੇਟੀ ਇਨ੍ਹਾਂ ਸਾਰੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਉੱਤੇ ਵਿਚਾਰ ਕਰ ਰਿਹੀ ਹੈ ਅਤੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਬੁਰਾਈਆਂ ਨੂੰ ਦੂਰ ਕਰਨ ਲਈ ਪ੍ਰਬੰਧ ਕਰਨ ਬਾਰੇ ਆਪਣੀ ਰਿਪੋਰਟ ਪੇਸ਼ ਕਰੇਗੀ। ਮੈਂ ਜਾਨਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਪੁਲਿਸ ਵਿਚ ਕੁਝ ਉਨਤਾਈਆਂ ਜ਼ਰੂਰ ਹਨ ਪਰ ਇਹ ਭਾਰਤ ਦੇ ਹਰ ਸੂਬੇ ਦੀ ਪੁਲਿਸ ਨਾਲੋਂ ਚੰਗੀ ਹੈ। ਸਾਡੀ ਪੁਲਿਸ ਦੂਜਿਆਂ ਸੂਬਿਆਂ ਨਾਲੋਂ ਵਧ ਸਿਆਣੀ ਹੈ ਅਤੇ ਵਧ efficient ਹੈ। ਜਿਹੜੀਆਂ ਚੀਜ਼ਾਂ ਕਾਮਰੇਡ ਰਾਮ ਕਿਸ਼ਨ ਨੇ ਪੇਸ਼ ਕੀਤੀਆਂ ਹਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਲ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਦੀ ਸਰਕਾਰ ਪਹਿਲਾਂ ਤੋਂ ਧਿਆਨ ਦੇ ਰਹੀ ਹੈ ਅਤੇ ਉਸ ਨੇ ਇਕ ਕਮੇਟੀ ਬਣਾਈ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਹੁਣ ਉਸ ਕਮੇਟੀ ਦੀ ਹੋਈ ਲੋੜ ਨਹੀਂ ਦਿਸਦੀ ਜਿਸਦਾ ਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਆਪਣੇ ਮਤੇ ਵਿਚ ਜ਼ਿਕਰ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਜੇਕਰ ਅਸਾਂ ਪੁਲਿਸ ਵਿਚ ਚੰਗੇ ਤੇ ਈਮਾਨਦਾਰ ਆਦਮੀ ਭਰਤੀ ਕਰਨੇ ਹਨ ਤਾਂ ਅਸਾਂ ਨੂੰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਤਨਖਾਵਾਂ ਢਧਾਣੀਆਂ ਪੈਣਗੀਆਂ ਤਾਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਗੁਜ਼ਾਰਾ ਹੋ ਸਕੇ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਜੇਕਰ ਤਨਖਾਵਾਂ ਵਧ ਜਾਣ ਤਾਂ ਹੀ ਇਸ ਮਹਿਕਮੇ ਵਿਚ ਭਰਤੀ ਲਈ ਚੰਗੇ ਆਦਮੀਆਂ ਨੂੰ ਪਹੋਰਣਾ ਹੋਵੇਗੀ। ਲੇਕਿਨ, ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਤਨਖਾਵਾਂ ਵਧ ਜਾਣ ਨਾਲ ਅਸਾਂ ਇਹ ਵੀ ਵੇਖਨਾਂ ਹੈ ਕਿ ਦੂਜੀਆਂ services ਉੱਤੇ ਕੀ ਅਸਰ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਅਜ ਸਾਡੇ ਚੀਫ ਮਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਦੇ ਮਨ ਦੇ ਵਿਚ ਜਿਹੜੀ ਗਲ ਬੜੀ ਦੇਰ ਤੋਂ ਰੜਕਦੀ ਹੈ ਉਹ ਹੈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਤਨਖਾਹਾਂ ਵਧਾਣ ਦੀ ਖਾਹਿਸ਼। ਇਹ ਚੀਜ਼ recruitment ਕਰਨ ਵਿਚ ਬੜੀ ਫਾਇਦੇਮੰਦ ਹੋਵੇਗੀ ਲੇਕਿਨ ਅਸੀਂ ਤਨਖਾਵਾਂ ਵਧਾ ਸਕਦੇ ਹਾਂ ਪਰ ਹੌਲੇ ਹੌਲੇ। ਇਸ ਮਸਲੇ ਉੱਤੇ ਹਿੰਦ ਦੀ ਸਰਕਾਰ ਅਤੇ ਚਾਰ ਪੰਜ ਹੋਰ ਸਟੇਟਸ ਦੀਆਂ ਸਰਕਾਰਾਂ ਵੀ ਸੋਚ ਵਿਚਾਰ ਕਰ ਰਹੀਆਂ ਹਨ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਉਤਰ ਪਰਦੇਸ਼, ਸੋਰਾਸ਼ਟਰ ਆਦਿ ਸ਼ਾਮਿਲ ਹਨ।

ਦੁਨੀਆਂ ਵਿਚ ਤਫ਼ਤੀਸ਼ ਕਰਨ ਦੇ ਮਾਮਲੇ ਵਿਚ ਸਭ ਤੋਂ ਵਧ ਮਾਹਿਰ ਪੁਲਿਸ Scotland Yard ਦੀ ਗਿਣੀ ਗਈ ਹੈ। ਉਥੋਂ ਦੀ ਪੁਲਿਸ ਆਦਮੀ ਉੱਤੇ ਸਵਾਲ ਕਰ ਕਰ ਕੇ ਜੁਰਮ ਦਾ

ਪਤਾ ਲਗਾ ਲੈਂਦੀ ਹੈ। ਲੇਕਿਨ ਮੈਂ ਅਰਜ਼ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਦੇਸ਼ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਆਦਮੀਆਂ ਵਿਚ ਫਰਕ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਉਥੋਂ ਦੇ ਯਾਨੀ ਪਛਮੀ ਦੇਸ਼ਾਂ ਦੇ ਆਦਮੀ ਸਵਾਲ ਪੁਛਣ ਤੇ ਸਭ ਕੁਝ ਜਲਦੀ ਨਾਲ ਦਸ ਦੇਂਦੇ ਹਨ ਪਰ ਇਥੋਂ ਦੇ ਨਹੀਂ ਦਸਦੇ, ਫਿਰ, ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਮੇਰੇ ਮਾਨਯੋਗ ਮਿਤ੍ਰ ਸ੍ਰੀ ਮੂਲ ਚੰਦ ਜੈਨ ਨੇ ਦਸਿਆ ਹੈ ਸਾਡੇ ਅਦਾਲਤੀ ਕੰਮ ਦੇ ਚਲਾਉਣ ਦੇ ਦੰਗੇ ਵਿਚ ਅਤੇ ਫੌਜਦਾਰੀ ਕਾਨੂੰਨ ਵਿਚ ਬੜੀਆਂ ਉਣਤਾਈਆਂ ਹਨ। ਸਾਡੀ ਹਿੰਦ ਸਰਕਾਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਦੂਰ ਕਰਨ ਲਈ ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ ਸੋਚ ਰਹੀ ਹੈ।

ਸਚ ਮੁਚ ਉਸ ਵਿਚ ਉਣਤਾਈਆਂ ਹਨ। ਕਿਸੇ ਕਾਰਵਾਈ ਵਿਚ ਪੁਲਿਸਮੈਨ ਨੂੰ ਝੂਠ ਬੋਲਨ ਦੀ ਲੋੜ ਨਹੀਂ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ। ਪਰ ਇਹ ਜੋ ਫੌਜਦਾਰੀ ਕਾਨੂੰਨ ਹੈ, ਇਸ ਅਧੀਨ ਪੁਲਿਸ ਨੂੰ ਕਈ ਕੁਝ ਕਰਨਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਦੋ ਗਵਾਹੀਆਂ ਦੇਣੀਆਂ ਪੈਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਜੇਕਰ ਕੋਈ murder ਦਿਨ ਵਿਚ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਦੋ ਗਵਾਹੀਆਂ ਮਿਲ ਸਕਦੀਆਂ ਹਨ ਪਰ ਜੇਕਰ ਰਾਤ ਨੂੰ ਹੋਵੇ, ਜਿਵੇਂ ਕਿ ਆਮ ਤੌਰ ਤੇ ਡਾਕੋ, ਚੋਰੀਆਂ ਆਦਿ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ ਤਾਂ ਇਹ ਗਵਾਹੀਆਂ ਕਿਥੋਂ ਮਿਲਣਗੀਆਂ? ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੋਰ ਕਈ ਗਲਾਂ ਹਨ। ਮਗਰ ਜਿਸਤਰ੍ਹਾਂ ਕਿ ਮੈਂ ਆਇਆ ਹੈ ਕੇਂਦਰੀ ਸਰਕਾਰ ਸੋਚ ਰਹੀ ਹੈ ਕਿ ਕਿਸਤਰ੍ਹਾਂ ਇਸ ਫੌਜਦਾਰੀ ਕਾਨੂੰਨ ਨੂੰ ਢਾਲਿਆ ਜਾਵੇ। Inspectors-General Police ਦੀ ਕਮੇਟੀ ਨੇ ਜੁਰਮਾਂ ਦੀ ਰੇਕਰਡ ਬਾਰੇ training ਦੇਣ ਲਈ ਜੋ ਤਜਵੀਜ਼ ਕੀਤੀ ਹੈ ਉਹ ਭੀ ਲਾਭਦਾਇਕ ਸਾਬਤ ਹੋਵੇਗੀ।

ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਮੈਂ Scotland Yard ਦੇ ਤਰੀਕਿਆਂ ਬਾਰੇ ਅਰਜ਼ ਕਰ ਰਿਹਾ ਸਾਂ। ਲੰਡਨ ਦੀ ਪੁਲਿਸ ਬੜੀ polite ਹੈ। ਛੋਟੇ ਜਿਹੇ ਡੰਡੇ ਤੋਂ ਵਧ ਉਨ੍ਹਾਂ ਪਾਸ ਡੰਡਾ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ ਅਤੇ ਲਾਠੀਆਂ ਲੈਕੇ ਸੜਕਾਂ ਤੇ ਨਹੀਂ ਆਉਂਦੀ। ਲੋਕਾਂ ਤੇ ਬੇਜਾ ਰੋਅਬ ਨਹੀਂ ਪਾਉਂਦੀ। ਲੇਕਿਨ ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਵਿਚ ਇਹ ਸਭ ਕੁਝ ਕਰਨਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਅਸੀਂ ਇਕ ਖਾਸ ਰਾਜ ਬਨਤਰ ਅਪਨਾਈ ਹੈ। ਸਾਡੇ ਲੋਕ ਇਕ ਦੂਜੇ ਨਾਲ ਪਿਆਰ ਨਹੀਂ ਕਰਦੇ ਸਗੋਂ ਵਿਰੋਧ ਕਰਨ ਤੇ ਪੂਰਾ ਪੂਰਾ ਜ਼ੋਰ ਲਾਉਂਦੇ ਹਨ। ਇਥੇ ਕੁਝ ਸਖਤੀ ਦੀ ਲੋੜ ਪੈਂਦੀ ਹੈ।

ਪੁਲਿਸ ਦਾ method of recruitment, training ਆਦਿ ਸਭ ਕੁਝ ਬਦਲਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। Scotland Yard ਵਿਚ ਕੋਈ ਅਜਿਹਾ ਕੇਸ ਨਹੀਂ ਜੋ ਢੂੰਡਿਆ ਨਾ ਜਾ ਸਕੇ ਲੇਕਿਨ ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਵਿਚ ਕਈ ਕੇਸ ਨਹੀਂ trace ਹੁੰਦੇ। ਪੁਲਿਸ ਦੀ ਇਸ ਵਿਚ ਠਾਲਾਇਕੀ ਸਾਬਤ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ। ਦਰਅਸਲ ਕਈ ਗਲਾਂ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ। ਜਿਥੇ ਕਿਸੇ ਨੇ ਚੋਰੀ ਕੀਤੀ ਹੈ, ਉਸ ਦੇ ਹਥਾਂ ਅਤੇ ਪੈਰਾਂ ਦੇ ਨਿਸ਼ਾਨ ਜ਼ਰੂਰ ਹੋਣਗੇ। ਮਗਰ ਅਸੀਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਛੋਟੇ ਵਗੇਰਾ ਨਹੀਂ ਲੈ ਸਕਦੇ। ਜੇਕਰ ਉਸੇ ਵੇਲੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਤਸਵੀਰ ਲੈ ਲਈ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਪੁਲਿਸ ਆਪਣੇ ਤਜਰਬੇ ਨਾਲ ਕਹਿ ਸਕੇਗੀ ਕਿ ਚੋਰ ਕੌਣ ਹੈ ਅਤੇ ਜਦ ਮੁਕਦਮਾ ਹੋਣ ਤੇ ਮੈਜਿਸਟਰੇਟ ਸਾਹਮਣੇ ਇਕ ਮਾਹਰ ਗਵਾਹੀ ਦੇਵੇ ਕਿ ਇਹ ਤਸਵੀਰ ਫਲਾਂ ਫਲਾਂ ਆਦਮੀ ਦੇ ਹਥਾਂ ਜਾਂ ਉਂਗਲੀਆਂ ਨਾਲ ਮਿਲਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਹੋਰ ਕਿਸੇ ਸਬੂਤ ਦੀ ਲੋੜ ਨਹੀਂ ਰਹੇਗੀ। ਮੇਰੇ ਸਾਥੀ ਸ੍ਰੀ ਰਾਮ ਕਿਸ਼ਨ ਅਤੇ ਹੋਰ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਇਹ ਕਿਹਾ ਹੈ ਕਿ ਪੁਲਿਸ ਵਿਚ ਕੁਝ ਤਬਦੀਲੀਆਂ ਕਰਨ ਦੀ ਲੋੜ ਹੈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਮੈਂ ਦਸਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਕੇਂਦਰੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਇਸ ਮੰਤਵ ਲਈ ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ ਇਕ ਕਮੇਟੀ ਬਣਾਈ ਹੋਈ ਹੈ। ਬਾਕੀ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਸਾਥੀਆਂ ਨੇ ਪੁਲਿਸ ਨੂੰ due credit ਦਿੰਦੇ ਹੋਏ ਆਪਣੀ ਰਾਇ ਜ਼ਾਹਿਰ ਕੀਤੀ ਹੈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਰਾਇ ਦੀ ਮੈਂ ਕਦਰ ਕਰਦਾ ਹਾਂ। (ਖਾਨ ਬਖ਼ਤੂਲ ਗਫਾਰ ਖਾਂ—ਕਰਨਾਲ ਕੀ

[ਵਿਕਾਸ ਮੰਤਰੀ]

ਪੁਲਿਸ ਦੀ ਸੇਵਾ ਸਮਿਤਿ ਹੋ ਗਈ ਹੈ) । ਅਸੀਂ ਦੂਜੇ ਸ਼ਹਿਰਾਂ ਦੀ ਪੁਲਿਸ ਨੂੰ ਭੀ ਸੇਵਾ ਸਮਤੀ ਵਲ ਲਿਆ ਰਹੇ ਹਾਂ । ਮੈਂ ਜਾਣਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਆਦਮੀ ਖੁਦਾਈ ਨੂੰ ਨਹੀਂ ਪਹੁੰਚਦਾ ਅਤੇ ਪੁਲਿਸ ਵਿਚ ਖਰਾਬੀਆਂ ਹਨ ਲੇਕਿਨ ਅਸੀਂ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਇਹ ਉਣਤਾਈਆਂ ਘਟ ਤੋਂ ਘਟ ਹੋ ਜਾਣ । ਇਹ ਗਲ ਠੀਕ ਹੈ ਕਿ ਕੁਝ ਲੜਕੀਆਂ trace ਨਹੀਂ ਹੋਈਆਂ, ਕੁਝ murder trace ਨਹੀਂ ਹੋਏ । ਮਗਰ ਜੋ crime ਕਰਦਾ ਹੈ ਉਹ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕਰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਸ ਦਾ ਪਤਾ ਨਾ ਚਲ ਸਕੇ । ਜੇਕਰ ਲਭ ਲੈਂਦੇ ਹਾਂ ਤਾਂ ਉਹ ਹਿਮਤ ਅਤੇ ਜ਼ੋਰ ਦਾ ਕੰਮ ਹੈ ਜੋ ਪੁਲਿਸ ਨੂੰ credit ਦਿਤਾ ਗਿਆ ਹੈ, ਉਸ ਨੂੰ ਅਸੀਂ ਜੀ ਆਇਆਂ ਆਖਦੇ ਹਾਂ । ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਪੁਲਿਸ ਨੂੰ ਬੁਠ ਦੀ training ਦਿਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ । ਮੈਂ ਕਹਿਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਸਾਡਾ ਇਹ ਨਾਅਰਾ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਕਿ ਪੁਲਿਸ ਸਚੇ ਸਚ ਕੰਮ ਕਰੇ, ਬੇੜਾ ਬਹੁਤ ਭੀ ਬੁਠ ਨ ਬੋਲੇ । ਲੋਕਾਂ ਵਿਚ ਭੀ ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦਾ ਪ੍ਰਚਾਰ ਹੋਵੇ ਕਿ ਪੁਲਿਸ ਨੂੰ ਸਚੇ ਕੰਮ ਕਰਨ ਵਿਚ ਸਹਾਇਤਾ ਦੇਣੀ ਹੈ । ਇਸ ਦਾ ਪੁਲਿਸ ਅਤੇ ਪਬਲਿਕ morals ਤੇ ਬੜਾ ਅਸਰ ਪਵੇਗਾ । ਅਸੀਂ ਹਾਉਸ ਤੋਂ ਬਾਹਰ ਜਾ ਕੇ ਇਹੀ ਨਾਅਰਾ ਲਾਉਣਾ ਹੈ ਕਿ ਪੁਲਿਸ ਸਚੇ ਸਚ ਕਾਰਵਾਈ ਕਰੇ । ਕਿਉਂ ਕਿਸੇ ਦੇ ਘਰ ਸ਼ਰਾਬ ਦੀ ਬੋਤਲ ਜਾਂ ਪਿਸਤੌਲ ਰਖਿਆ ਜਾਵੇ ਅਤੇ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਬੇਗੁਨਾਹ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਗ੍ਰਿਫਤਾਰ ਕੀਤਾ ਜਾਵੇ ? ਜੇਕਰ ਅਸੀਂ ਸੂਬੇ ਵਿਚ ਚੰਗਾ ਰਾਜ ਲਿਆਉਣਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਾਂ ਤਾਂ ਸਾਨੂੰ ਆਪਣਾ ਅਤੇ ਆਪਣੀ ਪੁਲਿਸ ਦੀ ਸਚਾਈ ਦਾ ਮਿਆਰ ਉਚੇਰਾ ਕਰਨਾ ਪਵੇਗਾ । ਮੈਂ ਸਮਝਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਇਸ ਪਾਸੇ ਪੰਜਾਬ ਸਾਰੇ ਹਿੰਦੋਸਤਾਨ ਵਿਚ ਬਾਗ਼ੀ ਲੈ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ । ਇਸ ਨੂੰ ਕਰਨ ਲਈ ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਸਰਕਾਰ ਧਿਆਨ ਦੇ ਰਹੀ ਹੈ ਅਤੇ ਕੇਂਦਰੀ ਸਰਕਾਰ ਭੀ । ਜਿਸ ਉੱਚੇ ਭਵਨ ਲ ਸ੍ਰੀ ਰਾਮ ਕਿਸ਼ਨ ਨੇ ਇਹ resolution ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਹੈ ਮੈਂ ਉਸ ਦੀ ਦਾਦ ਦਿੰਦਾ ਹਾਂ ਅਤੇ ਸਭ ਨੂੰ ਦਸਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਸਰਕਾਰ ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ ਇਸ ਪਾਸੇ ਕੰਮ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ ।

ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਅਸੀਂ ਇਸ ਗਲ ਨੂੰ ਜਾਣਦੇ ਹੋਏ ਕਿ ਇਸ ਮਹਿਕਮੇ ਵਿਚ ਕੁਝ ਉਣਤਾਈਆਂ ਹਨ, ਅਤੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਅਸੀਂ ਦੂਰ ਕਰਨਾ ਹੈ ਅਤੇ ਜਿਥੇ ਕਮੇਟੀ methods of recruitment, training ਅਤੇ prosecution ਵਿਚ ਸੁਧਾਰ ਕਰੇਗੀ ਉਥੇ ਅਸੀਂ ਭੀ ਕਿਸੇ ਨਾ ਕਿਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਪੁਲਿਸ ਅਤੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਮਜ਼ਬੂਰ ਕਰ ਦੇਵੀਏ ਕਿ ਉਹ ਸਚੇ ਸਚ ਕਰਨ । ਅੰਤ ਵਿਚ ਮੈਂ ਸ੍ਰੀ ਰਾਮ ਕਿਸ਼ਨ ਜੀ ਨੂੰ ਕਹਾਂਗਾ ਕਿ ਜੇਕਰ ਵਕਤ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਉਹ ਆਪਣੇ resolution ਨੂੰ ਵਾਪਿਸ ਲੈ ਲੈਣ ।

The Assembly then adjourned till 3 p. m. on Friday, the 21st May, 1954.

Punjab Legislative Assembly Debates

21st May, 1954

VOL. II—No. 5

OFFICIAL REPORT



CONTENTS

Friday, 21st May, 1954

	PAGES
Question Hour (Dispensed with)	1
Adjournment Motions (Ruled out of order)	1
Papers laid on the Table	5
Exemption from the provision of the Rule "Sittings of the Assembly"	5
Adjournment of the Assembly (<i>Sine die</i>)	10
Amendments made by Punjab Legislative Council in the East Punjab Holdings (Consolidation and Prevention of Fragmentation) (Amendment) Bill	10
House Committee	12
Bill(s)—	
The Punjab Gram Panchayat (Second Amendment)	12
The Punjab Co-operative Societies—(Reference to a Joint Select Committee)	44

CHANDIGARH :

Printed by the Controller of Printing and Stationery, Punjab
1955

PUNJAB LEGISLATIVE ASSEMBLY

Friday, 21st May, 1954

The Assembly met in the Assembly Hall, Sector 10, Chandigarh Capital, at 3 p.m. of the Clock. Mr. Speaker (Sardar Gurdial Singh Dhillon) in the Chair.

QUESTION HOUR (DISPENSED WITH)

Chief Parliamentary Secretary (Shri Prabodh Chandra) : Sir, I request that the Question Hour be dispensed with in order to make more time available to the hon. Members for the discussion of items entered in to-day's List of Business.

Mr. Speaker : If that is the wish of the House, I have no objection. The Question Hour is dispensed with to-day.

ADJOURNMENT MOTIONS

Mr. Speaker : The first adjournment motion of Pandit Shri Ram Sharma is about the scheme of nationalisation of Road Transport by the State Government. This matter is neither urgent nor of recent occurrence. I, therefore, rule this adjournment motion out of order.

अध्यक्ष महोदय : सरदार गोपाल सिंह खालसा, Leader of the Opposition ने एक adjournment motion का notice दिया है। वह सरकार के शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के elections को मुलतवी करने के फैसले के बारे में है। इस सम्बन्ध में चीफ़ मिनिस्टर साहिब अगर कुछ कहना चाहें तो वह कह सकते हैं।

मुख्य मंत्री (श्री भीम सैन सच्चर) : स्पीकर साहिब ! मैं आप का मशकूर हूँ कि आप न मुझे शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के अगले चुनाव के बारे में position वाज़ेह करने का मौका दिया है। आपको याद होगा कि एक short notice question के जवाब में हाऊस में यह बताया गया था कि मेरे पास एक representation आई जिस का मकसद यह था कि चूंकि जुलाई में फसलें बोने का मौसम होता है इसलिए elections postpone कर दिये जायें। मैंने सरकार की तरफ से यह वायदा किया था कि वह इस दरखास्त पर हमदर्दी से गौर करेगी।

उस के बाद सरदार गोपाल सिंह खालसा, Leader of the Opposition मुझे मिले। उन्होंने कहा कि elections बहुत देर तक मुलतवी नहीं किये जाने चाहियें। उन का यह ख्याल था कि कोई न कोई खास वक़्त मुकर्रर होना चाहिये और अगर यह जुलाई का महीना ठीक नहीं है तो इन elections को सर्दियों में बहुत दूर तक न मुलतवी करें।

[मुख्य मंत्री]

मैंने उन्हें कहा कि आप का ख्याल है कि यह दिसम्बर से आगे न चली जाए। इस लिये इन elections की dates नवम्बर के आखिरी हफ्ते में रखी जाएंगी। इस चीज को मैं फिर दोहरा देता हूँ कि इन elections की dates हम नवम्बर से आगे नहीं ले जायेंगे। इन हालात में मैं समझता हूँ कि adjournment motion का सवाल ही पैदा नहीं होता।

अध्यक्ष महोदय : जो चीफ मिनिस्टर साहिब ने जवाब दिया है वह काफी तसल्ली बखश है। इस मामले पर एक सवाल के जवाब में भी काफी रौशनी डाली जा चुकी है। इस के इलावा यह सवाल 19 तारीख को आया था। उस के बाद एक दिन और भी गुजर गया है। इस लिये यह मामला immediate occurrence का नहीं। इस बिना पर मैं यह adjournment motion out of order करार देता हूँ।

यह adjournment motions का तरीका मेरे लिये काफी मुश्किल सा बन गया है। बारह बारह adjournment motions के notices आ जाते हैं। इस लिये मैं यह procedure इस्तिथार करना चाहता हूँ कि जिन motions को मैं देख कर out of order कहूँगा उन के बारे में members को private तौर पर बता दिया जाएगा कि वह किस बजह से out of order करार दी गई हैं।

पंडित श्री राम शर्मा : On a point of order, Sir, दो रोज़ हुए Chair की तरफ से एक ruling दी गई थी और यह ruling लेने में चीफ मिनिस्टर साहिब का भी हाथ था। वह यह थी कि जो भी adjournment motions आती हैं वह आप हाऊस में पढ़ कर सुनाएंगे और फिर उन के बारे में आप अपना फैसला देंगे। उस ruling को अब वापस लिया जा रहा है। इस की क्या बजह है ? यह ठीक है कि इन दिनों जो adjournment motions आई हैं उन की तादाद बहुत ज्यादा है। मगर पिछले दो तीन दिनों में जो 15 या 20 adjournment motions के नोटिस आये हैं उन में से एक भी adjournment motion admit किये जाने और हाऊस की आज्ञा के लिये पेश किये जाने के काबिल नहीं समझी गई। इन हालात में यह कोई तर्जुब की बात नहीं अगर उन की गिनती बढ़ गई है।

अध्यक्ष महोदय : इस वक्त मैं हरेक adjournment motion को नहीं पढ़ूँगा। मैं उन का gist बताऊँगा और brief reasons देकर फैसला दूँगा कि उन को क्यों rule out किया गया है। इन पर कोई comments नहीं होंगे, कोई point of order नहीं होगा। आपन्दा के लिये जब पाँच से ज्यादा adjournment motions के नोटिस आएंगे और जिन को मैं समझूँगा कि इन को हाऊस के सामने पेश करने से हाऊस का वक्त जाया होगा तो मैं उन के बारे में सम्बन्धित मੈम्बर को private तौर पर बता दिया करूँगा कि वह किस आधार पर reject की गई हैं।

पंडित श्री राम शर्मा : अगर किसी मैम्बर को यह यकीन हो जाए कि उसकी adjournment motion बिना वजह reject की गई है, तो उस सम्बन्ध में वह क्या कर सकता है ?

(Members : Order, Order.)

अध्यक्ष महोदय : मैं इस बारे में procedure को बदल देना चाहता हूँ। इस लिये मैं ने हाऊस को यह इत्तलाह दे दी है।

(एक सदस्य : यह तो श्रीमान् जी आखरी दिन है।)

अध्यक्ष महोदय : यह बहुत अहम दिन है। इस लिये हाऊस का वक्त बचाने के लिये adjournment motions के बारे में procedure को बदलना बहुत जरूरी है।

Adjournment motion No. 2 is out of order since the matter is not of urgent nature.

Adjournment motion No. 3 पंजाब हाई कोर्ट की तरफ से एक आदिमी के खिलाफ strictures पास करने के बारे में है। यह एक पुराना case है और इसकी public importance कोई नहीं है। इस लिये यह motion भी out of order है।

Adjournment motion No. 4 रैड क्रॉस के बारे में है। इसका गवर्नमेन्ट में कोई सम्बन्ध नहीं है। इस लिये यह motion भी out of order है।

Adjournment motion No. 5 एक individual के बारे में है और यह मामला अहम नहीं है। इस लिये यह motion भी out of order है।

*1. Pandit Shri Ram Sharma, M.L.A., to ask for leave to make a motion for the adjournment of the business of the House to discuss a matter of urgent public importance, namely, the bungling of the Government in the policy and the scheme of the nationalisation of Road Transport in the State; which is to land the Government in unnecessary litigation, as threatened by Transport operators.

2. Sardar Gopal Singh Khalsa, M.L.A., to ask for leave to make a motion for the adjournment of the business of the House to discuss a matter of urgent public importance, namely, the postponement of long overdue Gurdwara elections by the Punjab Government against the solemn assurances given by the Government in this regard.

3. Pandit Shri Ram Sharma, M.L.A., to ask for leave to make a motion for the adjournment of the business of the House to discuss a matter of urgent public importance, namely, the failure of the Government to take necessary action on the strictures of the High Court Punjab, passed against a high official of the Government on the writ No. 75 of 1952, on the false pretext of making an appeal to the Supreme Court against the judgment of the High Court.

[Mr. Speaker]

Adjournment motion No. 6 : इस की कोई importance नहीं है और नही यह वाक्या हाल ही में हुआ है। इसलिये यह motion भी out of order है।

Adjournment motion No. 7: यह कोई urgent public importance की बात नहीं है। इसलिये यह motion cut of order है।

4. Pandit Shri Ram Sharma, M.L.A., to ask for leave to make a motion for the adjournment of the business of the House to discuss a matter of urgent public importance, namely, the lottery (lucky draw) arranged by the Deputy Commissioner, Hoshiarpur for Red Cross Society Hospital in which more than 25 thousand rupees were earned out of which Rs 3,300 were given out as prizes, thereby encouraging a sort of gambling with official influence.

5. Pandit Shri Ram Sharma, M.L.A., to ask for leave to make a motion for the adjournment of the business of the House to discuss a matter of urgent public importance, namely, the intention of the Education Department in shielding a corrupt official of the Government High and Normal Girls School, Karnal against whom magisterial enquiry was going on, but the department got it stopped on the pretext of undertaking departmental enquiry, which is being over delayed with a view to hush up the matter.

6. Pandit Shri Ram Sharma, M.L.A., to ask for leave to make a motion for the adjournment of the business of the House to discuss a matter of urgent public importance, namely, the intentional failure of the Irrigation Department to settle the just claims of contractor Om Parkash about allotment and subsequent cancellation of kiln work on Bhakra Main Line, Tohana which is pending since 1952.

7. Pandit Shri Ram Sharma, M.L.A., to ask for leave to make a motion for the adjournment of the business of the House to discuss a matter of urgent public importance, namely, the failure of the Electricity Department in settling the claims of contractor Ajudhya Nath of Ferozepore, against the department, which is pending since 1949, and about which the Minister concerned had assured in reply to question No. 91, in the Punjab Legislative Council, that it would be done without delay.

8. Pandit Shri Ram Sharma, M.L.A., to ask for leave to make a motion for the adjournment of the business of the House to discuss a matter of urgent public importance, namely, the most unnecessary condition of absorbing in service the retrenched officials of at least four years continuous standing in the Civil Supplies Department after a test for clerical job through the Subordinate Services Selection Board, as evinced by circular letters sent by District Food Supply Officers.

9. Pandit Shri Ram Sharma, M.L.A., to ask for leave to make a motion for the adjournment of the business of the House to discuss a matter of urgent public importance, namely, the failure of the Government in making allotment of houses at Chandigarh to several small employees particularly of the Government Press Department whose miserable plight is simply intolerable.

Adjournment motion No. 8: इस की कोई public importance नहीं है। इस लिये यह motion out of order है।

Adjournment motion No. 9: It relates to an individual's case. It has no public importance. Therefore, this motion is out of order.

PAPERS LAID ON THE TABLE

Chief Minister (Shri Bhim Sen Sachar) : Sir, I beg to lay on the Table of the House the notification issued under sub-section (1) of Section 17 of the Punjab Requisitioning and Acquisition of Immovable Property Act, 1953 as required by sub-section (2) of Section 17 of the said Act.

EXEMPTION FROM THE PROVISIONS OF THE RULE "SITTINGS OF THE ASSEMBLY"

Chief Minister (Shri Bhim Sen Sachar) : Sir, I beg to move—

That the proceedings on the items of business set out for to-day be exempted at this day's sitting from the provisions of the Rule "Sittings of the Assembly".

Mr. Speaker : Motion moved—

That the proceedings on the items of business set out for to-day be exempted at this day's sitting from the provisions of the Rule "Sittings of the Assembly".

श्री सिरि चन्द (बहादुर गढ़) : साहिबे सदर, यहां पर जो कोई भी चीज होती है अजीब होती है। कायदा यह है कि अगर कोई ऐसे खास हालात हों कि कोई बिल उसी दिन पास करने जरूरी हों, तो ऐसी motion लाई जाती है ताकि जब तक वे पास न हों जाएं सभा स्थगित न हो। जहां तक British Parliament का ताल्लुक है, May's Parliamentary Practice के पढ़ने से मालूम होता है कि वहां कोई एक हजार साल के अरसे में ज्यादा से ज्यादा 8 sittings ऐसी हुई हैं जिन के सम्बन्ध में ऐसी motion पेश की गई और वे भी ऐसे हालात में जबकि अंग्रेजों की किसी दूसरी कौम के साथ बड़ी सख्त लड़ाई हो रही थी और इस लिये किसी legislation का फौरन पास किया जाना निहायत जरूरी था। आज पंजाब विधान सभा के सामने या पंजाब में कोई ऐसे हालात नहीं हैं कि इस motion को लाया जाये और यह sitting जब तक के एजेंडा पर रखा गया काम खत्म न हो लगातार चलती चले। न तो agenda पर रखा हुआ कोई बिल इतना जरूरी है कि अगर वह आज ही पास न किया गया तो सूबे पर आफत आ जायेगी और न ही इस बात का कोई सबूत मौजूद है कि opposition dilatory tactics का इस्तेमाल करती रही है या आगे करना चाहती है। ऐसी motions किसी खास हालात में पेश की जानी चाहियें। अगर यह एक normal feature बन जाये तो असेम्बली एक farce बन कर रह जायेगी।

[श्री श्री चन्द]

यहां पर हमेशा British Parliament का procedure follow करने की कोशिश की जाती है। वहां पर अभी तक कुल 8 sittings को non-stop करने के लिए ऐसी motions लाई जा चुकी हैं। यहां पर आम तौर पर देखा गया है कि हर सेशन में ऐसी motion लाई जाती है। न Opposition की ओर से कोई ऐसी कार्यवाही की जा रही है जिस से जाहिर हो कि वह जान बूझ कर delay करना चाहती हो और न ही कोई ऐसी मुसीबत आ पड़ी है कि मੈम्बर साहिबान सोमवार तक या उस के बाद यहां ठहर कर काम नहीं कर सकते। यह ठीक है कि गवर्नमेंट पार्टी काफी अकसरीयत में है और वह अपनी मर्जी के मुताबिक जो चाहे कर सकती है लेकिन अगर हकूमत अपनी majority के बल बोते पर गैर-मुनासिब कारवाइयां करने लग पड़ी तो असैम्बली महज एक मज़ाक बन कर रह जायेगी।

पंडित श्री राम शर्मा (सोनीपत) : स्पीकर साहिब, Parliaments और Assemblies के त्वायद में आम rules के इलावा कुछ ऐसे इस्तिथारात भी रख लिये जाते हैं जिन का इस्तेमाल बहुत ही नाजुक और अहम मौकों पर किया जाता है। हमारी असैम्बली में यह एक रिवाज सा बन गया है बल्कि यह रिवाज जोर पकड़ता जा रहा है कि जो procedure emergency या खास हालात में adopt किया जाना चाहिये वह आम हालात में भी लागू किया जा रहा है। जैसे मेरे काबिल दोस्त चौधरी सिरी चन्द ने कहा है British Parliament में जहां के तरीकों और रिवाजों के मुताबिक हमारी असैम्बली काम करती है कोई हजार साल के अरसे में जिस में हर तरह का जमाना गुजरा कुल आठ मौके ऐसे आये कि उन्हें sittings को non-stop जारी रखना पड़ा। हमारी अपनी असैम्बली में partition से बहुत पहले अंग्रेजों के वक्त और उसके बाद भी, सिवाए खास हालात के आम तौर पर कभी ऐसी तहरीक पेश नहीं की गई।

आज इस तहरीक के पेश करने का मतलब यह है कि जब तक यह items जो agenda पर रखी गई हैं dispose of नहीं हो जाती, यह इजलास जारी रहे, चाहे यह काम खत्म करने में आठ बज जायें, नौ बज जायें दस बज जायें या कल का दिन भी गुजर जाये। मैं पूछता हूं कि क्या देश या प्रान्त में कोई आफत आ रही है, कोई मुसीबत नाज़ल हो गई है कि list पर रखे गये सारे काम को खत्म किये बिना सभा उठ ही नहीं सकती? क्या सरकार आज कोई ऐसा बिल पास करवाना चाहती है जो अगर सदन धंटो में पास न किया गया तो लोगों पर बड़ी भारी मुसीबत आ जाएगी? एक बिल तो ऐसा है जो Select Committee के सुपुर्द किया जाना है, दूसरे में कुछ verbal charge की जानी है, क्योंकि उसमें council ने कोई तबदीली कर दी है। बाकी रह गये दो बिल। हमारे rules के मुताबिक किसी बिल के agenda में शामिल किये जाने से पहले मंम्बरों को पांच clear days का नोटिस दिया जाना चाहिये। यह दो बिल जिन को पास करना मकसूद है 18 मई के गज़ट में छपे थे। "The above bill was published....."

अध्यक्ष महोदय : जब वह बिल सभा के सामने आयेगा, तो उस वक्त यह बहस कीजिएगा ।

श्री राम शर्मा : स्पीकर साहिब, मैं यह वाजेह करना चाहता हूं कि कोई ऐसी बात नहीं है। कोई स्पेसिफिक (specific) चीज नहीं है। गवर्नमेंट के ऊपर कोई मुसीबत आनेवासी नहीं है और स्टेट (state) के ऊपर कोई आफत टूटने वाली नहीं है। खुद गवर्नमेंट का यह हाल है कि यह बिल 18 मई 1954 को गजट (gazette) में छापा जाता है। इस को गजट हुए 5 clear days भी नहीं हुए। मंत्री माहिबान को अपने अमैण्डमेंट (amendment) देने का दो दिन का वकफा, नोटिस देने के लिये भी नहीं मिला और फिर यह कहा जा रहा है कि असेम्बली का इजलास मुतवातर जारी रहे। जब तक यह बिल पास न हो जाए, सदन न उठे। क्योंकि इस agenda में यह चीज है कि पंजाब में जो Land Revenue लोगों पर लगा हुआ है हमारी गवर्नमेंट उस को सवाया करना चाहती है और जिन लोगों के पास जमीनें ज्यादा हैं उन पर Land Revenue $1\frac{1}{2}$ तक बढ़ाना चाहती है। दूसरी बात यह है कि थानों की जगह National Extension Scheme के मातहत territorial units कायम करना चाहती है। मैं यह अर्ज करना चाहता कि यह मामला इतना अहम और emergent नहीं है कि इस को पास करने के लिये यह तरीका कार इस्तिथार किया जाए और असेम्बली के इजलास को मुतवातर जारी रखा जाये। हां; यह बात हो सकती है और होती आई है कि जब कोई emergent और अहम मामला दरपेश हो तो इजलास बगैर ब्रेक (break) के मुसलसिल जारी रखा जा सकता है। लेकिन हमारी सरकार चाहती है कि मालगुजारी सवाई हो जाए और थाने territorial units में बदल जाएं और यह सब कुछ आज ही हो जाए। वे इस बिल को बड़ा अहम बता रहे हैं लेकिन जब तक आप इस बात की इजाजत न दें मुख्य मंत्री इस को पेश नहीं कर सकते। यह तो आप की मेहरबानी और खास निवाजिश का नतीजा है कि आप ने बिना वक्त का ध्यान किये हुए उन को बिल पेश करने की इजाजत दे दी है। बजाये इसके कि ये लोग इस बात के लिये मशकूर होते कि इतने थोड़े वक्त में बिल पेश करने की इजाजत मिल गई है ये एक और तरीका ले आए हैं कि असेम्बली का इजलास मुतवातर किया जाए और इन को पास किया जाए। ये लोग आप की मेहरबानी का नाजायज फायदा उठा रहे हैं। यह तरीका न तो letter में और न ही spirit में जायज है। कायदे के खिलाफ है। हिंदुस्तान के आईन के खिलाफ है, बल्कि दुनिया भर के आईन के खिलाफ है। यह तरीका एक democracy का नहीं बल्कि dictatorship का प्रतीक है। हाऊस का इजलास मुतवातर चलता रहे...

अध्यक्ष महोदय : Order, please, order. जब मैं खड़ा होता हूं तो आप बैठ जाया करें। आप मेरी तरफ देखते ही नहीं हैं। आप repetition भी कर रहे हैं। हर दो मिनट के बाद आप वही पुरानी बातें दुहरा देते हैं। आप मुस्तसर तौर पर अपनी argument दें और बहस करें।

पंडित श्री राम शर्मा : जनाब एक बात और कह कर मैं अपनी तकरीर को समाप्त करूंगा। मेरा मतलब यह है कि ऐसा मुतवातर इजलास किसी खास और specific business

[ਧੰਡਿਤ ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਸ਼ਰਮਾ]

ਕੀ conduct ਕਰਨੇ ਕੇ ਲਿਏ ਕਿਆ ਜਾ ਸਕਤਾ ਹੈ ਜ ਕਿ ਏਸੀ ਸਾਮ੍ਹਲੀ ਚੀਜ਼ਾਂ ਕੇ ਲਿਏ । ਯਹ procedure ਕਿਲਕੁਲ ਗਲਤ ਐਰਿ ਕੇਕਾਧਦਾ ਹੈ । ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਇਨ ਲਫਜ਼ਾਂ ਕੇ ਸਾਥ ਮੈਂ ਇਸ ਤਹਰੀਕ ਕੀ ਸੁਖਾਲਫਤ ਕਾਰਤਾ ਹੂੰ ।

ਮੈਲਵੀ ਅਬਦੁਲ ਗਨੀ ਭਾਰ (ਨੂਹ): ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ, ਮੈਂ ਬੜਾ ਹੈਰਾਨ ਹਾਂ ਕਿ ਸਾਡੇ ਮੁਖ ਮੰਤਰੀ ਜੀ ਨੇ ਇਹ ਮਤਾ ਪੇਸ਼ ਕਿਉਂ ਕੀਤਾ ਹੈ ? ਇਹ ਸਮਝਦੇ ਹਨ ਕਿ ਇਨ੍ਹਾਂ ਉਪਰ ਬੜੀ ਭਾਰੀ ਜ਼ਿੰਮੇਦਾਰੀ ਹੈ । ਇਹ ਜ਼ਖਮੀ ਪੰਜਾਬ ਨੂੰ ਫਲਦਾ ਫਲਦਾ ਫੇਖਣਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਨ । ਜਦ ਇਹ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਨ ਤਾਂ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਇਸੇ ਖਿਆਲ ਨਾਲ ਹੀ ਇਜਲਾਸ ਬੁਲਾਇਆ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਪੰਜਾਬ ਨੂੰ ਕੁਝ ਨਾ ਕੁਝ ਫਾਇਦਾ ਪਹੁੰਚੇਗਾ । ਲੇਕਿਨ ਮੈਨੂੰ ਇਹ ਜਾਣ ਕੇ ਬਹੁਤ ਹੈਰਾਨੀ ਹੋਈ ਹੈ ਕਿ ਜੁਮਾਂ ਜੁਮਾਂ ਅਠ ਦਿਨ ਤਾਂ ਹੁੰਦੇ ਹੀ ਹੋਣਗੇ ਅਜੇ 5 ਦਿਨ ਵੀ ਮੁਸ਼ਕਲ ਨਾਲ ਹੋਏ ਹਨ ਕਿ ਸਾਡੇ ਮੁਖ ਮੰਤਰੀ ਐਨੇ ਤੰਗ ਪੈ ਗਏ ਹਨ ਜੋ ਕਹਿਣ ਲਗ ਪਏ ਹਨ ਕਿ ਇਜਲਾਸ ਨੂੰ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਚਲਾਓ ਕਿ ਭਾਵੇਂ ਕੁਝ ਵੀ ਹੋਵੇ ਜਦ ਤਕ ਇਹ ਬਿਲ ਪਾਸ ਨਾ ਹੋ ਜਾਣ ਹਾਊਸ adjourn ਨਾ ਹੋਵੇ । ਮੈਂ ਆਪਣੇ ਮੁਖ ਮੰਤਰੀ ਹੋਰਾਂ ਨੂੰ ਜਿਹੜੇ ਕਿ ਦੂਸਰੇ ਸੂਬਿਆਂ ਦੀਆਂ ਮਸਾਲਾਂ ਸਾਡੇ ਸਾਹਮਣੇ ਰਖਿਆ ਕਰਦੇ ਹਨ ਇਹ ਅਰਜ਼ ਕਰਨੀ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਉਤਰ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ ਦੀ ਅਸੈਂਬਲੀ 20 ਫਰਵਰੀ ਤੋਂ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਕੇ ਹੁਣ ਤਕ ਬੈਠੀ ਚਲੀ ਗਈ ਤਾਂ ਜੋ ਉਹ ਸੂਬੇ ਦੇ ਭਲੇ ਵਾਸਤੇ ਜ਼ਿਆਦਾ ਤੋਂ ਜ਼ਿਆਦਾ ਸੋਚ ਵਿਚਾਰ ਕਰ ਸਕੇ ਆਪ ਨੇ ਫਰਮਾਇਆ ਹੈ ਕਿ ਮੈਂ ਹਾਊਸ ਦੇ ਵਕਤ ਦੀ ਜ਼ਿਆਦਾ ਤੋਂ ਜ਼ਿਆਦਾ ਹਿਫਾਜ਼ਤ ਕਰਨੀ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ । ਲੇਕਿਨ ਜਿਥੇ ਤੁਸੀਂ ਇਸ ਗਲ ਦਾ ਧਿਆਨ ਰਖਦੇ ਹੋ ਉਥੇ ਆਪ ਜੀ ਨੂੰ ਇਹ ਵੀ ਧਿਆਨ ਰਖਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਸ ਸੂਬੇ ਦੀ ਅਸੈਂਬਲੀ ਦੇ ਮੈਂਬਰਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਜਿਸ ਦੇ ਤੁਸੀਂ ਪ੍ਰਧਾਨ ਹੋ ਅਤੇ ਇਹ ਮੁਖ ਮੰਤਰੀ ਹਨ, ਕਿੰਨਾਂ ਇਨਸਾਫ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ ? ਅਸੈਂਬਲੀ ਦਾ ਚਾਰ ਦਿਨ ਲਈ ਇਜਲਾਸ ਬੁਲਾਇਆ ਹੈ । ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ, ਲੋਕ ਤਰ੍ਹਾਂ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਤਾਨਾਜ਼ਨੀ ਕਰਨਗੇ, ਭਾਵੇਂ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਇਹੋ ਜਿਹਾ ਮਕਸਦ ਨਾ ਵੀ ਹੋਵੇ । ਉਹ ਕਹਿਣਗੇ ਕਿ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਆਪਣੀ ਖਾਸ ਖਾਸ ਉਲਝਨਾਂ ਨੂੰ ਹਲ ਕਰਨ ਲਈ ਅਸੈਂਬਲੀ ਦਾ ਇਜਲਾਸ ਚਾਰ ਦਿਨ ਲਈ ਬੁਲਾਣ ਦਾ ਇਕ ਅਡੰਬਰ ਰਚਿਆ । ਜੇਕਰ ਮੁਖ ਮੰਤਰੀ ਸਾਹਿਬ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ opposition ਪੂਰੀ ਪੂਰਾ ਸਹਿਯੋਗ ਦੇਵੇ ਅਤੇ ਉਹ ਸਫਲਤਾ ਨੂੰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਵੀ Opposition ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਵਿਚਾਰ ਪ੍ਰਗਟ ਕਰਨ ਦਾ ਪੂਰਾ ਪੂਰਾ ਮੌਕਾ ਦੇਣ । ਜਿਹੜੇ ਕਾਇਦੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਆਪ ਬਣਾਏ ਹੋਏ ਹਨ ਜੋ ਕਰ ਉਹ ਖੁਦ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਕਦਰ ਨਹੀਂ ਕਰਦੇ ਤਾਂ ਤੁਸੀਂ ਹੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਮਸ਼ਵਰਾ ਦਿਓ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਕਾਇਦਿਆਂ ਦੀ ਕਦਰ ਕਰਨ ਅਤੇ ਮੈਂਬਰਾਂ ਨੂੰ ਬੋਲਣ ਦਾ ਮੌਕਾ ਦਿਤਾ ਜਾਵੇ । ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ, ਕੋਈ ਕਾਰਨ ਨਹੀਂ ਮਾਲੂਮ ਹੁੰਦਾ ਕਿ ਇਹ ਹਾਊਸ ਓਨੀ ਦੇਰ ਤਕ ਨਾ adjourn ਹੋਵੇ ਜਦ ਤਕ ਕਿ ਇਹ ਬਿਲ ਪਾਸ ਨਾ ਹੋ ਜਾਣ । ਕੋਈ ਖਾਸ ਉਲਝਨ ਨਹੀਂ ਹੈ । ਕੋਈ ਖਾਸ ਗਲ ਨਹੀਂ ਹੈ । ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਪਾਰਟੀ ਉਪਰ ਕੋਈ ਮੁਸ਼ੀਬਤ ਨਹੀਂ ਆਈ ਹੋਈ । ਜੇ ਕੋਈ ਅਜਿਹੀ ਹਾਲਤ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਅਸੀਂ ਹਮਦਰਦਾਨਾ ਤੌਰ ਉਪਰ ਕਹਿ ਦੇਵੀਏ ਕਿ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕਰ ਲਵੋ ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਮੈਂ ਮੁਖ ਮੰਤਰੀ ਸਾਹਿਬ ਨੂੰ ਅਰਜ਼ ਕਰਾਂਗਾ ਕਿ ਇਹ ਤਮਾਸ਼ਾ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਨਾ ਵਿਖਾਉਣ ਅਤੇ ਅਸੈਂਬਲੀ ਨੂੰ ਬਿਲਾਂ ਤੇ ਵਿਚਾਰ ਕਰਨ ਦਾ ਪੂਰਾ ਪੂਰਾ ਮੌਕਾ ਦੇਣ । ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੂਸਰੇ ਸੂਬਿਆਂ ਦੀਆਂ ਅਸੈਂਬਲੀਆਂ ਕੰਮ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ ਇਹ ਅਸੈਂਬਲੀ ਵੀ ਐਡੀ ਛੇਤੀ adjourn ਨ ਕੀਤੀ ਜਾਏ । ਮੈਂ ਫਿਰ ਕਹਾਂਗਾ ਕਿ ਕੋਈ ਤੁਫਾਨ ਨਹੀਂ ਆਉਣ ਲਗਾ, ਜੇਕਰ ਆਵੇਗਾ ਤਾਂ ਅਸੀਂ ਸਾਰੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਸੇਵਾ ਲਈ ਹਾਜ਼ਿਰ ਹੋਵਾਂਗੇ । ਮੈਨੂੰ ਸਮਝ ਨਹੀਂ ਆਉਂਦੀ ਕਿ ਉਹ ਅਜਿਹਾ ਕੰਮ ਕਿਉਂ

ਕਰਦੇ ਹਨ। ਸਾਰੇ ਸੂਬੇ ਵਿਚ ਬਦਗੁਮਾਨੀ ਪੈਦਾ ਹੋ ਜਾਵੇਗੀ ਕਿ ਮੁਖ ਮੰਤਰੀ ਨੇ ਸਿਰਫ ਆਪਣੀ ਕਿਸੇ ਉਲਝਣ ਨੂੰ ਹਲ ਕਰਨ ਲਈ ਚਾਰ ਦਿਨ ਦਾ ਸੈਸ਼ਨ ਬੁਲਾ ਕੇ ਇਕ ਅਭੰਬਰ ਰਚਿਆ ਸੀ।

ਮੁੱਖ ਮੰਤਰੀ (ਸ਼੍ਰੀ ਭੀਮ ਸੇਨ ਸਚਚਰ) : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਮੇਰੇ ਫ਼ਾਜ਼ਿਲ ਦੋਸਤਾਂ ਨੇ ਅਪਣੇ ਖਯਾਲਾਤ ਕਾ ਇਜ਼ਹਾਰ ਕੀਆ ਹੈ ਅਤੇ ਇਹ ਕਹਨੇ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੀ ਹੈ, ਜੈਸੇ ਕਿ ਉਨ ਦੀ ਤਕਰੀਰਾਂ ਸੇ ਜ਼ਾਹਿਰ ਹੋਤਾ ਹੈ, ਕਿ ਗੋਯਾ ਹਮ ਖਤਮ ਹੋਤੇ ਵਾਲੇ ਹੈਂ, ਮੰਤਰੀ ਮੰਡਲ ਮੇਂ ਉਲਝਨੇ ਹੈਂ ਅਤੇ ਗੜਬੜ ਹੈਂ। ਅਗਰ ਵੇ ਸੀਧੀ ਸਾਦੀ ਬਾਤ ਕੀ ਭੀ ਏਕ ਬੜੀ ਉਲਝਨ ਸਮਝ ਲੈਂ ਤੋ ਇਸ ਮੇਂ ਹਮਾਰਾ ਕਯਾ ਬਸ ਚਲ ਸਕਤਾ ਹੈ? ਮੇਰੇ ਫ਼ਾਜ਼ਿਲ ਦੋਸਤ ਪੰਡਿਤ ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਸ਼ਰਮਾ ਨੇ ਕਹਾ ਹੈ ਕਿ ਇਹ agenda ਅਹਮ ਅਤੇ ਗੈਰਮਾਮੂਲੀ ਨਹੀਂ ਹੈ ਅਗਰ ਏਸੀ ਹੀ ਬਾਤ ਹੈ ਤੋ ਬਰਾਹਟ ਕਯੋਂ ਹੈ। ਇਹ ਸ਼ਾਮ ਸੇ ਪਹਲੇ ਖਤਮ ਹੋ ਜਾਏਗਾ। ਅਤੇ ਵੇ ਲੋਗ ਗੜਬੜ ਕਰੇਂਗੇ ਤੋ ਹੋ ਸਕਤਾ ਹੈ ਕਿ ਜ਼ਯਾਦਾ ਸਮਯ ਲਗ ਜਾਏ। ਉਸ ਹਾਲਤ ਮੇਂ ਹੋ ਸਕਤਾ ਹੈ ਕਿ ਆਧਾ ਘੰਟਾ ਯਾ ਚਾਲੀਸ ਮਿਨਟ ਜ਼ਯਾਦਾ ਲਗ ਜਾਏਂ ਤੋ ਬਜਾਏ ਇਸ ਕੇ ਕਿ ਮੈਂਬਰ ਸਾਹਿਬਾਨ ਕਾ ਕੇਵਲ ਆਧੇ ਘੰਟੇ ਕੇ ਲਿਯੇ ਕਲ ਕਾ ਦਿਨ ਭੀ ਜਾਯਾ ਹੋ ਮੈਂ ਨੇ ਮੁਨਾਸਿਬ ਇਹ ਸਮਝਾ ਕਿ ਕਾਮ ਖਤਮ ਕਰ ਕੇ ਵੇ ਰਾਤ ਕੀ ਗਾੜੀ ਚਲੇ ਜਾਏਂਗੇ। ਅਗਰ ੨ ਘੰਟੇ ਭੀ ਜ਼ਯਾਦਾ ਲਗ ਜਾਏਂ ਤੋ ਬੇਹਤਰ ਹੋਗਾ ਬਜਾਏ ਇਸ ਕੇ ਕਿ ਕਲ ਕਾ ਸਾਰਾ ਦਿਨ ਜਾਯਾ ਕੀਆ ਜਾਏ। ਇਸ ਲਿਯੇ ਜੈਸਾ ਕਿ ਮੇਰੇ ਕੁਝ ਦੋਸਤਾਂ ਕੋ ਖ਼ਦਸ਼ਾ ਹੈ ਮੈਂ ਬਤਾ ਦੇਨਾ ਚਾਹਤਾ ਹੂੰ ਕਿ ਮੇਰੇ ਸਾਮਨੇ ਕੋਈ ਪਰੇਸ਼ਾਨੀ ਨਹੀਂ, ਕੋਈ ਬਰਾਹਟ ਨਹੀਂ, ਕੋਈ ਉਲਝਨ ਨਹੀਂ।

ਦੂਸਰੇ ਇਹ ਬਤਾਯਾ ਗਯਾ ਕਿ ਸਾਹਿਬ ਇਹ ਜੋ ਬਿਲ ਹੈ ਇਸ ਕਾ ਕੋਈ ਨੋਟਿਸ ਨਹੀਂ ਦਿਯਾ ਗਯਾ। ਜੋ ਮੇਰੀ motion ਹੈ ਇਸਸੇ ਉਨ ਕਾ ਇਹ ਏਤਰਾਜ਼ ਕਟ ਨਹੀਂ ਜਾਤਾ, ਵਹ ਬਦਸਤੂਰ ਕਾਯਮ ਰਹਤਾ ਹੈ। ਆਪ ਕੇਸ਼ਕ ਇਹ ਏਤਰਾਜ਼ ਕਰ ਸਕਤੇ ਹੈਂ ਕਿ ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ ਇਸ ਪ੍ਰਸਤਾਵ ਕੋ move ਕਰਨੇ ਕੀ ਇਜਾਜ਼ਤ ਨ ਦੇਂ। ਇਹ ਜੋ motion ਅਬ ਮੈਂ ਪੇਸ਼ ਕੀ ਹੈ ਉਸ ਕਾ ਮਕਸਦ ਤੋ ਸਿਰਫ਼ ਯਹੀ ਹੈ ਕਿ ਆਧ ਘੰਟਾ, ਏਕ ਯਾ ਦੋ ਘੰਟੇ ਅਗਰ ਜ਼ਯਾਦਾ ਲਗ ਜਾਏਂ ਤੋ ਹਮ ਲਗਾ ਲੈਂ ਅਤੇ ਇਸ business ਕੋ ਖਤਮ ਕਰ ਦੇਂ। ਜਬ ਤਕ ਇਹ motion ਨ ਲਾਇ ਜਾਏ ਤਬ ਤਕ ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ ਮਜਬੂਰ ਹੋਤੇ ਹੈਂ and he must adjourn the House at the appointed hour; ਕਾਯਦੇ ਕੇ ਮੁਤਾਬਿਕ ਉਨ੍ਹੇਂ House ਕੋ ਮੁਕਰਰੀ ਵਕਤ ਪਰ adjourn ਕਰਨਾ ਹੀ ਪੜਤਾ ਹੈ। ਇਹ ਇਸ ਲਿਯੇ ਭੀ ਕੀਆ ਗਯਾ ਹੈ ਕਿ ਅਗਰ ਖਾਹ-ਮ-ਖਾਹ ਮੇਰੇ ਸਾਮਨੇ ਵਾਲੇ ਆਦਮਿਯੋਂ ਕਾ ਇਰਾਦਾ discussion ਕੋ ਲੰਬਾ ਕਰਨੇ ਕਾ —ਸਿਰਫ਼ ਜ਼ਯਾਦਾ ਦੇਰ ਬੈਠਨੇ ਕੇ ਇਰਾਦੇ ਸੇ ਹੀ ਹੋ ਤੋ ਹਮੇਂ ਕੋਈ ਏਤਰਾਜ਼ ਨ ਹੋ।

ਅਬ ਦੋ ਬਾਤੋਂ ਹੈਂ। ਏਕ ਤੋ ਇਹ ਕਿ ਇਹ ਬੈਠਕ ਸਾਧਾਰਣ ਤਰੀਕੇ ਸੇ ਚਲ ਸਕਤੀ ਹੈ। ਅਗਰ ਸਾਧਾਰਣ ਤਰੀਕੇ ਸੇ ਚਲਤੀ ਰਹੇ ਤੋ ਖ਼ਦਸ਼ੇ ਕੀ ਕੋਈ ਬਾਤ ਨਹੀਂ। ਵਕਤ ਪਰ ਸਾਰਾ ਕਾਮ ਖਤਮ ਹੋ ਜਾਏਗਾ। ਦੂਸਰੇ ਅਗਰ ਇਸੇ ਸਾਧਾਰਣ ਤਰੀਕੇ ਸੇ ਨ ਚਲਨੇ ਦਿਯਾ ਗਯਾ ਅਤੇ ਏਸਾ ਕਰਨੇ ਕਾ ਕੋਈ ਖਾਹ-ਮ-ਖਾਹ ਕਾ ਇਰਾਦਾ ਹੁਆ ਤੋ ਇਸ ਕੇ ਲਿਯੇ ਹਾਊਸ ਕੇ ਸਾਮਨੇ ਏਕ ਤਜਵੀਜ਼ ਰਖ ਦੀ ਗਈ ਹੈ। ਹਾਊਸ ਇਹ ਖ਼ਬਰ ਫੈਸਲਾ ਕਰਲੇ ਕਿ ਉਨ ਕੇ ਏਸੇ ਇਰਾਦੇ ਕੋ ਕਾਮਯਾਬ ਹੋਨੇ ਦੇਨਾ ਚਾਹਿਏ ਯਾ ਨਹੀਂ।

ਮੈਂ ਅਪਣੇ ਫ਼ਾਜ਼ਿਲ ਦੋਸਤਾਂ ਕਾ ਮਸ਼ਕੂਰ ਹੂੰ ਕਿ ਉਨ੍ਹੇਂ ਮੇਰਾ ਕਾਫ਼ੀ ਫ਼ਿਕਰ ਅਤੇ ਖ਼ਯਾਲ ਹੈ। ਉਨ ਕਾ ਮਸ਼ਕੂਰ ਹੂੰ ਜੋ ਉਨ੍ਹੇਂਨੇ ਕਹਾ ਕਿ ਅਗਰ ਵਕਤ ਆਯਾ ਤੋ ਉਨ ਦੀ ਖ਼ਿਦਮਾਤ ਮੁਝੇ ਹਾਸਿਲ ਹੋਗੀ। ਮੈਂ ਉਨ੍ਹੇਂ ਬਤਾਨਾ ਚਾਹਤਾ ਹੂੰ ਕਿ ਅਭੀ ਤੋ ਖ਼ਦਸ਼ੇ ਕੀ ਕੋਈ ਬਾਤ ਨਹੀਂ ਹੈ ਅਤੇ ਨ ਹੀ ਕੋਈ ਏਸਾ ਖ਼ਦਸ਼ਾ

पेशेवर है जिससे मुझे इन बेदार मगज भाईयों की मदद की कोई जरूरत हो (Hear, hear) यह सीधी सादी बात है। मैं हैरान हूँ कि उन्होंने क्यों एक हजार वर्ष पहले की Proceedings को quote किया और war, famine और locust वगैरा का झगड़ा खड़ा कर दिया। यह बातें दर असल इस motion से सम्बन्धित ही नहीं।

That the amendment made by the Punjab Legislative Council in the East Punjab Holdings (Consolidation and Prevention of Fragmentation) (Amendment) Bill, which was passed by the Punjab Legislative Assembly on the 2nd April, 1954, be taken into consideration.

AMENDMENTS MADE BY THE PUNJAB LEGISLATIVE COUNCIL IN THE EAST (5)11
PUNJAB HOLDINGS (CONSOLIDATION AND PREVENTION OF FRAGMENTA-
TION) (AMENDMENT) BILL

ਸਰਦਾਰ ਚੰਨਣ ਸਿੰਘ ਧੂਤ (ਟਾਂਡਾ) : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ ! ਇਹ ਜਿਹੜੀ amend-
ment ਆਈ ਹੈ ਮੈਂ ਇਸ ਦੀ ਮੁਖਾਲਫਤ ਕਰਨ ਲਈ ਨਹੀਂ ਸਗੋਂ ਇਕ clarification
ਕਰਾਉਣ ਲਈ ਖੜਾ ਹੋਇਆ ਹਾਂ ! ਮੈਂ ਆਸ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਮਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਇਸ ਵਲ
ਅਪਣਾ ਧਿਆਨ ਦੇਨਗੇ ।

Common purpose ਵਾਸਤੇ ਜਿਹੜੀ ਜ਼ਮੀਨ ਲਈ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਉਸ ਬਾਰੇ ਅਜਕਲ
ਦੇ ਬਿਲ ਦੇ working ਤੋਂ ਇਹ ਪਤਾ ਲਗਾ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਜ਼ਮੀਨ ਉਹ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਜਿਹੜੀ
ਪਿੰਡ ਵਿਚੋਂ ਸਭ ਤੋਂ ਵਧੀਆ ਹੋਵੇ । ਅਰਥਾਤ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਜ਼ਮੀਨ ਚੰਗੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਉਹ
common land ਵਿਚ ਰਖੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ । ਇਸ ਮਾਮਲੇ ਤੇ ਲੋਕਾਂ ਦਾ Consolidation
Department ਦੇ ਅਫਸਰਾਂ ਨਾਲ ਕਈ ਵਾਰੀ ਝਗੜਾ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਪਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਸੁਣਦਾ
ਕੋਈ ਵੀ ਨਹੀਂ । ਇਸ ਲਈ ਮੈਂ ਇਹ ਕਹਿਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਇਹ ਜ਼ਮੀਨ ਜਿਸ ਵੇਲੇ
ਅਲਹਿਦਾ ਰਖੀ ਜਾਵੇ, ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਮਰਜ਼ੀ ਨਾਲ ਰਖੀ ਜਾਵੇ ।

ਦੂਜੇ ਇਹ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਜ਼ਮੀਨ ਤੇ farm ਬਣਾਏ ਜਾਣਗੇ; ਇਹ ਕੀਤਾ
ਜਾਵੇਗਾ, ਉਹ ਕੀਤਾ ਜਾਵੇਗਾ । ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਦੀ ਆਮਦਨੀ ਵਧ ਜਾਵੇਗੀ । ਮੈਂ ਇਹ ਸਮਝਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਇਹ
ਤਰੀਕਾ ਬਿਲਕੁਲ ਰਲਤ ਹੈ । ਪੰਜ, ਦਸ ਯੁੱਗਾਂ ਜ਼ਮੀਨ ਤੇ ਵੀ ਕੋਈ farm ਬਣਾਏ ਜਾ ਸਕਦੇ
ਹਨ ? ਸਾਰਿਆਂ ਤੋਂ ਚੰਗੀ ਰਲ ਇਹ ਹੋਵੇਗੀ ਜੇ ਇਸ ਜ਼ਮੀਨ ਨੂੰ ਤੁਰੰਤ ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਦੇ ਹਵਾਲੇ
ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਜਾਵੇ ।

Mr. Speaker : Question is—

That the amendment made by the Punjab Legislative Council in the East Punjab
Holdings (Consolidation and Prevention of Fragmentation) (Amendment) Bill,
which was passed by the Punjab Legislative Assembly on the 2nd April 1954,
be taken into consideration.

The motion was carried

CLAUSE 2

Mr. Speaker : Now the amendment suggested by the Punjab
Legislative Council to clause 2 of the Bill is before the House.

ਵਿਕਾਸ ਮੰਤਰੀ (ਸਰਦਾਰ ਪਰਤਾਪ ਸਿੰਘ ਕੋਰੋ) : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ ! ਇਸ ਬਾਰੇ ਮੈਂ ਕੋਈ
ਲੰਬੀ ਚੌੜੀ ਤਕਰੀਰ ਨਹੀਂ ਕਰਨੀ ਚਾਹੁੰਦਾ । ਇਸ ਵਿਚ ਸਿਰਫ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਲਫਜ਼
“residents of the village” ਇਕ indefinite ਜਿਹੀ term ਹੈ । ਕਈ
residents ਪਿੰਡ ਵਿਚੋਂ ਬਾਹਰ ਵੀ ਰਲੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ । ਇਸ ਲਈ ਅਸੀਂ ਇਹ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਾਂ
ਕਿ individual residents ਦੀ ਬਜਾਏ entire village ਦੇ benefit ਨੂੰ ਹੀ
ਮੁੱਖ ਰਖਿਆ ਜਾਵੇ ।

Mr. Speaker : Question is—

That in the proposed clause (bb), line 3, between the words “of the ” and “Village”
the words “residents of the ” be inserted.

The Motion was lost.

Minister for Development (Sardar Partap Singh Kairon) : Sir, I beg to move—

That the East Punjab Holdings (Consolidation and Prevention of Fragmentation) (Amendment) Bill, as originally passed by the Assembly be passed again.

Mr. Speaker : Motion moved—

That the East Punjab Holdings (Consolidation and Prevention of Fragmentation) (Amendment) Bill as originally passed by the Assembly be passed again.

श्री मूल चन्द जैन (सम्भालका) : जनाब स्पीकर साहिब ! यह Amendment जो Council ने पास करके भेजी है, मैं इस के बारे में बोलने के लिये खड़ा हुआ हूँ ।

Mr. Speaker : The hon. Member cannot speak at this stage, because that amendment has already been lost.

श्री मूल चन्द जैन : बहुत अच्छा, स्पीकर साहिब ! हाऊस में जो motion move हुई है कि यह बिल जिस शक्ल में originally पास किया गया था, उसे वैसे ही रहने दिया जाए मैं इस की मुखालफत करने के लिये खड़ा हुआ हूँ । कौन्सिल ने.....

अध्यक्ष महोदय : आप अब इस motion पर एतराज नहीं उठा सकते ।

Mr. Speaker : Question is—

That the East Punjab Holdings (Consolidation and Prevention of Fragmentation) (Amendment) Bill, as originally passed by the Assembly, be passed again.

The motion was carried

HOUSE COMMITTEE

Mr. Speaker : Under Rule 173 of the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Punjab Legislative Assembly, I nominate the following Members as members of the House Committee :

- (1) Chaudhri Sarup Singh, Deputy Speaker.—*Ex officio* Chairman.
- (2) Chaudhri Sri Chand, M.L.A.
- (3) Shri Niranjana Dass Dhiman, M.L.A.
- (4) Sardar Partap Singh Rattakhera, M.L.A.
- (5) Bhagat Guran Dass, M.L.A.

THE PUNJAB GRAM PANCHAYAT (SECOND AMENDMENT) BILL, 1954.

Chief Minister (Shri Bhim Sen Sachar) : Sir, I beg to introduce the Punjab Gram Panchayat (Second Amendment) Bill.

Chief Minister : Sir, I beg to move—

That the Punjab Gram Panchayat (Second Amendment) Bill be taken into consideration at once.

स्पीकर साहिब, यह एक मामूली सी amendment है जो मैं हाऊस के सामने पेश कर रहा हूँ। पहले original ऐक्ट में यह प्रबन्ध किया हुआ है कि पंचायत की नुमाईन्दगी करने के लिये थाना पंचायतें होंगी। लेकिन अब यह जो थाना पंचायत है उस के शब्द 'थाने' की जगह "local area" शामिल कर रहे हैं और इस की वजह यह है कि यह जो अब administrative set-up है इस में एक ही तरह के नामों से गलती पैदा होने का डर है। इस लिये इस खामी को दूर करने के लिये शब्द "थाना" की जगह "local area" करना मुनासिब समझा गया है। यह कानूनगो Circle भी हो सकता है। मुमकिन है कि वही कर दिया जाए। तो यह सिर्फ इस लिये किया जा रहा है ताकि technical एतराज न हो सके। एक territorial unit को local area भी कह सकते हैं Development Block भी कह सकते हैं और उसी को कानूनगो Circle भी कह सकते हैं। इस लिये हम ने थाने की जगह Local area कर दिया है ताकि गलती न लगे और इस पर एतराज न हो सके। यह एक साधारण सी amendment है। मुझे उम्मीद है कि हाऊस इसे मनजूर कर लेगा।

दूसरी चीज जो इस बिल में आती है वह यह है कि हम ने पहले ऐक्ट में यह प्रबन्ध किया हुआ है कि population के basis पर हरिजनों की नुमाईन्दगी हो लेकिन कई जगह से शिकायतें आई हैं कि वहां Population के basis गलत है। इस लिये हरिजनों को पंचायतों में पूरी representation नहीं मिलती। इस बिल में उन को पूरी representation देने के लिये यह किया गया है कि गवर्नमेंट ऐसी जगह पर उन के कुछ पंच nominate कर दे। मुझे उम्मीद है कि हाऊस इस amending bill को मनजूर कर लेगा।

Mr. Speaker : Motion moved—

That the Punjab Gram Panchayat (Second Amendment) Bill be taken into consideration at once.

पंडित श्री राम शर्मा (पोनी पत) : माननीय स्पीकर साहिब, यह जो तरमीमी बिल हमारे चीफ मिनिस्टर साहिब ने पेश किया है इस द्वारा यह original ऐक्ट में दो तबदीलियां करना चाहते हैं। मैं अर्ज करता हूँ कि जहां तक इस बात का ताल्लुक है कि "थाना" की बजाए 'local area' कर दिया जाए तो इस पर मुझे ज़ाती तौर पर कोई एतराज नहीं है और न ही पहले था। "थाना" का शब्द यहां उचित मालूम नहीं होता था। इस लिये हमें ऐसा करने में कोई एतराज नहीं। "Local area" का शब्द "थाना" की बजाए ठीक रहेगा।

दूसरी तबदीली जो गवर्नमेंट original Act में करना चाहती है वह यह है कि जिस किसी पंचायत के इलाके में गवर्नमेंट अन्दाज़ा लगाएगी कि उस पंचायत में हरिजनों की आवादी के मुताबिक उन्हें representation नहीं मिली जितनी कि उन्हें मिलनी चाहिए श्री तो उस पंचायत के लिये गवर्नमेंट कुछ और पंच नामजद करेगी। मुझे इस पर एतराज है। और वह एतराज इस नामजदगी के असूल पर है। और इस नामजदगी के खिलाफ हम पिछले कई वर्षों से जद्दोजेहद जारी रखते हुए यह एतराज

[पंडित श्री राम शर्मा]

करते रहे हैं कि नामजदगी के जरिये सरकार अपने खुशामदपसन्द या हां में हां मिलाने वाले आदमियों को नामजद कर लेती है जो कि spirit of democracy के सरासर खिलाफ है। अगर काम चलाने से ही मुराद है तो बड़ी २ बातें बनाने का क्या फायदा है। हम यह देख चुके हैं कि इस नामजदगी के असूल को District Boards Committees या Small Town Committees से हटाया जा चुका है मगर आज एक बिल पेश है कि पंचायतों में भी नामजदगी का हक गवर्नमेंट को दिया जाए। ऐसा मालूम होता है कि ज्यों २ हम आजादी मिलने के दिन से आगे बढ़ते जा रहे हैं, त्यों त्यों उस गलत असूल को जिसे हम थोड़ा बहुत छोड़ने की तरफ मायल हुए थे फिर उसे किसी न किसी बहाने से वापिस लाने का यत्न कर रहे हैं। इस तरमीम के जरिये यह बात किया चाहते हैं कि अगर गवर्नमेंट को पता चले कि कहीं हरिजनों की आबादी के लिहाज से पंचायतों में कम नुमायंदगी दी गई है तो यह नहीं कि वहां पर चुनाव कराये जाएं बल्कि गवर्नमेंट यह इस्तिथार चाहती है कि वह हरिजन नुमायंदों को खुद उस पंचायत में नामजद कर के इस कमी को पूरा कर दे। यह एक गलत, खतरनाक और democracy के असूल के खिलाफ बात है। असूली और अमली तौर पर ठीक बात नहीं है। जिस आदमी को आप नामजद करेंगे या अफसर मुकर्रर करेंगे वह आम तौर पर हर मौके पर आप की हां में हां मिलाएगा। जिस से साफ जाहिर है कि ऐसे पंचों की राय आम जनता की राय नहीं होगी। जिस का नाम ही पंचायत राज हो, पंचों का राज, गांव के बड़े बूढ़ों का राज, वहां पर नामजदगी की गुंजायश ही कहां रहती है? ऐसी पंचायतों में पिछले दरवाजे से लाकर किसी आदमी के बिठाए जाने को मैं बिल्कुल नाकाबिले वरदाशत बात समझता हूं। बाकी इस बात में ज़रा भी शक नहीं कि आप अपनी majority की बिना पर किसी भी गलत बात को हाऊस से पास करवा सकते हैं। आपके पास 'Ayes' कहने वाले बहुत मैम्बर हैं। मगर Opposition का यह फर्ज है कि हाऊस को, मुल्क को हर गलत बात से खबरदार करे कि यह चीज़ खतरनाक है और इस तरमीम में नुकसान दिखाई देता है। अब तरमीम यह है कि अगर गवर्नमेंट को पता चल जाए कि हरिजनों की आबादी के आदादोशुमार गलत हैं तो नामजदगी होगी। अगर गलती हो तो ऐसा करने वाले को सज़ा दी जानी चाहिये मगर वह न करके अपना ही मतलब पूरा किया जा रहा है कि वज़ीर साहिब को इस्तिथार मिल जाए कि अपनी ही मर्जी के लोगों को पंचायतों में नामजद कर सकें। असूल और कानून का ख्याल नहीं। यह चीज़ गलत है।

दूसरे हमें इस बात पर हैरानी होती है कि किसी गांव में population का basis क्या लिया जा रहा है। आम तौर पर Census को ऐसी बातों के लिये basis लेते हैं। आखिर इसी पर elections होती है और इन्हें कोई पटवारी तो नहीं बनाता। अगर गिनती में कोई एक आध गलती रह भी जाती है तो भी सरकार को यह हक नहीं होना चाहिये कि वह हरिजनों की आजादी का फंसला गलत तरीके पर करे। किसी की भी satisfaction, Census की figures पर ही हो सकती है और अगर गवर्नमेंट कह दे कि Census गलत है तो यह बड़ी परेशानकून बात है। मगर Census में गलती का इमकान बहुत कम है और अगर

इस तरह Census को harijan population का basis मान लिया जाए तो गवर्नमेंट को हरिजनों की नुमायंदगी को nomination से पूरा करने का मौका नहीं मिलेगा ।

दूसरी जो थानों की बजाए इलाके के मुकरर किए जाने वाली बात है उस पर मुझे कोई एतराज नहीं और न ही किसी और को होगा । मगर जो नुमायंदगी के असूल को दाखिल किया जा रहा है, कि फलां २ आदमी को nominate करते हैं, यह एक असूली तौर पर और असली तौर पर गलत बात है और मैं इस की पूरे जोर के साथ मुखालफत करता हूँ ।

श्री रिजक राम (राय) : साहिबे सदर, जहां तक कानून का ताल्लुक है मैं कह सकता हूँ कि जो तरमीम पेश की गई है वह बिल्कुल कानून के मुताबिक है और उस में कोई खामी नहीं । तरमीम यह है कि अगर किसी पंचायत के हलके की हरिजन आबादी के जो आबादांशुमार हैं उन के मुताबिक गवर्नमेंट को पता चल जाए कि वह गलत है-फिर वह चाहे किसी वजह से गलत हों और उसी हिसाब से पंचायत में हरिजनों की नुमायंदगी कम हो तो उस की कमी को पूरा करने के लिये और हरिजनों को उनका हक दिलाने के लिये गवर्नमेंट और पंचों को नामजद कर सकेगी । मैं समझता हूँ कि नुमायंदगी को पूरा करने में किसी को कोई एतराज नहीं होना चाहिए । जहां तक नामजदगी का ताल्लुक है इस का misuse नहीं होगा । फिर एतराज किया गया कि आबादी में गलती कैसे हो सकती है । Census तैयार होता है Electoral Rolls बनते हैं, और जब यह सब कुछ गवर्नमेंट तैयार करवाती है तो गलती कहां हो सकती है ? सवाल इस बात का नहीं कि गलती हो सकती है या नहीं बल्कि बात यह है कि अगर यह साबित हो जाए कि गलती हुई है और वाकई आबादी में कुछ फर्क है तो नामजदगी होगी, वरना नहीं होगी । इस बारे में मिसालें मौजूद हैं । सोनीपत तहसील में ही ऐसा हुआ । Elections के दिनों में पता चला कि एक गांव का record गलत है । दरखास्तें दी गईं । तहकीकात हुई और यह साबित हुआ कि वाकई record में हरिजनों की आबादी कम दिखाई गई है । आखिर में अगर कहीं गलती साबित हो जाए तो क्या ऐसी जगह पर जहां कि single constituency हो, एक community को representation के हक से माह्रूम कर दिया जाये ? यह तो बड़ी भारी बे-इनसाफी होगी । तो इस बे-इनसाफी को दूर करने के लिये क्या फिर से elections कराई जाएं और सारा खर्च और इन्तजाम एक बार फिर से किया जाए ? क्या यह बेहतर न होगा कि इस बे-इनसाफी को दूर करने के लिए गवर्नमेंट किसी को नामजद कर दे । इस से कौनसा पहाड़ टूटता है । फिर किस वजह से इस की मुखालफत की जाती है ? Members के नोटिस में यह चीज आई होगी कि ऐसी गलतियां कई गांवों में हुई हैं । ऐसी जगह पर एक community को अपने हक से माह्रूम तो नहीं करना चाहिए । Election में खर्च और दूसरे झंझट बहुत हैं और नामजदगी के सिवा और कोई तरीका नहीं जिस से कि community को इस का हक दिलाया जा सके । मैं समझता हूँ कि ऐसी सूरत में पंचायतों में नामजदगी करना कोई बुराई नहीं और इस में कोई बेकायदगी नहीं । इस लिए इस तरमीम की मुखालफत करने का कोई फायदा नहीं ।

श्री श्री चंद (बहादुरगढ़) : साहबों सदर, दरअसल मुझे तो अब यह मालूम होता है कि District Boards के elections अब नज़दीक आ रहे हैं और सरकार ग़लबन यह elections पंचायतों की माफ़ी करवाना चाहती है। अब सरकार को elections जीतने की फ़िक्र है। गवर्नमेंट यह चाहती है कि इस बिल को पास करवा कर पंजाब की हरेक पंचायत में दो दो या तीन तीन मੈम्बर nominate कर दे ताकि elections में कामयाबी हो। नहीं तो जब elections होती हैं तो पहले rolls तैयार होते हैं। और फिर एतराज होते हैं उस में यह कहा जाता है कि इस में कुछ खामियां रह गई हैं और साबत भी कर दिया जाता है लेकिन कितने elections इस तरह से *null and void* हो जाते हैं। अब सरकार को ख़तरा है कि census ग़लत है और उन के सम्बन्ध में जो figures दी गई हैं वह ग़लत हैं। अब सरकार यह जानना चाहती है कि गांवों में scheduled castes की तादाद क्या है। गवर्नमेंट कहती है कि census की तहकीकात कराई जाएगी और अगर census की figures को ग़लत पाया गया तो मੈम्बर नामज़द कर दिये जाएंगे। पर सरकार का यह तरीका ग़लत है। मैं तो कांग्रेस से अपील करूंगा कि वह इस मस्य़ा को बदनाम न करें। जिस बात का यह पिछले ३० साल से डंडोरा पीटते चले आ रहे हैं उस को तो पूरा करें। अगर यह बिल न लाया गया तो क्या ग़ज़ब हो जायगा। कांग्रेस के इस असूल को तो पूरा करो कि nominations का तरीका बिल्कुल ख़त्म कर दिया जाए। आप तो कांग्रेस के असूलों को पाओं तले रौंदते चले जा रहे हैं।

इस बिल को लाने का मतलब यही है कि इस तरीके से पंचायतों में 200—400 आदमी अपनी मर्ज़ी के दाख़िल कर दिए जाएंगे। और गवर्नमेंट को तसल्ली हो जाए कि जब उम्मत पड़े अपनी majority बना ली जाए। अगर किसी पंचायत में पांच मੈम्बर हैं और तीन गवर्नमेंट के खिलाफ़ हैं तो सरकार nomination के ज़रिए उस पंचायत में अपनी majority कायम कर सकती है। आप तीस साल से कहते चले आ रहे हैं कि हम nomination के system को ख़त्म कर देंगे क्योंकि नामज़द मੈम्बर गवर्नमेंट के पिटू होते हैं। इन्हीं असूलों पर कांग्रेस लड़ रही है, और कहती है कि nomination नहीं होगा। हमने nomination को ख़त्म कर दिया है। पंचायतें कायम कर दी हैं और उन्हें पूरा इख़्तियार दे दिया है। हमारे चीफ़ मिनिस्टर साहिब ने घंटा भर उछल उछल कर तकरीर की कि हम लोगों के हाथों में power दे रहे हैं। पंचायतों को सब powers और इख़्तियार दे दिये हैं और अपने पास कोई powers और authority नहीं रख रहे। अब उन दिये गये इख़्तियारों को वापस क्यों लिया जा रहा है? अब भी आपने सरकारी पिटू एक या दूसरी शकल में रखे हुए हैं। डिप्टी कमिश्नर मौजूद हैं फिर nomination की क्या ज़रूरत है। अगर ऐसा ही करना है तो डींग मारने से क्या हासिल कि हमने पंचायतों को पूरे तौर पर powers दे दी हैं। इस लिये मैं इस बिल के पेश किये जाने की मुख़ालिफ़त करता हूँ।

प्रोफेसर मोता सिंह आनन्दपुरी (आदमपुर) : Gram Panchayat Act के पास करने के बाद हर एक को उम्मीद हो गई थी कि अब पंजाब में powers decentralize होने लगी हैं। लेकिन यहां तो decentralize के मायने ही और लिये जाते हैं। इन की dictionary में decentralization के मायने over centralisation हैं। क्यों इसलिए कि आप कहते थे कि power को decentralise करने के लिए पंचायतें बना दी गई हैं। अब गांव की units republics बन गई हैं। पंचायतों के बन जाने के बाद गवर्नमेंट को फिक्र है कि इस तरह से गवर्नमेंट अपनी ताकत खो बैठेगी। इस ताकत को फिर से हासिल करने के लिए गवर्नमेंट ने adviser मुकर्रर कर दिये हैं। गवर्नमेंट को adviser मुकर्रर करने की क्या जरूरत थी। आपके पास तो और भी अफसरान हैं जो पंचायतों को हिदायतें जारी करते हैं। वह वक्त पर directive भी देते हैं, Inspection करते हैं। फिर अगर adviser मुकर्रर कर दिये गए हैं तो इन्हें पंचायतों के अन्दर जब कि पंचायतें काम कर रही होती हैं क्यों जाने दिया जाता है? इन के वहां बैठे रहने से पंचायतों का काम पूरी आजादी से नहीं चल सकता। देहाती लोग जब इन अफसरों को पंचायतों में बैठे हुए देखते हैं तो वह डरते हैं कि अगर कोई बात उनकी मर्जी के खिलाफ कह दी तो वह इन्हें पंचायतों से निकलवा देंगे।

आज हम क्या देखते हैं कि पंचायतों के 80 फीसदी चुने हुए मंत्रियों को निकाला जा रहा है। आप ने डिप्टी कमिश्नरों को पहले ही भारी ताकत दे रखी है जब Director को पहले से ही काफी इस्तिथारत दिये गए हैं तो फिर अब नामजदगी का तरीका क्यों लागू किया जा रहा है। मैं समझता हूं कि सरकार फिर अपने तमाम इस्तिथारत सारी पंचायतों से वापस लेना चाहती है। यह nominations का तरीका लोक राज्य के विरुद्ध है। अगर सरकार democratic system को कायम करना चाहती है तो उसे चाहिए कि वह ऐसे बिल हाऊस के सामने पेश न करे। आप तो 1893 के हालात इस वक्त पैदा करना चाहते हैं। Local-Self Government को कायम रखने के लिए nomination का तरीका बिल्कुल out of date है और nominations के दस्तूर को खत्म करने के लिये ही तो कांग्रेस हमेशा संघर्ष करती आई है। इस लिए इस बिल को पेश करने से पहले इस पर दुबारा गौर किया जाए और ऐसा बिल लाया जाए जो कि democratic अर्थों के मुताबिक हो।

मुख्य मंत्री (श्री भीम सेन सन्धर) : स्पीकर साहिब, मैं यह अर्ज करना चाहता हूं कि सरकार खाहमखाह किसी पंचायत के मामले में दखल नहीं देना चाहती। पंचायतों को अपना काम करने में पूरी आजादी है। पहले rolls तैयार होते हैं फिर उन के आधार पर एतराज होते हैं तो बाद में जब Opposition की तरफ से और इधर के बैचों से कहा जाता है कि फुलां जगह पर representation कम है और जब हमें कोशिश करने के बाद भी तसल्ली न हो कि किसी खास जगह पर हरिजनों की नुमायंदगी पूरी है तो यह तरीका इस्तिथार करना पड़ता है। अगर census में या census के basis में कोई गलती रह गई हो और इस गलती के नतीजे से representation में कमी हो गई हो तो उसको पूरा करने के लिये nomination की

[मुख्य मंत्री]

जाएगी। यहां पर मैं एक offer आप को दे देना चाहता हूं कि जब कभी कोई ऐसी representation में कमी की बात गवर्नमेंट के नोटिस में आएगी कि किसी जगह population के basis पर गलत नुमायंदगी की गई है तो उस की एक नकल Leader of the Opposition को भी भेज दी जाएगी ताकि उन्हें पता लग सके कि किसी पंचायत में nomination क्यों की जा रही है।

पंडित श्री राम शर्मा: On a point of information, Sir, मैं यह पूछना चाहता हूं कि क्या census के अन्दर कोई गलती रह गई है या figures के बारे में जो रिपोर्ट दी गई है वह गलत है?

मुख्य मंत्री: गवर्नमेंट को यह बात कहां पसन्द हो सकती है कि हर शरस आए और कहें कि यह basis गलत है वह गलत है वगैरा। लेकिन इनसाफ का क्या किया जाए? जहां कोई कमी रह जाए वहां इनसाफ तो करना ही पड़ेगा। अब उस का तरीका क्या है? जहां जहां ऐसी गलती नजर आए वहां सारे election को भी रद्द नहीं किया जा सकता इस से भी बड़ी तकलीफ होगी। इस लिये nomination ही ऐसे हालात में सब से अच्छा तरीका रह जाता है। हमें nomination का नाम सुनते ही घबरा जाना मुनासिब नहीं। Central Government ने भी बाज़ खास लोगों के लिये खास हालात में nomination का तरीका रखा हुआ है। विदेशी हुकूमत की nomination और चीज़ थी उस का मकसद कुछ और होता था और वह हमारे मुन्क के खिलाफ जाती थी। इस लिये हम उस की मुखालिफत करते थे मगर यहां यह बात नहीं है। और फिर मैंने तो offer पेश कर दी है कि इस किस्म का जो case आयेगा उस की copy हम Leader of the Opposition को भेज दिया करेंगे ताकि वह भी देख लें कि Government जो कुछ कर रही है वह ठीक है या नहीं।

यह तो ठीक है कि आप हमें जिस किस्म के चशमे से देखेंगे हम वैसे ही नजर आयेंगे मैं आप से सिर्फ यह कहना चाहता हूं कि हम बुरे ही सही पर इतने बुरे भी नहीं हैं कि ऐसे मामलों में गोल माल करें या मुनासिब मौके पर move ही नहीं पस जैसा कि मैं ने कहा है मेरी offer मौजूद है। आप इसे स्वीकार करें। इस का मतलब यह है कि आप की इतिलाह के बगैर कोई काम न होगा।

Mr. Speaker : Question is—

That the Punjab Gram Panchayat (Second Amendment) Bill, be taken into consideration at once.

The motion was carried.

Mr. Speaker : Now the House will proceed to consider the Bill clause by clause.

CLAUSE 2.

Mr. Speaker : I call upon Shri Maru Singh Malik to move his amendments to Clause 2.

Shri Maru Singh Malik (Sampla) : Sir, I beg to move—

In the proposed proviso, lines 1-2—
for “Government is of the opinion” substitute “on reference to Census record it is found”.

In the proposed proviso, line 9—

for “nominate” substitute “order the election of”.

In the proposed proviso, line 11—

between the words “panches” and “and” insert “to be held”.

In the proposed proviso, line 12—

for “nomination” substitute “election”.

At the end of the proposed proviso,

add “The number of the Panches so increased and their term of office shall cease to have any effect after the next election of the Gram Panchayat concerned, when the number of Panches of that Gram Panchayat shall be determined afresh under sub-section (2) of this Section.”

स्पीकर साहिब, ग्राम पंचायत एक्ट, सन् 1953 में पास हुआ था। इस पर एक amendment तो पिछले Budget Session में आई थी और दूसरा Amending Bill यह अब आ रहा है। इसकी clause 2 में एक खामी रह गई है, इस लिये अगर इसे ऐसे ही पास कर दिया गया तो मुम्बिन है अगले Session में फिर एक और amendment लानी पड़े।

एक बात तो यही है कि इसमें यह नहीं बताया गया कि nominated पंचों का tenure of office कितना होगा।

अध्यक्ष महोदय : आपकी पांच amendments हैं। सब पर अभी बोल लीजिये।

श्री माड़ सिंह मलिक : इस में यह कहीं नहीं बताया गया कि वह कितनी देर रहेंगे। मेरी तजवीज यह है कि उन का tenure अगले elections तक रखा जाए।

दूसरी बात यह है कि sub-section (2) के मातेहत जो नम्बर determine किया गया हो उसे increase करने के बाद फिर अगले election पर वह बढौतरी खत्म हो जाए और नम्बर नये सिरे से determine किया जाए।

तीसरी गुज़ारिश मेरी यह है कि नम्बर बढाना हो तो nomination से-न बढ़ाया जाए बल्कि election होनी चाहिए। एक दोस्त ने फरमाया है कि election कराने की सूरत में सब record और electoral rolls वगैरा दोबारा तैयार करने पड़ेंगे और सब झमेला करना पड़ेगा। मेरी अर्ज़ यह है कि ऐसा तो हर bye-election पर करना पड़ता है। अगर कोई पंच छोड़ जाये या हटा दिया जाए या मर जाए तो आप क्या करेंगे। दोबारा election ही करावेंगे। फिर यहां भी nomination की जगह election रखने में क्या हर्ज है ?

[ਸ਼੍ਰੀ ਸਾਭੂ ਸਿੰਹ ਸਲਿਕ]

इस के बाद clause के शुरू में लिखा है कि “ If Government is of the opinion” इस के बारे में मैंने अर्ज किया है कि जहां सरदर गुमारी की figures से मालूम हो कि हरिजनों को आवादी के मुताबिक नुमाइंदगी नहीं मिली वहां elections करा लिये जाएं । nomination मुनासिब नहीं । यह तजवीज़ें सीधी सादी हैं । इन से खामियां दूर हो जाएंगी ।

Mr. Speaker : Motion moved—

In the proposed proviso, lines 1-2—

for “Government is of the opinion” substitute “on reference to Census Record it is found”.

In the proposed proviso, line 9—

for “nominate” substitute “order the election of”.

In the proposed proviso, line 11—

between the words “panches” and “and” insert “to be held”.

In the proposed proviso, line 12,—

for “nomination” substitute “election”.

At the end of the proposed proviso,

add “The number of the Panches so increased and their term of office shall cease to have any effect after the next election of the Gram Panchayat concerned when the number of Panches of that Gram Panchayat shall be determined afresh under sub-section (2) of this Section.

Sardar Darshan Singh (Tarn Taran) : Sir, I beg to move—

In the proposed proviso, line 9,—

for “may nominate”, substitute “shall elect”.

In the proposed proviso, line 12,—

for “nomination,” substitute “election”.

ਜਦ ਪਚਾਇਤਾਂ ਦੀਆਂ elections ਹੋਣੀਆਂ ਸਨ ਤਾਂ ਅਸੀਂ Assembly ਵਿਚ ਇਹ ਗਲ ਦਸਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤੀ ਸੀ ਕਿ ਹਰੀਜਨਾਂ ਨੂੰ ਆਬਾਦੀ ਦੇ ਲਿਹਾਜ਼ ਨਾਲ ਨੁਮਾਇੰਦਗ ਮਿਲਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ । ਪਰ elections ਵੋਟੀ ਵੋਟੀ ਕਰ ਦੇਣ ਦੇ ਕਾਰਨ ਇਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਕੁਝ ਖਾਮੀਆਂ ਰਹਿ ਗਈਆਂ ਹਨ ਤੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਅਸਰ ਗਰੀਬ ਹਰੀਜਨਾਂ ਤੇ ਪਿਆ ਹੈ । ਇਨ੍ਹਾਂ ਖਾਮੀਆਂ ਦੇ ਦੋ ਕਾਰਨ ਹਨ । ਇਕ ਤਾਂ ਇਹ ਕਿ ਹਰੀਜਨਾਂ ਨੇ ਰਿਡਿੰ ਦੇ ਨੰਬਰਦਾਰਾਂ ਕੋਲੋਂ certificate ਲੈਣੇ ਸਨ । ਉਹ certificate ਨਹੀਂ ਸਨ ਦਿੰਦੇ । ਦੂਜਾ ਕਾਰਨ ਇਹ ਸੀ ਕਿ ਉਲਹੇ ਟੈਕਸ ਦੀ ਬਿਨਾਂ ਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਕਾਰਜ reject ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਰਹੇ ਹਨ । ਇਹ ਚੀਜ਼ ਅਸੀਂ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਦਸਦੇ ਰਹੇ ਹਾਂ ।

ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ. ਇਸ ਗਲ ਤੋਂ ਕੋਈ ਇਨਕਾਰ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦਾ ਕਿ ਹਰੀਜਨਾਂ ਨੂੰ ਨੁਮਾਇੰਦਗੀ ਮਿਲਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ ਪਰ ਨਾਮਜ਼ਦਗੀ ਦੇ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਨੁਮਾਇੰਦਗੀ ਦੇਣਾ ਠੀਕ ਨਹੀਂ। ਹੁਣ ਸਕਦਾ ਹੈ ਕਿ ਕੁਝ ਹਰੀਜਨ ਭਰਾ ਖੁਸ਼ ਹੋਣ ਕਿ ਇਹ ਸਭ ਕੁਝ ਹਰੀਜਨਾਂ ਦੀ ਭਲਾਈ ਲਈ ਕੀਤਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ ਅਮਲ ਵਿਚ ਹਰੀਜਨਾਂ ਨੂੰ ਨੁਮਾਇੰਦਗੀ ਨਹੀਂ ਮਿਲੇਗੀ। ਨਾਮਜ਼ਦ ਕੌਣ ਹੋਣਗੇ? ਨਾਮਜ਼ਦ ਉਹ ਲੋਕ ਹੋਣਗੇ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਉੱਤੇ ਪੰਚਾਇਤ ਅਫਸਰ, ਥਾਣੇਦਾਰ ਤੇ ਹੋਰ ਅਫਸਰ ਖੁਸ਼ ਹੋਣਗੇ। ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਨੁਮਾਇੰਦਿਆਂ ਲਈ ਕੋਈ ਥਾਂ ਨਹੀਂ ਹੋਵੇਗੀ। ਮੇਰੀ amendment ਦਾ ਮਤਲਬ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਨਾਮਜ਼ਦਗੀ ਦੀ ਥਾਂ election ਕੀਤੀ ਜਾਵੇ। ਇਹ ਵੀ ਕਿਹਾ ਗਿਆ ਹੈ ਕਿ election ਉੱਤੇ ਖਰਚ ਬਹੁਤ ਹੋਵੇਗਾ। ਪਰ ਜ਼ਿਆਦਾ ਖਰਚ ਕਰਨ ਦੀ ਕੀ ਲੋੜ ਹੈ। ਸਾਰੇ ਪਿੰਡ ਵਿਚ election ਕਰਾਣ ਦੀ ਕੋਈ ਜ਼ਰੂਰਤ ਨਹੀਂ। ਸਿਰਫ Scheduled Castes ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਇਕੱਠਾ ਕਰਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚੋਂ ਚੋਣ ਕਰ ਲੈਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਹਰੀਜਨਾਂ ਨੂੰ ਨੁਮਾਇੰਦਗੀ ਦੇਣ ਦਾ ਇਹੋ ਇਕ ਠੀਕ ਤਰੀਕਾ ਹੈ। ਜੇ ਨਾਮਜ਼ਦਗੀ ਕੀਤੀ ਗਈ ਤਾਂ ਉਹ ਲੋਕ ਨਾਮਜ਼ਦ ਹੋਣਗੇ ਜਿਹੜੇ ਅਫਸਰਾਂ ਦੇ ਇਸ਼ਾਰੇ ਉੱਤੇ ਚਲਣਗੇ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਹਾਲਤਾਂ ਵਿਚ ਮੈਂ ਅਰਜ਼ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਜੇ ਹਰੀਜਨਾਂ ਨੂੰ ਨੁਮਾਇੰਦਗੀ ਦੇਣੀ ਹੈ ਤਾਂ ਮੇਰੀ amendment ਨੂੰ ਮੰਨ ਲਿਆ ਜਾਵੇ।

Mr. Speaker : Motion moved -

In the proposed proviso, line 9,—

for “may nominate”, substitute “shall elect”.

In the proposed proviso, line 12—

for “nomination”, substitute “election”.

These two amendments and those that have been moved by Shri Maru Singh Malik will be discussed together.

ਪੰਡਿਤ ਭੀ ਰਾਮ ਸ਼ਰਮਾ (ਸੋਨੀਪਤ) : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਜੋ ਤਾਜ਼ੀਮ ਮੇਰੇ ਦੋਸਤ ਸ਼੍ਰੀ ਮਾਰੂ ਸਿੰਘ ਮਲਿਕ ਨੇ ਪੇਸ਼ ਕੀ ਹੈ ਮੈਂ ਉਸ ਦੀ ਤਾਇਦ ਕਰਦਾ ਹਾਂ। ਬਾਤ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਇਸ clause ਮੈਂ ਜੋ ਦੋ ਲਫਜ਼ ਆਏ ਹਨ basis ਆਰ opinion ਇਨਮੈਂ ਗੜਬੜ ਕੀ ਗੁੰਝਾਯਾ ਹੈ। ਇਹ ਠੀਕ ਹੈ ਕਿ ਮੇਰੇ ਦਰਿਆਫਤ ਕਰਨੇ ਪਰ Chief Minister ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਬਤਲਾਇਆ ਹੈ ਕਿ basis of population ਦਾ ਮਤਲਬ ਇਹ ਨ ਹੋਗਾ ਕਿ census ਗਲਤ ਹੈ ਜਾਂ ਸਹੀ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਵਿਚਾਰਨੁਸਾਰ ਇਸ ਦਾ ਮਤਲਬ ਹੈ ਕਿ ਜਿਸ ਬਿਨਾਂ ਪਰ census determine ਕੀ ਗਈ ਹੈ ਉਹ ਗਲਤ ਹੈ ਜਾਂ ਸਹੀ। ਪਰੰਤੂ ਮੈਂ ਕਹਿੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਹਰ ਸੀਕਾ ਪਰ ਜਦ ਅਫਸਰਾਂ ਨੇ ਫ਼ੈਸਲਾ ਕਰਨਾ ਹੋਵੇਗਾ ਉਨ੍ਹਾਂ ਸਲਾਹ ਦੇਣੇ ਦੇ ਲਿਖੇ ਨੂੰ Chief Minister ਸਾਹਿਬ ਹੋਣਗੇ ਆਰ ਨ ਹੀ Opposition। ਉਹੋਂ ਤੋਂ ਲਫਜ਼ਾਂ ਦਾ ਮਤਲਬ ਲੈਣਗੇ। clause ਮੈਂ ਲਿਖਿਆ ਹੈ—

Provided further that if Government is of the opinion that the basis of population adopted for the purpose of determining the representation of members belonging to the scheduled castes for any particular Gram Panchayat is incorrect.....

ਇਸ ਦਾ ਮਤਲਬ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਆਗਰ basis incorrect ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਹਰਿਜਨਾਂ ਆਰ ਗੈਰ-ਹਰਿਜਨਾਂ ਦਾ ਤਨਾਸੂਬ ਠੀਕ ਨਹੀਂ ਰਹੇਗਾ। census ਦੇ ਬਗੈਰ ਆਰ ਕੋਈ ਚੀਜ਼ ਨਹੀਂ ਜਿਸ ਤੋਂ ਇਸ

[पंडित श्री राम शर्मा]

तनासुब का पता चल सके। जब ही सरकारी अफसरों की राय में census गलत ख्याल की जायेगी वे कह देंगे कि basis of population गलत है। जहां वे देखेंगे कि दो हरिजन elect होने चाहये थे परन्तु हुआ एक है वहां एक आदमी नामजद कर देंगे। उन के लिये तो basis बना बनाया census ही है। Census गलत हो सकता है। फर्ज कीजिये कि census में हरिजनों और गैर-हरिजनों का तनासुब १:२ है। सरकारी अफसरों के ख्याल में यह तनासुब ३:४ है। वे अमूमन इस फ़ैसले पर पहुंचेंगे कि basis of population गलत है यानी census गलत है। और फिर आबादी में तो थोड़ी बहुत कमी बेशी होती ही रहती है। कभी दो चार पैदा हो गये और कभी दो चार मर गये। basis of population मुसल्लमा तौर पर census ही ख्याल किया जा सकता है। हमारी Assemblies और Councils वगैरा की वोटों का इन्हें इस्तेमाल इमी पर तो है। यह कह देना कि census गलत है और इस लिये तनासुब पूरा करना है अन्धेरे गर्दी के बगैर कुछ नहीं। यह तो थड़ेबन्दी की बात है। और अगर ऐसा नहीं तो कम से कम यह तो जरूर है कि basis of population का मतलब बहुत vague है।

दूसरी बात यह है कि बिल में लिखा है—

“Provided further that if the Government is of the opinion.”

मुझे opinion के लफ्ज़ पर एतराज़ है। सरकार की opinion पर भरोसा नहीं किया जा सकता और न ही इनसाफ़ की उम्मीद की जा सकती है। मैं यह बात केवल इस सरकार के बारे ही नहीं कहता। तमाम Party Governments में यही होता है।

जब भी गवर्नमेंट ने अपने हाथ में वसीह इस्तिथारात लिये हैं उन्होंने तकरीरों में हमेशा यही यकीन दिलाया कि यह इस्तिथारात बिल्कुल इस्तेमाल नहीं होंगे। लेकिन होता है इस के बिल्कुल बरअक्स। आज जब हमारे मंत्री यह कह रहे थे कि ऐसे इस्तिथारात को इस्तेमाल करने की कोई गुंजाइश नहीं तो इन इलफ़ाज़ से हू वहू मुझे सर सिकन्दर हयात खां याद आ रहे थे वह भी बात हू वहू इमी लहजे में किया करते थे। इस लिये कांग्रेस सरकार हो या और कोई गवर्नमेंट हमारी यही राये है कि जो कहा जाता है उस पर अमल नहीं किया जाता। मुझे इस मिल मिल में ज्यादा तफ़सील में जाने की जरूरत नहीं। मैं कदम कदम पर, बात बात पर, आईटम आईटम पर यह बात साबत कर सकता हूं कि गवर्नमेंट ने जब कभी वसीह इस्तिथारात हासिल किये तो उंगली पकड़ने के बहाने लोगों का दामन पकड़ लिया। गवर्नमेंट census वगैरा की परवाह नहीं करेगी और जैसे ही उसे suit करेगा वैसे ही कारवाई वह करेगी और उन की मर्जी बाज़ आकात party considerations की बिना पर खूब जोर शोर से चलेगी। जैसे आप देखेंगे कि पंचायतों की election की जाये तो कोई दिन नहीं होता जब पंच suspend न होते हों। मैं मानता हूं कि ऐसी कारवाई तब ही की जाती होगी जब वह वाकई suspend होने के काबिल होते होंगे मगर अगर ऐसी रौ चल पड़े और रोज कोई न कोई पंच मुअत्तल हो जाये तो हर एक को फिकर पड़ जाता है कि मैं safe नहीं हूं। यह पंच पंचायतों की आम राये से जुने जाते हैं। स्पीकर साहिब, अगर गवर्नमेंट को इस्तिथारा दे दिये जायें तो आप देखेंगे कि दो तिहाई पंच जरूर suspend हो जायेंगे। मैं

पूछता हूं कि क्या वह पंच इस लिये suspend किये गये कि पुलिस ने उन पर मुकद्दमे चलाये थे ? मैं नहीं कहता कि वह गलती की वजह से suspend किये गये । चाकई वह suspend होने के काबिल होंगे लेकिन जिस तरीके से काम हो रहा है उस की बिना पर मैं कहता हूं कि इस तरह से गवर्नमेंट की opinion basis of population के मुताबिक बनेगी । और फिर गवर्नमेंट अपनी मर्जी के मुताबिक पंच nominate कर देगी । अगर कोई हरिजन मੈम्बर हट जाये या मर जाये तब भी तो गवर्नमेंट election कराती है क्योंकि पंचायत ऐक्ट में election कराने का provision है । इस लिये गवर्नमेंट को चाहिये कि वह population के लिहाज से election करा दे । इस बात को आप मानिये कि opinion भी census के basis पर form करेंगे और census को basis समझ कर इस बलाज को correct कीजिये कि बजाये nominate करने के elect करेंगे तो इस के बाद कोई शिकायत नहीं रहती । मगर मेरा ख्याल है कि गवर्नमेंट इस बात पर रजामंद नहीं होगी । अगर इसी तरह से बिल पास किया गया तो बिल का मकसद मफ़कूद हो जायेगा । इस लिये मैं गवर्नमेंट से गुजारिश करूंगा कि वह इस provision को बिल्कुल definite बनाये और basis, census और nomination इन तीन चीजों को बिल्कुल clear किया जाये । मैं समझता हूं कि यह political game है और यह सब कुछ अपने interest के लिये किया जा रहा है ।

सिचाई मंत्री (चौधरी लहरी सिंह) : साहिबे सदर ! इस amendment से कुछ माननीय मेम्बरों के दिलों में खदशात पैदा हो गये हैं और उन के ख्याल के मुताबिक डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की election होनी है इस लिये उसे मुख रखते हुए हम पंचों की तादाद बढ़ा कर अपनी पोजीशन मजबूत करना चाहते हैं । दूसरे यह जिक्र किया गया था कि गवर्नमेंट दिन-ब-दिन ज़्यादा इख्तियार लेने के बाद पंचायतों को कुचलना चाहती है । मैं उन्हें बताना चाहता हूं कि यह बहुत simple मामला है । Voters list हर साल तैयार होती है लेकिन इस में जात का जिक्र नहीं होता और यह पता नहीं लग सकता कि कौन हरिजन है । पंचायत ऐक्ट में यह प्रबन्ध किया गया है कि हरिजनों की seats population के आधार पर reserve होंगी । voters' list में और मर्दम-शुमारी की list में जात बरादरी का जिक्र नहीं हाता । अगर voters' list में जात बरादरी दर्ज हो तो कोई मुश्किल दरपेश न हो । अगर voters list में जात बरादरी न हो तो उन की population कैसे determine की जाये । मर्दम शुमारी की list जो होती है उस में भी जात बरादरी नहीं लिखी जाती इस के इलावा village register होता है जिसे पटवारी तैयार करता है और वह 10 साल के बाद तैयार होता है । अगर दस साल के अरसे में हरिजनों की population बढ़ कर दुगनी हो जाती है तो हमें कैसे पता लग सकता है कि किसी गांव में scheduled castes लोगों की कितनी आबादी है । Village register हर साल तैयार नहीं होता वह 10 साल के बाद तैयार होता है । अगर इस अरसे के अंदर आबादी बढ़ जाती हों तो बताईए इस का क्या

(सिचाई मंत्री)

इलाज है। मैं नहीं समझता कि इस amending measure में क्या खराबी है। Village register तो 10 साल के बाद तैयार होता है लेकिन act यह provide करता है कि population on the date when election is held or when the panchayat list is prepared। अगर गवर्नमेंट के पास शिकायतें आयें जिससे साबत हो कि बाकई आबादी बढ़ गई है तो उस वक्त सिवाए इसके गवर्नमेंट additional members को nominate कर दे और क्या हो सकता है। मेरे दोस्त कहते हैं कि election करवाएं। क्या उन का यह मतलब है कि फिर सारी पंचायतों की elections हों? अगर 6 मैम्बर additional रखने हों तो सारी पंचायत की दोबारा election कराई जायें।

पंडित श्री राम शर्मा: क्या by-elections नहीं होती ?

सिचाई मंत्री: जो bye-elections होती है वह तो एक मैम्बर की होती है, मगर जहां गलती पाई जाये कि scheduled castes का representation ठीक नहीं तो मेरे दोस्त कहते हैं कि सारी पंचायत की election होनी चाहिये। जब कसूर भी किसी का न हों क्योंकि Village register 10 साल के बाद तैयार होता है तो वहां क्या किया जाये।

सो यह circumstances है जिन में यह बिल लाया गया है। इस में किसी की गलती नहीं है।

Mr. Speaker : I would request Pandit Shri Ram Sharma to sit properly.

Pandit Shri Ram Sharma : I think, I am not sitting improperly.

अध्यक्ष महोदय: आप सीट पर घुटने उठा कर बैठे थे। मैं पहले भी कह चुका हूं कि माननीय मैम्बर हाऊस में ठीक तरह से बैठा करें।

सिचाई मंत्री: हमारी Constitution में यह provided है कि population के basis पर हरिजनों के लिये seats reserve की जाएं। हरिजनों की आबादी का न तो voters' list से पता लगता है और न ही village register से क्योंकि वह दस साल पहले तैयार किये गए थे।

Sardar Ajmer Singh Sir, it is all repetition.

सिचाई मंत्री: I am repeating my arguments, because you don't follow them easily। मैं कह रहा था कि village register दस साल पहले तैयार किये गए थे। उस वक्त गांव में हरिजनों की आबादी का ठीक पता नहीं था। ऐसे cases काफी तादाद में हमारे notice में आए हैं जिन में हरिजनों को पंचायतों में उन की आबादी के लिहाज से कम representation मिली

ਹੈ। ਅਕ ਤਨ ਕੀ ਪੁਰੀ ਨੁਮਾਇੰਦਗੀ ਦੇਨੇ ਕੇ ਲਿਯੇ ਯਹ nomination ਕਾ ਪ੍ਰਬੰਧ ਕਿਆ ਗਯਾ ਹੈ। ਅਗਰ ਇਸ ਸਕਸ਼ਦ ਕੇ ਲਿਯੇ election ਹੋ ਤੋ ਫਿਰ ਸਾਰੀ ਪੰਚਾਯਤ ਕਾ election ਕਰਨਾ ਪਏਗਾ। ਏਸਾ ਕਰਨੇ ਸੇ ਕੜੀ difficulties ਪੈਦਾ ਹੋ ਜਾਯਗੀ। ਇਨ ਹਾਲਾਤ ਸੇ ਮੈਂ ਅਜ਼ ਕਰਤਾ ਹੂੰ ਕਿ ਯਹ ਬਿਲ ਠੀਕ ਹੈ ਐਰ ਯਹ ਰਸਮੀਸ ਸਨਜ਼ੂਰ ਕੀ ਜਾਨੀ ਚਾਹਿਯੇ।

ਸ੍ਰੀ ਵਧਾਵਾ ਰਾਮ (ਵਾਜ਼ਿਲਕਾ) : ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ, ਸਾਡੇ ਵਜ਼ੀਰ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਜਿਹੜੀ ਇਸ ਤਰਮੀਮੀ ਬਿਲ ਤੇ ਤਕਰੀਰ ਕੀਤੀ ਹੈ ਉਸ ਦਾ ਨਾਂ ਸਿਰ ਹੈ ਨਾਂ ਪੈਰ (ਹਾਸਾ) ਉਹ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਹਰੀਜਨਾਂ ਦੇ ਕੁਝ ਹਕ ਐਧਰ ਓਧਰ ਖਿੱਲਰ ਗਏ ਸਨ ਅਤੇ ਅਸੀਂ ਹੁਣ ਛਾੜ ਛੱਡ ਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਇਕੱਠਾ ਕਰਨ ਲੱਗੇ ਹਾਂ ਤਾਂ ਜੋ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਹਰੀਜਨਾਂ ਦੀ ਝੋਲੀ ਵਿਚ ਪਾਇਆ ਜਾਵੇ (ਹਾਸਾ ਅਸੀਂ ਕਹਿੰਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਜੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਆਬਾਦੀ ਤੋਂ ਘਟ ਨੁਮਾਇੰਦਗੀ ਮਿਲੀ ਹੈ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਵਧੇਰੀ ਨੁਮਾਇੰਦਗੀ ਦਿਉ। ਪਰ ਅਸਲ ਗਲ ਇਹ ਨਹੀਂ। ਜੇ ਤੁਸੀਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਇਕ ਬੰਦਾ ਜ਼ਿਆਦਾ ਲੈਣਾ ਹੈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਕਹੋ ਕਿ ਤੁਸੀਂ ਆਪਣਾ ਇਕ ਬੰਦਾ ਦੇ ਦਿਉ। ਪਰ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਹੀਂ ਹੋਣਾ। ਤੁਸੀਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਕਹਿੰਦੇ ਹੋ ਕਿ ਅਸੀਂ ਆਪਣਾ ਇਕ ਬੰਦਾ ਤੁਹਾਨੂੰ ਦਿੰਦੇ ਹਾਂ। ਇਹ ਗਲ ਤੁਸੀਂ ਹਰੀਜਨਾਂ ਦੇ ਫਾਇਦੇ ਲਈ ਨਹੀਂ ਕਰ ਰਹੇ। ਇਹ ਤੁਸੀਂ ਆਪਣਾ ਹੋਈ ਮਕਸਦ ਪੂਰਾ ਕਰਨ ਲਈ ਕਰ ਰਹੇ ਹੋ। ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕਿ ਮੈਂ ਪਹਿਲੇ ਕਹਿ ਚੁਕਾ ਹਾਂ ਚੋਧਰੀ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਜਿਹੜੀ ਤਕਰੀਰ ਕੀਤੀ ਹੈ ਉਸਦਾ ਨਾਂ ਸਿਰ ਹੈ ਨਾਂ ਪੈਰ (ਹਾਸਾ)। ਉਹ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਨਾਂ census ਰਿਪੋਰਟ ਤੋਂ ਅਤੇ ਨਾਂ village register ਤੋਂ ਹਰੀਜਨਾਂ ਦੀ ਗਿਣਤੀ ਦਾ ਪਤਾ ਲਗਦਾ ਹੈ।

ਸਿੱਚਾਈ ਸੰਤ੍ਰੀ : ਆਪ ਕੀ ਕਯਾ ਪਤਾ ਹੈ village register ਕਯਾ ਹੋਤਾ ਹੈ ?

ਸ੍ਰੀ ਵਧਾਵਾ ਰਾਮ : ਮੈਨੂੰ village register ਦਾ ਸਾਰਾ ਪਤਾ ਹੈ ਮੈਂ ਆਪ ਬਣਾਉਂਦਾ ਰਿਹਾ ਹਾਂ। ਬਾਕੀ ਇਹ ਇਤਫਾਕ ਦੀ ਗਲ ਹੈ ਕਿ ਤੁਹਾਨੂੰ ਮਿਨਿਸਟਰੀ ਮਿਲ ਗਈ ਹੈ ਇਸ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਤਾਂ ਤੁਹਾਨੂੰ ਦਫਾ 323 ਦਾ ਮੁਕਦਮਾ ਵੀ ਨਹੀਂ ਸੀ ਆਉਂਦਾ। (Cheers from the Opposition benches) (Intrusions).

ਅਧਯਕਸ਼ ਸਹੋਦਯ : ਇਸ ਰਾਹ ਦੀ ਕਾਨੂੰਨੀ ਕੀਜਿਯੇ।

ਸ੍ਰੀ ਵਧਾਵਾ ਰਾਮ : ਇਹ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ census report ਤੋਂ ਹਰੀਜਨਾਂ ਦੀ ਆਬਾਦੀ ਦਾ ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਲਗਦਾ। ਅੱਗਾ ਦੋੜ ਤੇ ਪਿੱਛਾ ਚੋੜ। ਤੁਸੀਂ ਆਪ ਹੀ ਤੇ ਕਿਹਾ ਸੀ ਕਿ census ਵਿਚ ਕਿਸੇ ਆਦਮੀ ਦੇ ਨਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਹਰੀਜਨ ਵਰਗੀ ਕੁਝ ਨ ਲਿਖੇ ਇਹ ਤੁਸੀਂ ਹੀ ਤੇ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਅਸੀਂ ਕਹਿੰਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਜੇ ਹਰੀਜਨਾਂ ਦੀ ਆਬਾਦੀ ਜ਼ਿਆਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਵਧੇਰੀ ਨੁਮਾਇੰਦਗੀ ਦਿਉ। ਪਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਦਿਉ, ਨਾਂ ਕਿ ਆਪ ਲੈ ਲਵੋ। ਜੇ ਹਕ ਦੇਣਾ ਹੈ ਤਾਂ ਪਿੰਡ ਵਾਲੇ ਹਰੀਜਨਾਂ ਨੂੰ ਜਾ ਕੇ ਕਹਿ ਦਿਉ ਕਿ ਤੁਹਾਡੀ ਗਿਣਤੀ ਪੰਚਾਇਤ ਵਿਚ ਘੱਟ ਸੀ ਤੁਸੀਂ ਆਪਣਾ ਬੰਦਾ ਦੇ ਦਿਉ। ਉਹ ਆਪ ਜਿਹੜਾ ਹਰ ਮਨ ਪਿਆਰਾ ਆਦਮੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਹੋਵੇਗਾ ਦੇ ਦੇਣਗੇ। ਪਰ ਇਹ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ ਜਾ ਰਿਹਾ। ਇਹ ਤਾਂ ਖੀਸੇ ਵਿਚ ਆਬਾਦੀ ਪਾ ਕੇ ਪਏ ਫ਼ਿਰਦੇ ਹਨ। ਫੇਰ ਇਹ ਆਜ਼ਮਾਇਸ਼ ਕਰਨਗੇ ਕਿ ਕੋਣ ਲਾਇਕ ਹੈ ਅਤੇ ਕਿਸ ਨੂੰ ਨਾਮਜ਼ਦ ਕੀਤਾ ਜਾਵੇ। ਜਿਸ ਨੂੰ ਪੁਲਿਸ ਵਾਲੇ ਚੰਗਾ ਕਹਿਣਗੇ ਅਤੇ ਜਿਸ ਦੀ ਸਿਫਾਰਸ਼ ਚੀਫ ਮਿਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਦੇ ਕੰਨ ਵਿਚ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇਗੀ ਉਸ ਨੂੰ ਨਾਮਜ਼ਦ ਕੀਤਾ ਜਾਵੇਗਾ ਕਿਉਂਕਿ ਇਹ ਕੰਨਾਂ ਦੇ ਖੂਬ ਕੱਚੇ ਹਨ। ਇਹ ਹੱਕ ਹਰੀਜਨਾਂ ਨੂੰ ਮਿਲ ਰਹੇ ਹਨ ਜਾਂ ਵਜ਼ੀਰ ਸਾਹਿਬ ਨੂੰ ਮਿਲ ਰਹੇ ਹਨ ?

[ਸ੍ਰੀ ਵਧਾਵਾ ਰਾਮ]

ਇਸ ਲਈ ਮੈਂ ਕਹਿੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਇਹ ਤਰਮੀਮ ਜਿਹੜੀ ਕਾਮਰੇਡ ਦਰਸ਼ਨ ਸਿੰਘ ਨੇ ਪੇਸ਼ ਕੀਤੀ ਹੈ ਇਹ ਮੰਨ ਲਈ ਜਾਵੇ। ਇਹ ਹੱਕ ਹਰੀਜਨਾਂ ਨੂੰ ਦਿਉ ਨਾ ਕਿ ਤੁਸੀਂ ਆਪ ਲੈ ਲਵੋ।

ਮੌਲਵੀ ਅਬਦੁਲ ਗ਼ਨੀ ਡਾਰ (ਨੂਹ): ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ, ਮੈਂ ਇਸ clause ਦੀ ਮੁਖਾਲਫਤ ਕਰਨ ਲਈ ਖੜਾ ਹੋਇਆ ਹਾਂ। ਮੇਰਾ ਖਿਆਲ ਸੀ ਕਿ ਸ਼ਾਇਦ ਇਹ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਜਿੱਥੇ ਗ਼ਲਤੀ ਹੋਈ ਹੈ ਉਸ ਨੂੰ ਠੀਕ ਕੀਤਾ ਜਾਵੇ। ਪਰ ਇਹ ਗ਼ਲ ਨਹੀਂ। ਚੌਧਰੀ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਕਿਹਾ ਹੈ ਕਿ ਹਰੀਜਨਾਂ ਨਾਲ ਅਨਿਆਂ ਹੋਇਆ ਹੈ ਅਤੇ ਅਸੀਂ ਉਸ ਨੂੰ ਠੀਕ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਾਂ। ਪਰ ਇਹ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ census report ਜਿਹੜੀ ਦੁਨੀਆਂ ਦੇ ਸਾਹਮਣੇ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਜਿਸ ਤੋਂ ਪਤਾ ਲੱਗਦਾ ਹੈ ਕਿ ਕਿੰਨੇ ਹਿੰਦੂ ਕਿੰਨੇ ਸਿੱਖ ਅਤੇ ਕਿੰਨੇ ਹਰੀਜਨ ਹਨ, ਗ਼ਲਤ ਹੈ। ਇਹ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਹੁਣ ਹਰੀਜਨਾਂ ਦੀ ਆਬਾਦੀ ਵੇਖਾਂਗੇ ਕਿ ਕਿਥੇ ਵਧ ਗਈ ਹੈ ਅਤੇ ਕਿੱਥੇ ਘਟ ਗਈ ਹੈ। ਚੌਧਰੀ ਸਾਹਿਬ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਇਹ ਸਭ ਕੁਝ ਪੰਡਿਤ ਜੀ ਦਾ ਹੀ ਕੀਤਾ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਰਾਮ ਤੇਰਾ ਗੋਰਖ ਧੰਦਾ ਮੈਂ ਕਿਆ ਜਾਨੂੰ? ਇਕ ਸਾਲ ਸ਼ਰਮਾ ਜੀ ਨੂੰ ਗਿਆਂ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ। ਤੁਸੀਂ ਅਜੇ ਤਕ ਇਸ ਬੇਇਨਸਾਫੀ ਦਾ ਜਿਹੜੀ ਹਰੀਜਨਾਂ ਨਾਲ ਹੋਈ ਹੈ ਇਲਾਜ ਕਿਉਂ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ? ਅਜ ਚੀਫ ਮਿਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਨੂੰ ਇਹ ਬੇਇਨਸਾਫੀ ਦੂਰ ਕਰਨ ਦਾ ਖਿਆਲ ਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਇਹ ਸ਼ਾਇਦ ਇਸ ਲਈ ਹੈ ਕਿ ਹੁਣ ਇਹ ਡਿਸਟ੍ਰਿਕਟ ਬੋਰਡਾਂ ਦੀਆਂ ਚੋਣਾਂ ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਰਾਹੀਂ ਕਿਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨੇੜਿਉਂ ਕਰਨੀਆਂ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਇਹ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਸਾਨੂੰ ਤੁਹਾਡੇ ਰੋਸ਼ਨੀ ਦਮਾਗ ਦੀ ਲੋੜ ਨਹੀਂ। ਪਰ ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ ਜੇ ਤੁਸੀਂ ਮੁਆਫ਼ ਕਰੋ ਤਾਂ ਮੈਂ ਪੰਜਾਬੀ ਦੀ ਇਕ ਕਹਾਵਤ ਦਸਾਂ। ਉਹ ਇਹ ਹੈ ਕਿ “ਚੋਰ ਚੋਰੀ ਛੱਡ ਦਿੰਦਾ ਹੈ ਪਰ ਹੋਰਾ ਫੇਰੀ ਨਹੀਂ ਛੱਡਦਾ” ਪਹਿਲਾਂ ਤੁਸੀਂ ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਦਾ ਹੱਕ ਬਾਜ਼ਵਾ ਸਾਹਿਬ ਤੋਂ ਖੋਹਿਆ। ਹੁਣ ਤੁਸੀਂ ਇਹ ਕਹਿੰਦੇ ਹੋ ਕਿ ਹਰੀਜਨਾਂ ਦੀ representation ਕਾਫੀ ਨਹੀਂ। ਇਸ ਲਈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਵਿਚ nominate ਕਰਨ ਲਗੇ ਹੋ। ਮੇਰੇ ਖਿਆਲ ਵਿਚ ਤੁਹਾਡੀ ਮਿਨਿਸਟਰੀ ਵਿਚ ਜਿਸ ਨੂੰ ਤੁਸੀਂ Antwerp ਦਾ ਕਿਲਾ ਕਹਿੰਦੇ ਕੁਝ ਕਮਜ਼ੋਰੀ ਆ ਗਈ ਹੈ। ਤੁਸੀਂ ਇਹ ਨਾਂ ਸਮਝੋ ਕਿ ਮੌਲਵੀ ਭੋਲਾ ਹੈ। ਮੈਂ ਭਾਵੇਂ ਸੈਕਟਰ ੨੩ ਵਿਚ ਬੈਠਾ ਹਾਂ ਮੈਨੂੰ ਪਤਾ ਹੈ ਕਿ ਕੀ ਅਰਜ਼ੀਆਂ ਆ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। ਮੈਂ ਤੁਹਾਡਾ ਸੇਵਕ ਹਾਂ। ਮੈਂ ਤੁਹਾਨੂੰ ਖੁਬ ਸਮਝਦਾ ਹਾਂ। ਤੁਸੀਂ ਬੜੇ ਚੰਗੇ ਬੰਦੇ ਹੋ। ਪਰ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਦੂਜਿਆਂ ਦੇ ਹੱਥਾਂ ਵਿਚ ਨਾ ਸੁਟੋ।

ਪਾਨੀ ਪਾਨੀ ਕਰ ਗਈ ਮੁਝ ਕੋ ਕਲੰਦਰ ਕੀ ਯਿਹ ਬਾਤ,
ਜਬ ਬੁਕਾ ਤੂ ਗ਼ੈਰ ਕੇ ਆਗੇ ਨਾ ਮਨ ਤੇਰਾ ਨਾ ਤਨ।

ਮਨ ਮੇਂ ਆਪਨੇ ਫੂਬ ਕਰ ਪਾ ਜਾ ਸੁਰਾਗੇ ਬਿੰਦਗੀ
ਤੁ ਅਗਰ ਮੇਰਾ ਨਹੀਂ ਬਨਤਾ, ਨਾ ਬਨ ਆਪਣਾ ਤੋ ਬਨ।

ਸਰਦਾਰ ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ (ਸਮਰਾਲਾ): ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ! ਮੈਂ ਇਸ ਬਿਲ ਦੇ ਮੁੱਤਲਕ ਦੇ ਚਾਰ ਸ਼ਬਦ ਹੀ ਕਹਿਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ। Ministry ਲਈ ਉਸ nomination ਦੇ ਅਸੂਲ ਨੂੰ ਅਪਨਾਣਾ ਜਿਸਨੂੰ ਅਜ ਤਕ ਬੁਰਾ ਸਮਝਿਆ ਜਾਂਦਾ ਰਿਹਾ ਹੈ ਇਕ ਬੜੀ ਭਾਰੀ ਗ਼ਲਤੀ ਹੋਵੇਗੀ। ਜਿਸ ਅਸੂਲ ਦੀ ਅੰਗਰੇਜ਼ਾਂ ਨਾਲ ਆਬਾਦੀ ਦੀ ਲੜਾਈ ਲੜਦਿਆਂ ਹੋਇਆਂ ਰੋੜ ਨਿਖੇਧੀ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਸੀ, ਅਜ ਫਿਰ ਉਸਦੇ ਜ਼ਰੀਏ ਉਸ community ਦੇ

ਆਦਮੀਆਂ ਨੂੰ representation ਦੇਣੀ, ਜਿਸ ਨੂੰ ਅਸਲੀ ਮਹਿਨਿਆਂ ਵਿਚ ਨੁਮਾਇੰਦਗੀ ਦੇਣ ਦੇ ਵਾਇਦੇ ਕੀਤੇ ਗਏ ਸਨ, ਮੇਰੇ ਖਿਆਲ ਵਿਚ ਕਾਂਗਰਸ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਸ਼ੋਭਾ ਨਹੀਂ ਦਿੰਦਾ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ nomination ਦੇ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਨੁਮਾਇੰਦਗੀ ਦੇਣਾ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਮਖੋਲ ਕਰਨਾ ਹੈ।

ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, Ministry ਵਲੋਂ ਜਦੋਂ ਵੀ ਕੋਈ ਬਿਲ ਲਿਆਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਉਹਦੇ ਵਿਚ ਕੋਈ ਨਾ ਕੋਈ ulterior motive ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਉਹ ਜਾਂ ਤਾਂ ਆਪਣੀ ਪਾਰਟੀ ਨੂੰ ਮਜ਼ਬੂਤ ਬਣਾਉਣ ਲਈ ਲਿਆਂਦਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਜਾਂ ਆਪਣੀ ਪਾਰਟੀ ਦੇ ਆਦਮੀਆਂ ਦੀ ਮਜ਼ਬੂਤੀ ਲਈ। ਚੋਧਰੀ ਲਹਿਰੀ ਸਿੰਘ ਹੋਰਾਂ ਗਲਤ line ਉਪਰ ਬਹਿਸ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਹੈ ਕਿ register ਦੇਰ ਦੇ ਬਣੇ ਹੋਏ ਹੁੰਦੇ ਹਨ ਤੇ population ਵਧਦੀ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ। ਮੈਂ Delimitation Commission ਦਾ ਮੈਂਬਰ ਰਿਹਾ ਹਾਂ। ਅਸੈਂਬਲੀ ਦੇ ਹਲਕੇ ਬਣਾਉਣ ਵੇਲੇ ਕਮਿਸ਼ਨ ਪਾਸ ਪੂਰੀਆਂ figures ਸਨ ਤੇ ਇਸ ਚੀਜ਼ ਸਬੰਧੀ ਵੀ information ਸੀ ਕਿ scheduled castes ਦੀਆਂ concentrations ਕਿਥੇ ਸਨ।

ਜੇ ਸਰਕਾਰੀ ਪਾਰਟੀ ਦੇ ਮੈਂਬਰ Ministry ਉਪਰ ਇਹ ਇਲਜ਼ਾਮ ਲਗਾ ਸਕਦੇ ਹਨ ਕਿ ਉਸਨੇ ਆਪਣੀ ਪੋਜ਼ੀਸ਼ਨ ਨੂੰ ਮਜ਼ਬੂਤ ਕਰਨ ਲਈ ਕਿਸੇ ਖਾਸ ਆਦਮੀ ਨੂੰ ਵਜ਼ੀਰ ਬਣਾਇਆ ਤਾਂ ਕੀ Opposition ਵਾਲੇ ਇਹ ਨਹੀਂ ਕਹਿ ਸਕਦੇ ਕਿ ਪਾਰਟੀ ਨੂੰ ਮਜ਼ਬੂਤ ਕਰਨ ਲਈ nomination ਦਾ ਤਰੀਕਾ ਫਿਰ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਇਹ ਅਸੂਲ ਗਲਤ ਹੈ ਅਤੇ import ਨਹੀਂ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ।

ਸੂਘ ਮੰਤਰੀ (ਸ਼੍ਰੀ ਮੀਸ ਸੈਨ ਸਾਹਿਬ) : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਕੋਈ ਨਵੀਂ ਚੀਜ਼ ਤਾਂ ਕਹੀ ਨਹੀਂ ਗਈ ਜਿਸ ਦਾ ਜੁਆਬ ਦਿੱਤਾ ਜਾਵੇ। ਇਲੋਕ ਦਾ ਜਵਾਬ ਇਲੋਕ ਮੈਂ ਦੇਣਾ ਤਾਂ ਮੁਝੇ ਆਉਂਦਾ ਨਹੀਂ, ਇਸ ਲਿਯੇ ਉਸ ਬਾਤ ਨੂੰ ਛੱਡ ਦੇਵਾਂ। ਮੈਂ ਹਾਊਸ ਨੂੰ ਯਕੀਨ ਦਿਲਾਉਂਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਇਹ ਮਾਮਲਾ ਕਿਸੀ ਅਫਸਰ ਦੇ ਪਾਸ ਨਹੀਂ ਜਾਏਗਾ, ਬਲਕਿ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਖੁਦ ਇਸ ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਕਰੇਗੀ। ਇਸ ਫੈਸਲੇ ਨੂੰ ਲਾਗੂ ਕਰਨੇ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਤਾਂ Leader of the Opposition ਨੂੰ communicate ਕਰ ਦੇਂਗੇ ਤਾਕਿ ਕਿਸੀ ਨੂੰ ਇਹ ਝਾਕ ਨਾ ਹੋ ਕਿ ਕੋਈ 'ਗੋਲਮਾਲ' ਹੁਆ ਹੈ।

ਬਹੁਤ ਵਾਕੇਲਾ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ ਕਿ nominations ਦੀ ਤਜਵੀਜ਼ ਇਕ ਰੋਗ ਰੋਗ retrograde step ਹੈ। ਮੈਂ ਅੱਜ ਕਲ੍ਹ ਕਿ ਇਹ ਕੋਈ ਨਵੀਂ ਚੀਜ਼ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਹੁਣ ਪਹਿਲੇ ਹੀ ਇਨ੍ਹੀ lines ਪਰ ਚਲ ਰਹੇ ਹਨ।

Section 13 of the Panchayat Act reads as follows :—

"If for any reason a Sarpanch or a sufficient number of Panches or Adalti Panches are not elected, or a casual vacancy is not filled within the time prescribed, the prescribed authority may appoint the necessary number of duly qualified persons as a Sarpanch or Panch or an Adalti Panch, as the case may be, and any such person shall hold office for the unexpired portion of the term for which the person in whose place he was appointed would have otherwise continued in office".

'Appointment' ਦਾ ਅਸਲ ਹਾਊਸ ਪਹਿਲੇ ਹੀ ਮਾਨ ਚੁਕਾ ਹੈ। ਅੱਗਰ ਹਰਿਜਨਾਂ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਲਿਯੇ ਸਾਰੀ elections ਨਵੇਂ ਸਿਰੇ ਤੋਂ ਕਰਾਈ ਜਾਏਂ ਤਾਂ ਕਹਾ ਜਾਏਗਾ ਕਿ ਸਰਕਾਰ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਕਾਮ ਹੀ ਨਹੀਂ ਕਰਨੇ ਦੇਂਦੀ। ਫਿਰ election petitions ਸ਼ੁਰੂ ਹੋ ਜਾਏਂਗੀ ਐਂਡ ਗਾਂਵ ਵਾਲਾਂ ਦੇ ਕਾਮ ਮੈਂ ਹਰਜ ਹੋਗਾ। ਹਰ ਵਕਤ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਤੰਗ ਕਰਨਾ ਆਖੀ ਠੀਕ ਨਹੀਂ। ਪੰਚਾਂ ਦੀ appointments ਪਹਿਲੇ ਹੀ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ। ਕੋਈ ਨਵੀਂ ਬਾਤ ਨਹੀਂ ਹੈ।

[मुख्य मंत्री]

स्पीकर साहिब, यह सारी **amendments** इकट्ठी ली जा रही हैं, इस लिये मैं अर्ज कर देना चाहता हूँ कि मैं चौधरी माडू सिंह की तरफ़ीम को कबूल करता हूँ क्योंकि यह हमारे मतलब को स्पष्ट करती है। जो आदमी इस तरह मुकर्रर किये जायेंगे अगले **elections** तक ही पंच बने रहेंगे।

Mr. Speaker : Question is—

In the proposed proviso, lines 1-2—

for “Government is of the opinion” substitute “on reference to Census Record it is found ”

The motion was lost.

Mr. Speaker : Question is—

In the proposed proviso, line 9—

“for nominate” substitute “order the election of”.

The motion was lost.

Mr. Speaker : Question is—

In the proposed proviso, line 11—

between the words “panches” and “and” insert “to be held”.

The motion was lost.

Mr. Speaker : Question is—

In the proposed proviso, line 12—

for “nomination” substitute “election”.

The motion was lost.

Mr. Speaker : Question is—

At the end of the proposed proviso,

add “The number of the Panches so increased and their term of office shall cease to have any effect after the next election of the Gram Panchayat concerned, when the number of Panches of that Gram Panchayat shall be determined afresh under sub-section (2) of this Section.

The motion was carried.

Mr. Speaker : Question is—

In the proposed proviso, line 9—

for “may nominate”, substitute “shall elect”.

The motion was lost.

Mr. Speaker : Question is—

In the proposed proviso, line 12—

for “nomination”, substitute “election.”

The motion was lost.

Mr. Speaker : Question is—

That Clause 2, as amended, stand part of the Bill.

The motion was carried.

CLAUSE 3

Mr. Speaker : Sardar Achhar Singh Chhina and others have given notice of an amendment to this Clause. Any one of them may move it.

Sardar Achhar Singh Chhina (Ajnala) : Sir, I beg to move—

That the clause be deleted.

ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ; ਇਸ clause ਨੇ ਸਰਕਾਰ ਦੀਆਂ intentions ਨੂੰ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ
ਬਾਹਿਰ ਕਰ ਦਿਤਾ ਹੈ। ਥਾਣੇ ਦੀ ਥਾਂ ਤੇ local area ਰੱਖ ਕੇ Ministry gerry-
mandering ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਮੈਂ ਸਮਝਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਇਹ ਬਿਲ political
considerations ਲਈ ਲਿਆਂਦਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਥਾਣਾ ਇਕ administrative unit ਹੈ
ਜਿਸਦੇ ਸਾਰੇ ਇਲਾਕੇ ਥਾਣੇਦਾਰ control ਕਰਦਾ ਹੈ। ਸਰਕਾਰ Panchayat
Unions ਨੂੰ unit ਨਹੀਂ ਰਖਣਾ ਚਾਹੁੰਦੀ। ਸਾਨੂੰ ਪਹਿਲਾਂ ਤੋਂ ਹੀ ਉਸ ਵੰਗ ਦਾ ਜਿਸ
ਤਰ੍ਹਾਂ ਕਿ ਕਾਂਗਰਸ ਸਰਕਾਰ ਚੋਣਾਂ ਕਰਾਂਦੀ ਹੈ ਕਾਫੀ ਤਜਰਬਾ ਹੈ। ਇਕ ਪਿੰਡ ਰਾਵੀ ਦੇ
ਕਿਨਾਰੇ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਦੂਜਾ ਬਿਆਸ ਦੇ ਤੇ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਇਕੋ ਹਲਕਾ ਹੈ
ਵਿਚਕਾਰ ਭਾਵੇਂ ਦੋ ਸੌ ਪਿੰਡ ਹੋਰ ਹਲਕੇ ਦੇ ਹੋਣ ਇਸ ਗਲ ਦੀ ਪਰਵਾਹ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ।

ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ; ਸਾਡੀ ਸਰਕਾਰ ਹੁਣ ਫਿਰ ਨਵੀਆਂ units ਬਣਾਉਣ ਲਈ ਭੋਨ ਤੋੜ
ਕਰਨ ਲਗੀ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਚੰਗਾ ਕੰਮ ਕਰਨ ਵਾਲੀਆਂ ਅਤੇ progressive ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਨੂੰ
ਸੁਸਤ ਅਤੇ ਕੰਮ ਨਾ ਕਰਨ ਵਾਲੀਆਂ ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਨਾਲ ਜੋੜ ਦੇਣਾ ਹੈ। ਨਤੀਜਾ ਇਹ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ
ਉਹ ਕਦੇ ਵੀ ਇਕੱਠਿਆਂ ਹੋਰੇ ਨਾ ਬਹਿਣਗੀਆਂ ਅਤੇ ਜੋ ਕੋਈ ਬਹਿਣਗੀਆਂ ਤਾਂ ਕੋਈ ਅਕਲ ਦੀ ਗਲ ਨਹੀਂ
ਕਰਨਗੀਆਂ। ਰਾਵੀ ਦਾ ਪਿੰਡ ਕਢਕੇ ਬਿਆਸ ਨਾਲ ਜੋੜ ਦੇਣਗੇ। ਕਿਸੇ ਗਲ ਦਾ ਠੀਕ ਫੈਸਲਾ ਨਾ ਹ
ਸਕਿਆ ਕਰੇਗਾ। ਇਕ ਆਪਣੀ ਵਲ ਖਿੱਚੇਗਾ ਅਤੇ ਦੂਸਰਾ ਆਪਣੀ ਵਲ। ਜੋਗੇ ਥੋੜੀ ਦੇਰ
ਹੋਈ ਹੈ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਨਵੀਆਂ constituencies ਬਣਾਈਆਂ ਸਨ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਾਫੀ
gerrymandering ਕੀਤੀ ਹੈ।

Chief Minister : On a point of order, Sir. I would like to inform the
hon. Member that it is the Delimitation Commission and not the State
Government that has fixed the boundaries. ਇਹ constituencies ਤਾਂ ਕਮਿਸ਼ਨ
ਨੇ ਬਣਾਇਆਂ ਹਨ।

ਸਰਦਾਰ ਅੱਛਰ ਸਿੰਘ ਛੀਨਾ : ਇਹ ਠੀਕ ਹੈ ਲੇਕਿਨ ਬਣਾਇਆਂ ਤਾਂ ਤੁਹਾਡੀ ਸਲਾਹ ਨਾਲ ਹੀ ਗਈਆਂ ਹਨ। ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ, ਮੇਰਾ ਮਤਲਬ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਦੁਬਾਰਾ ਭੰਨ ਤੋੜ ਨਾਲ ਕੰਮ ਵਿਚ ਰੁਕਾਵਟ ਪੈਦਾ ਹੋਵੇਗੀ। ਜਿਹੜੀਆਂ progressive ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਹੋਣਗੀਆਂ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਦੁਸਰਿਆਂ ਨਾਲ ਟੱਕਰ ਹੋਵੇਗੀ ਇਕ ਦੂਜੇ ਤੇ ਦਬਾ ਪਾਉਣਗੀਆਂ। ਇਹ ਨਹੀਂ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ।

Mr. Speaker : Motion moved—

That the Clause be deleted.

मुख्य मन्त्री (श्री भीम सेन सन्वर) : स्पीकर साहिब, अगर तो मेरे दोस्तों ने हकीकत को कबूल करना है तो मेरे जवाब देने का फायदा है और अगर वे जान बूझ कर हकीकत से इनकार करें तो मेरे जवाब देने का कोई फायदा नहीं। मैं ने पहले भी अर्ज किया है और अब फिर अर्ज करता हूँ कि National Extension Scheme के मुताबिक एक village को unit बनाया जाएगा। फिर 100 गांवों को मिला कर एक Development Block बनाया जायगा और मुख्तलिफ Development Blocks मिला कर एक तहसील बन जाएगी। अब तो 100 villages को मिला कर एक Development Block बनाया जा रहा है लेकिन एक थाने में लाजमी तौर पर 100 village नहीं होते। इस तरह तो एक Development circle बन जाएगा, एक Revenue circle हो जाएगा और एक थाने का circle अलहदा हो जाएगा। फिर स्पीकर साहिब, थानों में बड़ी दिक्कतें आती हैं। यह जरूरी नहीं है कि एक थाने की हद्द एक ही तहसील के अन्दर हो। अब हम ने एक ही तहसील को unit बना कर उस के अन्दर ही रखना है। पहले कई स्थानों पर एक थाने में एक जगह एक तहसील का हिस्सा है और दूसरी जगह पर दूसरी तहसील का हिस्सा है। लोगों को आराम की बजाए तकलीफ होती है। इसी लिये अब हम थाने को छोड़ कर Local area बना रहे हैं। Local area में मुख्तलिफ तहसीलों के गांव नहीं होंगे। नजदीक नजदीक और पास पास के होंगे। मेरे दोस्त कहते हैं कि रावी को बियास के साथ मिला दिया जाएगा। शुक्र है कि उन्होंने यह नहीं कहा कि जेहलम, चिनाब और अटक को मिला दिया जाएगा। हमारा तो ख्याल यह है कि revenue recognised circle को एक unit समझ लिया जाए फिर उस को एक Development Block की शक्ल दे दी जाए और वही एक area हो जाएगा। लोगों की local conditions होती हैं वे अपने area के एक दूसरे लोगों को समझते हैं। उन को आराम हो जायगा। आपस में मेल मिलाप बढ़ जाएगा। लोगों की हालत बेहतर हो जाएगी। हम administrative set up को सुधारना चाहते हैं। Main चीज यह है कि हम गांवों की administration गांव वालों के अपने हाथ में देना चाहते हैं। उस area को एक regular compact area बना देना चाहते हैं ताकि गांव वालों की जिम्मेदारी उन के अपने ऊपर वाबस्ता हो जाए उन की तकलीफें कम हों, उन के दरिमयान मेल मुहब्बत बढ़े। इस लिये मैं आपके द्वारा अपने Opposition वाले दोस्तों से कहना चाहता हूँ कि यह बिल्कुल साफ चीज है इसमें confusion न डालें और इसे मंजूर करें।

CLAUSE 3

Mr. Speaker : Question is—

That the Clause be deleted.

The motion was lost.

Mr. Speaker : Question is—

That Clause 3 stand part of the Bill.

After ascertaining the votes of the House by voices, Mr. Speaker, said, "I think the Ayes have it". This opinion was challenged and division was claimed. Mr. Speaker, after calling upon those Members who challenged the decision and supported the claim for a division, to rise in their places declared that the division was unnecessarily claimed.

The motion was declared carried.

CLAUSE 4.

Sardar Achhar Singh Chhina (Ajnala) : Sir, I beg to move—

That the Clause be deleted.

ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ; ਮੇਰੀ ਇਸ ਕਲਾਜ਼ ਬਾਰੇ ਵੀ amendment ਉਹੀ ਹੈ ਜੋਹੜੀ ਕਿ ਕਲਾਜ਼ ਤਿੰਨ ਦੇ ਸਬੰਧ ਵਿਚ ਸੀ। ਮੈਂ ਚੀਫ਼ ਮਿਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਨੂੰ ਇਹ ਦਸਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਜਿਹੜਾ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਇਹ ਕਿਹਾ ਹੈ ਕਿ ਦਸ, ਪੰਜਾਹ, ਤੇ ਸੋ ਬਾਣਿਆਂ ਨੂੰ ਅਲਹਿਦਾ ਕੀਤਾ ਜਾਵੇਗਾ; ਇਹ ਕੋਈ reasoning ਨਹੀਂ।

Chief Minister : On a point of order, Sir. The hon. Member is trying to negative the decision which the House has just now taken on Clause 3. He should be asked to refrain from doing so.

अध्यक्ष महोदय: कलाज नं. 4 में जो amendment लाई गई है वह एक consequential nature की है जिस का principle पहले कलाज नं. 3 में मंजूर कर लिया गया है। इस लिये अब दोबारा उसी चीज़ पर कुछ कहने की कोई ज़रूरत नहीं। Now I will put the clause to the vote of the House.

ਸਰਦਾਰ ਔਛਰ ਸਿੰਘ ਛੀਨਾ : On a point of order, Sir. ਤੁਸੀਂ ਇਸ amendment ਨੂੰ admit ਕੀਤਾ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਪਰ ਬਜਾਏ ਪਹਿਲਾਂ ਇਸ amendment ਤੇ vote ਲਏ ਜਾਣ ਦੇ ਤੁਸੀਂ original clause ਤੇ vote ਲੈਣਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹੋ, ਕੀ ਇਹ procedure ਠੀਕ ਹੈ ?

Mr. Speaker : I declare this point of order out of order.

ਸਰਦਾਰ ਚੰਨਣ ਸਿੰਘ : ਇਹ ਤਾਂ ਸਾਫ਼ ਕਰ ਦਿਉ ਕਿ ਜਿਹੜੀ amendment admit ਹੋ ਚੁਕੀ ਹੋਵੇ ਆਇਆ ਉਸ ਉਤੇ vote ਲਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਜਾਂ ਨਹੀਂ ?

Mr. Speaker : This question has already been decided. बार बार वही point of order क्यों raise किया जाता है ?

Mr. Speaker : Question is—

That Clause 4 stand part of the Bill.

The motion was carried.

CLAUSE 1

Mr. Speaker : Question is—

That Class 1 stand part of the Bill

The motion was carried.

TITLE

Mr. Speaker : Question is—

That Title be the title of the Bill.

The motion was carried.

Chief Minister (Shri Bhim Sen Sachar) : Sir, I beg to move—

That the Punjab Gram Panchayat Second (Amendment) Bill be passed.

Mr. Speaker : Motion moved—

That the Punjab Gram Panchayat (Second Amendment) Bill, be passed.

ਸਰਦਾਰ ਚੰਨਣ ਸਿੰਘ ਧੂਤ (ਟਾਂਡਾ) : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਇਹ ਜਿਹੜਾ ਬਿਲ ਸਾਡੇ ਸਾਮ੍ਹਣੇ ਹੈ; ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਨਾਲ ਸਬੰਧ ਰਖਦਾ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਦਾ ਕਾਨੂੰਨ ਪਹਿਲਾਂ ਪਹਿਲ ਇਸ ਅਸੈਂਬਲੀ ਵਿਚ ਲਿਆਂਦਾ ਗਿਆ ਤਾਂ ਉਸ ਵੇਲੇ ਅਸੀਂ ਇਸ ਨੂੰ ਪੂਰੀ support ਦਿਤੀ। ਉਸ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਇਸ ਕਾਨੂੰਨ ਵਿਚ ਜਿੰਨੀਆਂ amendments ਹੋਈਆਂ ਅਸੀਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਮੁਖਾਲਫਤ ਕੀਤੀ ਅਤੇ ਹੁਣ ਜਿਹੜੀ amendment ਇਸ ਬਿਲ ਦੇ ਜ਼ਰੀਏ ਲਿਆਂਦੀ ਗਈ ਹੈ ਅਸੀਂ ਉਸ ਦਾ ਪੂਰੇ ਜ਼ੋਰ ਨਾਲ ਵਿਰੋਧ ਕਰਦੇ ਹਾਂ ਕਿਉਂਕਿ ਅਸੀਂ ਇਹ ਸਮਝਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਇਸ ਤਰਜੀਮ ਨਾਲ ਪੰਜਾਬੀਆਂ ਦੀ ਤਰੱਕੀ ਨਹੀਂ ਹੋਣ ਲਗੀ ਬਲਕਿ ਇਹ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਤਰੱਕੀ ਨੂੰ ਰੋਕਣ ਵਾਲੀ ਹੈ।

ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ, ਮੈਂ ਆਪ ਨੂੰ ਇਹ ਯਾਦ ਦਿਵਾਉਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਜਦੋਂ ਇਹ original ਬਿਲ ਪਹਿਲੀ ਸ਼ਕਲ ਵਿਚ ਸਾਡੇ ਸਾਮ੍ਹਣੇ ਲਿਆਂਦਾ ਗਿਆ ਤਾਂ ਚੀਫ ਮਿਨਿਸਟਰ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਬੜੇ ਜ਼ੋਰ ਨਾਲ ਇਹ ਕਿਹਾ ਕਿ ਤੁਹਾਨੂੰ ਅਜ ਸਹੀ ਮਹਿਨਿਆਂ ਵਿਚ ਪੰਚਾਇਤੀ ਰਾਜ ਦਿੱਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਪਰ ਹੁਣ ਜਿਹੜੇ subsequent amending Bills ਲਿਆਏ ਜਾ ਰਹੇ ਹਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਉਸ democracy ਅਤੇ ਰਾਜ ਰਾਜ ਬਨਾਉਣ ਦੇ ਨਾਰਿਆਂ ਤੇ ਪਾਬੰਦੀਆਂ, checks ਅਤੇ ਰੁਕਾਵਟਾਂ ਖੜੀਆਂ ਬੀਤੀਆਂ ਜਾ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। ਜਦੋਂ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਪਾਬੰਦੀਆਂ ਲਗ ਗਈਆਂ ਤਾਂ ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਭਲਾਈ ਲਈ ਕਿਵੇਂ ਕੰਮ ਕਰ ਸਕਣਗੀਆਂ ?

ਜਦੋਂ ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਬਣੀਆਂ ਤਾਂ ਇਹ ਵੀ ਕਿਹਾ ਗਿਆ ਸੀ ਕਿ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਨੇ ਆਪਣੇ ਸਾਰੇ ਦੇ ਸਾਰੇ ਇਖਤਿਆਰ ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਦੇ ਹਵਾਲੇ ਕਰ ਦਿਤੇ ਹਨ। ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਟੈਕਸ ਵਰਗੇ ਦੀਆਂ powers ਵੀ ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਨੂੰ ਦਿਤੀ ਗਈ। ਉਸ ਪਾਵਰ ਨੂੰ ਵਰਤੋਂ ਵਿਚ ਲਿਆ ਕੇ ਕਈ ਜਗ੍ਹਾ ਤੇ ਜਾਇਜ਼ ਟੈਕਸ ਲਗਾਏ ਗਏ। ਪਰ ਜਦੋਂ ਕਿਸੇ ਪੰਚਾਇਤ ਵਿਚ ਕਿਸੇ ਪੰਚ ਨੇ ਜ਼ਰਾ ਵੀ ਉਲਟ ਰਾਏ ਦਿਤੀ ਉਸ ਨੂੰ ਬਣ ਇਸ ਬਹਾਨੇ ਤੇ ਕਿ ਇਹ ਆਦਮੀ ਪੰਚਾਇਤ ਦੇ interest ਦੇ ਖਿਲਾਫ਼ ਪ੍ਰਚਾਰ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੈ, suspend ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਟੈਕਸ ਨ ਦੇਣ ਦੇ ਬਹਾਨੇ ਅਤੇ ਕਿਸੇ ਪੰਚਾਇਤ ਦੇ ਪੰਚ ਨੂੰ ਕਿਸੇ ਹੋਰ ਬਹਾਨੇ ਨਾਲ suspend ਕਰ ਦਿਤਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਅਸੀਂ ਹਰ ਰੋਜ਼ ਅਖਬਾਰਾਂ ਵਿਚ ਪੜ੍ਹਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਫਲਾਣੇ ਪੰਚ ਨੂੰ suspend ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ ਅਤੇ ਅਜ ਫਲਾਣੀ ਪੰਚਾਇਤ ਨੂੰ suspend ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਅਜ ਤਕ ਕਈ ਪੰਚ ਅਤੇ ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਾਲ suspend ਹੋ ਚੁਕੀਆਂ ਹਨ। ਮੈਂ ਕਹਿਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਸਰਕਾਰ ਵਲੋਂ ਇਸ ਮਾਮਲੇ ਵਿਚ ਦੋ ਤਰਫ਼ਾ ਹਮਲਾ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਿਹੜੇ ਚੰਗੇ ਆਦਮੀ ਹਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਉਤੇ ਵੀ ਅਤੇ ਜਿਹੜੇ ਮਾੜੇ ਹਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਖਿਲਾਫ਼ ਵੀ action ਲਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਚੀਜ਼ ਮੈਂ ਬਿਨਾਂ ਕਿਸੇ ਤਰਦੀਦ ਦੇ ਡਰ ਦੇ ਕਹਿ ਸਕਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਅਜ ਤਕ ਜਿੰਨੇ ਵੀ ਪੰਚ ਅਤੇ ਪੰਚਾਇਤਾਂ suspend ਹੋਈਆਂ ਉਹ ਸਾਰੀਆਂ ਦੀਆਂ ਸਾਰੀਆਂ ਉਹ ਹੀ ਸਨ ਜਿਹੜੀਆਂ progressive ਸਨ।

ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ: ਹੁਣ ਇਹ ਕੀ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਨ? ਹੁਣ ਸਰਕਾਰ ਇਹ ਚਾਹੁੰਦੀ ਹੈ ਕਿ ਜਿਥੇ ਹਰੀਜਨਾਂ ਦੀ representation ਘਟ ਹੋਵੇ; ਉਥੇ ਇਹ ਆਪਣੀ ਮਰਜ਼ੀ ਨਾਲ ਕਿਸੇ ਵੀ ਹਰੀਜਨ ਨੂੰ ਨਾਮਜ਼ਦ ਕਰ ਸਕਣ। ਕਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਸ਼ਾਨਦਾਰ democracy ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਅੱਗੇ ਲਿਆਈ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ। ਅੱਗੇ ਵੀ nominations ਦਾ ਹਕ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਈ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਇਸਤੇਮਾਲ ਪਹਿਲੇ ਬਿਲਾਂ ਰਾਹੀਂ ਹਾਸਲ ਕੀਤਾ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਜਿਥੇ ਕਿਸੇ ਪੰਚਾਇਤ ਦਾ ਮੈਂਬਰ ਯਾਨੀ ਕੋਈ ਪੰਚ ਮਰ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਜਾਂ suspend ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਉਸਦੀ ਜਗ੍ਹਾ ਆਪਣਾ ਕੋਈ ਆਦਮੀ ਨਾਮਜ਼ਦ ਕਰ ਦਿਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਹੁਣ ਇਹ ਕਿਹਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ ਕਿ ਅਸੀਂ ਹਰੀਜਨਾਂ ਨਾਲ ਹਮਦਰਦੀ ਦੇ ਕਾਰਨ ਨਾਮਜ਼ਦਗੀਆਂ ਦਾ ਇਹ ਮਤਾ ਲਿਆ ਰਹੇ ਹਾਂ। ਮੈਂ ਇਹ ਕਹਿਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਇਹ ਬਿਲਕੁਲ ਫਰਜ਼ੀ ਹਮਦਰਦੀ ਹੈ। ਨਾਮਜ਼ਦਗੀਆਂ ਦਾ ਇਕ ਨਵਾਂ ਹੀ ਤਰੀਕ਼ਾ ਇਖਤਿਆਰ ਕੀਤਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਉਹ ਲੋਕ ਜਿਹੜੇ ਚੋਣਾਂ ਵਿਚ ਕਾਮਯਾਬ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਇਹ ਨਾਮਜ਼ਦ ਕਰ ਲੈਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਹੁਣ ਤਾਂ ਹੋਰ ਵੀ ਜ਼ਿਆਦਾ ਖੁਲ੍ਹ ਮਿਲ ਜਾਵੇਗੀ। ਨਤੀਜਾ ਇਹ ਹੋਵੇਗਾ ਕਿ ਹਰ ਇਕ ਪੰਚਾਇਤ ਵਿਚ ਨਾਮਜ਼ਦ ਲੋਕਾਂ ਦੀ majority ਹੋਵੇਗੀ ਜਿਹੜੇ ਗਵਰਨਮੈਂਟ ਦੇ ਇਸ਼ਾਰਿਆਂ ਤੇ ਚਲਣਗੇ। ਯਕੀਨਨ ਇਹ ਕਿਹਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਉਸ ਸਪਿਰਟ ਨਾਲ ਲੋਕ ਭਲਾਈ ਦਾ ਕੰਮ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਣਗੀਆਂ ਜਿਸ ਨਾਲ ਕਿ ਇਨ੍ਹਾਂ ਕੋਲੋਂ ਆਸ ਕੀਤੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਸੀ ਅਤੇ ਜਿਸ ਮਕਸਦ ਨਾਲ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਬਣਾਇਆ ਗਿਆ ਸੀ। ਇਹ ਠੀਕ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਉਹ ਇਕ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਕਾਂਗਰਸ ਕਮੇਟੀਆਂ ਬਣ ਜਾਣਗੀਆਂ ਅਤੇ ਆਉਣ ਵਾਲੀਆਂ ਇਲੈਕਸ਼ਨਾਂ ਵਿਚ ਕਾਂਗਰਸ ਲਈ ਖੁਲ੍ਹੇ ਤੌਰ ਤੇ ਕੰਮ ਕਰਨਗੀਆਂ।

ਕਾਂਗਰਸ ਨੇ ਆਪਣੇ manifesto ਵਿਚ public ਅਤੇ platform ਉਤੇ ਇਹ ਕਿਹਾ ਕਿ ਅਸੀਂ ਨਾਮਜ਼ਦਗੀਆਂ ਦੇ ਅਸੂਲ ਨੂੰ ਮੰਨਣ ਲਈ ਤਿਆਰ ਨਹੀਂ। ਮੇਰਾ ਇਹ ਖਿਆਲ

[ਸਰਦਾਰ ਚੰਨਣ ਸਿੰਘ ਧੂਤ]

ਹੈ ਕਿ ਸੱਚਰ ਸਾਹਿਬ ਬੜੀ ਦੇਰ ਬਾਦ ਕਾਂਗਰਸ ਵਿਚ ਆਏ ਹਨ। ਸ਼ਾਇਦ ਇਹੋ ਕਾਰਨ ਹੈ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਪਾਰਟੀ ਦੀਆਂ commitments ਦਾ ਵੀ ਪਤਾ ਨਹੀਂ।

ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ, ਤੁਸੀਂ ਹਰੀਜਨ ਵੋਟਰਾਂ ਦਾ ਸੁਆਲ ਹੀ ਲਉ। ਕਦੀ ਤੇ ਇਹ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਵੋਟ ਪਿੰਡਾਂ ਵਿਚ ਬਣੇ ਹੋਏ ਰਜਿਸਟਰਾਂ ਤੋਂ ਵੇਖੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਕਦੀ ਇਹ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਰਜਿਸਟਰ ਬੜੀ ਦੇਰ ਤੋਂ ਬਣੇ ਹੋਏ ਹਨ ਇਸ ਲਈ ਕੋਈ ਵੀ ਈਲੈਕਸ਼ਨ ਇਨ੍ਹਾਂ ਰਜਿਸਟਰਾਂ ਦੇ ਅਧਾਰ ਉਤੇ ਨਹੀਂ ਹੋਈ। ਕਦੀ ਇਹ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਹਰੀਜਨਾਂ ਨੂੰ ਇਹ concession ਇਸ ਲਈ ਦਿਤਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਪਿੰਡਾਂ ਵਿਚ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਅਬਾਦੀ ਵਧ ਰਹੀ ਹੈ। ਬੜਾ ਅਜੀਬ ਜਿਹਾ argument ਹੈ ! ਜੇ ਹਰੀਜਨਾਂ ਦੀ ਅਬਾਦੀ ਵਧ ਰਹੀ ਹੈ ਤਾਂ ਕੀ ਦੂਜਿਆਂ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਜਿਹੜੇ ਉਥੇ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ ਅਬਾਦੀ ਨਹੀਂ ਵਧ ਰਹੀ ? ਉਨ੍ਹਾਂ ਸਾਰਿਆਂ ਦਾ ਮਸਲਾ ਕਿਵੇਂ ਹਲ ਕਰੇਗੇ ? ਕੀ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਨੂੰ ਬਿਲਕੁਲ ਇਕ nominated ਅਦਾਰਾ ਬਣਾ ਦਿਉਂਗੇ ? ਮੈਂ ਹੈਰਾਨ ਹਾਂ ਕਿ ਚੋਧਰੀ ਸਾਹਿਬ ਜਿਸ ਚੀਜ਼ ਨੂੰ ਖੁਦ ਹੀ ਨਹੀਂ ਸਮਝਦੇ ਉਹ ਦੂਜਿਆਂ ਨੂੰ ਸਮਝਾਉਣ ਲਈ ਕਿਉਂ ਖੜੇ ਹੋ ਗਏ ਹਨ ! ਕਦੀ ਰਜਿਸਟਰ ਦਾ ਨਾਉਂ ਲੈਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਕਦੀ census ਦਾ। ਕਦੀ ਵੋਟਰਾਂ ਦੀ ਲਿਸਟ ਦਾ ਨਾਉਂ ਲੈਂਦੇ ਹਨ ਤੇ ਕਦੀ ਕੋਈ ਹੋਰ ਹੀ argument ਪੇਸ਼ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਸਾਰੀਆਂ ਚੀਜ਼ਾਂ ਦਾ ਮਤਲਬ ਤਾਂ ਕੇਵਲ ਇਹ ਹੋਇਆ ਕਿ ਇਹ ਖਾਸ ਖਾਸ ਆਦਮਿਆਂ ਨੂੰ ਜਿਹੜੇ ਕਿ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਪਿਛੂ ਹੋਣਗੇ nominate ਕਰਣਗੇ।

ਮੈਂ ਇਹ ਨਹੀਂ ਕਹਿੰਦਾ ਕਿ ਹਰੀਜਨਾਂ ਨੂੰ ਹੱਕ ਨਾਂ ਦਿਤੇ ਜਾਣ। ਪਰ ਮੈਂ ਇਹ ਕਹਿੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਬਜਾਏ nomination ਦੇ ਕਿਉਂ ਨਹੀਂ ਤੁਸੀਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ elections ਵਿਚ ਆਉਣ ਦਿੰਦੇ ? nominations ਦੇ ਇਸ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਕਿਨਾਂ ਲੋਕਾਂ ਦੀਆਂ nominations ਹੋਣਗੀਆਂ ? ਸਿਰਫ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਜਿਹੜੇ ਕਿ ਥਾਣੇਦਾਰਾਂ, ਤਹਿਸੀਲਦਾਰਾਂ ਅਤੇ ਇਲਾਕੇ ਦੇ ਦੂਜੇ ਅਫਸਰਾਂ ਦੇ ਮਨਸੂਰੇ ਨਜ਼ਰ ਹੋਣਗੇ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਇਲਾਕਿਆਂ ਵਿਚ ਕਾਂਗਰਸ ਦੇ ਅਹੁਦੇਦਾਰ ਹੋਣਗੇ। ਇਹ ਕੋਈ ਜਮਹੂਰੀਅਤ ਨਹੀਂ। ਇਸ ਨਾਲ ਤਾਂ ਜਮਹੂਰੀਅਤ ਦਾ ਖੂਨ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ।

ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ, ਤੁਸੀਂ ਡਿਸਟ੍ਰਿਕਟ ਬੋਰਡਾਂ ਦਾ ਸਵਾਲ ਲਉ। ਸਾਡੇ ਪਾਸ ਇਸ ਗਲ ਦੇ ਸਬੂਤ ਹਨ ਕਿ ਇਸ ਹਾਊਸ ਵਿਚ ਇਹ ਕਿਹਾ ਗਿਆ ਸੀ ਕਿ ਡਿਸਟ੍ਰਿਕਟ ਬੋਰਡਾਂ ਨੂੰ ਉੜਾ ਦਿਤਾ ਜਾਵੇਗਾ ਪਰ ਇਹ ਸੋਚਦੇ ਕੀ ਹਨ ਕਿ ਡਿਸਟ੍ਰਿਕਟ ਬੋਰਡਾਂ ਨੂੰ ਤੋੜ ਕੇ ਡਿਸਟ੍ਰਿਕਟ ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਬਣ ਦਿੱਤੀਆਂ ਜਾਣ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਰਾਹੀਂ ਇਹ ਲੋਕ ਆਪਣੀ ਪਾਰਟੀ ਨੂੰ ਮਜ਼ਬੂਤ ਕਰ ਸਕਣ।

ਫੇਰ ਸੱਚਰ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਇਥੇ ਅਸੈਂਬਲੀ ਵਿਚ ਇਹ ਦਸਿਆ ਸੀ ਕਿ ਥਾਣਾ ਯੂਨੀਅਨ ਵਿਚ ਥਾਣੇਦਾਰ ਹੋਣਗੇ, ਪਟਵਾਰੀ ਹੋਣਗੇ, ਪੰਚ ਹੋਣਗੇ ਅਤੇ ਆਪਸ ਵਿਚ ਵੈਠ ਕੇ ਸਲਾਹ ਮਸ਼ਵਰਾ ਕਰਨਗੇ ਲੇਕਿਨ ਬੋੜੀ ਦੇਰੀ ਬਾਦ ਹੀ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਨਵੀਆਂ ਗਲਾਂ ਕਰਨੀਆਂ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰ ਦਿੱਤੀਆਂ ਹਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਇਹ ਲਫਜ਼ ਪਿਛਲੇ ਸੈਸ਼ਨ ਵਿਚ ਵੀ ਕਹੇ ਸਨ।

ਦੂਜਾ ਹਲਕਿਆਂ ਦਾ ਸਵਾਲ ਹੈ। ਹੁਣ ਇਹ ਥਾਣੇ ਹਟਾ ਕੇ ਨਵੇਂ ਹਲਕੇ ਬਣਾਉਣ ਲਗੇ ਹਨ। ਕਿਸੇ ਹਲਕੇ ਵਿਚ ਆਪਣੀ ਮਰਜ਼ੀ ਅਨੁਸਾਰ ਇਹ ਦਸ ਪਿੰਡ ਰਖਣਗੇ ਕਿਸੇ ਵਿਚ

ਘਟ, ਤੇ ਕਿਸੇ ਵਿਚ ਵਧ। ਮੈਂ ਅਰਜ਼ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਜੇ ਕਰ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਹਲਕੇ reorganise ਕਰਨੇ ਹਨ ਤਾਂ ਇਹ ਕਿਉਂ ਨਹੀਂ ਤਸੀਲਾਂ ਨੂੰ ਵੀ reorganise ਕਰਦੇ। ਇਹ ਅਜੀਬ ਗਲ ਹੈ ਬਾਣੇ ਵਖ ਨੇ, ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਵਖ ਨੇ, ਅਤੇ ਤਸੀਲਾਂ ਵਖ ਨੇ।

ਇਸ ਲਈ ਮੈਂ ਕਹਿੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਜਿਹੜਾ ਤਰੀਕਾ ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਵਿਚ ਲਿਆ ਰਹੇ ਹਨ ਇਹ ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਦੀ ਤਰਕੀ ਲਈ ਠੀਕ ਨਹੀਂ। ਰਵਰਨਮੈਂਟ ਦੀ ਤਰਫੋਂ ਹਰ ਮੈਸ਼ਨ ਵਿਚ ਨਵੇਂ ਨਵੇਂ ਬਿਲ ਲਿਆਏ ਜਾ ਰਹੇ ਹਨ। ਮੈਂ ਇਕ ਗਲ ਸਭਾ ਦੇ ਨੋਟਿਸ ਵਿਚ ਲਿਆਣੀ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ। ਉਹ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਨੂੰ ਬਣਿਆਂ ਅਜ ਇਕ ਸਾਲ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ ਪਰ ਹਾਲਾਂ ਤਾਈਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਟੂਲਜ਼ ਨਹੀਂ ਬਣਾਏ ਗਏ। ਇਹ ਮਹਿਕਮਾਂ ਇਕ ਰੰਮ ਤਾਂ ਜ਼ਰੂਰ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੈ ਕਦੇ ਕਿਸੇ ਪੰਚਾਇਤ ਨੂੰ suspend ਕਰ ਦਿੰਦਾ ਹੈ ਕਦੇ ਕਿਸੇ ਪੰਚ ਨੂੰ। ਮੈਂ ਅਰਜ਼ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਇਸ ਬਿਲ ਨਾਲ ਜਿਹੜਾ ਇਸ ਵੇਲੇ ਹਾਊਸ ਦੇ ਸਾਮਣੇ ਪੇਸ਼ ਹੈ ਕੋਈ ਚੀਜ਼ ਵੀ ਹਲ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦੀ। ਕਿਉਂਕਿ ਜਦੋਂ elections petitions ਪੰਚਾਂ ਦੀਆਂ ਚੋਣਾਂ ਬਾਰੇ ਹੋਣ ਗੀਆਂ ਤਾਂ ਕਦੇ ਕੋਈ ਪੰਚਾਇਤ ਟੁਟ ਜਾਵੇਗੀ ਕਦੇ ਕਿਸੇ ਪੰਚਾਇਤ ਦੇ ਪੰਚਾਂ ਨੂੰ ਹਟਾਣਾ ਪਏਗਾ ਪਰ ਇਹ nominate ਕੀਤੇ ਗਏ ਪੰਚ ਤਾਂ ਕਾਇਮ ਰਹਿਣਗੇ। ਇਸ ਹਾਲਤ ਵਿਚ ਕੀ ਅਸੀਂ ਇਸ ਨੂੰ democracy ਕਹਿ ਸਕਦੇ ਹਾਂ? ਇਹ ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਨਹੀਂ ਕਹੀਆਂ ਜਾ ਸਕਣ ਗੀਆਂ। ਇਹ ਤਾਂ ਇਕ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਕਾਂਗਰਸ ਕਮੇਟੀਆਂ ਬਣ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। ਮੈਂ ਸਮਝਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਦੇ ਮਹਿਕਮੇ ਨੂੰ ਖੁਦ ਕਿਸੇ ਗੱਲ ਦਾ ਤਜਰਬਾ ਨਹੀਂ। ਉਹ ਥਾਂ ਥਾਂ ਤੇ ਗਲਤੀਆਂ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਫਿਰ ਉਸ ਮਹਿਕਮੇ ਦੇ ਅਫਸਰ ਆਪਣੀ ਗਲਤੀ ਨਹੀਂ ਮੰਨਦੇ ਇਹ ਤਾਂ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਇਹ ਗੱਲ ਕਹਿਕੇ ਧੋਖਾ ਦੇ ਰਹੇ ਹਨ ਕਿ ਅਸੀਂ ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਲਈ ਇਹ ਕਰ ਦਿਤਾ ਹੈ ਅਤੇ ਉਹ ਕਰ ਦਿਤਾ ਹੈ। ਫਿਰ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਹਥ ਹਰੀਜਨਾਂ ਦੇ ਨਾਂ ਦਾ ਇਕ ਚੰਗਾ formula ਆ ਗਿਆ ਹੈ ਇਹ ਜਿਹੜੀ ਗੱਲ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਨ ਹਰੀਜਨਾਂ ਦਾ ਨਾਮ ਲੈ ਕੇ ਕਰ ਲੈਂਦੇ ਨੇ। ਇਹ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਧੋਖਾ ਦੇ ਰਹੇ ਹਨ। ਮੈਨੂੰ ਸਮਝ ਨਹੀਂ ਆਉਂਦੀ ਕਿ ਇਹ ਕਿੰਨੀ ਦੇਰ ਤਕ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਧੋਖੇ ਵਿਚ ਰਖ ਸਕਣਗੇ ਅਤੇ ਆਪਣਾ ਕੰਮ ਚਲਾ ਸਕਣਗੇ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਇਹ ਬਹੁਤ ਸਾਰੀਆਂ ਚੀਜ਼ਾਂ ਕਾਨੂੰਨ ਦੇ ਖਿਲਾਫ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਹਾਲਤਾਂ ਵਿਚ ਅਸੀਂ ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਨੂੰ ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਨਹੀਂ ਕਹਿ ਸਕਦੇ ਇਹ ਤਾਂ ਕਾਂਗਰਸ ਕਮੇਟੀਆਂ ਹੀ ਬਣਾ ਰਹੇ ਹਨ। ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ ਇਨ੍ਹਾਂ ਲਫਜ਼ਾਂ ਨਾਲ ਮੈਂ ਇਸ ਸਾਰੇ ਬਿਲ ਦੀ ਸਖ਼ਤ ਮੁਖਾਲਫਤ ਕਰਦਾ ਹਾਂ।

ਅਧ്യਕਸ਼ ਸਹੀਦਯ: ਮਾਨਯ ਸੈਂਸਰ ਨੇ ਜੋ "ਬੋਕਾ ਦੇਨੇ ਕੇ ਲਫਜ਼ ਫ਼ਤੇਮਾਲ ਕੀਏ ਹੈਂ ਕਹੁ unparliamentary ਹੈਂ ਇਸ ਲਿਯੇ ਕਹੁ ਯਹ ਲਫਜ਼ ਕਾਪਸ ਲੇਂ।

ਸਰਦਾਰ ਚੰਨਣ ਸਿੰਘ ਧੂਤ : ਮੈਂ ਇਹ ਲਫਜ਼ ਵਾਪਸ ਲੈਂਦਾ ਹਾਂ।

ਅਧ്യਕਸ਼ ਸਹੀਦਯ: ਕੁਝ ਮਾਨਯ ਸੈਂਸਰ clause 4 ਕੇ ਬਾਰੇ ਸੇ ਤਕਰੀਰ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹੈਂ ਆਰ ਉਨ੍ਹੋਂਨੇ ਇਸ clause ਕੇ ਲਿਯੇ amendments ਭੀ ਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਬਾਰੇ ਸੇਂਸਰਨ੍ਹੋਂ ਕਹਾ ਦੇਨਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹੈਂ ਕਿ clause 4 ਜੋ ਹੈ ਕਹੁ clause 3 ਕੀ consequential clause ਹੈ। ਅਗਰ ਯਹ delete ਕਰ ਦੀ ਗਏ ਤੋ ਇਸ ਕਾ negative result ਹੋਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਲਿਯੇ ਕਲ No. 72 ਕੀ sub-clause ਕੇ ਸਾਰਹਤ ਇਨ amendments ਕੋ move ਕਰਨੇ ਕੀ ਇਜਾਜ਼ਤ ਨਹੀਂ ਦੀ ਜਾ ਸਕਤੀ।

ਸਰਦਾਰ ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ ਅਰਜ਼ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਆਪ ਦੀ ਆਵਾਜ਼ ਸਾਨੂੰ ਨਹੀਂ ਪਹੁੰਚਦੀ। ਆਪ ਨੂੰ ਬੜੇ ਜ਼ੋਰ ਨਾਲ ਬੋਲਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

ਅਧ്യਕਸ਼ ਸਹੋਦਯ : ਮੈਂ ਹੈਰਾਨ ਹਾਂ ਕਿ ਮੇਰੀ ਆਵਾਜ਼ ਦੂਰ ਬੈਠੇ ਮੈਂਬਰਾਂ ਨੂੰ ਤਾਂ ਸੁਣਾਈ ਦੇ ਰਹੀ ਹੈ ਆਪ ਨੂੰ ਕੀ ਸੁਣਾਈ ਨਹੀਂ ਦੇ ਰਹੀ ?

ਸ਼ੈਲਵੀ ਸ਼ਰਦੂਲ ਗਨੀ ਡਾਰ : ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ ਹਮੇਂ ਆਪ ਦਾ ਹਰ ਹੁਕਮ ਮਨਜ਼ੂਰ ਹੈ ਲੇਕਿਨ ਗੁਜ਼ਾਰਾ ਹੈ ਕਿ ਅਗਰ ਹਮੇਂ clause 4 ਦੇ ਲਿਯੇ amendments move ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦੇ ਤਾਂ ਕੀ ਹਮੇਂ ਇਸ clause ਦੀ ਮੁਖਾਲਫਤ ਕਰਨੇ ਦੇ ਲਿਯੇ ਤਕਰੀਰਾਂ ਭੀ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦੇ ?

ਅਧ്യਕਸ਼ ਸਹੋਦਯ : ਜੋ ਚੀਜ਼ admissible ਹੀ ਨਹੀਂ ਉਸ ਪਰ ਕੈਸੇ ਬਹਸ ਕੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ।

ਪੰ. ਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮ ਸ਼ਰਮਾ (ਸੋਨੀਪਤ) : ਮਾਨਨੀਯ ਸਪੀਕਰ ਸਾਹਿਬ ਇਸ ਬਿਲ ਦੀ ਹਰ ਇਕ clause ਪਰ ਟਰਮੀਨੇਂ ਭੀ ਪੇਸ਼ ਹੁੰਦੀ ਐਂਡ ਤਕਰੀਬਨ ਵਹ ਸਬ ਕੀ ਸਬ ਨਾਮਜ਼ੂਰ ਹੋ ਗਈ ਹੈ। ਇਸ ਬਿਲ ਮੇਂ ਹਮੇਂ ਯਹ ਚਾਹਾ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਮੇਂ ਜੋ ਭੀ ਬੁਰਾਈਆਂ ਹਨ ਦੂਰ ਹੋ ਜਾਏਂ ਐਂਡ ਅਗਰ ਵਹ ਸਬ ਦੂਰ ਨ ਹੋ ਸਕੇਂ ਤਾਂ ਕਮ ਹੋ ਜਾਏਂ। ਦੇਖਨਾ ਯਹ ਹੈ ਕਿ ਏਸੀ ਸ਼ਰਤ ਮੇਂ ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਦੇ ਕਾਮ ਕਰਨੇ ਦੇ ਕੌਨ ਸੇ ਬੇਸਿਜ਼ (basis) ਹੋਂਗੇ। ਆਜ਼ ਇਸ ਬਿਲ ਪਰ ਬਹਸ ਦੇ ਦੌਰਾਨ ਮੇਂ ਇਕ ਅਜੀਬ ਸੀ ਬਾਤ ਹਮਾਰੇ ਸਾਮਨੇ ਆਈ ਹੈ। ਯਹ ਬਿਲ ਆਖਰੀ reading ਮੇਂ ਜਿਸ ਸ਼ਕਲ ਮੇਂ ਹਮਾਰੇ ਸਾਮਨੇ ਹੈ ਉਸ ਮੇਂ ਇਸ ਬਾਤ ਨੂੰ ਜਾਨਨਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਦਾ ਅੰਦਾਜ਼ਾ ਕਿਸ basis ਪਰ ਲਗਾਯਾ ਗਯਾ ਹੈ ਯਾ ਲਗਾਯਾ ਜਾਨਾ ਹੈ ਕਿ ਹਰਿਜਨਾਂ ਦੀ ਕਿਸੀ ਪੰਚਾਇਤ ਮੇਂ proportion ਠੀਕ ਹੈ ਯਾ ਨਹੀਂ। ਮੇਰਾ ਖ਼ਿਆਲ ਹੈ ਕਿ ਯਹ basis ਹਮੇਸ਼ਾ ਉਸ ਜਗਹ ਦੀ ਮਰਦਮਸ਼ੁਮਾਰੀ ਦੀ figures ਦੇ ਮੁਤਾਬਿਕ ਹੀ ਹੋਤੇ ਹੈ। ਯਹ figures ਹਮੇਸ਼ਾ ਜ਼ਾਹਿਰ ਕਰਤੇ ਹੈ ਕਿ ਕਿਸੀ ਗਾਂਵ ਦੀ ਕੁਲ ਆਬਾਦੀ ਕਿਤਨੀ ਹੈ; ਕੌਨ ਕੌਨ ਲੋਗ ਵਹਾਂ ਰਹਤੇ ਹੈ ਐਂਡ ਉਨ ਦੀ ਕਿਤਨੀ ਕਿਤਨੀ ਗਿਨਤੀ ਹੈ। ਯਾ ਇਸ ਦੇ basis ਵਹਾਂ ਦੀ voters list ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਬਲਿਕ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਭਰ ਮੇਂ ਸਬ ਜਗਹ ਯਹ proportion ਮੁਕਰਰ ਹੋਤੀ ਹੈ ਐਂਡ ਇਸ proportion ਨੂੰ ਮੁਕਰਰ ਕਰਨੇ ਦੇ ਲਿਯੇ ਵਹਾਂ ਦੀ census ਦੀ figures ਨੂੰ basis ਮਾਨਾ ਜਾਤਾ ਹੈ। ਅਗਰ ਯਹ ਮਾਨਾ ਜਾਏ ਕਿ Census ਦੀ ਬਿਨਾ ਪਰ ਮੁਕਰਰ ਕੀ ਗਈ proportion ਹੀ ਠੀਕ ਨਹੀਂ ਹੈ ਤਾਂ ਪੰਚਾਂ ਦੀ ਨੁਮਾਇੰਦਗੀ ਦੀ ਇਕ ਭਾਰੀ ਮੁਸ਼ੀਬਤ ਖੜੀ ਹੋ ਜਾਏਗੀ। ਮਾਨਨੀਯ ਚੌਧਰੀ ਲਹਰੀ ਸਿੰਘ ਨੇ ਖ਼ਿਆਲ ਜ਼ਾਹਿਰ ਕੀਤਾ ਹੈ ਕਿ census ਦਾ ਇਸ ਮੇਂ ਸਵਾਲ ਹੀ ਪੈਦਾ ਨਹੀਂ ਹੋਤਾ। ਇਨ ਦੇ ਖ਼ਿਆਲ ਮੇਂ ਮਾਨਨੀਯ ਮੁਖ਼ਯ ਮੰਤਰੀ ਨੂੰ ਜਿਨ ਦਾ ਐਂਡ ਮੇਰਾ ਇਕ ਵਿਚਾਰ ਥਾ, ਭੀ ਇਸ ਮਾਮਲੇ ਮੇਂ ਮੁਗ਼ਾਲਤਾ ਲਗਾ ਹੈ। ਵਹ ਫਰਮਾਨੇ ਲਗੇ ਥੇ ਕਿ ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਦੇ ਪੰਚਾਂ ਦੀ elections ਮੇਂ ਹਰਿਜਨਾਂ ਐਂਡ ਦੂਸਰੇ ਲੋਗਾਂ ਦੀ proportion ਮੁਕਰਰ ਕਰਨੇ ਦੇ basis ਵਹਾਂ ਦੀ Census ਦੇ figures ਨਹੀਂ ਹੈਂ ਬਲਿਕ ਇਕ register ਹੋਤਾ ਹੈ ਜੋ ਹਰ ਗਾਂਵ ਦੇ ਲਿਯੇ ਹੋਤਾ ਹੈ। ਉਸ ਦੀ ਪੜਤਾਲ ਭੀ ਹਰ ਦਸ ਸਾਲ ਦੇ ਬਾਦ ਹੋਤੀ ਹੈ। ਉਸ ਸੇ ਯਹ ਪਤਾ ਚਲਤਾ ਹੈ ਕਿ ਉਸ ਗਾਂਵ ਮੇਂ ਹਰਿਜਨਾਂ ਦੀ ਕਿਤਨੀ ਤਾਦਾਦ ਹੈ। ਵਹ ਰਜਿਸਟਰ ਹਰ ਗਾਂਵ ਦੇ ਲਿਯੇ ਅਲਗ ਅਲਗ ਹੋਤਾ ਹੈ ਐਂਡ ਵਹ ਪਟਵਾਰੀ ਦੇ ਪਾਸ ਰਹਤਾ ਹੈ। ਉਨ੍ਹੇਂ ਯਹ ਭੀ ਫਰਮਾਯਾ ਹੈ ਕਿ ਉਸ register ਮੇਂ ਦੀ ਗਈ ਹਰਿਜਨਾਂ ਦੀ ਤਾਦਾਦ ਸਹੀ ਨਹੀਂ ਹੋਤੀ ਐਂਡ ਉਸ ਸੇ ਪੰਚਾਇਤਾਂ ਦੀ elections ਦੇ

अन्दर सही तौर पर नुमायंदगी नहीं होती। उन के कहने के मुताबिक आबादी साल के साल तो क्या रोजाना बढ़ती जाती है। अगर उन की यह बात मान ली जाए जैसा कि माननीय मुख्य मंत्री ने कहा है कि Census के basis भी गलत हो जाते हैं और village register भी out of date हो जाता है क्योंकि उस की पड़ताल दस साल के बाद होती है तो मैं पूछता हूं कि जब इन के ख्याल में village register में दी गई गिनती भी गलत होती है और Census की figures भी नहीं मानी जा सकती तो गवर्नमेंट इन की आबादी का अन्दाज़ा किस चीज़ से लगाना चाहती है। अगर वह इस के लिये कोई staff रखे जो उन की गिनती रोज बरोज करे तो कितना खर्च होगा और इस काम के लिये उसे कितना वसीह महकमा कायम करना पड़ेगा।

इस बात का डर नहीं कि गवर्नमेंट को कोई महकमा खोलना पड़ेगा। बेशक महकमा खोला जाए, हरिजनों की हर रोज गिनती की जाए और उन की proportion निश्चित की जाए। इस बात की उसे बिल्कुल पूरी आज़ादी होगी। मगर पंचायतों में हरिजन मेंबरों की कमी कितनी देर तक रह सकती है ? कहीं साल 6 महीने के बाद एक आध मेंबर की कमी रह सकती है। गवर्नमेंट की तरफ से कहा जाता है कि जहां कहीं proportion में कमी हुई वहां पर अगर elections करानी पड़े तो कितना बखेड़ा हाथ में लेना पड़ेगा इस लिये नामज़दगी अच्छी रहेगी। elections के इतने बड़े काम को हाथ में लेना बेकार है। पंचायत राज के बारे में यह एक बेमिसाल बात है।

रजिस्टर की बात कही गई है। यह रजिस्टर हर दस साल के बाद तबदील किया जाएगा यह एक बिल्कुल नई बात है और यह सूबे के लिये एक अज़ाब साबित होगा। आबादी की figures का basis, Census होना चाहिए न कि रजिस्टर।

कहा गया कि चूंकि इस कमी को पूरा करने के लिये election करानी पड़ेगी इस की जगह पर nomination क्यों न कर दी जाए। मैं पूछता हूं कि elections से क्या तकलीफ है और क्या मुसीबत है। डेढ़ दिन से ज्यादा वक्त इस काम के लिये नहीं लगता। अगर जनरल elections 15 दिन में हो सकती हैं तो एक गांव में elections के $1\frac{1}{4}$ दिन से ज्यादा नहीं लगेगा। By-elections कराने से सरकार को क्या तकलीफ होती है ? मुमकिन है कि पहले कोई खामी रह गई हो जो दोबारा elections होने पर सही हो सकती है। मैं इस बिल की मुखालिफत एक तो इस बिना पर करता हूं कि आबादी जानने का basis गलत है। दूसरी बात यह है कि सरकार elections से बचना चाहती है। कहते हैं कि सारे गांव में elections करनी पड़ेगी। किसी ने दरखास्त दी कि कोई गलती रह गई है। तो आबादी का अन्दाज़ा लगाया जाएगा और सौझमेल करने पड़ेंगे इस से तो nomination का तरीका ही अच्छा रहेगा। मैं कहता हूं कि यह तरीका जहां परेशानकुन है वहां खतरनाक भी है।

फिर Chief Minister साहिब ने फरमाया कि nomination का असूल तो माना जा चुका है। Council of States और Upper House की मिसाल हमारे सामने है। Nomination का असूल उस वक्त बुरा था जब

[पंडित श्री राम शर्मा]

यहां पर अंग्रेजों की हुकूमत थी मगर अब जब हम आजाद हो चुके हैं तो फिर यह कौन सी बुरी बात है ? उन्होंने निहायत आराम से कह दिया कि अब जब कि हुकूमत अपनी है और पहली Ministry भी नहीं, तो nomination में क्या बुराई है ! पहली Ministry के अहद में जिस असूल के हम सब इतने critic रह हैं, जब कि हमने District Boards, Municipalities..... (चौधरी लहरी सिंह. Section 13 पढ़िए ।) आप सबर से सुनिए और खामोश अपनी जगह पर बैठे रहिए । औरों की बात सुनने की आप में हिम्मत नहीं है, I will not give way.

स्पीकर साहिब, मैं अर्ज कर रहा था कि जिस वक्त आजाद होने के बाद Ministry बनी, तो nomination का असूल उड़ाने की हिमायत सब वजीर साहिबान करते थे और हमारे चीफ मिनिस्टर साहिब ने अगर गर्मागर्म तकरीर नहीं की तो कम से कम बैंच को तो खूब जोर से बजाया होगा । तब उस Ministry ने nomination के इस असूल को उड़ा दिया और District Boards, Municipal Committees या Small Town Committees में nomination बन्द हो गई । इसी तरह हमारे unionist भाईयों की regime में गवर्नर तो nomination नहीं करता था । जब कभी कोई ऐसी बात होती थी तो सभी बड़े जोर से उस की मुखालिफत करते थे और कहते थे कि यह जमहूरियत की जड़ों को खोखला करने वाली चीज है । मगर कहते हैं कि चूंकि अब राज हमारा है और गैर मुल्की लोग यहां से चले गये हैं । इस लिये इस में कोई बुराई नहीं । चीफ मिनिस्टर साहिब ने House of Lords की मिसाल दी । उस के मुताल्लिक मैं कहना चाहता हूं कि House of Lords के इस्तिथार ही क्या हैं और जो हैं उन्हें छीन लेने की भी तहरीक है । फिर Council of States की मिसाल दी गई कि वहां माहिरो को नामजद किया जाता है । देखने में आया है कि वहां भी अब artist या workers को nominate नहीं किया जाता बल्कि कुछ ऐसे ही आदमियों की तसल्ली की जाती है । अगर House of Lords में birth की वजह से seat मिलती है तो उस House का administration में भी दखल कम है । हमारी Council of States में जहां कुछ तजरूबेकार और माहिर डा. राधा कृष्णन जैसे लोग हैं वहां ज्यादातर seats पार्टीबन्दी के लिये fit लोगों को ही मिलती हैं ।

अध्यक्ष महोदय : आप किसी House पर reflection cast न करें ।

पंडित श्री राम शर्मा : मैं reflection नहीं कर रहा । अगर Chief Minister साहिब nomination का असूल खड़ा न करते.....

अध्यक्ष महोदय : सवाल nomination के हक में या उस के खिलाफ बोलने का नहीं । आप को motives impute नहीं करने चाहियें ।

पंडित श्री राम शर्मा : मैंने कोई undesirable बात नहीं कही । मैं तो सिर्फ अपने बयान को elaborate कर रहा था कि यह असूल सही है या गलत

मैं तो यह कहता हूँ कि nomination, democracy या असली पंचायत के लिए ठीक बात नहीं है। यह असली democracy को function करने से रोकता है। जिसका नाम ही पंचायत है यानी पंच लोग जिन्हें लोगों ने पसन्द किया हो तो वहाँ पर नामजदगी का क्या मतलब। पंचायतों में nomination का असूल दाखिल करना तो किसी दरख्त की जड़ों को तेल देने के बराबर है। अगर इस ईवान के अन्दर नामजदगी होती और कोई मॅम्बर नामजद हो कर यहां आता तो मैं उस की भी मुखालिफत करता। पंचायतों के अन्दर शुरू में ही यह चीज नहीं होनी चाहिए।

दूसरी बात जो मैं अर्ज करता चाहता हूँ वह यह है कि चीफ मिनिस्टर साहिब ने कहा कि इस में झगड़े की कोई बात नहीं। जो Leader of the Opposition लिख कर दें उसी के मुनाबिक अमल हुआ करेगा। क्या यह कानूनी तौर पर ठीक बात है? और फिर अखबारों में आपने पढ़ा होगा कि Leader of the Opposition पिछले साल में कम से कम 4 दफा तो जेल हो गए हैं। फिर लिखेगा कौन और अगर लिख भी दिया तो जब आप के मातहत अफसरान उन्हें जेल में बन्द करते रहते हैं तो क्या वे उन की बात मानेंगे।

मैं तो यह कहना चाहता हूँ कि यहां पर कोई guarantee नहीं है। कानून के मुताबिक अखबार वालों की कमेटी बनी हुई है। कहा जाता है कि किसी अखबार वाले पर मुकदमा चलाने से पहले इस कमेटी को बताया जायगा लेकिन होता क्या है? अखबार वालों को पकड़ा जाता है। मुकदमा चलाया जाता है और वह विचारे शोरो गुल्ल मचाते रह जाते हैं। हर जगह पार्टी बाजी और बेकानूनी है। दूसरा आदमी क्या कर सकता है।

फिर बात आ गई कि जब nomination करेंगे तो Leader of the Opposition को लिख कर भेज देंगे। Leader of the Opposition क्या करेगा। आपके पास मशीनरी है, ताकत है, अफसरान हैं, information मिलने के sources हैं। Leader of the Opposition को क्या पता चल सकता है कि कांगड़ा में क्या हो रहा है और बाकी जगहों में क्या हो रहा है। यह तो सरकार खुद ही देख सकती है। मैं इस लिये इस बिल की मुखालिफत करता हूँ। अगर यह बिल पास हो गया और nomination के तरीके को रायज कर दिया गया तो पंजाब का निज़ाम ज्यादा भदा, बेकार और निकम्मा हो जाएगा।

सिचाई मंत्री: क्या पंडित जी Section 13 पर रोशनी डालेंगे?

पंडित श्री राम शर्मा: इस पर मेरा कोई और भाई रोशनी डालेगा।

दिवान जगदीश चंद्र (लुधियाना शहर, उमरी): स्पीकर साहिब, इस बिल क मुतअन्विलक हमारे Opposition बैंचों पर बैठे हुए दोस्तों ने इस amending Bill पर एतराज करते हुए इस बात पर जोर दिया है कि जहां पर गवर्नमेंट को पता लगे कि किसी पंचायत में हरिजनों को नुमाईन्दगी मुनासिब नहीं मिली तो वहां दोबारा elections कराए जाएं। लेकिन नामजदगी न की जाए। साहिबे सदर जैसा कि इन बैंचों की तरफ से कहा गया है कि पंचायत राज कायम हो गया है। तो मेरी समझ में नहीं आता कि मुनासिब जगहों पर हरिजनों की नामजदगी करने में और जैसा कि Leader of the House ने कहा है कि ऐसी

दीवान जगदीश चंद्र]

हालत में Opposition के लीडर को इनलाह दी जाएगी, राम राज्य में और लोक राज्य में क्या खराबी पैदा हो जायगी। इससे राम राज्य कैसे खत्म हो जाएगा। हमारे Constitution में, हमारे विधान में जिस की बिना पर कि हमारे राज्य चल रहे हैं कई जगह नामजदगी के लिये provisions हैं। Legislative Council में नामजदगी है। गवर्नर नामजदगी करता है। अगर यह नामजदगियां मुनासिब हैं और अगर इन पर हमें एतराज नहीं है तो.....

श्री अब्दुल गनी डार: On a point of order. Sir ! अगर इन नामजदगियों के खिलाफ नहीं कहा जा सकता तो क्या इन के हक में कहा जा सकता है ? आपने पंडित श्री राम शर्मा को नामजदगियों की बुराई करने से रोक दिया था।

अध्यक्ष महोदय: उन्होंने ने Upper House की नामजदगियों पर इस तरह एतराज किया था कि वह उस हाऊस पर एक reflection था। इस के साथ ही उन्होंने नामजद किए मेम्बरों की काबलियत और अहलियत पर भी एतराज किया था। वह इस हाऊस में ऐसा नहीं कर सकते।

श्री अब्दुल गनी डार: On a point of order. Sir, आपने यह फरमाया है कि बुराई नहीं की जा सकती तो क्या उस के हक में कहा जा सकता है ?

Mr. Speaker: This is no point of order.

दीवान जगदीश चंद्र: इसी तरह म्युनिसिपैलिटियों में और शहरों में जहां कहीं जरूरी हो और जहां पर permanent तौर पर election करके आदमी न रखे जा सकें गवर्नमेंट नामजदगियां करती है, और ऐसे नामजद किए गए मेम्बर शहरों में अगर अच्छा काम करते रहते हैं तो मैं अर्ज करना चाहता हूं कि गांवों में क्यों नहीं कर सकते। गांवों में तो जरूरी है कि हम हरिजनों की नामजदगी करें। हरिजनों के मुफाद के लिये, माहिबे सदर, इस हाऊस ने हमेशा कोशिश की है। उन्होंने इस बात का ख्याल रखा है कि कैसे पिछड़े हुए लोगों को गांवों के इन्तजाम में हिस्सा दिया जाये ताकि वे बढ़ चढ़ कर गांव के नजाम में हिस्सा ले सकें और पंचायतों के काम में हाथ बटा सकें। मुझे समझ नहीं आती कि इस तरह जमहूरियत का कैसे खातमा हो जाएगा ?

इस के इलावा साहबे सदर, हम Gram Panchayat Act पास कर चुके हैं। इस में इस बात को तसलीम किया गया है कि अगर कोई casual vacancy हो तो उस को नामजदगी से पूरा किया जा सकता है और वह नामजदगी अगले election तक कायम रहेगी। ऐक्ट की Section 13 को मैं पढ़ कर सुनाता हूं:—

“If for any reason a Sarpanch or a sufficient number of Panches or Adalti Panches are not elected, or a casual vacancy is not filled within the time prescribed, the prescribed authority may appoint the necessary number of duly qualified persons as a Sarpanch or Panch or an Adalti Panch, as the case may be, and any such person shall hold office for the unexpired portion of the term for which the person in whose place he was appointed would have otherwise continued in office”.

यह जो बिल अब पेश है इस में यह प्रबन्ध किया गया है कि अगर पंचायत की term खत्म होने से पहले कोई contingency arise हो और समझा जाए कि हरिजनों की नुमाईदगी पूरी नहीं तो elections की जगह नामजदगी करा दी जाए। यह कहा जा सकता है कि नामजदगी की जगह ऐसी हालत में elections कर ली जाए। इस के लिये मैं अर्ज कर दूँ कि elections के लिए भी कुछ अरसा दरकार होता है। हररोज गांवों में elections नहीं कराए जा सकते। अगर हररोज गांवों में elections कराए जायें तो गांव वाले इसी काम में ही लगे रहें और सोचते रहें कि किस के खिलाफ वोट दिए जाएं और किस के हक में दिए जाएं। इस लिए नामजदगी की एक बेजरर तजवीज पेश की गई है। मैं समझता हूँ कि इस तरह करने से गांवों के काम में रुकावट न होगी और गांवों को ऊंचा उठाने में मदद मिलेगी।

दूसरा इतराज यह किया गया है कि पंचायतों के area को local area क्यों बनाया जा रहा है। इस की जरूरत और मुनासिबत ऐसी नहीं जैसी कि Opposition के भाइयों ने बयान की है। क्योंकि गांवों को ऊंचा उठाने का काम हो रहा है। Extension Service Blocks बन गए हैं और एक एक सौ गांवों के लिये units बनाई जा रही हैं.....

अध्यक्ष महोदय : आप इस बिल पर बोलिए।

दीवान जगदीश चंद्र : साहिबे सदर, इस एक्ट में पहले थानों को रखा गया था अब Extension Schemes के मातहत Basic Territorial Units बनाई जा रही हैं इस लिए 'local area' नाम रख दिया गया है ताकि देहाती भाइयों को सहूलियत हो और वह तरक्की कर सकें। इस लिए मैं समझता हूँ कि यह बिल जो हमारे सामने है पास कर देना चाहिए।

मौलवी अब्दुल गनी डार (नूह) : स्पीकर साहिब, मैं इस बिल की मुखालिफत करने के लिये खड़ा हुआ हूँ। वजह यह है कि चीफ मिनिस्टर साहिब ने जिस ढंग से यह बिल पेश किया उस को देख कर फिर उन की तारीफ करने वालों ने जिस ढंग से तारीफ की उस की वजह से हम झमेले में पड़ गये हैं। एक भाई ने nominations के हक में जोर लगाते हुए कह दिया कि Municipalities में nominations किये गए और वह नामजदगियां बहुत अच्छी साबित हुईं। स्पीकर साहिब इसे कहते हैं (मनचि मे सरायम व तंबूरा एमनचि मे सरायद)। मिनिस्टरी कुछ कह रही है और उस का तंबूरा कुछ और कह रहा है।

Dewan Jagdish Chandra : Sir, my hon. Friend has just now uttered some words which are highly objectionable. He should be asked to withdraw them.

मौलवी अब्दुल गनी डार : मैं अपने अजीज दोस्त को यकीन दिलाता हूँ कि मैं ने उन्हें तंबूरा नहीं कहा। स्पीकर साहिब जब हम democracy के नाम पर विदेशी राज और विदेशी technique के खिलाफ जद्दोजिहद कर रहे थे तो हमारा एक नारा यह भी था कि वह हुकूमत nominations करती थी और इस तरह हमारे

[मौलवी अब्दुल गनी डार]

जमहूरी हकूक पर छापा मारती थी। अब मैं नहीं समझता कि चीफ मिनिस्टर साहिब जिन्होंने Local Government के वजीर से इस महकमे को चलाने का हक छीन लिया इसके और जो यह दावा करते थे कि हम पंचायतें बना कर लोगों को मौका देना चाहते हैं कि जिस तरह चाहें काम करें अब वह नामजदगियों का बिल कैसे ला रहे हैं।

मेरे दोस्त श्री सिरी चन्द ने फरमाया कि Chief Minister साहिब उछल उछल कर दावे करते रहे कि हम लोगों को यह इस्तिथार दे रहे हैं, वह इस्तिथार दे रहे हैं, मेरी अर्ज है कि वह मेरी तरह कद के छोटे हैं जिस तरह मुझ को स्पीकर साहिब की आंख catch करने के लिये उछलना पड़ता है इसी तरह अगर वह भी उछल लें तो इस में कोई हरज नहीं।
(Laughter)

स्पीकर साहिब, आप को याद होगा कि हम सब जिन में Chief Minister साहिब और खुद आप भी शामिल थे इस तरीके के खिलाफ जद्दोजिहद करते रहे हैं। फिर अब हमारे Chief Minister साहिब चुनाव के खिलाफ क्यों हो रहे हैं? हम देहात में, शहरों में हर जगह elections और bye-elections करा रहे हैं। अब हम जून जुलाई की सख्त गरमियों में अमृतसर में election करेंगे। इस लिये यह कहना ठीक नहीं कि इस सिलसिले में बहुत झमेला करना पड़ेगा। पस जहां हरिजनों को आबादी के तनामुब से कम नुमाइंदगी मिली हो वहां elections करवा लिये जाएं nominations की क्या जरूरत है?

फिर जनाब, दूसरी बात यह है कि “थाना” तो एक पक्की बात थी सब जानते हैं कि थाना क्या होता है। मगर अब यह कहते हैं कि local areas बनायेंगे उस में भी अगर यह कहते कि मसलन चार जैल या ऐसा ही कोई मुकरर रखवा रखेंगे तब भी कोई बात थी मगर यहां तो जैसा कि छीना साहिब ने फरमाया है “वहीं की ईंट वहीं का रोड़ा भान मती ने कुंवा जोड़ा”, जहां जिस गांव को चाहा वहीं मिला दिया। Chief Minister साहिब ने फरमाया है कि हम ऐसा नहीं करेंगे। तो फिर मैं कहता हूं कि जब “थाना” का पक्का और टकसाली लफ्ज मौजूद है तो आप उस की जगह local area जैसा vague लफ्ज क्यों ला रहे हैं। मैं दरखास्त करता हूं कि वह ऐसा न करें। ताकत के घमंड में आदमी किसी की बात कम सुनता है। जैसा कि कहा है:—

ताकत के नशे में चूर हैं वह कब बात किसी की सुनते हैं।

अध्यक्ष महोदय: आप हर बात में शेअर पढ़ते हैं। बार बार वही बात न करें।

पंडित श्री राम शर्मा: मैं आप की ruling चाहता हूं कि क्या मौके के मुताबिक शेअर पढ़ना नामुनासिब है।

अध्यक्ष महोदय: वह मौका के मुताबिक नहीं था, मैंने इसी लिये टोका है।

मौलवी अब्दुल गनी डार: मैं आपके द्वारा यह कह रहा था कि Chief Minister साहिब इस vague बिल को वापिस ले लें। लेकिन यह बात अगर उन के कानों से आगे जाकर दिल तक न पहुंच सके तो इस में उन का कसूर नहीं। ताकत के नशे में आदमी किसी की नहीं सुनता। वह गांधी जी के नाम पर राम राज्य के दावे करते रहते हैं मगर अब

कहते हैं कि इस एक बात से राम राज्य को क्या नुकसान पहुंच सकता है। मैं अर्ज करता कि एक ही मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है। मैं सहे को नहीं रोता पहे को रोता हूं अगर आप अपनी पार्टी को मजबूत करना चाहते हैं तो जितने Deputy Minister और Parliamentary Secretary आप का जी चाहे मुकर्रर कर लें मगर इन बेचारे हरिजनों पर रहम करें।

मुख्य मंत्री (श्री भीम सेन सच्चर) : स्पीकर साहिब, यह जो बहस की गई है इसके मुतअल्लिक मैं कुछ खास कहना नहीं चाहता। लेकिन यह सही है कि या तो हम समझा नहीं सके या वे समझना नहीं चाहते।

सरदार अजमेर सिंह : आप समझा नहीं सके।

मुख्य मंत्री : अगर यह बात है तो कोई फिक्र नहीं। मैं फिर अर्ज किये देता हूं। मेरे मित्र जानते हैं कि census कुछ खास मियाद के बाद होती है। इस की figures आम तौर पर आबादी का basis बन जाती है। लेकिन आप को यह भी मालूम है के Assembly और Parliament के लिये Electoral Rolls होते हैं। इन Electoral Rolls को साल बसाल revise किया जाता है। Census से तो सारी population का पता चलता है और उस की बिना पर States में जितनी seats होती है मुकर्रर कर दी जाती हैं। लेकिन हरेक Constituency की figures census के मुताबिक एक सी हमेशा नहीं रहती। यह साल बसाल revise होती रहती हैं और जो भी कोई गलती हो निकाल दी जाती है। साल का अरसा एक मौजू अरसा है। हर मिन्ट का हिसाब तो रखा जा ही नहीं सकता। अब Census की figures बहुत देर के लिये एक सी रहती है। यह register साल बसाल revise नहीं होता बैसे Electoral Rolls revise होते हैं। अगर कुछ हरिजन मर जाते हैं तो register को तो ठीक ही नहीं किया जाता इन हालात में कई बार यह बताना मुश्किल हो जाता है कि किसी गांव में कितने हरिजन हैं। Census के register पर भरोसा नहीं किया जा सकता क्योंकि वे बदलता नहीं जैसे कि Electoral Rolls बदलते रहते हैं। कई बार ऐसे हो सकता है कि किसी खास गांव के हरिजन किसी के रोब में आकर एक गांव छोड़ देते हैं और किसी दूसरे गांव में चले जाते हैं। दूसरे गांव की आबादी नुमायां तौर पर बढ़ी हुई नज़र आयेगी। परन्तु census के register के हिसाब से आबादी में कुछ फर्क न होगा। Census का register तो उस वक्त बनाया जाता है जब census होती है। उस के बाद उस में कोई तबदीली नहीं की जाती।

श्री श्री चन्द : On a point of information, Sir. जब elections होगी उस वक्त हरिजनों की तादाद ली जायेगी या जब कि उन की आबादी बढ़ी हुई मालूम होगी।

मुख्य मंत्री : मैं Opposition को अर्ज करता हूं कि इस बिल में कोई मायने पढ़न की कोशिश न करें इस में कोई और मायने निकलते ही नहीं। हम इन powers को लेकर इस तमाम चीज को examine करवायेंगे और जो भी statement तैयार होगी हम उसे House के Table पर रख देंगे। हम किसी एतराज की गुंजायश न

[मुख्य मंत्री]

रहने देंगे और इन powers का बिल्कुल सही इस्तेमाल करेंगे । हम चाहते हैं और हम समझते हैं कि तमाम House की यह चाहिश है कि उन special rights को जो हरिजनों को दिये गये हैं recognise करके implement किया जाये । यह powers हम इस extra consideration के लिये ले रहे हैं । मैं House को यकीन दिलाता हूँ कि इन powers को नेक नियती से इस्तेमाल किया जायगा । मैं इस सारे सवाल को examine करवाऊंगा और जो basis evolve होगा उस के बारे में House को confidence में लूंगा । हम यह बात Opposition को तंग करने की नियत से या धड़ेबन्दी की खातिर नहीं कर रहे । मेरे मित्र प्रोफेसर मोता सिंह जी ने elections के बारे में कहा । परन्तु मेरी गुजारिश है कि बहुत कम हालात में ही हमें इन powers का इस्तेमाल करना पड़ेगा । इस लिये इन के बारे elections का सिलसिला खड़ा करना ठीक नहीं । फिर यह है कि जो नये मेंबर होंगे वे तो additional होंगे ।

मौलवी अब्दुल गनी डार : Additional तो क्या होंगे जो पहले चुने गये हैं उनको भी suspend किया जा रहा है ।

मुख्य मंत्री : हां जो लोग चुनाव के standard के मुताबिक नहीं होते उन्हें suspend कर दिया जाता है । मैं House को यकीन दिलाता हूँ कि हमें किसी को निकालने से खुशी नहीं होती । परन्तु क्या किया जाये जब कोई हद से ही बढ़ जाये । और हालात ही ऐसे पैदा कर दे तो उसे निकालना ही पड़ता है । खैर जो कुछ भी है मैं फिर अर्ज करता हूँ कि हमारा मनशा balance इधर उधर करने का नहीं । हम इस चीज को examine करवायेंगे और जो असूल कायम होगा उस पर अमल किया जायेगा ।

Mr. Speaker : Question is—

That the Punjab Gram Panchayat (Second Amendment) Bill be passed.

The motion was carried.

THE PUNJAB CO-OPERATIVE SOCIETIES BILL, 1954.

Minister for Irrigation (Chaudhri Lahri Singh) : Sir, I beg to introduce the Punjab Co-operative Societies Bill.

Minister for Irrigation : Sir, I beg to move—

That the Punjab Co-operative Societies Bill be referred to a Joint Select Committee consisting of —

- (1) Sardar Gurbachan Singh Bajwa, Minister for Public Works.
- (2) Shri Lajpat Rai, M.L.A.
- (3) Shri Ram Kishan, M.L.A.
- (4) Shri Nahnoo Ram, M.L.A.

(5) Chaudhri Mohd. Yasin Khan, M.L.A.

- (6) Shri Sadhu Ram, M.L.A.
- (7) Shri Jagat Ram Bhardwaj, M.L.A.
- (8) Shrimati Dr. Parkash Kaur, M.L.A.
- (9) Shri Mehar Singh, M.L.A.
- (10) Sardar Mohan Singh, M.L.A.
- (11) Sardar Shamsher Singh, M.L.A.
- (12) Bawa Bhag Singh, M.L.A.
- (13) Sardar Chanan Singh Dhut, M.L.A.
- (14) Shri Rizaq Ram, M.L.A.
- (15) Shri Dev Raj Sethi, M.L.A.
- (16) Shri Samar Singh, M.L.A.
- (17) Rai Raghuvir Singh, M.L.A.
- (18) Shri Ram Chandra Comrade, M.L.A ; and
- (19) Chaudhri Lahri Singh, Minister-in-Charge.
and 7 M.L.C.s to be nominated by the Punjab Legislative Council; and the
Report be made by 1st of September, 1954.

Mr. Speaker : Motion moved—

That the Punjab Co-operative Societies Bill be referred to a Joint Select Committee consisting of—

- (1) Sardar Gurbachan Singh Bajwa, Minister for Public Works.
- (2) Shri Lajpat Rai, M.L.A.
- (3) Shri Ram Kishan, M.L.A.
- (4) Shri Nahnoo Ram, M.L.A.
- (5) Chaudhri Mohd. Yasin Khan, M.L.A.
- (6) Shri Sadhu Ram, M.L.A.
- (7) Shri Jagat Ram Bhardwaj, M.L.A.
- (8) Shrimati Dr. Parkash Kaur, M.L.A.
- (9) Shri Mehar Singh, M.L.A.
- (10) Sardar Mohan Singh, M.L.A.
- (11) Sardar Shamsher Singh, M.L.A.
- (12) Bawa Bhag Singh, M.L.A.
- (13) Sardar Chanan Singh Dhut, M.L.A.
- (14) Shri Rizaq Ram, M.L.A.
- (15) Shri Dev Raj Sethi, M.L.A.
- (16) Shri Samar Singh, M.L.A.

[Minister For Irrigation]

(17) Rai Raghuvir Singh, M.L.A.

(18) Shri Ram Chandra Comrade, M.L.A. ; and

(19) Chaudhri Lahri Singh, Minister-in-Charge.

and 7 M.L.C.s to be nominated by the Punjab Legislative Council; and the Report be made by 1st of September, 1954.

Mr. Speaker : Question is—

That the Punjab Co-operative Societies Bill be referred to a Joint Select Committee consisting of—

(1) Sardar Gurbachan Singh Bajwa, Minister for Public Works.

(2) Shri Lajpat Rai, M.L.A.

(3) Shri Ram Kishan, M.L.A.

(4) Shri Nahnoo Ram, M.L.A.

(5) Chaudhri Mohd. Yasin, Khan, M.L.A.

(6) Shri Sadhu Ram, M.L.A.

(7) Shri Jagat Ram Bhardwaj, M.L.A.

(8) Shrimati Dr. Parkash Kaur, M.L.A.

(9) Shri Mehar Singh, M.L.A.

(10) Sardar Mohan Singh, M.L.A.

(11) Sardar Shamsheer Singh, M.L.A.

(12) Bawa Bhag Singh, M.L.A.

(13) Sardar Chanan Singh, Dhut, M.L.A.

(14) Shri Rizaq Ram, M.L.A.

(15) Shri Dev Raj Sethi, M.L.A.

(16) Shri Samar Singh, M.L.A.

(17) Rai Raghuvir Singh, M.L.A.

(18) Shri Ram Chandra Comrade, M.L.A. ; and

(19) Chaudhri Lahri Singh, Minister-in-Charge.

and 7 M.L.C.s to be nominated by the Punjab Legislative Council; and the Report be made by 1st of September, 1954.

The motion was carried.

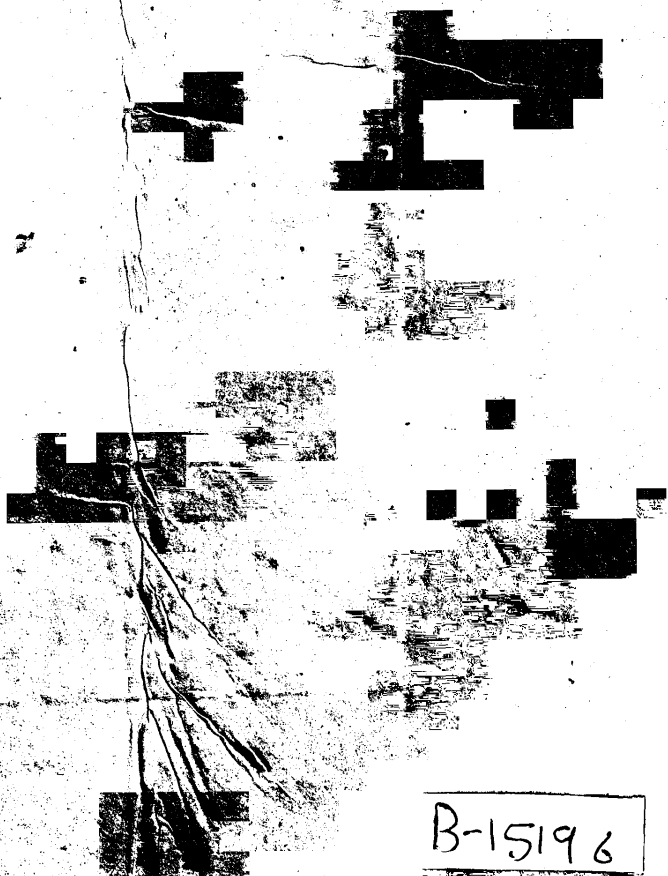
The Assembly then adjourned sine die.

926 PSLA—283—20-7-56—CP S. Punjab, Chandigarh.

Chief Reporter

Punjab Vidhan Sabha

Chandigarh



B-15196

